भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ग संख्या H·P
Class No. 891·4305
पुस्तक संख्या H 6171
Book No.
रा० पु० / N. L. 38. V.18

MGIPC—S19—69/1842/14 LNL (48)—25-5-70—150,000.

Contains:

हिन्दी प्रदीप, v. 18, (1894-95)

Also contains:

बिहार बन्धु, v. 24 (1895)

SHELF LISTED



Rare Book

H. P.
891.4305
H 6171
V. 9

24·5 cm.

# हिन्दी-प्रदीप

NATIONAL LIBRARY
NO. 2157
DATE 5.11.74
CALCUTTA
Rare Book

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सुरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० १८ सं० १—२ } प्रयाग { सितम्बर-अक्टोबर १८९४

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय—प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्दमैपोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥

# हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १८ संख्या १-२ } प्रयाग { सितम्बर—अटूबर सन् १८९४ ई०

## हमारा नया साल—

अनेक धन्यवाद उस सर्वेश सर्वाश्रय सर्वात्मन् सर्व गुणातीत सर्वशक्तिमान् का है जिसकी अपार महिमा के पार जाने में मनुष्यकीट किस गिनती में हैं जब कि अशेष वृन्दारकवृन्द वन्दनीय पादारविन्द शेष शारदा भी लजाते और खिजाते हैं—यह उसी की कृपा कुज्झटिका के कणलव का बल था कि हम सत्रह साल सहज में बिताय आज अठारहवें में पांव रखते हैं—है तो छोटे मुह बड़ी बात किन्तु अपना महत्व प्रगट करने और बढ़ाने में किसे उत्साह नहीं होता—सतयुग के किसी युग में व्यासदेव ने १८ पुराण गढ़े थे इस कलियुग में मन होता है हम हीं व्यास बनै अपने श्रोताओं को सत्रह जिल्दों में १७ पुराण सुना चुके अब अठारहवें पुराण के लिये उन्हें सावधान करते हैं कि वे हड़ बड़ी न करैं वरन जो कुछ हम कहैं उसे एकाग्र चित्त हो सुनते चलैं—हड़ बड़ी करने को हम इस लिये रोकते हैं कि महात्मा कृष्ण द्वैपायन सतयुग के व्यास थे उसकी अथाह गंभीर कुशाग्र बुद्धि को इतने पुराणों के गढ़ने पर भी अणुमात्र परिश्रम न हुआ हम कलियुगहे हैं तो हमारे व्यासपन में भी कलियुग को अपना युगधर्म प्रगट करना ही पड़ा—जिसने हठात् बुद्धि को ऐसा कुण्ठित कर डाला कि व्यासत्व की सूक्ष्मप्रतिभा में जो कुछ गंभीरता चरपराहट और तेज़ी होना उचित था सब में मन्दता लागई तो जल्दी और हड़ बड़ी करने से काम बावन तोला पावरत्ती न उतरैगा—सतयुग के महर्षि व्यास ने कौरव पाण्डवों का पुनीत यश पद्यबन्ध कर अनेक रोचक आख्यान आख्यायिकाओं को सुनाय श्रोताओं के कर्ण कुहर को सब ओर से आप्लावित करते रसास्वाद की दृष्टि से उन के विमल मन मान-

सको विशेष पवित्र कर दिया—हमे युग की प्रेरणा के वश में पड़ बेवश अर्थ दास होते हुये "जहां देखैं हंडा परात तहां गावें सारी रात" वाली कहावत को चरितार्थ करना पड़ा—व्यास जी कदाचित् पाण्डवों की सभा के सभापण्डित थे और केवल पाण्डवों ही के वाध्य थे भारताख्यान का निर्माण कर पाण्डवों ही मात्र को रिझाना उन का प्रयोजन था हम ऐसे अभागे हुये कि इतने लोगों के रिझाने पर भी काम नहीं चलता—१७ वर्ष न जानिये कितने कष्ट सह बेहयाई का जामा ओढ़े किसी न किसी तरह काट तो डाला पर हवस पूरी न हुई कि कोई तो हमे ऐसा कदरदां मिलता कि हमारे गुण को परखता न कोई आशा होती है कि कभी हिन्दी के ऐसे दिन आवेंगे कि हमारी भी परख किसी को होगी—अस्तु हम भी "जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति" इस लोकोक्ति पर लौ लगाये चले ही जाते हैं कदाचित् आगे इसका कुछ फल हो—दूसरे इस भगवद्वाक्य पर विश्वास भी हमे अपने दृढ और स्थिर अध्यवसाय से नहीं हटने देता "नहि कल्याण कृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति" यदि यह निश्चय और पक्की बात है कि जो कुछ हम कर रहे हैं वह शुद्ध मन से कर रहे हैं और यह कल्याणका मार्ग भी है तो कल्याण की बात का करने वाला या सोचने वाला कभी दुर्गति नहीं भोगता—बड़े लोगों का सिद्धान्त भी है "विश्वासः फलदायकः" व्यास महाराज ने १८ पुराण रच दो बातें सिद्धान्त की ठहराई हैं "परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्" कलियुग के व्यास अपना मनोरथ सिद्ध होते न देख कुढ़ कर यह निश्चय करते हैं "स्वार्थसाधनपुण्यैव पापंव परपोषणम्" पहले के व्यास ने सभ्यता और शिष्टता का लक्षण और उत्तम धर्म अपनी देह को कसना खान पान में संयम अनेक व्रत और तपश्चर्या के द्वारा शीतोष्ण का सहन लिखा है कलियुग के व्यास कहते हैं देह को सदा रंगे चुंगे रखना स्वच्छन्द आहार विहार में आज़ाद और बेरोक टोक हो जाना ही सभ्यता का सत्त और सब धर्म का सार है—पहिले के व्यास ने इष्टापूर्त्ति कुंआ बावली तालाब मन्दिर इत्यादि का निर्माण धन का साफल्य माना है कलियुग के व्यास कहते हैं रायबहादुर बनने के लिये सर्कारी चन्दे में जो कुछ दिया जाय उसी से धन की सफलता है—सत्ययुगी व्यास शुचि पवित्र उन्हें मान गये हैं जो दूसरे का धन मिट्टी का ढेला समझते हैं कलयुगी व्यास कहते हैं धन चाहो जिस तरह पर सञ्चय करो बेइमानी और इमानदारी का ख्याल निरा गाठदीपन है रुपया पास हो जाने ही से आदमी महापवित्र

और कुलीन हो जाता है "धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम्" पुराने व्यास ने कहा है सत् असत् का विवेक जिसे हो वह पण्डित—नये व्यास कहते हैं कश्मेदराजी करना जो जाने वही पण्डित "पाण्डित्ये चापलं वचः" इत्यादि पुराने और नये व्यास के सिद्धान्त हम ने बतला दिये पढ़ने वाले तै कर लें किस सिद्धान्त के अनुसार चलना उचित है—

## चरित्रपालन ॥

चरित्र में कहीं पर किसी तरह का दाग न लगने पावे इस बात की चौकसी का नाम चरित्रपालन है—हमारे लिये चरित्रपालन की आवश्यकता इस लिये मालूम होती है कि चरित्र को यदि हम सुधारने की फिकिर न रक्खें तो उसे बिगड़ते देर नहीं लगती जैसा उर्वरा फलवन्त धरती में लम्बी २ घास और कटीले पेड़ आप से आप उग आते हैं अन्न आदि के उपकारी पौधे बड़े यत्न और परिश्रम के उपरान्त उगते हैं—सच तो यों है कि त्रिगुणात्मक प्रकृतिने चरित्र में विकार पैदा कर देने वाले इतने तरह के प्रलोभन संसार में उपजा दिये हैं जिन से आकर्षित हो मनुष्य बात की बात में ऐसा बिगड़ जा सक्ता है कि फिर यावज्जीवन किसी काम का नहीं रहता—महल के बनाने में कितना यत्न और परिश्रम करना पड़ता है बन कर जब तैयार होगई तो उसे ढहाते देर नहीं लगती—इसी बात पर लक्ष्यकर कविशिरोमणि कालिदास ने कहा है "विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि तएव धीराः"—जो बातें विकार पैदा करने वाली हैं उन के होते हुये भी जिन के मन में विकार न हो वे ही धीर हैं—महाकवि भारवि ने भी ऐसा ही कहा है "विक्रिया न खलु कालदोषजा निर्मलप्रकृतिषु स्थिरोदया" निर्मल प्रकृति वालों में काल की कुटिलता के कारण जो विकार पैदा होते हैं वे चिरस्थायी नहीं रहते—चरित्र रक्षा एक प्रकार की सन्दली ज़मीन है जिस्पर यशः सौरभ्य इत्र के समान बनाये जासक्ते हैं अर्थात् जैसा गन्धी सन्दल का पुट दै हर किस्म का इत्र उस्में से तैयार करता है वैसा ही चरित्र जब आदमी का शुद्ध है तो वह हर तरह की योग्यता प्राप्त कर सक्ता है—शुद्ध चरित्र सब जगह प्रतिष्ठा पाता है और जिस काम में सन्नद्ध होता है उसी में पूर्ण योग्यता को पहुंच हर तरह पर सरसब्ज़ होता है—

यथा हि मलिनैर्वस्त्रैर्यत्र तत्रोपविश्यते ।
एवं चलितवृत्तस्तु वृत्तशेषं न रक्षति–

जैसा मैला कपड़ा पहिने हुये जहां चाहता है वहां बैठ जाता है कपड़ों में दाग लग जाने का खयाल उस आदमी को बिलकुल नहीं रहता उसी तरह चलितवृत्त अर्थात् जिस्के चालचलन में दाग गल गया है वह फिर बाकी अपने और चरित्रों को भी नहीं बचा सक्ता वरन नित्य २ बिगड़ता जाता है—मन जिह्वा और हाथ का निग्रह चरित्रपालन का मुख्य अंग है जिन्हों ने मन को कुपंथ पर जाने से रोका है जीभ को दूसरे की चुगली चवाई से या गाली देने से रोका है और हाथ को दूसरे की वस्तु चुराने से या बेइमानी से लेलेने से रोक रक्खा है वही चरित्रपालन में उदाहरण दूसरों के लिये हो सक्ता है ऐसा मनुष्य कसौटी में कसे जाने पर खरे से खरा निकले गा–

वरं विन्ध्याटव्यामनशनतृषार्तस्य मरणं,
वरं सर्पाकीर्णे तृणपिहितकूपे निपतनम्।
वरं गर्तावर्ते गहनजलमध्ये विलयनं ।
न शीलाद्भ्रंशो भवतु कुलजस्य स्थितवतः—

सच है कुलीन समझदार साक्षर के लिये चरित्र में दाग लगना ऐसी ही करी बात है कि उसे अपना जीवन भी बोझ मालूम होने लगता है जैसा ऊपर के श्लोक में कवि ने कहा है कि विन्ध्य पहाड़ के बन में भूखा प्यासा हो मर जाना अच्छा तिनकों से ढके सर्पों से भरे कुआ में गिर कर प्राण देदेना श्रेष्ठ पानी के भँवर में डूब कर विलाय जाना उत्तम पर शिष्ट पढ़े लिखे मनुष्य का चरित्र से च्युत हो जाना अच्छा नहीं–रुपया पैसा हाथ की मैल है आता जाता रहता है किन्तु बात गये बात फिर नहीं बनती इसी लिये धन का दरिद्र दरिद्र नहीं कहा जा सक्ता यदि सुचरित्र में आढ्य हो–जिन के आंख का पानी ढरक गया है उन को चरित्रपालन कोई बड़ी बात नहीं है न इसकी कुछ कदर उन्हें है किन्तु जो चरित्र को सब से बड़ा धन माने हुये हैं वे अत्यन्त संयम के साथ बड़ी सावधानी से संसार में निबहते हैं–यावत् धर्म कर्म और परमार्थ साधन सब

का निचोड़ इसी को मानते हैं और ऐसे लोग जन समाज में बहुत कम पाये जाते हैं सैकड़ों में हज़ारों में कहीं एक होते हैं और वे ही समाज के अगुआ राह दिखलाने वाले आचार्य गुरू रसूल या पैगम्बर हुये हैं—जो आप्त और शिष्ट माने गये हैं उन के एक २ शब्द जो मुख से निकलते हैं उन का उठना बैठना चलना फिरना अलग २ चरित्रपालन में उदाहरण होता है जो प्रतिष्ठा बड़े से बड़े राजाधिराज सम्राट बादशाह शाहनशाह को दुर्लभ है—और यह प्रतिष्ठा चरित्रपालन वाले को सहज ही मिल गई हो सो नहीं वरन सच कहिये तो यह असिधारा व्रत है संसार के अनेक सुख को लात मार बड़े २ क्लेश उठाने के उपरान्त मनुष्य इस्में पक्का हो सक्ता है—चरित्र से बहुत मिलती हुई दूसरी बात शील है शील का चरित्र ही में अन्तर्भाव हो सक्ता है चरित्रपालन में चतुर शीलसंरक्षण में भी प्रवीण हो सकेगा किन्तु शीलसंरक्षण में विचक्षण चरित्रपालन में प्रवीण नहीं हो सक्ता—अंगरेज़ी में शील के लिये "क्वालिटी" और चरित्र के लिये "क्यारेक्टर" है आदमी की बाहरी चाल चलन का सुधार शील या "कामलिटी" अथवा "विहेवियर" कहा जायगा किन्तु मनुष्य का आभ्यन्तर शुद्ध जब तक न होगा तब तक बाहरी सभ्यता चरित्र नहीं कहलावेगी—श्रीरामचन्द्र महाराज युधिष्ठिर बुद्धदेव महात्मा ईसा चरित्रपालन के परमाचार्य थे—मृच्छकटिक में चारुचन्द्र का किस्सा शीलसंरक्षण की शिक्षा के लिये है—चरित्रपालन का समाज पर वैसा ही असर होता है जैसा रक्तसंचालन का शरीर पर—सुस्निग्ध पुष्ट भोजन से जो रुधिर पैदा होता है वह शरीर को पुष्ट और नीरोग रखता है वैसा ही जिस समाज में चरित्रपालन की कदर है और लोगों को इसका खयाल है कि हमारा चरित्र दगीला न होने पावे वह समाज पुष्ट पड़ती जाती है और उत्तरोत्तर उसकी उन्नति होती जाती है—जिस समाज में चरित्रपालन पर किसी की दृष्टि नहीं है न किसी को चरित्र किस तरह पर बनता बिगड़ता है इसका कुछ खयाल है उस बिगड़ी समाज का भला क्या कहना—कुपथ्य भोजन से विकृत रुधिर पैदा होकर जैसा शरीर को व्याधि का आलय बना नित्य उसे क्षीण और जर्जर करता जाता है वैसा ही लोगों के कुचरित्र होने से समाज नित्य क्षीण निःसत्व और जर्जर होती जाती है—चरित्र का अकाल हमारे देश में जैसा इस समय है वैसा पहिले कभी न था मुसलमानों में तो चरित्रका कहीं नाम निशान नहीं है उनके मत का बसूल ही चरित्र पालन नहीं है तो उन्में चरित्र कहां से

आवै उन्हीं के साथ चिष्ट विष्ट हो जाने से और पारसी के अधिक प्रचार से हिन्दुओं में भी चरित्र का दुर्भिक्ष होगया कहीं हज़ार पांचसौ में एक होंगे जिन्हें हम "क्यारेक्टर" चरित्र पालन का नमूना कह सक्ते हैं—जिस समाज में चरित्र की बहुतात होगी वह समाज सर्वोपरि दीप्यमान होकर देश और जाति की उन्नति का द्वार होगी हमारी प्राचीन आर्यजाति चरित्र की खान थी जिन के नाम से हम सभ्य हिन्दूमात्र पृथ्वी भर में विख्यात हैं—अफसोस जो कौम किसी समय दुनियां के सब लोगों को चरित्र शिक्षा में नमूना थी वह आजदिन यहां तक गर्द हो गई कि सात समुद्र के पार से आये हुये हमारे गुरु बनते हैं अनेक विद्या और सभ्यता सिखाय हमारे हृदय का अन्धकार दूर कराने का दावा बांधते हैं—अपने में चरित्र की कमी होने के कारण हम उन के शिष्य प्रशिष्य बनने में अहोभाग्य मानते हैं—समय खेलाड़ी हमें अपना खिलौना बनाय जैसा चाहा वैसा खेल खेला देखें आगे अब कौन खेल खेलता है—

## सोना और सुगन्ध—

सोने में सुगन्धि की कहावत अनादि काल से चली आती है सोने में कहीं सुगन्धि भी होती तो कौन कह सकता है कि कितनी उस्की कीमत बढ़जाती—विना सुगन्धि ही १६ और १८ से ३० और ३२ तक इस अंगरेज़ी राज्य में उस्की कीमत चढ़ गई है सुगन्धि भी होती तो क्या ३० के ऊपर कई सुन और देने की नौबत पहुंचती क्या—अस्तु यह एक कहावत मात्र है जिस्की चरितार्थता के अनेक दृष्टान्त हैं—जैसा अनेक दृष्टान्तों में हिन्दुस्तान की स्त्रियां भी एक दृष्टान्त हैं ये भारत ललनायें चरित्र में जैसा सती सावित्री हैं और पुरुष की अपेक्षा सच्चरित्र में शतगुण अधिक हैं वरन संसार भर की स्त्रियों को सतीत्व की शिक्षा में प्रधान और अद्वितीय हैं वैसा ही यदि इन्में शऊर शाइस्तगी और सालीम होती तो सोने में सुगन्धि के समान कौन कह सकता है भारत ललनाओं की कितनी अधिक कीमत बढ़ जाती—इसी तरह विलाइत की परियों में जैसा शऊर सभ्यता सौजन्य और सुशिक्षा है वैसा ही यदि इन्में कहीं सतीत्व का लेश वरन भारत ललनाओं का शतांश भी होता तो सोना में सुगन्धि कहने में किसे तअम्मुल होता—इसी तरह पर हमारे महाजनों व्यवहार में जैसी इमान्दारी और शाख रहती है वैसी

ही हमारे महाजनों में यदि साहस और परस्पर की सहानुभूति भी होती तो सोना में सुगन्धि थी और हिन्दुस्तान से लक्ष्मी कभी हटाये न हटती—हमारे पण्डित जैसा विद्या के अथाह सागर हैं शास्त्र के सूक्ष्म विचार में जिन की पैनी बुद्धि वाचस्पति की भी ज़बान बन्द कर देने का दावा रखते हैं वैसा ही यदि इनकी बुद्धि देश काल के समझने में भी वैसीही सूक्ष्म और पैनी होती तो इन्हें धोंघा की उपाधि क्यों दीजाती सोना में सुगन्धि के समान सभ्य समाज के सिरमौर होते अपक्व बुद्धि इस समय के नवयुवक जो इन्हे हंसी में उड़ाते हुये स्वच्छन्द होने को छंदान तोड़ भागा चाहते हैं उन्हे अपने समाज से अलग न होने देते और उन के वैसा ही गरीय गुरुवर बने रहते जैसा अब तक रहे आये—हिन्दुस्तान में ब्रिटिशशासन जैसे सुख और आराम का है शेर और बकरी दोनों एक घाट पानी पीते हैं सब को अपने लिये तरक्की करने का द्वार खुला है अनेक तरह की विद्या और विज्ञान तथा शिल्प का प्रादुर्भाव देख हम को अपनी प्राचीन सभ्यता का अभिमान जाता रहा वैसा ही यदि रुपये की खींच न होती तो सोना में सुगन्धि था—दिन २ देश में दरिद्रता का विस्तार देख अंगरेज़ी राज्य सब भांत उत्तम होने पर भी लोगों की श्रद्धा इधर से हटती जाती है मुसल्मानी राज्य में इतने अत्याचार सह कर भी किसी को ऊब नहीं हुई थी जितनी ऊब इतने थोड़े दिन में इस राज्य से लोगों को हो गई है—इसमें सन्देह नहीं स्वामी दयानन्द जी सच्चा देश का हित चाहने वाले थे रास्ता जो उन्हों ने सोचा अवश्य देश के उद्धार की है संशोधन और सुधार चाहने वाला इससे अधिक और क्या कर सक्ता है—किन्तु पीछे हठ में आय कुछ ऐसी ज़िद्द उन्हें सवार होगई कि जिस्से सर्वसम्मत न हुये श्राद्ध और प्रतिमापूजन इत्यादि के खण्डन में इतना प्रवृत्त हो गये कि सब लोगों को मिलाने की युक्ति के केन्द्रभाग से हट गये जिस्से सोने में सुगन्धि न आने पाई—इत्यादि सोने में सुगन्धि के उदाहरण थोड़े से हम ने यहां पर दिखाये जिस्से हमारे पढ़ने वाले जान सक्ते हैं कि सोने में सुगन्धि होने से क्या उपकार हो सकता था पर खेद कि सोने में सुगन्धि विधाता ने सृजा ही नहीं—"प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः" ॥

# मन्दराज का दसवां नेशनलकानग्रेस ॥

बंगवासी ऐसे दो एक ईर्षी कानग्रेस के सम्बन्ध में चाहो जो कहैं इस आज़ादगी के ज़माने में कौन किसे रोक सक्ता है ज़बान अपनी कलम अपने वश को तब उन्मत्त प्रलाप की भांत अधिकार है चाहो जो बक जाय—अथवा संपादक ने अपने को विख्यात करने का इसे एक द्वार समझ जो कुछ मन में आया बक गये क्योंकि जब तक कोई अनोखी बात मनुष्य से नहीं बन पड़ती तब तक वह प्रसिद्धनहीं होता।

"घटं भिन्द्यात्पटं छिन्द्याद्गर्दभारोहणं चरेत्।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्॥

कानग्रेस से कितना देश का उपकार है इस्पर जिल्द की जिल्द लिख जा चुकी हैं और कुछ विशेष लिखना केवल पिष्टपेषण है—बंगवासी को इस्में दोष हो दोष दीखता है तो लाचारी है—अभी हाल में कलकत्ते का स्टेट्समेन ने भी इस बात को अच्छी तरह सिद्धकर दिया है कि वाइसराय की लेजिस लेटिव कौंसिल को प्रजा का भाव जानने को कानग्रेस से बढ़ कर कोई दूसरा ज़रिया हई नहीं—"शस्त्रयो जेष्यति पाण्डवान्" सैयद सरीखे कितने ईर्षियों ने नोन खाय पानी पीपी भरसक कानग्रेस को बहुत ही बहुत कोसा सरापा कुछ न कर सके तो अब बंगवासी उठ खड़े हुये—अस्तु कानग्रेस के सम्बन्ध में कुछ लिखैं इस्के पहिले मन्दराज की मरकतसी हरित तृण संच्छादित भूमि का भी परिचय देना आवश्यक जान पड़ता है—समुद्र ५० मील से अधिक रह जाता है तभी से यहां की धरती अनोखी छवि धारण कर दुलही सी सोलहो सिंगार किये मानो रत्नाकर से मिलने को उठ धाई है और उसे जताती है कि तुम को रत्न के आकर होने का घमण्ड व्यर्थ है मैं भी मरकतमय हूं तुम रत्नाकर हो तो मैं भी वसुन्धरा हूं हमारा तुम्हारा जोड़ अनुचित नहीं है—दूसरे समुद्र का प्राकृतिक दृश्य देख मन सृष्टिकर्त्ता की कारीगरी पर अत्यन्त अचरज में आता है जिस्की सुहाती हुई ऊंची २ लहरें मालूम होता है अपने मन के माफिक दुलही पाय भुजा पसार २ हर्ष के साथ उस्से मिलने को दौड़ रहा है उर्वरा और फलवती होने में मन्दराज की पृथ्वी बंगाल से किसी अंश में कम नहीं है—

अन्तर इतना ही है कि बंगाल की भूमि काली मिट्टी की है यहां की धरती रेतीली है—बंगाल सम भूमि है यहां बीच २ पर्वत आजाने से दो पर्वतों के बीच की घाटियां बहुधा बड़ी उपजाऊ हैं नारियल खजूर सुपारी ताड़ और कदली के वन के वन खड़े हैं—धरती में तो बंगाल का समग्र गुण है पर लोग यहां के बंगालियों के से घमण्डी जल्दबाज़ और नकल करने वाले नहीं हैं न बंगालियों के समान मन्दराजी भीरु प्रकृति हैं बरन अत्यन्त सरल चित्त धीर गम्भीर उत्साही और नम्र देखे गये—इस कानग्रेस में एक बात विशेष लखने के योग्य यह थी कि मन्दराजियों में जोश और सरगरमी भरपूर पाई गई—और २ प्राविन्सों के समान मन्दराज अभी कानग्रेस की ओर से हतोत्साह नहीं हुआ यही बात नागपूर के कानग्रेस में भी देखी गई थी १२०० डेलिगेट और ५ या ६ हज़ार दर्शकों की भीर से पूर्ण मण्डप कानग्रेस के प्रेमियों को प्रफुल्लित कर रहा था टरबन हैट भांत २ की पगड़ी और किस्म किस्म के अम्मामें हिन्दुस्तान के प्रत्येक प्रान्त के मनुष्यों को अलग २ प्रगट कर रहे थे सब लोग भ्रातृभाव की सहानुभूति देशानुराग और राजभक्ति के उद्गार से पूर्ण थे कि स्वागतसत्कारिणीसभा के प्रेसिडेंट अनरेबिल रंगिया नयडू ने सभासदों को अत्यन्त विनीत भाव से सत्कारसूचक शब्दों में आमन्त्रित किया—इन की वक्तृता भातृभाव से पूर्ण थी जिस्से प्रगट होता था कि ये मन्दराजी कहां तक सौजन्य शाली हैं—उपरान्त पार्लियामेंट महासभा के सभासद् मिस्टर वेब इस कानग्रेस के प्रिसिडेंट किये गये जिन्हों ने अत्यन्त ललित वक्तृता में कानग्रेस की कर्तव्यता और विलाइत में इसका क्या असर हुआ इत्यादि बातों को कह सुनाया—चार दिन तक कानग्रेस का समारोह निर्विघ्न बड़ी शोभा के साथ होता रहा वक्ताओं ने अपना २ मन्तव्य "रिजोल्यूशन" जो उन्हें दिये गये बड़ी योग्यता के साथ कहा बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, पं०—मदनमोहन मालवीय, मिस्टर नार्टन, मार्गनब्रौन, मि—वाचा, हास्यरस संमिलित लाला मुरलीधर की वक्तृतायें विशेष लक्ष्य के योग्य थीं—सारगर्भित पं—मदनमोहन की स्पीच को प्रिसीडेंट तथा और सब लोगों ने बहुत ही पसन्द किया—लेजिसलेटिव कौंसिल में मेम्बरों के चुनने में बहुत कम लोगों को अधिकार दिया गया है इसे उक्त मालवीय जी ने बड़ी योग्यता के साथ बहुत ही सयुक्तिक कहा जिसे सबों ने पसन्द किया—पंजाब के समान मन्दराज में भी कानफेरेन्स को ज़ोर नहीं होने पाया अच्छा ही हुआ इसके प्रवर्तकों का इसमें हतोत्साह होना हमारे समाज के लिये बड़ा कल्याण-

कारी है–हिन्दूधर्म पर योंही चारो ओर से कुल्हाड़े बरस रहे हैं तब यह कान-फेरेन्स क्यों उसके सत्यानाश करने को उठ खड़ा हुआ विशेष कर कानग्रेस के पण्डाल में जिस्की बुनियाद निरा राजनैतिक आन्दोलन है इस्का होना कान-ग्रेस को अत्यन्त हानिकारक है–सामाजिक झगड़ों से और राजनैतिक आन्दो-लन से सरोकार क्या–अस्तु समाज संशोधन भी अच्छी नीयत से किया जाता तब भी हम उस्में कभी बाधक न होते जब हम देखते हैं जो लोग इस्में अग्रणी और इस्के प्रवर्तक हैं उन की यही बांछा है कि किसी तरह हम समाज के बन्धन को तोड़ आज़ाद हों–न उन्में आत्मत्याग "सेल्फ सेक्रिफाइस" का कहीं अंकुर भी है जिस्का होना समाज संशोधन का बीजरूप है तब हम क्यों कर इस्के सहकारी और पोषक हों यह महाव्याधि का जो अकस्मात् उठ खड़ी हुई है शान्त होना ही उत्तम है–

## महाकविहरिचन्द्र ॥

यह कवि जाति के कायस्थ और दिगम्बर जैनधर्म के अनुयायी थे–बाण-भट्टने हर्षचरित में हरिचन्द्र की प्रतिष्ठा में यह पद्य दिया है ॥

पदबन्धोज्ज्वलो हारी कृतवर्णक्रमस्थितिः ।
भट्टारहरिचन्द्रस्य गद्यबन्धो नृपायते ॥

बाणभट्ट ने जो इन का नामोल्लेख किया है इस्से प्रकट है कि हरिचन्द्र बाण के पहिले हुये हैं बाणभट्ट का होना विक्रमादित्य के सातवें शताब्द में निश्चय किया गया जो समय संस्कृत की कविता तथा दर्शन इत्यादि के परम उन्नति का था क्योंकि बाणभवभूति राजशेखर सुबन्धु कविराज मयूर भट्टि दण्डी उद्भट आदि कवि शंकर मण्डन वाचस्पति आदि दार्शनिक सब इसी छठवें सातवें शताब्द के लगभग हुये हैं—यह कवि बाणभट्ट के पहिले हुये हैं तो इन्हें हम पांचवें शताब्द के अन्तिम भाग में कह सकते हैं–राजशेखर जो सातवें शताब्द के अन्त में हुये हैं उन्हों ने भी कर्पूरमंजरी नामक सट्टक में इन का नाम लिखा है। भट्टार हरिचन्द्र ने कवित्व की छटा में कालिदास का बहुत कुछ अनुहार किया है पद की गठन और प्रसाद गुण तो इन के काव्य में कालिदास का सा नहीं आया किन्तु लालित्य और माधुर्य में इन का लेख कालिदास से कम भी नहीं

है। २१ सर्ग में धर्मशर्माभ्युदय नाम का महाकाव्य इन्हों ने बनाया है इन के पिता का नाम आर्द्रदेव और माता का रथ्या था—ग्रन्थ के अन्त में अपना परिचय इन्हीं ने इस तरह पर दिया है ॥

मुक्ताफलस्थितिरलंकृतिषु प्रसिद्धस्तत्रार्द्रदेवइति निर्मलमूर्त्तिरासीत्
कायस्थएव निरवद्यगुणग्रहः सन्नेकोपि यः कुलमशेषमलञ्चकार ॥

लावण्याम्बुनिधिः कला कुलगृहं सौभाग्यसद्भाग्ययोः,
क्रीडावेश्म विलासवासवलभी भूषास्पदं सम्पदाम् ।
शौचाचारविवेकविस्मयमही प्राणप्रियाशूलिनः ।
शर्वाणीव पतिव्रताप्रणयिनी रथ्येति तस्याभवत् ॥

अर्हत्पदाम्भोरुहचञ्चरीकस्तयोः सुतः श्रीहरिचन्द्र आसीत् ।
गुरुप्रसादादमला बभूवुः सारस्वते श्रोतसि यस्य वाचः ॥

भक्तेन शक्तेन च लक्ष्मणेन निर्व्याकुलो रामइवानुजेन ।
यः पारमासादितबुद्धिसेतुः शास्त्राम्बुराशेः परमाससाद ॥

२४ तीर्थंकरों में पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथ का जीवनचरित्र का वर्णन इसमें है और उसी के प्रसङ्ग में नगर, बन, पर्वत, समुद्र, ऋतु इत्यादि का नई २ उक्ति युक्ति में वर्णन किया गया है—उदाहरण के लिये थोड़ासा इन की कविता से हम यहां पर उद्धृत करते हैं—

जयन्ति ते केपि महाकवीनां स्वर्गप्रदेशाइव वाग्विलासाः ।
पीयूषनिष्पन्दिषु येषु हर्षं केषां न धत्ते सुरसार्थलीला ॥

"सुरसार्थलीला" यहां पर श्लेष का निर्वाह बड़ा उत्तम किया गया है—इसी तात्पर्य का एक पद्य नलचम्पू में त्रिविक्रम भट्ट ने भी दिया है—"सुरसार्थमयं काव्यं त्रिविष्टपं वा समं विद्मः"

"साध्वीर्विनिर्माणविधौ विधातुश्च्युताः कथञ्चित्परमाणवो ये ।
मन्ये कृतास्तैरुपकारिणो ये पाथोदचन्द्रद्रुमचन्दनाद्याः ॥"

"दोषानुरक्तस्य खलस्य कस्याप्युलूकपोतस्य च को विशेषः ॥
अह्नीव सत्कान्तिमति प्रबन्धे मलीमसं केवलमीक्षते यः ॥

खल और उलूक की समता अच्छी निबाही गई है—

आदाय शब्दार्थमलीमसानि यद्दुर्जनोऽसौ वदने दधाति ।
तेनैव तस्याननमेव कृष्णं सतां प्रबन्धः पुनरुज्ज्वलोभूत् ॥

खल की निन्दा में बिलकुल नई उक्ति युक्ति का यह पद्य है—

उच्चासनस्थोपि सतां न किंचिन्नीचः स्वचित्तेषु चमत्करोति ।
स्वर्णाद्रिशृङ्गाग्रमधिष्ठितोपि काको वराकः खलु काकएव ॥
वमन्नमन्दं रिपुवर्मयोगतः स्फुलिङ्गजालं तदसिस्तदा बभौ ।
वपन्निवासृग् जलसिक्तसङ्गरक्षितौ प्रतापद्रुमबीजसन्ततिम् ॥

"इस बीर धुरीण राजा की तलवार शत्रुओं के ज़िरावख्तर पर बराबर रगड़ खाने से आग की चिनगारियां उगिलते हुये शत्रुओं के लोहू से सिंची सङ्ग्रामभूमि में प्रतापद्रुम के बीज की सन्तति को मानो बोती हुई शोभा दे रही है—" बीरता और प्रताप का वर्णन बिलकुल नई छटा का है किसी कवि को ऐसा नहीं सूझा—"द्विषत्सु कालो धवलः क्षमाभरे गुणेषु रक्तो हरितः प्रतापवान् । जनेक्षणैः पीत इति द्विषां व्यधादनेकवर्णोपि विवर्णतामसौ"—

धवल का दूसरा अर्थ वृष भी है—अत्यन्त उत्कृष्ट कविता इस श्लोक में प्रगट की गई है—अन्यच्च—

निशासु नूनं मलिनाम्बरस्थितिः प्रगल्भकान्तासुरते हिजक्षतिः ।
यदि क्विपः सर्वविनाशसंस्तवः प्रमाणशास्त्रे परमोहसम्भवः ॥
इतः प्रभृत्यम्बनते मुखाम्बुजश्रियं हरिष्येऽहमितीव चन्द्रमाः ।
प्रतीतपेऽस्याः सकुटुम्बको नखच्छलेन साध्व्याश्चरणाग्रमस्पृशत् ॥

रानी के मुखच्छवि और नखच्छवि का वर्णन बड़ी गूढ़ कविता में किया गया है ॥

सुहृत्तमावेकत उन्नतौ स्तनौ गुरुर्नितम्बोप्ययमन्यतस्थितः ।
कथं भजे कान्तिमितीव चिन्तया ततान तन्मध्यमतीव तानवम् ॥

कटि का अच्छा वर्णन इस श्लोक में किया गया है—

सती च सौन्दर्यवती च पुम्वत्प्रसूश्च साक्षादियमेव भूत्रये ।
इतीव रेखा त्रयमच्छतस्मयो विधिश्चकार त्रिवलित्रयच्छलात् ॥
प्रवालविम्बाफलविद्रुमादयः समाबभूवुः प्रभयैव केवलम् ।
रसेन तस्यास्त्वधरस्य निश्चितं जगाम पीयूषरसोपि शिष्यताम् ॥
अनादरेणापि सुधासहोदरीमुदीरयन्त्यामधिकारिणीं गिरम् ।
द्वियेव काष्ठत्वमियाय वल्गुकी पिकी च कृष्णत्वमधारयत्तराम् ॥
ललाटरेखा शकलेन्दुनिर्गलत्सुधोरुधारेव घनत्वमागता ।
तदीयनासा द्विजरत्नसंहतेस्तुलेव कान्त्याजगदप्यतोलयत् ॥
जितास्मदुत्तंसमहोत्पलैर्युवां क्व याथ इत्यध्वनि रोधिनोरिव ।
उपान्तकोपे इव कर्णयोः सदा तदीक्षणे जग्मतुरन्तशोणताम् ॥

इत्यादि कुमारसम्भव में कालिदासकृत पार्वती के नख शिख के वर्णन का बिल्कुल अनुकरण उक्त कवि ने महासेन राजा की रानी सुव्रता के अङ्ग वर्णन में किया है—

तीसरे सर्ग में राजा की मुनि के साथ बात चीत में बड़ी उत्तम कवित्वशक्ति प्रगट की गई है कोई श्लोक ऐसे नहीं हैं जिन्में एक नई उक्ति युक्ति न निकलती हो । तद्यथा—

त्वत्पादपादपच्छायां चिन्तासन्तापशान्तिदाम् ।
सम्प्रतिप्राप्य मुक्तोस्मि भवभ्रमपरिश्रमात् ॥
तपोन्वितेन सूर्येण सदोषेणेन्दुनापि किम् ।
यो भवानिव दृष्टोपि न भिनत्त्यान्तरं तमः ॥
चित्रमेतज्जगन्मित्रे नेत्रमैत्री गते त्वयि ।

यन्मे जडाशयस्यापि पङ्कजातं निमीलति ॥

पङ्क का दूसरा अर्थ पाप है—

युष्मत्पदप्रयोगेण पुरुषः स्याद्यदुत्तमः ।
अर्थोऽयं सर्वथानाथ लक्षणस्याप्यगोचरः ॥

व्याकरण में युष्मत् पद के प्रयोग में मध्यम पुरुष होता है न कि उत्तम पुरुष यह एक बड़ी अच्छी उक्ति व्याकरण के सम्बन्ध में दिखाई गई है—

तथा मे पोषिता कीर्तिस्त्वद्दर्शनरसायनैः ।
यथास्तां त्रिदशावासे मान्यनन्तालयेपि न ।

"मान्यनन्तालयेपिन" अनन्तालय में श्लेष है दूसरा अर्थ पाताल हुआ—

धन्यस्त्वं गुणपण्यानामापणस्त्वं महीपते ।
त्वमेवसंश्रयः श्रीणां सरितामिव सागरः—

इत्यादि थोड़े से उदाहरण हम ने इस कवि के यहां पर दिये जिस्से संस्कृत कवियों की उक्ति युक्ति समझने वालों को कवि की प्रतिभा की टटोल यत्किंचित् हो सकती है—इसी तरह ऋतु नगर पर्वत इत्यादि के वर्णन में जो उक्ति युक्ति हरिचन्द्रने दी है वह माघ श्रीहर्ष इत्यादि से किसी अंश में कम नहीं है—

## वाक्यालंकार——

चलन—बात की—बाज़ार की—सिक्के की—हुंडी की—इत्यादि—बात आदि में चाल कहीं चावल बराबर भी आगे पीछे को नहीं देखी जाती किन्तु वाक्यालंकार में बात इत्यादि के आगे चलने का प्रयोग किया जाता है—ऐसाही चलना जबान का—हाथ का—जैसा किसी की ज़बान चली तो किसी का हाथ चला—और भी—चलना चरखे का—नामका—पेट का—मुह का—हुकूमत का मन का—इत्यादि

चढ़ना—नज़र पर—दान्तों पर—ध्यान पर— चर्ख पर—सान पर—सिर माथों पर—इत्यादि—

उतरना—नज़र से—खयाल से—फेरना—आंख का—पैर का—मारना-ताने का—हाथ का—लेना—नाम भगवान् का—खाना—गम का—पीना लहूके घूंट का—हारना—

बात का—हिम्मत का—देना—बात का—पीठ का—"नारयो लेभिरे पृष्ठं न वक्षः पर-योषितः"—मानना—एहसान का—उपकार का—इत्यादि मुहाविरे ऐसे हैं जो हर एक भाषा के नित्य के बोल चाल में काम आते हैं और करीब करीब एक से हैं जिन्हें वाक्यालंकार कहेंगे सोचते जाइये बराबर निकलते आवेंगे—हमने यहां पर केवल पथप्रदर्शनमात्र किया है—

## श्रीमान्—राय प्रतापचन्द्र की उदारता

उक्त राय साहब बहादुर इस वर्ष की मकर सांक्रान्ति के दिन ४०० पण्डितों को ४) एक धौत वस्त्र और निष्टान्न अलग २ एक २ पण्डितों को बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ सन्मानपूर्वक दिये—राय साहब का प्रण था कि यह द्रव्य सिवाय पढ़े लिखे और साक्षर के मूर्ख को न मिले इस लिये ढूंढ़ २ कर जो वास्तव में पढ़े लिखे ब्राह्मण थे उन्हीं का सभा में आह्वान किया गया—जिस उत्साह के साथ और जिस क्रम से इन्होंने सभा किया उसी क्रम के अनुसार हमारे यहां के रईसपदवाच्य कभी २ इस प्रकार का समारोह किया करें तो संस्कृत के पठन-पाठन को बहुत कुछ सहारा पहुंचे—पर किस्के मुह में दांत कि इतना कहने की हिम्मत पड़े कि अमुक २ दास अमुक २ प्रसाद अमुक मल रईसों की लिस्ट में आप का नाम दर्ज है दरजनो और कोड़ियों के हिसाब से परीज़ादों की हुस्न परस्ती में मसरूफ रहना ही अमीरी नहीं है सरोद सहनाई तबले की महज़ ठनक भी आप के कनक की शोभा नहीं है न खुशरंगमय पोर्ट ह्विस्की शाम्पेन के ज़ायके में तन्मय होना ही दुनियावी लज्ज़तों की हद्द है कभी इधर भी खयाल शरीफ को रुजू किया करो—अपनी रईसी को बनाये रखने का ज़रिया यही आपने सोंच रक्खा है तो लाचारी है—यह तो निश्चय है कि तुम्हारे यक्षधन की शोभा इसी में है—रूपाजीवा भांड़ भगतियों के लिये इस कलियुग में आप ही साक्षात् राजा करण के अवतार हो—देखो चैतन्य रहो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हे कोई बहका ले और तुम भटक कर इस ओर झुक पड़ो खबरदार भूल से भी किसी ऐसे के चंगुल में न फसना कहीं पढ़ने पढ़ाने का चस्का पड़ गया तो कवि की यह उक्ति झूठी हो जाय गी—"तदभाग्यं धनस्यैव यन्नाश्रयति सज्जनम्"—अस्तु राय प्रतापचन्द्र तथा उन के सहकारी बाबू शिवबदन सिंह को धन्यवाद है जिन्हो ने प्रयाग में

अपनी उदारता का नमूना एक ऐसे समय में प्रकट कर दिखाया जब कि संस्कृत का पढ़ना पढ़ाना बेकदरी के कारण नित्य २ संकुचित होता जाता है—जिस क्रम से ये विद्वानों का सरकार करते हैं उसी क्रम के अनुसार रईसी के नशे में गड़गाप जिन का चरित्र हम ऊपर गाय आये शहर के दो चार लोग भी कभी २ करते रहैं तो यद्यपि ब्राह्मणों ने संस्कृत को निरी बछिया पुजौनी विद्या कर डाला है सर्वथा निर्मूल होने से बची रहै और सब धान बारह पसेरी वाली कहावत को भी चरितार्थ होने के लिये बहुत कम अवसर मिलै—गुण की परख होने लगे और गुण के अनुसार प्रतिष्ठा और आदर दिया जाया करे तो कहां तक हमारे ब्राह्मण विद्या का अभ्यास न करैं और मुफ्तखोरी की आदत से आजाद हों ॥

## संस्कृत की वर्तमान अवस्था ॥

बहुत दिनों से केवल ब्राह्मण संस्कृत पढ़ते पढ़ाते हैं इस लिये जो कुछ इसमें तत्व था वह सब नीचे बैठगया केवल दक्षिणा ही दक्षिणा ऊपर उतराता है—अब इसमें कोई ऐसी बात रही न गई जिस लोभ से कोई इसे पढ़े पढ़ावै—पहले तो यह कि तरक्की के ओर छोर को पहुंची हुई खराद पर चढ़ी इंगलिश जरमन फ्रेंच आदि यूरोप की विविध भाषाओं के मुकाबिले मुर्दा भाषा संस्कृत में हई क्या जिस्से इसकी कदर की जाती अनेक तरह के विज्ञान भूगोल इतिहास जो भाषा के बड़े भारी अंग हैं सो इसमें हई नहीं हैं भी सो नितान्त अस्त व्यस्त ऊटपटांग और बेसिर पैर—जो कुछ संस्कृत में उमदगी है वह कविता अर्थात् पद्य रचना विस्तार दर्शन और भाषा की छिलावट जो यहां तक मांजी गई है कि संस्कृत इसका सार्थक नाम पड़ा और भूमण्डल पर कोई भाषा इसके समान मंजी और संस्कार की हुई नहीं पाई जाती—सो इस समय दक्षिणा लोभी ब्राह्मणों ने इसके इन गुणों को भी छिपा दिया केवल दक्षिणा ही के काम की इसे रक्खा—और भाषाओं की अपेक्षा कविता के अंश में संस्कृत सब से बढ़ी बढ़ी है किसी देश में और किसी दूसरी भाषा में वह स्वाद मिली नहीं सक्ता जो रस कविता का संस्कृत में है सो रस हमारे इस समय के इन पण्डितों को मिला ही नहीं ५० पण्डित इकट्ठे किये जांय तो दोभी ऐसे न निकलैं गे कि कवि की उक्ति युक्ति के समझने में उन की बुद्धि फैलै—इन की घोखन्त विद्या शब्द के रेज़े २ उड़ा देगी कहो अर्थांश में इन को चंचु प्रवेश की नौबत पहुंचती

हो इसका ज़िकर ही क्या—प्रक्रियांश में भी केवल उतना ही जितना इन का धोखा है कोई नई बात आजाने पर कुछ कल्पना कर सकें सो भी नहीं चारो ओर से हांव २ कर दौड़ेंगें और ऐसा खुरखुन्द मचा देंगे कि तीतर बटेर की लड़ाई मात हो जायगी—खैर यही सही अक्षर से तो भेंट है समय के अनुसार संस्कृत जैसी गिरी दशा में आगई है उसे देख हम बोध कर लेसक्ते हैं पण्डित कहे जाते हैं तो पण्डिताई की कुछ तो बात है—पर इन के समूह में ऐसे भी दोई एक हैं ज़ियादह नम्बर इन का तैं दैदेतं मैं लैलेतं का है आडम्बर और मुद्रा अलबत्ता ऐसी बनाना जानते हैं कि षट्शास्त्री और महामहोपाध्याय झख मारते रहैं काशी के पण्डित इसका नमूना हैं जिन्मे अब केवल बनावट ही रह गई है सौ इकट्ठा किये जांय तो ५ मुशकिल से ऐसे निकलैं गे जिन्हे अक्षर से भेंट है—अब दूसरी बात संस्कृत की दर्शन है इङ्गलिश और फ्रेंच को जिस तरह साएन्स और विज्ञान में औवल दरजा भाषाओं के बीच हासिल है उसी तरह संस्कृत को दर्शन और फिलासोफी में है सो उसमें भी हमारे आधुनिक पण्डितों को उतने ही से सरोकार है जितना हिस्सा फिलासोफी का भक्तिकाण्ड में आगया है या जितना अपढ़ यजमानों को चंगुल में लाने को काफी है—यही कारण है कि संस्कृत अधिक अनुशीलन किये हुये अत्यन्त शान्त परमार्थ नैष्ठिक और परलोकभीरु होते हैं क्योंकि संस्कृत में शुरू से आखिर तक सिवाय मज़हब के और है क्या—ब्राह्मण ही बहुत दिनों से इसका पढ़ना पढ़ाना करते रहे उन्हों ने पहिले अपने पेट की फिकिर किया और जहां तक बना बात २ में अपना टैक्स कायम किया जीते जी कौनकहे मरने पर भी इन का टैक्स कयाम रहता है—उपरान्त फिर इन्हें परलोक और परमार्थ सूझा और उसी की छानबीन में लगे इस जन्म में उपकारी विद्याओं को फसाद और परमार्थ साधन में विघ्न डालने वाली समझ इधर मन न दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि संस्कृत का समग्र साहित्य परमार्थ और धर्म विषयक बातों से भरा हुआ है ऐसा एक ग्रन्थ भी नहीं मिलता जो धर्म और परमार्थ से कुछ सम्बन्ध न रख निरे उसी विषय का हो जिस विषय पर वह लिखा गया है—जैसा गणित वैद्यक ज्योतिष व्याकरण इत्यादि ऐसे विषय हैं कि इन से मज़हब को कोई सरोकार नहीं है और २ भाषाओं में इस तरह के ग्रन्थ मज़हब से बिलकुल अलग हैं हमारे यहां इन में भी धर्म

और मज़हब व्यर्थ ही को ठूंस दिये गये हैं–परमार्थ साधन मोक्ष और ईश्वर ऐसे ताने बाने के साथ बिन दिये गये हैं कि जो अब जाता है हज़ार चेष्टा करो कि संस्कृत को हम उस तर्ज़पर लावें जिस तर्ज़पर यूरोप की भाषायें हैं यह ताना बाना ऐसा आड़े आवेगा कि आप अन्त में हिर फिर उसी में फस कर रह जायेंगे–सच पूछिये तो हिन्दुस्तान की अधोगति के कई एक कारणों में सब से बड़ा कारण मज़हब और धर्म ही हो रहा है–हमारा मज़हब और धर्म हमे सब ओर से ऐसा जकड़े हुये हैं कि यह हमारा पांव आगे को बढ़ने ही नहीं देता–केवल संस्कृतज्ञ पण्डित जो निरे भोंदूदास बने रहते हैं देश काल को बिलकुल नहीं समझते सो इसी से कि सिवाय संस्कृत के और कुछ जन्म भर उन्हों ने पढ़ाही नहीं जो में अटल विश्वास जमा है कि वेद और संस्कृत के बाहर कुछ है नहीं संस्कृत के पढ़ने वाले सर्वज्ञ होते हैं–तब आधुनिक सभ्यता की बातें सुन कीआते हैं कि यह तो हमारी पोथियों में लिखा ही नहीं तुम क्या कह रहे हो–हिन्दुस्तान सभ्यता के ओर छोर तक पहुंच चुका है इसमें सन्देह नहीं नवीन विज्ञान की टोह सूक्ष्मरूप से संस्कृत में लगती है दिमाग लड़ाने वाले विद्वानों ने उसमें से ऐसी २ सूक्ष्म बातें निकाली हैं जिसे समझ यूरोप के बड़े २ विज्ञान वेत्ता दंग होते हैं स्वामी दयानन्द रेल तार टेलिफोन तक वेद में सिद्ध करते हैं–पर नितान्त असभ्य इन धोंधा पण्डितों की इसमें कौनसी तारीफ ये तो बल्कि यही चाहते हैं कि हमारे हिन्दूधर्म में ऐसी ही अन्धाधुन्ध बनी रहे लोगों की आंख न खुलने पावे नहीं तो हमारी धूर्तता सब को खुल जायगी तब हमे काहे को कोई मानेगा मसल है–यह अन्धेर केतिक दिन रही जेतिक दिन रही तेतिक दिन सही–यदि इन पण्डितों में गत होती तो संस्कृत सब भांत बेकाम हो-जाती और भारत इस आरत दशा में आजाता–अब भी यदि ये चेत जायें तो हिन्दुस्तान को चेतते देर न हो पर ये अपनी हानि काहे को कभी सहना मंजूर करेंगे क्योंकि संशोधन और मुल्क के तरक्की की जितनी बातें सोची जाती हैं उनमें ब्राह्मणों की स्वार्थपरता की कलई सब में खुलती है इसी से ये नहीं चाहते कि उसमें कुछ खोद विनोद की जाय बरन सनातन के नाम से तुपी रहे जिसमें हमे पेट भरने का सुबीता रहे–हमारे मन में यही आता है कि देश सदा अब इसी दशा में न रहेगा इसके अभ्युत्थान के अंकुर जहां तहां जम चले हैं जल्दी ही कोई

ऐसा परिवर्तन होने वाला है कि हम सब और के और हो जायंगे अफसोस हमें इन ब्राह्मणों पर आता है कि इन की सर्वोत्तमता और मान्य तथा प्रतिष्ठा अब डगमगानी साथ ही साथ वर्तमान् हिन्दूधर्म भी अब देर तक चलने वाला नहीं है—रही हमारी संस्कृत वह दिन प्रतिदिन उभड़ती आवैगी केवल हिन्दुस्तान क्या वरन पृथ्वी का कोई हिस्सा न बच रहेगा जहां इसका प्रकाश न पहुंचेगा जो इसका ईश्वरीय भाषा और देव वाणी होने का पक्का सबूत है आर्य महा-पुरुषों की बुद्धि का सर्वस्व इसका सर्वतो भावेन अब तक छिपा रहना ही अचरज था—

# नृपतिचरितावली ।

## पहिले के आगे से—

गत अंकों में हमने राजपुताने के राजवंश की चरितावली का कुछ वृत्तान्त लिखा अब महराठों में जो राजपदाधिरूढ़ हैं उन का कुछ वृत्तान्त लिखते हैं—यद्यपि ये महराठे प्राचीन काल से हिन्दुस्तान में भूमि के अधिकारी नहीं हैं इतिहासों में मुगलानी सलतनत के पहले महराठों का कहीं नाम भी नहीं पाया जाता ईस्वी सन् की सोलहवीं सदी के मध्य में इन महराठों का उदय होना आरम्भ हुआ और सत्रहवीं सदी में तो ये यहां तक बढ़े कि लगभग सम्पूर्ण हिन्दुस्तान को निगल बैठे—सच पूछो तो मुसलमानों का ज़ोर हिन्दुस्तान में इन महराठों ही ने तोड़ा और हिन्दुओं में अब भी हुकूमत करने का हौसिला और खून में गरमी यदि कुछ बच रही है तो इन महराठों ही में बाकी है—महराठों में पहिले हम सेन्धिया की चरितावली से आरम्भ करते हैं—

सेन्धिया का राज्य जिसकी वर्त्तमान राजधानी ग्वालियर है मध्य हिन्दुस्तान में है—उत्तर की सरहद इसकी आगरे के सरकारी ज़िले धौलपुर और करौली के इलाके हैं—पूरब इसके बुन्देलखण्ड भूपाल की रियासत और सागर के सर्कारी ज़िले हैं—पश्चिम की सीमा जयपुर कोटा उदयपुर और बड़ौदे के जिलें हैं—दक्षिण की ओर हैदराबाद और हुल्कर की अमलदारी है—विस्तार में यह राज्य २९००० वर्ग मील है और आमदनी सवा करोड़ के ऊपर है दक्षिण में यह सल-तनत नर्बदा क्या वरन तापी नदी के दूसरे पार तक चली गई है—दक्षिण भाग

इसका विन्ध्य पर्वत से आच्छादित है जिसमें भील की जंगली कौम बसती है जंगल और झाड़ी यहां बहुत हैं कई जगह लोहे की खान भी है—सेन्धिया हुलकर और भूपाल का राज तीनों मिल कर प्राचीन मालवा देश कहा जा सक्ता है जिसकी मुख्य राजधानी उज्जैन या अवन्ती अब इसी ग्वालियर के राज्य में है—धरती मालवा की बड़ी उपजाऊ चिरकाल से प्रसिद्ध है कहावत है—"धरती मालव गहर गभीर। पग २ रोटी पग २ नीर" काली मिट्टी की धरती बरसात के उपरान्त जगह २ फट जाती है उन दर्रों में बीज पड़ने से पेड़ बहुत ज़ोर करते हैं—बड़ी नदी यहां चम्बल और बेतवा है जिसमें अनेक छोटी २ नदियां मिली हैं जिससे धरती इस राज्य की बहुधा बड़ी उपजाऊ है—इसका उत्तरी हिस्सा समभूमि है जंगलों में घास बहुत होती है जिससे जानवरों को चारे का बड़ा सुभीता है—सब तरह के अन्न रुई तेलहन ऊख नील की उपज यहां अच्छी होती है अफीम यहां बहुत पैदा होती है और बाहर भी जाती है गेहूं के लिये मालवा बहुत दिनों से प्रसिद्ध है—राज यद्यपि यह महराठों का है किन्तु महराठे यहां बहुत कम हैं राज भर में डेढ़ लाख से अधिक न होंगे कुल आबादी सन् ८१ की मरदुमशुमारी में ३०३०७४३ थी जिसमें ब्राह्मण और राजपूत सब से अधिक है—राजधानी ग्वालियर एक पहाड़ी के नीचे बसी है पहाड़ी के ऊपर जो ३४२ फुट ऊंची है एक बहुत मज़बूत किला लम्बाई में प्रायः पौन मील के लगभग लम्बा बना है—ग्वालियर का दूसरा नाम लश्कर है पहिले सेन्धिया की राजधानी उज्जैन थी और लश्कर उसका सदा चढ़ाई और लड़ाई पर रहता था पर जब से उसके लश्कर का डेरा ग्वालियर में पड़ा तब से फिर वहां से न हटा और वही मुकाम राजधानी और छावनी का होगया—पास ही सुवर्णरेखा नदी के दूसरे पार मुहम्मद गौस के मकबरे और मियां तानसेन की जो अकबर का प्रसिद्ध कलामत था कबर है—कबर पर इमली का एक पेड़ है बहुत लोगों का निश्चय है जो उस इमली की पत्ती चबाय उसकी आवाज़ मीठी हो जाय और गाना उसे जल्दी आजाय—राजधानी ग्वालियर आगरा से ६५ मील दक्षिण को है जैनियों के यहां कई एक पुराने मन्दिर हैं और राजा मानसिंह की बनवाई महलें हैं—पहाड़ पर जो किला है वह ७७३ ईस्वी में बनवाया गया था १०२३ में इस किले पर महमूद ग़ज़नवी ने भी हमला किया था और उपरान्त कई बार इसको

U.P. 891.4305/H6174.V.9
2157 dt. 5-11-74. Rs. 7500.00 Comp.

जुदे २ लोगों ने आक्रमण किया—अन्त सेन्धिया ने इसे लिया और तब से यह उन्हीं के दखल में आज तक बना है—ग्वालियर के पास ही लश्कर हाल में बसाया गया है आबादी इसकी सन् ९१ में ८५००० थी यहां एक कालेज है जिसमें ५०० विद्यार्थी पढ़ते होंगे महाराज की सीसमहल और बाग देखने लायक है—

दूसरा नगर सेन्धिया के राज्य में अवन्ती या उज्जैन एक तीर्थ स्थान सप्त-पुरी में एक है "अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः" सान्दीपिन कृष्ण के गुरु यहीं के रहने वाले थे "काश्यं सान्दीपिनं नाम अवन्तिपुरवासिनम्" ऐसा भागवत में लिखा है इससे मालूम होता है अवन्ती बहुत दिनों से विद्या का स्थान है कालिदास आदि विक्रमा-दित्य की सभा के मण्डन कवि सब यहीं हुये हैं—ग्वालियर से २६० मील नैऋत्य कोण को दक्षिण को झुकता हुआ सिप्रा नदी के दक्षिण किनारे पर यह पुराना नगर बसा है—विक्रमाब्द के दोसौ वर्ष पहिले उस समय के पटने के राजा अशोक जो बौद्ध थे उन के अधिकार में उज्जैन आया उपरान्त विक्रमादित्य की यह राजधानी हुई विक्रम के पीछे जुदे२ राजाओं के अधिकार में उज्जैन आता गया—सन् ईस्वी १५७१ में अकबर ने इसे फतह कर अपने राज्य में मिला लिया किन्तु मुगलानी सलतनत के छिन्न भिन्न हो जाने परमहराठों ने इसे लेलिया—सन् ईस्वी १७९२ में यह हुल्कर के कब्ज़े में आया उपरान्त फिर सेन्धिया के—सन् १८१० में दौलतराव सेन्धियान ने उज्जैन से हटाय ग्वालियर को अपनी राजधानी किया पुराना उज्जैन तो अब उजाड़ है नया उज्जैन ६ मील के गिर्द में समुद्र की सतह से १७०० फुट की उचाई पर बसा है—जैपुर के महाराज जैसिंह की बनवाई एक वेधशाला यहां है बाराहमिहर अति प्रसिद्ध ज्योतिषी कालिदास के सम-कालीन अपने ग्रन्थ बाराही संहिता बृहज्जातक लघुजातक आदि ग्रन्थों में उदय अस्त का ध्रुवा यहीं से माना है तब से और सब ज्योतिषी भी उदय अस्त को उज्जैनी के ध्रुवा से मानते हैं—अब यह ३३००० आदमियों की बस्ती है—महाराज विक्रमादित्य के समय में यह शहर बड़ी रौनक पर था और बादशाही अम-ल्दारी में सूबे मालवा की राजधानी थी—शहर के बाहर एक टीले पर भर्तृहरि की गुफा देखने योग्य स्थान है महाकाल महादेव का यहां अति प्रसिद्ध स्थान है जिन के पूजन का माहात्म्य रामेश्वर आदि ज्योतिर्लिंग से कम नहीं है—विक्र-

मादित्य का बनवाया पुराना मन्दिर शमशुद्दीन अलतमश ने जो सन् ईस्वी१२१० में दिल्ली के तख्त पर बैठा ढहवाय डाला—सिवाय तीर्थभूमि के यह अवन्ती एक बड़ा ऐतिहासिक स्थान है बहुधा इतिहास लिखने वाले और कवियों ने अवन्ती का हवाला दिया है कथासरित्सागर वाले ने उदयन के वृत्तान्त में अवन्ती का बहुत कुछ वर्णन किया है कालिदास ने भी मेघदूत के कई श्लोक में इसका वर्णन किया है—

प्राप्यावन्तीमुदयनकथां कोविदग्रामवृद्धान्,
पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम् ।
स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गांगतानां,
शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम् ॥

अवन्ती के साथ ही विशालापुरी का भी वर्णन कवि ने किया है विशाला भी कहीं यहीं पर रही होगी महाकाल का भी वर्णन कई श्लोक में किया गया है—

अन्यन्तस्मिन् जलधरमहाकालमासाद्यकाले—
स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः ।
कुर्वन्सन्ध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीया—
मामन्द्राणां फलमविकलं लप्स्यसे गर्जितानाम्॥ इत्यादि

शहर से ४ मील उत्तर कालिया दह गांव के पास सिप्रा नदी के टापू में बादशाही ज़माने का बना एक पुराना मकान है गर्मियों में बड़े ही आराम की जगह है नदी का पानी मकान के हौज़ में फौहारों की रास्ता से गुज़रता हुआ बहता है देखने योग्य स्थान है—उज्जैन से प्रायः ८० मील नैर्ऋत्य कोण को बाग नाम की एक छोटी सी बस्ती है वहां से दो कोस पर पहाड़ के पत्थर काटकर गुफा के तौर ४ मन्दिर बौधमत के बने हैं यह भी स्थान देखने योग्य है एक मन्दिर का चौक करीब ८४ फुट मील मुरब्बा का होगा—ग्वालियर से दक्षिण वेत्रवती या बेतवा नदी पर भिलसा है कदाचित् यही विशाला नगरी रही हो यह शहरपनाह के भीतर ५००० आदमियों की बस्ती है यहां भी बौद्धमत के कई एक मन्दिर है—ग्वालियर से ४००० मील दक्षिण नैर्ऋत्य कोण को झुकता तापी

नदी के दहिने किनारे पर बुढानपुर बुढानशाह का आबाद किया शहरपनाह के भीतर बसा हुआ है जिस्का घेरा अनुमान १२ मील का होगा यहां रुई की बड़ी तिजारत होती है बुढ़ानपुर की रुई मशहूर है—घरों में लकड़ी पर बहुत अच्छी नक्काशी देखने में आती है नहर यहां गली २ घूमी हुई है चौक चौड़ा और सुथरा बना है मुसल्मान यहां बहुत हैं और प्रायः धनी हैं—तापी नदी के किनारे बादशाही महल और किले के निशान अब तक देखने में आते हैं किसी समय यह खानदेश की राजधानी थी—ग्वालियर से चालीस मील दक्षिण नैर्ऋत्य कोण को झुकता कानीसिंध के दहने कनारे पहाड़ के नीचे नरवर का पुराना शहर बसा है, और पहाड़ के ऊपर क़िला है किसी समय में वह निषधदेश के राजा नल की राजधानी था—ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋत्यकोण को नीमच की छावनी है और उसी तरफ ३८५ मील पर चम्पानेर अथवा पवनगढ़ का क़िला एक खड़े पहाड़ पर जो २५०० फुटसे कम ऊंचा नहीं है बहुत मज़बूत बना है, पहाड़ के नीचे किसी समय में कई कोस तक चम्पानेर का शहर बस्ता था, पर अब उजाड़ और जंगल है, खंडहरों में शेर और भील रहते हैं, बड़ोदा वहां से कुल बाईस मील नैर्ऋत कोन को रह जाता है—भूतपूर्व सेंधिया जियाजी महाराज फौज के बड़े शौकीन थे जैसी फौज इस समय ग्वालियर की रियासत में है वैसी किसी रजवाड़े में नहीं है रुपया भी जियाजी ने बहुत जमा किया साढ़े पकरोड़ रुपया छोड़ सुरधाम सिधारे—सेन्धिया के राजवंश की बुनियाद डालने वाले रानो जी का यद्यपि कुलीन राजपूत घराने से लगाव था किन्तु अत्यन्त गरीबी की हालत में आय इन का घराना खेती बारी की जीवाका से अपना गुज़रान करता था—रानोजी सेन्धिया सत्रहवीं सदी के आरम्भ में हुये और बाला जी विश्वनाथ पेशवा की जूती बरदारी में नौकर हुये—एक दिन पेशवा राजा साहू की मुलाकात को आये थे मुलाकात कर लौटे तो डेहुड़ो के पास ही इसे सोते हुये पाया किन्तु जूती अपने सिरहने रक्खे था और हाथ में जूती मज़बूती से थांबे हुये था—इसकी स्वामि भक्ति पर बाला जी प्रसन्न हो रानो जी को मालवा के ज़िले में थोड़ीसी जागीर दे अपने गारद के सिपाहियों में इसे भरती कर लिया क्रमशः बढ़ते २ रानो जी बड़ी भारी जागीर छोड़ कर मरा—अहमदशाह दुर्रानी के साथ पानीपत की आखिरी लड़ाई में पेशवा के

हारजाने पर गइकवाड़ हुलकर और सेन्धिया ये तीनों स्वच्छन्द राजा हो गये और जितना मुल्क जिस्के पास उस समय था उस्पर अपना कब्जा जमाय केवल नाममात्र को पेशवा के आधीन रहे—धीरे २ सन् ५७ के बड़े बल्बे में पेशवा का वंश जड़ पेड़ से उच्छिन्न कर दिया गया सेन्धिया हुलकर गइकवाड़ हिकमत अमली को काम में लाते हुये अब तक कायम हैं—मुल्क और आमदनी में इस समय हिन्दुस्तानी रियासतों में सेन्धिया का तीसरा दरजा है—औवल नीज़ाम दोयम गइकवाड़ सेउम सेन्धिया—नये महाराज माधोराव सेन्धिया अब बालिग होने वाले हैं इन्हों ने तालीम बहुत अच्छी पाई और राज्य के प्रबन्ध करने में इन की बड़ी रुचि है सब तरह पर लायक और होनहार सुनने में आते हैं—इधर आठ दस वर्ष के बीच राज्य में विद्या की बड़ी वृद्धि हुई है अब इस समय राज भर में १४८ स्कूल हैं जिन में ९००० के करीब लड़के पढ़ते हैं—कम से कम १२ बड़े अस्पताल राजभर में हैं—

## इन्दोर—

इस राज्य का वर्ग मील ८४०० है जन संख्या १०५४२३७ है मालगुज़ारी ७० लाख साल की है—महराठों में सेन्धिया से उत्तर दूसरा दर्जा हुलकर ही का है राज्य के उत्तरी हिस्से में चम्बल और दक्षिणी हिस्से में नर्बदा बड़ी नदियें में है—दक्षिणी हिस्सा सब ओर से विन्ध्यपहाड़ की ढलुआ घाटी है काली मिट्टी की धरती बड़ी उपजाऊ है—रुई बहुत पैदा होती है—गल्ला अफीम तेलहन ऊख और तमाखू की भी उपज यहां अधिक है—राजपूत इस राज्य में भी बहुत हैं—बनिये इस राज्य में बहुत और बड़े रोज़गारी हैं—सेन्धिया को फौज आरास्ता रखने का बड़ा शौक था हुलकर को राज में वैपार की वृद्धि में बड़ी रुचि है अपने राज में कई एक पुतलीघर कायम किया है—हुलकर स्टेटरेलवे खंडवा से इन्दोर को गई है इन्दोर से आगरा और दिल्ली की रेल में मिला दी गई है इन्दोर होते हुये आगरा से बंबई को एक पक्की सड़क भी गई है—भील इस राज्य में बहुत हैं ये बड़े जंगली और लुटेरे हैं बहुत से इन्में के फौज और पुलिस में भरती होने से कुछ २ सभ्य होते चले हैं—पूर्व इस्के ग्वालियर का राज्य उत्तर को ग्वालियर और धार की अमल्दारी पश्चिम में बड़ोदा का राज्य और दक्षिण में खानदेश के सर्कारी जिले हैं बीच २ सेन्धिया और हुलकर के इलाके ऐसे मिले हैं

कि इसका ठीक लम्बान चौड़ान बतलाना कठिन है—सुनते हैं हुल्कर और सेन्धिया के बीच जब मुल्क बंटा तो चुंदरी की तरह एक परगना हुल्कर ने लिया तो दूसरा सेन्धिया ने—राजधानी इन्दौर सन ईस्वी ९१ में ९२००० आदमी की बस्ती थी जिसे १७९० ईस्वी में अहिल्या बाई ने बसाया था—पानी की कलें रोशनी का प्रबन्ध और सड़कों पर फर्श हाल में किया गया है महाराज की महल देखने लायक है राज की ओर से एक कालेज और अस्पताल भी है—समुद्र से २००० फुट की उंचाई पर एक ढलुये मैदान में यह शहर बसा है पहाड़ यहां से बहुत नगीच पर है उंचाई पर बसा है इससे गरमी यहां बहुत नहीं होती—बाज़ार चौड़ा है शहर में सफाई का प्रबन्ध भी अच्छा है—सरकारी छावनी इन्दौर से १० मील पर सड़क में है—इन्दौर से ४० मील दक्षिण नर्मदा के तटपर महेश्र प्राचीन माहिष्मती सहस्त्रबाहु अर्जुन की पुरानी राजधानी है—पुराण वाले और कवि लोगों ने माहिष्मती के वर्णन में बहुत कुछ लिखा है—यहां पर एक पुराना किला है जिसके भीतर अहिल्या बाई के बनवाये महल देखने योग्य हैं और नदी किनारे पक्के घाट बने हैं—माहिष्मती से ५ मील पूर्व नर्मदा के तट पर कच्ची शहरपनाह के भीतर मण्डलेश्वर व्यौपर की जगह है—छोटासा पक्का क़िला भी यहां है—नर्मदा के दहिने किनारे मण्डलेश्वर से थोड़ी दूर पर ओंकार महादेव का मन्दिर तीर्थस्थान है स्नान के लिये पक्के घाट भी यहां बने हैं मन्दिर के पास ही पहाड़ी पर दो उजाड़ किले हैं मानधाता और मुचकुन्द के बनाये किले इसे लोग कहते हैं—बहुत से टूटे फूटे खम्भे और देवताओं की मूरतें यहां इतनी पड़ी हैं जिससे मालूम होता है यह स्थान किसी समय घना बसा था मुसलमानों की बदौलत इस दशा को पहुंचा—इस घराने की बुनियाद डालने वाले मल्हार राव हुल्कर जाति के गड़रिया थे—१७२४ ईस्वी में बाला जी विश्व नाथ पेशवा के समय ५०० सवारों के सिरदार हो नौकर हुये थे और ऐसा जल्द बढ़े कि अपने मरने तक १७६५ ईस्वी में ७५ लाख सालाना मालगुज़ारी का मुल्क छोड़ गये—उपरान्त मल्हार राव का पोता मलीराव उत्तराधिकारी किया गया किन्तु यह केवल ९ महीने राज कर सका उसके उपरान्त इसकी मा अहिल्या बाई ने कमेण्डरनचीफ तुकाजी राव की सहायता से ३० वर्ष तक राज किया—इसके पुण्य की पताका काशी प्रयाग गया मथुरा आदि प्रधान

तीर्थों में अब तक फहरा रही है—इन २ स्थानों में अहिल्या बाई के स्थापित क्षेत्र अब तक चल रहे हैं घाट मन्दिर शिवालै बने हुये अहिल्या के नाम को चिरस्थायी कर रहे हैं—अब इस समय महाराज सर शिवा जी राव हुल्कर बहादुर जी—सी—एस—आई राज्य करते हैं ॥

## भूपाल ॥

यह रियासत मील मुरब्बा ६८७३ मील है आबादी सन् ईस्वी ९१ में ९५४९०१ थी—मालगुज़ारी ४० लाख सालाना है—पूर्व को सागर और नर्मदा के सर्कारी ज़िले और तीन तरफ सेन्धिया की रियासतों से घिरा है शहर पक्की शहरपनाह के भीतर राजा भोज के मन्त्री ने बसाया था—शहर से दक्षिण पश्चिम की ओर ४ मील लम्बा और डेढ़ मील चौड़ा एक ताल है इसी से इसका नाम भूपालताल पड़ा—भूपाल से २२ मील अग्निकोण को सिहोरा सर्कारी छावनी है—इस राज्य में भी कोल भील आदि जंगली फिरके बहुत हैं—पृथ्वी राज्य की अधिकांश उर्वरा है जिसमें हर तरह के अन्न की उपज अच्छी होती है—

इस रियासत की बुनियाद डालने वाला एक अफगानी दोस्तमुहम्मद था और यह औरंगज़ेब की फौज़ में नौकर था—औरंगज़ेब के मरने पर मुगलानी सलतनत की गड़बड़ी में इस को एक स्वच्छन्द रियासत की बुनियाद डालने का भरपूर मौका मिला और जितना मुल्क अब भूपाल की रियासत में सब दाब बैठा—सन ईस्वी १८४४ में नौवाब के मरने पर उसकी बेवा सिकन्दर बेगम जानशीन हुईं—सत्तावन के बलवे में इस ने सर्कार की बड़ी खैरखाही की—सन १८६८ में इसके मरने पर शाह जहां बेगम अब रियासत की मालिक हैं—

## रतलाम—

यह राज्य ७२९ वर्ग मील है जन संख्या सन ९१ में ८७३१४ थी आमदनी साढ़े ६ लाख साल की है—यह नगर से नूटलइन्डिया रेलवे का एक प्रधान स्टेशन है—सन ९१ में इसकी आबादी ३१००० आदमी की थी—गल्ला और अफीम के बैपार का यह मध्य है और इस प्रान्त की प्रसिद्ध मण्डई है—महाराज का महल हाल में बनवाया गया है जिसके चारो ओर बाग़ देखने लायक है यहां पर एक कालेज और अस्पताल भी है—महाराज जोधपुर के राजवंश में हैं और

मालवा के राजपूतों में इन का औवल दरजा है—महाराज के पूर्वजों में रतनसिंह नाम के किसी राजपूत ने दिल्ली के बादशाह शाहजहां को बड़ी बीरता के प्रकाश करने से खुशकर इनाम में रतलाम की जागीर मालवा में पाया था—अब यह सेन्धिया का एक करद राज्य समझा जाता है महाराज सर रणजीतसिंह के—सी—आई—ई—राठौर राजपूत हैं—

## धार—

वर्गमील १७४० आबादी सन ९१ में १४७१६९ थी मालगुज़ारी साढ़े ७ लाख के लग भग सालाना है—राजधानी धार १५००० मनुष्यों की बस्ती है समुद्र से १९०० फुट की उंचाई पर कच्ची शहरपनाह के भीतर यह नगर बसा है शहर से अलग एक क़िला भी ऊंची धरती पर बना है—यह धारानगर राजा भोजदेव की प्राचीन समय में राजधानी थी राजा भोज का समय विक्रमाब्द के ५ और ६ शताब्द के बीच में निश्चय किया गया है—भोजदेव स्वयं बड़े पण्डित और कवि थे और कवियों की इतनी कदर करते थे कि एक श्लोक का एक लाख रुपया तक पारितोषिक इन्हों ने दिया है—सरस्वतीकण्ठाभरण अलङ्कार का एक अनुपम ग्रन्थ भोज ही का बनाया है जिस्में इन्हों ने काव्य के सब अङ्ग भर दिये हैं—काव्यप्रकाश काव्यादर्श साहित्यदर्पण वाग्भट्टालंकार कुवलयानन्द आदि कई ग्रन्थ अलंकार के हैं किन्तु कण्ठाभरण के सदृश साङ्गोपाङ्ग काव्य के सब अंगों से पूर्ण ऐसा कोई नहीं है—संस्कृत के प्रसिद्ध कवि बाण मयूर भारवि भवभूति आदि भोजदेव ही के समय में हुये हैं—५०० प्रसिद्ध पण्डित राजा भोजदेव की सभा को सुशोभित करते थे—हिन्दुस्तान का कोई प्रान्त नहीं बचा जहां के पण्डित भोज की सभा में न रहे हों बंगाल से लगाय कश्मीर और सेतुबन्धरामेश्वर तक के विद्वान् भोजदेव से मिलने को आये थे—विक्रम के उपरान्त ऐसा विद्यानुरागी दूसरा राजा हिन्दुस्तान में नहीं हुआ यहां तक कि विक्रम और भोज का नाम साथ २ चलता है और गुण गाहक की उपमा इन दोनों से अब इस समय दी जाती है—भोज का समय संस्कृत के साहित्य के परमोन्नति का था—भोजवृत्ति योगसूत्र पर इन्हीं भोज की बनाई अनुमान की जाती है भोज का विशेष वृत्तान्त इन के जीवनचरित्र में हम फिर के लिखेंगे—वर्तमान राजवंश की बुनियाद डालने वाले आनन्दराव थे जिन को सन ईस्वी १७४९ में बाजीराव पेशवा

से चार बतीर जागीर के दिया गया था राज छोटे २ ज़मीदारों में बहुत बटा हुआ है जो महाराज को सालाना कर दिया करते हैं राज भर में १ अंगरेज़ी स्कूल है और १८ देशभाषा के पाठशाले हैं और दो औषधालय हैं---महाराज पमार क्षत्री हैं प्रबन्ध उत्तम है—

## देवास ॥

धार से मिली एक दूसरी छोटीसी रियासत देवास है यह रियासत न्यूनाधिक ५ लाख साल की होगी–६००० आदमियों की बस्ती छोटासा रमणीक नगर है महाराज राजपूतवंश के क्षत्री हैं–अब इसके उपरान्त मध्यप्रदेश के कई एक छोटे २ राज्य हैं जिन को मध्यप्रदेश के रजवाड़ों के साथ अलग लिखैंगे अब हम गइकवाड़ के राज्य का वृत्तान्त लिखते हैं इस लिये कि गइकवाड़ का राजवंश महराठों ही में है जिस्में महाराष्ट्र नृपतिचरितावली सब एक ही साथ संग्रहीत रहे–विस्तार गइकवाड़ के राज्य का वर्गमील ८५७० मील है जनसंख्या सन् इस्वी ९१ में २४१४२०० थी भूमि कर १ करोड़ ४० लाख है---विस्तार और जन संख्या में इससे बढ़ कर पश्चिमी हिन्दुस्तान के कोई राज्य नहीं हैं गुजरात के हर एक ज़िलों में गइकवाड़ का थोड़ा या बहुत इलाका मौजूद है नदियां इस राज्य में बहुत हैं इसी लिये गुजरात हिन्दुस्तान का चमनिस्तान या बाग कहलाता है—धरती यहां की बड़ी उपजाऊ और रमभूमि है उत्तर पश्चिम का भूभाग काठियावार कहलाता है बिलकुल रेतीला और कंकरीला है बालुओं में छोटे २ टुकड़े नरम पत्थर के मिले हुये हैं जो ऐसे नरम हैं कि हाथ से मलो तो चूर २ हो जाते हैं–दस हिस्से में नौ हिस्से यहां हिन्दू हैं बाकी में जैनी मुसल्मान और पारसी हैं—राज्य भर में पौने दो लाख मुसल्मान ४७००० जैनी ८००० पारसी करीब ४ लाख के कुनबी जिन का पेशा खेती है १४०००० ब्राह्मण ८०००० राजपूत ५७००० बनिये सन ८१ की मर्दुमशुमारी में थे—बनिये यहां के बड़े धनी अच्छी दशा में और बड़े रोज़गारी हैं राज्य भर में कई एक पुतली घर हैं जिन के बने कपड़े चीन तक रवाना किये जाते हैं–लोहे के सरौते चाकू इत्यादि काठियावार के प्रसिद्ध है, कच्छी घोड़े और बड़ोदे के बैल भी मशहूर हैं–

यह राज डुलकर और सेन्धिया की अमल्दारी के पश्चिम समुद्र पर्यन्त चला गया है उदयपुर और सिरोही की रियासत के दक्षिण नर्बदा तक है–धन की बहु-

तान इस राज्य में बहुत है विशेष कर राजधानी के आस पास—काठियावार जो गुजरात प्रायद्वीप का मध्य है जंगल और पहाड़ों से भरा है—काठियावार के रहने वाले अपना नाम काठी इस लिये कहते हैं कि जब पाण्डव कौरवों से जुआ में हार बन में जा रहे और एक वर्ष छिप के रहने का प्रण था प्रगट हो जाने पर फिर १२ वर्ष बन में रहैं—उस एक वर्ष गुप्तवास में दुर्योधन ने उन को प्रगट करने की बहुत से उपाय सोंचा उन्में एक यह भी था कि जिस देश में पाण्डवों के छिपे रहने का संभव है वहां की गौवैं हरली जावैं जो क्षत्री होगा वह अवश्य गौओं के बचाने को सामने आवैगा पर यह बुरा काम गौओं का चुराना दुर्योधन के आश्रितों में से किसी ने स्वीकार न किया तब करण ने अपनी छड़ी पृथ्वी पर पटकी और उससे एक आदमी पैदा हुआ—काठ की छड़ी के पटकने से पैदा हुआ इससे उसका नाम काठी पड़ा और उसको करण ने आज्ञादी कि तुम गौवैं चुरा लाओ तुम्हें हम बरदान देते हैं कि चोरी का कलंक न लगेगा——उसी के वंश में ये काठी हैं जिन्हों ने चोरी डकैती के लिये यह किस्सा गढ़ रक्खा है—गुजरात की स्त्रियां प्रसिद्ध हैं गुजरात का दूसरा नाम अन्ध्र भी है अन्ध्रदेश की स्त्रियों का काव्यों में बहुत चर्चा है—अकीक या माणिक की यहां खान है—राजधानी बड़ौदा शहरपनाह के भीतर विश्वामित्री नदी के ऊपर बसा है—इस नदी के ऊपर पत्थर का पक्का पुल बन्धा है सन् ईस्वी ९१ में इसकी आबादी ११६४६० थी—बम्बईहाथा में यह शहर आबादी में चौथे दरजे का है—बाज़ार चौड़ा और चौपड़ के हील का घरों में प्रायः काठ का काम बहुत है—नज़रबाग नाम का महल में गइकवाड़ के जवाहिरात का खज़ाना है ३ करोड़ के जवाहिरात सुनते हैं उस्में जमा हैं पुराने मकानात कोई उमदा नहीं हैं—महाराजा साहबने जो नई महल बनवाई हैं अस्पताल पुस्तकालय और बरोदाकालेज सब देखने लायक इमारतें हैं—महाराज सर सैयाजी राव बहादुर जी—सी—एस—आई—बड़े विद्वान् हैं और विद्यावृद्धि की ओर इन का बहुत ध्यान है और तरुण अवस्था के हैं राजकाज बड़ी योग्यता के साथ करते हैं—

इसी राज में गुजरात की पश्चिम सीमा पर हिन्दुओं का बड़ा प्रसिद्ध तीर्थ द्वारिकापुरी एक टापू पर है यह मन्दिर उचाई में १४० फुट है—रनछोर जी की पुरानी मूर्ति ६०० वर्ष हुये मुसलमानों की डर से पण्डों ने लेजा कर गुजरात

के पूरब डाकोर में मंदोच के सामने घोंघावन्दर में लेजा रक्खा जो खम्भात की खाड़ी में है और उस मन्दिर में दूसरी नई मूर्ति स्थापन की—और वहां भी जब न रख सके तब एक छोटे से टापू शंकु द्वार में लेजा रक्खा यहीं पर गोमतीनदी है—गोमतीनदी के चक्र की महिमा शालग्राम के बराबर समझी जाती है यात्री लोग गोमती में स्नान कर रणछोर जी की मूर्ति का दर्शन करते हैं यहां से १८ मील पर वह स्थान है जहां लोहे की शङ्खमुद्रा से भुजा के ऊपर दगाते हैं यहीं पर एक तालाब है जिसमें लोपी चन्दन निकलता है जिसका वैष्णव लोग तिलक देते हैं—

गइकवाड़ जाति के अहीर हैं १७३० ईस्वी में बाजीराय पेशवा ने पीलाजी गइकवाड़ को बड़ोदा में अमीर गुजरात के सूबेदार के मुकर्रर किया तब से गइकवाड़ बराबर बड़ोदा में राज करते आये—पेशवा के अस्त होने के उपरान्त हुलकर और सेन्धिया के तरह गइकवाड़ भी बड़ोदा में स्वच्छन्द राजा हो गये—१८५६ ईस्वी में खंडेराव गइकवाड़ हुये जिन्हों ने सन् ५७ के बलवे में सरकार की बड़ी मदत की जिसके लिये ३ लाख की जागीर भी इनाम में पाई—खण्डेराव निस्सन्तान १८७० ईस्वी में स्वर्गवासी हुये तब उन के भाई मल्हारराव गइकवाड़ हुये किन्तु लार्ड नार्थब्रूक के समय मल्हार राव पर कई एक दोष लगाये गये इस कारण गद्दी से उतार दिये गये तब जमना बाई खण्डेराव की विधवा रानी ने गवर्नमेंट की सलाह से सैया जी राव को गोद लिया जो गइकवाड़ किये गये और उन की नाबालगी में सर टी माधोराव दीवान मुकर्रर किये गये—माधोराव का किया राज्य का उत्तम प्रबन्ध अब तक प्रचलित है जिससे बड़ोदा राज्य का इन्तिज़ाम अंगरेजी राज्य के इन्तिज़ाम के बराबरी का दावा कर सक्ता है—राज्य भर में १२ अस्पताल हैं और २३ दवाखाने हैं सन् ९० ईस्वी में ५११ स्कूल थे जिन्में ५४८०० के करीब लड़के पढ़ते हैं—बड़ोदा में एक स्कूल कारीगरी इत्यादि सिखाने का है ४२ बाला पाठशाला है जिसमें ५००० के लगभग लड़कियां पढ़ती हैं विद्या की बेहद तरक्की है—काठियावार का प्रायद्वीप जिसका प्राचीन नाम सौराष्ट्र है १८७ छोटी बड़ी रियासतों में बटा हुआ है और सोलंकी क्षत्री, झाल, काठी, गोहेल, जाट, मुसलमान, महराठे, आदि कई जाति के लोग यहां राज करते हैं जिन्में १३ ऐसे हैं जो बिल्कुल स्वच्छन्द हैं किसी को कर नहीं देते—

१०५ अंगरेजी गवर्नमेंट के खिराज गुज़ार हैं ७९ गइकवाड़ को कर देते हैं—बड़ा हिस्सा काठियावार का बड़ोदा ही के अधिकार में है—गुजरात प्रान्त के और २ राज्यों का वृत्तान्त हम दूसरे अंक में देंगे—

## लाजिंगहौस ऐक्ट और माघमेले का अन्त ॥

माघमेला एक तो योंही टिक्कसों की भर मार के कारन तहस नहस हो रहा है दूसरे दाल भात में मूसलचन्द सा यह लाजिंगहौस आकूदा—हम पूछते हैं इस ऐक्ट के जारी करने की ज़रूरत क्या थी "फलं न किंचिद् अशुभा समाप्तिः" यदि यह कहा जाय कि पानी के टिकस की भांत म्युनिसिपलिटी को इससे अधिक फाइदा होगा और पानी की कल जारी करने में जो कई लाख का करजा है सो इस ऐक्ट की आमदनी से जल्द अदा होगा सो भी नहीं है—यह ऐक्ट प्रयाग काशी मथुरा आदि तीर्थस्थान के पण्डों को बड़ी ही तकलीफ का बाइस है हम तो समझते हैं बेहतर यही होगा कि ये पण्डे ही न उजाड़ दिये जांये या सब तीर्थ ही उठा दिये जांय न रहैगा बांस न बजैगी बांसुरी इस तरह के ऐक्ट जारी कर उन बेचारों को क्यों दुर्गति भोगाई जाती है—यहां १४०० घर प्रयाग वालों के समझे गये हैं उनमें सब ऐसे नहीं हैं जिन के यहां नित्य यात्री आया करते हों ऐसे मुशकिल से दोसौ या तीन सौ होंगे जिन को यात्रियों के टिकाने के लिये एक अलग मकान की ज़रूरत है—इसलिये उन्हीं दोसौ तीन सौ को लइसेन्स की ज़रूरत है जिन की लइसेन्स की आमदनी हज़ार बारह सौ से अधिक हो ही नहीं सक्ती तो मालूम हुआ कि विशेष आमदनी म्युनिसिपलिटी को इसके द्वारा होना संभव नहीं है किन्तु तकलीफ इससे उन को बेहद्द बढ़ैगी—जैसी इबारत इस ऐक्ट की है उससे बोध होता है कि उसकी पूरी पाबन्दी होना बेहद्द कठिन है हां पुलीस की अलबत्ता बन पड़ैगी कि बात २ में उन को ये अपने जाल में फंसा ले सकैंगे—न यात्रियों ही को इस ऐक्ट से कोई आराम है क्योंकि जैसा सफाई इत्यादि का जाल इस एक्ट में फैलाया गया है उससे उन परदेसी नावाकिफ यात्री बेचारों को और भी सर द और तकलीफ बढ़ी—जिस समय में हवा बिगड़ती है और बीमारी कसरत से फैलती है उस वक्त यह सब सफाई धरी रह जाती है मौत गाल बजाती हुई सैकड़ों को चटपट निगल बैठती है—स्वच्छ नीरोग मौसिम में सफाई का होना न होना दोनों एकसा है लाजिंग

होस के नाम से व्यर्थ का ढकोसला अलबत्ता रचा गया है—पश्चिमोत्तर के लाट के लिये कौंसल हैहु है लाज़िम हुआ कि कौंसिल अपनी कुछ कारस्वाई दिखलावे कुछ न मिला लाजिंग ऐक्ट ही पासकर दिया—

# सौअजान एक सुजान ॥

## अंक १० के आगे से ॥

पंचानन नन्दू को उसी बाग में पुलिस के दारोगा से मिलाय चंपत हुआ—दारोगा अपने ढंग पर था कि इससे कुछ पुजावें भी और बात ही बात में इससे कबुला भी लें कि मैं कुसूर वार हूं—इधर नन्दू अपने ढंग पर था कि दारोगा को ज़रा भी उस बात की टोह न लगे जिस्के लिये वारेंट आया है और फसे तो हम और बाबू दोनों इसमें शामिल रहैं बाबू भी शरीक रहैंगे तो मुकद्दमे की भर पूर पैरवी की जायगी मैं अकेला पड़ गया तो बेमौत की मौत मरा—

नन्दू—( मन में ) पंचानन का यहां से चला जाना मेरे हक़ में निहायत मुज़िर हुआ—बेशक मैंने गलती किया जो इसे अपनी जमात में शरीक किया—मैंने कुछ और सोचा यहां कुछ और ही बात होगई—यह तो मैं जानता था कि यह उसी चन्दू का दोस्त है लेकिन मैंने समझा कि यह ठठोल दिल्लगी बाज़-मुफ्तखोरा है हमेशा अपने को खुश रखना किसी दूसरे को फसाय दिल्लगी देखना और हमेशा आराम से ज़िन्दगी काटना इसका माकूला है इसी से मैंने अपनी जमात में इसे बुलाया भी पर इस वख्त की कार रवाई से मैं इसे पहचान गया यह चन्दू का निहायत सच्चा दोस्त है चालांक तो पंचानन बेशक है किन्तु बड़ा खरा बेलौस और सच्चा आदमी है—जान पड़ता है यह मेरे आमालों को जानता है क्योंकि अब मैं खयाल करता हूं तो इसे छनक मेरी ओर से तभी से थी जब से इसने यहां कदम रक्खा—क्या तअज्जुब यह वारेंट भी चन्दू और पंचानन दोनों की सांट में आया हो खैर यहां तो मैं इस मरदूद दारोगा से किसी भांत निपटे लेता हूं पर मेरे घर पर मेरी गैर हाज़िरी में यह पंचानन और चन्दू दोनों मिल कोई फसाद बरपा करेंगे कि मुझे ज़रूर फस जाना पड़ेगा—बुद्धदास का भी नाम इस वारेंट में है उसे बिलकुल इसकी खबर नहीं है उसको भी चन्दू ने छुये है—बाबू को तो वह किसी न किसी तदबीर से बचालेगा यह

मुसीबत ज़रूर मुझे और बुद्धदास दोनों को भुगतना पड़ेगा खैर तो अब इसे तो टटोलें देखें यह किसी तरह मेरे चंगुल में आसके तो बहुत अच्छा हो (प्रकाश) हुज़ूर मैं गरीब आदमी हूं और सब तरह पर बेकुसूर हूं मैं तो जानता भी नहीं यह क्या बात है—हां अलबत्ता इन बाबुओं का मेरा दिनरात का साथ है खैर अब मेरी इज्ज़त हुज़ूर के हाथ है मुझे आप की खिदमत करने में भी कोई उज़्र नहीं है—मेरी जैसी औकात है बाहर नहीं हूं—

दारोगा—( मन में ) मैं इस बदमाश को खूब जानता हूं इसमें सन्देह नहीं इन बाबुओं को इसी ने खराब किया है बाबुओं पर क्या इसने न जानिये कितने रईसों को बिगाड़ डाला—इस मूंज़ी को तो मैं बहुत दिनों से तके था कई बार मेरे चंगुल में आया पर अपनी चालाकी से बचता चला गया—अच्छा पहिले इसे टटोलें तो इसमें कहां तक दम है—मुझे पूरा विश्वास है यह सब शरारत इसी की है पर तौभी इससे पता लग जायगा कि इन बाबुओं की कहां तक इसमें दस्तंदाज़ी है और कौन २ लोग इसमें शरीक हैं—मैंने उस हैरत अंगरेज़ बुद्धदास की भी फिकिर कर रक्खा है—सेठहीराचन्द की शिराफत का खयाल कर इन बाबुओं पर मुझे भी रहम आता है पर इन बदमाशों को तो हरगिज़ न छोड़ूंगा—( प्रकाश ) कहिये आप क्या कहते हैं इज्ज़त तो इस नाज़ुक ज़माने में मैं हूं या आप हो बची रहना खुदा के हाथ में है इसी लिये अक्लिमन्द लोग फूंक २ पांव रखते हैं— मसल है सांचे को आंच क्या अगर आप इसमें हैं नहीं तो खौफ किस बात को—कर नहीं तो डर क्या, अदालत इन्साफ़ के लिये है वहां दूध का दूध पानी का पानी छानबीन अलग २ कर दिया जाता है आप बेफिकिर रहें कुसूर नहीं किया तो तुम्हारा कुछ न होगा—

नन्दू—जी हां माफ कीजिये आप की बात कटती है अदालत में इन्साफ होता है यह आप नाहक कहरहे हैं उलटे का सीधा सीधे का उलटा वहां हमेशा होता है इन्साफ तो ऐशाही कभी साजनादिर—दूसरे यह कि अदालत तो रूपये की है अदालत ही पर क्या रूपये से क्या नहीं होता—खैर हुज़ूर से मैं तकरीर नहीं किया चाहता आप जो कहैं मैं उसे अंगीकार किये लेता हूं—

दारोगा—( मन में ) बुराइयों के करने में इसका जहवा खुला है अदालत ऐसे ही ऐसों की करतूत से बिगड़ती जाती है अकसर रूपये के ज़ोर से यह अब तक

बचता चला आया है इसी से इसके दिमाग में यह बात समाई हुई है कि अदालत रूपये की है खैर तुम बचा हमी से ठीक लगोगे (प्रगट) मुझे यकीन कामिल हो गया कि तुम ज़रूर इसमें कुसूरवार हो वह कोई दूसरा खर्फीफ मामिला रहा होगा जब तुम रुपये खरच बच गये—जानते हो यह कैसा टेढ़ा मुकद्दमा है जनाब ये जाल के मुकद्दमें हैं इसमें चौदह और डामिल की सज़ायें हैं—ऐसे २ गन्दे खयालों को दूर रखिये कि अदालत में उलटे का सीधा और सीधे का उलटा होता है अदालत इन्साफ के लिये है ऐसे ही ऐसे लोगों ने जैसे आप हैं अलबत्ता अदालत को बदनाम कर रक्खा है—

चौदह और डामिल का नाम सुन इसका चेहरा ज़र्द पड़ गया नस २ ढीली हो गई जो समझे था कि मैं अपनी चालाकी से बच जाऊंगा और पुलिस को भी अपना तरफदार करलूंगा वह सब उम्मेद जाती रही गिड़गिड़ा कर बोला—अच्छा तो अब मेरे निस्तार की क्या सूरत हो सक्ती है आप निश्चय जानिये मैं बे कुसूर हूं बाबू का मेरा दिन रात का साथ है इससे आप को मेरी ओर भी शक है और मै भी खराबी में पड़ता हूं—

दारोगा—जी हां ठीक है आप बिलकुल बे कुसूर हैं तुम समझते हो मेरे आमाल छिपे हैं—जनाब आप ही ने बाबू को भी खराब किया आप ऐसे लोगों का ऐसे २ मुकद्दमों से निस्तार होना मानो आवारगी और बुराई को फ़रोग पाने के लिये इशतियालक देना है—अच्छा आप तो अब रवाना हों उन दोनो की भी फिकिर की जाय—नकीअली! लो तुम इन्हें ले चलो मैं अब बाबू और बुद्धदास के लिये जाता हूं—खैर बाबू को तो मैं जानता हूं बुद्धदास का पता क्यों कर लगाऊं—बाबू नन्ददास आप बतला सकते हैं बुद्धदास कहां मिल सकैगा मैं समझता हूं बुद्धदास का नम्बर तुम से बहुत चढ़ा बढ़ा है बल्कि उसी के भरो से तुम्हें भी ऐसे २ कामों के लिये हिम्मत होती है—

नन्दू—मैं सच कहता हूं बुद्धदास से मुझे कोई सरोकार नहीं है सिर्फ इतना ही कि वह भी कभी २ बाबू साहब के यहां आया जाया करता है—मुझे तो यह भी खबर नहीं है कि वह कौन सा काम है जिसके लिये आप मुझे और बुद्धदास को इस वारेंट में गिरिफ्तार करते हैं—

दरोगा—जी हां आप कुछ नहीं जानते आप तो कोई मुन रिख हैं मुझे इससे क्या गर्ज़ है मुझे तो अदालत के हुकम का तकमीला करने से गर्ज है आप

वहीं जाकर अपनी सफाई कर लेना लो इसके हाथ में हथकड़ियां छोड़ इसे लेजाओ मैं अब उन दोनों के तलाश में जाता हूं–शेष–

## उपदेशों की अलग २ बानगी ॥

जहां गृहस्थ के लिये सबेरे से उठ सांझ ली अनेक २ चिन्ता और झींझट दावनगीर रहती है और नोन तेल लकड़ी की फिकिर एक दम भी फुरसत नहीं लेने देती वहां लोगों का तरह २ का उपदेश भी जी को डावाडोल किये रहता है किस्का २ उपदेश सुनैं किसे सच्चा मानैं किसे झूठ–गुरू लोग उपदेश देते हैं बच्चा दुनिया के बखेड़ों में मत पड़ो विद्या बुद्धि दोनों सन्मार्ग की लुटेरी हैं तुम अपने कोने में बैठ गोविन्द भजन किया करो जो कुछ कमालाओ स्त्री पुत्र चाहो मुह ताकते रह जांय मोटा झोटा खापी जो कुछ बचै वह ठाकुर जी के अर्पण कर दिया करो सन्तों के सत्कार से जो बचै उसे गुरू महाराज की भेट धर दिया करो–थोड़े से अंगरेजी पढ़े विधर्मी लोग उठ खड़े हुये हैं जिन्हों ने अपना नाम संशोधक और रिफार्मर रख लिया है वे भांत २ की कमेटियां और सभायें कर तुम्हें उसमें बुलावैं गे और सब तरह पर तुम्हें बढ़ावा देंगे पर तुम चौकस रहना उन की ओर न झुक पड़ना नहीं तो बच्चा नरक की आग में पड़े २ सड़ोगे कभी उद्धार न पावो गे–

पादरी साहब बाजार में खड़े उपदेश देते हैं प्रभु ईसा की सरन गहो वह तुम सबों के पाप की गठरी का हम्माल बन सूली पर चढ़ गया न कुछ दान का काम तपस्या की जरूरत न बड़े २ संयम नियम से शरीर सुखाने की आवश्यकता है उमदा से उमदा शराब पिया करो देह को आराम और सुख पहुंचाने में कहीं से कसर न होने पावे सिर्फ ईसा पर इमान लाओ मुक्ति तुम्हारी दासी और किंकरी होगी बस और चाहिये क्या " मुक्तिश्च मुक्तिश्च करस्थ एव "

अस्सी बरस की खोड़ही जप्पल बुढ़ियायें उपदेश देती हैं बेटा अब तुम सयाने भये घर दुआर की फिकिर रक्खा करो दुजहिनिया की नथिया टूटे है बतसिया का ब्याह नियरान है सदा फक्कड़ बने रहने से काम न सरिहै–कुपूत आवैं तपत सपूत आवैं नवत, भगवान् देखाई चार दिना में तुम नाती पोता के होइ हो झन २ पट २ करते घर में पांव न रक्खा करो पानी भरी खाल कौन जाने आज का है कल का हो–ऐसी चाल चलो जेह में जग में हंसी न हो ॥

घर वाली समझाती है हम ने सौ २ बार कहा सास ननद की बात हमसे सही नहीं जाती हमें अलग लैके रहो महीने में जितना कमाते हो भाई बन्धन के खिलाने पिलाने में सब का सब उठ जाता है उसी को जमा करते रहो तो गहनों से नख से सिख तक हम लद जांय—अन्त में ये भाई बन्ध तुम्हारे कोई काम न आवेंगे पास पूंजी बनी रहैगी तो सब भाई भतीजे बनैंगे नहीं तो कौड़ी के तीन तीन होगे तुम जानते नहीं—न बाप न भैया सबसे बड़ा रुपैया, सौ रुपये को तुम ठिकरी कर रहे हो अभी तुम्हें समझ नहीं पड़ता पीछे पछताओगे—

यार दोस्त उपदेश देते हैं वाही हो दुनिया के सुख और आराम से मुह मोड़ चरित्रशोधन के लिये जी दिये डालते हो जिस्में अपना बने सो करो जवानी की उमर खाने खेलने की होती है तुम अभी ही से बुड्ढों की तरह बुज़ुरगी और बुर्दबारी का जामा ओढ़ बैठे सो क्यों—घर में पड़े २ सड़ा करते हो शाम को ज़रा बाज़ार की हवा खाआया करो थोड़ी देर के लिये यार दोस्तों से भी मिल लिया करो लो एक गलास छको तो सही यही सब तो जिन्दगी के मज़े "आकबत की खुदा जाने अब तो आराम से गुज़रती है" "मा से मधुसूदन कहो दा दामोदर नाम—राको राम प्रमाण कर भरदे भदरा जाम" "शरा के बाब में हम को तो कुछ कलाम नहीं—शराब यार पिलावे तो कुछ हराम नहीं"—इत्यादि सैकड़ों महावाक्य प्रमाण के लिये कहो लर बांध दें जिस लर को तुम्हारे परदादा भी आकर तोड़ा चाहें तो न टूटैगी तब तुम्हें आगा पीछा करने की ज़रूरत अब क्या है जब तक बेतकल्लुफी न हुई तब तक दोस्ती क्या—

बेगमसाहबा कहती हैं खुदा कसम यही जी चहता है तुम्हे आंख की ओट न करूं जब तक नहीं देखती जी उकताया करता है हम से क्या कुसूर बन पड़ा जो आप कई दिनों से नहीं आये—यह निठुराई कहां सीखा—हे मेरे कन्हैया मैं तो अपना धन प्रानजीवन सब तुम्हें सौंपचुकी तुम्हारे आधीन चतुर चूड़ामणि तुम खुद सयाने हो मैं तुम्हे क्या सिखाऊं उस दिन आप ने पांचसौ रुपये दिये थे पर अम्मा कहती हैं उतने में छागल तैयार न होगी (हंसकर) अम्मा नाहक उकताती हैं आप की सखावत का खयाल किया जाय तो ५ सौ क्या पांचहज़ार कुछ बड़ी बात नहीं है बहतीगंगा में अब न हाथ धोओगे तो दूसरा वक्त कौनसा होगा—

सनातनधर्म वाले उपदेश देते हैं बाप दादा की लीक पीटते जाओ यही सम्पूर्ण वेदशास्त्र का निचोड़ है हिन्दूधर्म का सारांश है—हमारा उपदेश है बाप दादा की लीक पीटने के बराबर कोई दूसरा पाप ही नहीं है बाप दादाओं की कम अकली पर तुम्हें घिन न हुई तो तुम्हारे पढ़ने लिखने पर लानत है—उन की लीक का मेटना ही महापुण्य है सपूती है बहबूदी और जमामर्दी है हिन्दुस्तान को सभ्यता के शिखर पर रख देने का सुगम उपाय है—यह सनातनधर्म नहीं है बरन प्रचलित बुराइयों को भला काम समझ उसको जारी रखने के लिये टट्टी के आड़ में शिकार है—ब्राह्मणों के लिये छोटे बड़े सबों को अपने चंगुल में रखने का सहज लटका है—हिन्दूजाति के अधिक पतित होते जाने का खुला द्वारा है—अफसोस बदमाशों ने जिसमें समझा कि यह कौम को कमज़ोर और बिगाड़ने का बड़ा अच्छा ज़रिया है उन्हीं २ बातों को चुन २ कर सनातनधर्म में रख दिया अब इन दिनों के लोग "रिफार्मर" सुधार और संशोधन की दृष्टि से उन्हें श्रुति स्मृति से मिलाते हैं तो कहीं पता नहीं लगता कि किस मूल पर यह बुराई और कुरीति चल पड़ी बल्कि श्रुति और शास्त्रों में जिसे मना किया पाप और बुरा कहा उसी को सनातन का सियापा गाने वाले बदमाशों ने विहित पुण्य और भलाई का काम कहा—इस घिनौने सनातन से दूर हटना ही अब कल्याण का मार्ग है हमारे इस अन्तिम उपदेश पर जो दृढ़ होंगे वे दास्यभाव की बेंड़ी से छुट बहुत जल्द प्रभुता पाने के अधिकारी हो जायंगे हाथ कंगने को आरसी क्या जिसका मन हो आजमा के देखले इत्यादि हमने बहुत तरह के उपदेश आप को कह सुनाया अब उन पर चलना और उन्हें मानना आप के आधीन है—

## यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं न करणीयम्—

मालूम नहीं किस गोठिल अकिल वाले अहेमक ने इस कहावत को प्रचलित कर रक्खा है—हम कहते हैं यदि शुद्ध है और लोक विरुद्ध है तो वह अवश्य करणीय है जब हमें निश्चय होगया कि यह शुद्ध है शास्त्र और अकिल दोनो इसे कबूल करती है तब उसके न करने में आगा पीछा की ज़रूरत क्या रही—जैसा १५ वर्ष की औरत २५ वर्ष के मर्द के साथ व्याही जाया करे तो कौनसी हानि है—शास्त्र भी इसमें सहमत है और अकिल कबूल करती है कि १५ वर्ष में स्त्री

अपनी पूरी उमर को पहुंच जायगी पुरुष भी तब तक गदहपचीसी डाक पढ़ लिख तैयार होजायगा बाप मा को बोझ न हो कर अपना निर्वाह अपने आप करने लायक होगया तब सुख से जीवन पार करेगा और पुष्ट रज वीर्य के सन्तान पैदा हो देश के सौभाग्य का हेतु होंगे पर यह लोक विरुद्ध होता है संसार में क्या मुह दिखावें कि इन के इतने बड़े २ लड़की लड़के होगये कौनसी कज है जो व्याह नहीं होता—मालूम होता है जाति में हेठे हैं—इस लोकनिन्दा की डर से जन्म पर्यन्त सब तरह का क्लेश उठाते हैं अपने औलाद की तरक्की में हरतरह बाधा पहुंचाते हैं किन्तु यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं वाली कहावत को चरितार्थ किये जाते हैं—शास्त्र में लिखा है दान पात्र को देना चाहिये अकिल भी मानती कि हमारे यहां जो बड़े २ दान लिख दिये गये हैं सो इसी लिये कि वे दान योग्यता और विद्या के हिसाब से दिये जांयगे तो संस्कृत का अखण्ड पठन पाठन बना रहेगा लोग शास्त्र के अभ्यास में परिश्रम करते रहेंगे और खूसटों के मुकाबिले उन की विशेष कदर रहेगी सो अब इस कहावत के अनुसार ऐसा करने से लोक विरुद्ध होता है जिन को सदा से मानते आये हैं उन्हें कैसे न मानें चाहो जैसा अपावन और अपाहिज हो बड़े से बड़ा दान पाने का वही अधिकारी है जिसे बाप दादा लीक पीटते आये हैं—इस तरह के दो एक उदाहरण हम ने दिये पर इस कहावत के अनेक उदाहरण आप को मिल सक्ते हैं—तात्पर्य यह है कि हमारी तरक्की के अनेक विघातकों में ऊपर की यह कहावत भी एक महाविघातक है—

## कामयाबी ॥

कामयाबी या कृतकार्य होना मनुष्य के इस क्षणिक जीवन का सार है जिस अभागे ने अपने दौर्भाग्य के फूंकारे से छिन्न भिन्न हो दुस्साध्यश्रम का फलस्वरूप इस की मोहिनी मूर्त्ति का दर्शन न पाया उस के समान हतजीवन कौन होगा, दिन रात मेहनत करते २ घिस गये रातों में उठ २ किताब की किताब सुखाय कर डाला, हस्तिहान देने गये, दैवात् कोई बात न बन पड़ी चूक गये कृतकार्य न होसके, जितनी उमङ्ग और हौंसिला सब पस्त हो गया, यह जगत् जीर्ण अरण्य सा मालूम होने लगा, उस समय बड़ी २ मन की रमाने वाली वस्तु भी निरस और फीकी जंचती है,—लाखों का रोजगार कर रहे हैं सूत का

बंधा हाथी सा सब कारबार गाड़ी की पहिया सा ढुलका चला जाता है वेपारी तथा दलाल शाह जी की हां में हां मिलाते अहर्निश खुशामद में लगे हैं जिधर देखो उधर मालामाल आज रुई में लाख बचे कल तीसी में पचास हज़ार हाथ लगे परसों केरोसिन के काम में तीस हज़ार घर आए अचानक कहीं चोटकिये का भाव गिर गया पांचलाख का घक्का बैठ गया शाह जी साहब चित्त हो गये न किसी का मुंह देखते हैं न अपना देखाते हैं चार लाख का बज़ार का देना निकला एक लाख की दरसनी हुंडी खड़ी है हौस वाले की कुरकी जुदा आलगी दिवाला पिट गया दुकान का ताला बन्द लाला मुंह काला किये भीतर पड़े मक्खी मारा करते हैं कोई अद्धी को नहीं पूछता अब न कभी दलाल आते हैं न कोई व्योपारी खोजता है पहिले के खुशामदी चुटकी बजाने वाले अब नाम लेते गाली देने लगते हैं, वही लाला जी हैं वही कोठी है वही रोज़गार है किन्तु हींग की महक के समान कामयाबी बिदा होगई जूती चटकाने लगे, चारो ओर से लोगों की भीड़ ठठाठट्ठ है—दो मल्ल अखाड़े में कूद लड़ते हैं—हर तरह के दाव पेंच और करतब दिखा रहे हैं कहीं एक पछड़ गया हजारों की भीड़ से निकल ऐसा भागा की काफूर हो गया जीतने वाले को वाह वाह शाबासी इनाम और खिलत का ढेर लग गया—आशिकतन हैं इश्क की बीमारी में मुबतिला हो यार के दीदार के प्यासे जुदाई का सहरा और जङ्गल छानते आजिज़ आगये एक तो इश्क की बीमारी दूसरे जुदाई के जङ्गल की लम्बी सफर दैवात् यार ने चश्म फैयाज़ी से नियाज़ बन्द कर दिया कामयाब हो मकसद वरारी को पहुंचे निहाल हो गये, नाकामयाब हुए मजनू के समान इश्क के जनून में जन्म भर पड़े पड़े झंखते रहे—अदृष्ट को द्योतक परात्पर की इस जगज्जयनी शक्ति के जागरूक रहते भी निरे पुरुषार्थवादी अपने पुरुषार्थ के घमण्ड में फूले नहीं समाते और कोरे पुरुषार्थ पर लक्ष्य कर दिन रात हटते २ पांव की खलरी उड़जाती है दांतो पसीने आते हैं यत्न और उद्योग के छोर पर पहुंच कर ईश्वर की इस अदृष्टात्मक शक्ति की प्रेरणा से बलन्द हौसिले के ऊंचे शिखर पर से औंधे मुंह गिर हाथ मलते हैं सिर धुनते हैं बार २ पछताते हैं और कोशिश की कोई कसर रहते न देख चान्स २ पुकार मचा देते हैं पर अपने जी का बांकापन दूर बहाय सीधे मन से जगत् स्रष्टा की विजयिनी शक्ति पर तौभी नहीं निर्भर होते—

धन्य हैं वे भाग्यवान् पुरुष जिन्होंने कामयाबी का पृष्ठ भाग अपने जीवन काल में कभी नहीं देखा वरन सदैव इसकी मङ्गलमयी मूर्त्ति के अवलोकन से अनुक्षण प्रसन्न वदन हैं पुराने जमाने में सिकन्दर सिसरो हाल के जमाने में नेपोलियन बोनपार्ट ड्यूकआफ् वेलिंगटन रणजीतसिंह प्रभृति और इस समय हमारी महारानी विजयनीदेवी कामयाबी की पताका हो रही हैं जिन्के कटाक्ष पात्र में सम्राट की पदवी और पुरुष रमा का रमणीय मन्दिर बन जाता है कहां तक कहैं धन्य हैं वे अनन्त पुण्य भोगी नर जो सदा सब काम में कृतकार्य रहे—

## चमत्कारी मलहम ॥

कच्चा पारा के खा लेने से जो शरीर में व्रण हो जाता है या ऐसे घाव जो सड़ गये हों और हड्डी तक नजर आती हो इत्यादि सब प्रकार के घाव इस मलहम से आराम हो सक्ते हैं—अगर गुप्तरूप से गरमी का घाव आराम करना चाहो तो इस मलहम को अवश्य मंगाइये जिन को किसी दूसरी दवा से आराम न हुआ हो वे एक बार इसकी भी परीक्षा करें—दाम एक डेबिया का ॥=) पता—रणजीतसिंह भागलपुर कस्बा मीरजानहाट—

## रत्नाकर ॥

यह मासिकपत्र रत्नाकर नाम का प्रयाग से पं०—शिवराम वैद्य के प्रबन्ध से निकलना आरंभ हुआ है वैद्यक के छोटे २ लटके इसमें बड़े उत्तम प्रकाशित होते हैं—विविध रोगों की चिकित्सा और उन के निदान का विवरण भी बहुत अच्छा रहता है इस समय प्रयाग में पं०—शिवराम जी बड़े उत्तम वैद्यों में यहां समझे जाते हैं इन की चिकित्सा सब तरह पर शास्त्रानुकूल और जैसी सद्वैद्यों की चिकित्सा होनी चाहिये ठीक उसी तरह की है—तात्पर्य यह कि ये उन बैलराजों में नहीं हैं जो अपने नाम के आगे लम्बी चौड़ी उपाधि लगाय लोगों को धोखा देते यमराज के सहोदर हो रोगी का प्राण और धन दोनों हर लेते हैं—शिवराम जी के आजमाये लटके इसमें बहुधा रहते हैं—सम्पादक से हमारा निवेदन है कि वैद्यक के अतिरिक्त जो विषय इसमें छपैं उसे विशेष रोचक करने का प्रयत्न करैं तो यह पत्र उत्तम कोटि में सन्निवेशित कर दिया जाय मूल्य वार्षिक मैं पोस्टेज २) है—

# हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि भारत तम हरै ॥

जि० १८ सं० ३—४ } प्रयाग { नवम्बर दिसम्बर १८९४

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्दसैपोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥

# हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १८ } प्रयाग { नवंबर-दिसंबर
संख्या ३-४ } { सन् १८९४ ई०

## पुलिस के कानून में संशोधन ॥

इधर हाल में हिन्दू और मुसल्मानों में आपस के झगड़े से पुलिस के कानून में संशोधन करने की आवश्यकता गवर्नमेंट को हुई है इस संशोधन का परिणाम विशेष कर हिन्दुओं ही पर विसायगा और हिन्दुओं को विशेष कष्ट का बाइस होगा क्योंकि सर्कार के खयाल में मुसल्मानो के मुकाबिले हिन्दू ही पहले सिर उठाने वाले "अग्रेस्सर" या अग्रसर समझे गये हैं—वास्तव में सच पूछिये तो इस तरह के मजहबी झगड़े शुरू मुसल्मानो ही की ओर से होते हैं हिन्दू केवल अपने बचाव मात्र की फिकिर करते हैं--दूसरे यह कि जब तुम हमें चिढ़ाने के लिये कोई बात करोगे तो यह क्यों कर संभव है कि हम उसे सहकर चुप हो बैठ रहेंगे—यद्यपि हिन्दुओं में खून का जोश बिल्कुल बुझगया है इन के नस २ में बोदापन कमहिम्मती और सहिष्णुता छाई हुई है पर बार २ भड़काने से कोई कैसा ही कम हिम्मत डरपोक और बुझे दिल का क्यों न हो भड़क उठैगा—तेल में देर तक डूबी रहे तो ओदी बत्ती को भी जलाओ तो जल उठैगी—"अतिस्नेहपरिष्वंगाद्वर्तिरार्द्रापि दह्यते"—उचित था कि हिन्दुओं के चिढ़ाने की जो बात है उसके दबाने का यत्न सर्कार के ओर से किया जाता न कि "कर्णे पृष्टे कटिं चालयति" किसी ने पूंछा तुम्हारे कान में दरद है उसने कमर हिलादी वही बात इस पुलिस कानून के संशोधन में की जाती है—इस संशोधन का परिणाम यह होगा कि हिन्दू बहुधा कर्मचारियों की निगाह में चढ़े हुई है कलट्टर कमिशनर को पूरा इखतियार दैदिया जायगा जहां कोई ऐसी बात की संभावना पाई गई कलट्टर साहब ने लोकलगवर्नमेंट को एडिश-

नल पुलिस के वास्ते रिपोर्ट की खर्चा उसका हिन्दुओं से भर लिया गया—दूसरी बात इस संशोधन की दिहातों में ज़मीदारों के साथे जायगी किसी की ज़मीदारी में इस तरह की कोई वारदात हुई तो ज़मीदार यद्यपि बेकुसूर ही मुफ्त में उसे फसजाना पड़ेगा—सच पूछिये तो इस संशोधन की कोई आवश्यकता न थी पुलिस का महकमा अत्याचार और अन्धेर के लिये जिस कदर बदनाम है उस खयाल से पुलिस के इखतियारात नित २ घटने चाहिये न कि और अधिक बढ़ाया जाता है—अब हम लोगों की ईश्वर ही कुशल करे यह पुलिस ऐक्ट अर्मेडमेंट प्रेस ऐक्ट इत्यादि कई एक ऐकटों की भांत प्रजा को अत्यन्त ही दुखदायी है—लार्ड एलगिन महोदय के समय जो सुनने में आता है उदारशासन लिबरल दल के हैं इस कानून के संशोधन से पुलिस को अत्याचार के लिये विशेष अधिकार का मिलना उन के उदार शासन में बदनामी दिलावेगा—इस नये ऐक्ट में लइसेन्स लेने की कैद लागाई जाती है जिस्का भीतरी आशय यही मालूम होता है कि हम लोग जो भारी २ कनेंटियां "मास मीटिङ्ग" और जलसे किया करते हैं सब बन्द कर दें बिना लइसेन्स हासिल किये अब कोई भारी मीटिंग या जलसा कर नहीं सकते—इस विषय में हमारी स्वच्छन्दता बिलकुल जाती रही गवर्नमेंट के मन में आवे हमें मीटिंग या जलसा करने की आज्ञा दे न मन में आवे न दे "पबलिक पीस" स्वास्थ्यरक्षा का बहाना बड़ा भारी शस्त्र उन के हाथ में रख दिया जाता है हर तरह पर इस हथियार को काम में ला सकते हैं—इजाज़त दें भी तो उन्हें इखतियार रहे गा वहां पुलिस तैनात कर दें वख्त मुकर्रर कर दें कि इतने समय से इतने समय तक में तुम इसे करो और इतने मनुष्यों से अधिक संख्या मीटिंग में आये हुये लोगों को न होने पावे—कानग्रेस इत्यादि के सम्बन्ध में जो हम लोग बड़े २ जलसे करते थे सब की जड़ कटगई "बेओषध बलाय टली" हिकमत अमली इसी को कहेंगे—पंजाब में आर्यसमाज और सनातनधर्म वालों की बड़ी से बड़ी सभायें और कनेंटियां हुआ करती हैं जिन्में कई हज़ार आदमियों की भीड़ जमा होती है और बड़ा गुलगपाड़ा मचता है सब गई—इसी तरह पर मुसल्मानों के मौलूद में बड़ी भीड़ जमा होती है उस्के लिये भी उन को अब इजाज़त लेना पड़ेगा इत्यादि बातों पर ध्यान दीजिये तो यह "अमेंडमेंट" हमारी स्वच्छन्दता के अपहरण का मूलोच्छेदी कुठार होगा—खैर यह कानून तो पास हो ही गया क्या २ संशोधन किया गया

इसका जो कुछ सुख दुःख होगा हमे भुगतना ही पड़ेगा और जैसे २ यह ऐक्ट वर्ताव में आता रहेगा तैसे २ हमे इस अमेंडमेंट का तात्पर्य खुलता जायगा—किन्तु सच पूछिये तो हम इसी लायक हैं कि पुलिस के कानून में इस तरह का संशोधन किया जाता—अंगरेजी राज्य की शान्ति का हम क्या फाइदा उठा रहे हैं हमे अपनी तरक्की और आगे को कदम बढ़ाने का बहुत अच्छा मौका मिला था कुछ अपना उपकार साधन करना एक ओर रहा हम दोनो हिन्दू और मुसल्मान आपस में ऐसा लड़ रहे हैं और इस कदर मज़हबी झगड़ों में फसे हैं कि मज़हबी के पीछे अपने को बिगाड़ सब भांत निकम्मे और हीन दीन होगये पर मज़हबी जोश इन का कम होता ही नहीं—खास कर हम हिन्दुओं का मज़हबी जोश जो केवल बुराई पैदा कर रहा है भलाई उस्में कम पाई जाती है मुसल्मानो में मज़हबी जोश भी उन्हें विशेष उत्तेजित करता है कट्टरपन उन्में बढ़ाता है और हमारे मुकाबिले पोलिटिकल जोश उन्में पैदा करने की बुनियाद है वरन इसी से गवर्नमेंट भी उन से शंकितसी रहती है—दैव के कोप से हमारे में मज़हबी जोश शान्ति की बुनियाद है भीरुता और बोदापन अधिक करता है—राजकीय विषय की बड़ीसी बड़ी बातें जिन पर समस्तदेश और जाति का बनना बिगड़ना आरहता है पास कर दी जाती है किसी को खबर तक नहीं होती हाल में यह पुलिस ऐक्ट संशोधन ही एक नमूना है—वही इंगलैंड में ऐसी बातों पर समस्तदेश का देश टूट पड़ता है गवर्नमेंट की हिम्मत नहीं पड़ती कि कोई बात उन के विरुद्ध कर सके—हमारे यहां सड़ी सी एक मज़हबी बात पर स्वर्ग सीढ़ी लगजाते देख देश का देश उस पर टूट पड़ता है हर तरह का क्लेश उठाते हैं पर उस काम से बाज़ नहीं आते—इसी तरह पर सामाजिक बुराईयों से भी अलग नहीं होते—अच्छी तरह जान गये हैं कि इससे हमारी समाज कमज़ोर पड़ती जाती है उसे छोड़ दें तो कौमीयत का अंकुर हमारे में जमने लगे खानपान में छिलावट बाल्यविवाह आदि अनेक बद्धमूल कुसंस्कार हमारी समाज को कोढ़रूप हो गन्दी कर रहें हैं जिस्के कारण हम हद्द से ज़ियादह "डिजेनेरेट" नष्टभ्रष्ट होगये हैं पर उस कोढ़ से अलग नहीं होते तो इस दशा में ऐसे २ कानून सर्कार न जारी करे तो क्यों कर इन का शासन हो सके—हम तो कहते हैं गवर्नमेंट फिर भी हम पर कृपा ही करती है और गेहूं के साथ बथुआ सीचने की भांत अपने कौम की भलाई के साथ ही साथ हम हिन्दुस्तानियों का भी जो

यत्किंचित् उपकार घुणाक्षरन्याय से करती जाती है सो भी उस्की कृपा ही है हम अपने काम से इस लायक नहीं हैं कि हम पर इतनी कृपा भी की जाती— अस्तु इस ऐक्ट में और क्या २ अमेंडमेंट किया गया है उसे हम फिर के अपने पढ़ने वालों को सुनावेंगे—

## सर चार्ल्सक्रासथवेट की विदाई ॥

हमारे लफटिनेंटगवर्नर सर चार्ल्सक्रासथवेट अब लौट कर यहां न आवेंगे विलाइत में इंडियाकौंसिल के मेम्बर हो कर वहीं रहैंगे—सच पूछिये तो उक्त लाटसाहब सर आकलैंडकालविन की अपेक्षा अच्छे थे कितने गुण तो ऐसे उत्तम इन्में थे कि अवश्य प्रशंसा के योग्य थे किन्तु गावकुशी के मामिले में कुछ ऐसा कुप्रबन्ध इन से बन पड़ा कि बदनाम होगये प्रजा क्या बल्कि गवर्नमेंट के खयाल में भी यह जच गया कि इन को प्रबन्ध करने की पूरी योग्यता नहीं है इस लिये ये कौंसिल में बैठे २ वोट दिया करैं बतौर पेन्शन के तनखाह लें और विलाइत की बर्फिस्तानी हवा में आराम करें—

## मेघनादवध रूपक ॥

### प्रथम दृश्य ॥

स्थान शयनगृह ॥

सुलोचना और उस्की सखी विचक्षणा बैठी हुई—

सुलो०—सखी आज ६ दिन बीते हमें प्राणनाथ का दर्शन नहीं मिला इस लिये जी हमारा अकुला रहा है—

विच०—प्रिय सखी! क्यों क्यों ?

सुलो०—क्यों क्या तुम नहीं जानती हो कि ६ दिनों से बराबर लंका में महा-समराडम्बर मच रहा है—

विच०—हां अब हमें सुध आई—प्रिय सखी हम ने तो ऐसा सुना है कि आर्य दशग्रीव, रामनाम किसी मर्त्यराज की स्त्री जानकी हर लाये हैं इस कारण राम ने रीछ वानर की बड़ी सेना साथले समुद्र में सेत बांध लंका में प्रवेश किया है कदाचित् वही समराडम्बर यह हो—

सुलो०—जो हो पर अब तो हमारा जी विकल हो रहा है और उन्हीं प्राण-नाथ में धरा है—सखी यह रणवाला वास्ता ठहरा न जानिये कैसा हो—

विच०—भगवान् कुंवर को चिरजीवी करें जिसमें सोहाग तुम्हारा भरापूरा रहे प्रिय सखी तुम्हारा जीवन तो उन्हीं से है—प्यारी तुम ऐसा विकल क्यों होती हो ईश्वर करेगा तो कुंवर सब भांत विजयी होंगे—

सुलो०—हां यह तो हम जानती हैं कि प्राणनाथ वीरता में किसी से कम नहीं हैं इन्द्र आदि देवता भी जो अमर हैं उन का नाम सुन थर्रा उठते हैं तब मरण धर्मा मनुष्य और रीछ वानर किस गिनती में हैं—तौ भी न जानिये क्यों हमारे चित्त को सन्तोष नहीं होता—हे करुणावरुणालय जगदीश हम पर कृपा करो हमारे प्राण प्रेष्ठ का सदा कुशल मंगल करो—सखी उन का साहस और युद्धो-त्साह का स्मरण कर हमारा हृदय कम्पमान होता है—यह सुवर्णमयी लंका क्या संपूर्ण पृथ्वी का एकाधिपत्य क्यों न हो हमारे चित्तचकोर को तो प्राणनाथ का विधुमुख केवल आनन्द देसक्ता है—

विच०—प्रिय सखी ! सच है भगवान् करे कुंवर का बार भी न बांके नहीं तो यह तुम्हारी बारी कुआंरी उमर अकारथ ही न होगी—अभी तुम्हारी उमर क्या है यही तो अवस्था खेलने खाने की होती है—फिर तुम तो कुंअर मेघनाद ही के सुख से सुखी उन्हीं के दुःख से दुःखी—यद्यपि कुनबा भर सब भरापूरा है पर कुल बधून को तो केवल वही अवलम्ब है जिस ने सात भांवर फिर अग्नि की साक्षी दै हाथ पकड़ा है—

सुलो०—(रोकर) यही सब सोच २ तो हमे धीरज नहीं होता—विचक्षणा तुम हमारी लड़काई की सहेली हो—तुम्हारी शपथ जो हम ने आज ६ दिन से दाना खोंटा हो—सखी हम तुम से प्रण कर कहती हैं कि हमारे प्राणधन को जो कुछ भया तो हम छिन भर भी अपना हतजीवन न रक्खेंगी—कुलवन्ती को बिना जीवितेश्वर यह दग्ध शरीर को कौनसा सुख भुगतना रहता है जिस आशा से वह जीती रहे—

विच०—सखी धीरज धरो धीरज धरो ( आंचर से उसका आंसू पोछती है—) धन्य है तुम्हारी मा जिस ने तुम ऐसी सती सावित्री पतिव्रता को गर्भ में धारण

किया—प्रिय सखी तुम निःसन्देह लंकेश के कुल की पताका हो जिसे पति के चरणसरोजरज में ऐसा अनुराग है—राजनन्दिनी अधीरज मत हो तुम क्या कुंवर के बल पराक्रम को नहीं जानती हो वे तो पाकशासन के भी शासनकर्ता हैं—प्रिय सखी शान्त हो भगवान् सब कुशल करेगा—( पादशब्द सुन ) सुनो सखी यह पादशब्द उन्हीं का सा जान पड़ता है—हम कहती न थीं ब्रह्मा की इस सृष्टि में कौन ऐसा पुरुष है जो कुंवर का रणभूमि में सामना कर सके जाय देखें आर्या मन्दोदरी ने हमें किस काम के लिये बुलाया है। (प्रस्थान)

## मेघनाद का प्रवेश वीरता के भेख में—

मेघ—( सुलोचना को उदासीन देख स्वगत ) आज हमारी प्राणप्यारी उदासीन क्यों है—प्रभातकाल के चन्द्रमा के समान इसके मुख की कान्ति मलिन क्यों हो रही है—इसे कोई व्याधि है वा कोई मानसी व्यथा उत्पन्न हुई है किम्वा किसी ने इसका कुछ निरादर किया है जो हो अच्छा पूछें—(प्रकाश) प्रिये! आज तुम्हारा चांदसा मुखड़ा ऐसा उदास और मलिन क्यों है—क्या तुम्हें किसी ने कुछ कटुवचन कहा है किम्वा तुम्हे किसी बात की चिन्ता है—बन्धुजीवा के प्रभा हरने वाले तुम्हारे बिम्बाधर क्यों सूख रहे हैं ? सुर असुर के गर्वापहारी लोक रोआवन रावन की प्यारी बहू होकर भी जो तुम्हें किसी तरह की चिन्ता या शोक रहा तो अचरज है—प्रिये बतलाओ किस ने तुम्हारा अपमान किया है मैं अभी अपने खड्ग की तीखी धार का आहार उसे करूं—राजनन्दिनी तुम्हें दीन मलीन देख हमारा मन जलहीन मीन सा तड़फता है—हम ऐसे रणधीर वीरवर की बधू होकर तुम्हें दुख—प्रिये आज तुम हम से रूठी क्यों हो कर्णरसायन अपने वचनामृत से विरह विधुर हमारे मन क्यों नहीं मुदित करती हो अधरसुधा का दान कर पञ्चबाण के बाण से हमे त्राण करो—

सुलो०—( आंख में आंसूभर ) प्राणनाथ आप ऐसे सत्पति को पाय हमे क्लेश का लेश कहां किन्तु यह जो महासमराडम्बर उपस्थित है उसका हाल सुन और आप का साहस तथा युद्धोत्साह को सुमिर हमारा हृदय कांपता है॥

मेघ०—उः इसी तुच्छ बात के लिये तुम इतना उदास और व्याकुल हो इसी से स्त्रियों को भीरु कहते हैं—प्यारी तुम्हीं सोचो जिस ने इन्द्र वरुण कुबेर

आदि लोकपालों को युद्ध में जीत कैदी कर छोड़ा उसे नरवानर के साथ लड़ने में किस बात की डर अरे नर वानर तो हमारी खाजो हैं ॥

सुलो०—हां यह सब समझती हैं पर प्राणनाथ जब से यह युद्ध आरम्भ हुआ है तब से नित्य हमे भांत २ के असगुन होते हैं बार २ हमारी दहिनी आंख और दहिनी भुजा फरकती है सारमेय हमारे सामने मुह कर रोते हैं—प्रतिदिन सूर्योदय के समय सियार भी भयङ्करशब्द से रोते हैं—सूर्य का बिम्ब सछिद्र दिखाई देता है—कौआ कई बार ढिठाई के साथ हमारे सिर पर आय बैठ चुके हैं—इन्हीं सब अशुभसूचक चिह्नों से हमे ऐसी विकलता है कि धीरज नहीं होता हम अपने जी को कितना समझाती हैं पर ढाढस नहीं बँधता तो हम क्या करें—

मेघ०—आः भीरुजन मनस्तापदायी इन असगुनों से हमे भी डर जिसके अक्षय सायक की वर्षा कालस्वरूप यमराज को भी भय उपजाती हैं—विद्वानों के समूह में जो मूर्ख होते हैं वे ही चुप बैठे रहते हैं सङ्ग्रामभूमि से वे ही विमुख होकर जा लुकते हैं जो कायर हैं—( सदर्प अपनी भुजा की ओर देख ) ये मेरे पीनायत भुजदण्ड फिर कब काम आवेंगे जिन के द्वारा मैं कई बार सुरपति इन्द्र के दोर्दण्ड की खजुआहट दूर कर चुका हूं—प्यारी क्या तुम नहीं जानती हो जो ब्रह्मा ने हमे वर दिया है कि १२ वर्ष निरन्तर आहार निद्रा मैथुन त्याग जो ब्रह्मचर्य से रहा हो उससे तुम्हारी मृत्यु होगी—प्राणप्रिये तुम्हीं सोच विचार देखो ब्रह्मा की सृष्टि में कौन ऐसा प्राणी होगा जो १२ वर्ष का ऐसा कठिन ब्रह्मचर्य्य साध चुका हो इस लिये शत्रु के हाथ से मेरी मौत सब तरह पर असम्भव है ॥

सुलो०—प्राणनाथ आप की धीरता और बीरता के बारे में इस दासी को कोई सन्देह और खटका नहीं है—भला यह तो बतलाइये जहां आप गये थे वहां के युद्ध की व्यवस्था क्या है—आप के बराबरी का भी कोई बीर उस समरांगण में है ? ॥

मेघ०—प्यारी मैं तो नहीं समझता मेरे योग्य प्रतिभट योद्धा उस सेना में कोई हो—हां अलबत्ता एक नवयुवा कम्बुकण्ठ आजानुबाहु कञ्जारुणलोचन गौर वर्ण कर्णकुण्डलमण्डित रणपण्डित जान पड़ता है कदाचित् वह जो कुछ काल तक हमारे साथ लड़े तो लड़ सक्ता है और हमारा भी लक्ष्य उसी पर है कि वह हमारे बराबर का प्रतिभट योद्धा है—अभी तक तो हमी बराबर ६ दिनों से लड़ते

रहे पर अब आर्य कुम्भकरण गये हैं तब हम ने विचारा कि तुम से चल कर मिल आवें प्यारी तुम कुछ सोच मत करो हम छिन भर में सब को जीतलेंगे तुम स्वस्थचित्त रहो अब हम तात दशकन्धर और माता मन्दोदरी के पादवन्दन को जाते हैं (प्रस्थान) शेष—

## वराहमिहर और वाराहीसंहिता ॥

गर्ग पराशर जैमिनि भृगु इत्यादि प्रसिद्ध दैवज्ञ जो ऋषि की कोटि में गिने गये हैं उन्हें छोड़ पुराने ज्योतिर्विद् पण्डितों में आर्यभट और उन के शिष्य लल्ल के उपरान्त फिर वराहमिहर ही का दरजा है—आर्यभट का समय ३९८ और लल्ल का ४२१ प्रचलित शाका के हिसाब से स्थिर किया गया है—वराहमिहिर ने बृहज्जातक में अपनी उत्पत्ति काम्पिल्य में जिसे इस समय कालपी कहते हैं लिखा है—इन के पिता का नाम आदित्यदास था कालपी से यह अवन्ती में जा बसे तद्यथा—

आदित्यदासतनयस्तदवाप्तबोधः,
काम्पिल्लके सवितृलब्धवरप्रसादः ।
आवन्तिको मुनिमतान्यवलोक्य सम्यग्,
होरां वराहमिहिरो रुचिरां चकार ॥

इन के प्रसिद्ध ग्रन्थ जो अब तक जाने गये हैं ये हैं—लघुजातक, बृहज्जातक, विवाहपटल, बृहत्संहिता, योगयात्रा, पञ्चसिद्धान्तिका, वराहमिहिर के ग्रन्थों पर तिलककार भट्टोत्पल ने वराहमिहिर को मगधदेश के ब्राह्मण लिखा है—क्रिय, तावुरि, इत्यादि यवन भाषा के शब्दों में राशियों के नाम और अनफा सुनफा, पणफर, आपोक्लिम, हिबुक, द्रेष्काण, रिःफ इत्यादि यावनिक शब्दों का प्रयोग अपने ग्रन्थों में करने से मालूम होता है कि यह उस समय की प्रचलित यवनभाषा भी जानते थे वास्तव ज्योतिष के १८ या २० आचार्यों में यवन और रोमक भी एक आचार्य माने गये हैं जैसा नीचे लिखे श्लोक से प्रगट होता है—

"म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक्शास्त्रमिदं स्थितम् ।
ऋषिवत्तेपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैववित्द्विजाः" ॥

यवन म्लेच्छ की जाति हैं उन्में ज्योतिषशास्त्र अच्छी तरह से प्रचलित है इस लिये वे भी ऋषितुल्य माननीय हैं तो उन का क्या कहना जो द्विजाति होकर दैवज्ञ हों--इस्में सन्देह नहीं फलित ज्योतिष सम्पूर्ण और बीजगणित-रेखागणित पाटीगणित इत्यादि का बहुत बड़ा हिस्सा आर्यों ने यवनों ही से लिया--केलडिया देश जो मध्यएशिया में है वहां वालों ने ग्रह और नक्षत्रों की गति और उदय अस्त के जानने में बड़ी उन्नति की थी वराहमिहिर ने जो वाराही संहिता में ग्रहों के उदयास्त और उन की चाल का विवरण लिखा है सो इन्हीं यवनों के ग्रन्थों से लिया हो तो क्या अचरज है--मालूम होता है आर्यभट और वराहमिहिर एक समय में हुये हैं--मगधदेश की राजधानी में बहुत दिनों तक ये रहे और वहां आर्यभट का मत अच्छी तरह जान कर तब यह अवन्ती को गये--आर्यभट ने अपने ग्रन्थ में पृथिवी का अपने अक्षपर घूमना साफ २ लिखा है वराहमिहिर ने भी इस्का कुछ इशारा अपने ग्रन्थ में दिया है--

वराहमिहिर का समय ४२७ शाका या ५०५ ईस्वी सन् निश्चय किया गया है विक्रमादित्य की सभा के नौरत्नों में कालिदास अमरसिंह आदि के साथ जो वराहमिहिर का नाम लिखा गया है सो यातो वह विक्रमादित्य ये नहीं हैं जिन्होंने सम्वत् चलाया या यह है श्लोक अनुमान से लिखदिया गया हो--

धन्वन्तरिः क्षपणकामरसिंहशंकु,
वेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां,
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥

कालिदास भी कई हुये हैं वराहमिहिर के समकालीन कौन कालिदास थे यह भी निश्चय नहीं होता किन्तु अक्षरमैत्री लालित्य और प्रसादगुण वराहमिहिर के लेख में शकुन्तला और रघुवंश वाले कालिदास से कम नहीं है अगस्त्यचार में प्रसंग से शरत् के वर्णन में जैसा नमूना अपनी कविता का इन्होंने दिखलाया है उस्से मालूम होता है कि प्रतिभा में यह किसी कवि से कम न थे--यथा

पार्श्वद्वयावस्थितचक्रवाकमापुण्यती सस्वनहंसपंक्तिम् ।
ताम्बूलरक्तोत्कर्षिताग्रदन्ती विभाति योषेव सरित्सहासा ॥

इन्दीवरासन्नसितोत्पलान्विता सरिद्भ्रमत्षट्पदपंक्तिभूषिता।
सभ्रूलताक्षेपकटाक्षवीक्षणा विदग्धयोषेव विभाति सस्मरा ॥
नाना विचित्राम्बुजहंसकोककारण्डवापूर्णतडागहस्ता ।
रत्नैः प्रभूतैः कुसुमैः फलैश्च भूर्यच्छतीवार्घमगस्त्यनाम्ने-इत्यादि

बृहत्संहिता या वाराहीसंहिता में वराहमिहिर ने अपने पाण्डित्यका सर्वस्व रख दिया है यह ग्रन्थ १०७ अध्याय में निबद्ध चार हज़ार श्लोक में संकलित है—यह ग्रन्थ उन के उपकार का है जो राजसभा में प्रवेश पाने की इच्छा रखते हों और थोड़ी २ प्रत्येक विषय में अभिज्ञता प्राप्त करना चाहते हों—ग्रन्थ के पढ़ने से मालूम होता है प्राचीन समय में केवल संस्कृत पढ़े कैसे विशेषज्ञ धुरन्धर पण्डित होते थे अब के पण्डितों के समान केवल शेखरबूंक सर्वज्ञ होने का दावा नहीं बान्धते थे- शेखर मनोरमा की एक २ पंक्ति रटरट पचमरे अन्त मूर्ख के मूर्ख रहे—कहने का तात्पर्य यह कि संस्कृत अंगरेजी इत्यादि प्रचलित भाषाओं के मुकाबिले इतनी हेठी नहीं है सब तरह के विषय के ग्रन्थ पाये जाते हैं किन्तु पठन पाठन का क्रम कुछ ऐसा बिगड़ा है कि हमारे पण्डित लोग परिश्रम बहुत करते हैं पर अन्त को अप्रज्ञ रह जाते हैं और अभिमान तथा स्पर्द्धा उन्हें सर्वज्ञ बनने की रहती है—

आदि में ग्रन्थकार ने कालपुरुष के रूप से संहिता का आरम्भ किया है लिखते हैं होरा द्रेष्काण द्वादशांश नवांश त्रिंशान्शग्रहों की दिशास्थान चेष्टा दशा अन्तर्दशा राजयोग चन्द्रयोग द्विग्रहादियोग उन का उदय अस्त उच्च नीच आदि से कालपुरुष का ज्ञान ऐसा सूक्ष्म है कि कदाचित् सीधी हवा पाय महासागर के पार नौका पर चढ़ा पुरुष चाहो पहुंच जाय पर कालपुरुष के सूक्ष्मविचार के अन्त को नहीं पहुंचता—

अप्यर्णवस्य पुरुषः प्रतरन्कदाचि,
दासादयेदनिलवेगवशेन पारम् ।
नत्वस्य कालपुरुषाख्यमहार्णवस्य,
गच्छेत्कदाचिदनृषिर्मनसापि पारम् ॥

काल की सूक्ष्मगति ही के कारण बहुधा ज्योतिषियों की विधि नहीं मिलती लगगया तो तीर नहींतुक्कावाली कहावत रहती है—इसी से बिना शास्त्र अच्छी तरह जाने जो दैवज्ञ बनते हैं वे पङ्क्तिदूषक नक्षत्रसूचक हैं—

"अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञं प्रतिपद्यते ।
स पङ्क्तिदूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः" ॥

सूर्यमण्डल में दाग "सनस्पाट" जिसे योरप खगोलज्ञ "स्टानोमर" अपनी ईजाद बतलाते हैं उसे वराहमिहिर दूरबीन इत्यादि कोई यन्त्र को बिना काम में लाये जान चुके थे और केतु के नाम से उसे लिख गये हैं । यथा—

तामसकीलकसञ्ज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत् ।
वर्णस्थानाकारैस्तान् दृष्ट्वार्के फलं ब्रूयात् ॥
यस्मिन् यस्मिन् देशे दर्शनमायान्ति सूर्यबिम्बस्थाः ।
तस्मिंस्तस्मिन् व्यसनं महीपतीनां परिज्ञेयम् ॥
गर्भेष्वपि निष्पन्ना वारिमुचो न प्रभूतवारिमुचः ।
सरितो यान्ति तनुत्वं क्वचित्क्वचिज्जायते सस्यम् ॥
दण्डे नरेन्द्रमृत्युर्व्याधिभयं कबन्धसंस्थाने ।
ध्वाङ्क्षे च तस्करभयं दुर्भिक्षं कीलकेऽर्कस्थे ॥ इत्यादि—

तामस कीलकसंज्ञक राहुसुत ये केतु ३३ प्रकार के हैं सूर्यबिम्ब में उन का वर्ण स्थान और आकार देख ज्योतिषी फल कहे—जिस २ देश में ये केतु सूर्यबिम्बस्थ देख पड़ें उस २ देश में राजा के लिये पीड़ा और क्लेश कहना—यूरोप वाले भी कहते हैं सूर्य के बिम्ब में ज्वालामुखी पर्वत बहुत हैं वे कभी बन्द रहते हैं कभी धधकने लगते हैं उनके धधकने के समय सूर्यमण्डल से गरमी विशेष निकलती है पृथ्वी के जिस भूभाग में उन ज्वालामुखियों की छाया पड़ती है वहां अवर्षण दुर्भिक्ष मरी इत्यादि के कारणों से प्रजा को विशेष क्लेश पहुंचता है—ऐसा ही संहिताकार ने भी लिखा है—गर्भित मेघ भी पानी नहीं बरसते नदियां सूख जाती हैं वर्षा कहीं होती है कहीं नहीं होती—ये केतु दण्ड के आकार हों तो मृत्यु कहना, कबन्ध के आकार हों तो व्याधि की भय, ध्वांक्ष नाम के हों तो

चोरों को भय, कीलक हों तो दुर्भिक्ष और पीताश्ववर्ण हों तो सेनापति का नाश करैं पीतवर्ण राजपुत्र के लिये अनिष्टकारी हैं, श्वेत हों तो राजपुरोहित का विनाश करैं, चित्र या धूम्रवर्ण पृथ्वी पर व्याकुलता फैलावैं—ग्रीष्म ऋतु में इन का वर्ण सोने के रंग का होता है वर्षा में श्वेत शरद् ऋतु में कमलोदर के आकार हेमन्त में रुधिर केसे रक्तवर्ण—ग्रीष्म में रक्तवर्ण के देख पड़ैं तो भय उपजावैं वर्षा में काले रंग के अवर्षण हेमन्त में पीतवर्ण के रोग पैदा करैं, वर्षा काल में शिरीष के फूल के रंग के देख पड़ैं तो सद्यः वृष्टि करैं इत्यादि अध्याय की अध्याय इस्के विवरण में है—इसी तरह राहुचार के प्रकरण में ग्रहण को पृथ्वी की छाया वराहमिहिर ने लिखा है—प्रत्येक ग्रहों का चार और उन का अलग फल एक २ अध्याय में है—बृहस्पति के प्रकरण में जैसा सौर वर्ष है उसी तरह पर बृहस्पति का भी १३ महीने का एक वर्ष मान चैत्र आदि प्रत्येक महीने में अलग २ बृहस्पतिवर्ष के प्रारम्भ का अलग २ फल लिखा है जैसा जब बृहस्पति का वर्ष चैत्र में आरम्भ हो उस साल मन्दवृष्टि हो कोश और धान्य की वृद्धि हो राजा लोग अत्याचार कम करैं रूपवानों को क्लेश हो—वैशाख में वर्ष का आरम्भ हो तो राजा और प्रजा सुखी रहैं अन्न अच्छा हो धर्म की वृद्धि हो—ज्येष्ठ से वर्ष का आरम्भ हो तो राजा प्रजा दोनों को पीड़ा हो एक ककुनी छोड़ सब अन्न कम हों—आषाढ में वर्षारंभ हो तो खण्डवृष्टि हो राजा लोग व्यग्र रहैं—श्रावण से हो तो अन्न अच्छी तरह पकै पाखण्डियों को पीड़ा हो—भादों से हो तो लतर और बेल बहुत फबकैं कहीं सुभिक्ष रहै कहीं दुर्भिक्ष—कुवार से वर्ष का प्रारम्भ सुवृष्टि और सब प्रकार शुभ है इत्यादि—बृहस्पति और शुक्र परस्पर सातवीं राशि में हों तो प्रजा रोग और शोक से पीड़ित रहै और जल न बरसै—बृहस्पति बुध मंगल शनि ये शुक्र के आगे रहैं तो वायु अधिक चलै मनुष्यों में परस्पर युद्ध हो ब्राह्मण अपना ब्रह्मकर्म छोड़दें वृष्टि कम हो—शनैश्चर शुक्र के एक राशि आगे हों तो म्लेच्छों को बिलारों को हाथियों को खर और महिष को शूद्रजाति और दक्षिणापथ वालों को क्लेश हो—मंगल शुक्र के आगे हो तो अग्नि और चोर की भय हो और उत्तरापथ वालों को विशेष क्लेश हो सफेद रंग के वस्तु की हानि हो पूर्वदिशा वालों को ओला पड़ने से क्लेश हो—बुध शुक्र के आगे चलैं तो पानी बरसै किन्तु प्रजा में पित्तजनित रोग फैलै सन्यासी वैद्य अग्निहोत्री रंगसाज़ वैश्य गौ घोड़े इन सबों

को पीड़ा हो पीली वस्तु की हानि और पश्चिम दिशा वालों को क्लेश हो—ऐसा ही शनैश्चर के प्रकरण में प्रत्येक नक्षत्र के शनैश्चर का अलग २ फल एक अध्याय में है—केतुचार प्रकरण में लिखा है गणित से केतुओं का पता नहीं लगता योरोप वालों ने भी ऐसा ही माना है—और बहुत तरह के केतु के भेद लिखे गये हैं—सप्तर्षिचार में लिखा है ये सातों तारा युधिष्ठिर के समय मघा नक्षत्र के थे वराह मिहिर लिखते हैं कि उन के समय "षट्द्विकपंचद्वियुतः शककालस्तस्य राज्ञश्च" २५२६ वर्ष युधिष्ठिर राजा को हुये हैं—दो अध्याय में कूर्मविभाग और नक्षत्र व्यूह बांधा गया है उस समय तक जितना हिस्सा दुनिया का मालूम हो चुका था उतने को ग्रन्थकार ने एक कछुये के आकार में बांध उसमें नक्षत्रों को रख उन पर जो ग्रहगति के हिसाब से आजाते हैं उन का बुरा भला फल इसमें अभ्यास रखने वाला कह सक्ता है—इसी तरह का कूर्मनिवेश मार्कण्डेयपुराण में भी दिया गया है—यह नहीं मालूम कि कूर्मपुराण से वराहमिहिर ने लिया है या बराहीसंहिता से मार्कण्डेयपुराणवालों ने इसे लिया है किन्तु मार्कण्डेय का कूर्मनिवेश अधिक स्पष्ट है जिस्का यह अन्तिम श्लोक है—

राशयश्च तथर्क्षेषु ग्रहराशिष्ववस्थिताः ।
तस्माद् ग्रहर्क्षपीड़ासु देशपीडां विनिर्दिशेत्—

गर्भधारण प्रवर्षण रोहिणीयोग स्वातियोग आषाढीयोग यह सब एक २ अध्याय में इस क्रम से लिखा है कि जो उन को अच्छी तरह समझे रहे तो त्रिकालदर्शी हो जाय वरन वृष्टि के सम्बन्ध उसका वाक्य कभी झूठा न हो—

दैवविदवहितचित्तो द्युनिशं यो गर्भलक्षणे भवति,
तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्याम्बुनिर्देशे ।
किंवातः परमन्यच्छास्त्रं ज्यायोऽस्ति यद्दिदित्वैव,
प्रध्वंसिन्यपि काले त्रिकालदर्शी कलौ भवति ॥

एक अध्याय में सद्योवृष्टि के लक्षण लिखे हैं यथा—

अग्रतः पृष्ठतो वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बिनः,
यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव ।

प्रावृषि शीतकरो भृगुपुत्रात्सप्तमगश्च यदा शुभदृष्टः ।
सूर्यसुतान्नवपंचमगो वा सप्तमगश्च जलागमनाय ॥

सूर्य के आगे और पीछे ग्रह हों तब पृथ्वी को एकार्णवकर दें—वर्षाकाल में चन्द्रमा शुक्र के सतयें आजांय और शुभग्रह देखते हों या शनैश्चर से चन्द्रमा पंचम नवम और सप्तम हों तो वृष्टि पैदा करें इत्यादि अनेक वर्षा के बड़े उत्तम योग लिखे हैं—सन्ध्या दिग्दाह भूमिकम्प उल्कापात सूर्य और चन्द्रमा के चारोंओर मण्डल इन्द्रधनुष इत्यादि के लक्षण और फल बहुत अच्छा अलग २ एक २ छत्र चमर अध्याय में दियागया है—इसी तरह पर एक २ अध्याय में खड्ग राजसिंहासन इत्यादि के लक्षण भी कहे गये हैं—एक अध्याय में वास्तुविद्या भी दी गई है जिस्से हिन्दुस्तान में इंजिनियरिंग की तरक्की कहां तक की गई थी इस्की टटोल हो जाती है और घर में रसोई इत्यादि के स्थान कहां पर किस तरह के होने चाहिये सब लिख दिये गये हैं—एक अध्याय में प्रासाद के निर्माण की विधि और उस्के लक्षण तथा भेद उचाई और लम्बाई चौड़ाई आदि का प्रकार दिया गया है प्रत्येक देवता के मन्दिर का अलग २ प्रकार और हर एक देवताओं की मूर्ति कैसी और कितनी बड़ी होनी चाहिये यह सब दिखाया गया है—एक अध्याय वज्रलेप की है जिस्में दो पत्थरों के जोड़ने के मसाले लिखे गये हैं—एक प्रकरण वृक्षायुर्वेद नाम का है जिस्में यह दिखलाया है कि हर एक तरह के पेड़ के लगाने का प्रकार क्या है किस ऋतु में कैसे पेड़ लगावें उन्में किस तरह की खाद देना चाहिये उन के सींचने का प्रकार और वृक्षों में रोग हो जाने से रोग दूर करने की चिकित्सा लिखी गई है—मूर्ति के प्रकरण में बुद्ध और जिन की मूर्ति के बनाने का भी प्रकार और भेद लिख दिया गया है—इस्से मालूम होता है वराहमिहिर के समय तक हिन्दुस्तान में बौद्ध और जैनियों का भरपूर ज़ोर था—एक २ अध्याय में गाय बैल कुत्ता बकरी घोड़ा हाथी इत्यादि जानवर जो पालू हैं उन के लक्षण और इंगित दिये गये हैं—तीन अध्याय में सामुद्रिक है जिस्में स्त्री तथा पुरुष के एक २ अङ्ग का लक्षण तथा फल है—स्त्री तथा पुरुष का स्वरवर्ण देह की उचाई प्रकृति चाल इत्यादि से यह मनुष्य किस तरह का है दिख लाया है पञ्चमहापुरुष के लक्षण दिये हैं—देह की उचाई के बारे में जैसा लिखा है ॥

अष्टशतं षण्णवतिः परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसाम् ।
उत्तमसमहीनानामङ्गुलसंख्या स्वमानेन ॥

१०८–९६ और ८४ अंगुल उंचाई अपने अंगुल से उत्तम मध्यम निकृष्ट मनुष्य की होती है–इसी तरह भाग्यवान् के वचन जिह्वा दन्त नेत्र नख स्निग्ध या सरस होते हैं अभागे के रूखे–

"स्नेहः पञ्चसुलक्ष्यो वाग्जिह्वादन्तनेत्रनखसंस्थः ।
सुतधनसौभाग्ययुताः स्निग्धैस्तैर्निर्धनारूक्षाः" ॥

इसी तरह वर्ण के सम्बन्ध में भी लिखा है राजाओं का वर्ण स्निग्ध और द्युतिमान् होता है दरिद्र का रूखा—

एक अध्याय इसमें स्त्रीप्रशंसा की है जिस्के कई श्लोक यहां पर उद्धृत करने योग्य हैं । यथा—

श्रुतं दृष्टं स्पृष्टं स्मृतमपि नृणां ह्लादजननं,
न रत्नं स्त्रीभ्योऽन्यत्क्वचिदपि कृतं लोकपतिना ।
तदर्थं धर्मार्थौ सुखविषयसौख्यानि च ततो,
गृहे लक्ष्म्यो मान्याः सततमबला मानविभवैः ॥

सुनने से देखने से छूने से स्मरण से भी जो पुरुष को सुख पैदा करती है—मालूम होता है त्रिलोकीनाथ ने स्त्री के समान दूसरा रत्न नहीं पैदा किया—स्त्रियों ही के लिये धर्म और अर्थ है सुख और विषयसुख भी उन्हीं से है अबलायें घर की लक्ष्मी हैं मान सत्कार और विभव से उन की सदा खातिरदारी करै ॥

ये ऽप्यङ्गनानां प्रवदन्ति दोषान्वैराग्यमार्गेण गुणान्विहाय,
ते दुर्जना मे मनसो वितर्कः सद्भाववाक्यानि न तानि तेषाम् ।
प्रब्रूत सत्यं कतरोऽङ्गनानां दोषोऽस्ति यो नाचरितो मनुष्यैः,
धार्ष्ट्येन पुंभिः प्रमदा निरस्ता गुणाधिकास्ता मनुनात्र चोक्तम् ॥

ब्राह्मणाः पादतो मेध्या गावो मेध्यास्तु पृष्टतः,
अजाश्वा मुखतो मेध्याः स्त्रियो मेध्यास्तु सर्वतः,,—इत्यादि—

जो लोग वैराग्य मार्ग में प्रवृत्त हो गुण की ओर दृष्टि न दे केवल उन के दोष ही कहते हैं वे दुर्जन हैं उन का यह कथन सद्भाव युक्त नही हैं—सच कहो स्त्रियों में कौनसा ऐसा दोष है जो पुरुष में नहो—पुरुषों ने ढिठाई से स्त्रियों को सब भांत निरस्त कर दिया मनुने उन्हें पुरुष की अपेक्षा गुण में अधिक लिखा है—ब्राह्मण का चरण पवित्र है गौ का पृष्ठभाग बकरी और घोड़े का मुख शुद्ध है स्त्रियां सर्वाङ्ग पवित्र होती हैं—बराहमिहिर की ऐसी २ लिखावटों से मालूम होता है कि यह इस समय के अकिल अजीर्ण रोग वाले पण्डितों में न थे बरन इन के खयाल बहुत बढ़े बढ़े थे—स्त्रीप्रशंसा वाला लेख इन का बड़े ज़ोर के साथ लिखागया है संस्कृत के साहित्य में बराहमिहिर का एक यही प्रकरण पाया जाता है नहीं तो स्त्रियों को हर तरह घटाना और उन की हद्द से ज़ियादह निन्दा के श्लोक सब जगह पाये जाते हैं जिसे पढ़ते और सुनते घिन होती है—एक अध्याय गन्धयुक्ति की है जिसमें खिजाब और कई एक प्रकार के सुगन्धित तैल बनाने की युक्ति है—चार अध्यायों में हीरा पद्मराग पन्ना आदि रत्न और मोती की परीक्षा और उन के उत्पत्ति का स्थान आदि लिखा है—नौ अध्यायों में शकुन प्रकरण है कितनी बाते इसमें ऐसी है कि "शकुन वसन्त राज" में भी नहीं है जो इस विषय का मुख्य ग्रन्थ है—इस प्रकरण में पक्षिरुत ज्ञान एक विषय बड़ा उपकारी है जिसमें कौआ कुत्ता सियार आदि जानवरों की बोली की पहचान है कि यह क्या कह रहा है और उसी पर यात्रा आदि में शुभफल बांधागया है—सच कहो तो यह प्राचीन आर्यों के बहुत दिनो के अनुभव का परिणाम है—बराहमिहिर के ग्रन्थों पर भट्टोत्पल का तिलक बड़ा उपकारी है हम जानते हैं भट्टोत्पल तिलक न किये होते तो वृहज्जातक आदि इन के ग्रन्थ कभी किसी से न लगते—बाराहीसंहिता की यह सूक्ष्म समालोचना हमारे पढ़ने वालों को हम समझते हैं लाभदायक होगी जिन्हें यह अरोचक हुई हो वे हमे क्षमा करेंगे—

——:*:——

# नृपतिचरितावली ॥

पहले के आगे से—

## काठियावार प्रायद्वीप के रजवाड़े ॥

यह प्रायद्वीप गुजरात का पश्चिमी हिस्सा है खम्भात की खाड़ी और सुवर्णवती नदी इस्की पूर्व की सीमा है पश्चिम और दक्षिण इस्के अरब का समुद्र है कच्छ की खाड़ी इस्के उत्तर है इस्का प्राचीन नाम सौराष्ट्र है—यह देश का देश ढलुआ पृथ्वी का है पहाड़ियां यहां बड़ी ऊंची नहीं हैं गिरनार पहाड़ यहीं पर है जिस्की ऊंचाई ३५०० फुट से अधिक नहीं है—सोलंकी जाति के क्षत्री यहां के पुराने रहने वाले हैं उपरान्त काठी जिन से इस्का काठियावार नाम पड़ा गोहेल जाट मरट्ठे और मुसल्मान भी आकर यहां बसे और ये सब वहां के जागीरदार भी हैं उन्में बड़े २ दो एक जागीरदार जो इस समय राजा हैं उन का यहां पर हम कुछ हाल लिखते हैं—

## भावनगर ॥

यह राज्य २८६० वर्गमील है आबादी ४००३२३ सन् ८१ की मर्दुमशुमारी में थी भूमिकर ३५ लाख के अनुमान है—यह राज्य काठियावार प्रायद्वीप के पूर्व की ओर है और इस प्रान्त में सब से बड़ा राज्य है राजकोट होते हुये रेल भी यहां गई है राज भर में रेल का विस्तार ६० मील है राज का प्रबन्ध यहां बड़ा उत्तम है और दिन २ तरक्की कर रहा है—अन्न रूई तेलहन और नमक यहां की खास पैदावारी है ताम्बे और पीतल के बरतन अच्छे बनते हैं पुतलीघर में मोटे कपड़े भी बनते हैं—रियासत भर में ११७ स्कूल हैं जिन्में ६ हज़ार के ऊपर लड़के पढ़ते हैं—महाराजा गोहेल जाति के राजपूत हैं और ठाकुर कहलाते हैं—गोहेल राजपूत यहां ईस्वी सन् की तेरहवीं सदी में आकर बसे थे विद्यमान महाराजा बड़े विद्वान् और सुयोग्य हैं—राजधानी भावनगर खंभात की खाड़ी पर अनुमान ५६ हज़ार आदमियों की बस्ती है—महाराजा की ओर से रूई कातने और कपड़ा बुनने की कल है काठियावार का यह शहर खास बन्दर है जहां से कपड़े जहाजों

में लद बाहर जाते हैं—नगर यह रमणीक है महाराजा साहब की बनवाई कई एक इमारतें देखने लायक हैं—

## नौनगर ॥

यह राज्य काठियावार के पश्चिम ३७९१ वर्गमील है आबादी सन् ईस्वी ८१ में ३१६१४७ थी भूमि कर साढे २४ लाख है पृथ्वी यहां प्रायः सम है रूई और अन्न की अच्छी उपज होती है—महाराजा जाति के राजपूत हैं जाम कहलाते हैं और कच्छ के राव के भैयादियों में हैं—१५४० ईस्वी में महाराज के पूर्वज ने कच्छ से यह आय नौनगर के राज्य की नेव डाली——यह नगर ४०००० आदमियों की बस्ती है—राज्य का प्रबन्ध अच्छा है रियासत भर में ६२ स्कूल हैं जिन्में ५००० के ऊपर लड़के पढ़ते हैं—प्रजा को आराम पहुंचाने वाले काम सड़क इत्यादि में रियासत का बहुतसा रुपया खर्च किया जाता है महाराज की ओर से कई एक इमारतें भी अच्छी बनवाई गई हैं—

## जूनागढ़ ॥

यह रियासत ३२९७ मीलमुरब्बा है सन् ईस्वी ८१ में इसकी आबादी ३८७-४९९ थी मालगुज़ारी २१ लाख है—काली मिट्टी की धरती इस राज की समथर है गिरनार पहाड़ इस रियासत में कहीं कहीं ३७०० फुट समुद्र की सतह से ऊंचा है—रूई बहुत पैदा होती है अन्न तेलहन और ऊख भी पैदा होती है—रियासत भर में ३४ स्कूल हैं मोटे कपड़े यहां अच्छे बनते हैं—इस राज्य में काटियावार की दक्षिण सीमा पर समुद्र के तट पर हरिणा कपिला और सरस्वती इन ३ नदियों के सङ्गम पर पट्टन सोमनाथ है—किसी समय यह बहुत बड़ा शहर था ज्योतिर्लिङ्ग सोमनाथ महादेव का वहां प्रसिद्ध मन्दिर था—मन्दिर के ५६ खंभों में जवाहिर जड़े थे सोने की दीवटों में दिये जलते थे और कई मन सोने की जंज़ीरों में घण्टे लटकते थे—सन् १०२५ ईस्वी में महमूद गज़नवी यहां से १० करोड़ रुपये का माल लूट लेगया और मूर्ति को भी तोड़ा जिस्का एक टुकड़ा गज़नी की मज़जिद के ज़ीने में जड़वा दिया और दूसरा टुकड़ा बगदाद के खलीफा को तुहफे में भेजा—चन्दन की लकड़ी का फाटक इस मन्दिर में लगा था उसे भी महमूद गज़नवी लूट लेगया जिसे १८४२ में सर्कारी फौज महमूद के मकबरे से लौटा

लाई जो अब आगरे के किले में रक्खा हुआ है—अस्तु वह पुराना मन्दिर तो अब खंडहर पड़ा है परन्तु पास ही इन्दोर की अहिल्याबाई ने एक नया मन्दिर बनवाया है और एक नई मूर्ति उसमें स्थापित किया है—पट्टन सोमनाथ के पास ही वह मैदान है जहां यादव लोग मद पी आपस में लड़ कर कट मरे थे और सरस्वती नदी के तट पर उस पीपल वृक्ष का भी पता लगता है जहां भगवान् कृष्णचन्द्र के तलुवे में व्याध ने तीर मारा था—पट्टन सोमनाथ से ४० मील उत्तर जूनागढ़ के पास २५०० फुट की उचाई पर रेवताचल पर्वत है जिसे गिरनार भी कहते हैं यहां जैनियों का बड़ा भारी मन्दिर है और यह उन का मुख्य तीर्थ है दूर २ के यात्री यहां दर्शन के लिये आते हैं—जूनागढ़ से आध मील पूरब पहाड़ की जड़ से ४ मील की ऊचाई पर पहाड़ के एक टुकड़े पर मगध देश के प्राचीन प्रसिद्ध राजा अशोक की वही आज्ञा पाली अक्षरों में लिखी है जो प्रयाग के किले में शिलास्तम्भ पर लिखी है। यह आज्ञा इस्वी सन के १५० वर्ष पहले लिखी गई थी जो समय हिन्दुस्तान में बौद्धों के प्रबल प्रताप का था तात्पर्य यह कि जूनागढ़ की रियासत पुरानी बातों की खान है जो „ऐंटीक्वेरियन„ के लिये पुरानी बात जानने का बड़ा उत्तम क्षेत्र है—जूनागढ़ पुराने समय में राजपूतों के अधिकार में था १४७१ ईस्वी में अहमदाबाद के सुलतान ने इसे फतह कर अपनी सलतनत में मिला लिया अकबर के समय यह दिल्ली के आधीन रहा १७३५ में शेरखां एक सिपाही ने मुगलानी सलतनत की ओर से जो गवर्नर यहां था उसे यहां से निकाल अपने दखल में इसे कर लिया तब से जूनागढ़ के नवाब के दखल में यह आजतक चला आता है—शहर २५००० आदमियों की बस्ती गिरनार पर्वत के तले बसा है बौधमत के कई एक मन्दिर और पहाड़ों पर खोह यहां देखने लायक और बड़ी रमणीक हैं नया शहर अहमदाबाद के सुलतान का बसाया हुआ है पास ही उपर कोट इसकी पुरानी बस्ती है जो अब उजाड़ है—

## राजकोट ॥

यह छोटा सा राज काठियावार के बीचोबीच २८२ वर्गमील कुछ ऊपर दो लाख सालियाना के आमदनी का है इसकी जनसंख्या ४०५२७ सन ईस्वी ८१ में थी—धरती यहां की पथरीली और ढलुआ है छोटी २ नदियां इसमें कई एक हैं मामूली अन्न यहां अच्छे होते हैं राजभर में १४ स्कूल हैं—राजधानी राजकोट

१५ हज़ार आदमियों की वस्ती है-काठियावार के रजवाड़ों के पोलिटिकलए-जेंट यहीं रहते हैं—यहां एक कालेज है जिस्में पश्चिमी हिन्दुस्तान के राजकु-मार अपनी २ रियासत से आय शिक्षा पाते हैं एक आर्टस्कूल भी यहां है भाव-नगर गोनदाल रेल भी यहां से हो कर गई है-

## पालीताना ॥

इस राज्य की आवादी सन ८१ में ४९२७१ थी विस्तार वर्गमील २८९ और मालगुजारी अनुमान ५ लाख के है यह रियासत भावनगर से नैर्ऋत्यकोण को है इस्में शत्रुंजयनाम पर्वत है जिस्में अनेक जैनमन्दिर हैं-जहां प्रतिदिन जैन मत वाले यात्रा के लिये आया करते हैं-शंगमर्मर की वनी आदिनाथ की मूर्ति जो २४ तीर्थङ्करों में एक प्रधान तीर्थंकर हैं यहीं है—पालिताना शत्रुंजय पर्वत की जड़ में ८ हज़ार आदमियों की वस्ती है राजा यहां के ठाकुर कहलाते हैं और गोहेल राजपूत हैं-

## गोनदाल ॥

यह राज्य जूनागढ़ के उत्तर वर्गमील १०२४ है आवादी सन ८१ में १३५६०४ थी मालगुज़ारी १२ लाख है धरती समथर कालीमिट्टी की है रूई और अन्न यहां की खास पैदावरी है राजधानी गोनदाल अनुमान १४ हज़ार आदमियों की वस्ती है-राजाने यहां के एडिनवरा की युनिवरसिटी में एल एल डी की डिगरी हासिल की है-ठाकुर इन की उपाधि है और राजपूत हैं-

## पोरवन्दर ॥

काठियावार के पश्चिम समुद्र के किनारे यह रियासत ६३६ वर्गमील है आवादी अनुमान ७२ हज़ार और भूमिकर साढ़े ५ लाख है यह राज्य समुद्र के तट पर है इस्से यहां चावल विशेष होता है राजधानी १५००० की वस्ती है वंवई को यहां से जहाज़ सीधा जाता है काठियावार के कईएक प्रतिष्ठित वन्दरों में यह भी एक है राजा राना कहलाते हैं और राजपूत हैं-

## मोर्वी ॥

यह राज्य काठियावार के पश्चिम वर्गमील ८२१ है आवादी अनुमान ९०००० आमदनी १० लाख है धरती समथर है अन्न ऊख रूई यहां की पैदावार है-राजा

कच्छ के राव के भैवादियों में हैं सत्रहवीं सदी के अन्त से यह राज कच्छ से अलग हो स्वच्छन्द हो गया है मोर्वी १५००० आदमियों की बस्ती है राजकोट से मोर्वी तक पक्की सड़क है राजभर में २६ स्कूल हैं जिसमें २००० विद्यार्थी पढ़ते हैं राजा बड़े विद्वान् और सुशिक्षित हैं—

## धांगध्रा ॥

यह राज्य मोर्वी से अग्निकोण को मीलमुरब्बा ११५६ आबादी एक लाख और मालगुजारी अनुमान ८ लाख के है—पहाड़ इसमें बहुत हैं धरती काली मिट्टी की है जिसमें अन्न अच्छा उपजता है महाराजा झाला राजपूत हैं राजधानी १२००० आदमियों की बस्ती है कईएक छोटे २ राज्य इसकी शाखा और भी हैं

## कच्छ ॥

बड़ोदे के पश्चिम वायुकोण को झुकता हुआ यह राज्य टापू की भांत सब से निराला है यह देश जंगल और उजाड़ बहुत है "रनअफकच्छ" जिसे संस्कृत में अरण्य कहना चाहिये बरसात में जलमग्न हो जाता है—दूसरी ऋतु में यह खिल्लिली झील रहता है किसी जगह नमक के दलदल कहीं पर नमक से ढंके बालू के टीले बन जाते हैं जो बर्फिस्तान की तरह कोसों की दूरी से चमकते हैं—इन नमकीन दलदलों के किनारे गोरखर अर्थात् जंगली गधे बहुत पायेजाते हैं ये पालू गधों से मज़बूत होते हैं साठ २ सत्तर २ का झुण्ड इकट्ठा फिरा करता है और यहां की नमकीन घास बड़ी रूचि से गोरखर खाते हैं—कच्छी घोड़े प्रसिद्ध हैं ऊंट भी यहां बहुत होते हैं—यह राज्य पूर्व से पश्चिम को १६० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को ९५ मील चौड़ा है—यहां के पहाड़ प्रायः ज्वाला-मुखी हैं सन १८ १९ मे यहां एक बड़ा भूकंप आया था जिसमें राजधानी भुज के ७००० घर मे राजा की महल के नष्ट होगये—धरती रेतल पथरीली और बहुधा ऊसर पानी कम और अकसर खारी वृक्ष बहुत कम कहीं २ बस्ती के समीप नीम पीपल खजूर और बबूल देख पड़ते हैं आम या इमली यहां नहीं हैं—आदमी यहां के झूठे और धोखादेने वाले होते हैं— सवारी यहां ऊंट और घोड़े की बहुत धरती रेतल होने से गाड़ियां कम चलती हैं पालकी और रथ पर सिवाय राजा के और कोई नहीं चढ़ने पाता—लोहा कोयला और फिटकिरी की यहां

खान है–जैनी यहां भी बहुत हैं राजधानी भुज एक पहाड़ी के नीचे बसी है और २२००० आदमियों की वस्ती है–मंडवी एक दूसरा नगर समुद्र के तट पर बन्दरगाह है राजा यहां महाराव कहलाते हैं और राजपूत हैं–विद्यावृद्धि की ओर महाराज का बड़ा ध्यान और स्वयं भी विद्वान् हैं–

## खैरपुर ॥

यह रियासत ६१०९ मील मुरब्बा है आबादी १३१९६० और मालगुजारी ७ लाख के ऊपर है–यह राज्य सिन्धु नदी के पूर्व सिन्ध देश के उत्तर रेगिस्तान है ८ महीने तक अत्यन्त गरमी के उपरान्त थोड़ा पानी बरसता है–अन्न रूइ नील यहां की खास पैदावार है मुसल्मान इस रियासत में बहुत हैं हिन्दू जो राजपूत हैं कुल आबादी का पांचवां हिस्सा होंगे–मोटे किस्म का अन्न उंटनी का दूध और उसी का मक्खन इस देश के रहने वालों की खुराक है–सिन्धी पारसी और वेलूची तीनो प्रकार की भाषा यहां बोली जाती है–नौवाब साहब वेलूची मुसल्मान हैं १७८३ ईस्वी में मीर फतेह अलीखांने बिलकुल सिन्ध को अपने दखल में कर लिया था पीछे उस्के भतीजेने खैर पुर के घराने की बुनियाद डाली–काबुल की चढ़ाई में अंगरेज़ों ने जब बिलकुल सिन्ध फतेह कर लिया खैरपुर की रियासत छोड़ दी गई–यह ८००० आदमियों की वस्ती है मकान बिलकुल कच्चे और बड़े मैले सिन्धु नदी से १५ मील पूर्व सिन्धु की नहर पर बसा है–नौवाब यहां के मीर कहलाते हैं–पैदावारी का तिहाई हिस्सा मीर ले लेते हैं इसी तरह दीवानी के मुकद्दमों में दावे का चौथाई हिस्सा मीर का होता है इस लिये लोग बहुत कम मुकद्दमा दायर करते हैं पंचाइत के फैसले की यहां अधिक चलन है–

## पालनपुर और राधनपुर–

ये दोनो रियासतें भी गुजरात और सिन्ध के बीच पांच २ लाख की एक एक मुसल्मानों के आधीन हैं जो नौवाब कहे जाते हैं–पालनपुर १८००० आदमियों की वस्ती है और राधनपुर १५००० की–राधनपुर राधनखां का बसाया हुआ है जो गुजरात के मुसल्मान बादशाह की ओर से चौदहवीं सदी में सुबेदार मुकर्रर किया गया था–पालनपुर अधिक तर पहाड़ी और राधनपुर की रियासत समथर है–राधनपुर का राज्य पालनपुर से पैदावारी में अच्छा है–

पूरब और दक्षिणी हिस्सा पालनपुर का भी अति उर्वरा है साल में ३ फसल होती है—

## ईदुर—

यह राज्य विस्तार में २५०० मुरब्बा मील है आबादी इसकी २५८४२९ है और मालगुज़ारी पौने छ लाख की है—बंबई हाथा और राजपुताना के बीच यह रियासत है—धरती बहुधा उर्वरा अन्न तेल और ऊख यहां की मुख्य उपज है फल हरतरह के यहां बहुत फलते हैं—महाराज राठौर क्षत्री हैं और जोधपुर के घराने की एक शाख हैं सन १७२९ में यह राज्य कायम किया गया है—राज्य भर में २५ स्कूल हैं जिन्में २ लड़कियों की पाठशाला है—ईदुर ६००० आदमियों की बस्ती है महाराज राजकुमार कालेज इन्दोर के अंगरेजी में अच्छे विद्वान् हैं राज्य का प्रबन्ध उत्तम कर रहे हैं—

## राज पीपला—

यह राज्य नर्मदा के दक्खिन १५१४ वर्गमील है जनसंख्या अनुमान १२ लाख भूमिकर ८ लाख है दो तिहाई इस रियासत का सत्पुरा पहाड़ से ढ़का हुआ है दक्खिन की ओर ये पहाड़ ढ़लुआ होतेगये हैं—जंगलों में शहतीरें बहुत होती हैं और बाहर जाती हैं रुई तेलहन ऊख नर्मदा की तराइयों में अच्छे होते हैं महाराज गोहेल राजपूत हैं—दो २ तीन २ लाख के कई एक और स्वच्छन्द राज पास ही पास हैं जिन्में कोई ऐसी बात नहीं मालूम होती कि उन की चरचा यहां पर की जाय ॥

## खम्भात या क्याम्बे ॥

यह मुसल्मानी रियासत ३५० मील मुरब्बा है आबादी इसकी सन् ८१ में ८६०७४ थी आमदनी कुछ कम साढ़े ६ लाख—यह राज्य खम्भात की खाड़ी के ऊपर है धरती यहां की बहुधा उर्वरा है ११ और १२ सदी में यह शहर प्रसिद्ध बन्दरगाह था—सन १२९७ में जब मुसल्मानों ने इसे फतह किया यह हिन्दुस्तान का एक प्रसिद्ध नगर था और गुजरात के मुसल्मानी बादशाहों के समय में भी यह बहुत आबाद था उन्हीं गुजरात के बादशाहों का एक सुबेदार क्याम्बे के

विद्यमान नीवाब के घराने की बुनियाद डालने वाला हुआ—खम्भात का शहर उसी नाम की खाड़ी पर ३६००० आदमियों की बस्ती है अब इसके उजड़ जाने का कारण समुद्र का वहां पर खिसला हो जाता है—सुवर्णवती और माही नदियां जो यहां पर आ मिली हैं हरसाल इतनी मिट्टी अपनी धारा के साथ बहा लाती हैं कि जिससे खम्भात की खाड़ी पटते २ स्थल होती जाती है—नीवाबयहां के अपने को मुगल बतलाते हैं—यहां पर कई एक छोटी २ रियासतें और हैं जिन्हें हम फिर लिखेंगे अब निज़ाम हैदराबाद का कुछ हाल लिखते हैं ॥

## हैदराबाद ॥

यह बड़ा भारी राज्य तापीनदी से लेकर जहां वह सेंधिया की अमलदारी से मिलता है दक्षिण में तुङ्गभद्रा और कृष्णा नदी तक चला गया है—ईशानकोण की तरफ बरदा नदी गोदावरी में मिल इसे नागपुर के इलाके से अलग करती है बाकी और सब तरफ यह बंगाल मुम्बई और मन्द्राज हाते के सरकारी जिलों से घिरा हुआ है—संस्कृत में जिस देश का नाम तैलङ्ग है उसका बड़ा हिस्सा इसी में आगया है—लम्बाई इसकी ८८० मील और चौड़ाई ११० मील है—विस्तार वर्ग मील ८६८७ है आबादी सन् ८१ में ११४८९२१० थी मालगुज़ारी ३ करोड़ है—हैदराबाद का इलाका दक्षिण की ओर टेबिल के माफिक समुद्र की ओर उठता गया है जिसकी उचाई समुद्र की सतह से १२५० फुट है ईशान कोण को धरती इस राज्य की बंगाले की खाड़ी की ओर ढलुआ है कहीं पृथ्वी समथर अत्यन्त उर्वरा है—कहीं २ पहाड़ी और ऊसर है पर राजपुताना और सिन्ध कासा रेगिस्तान रियासत भर में कहीं नहीं है सब से बड़ी नदी यहां गोदावरी है जो पश्चिमी घाट पहाड़ से निकल अग्निकोण को बहती हुई वर्दा इत्यादि कई एक नदियों को अपने में मिलाती बंगाल की खाड़ी में गिरती है—तुङ्गभद्रा और कृष्णा भी जो इस राज्य की दक्षिण पूरब की सीमा है कई एक और छोटी नदियों को अपने में मिलाती उसी खाड़ी में गिरती है—तापती नदी के किनारे जो देश हैं उसमें रूई बहुत पैदा होती है अन्न ऊख तेलहन में अलसी यहां बहुत उपजती है—बेरार की रुई दुनिया भर में प्रसिद्ध है साधारण रुई की अपेक्षा बड़े दाम को बिकती है—बहुत किस्म के फल और जंगलों में कई किस्म की

गोंद बहुत उपजती है—कुलवर्गा में रुई कातने की कल भी निज़ाम साहब की तरफ से कायम की गई है कुल आबादी का दसवां हिस्सा मुसल्मान हैंगे—महराठे तैलङ्ग और वनिये यहां आवादी के खास हिस्से हैं—दिहातों में नीच जाति के लोग जो खेती तथा दूसरा छोटा काम किया करते हैं वे कुनवी चमार भील मंग महार और कोल हैं—तेलगू केनरी और महराठी भाषायें यहां जुदे २ हिस्सों में बोली जाती हैं—अब रुई चरसा अलसी नमक शहतीरें यहां से बाहर जाती हैं—वास्बे मन्दराज रेलवे रियासत के दक्षिण पश्चिम होकर गई है—उसी की एक शाख निज़ामस्टेट रेलवे हैदराबाद और सिकन्दराबाद को गई है—बादशाही ज़माने में यह दिल्ली का एक सूबा गिना जाता था पर अब उसकी सरहदों में बड़ा अन्तर होगया है क्योंकि विदार और औरङ्गाबाद के सूबों के हिस्से भी इसमें मिला लिये गये हैं—कोइले की कई खान यहां हैं गोलकुण्डा में विश्वविख्यात हीरे की खान है पर अब उसमें हीरा नहीं निकलता इमारत बनाने के काम के बड़े उमदा पत्थर भी यहां कई जगह निकलते हैं—निज़ाम ने अपनी निज की टकसाल कर रक्खा है १३ आने का रुपया यहां चलता है—इन्तिज़ाम रियासत का सब अंगरेज़ी ढंग का है यहां की हाईकोर्ट अदालत दीवानी और फौज़दारी शिक्षा विभाग इत्यादि अंगरेज़ी राज्य की अदालत या दूसरे महकमे शरिस्तालीम वगैरह का इन्तिज़ाम अंगरेज़ी राज्य के इन्तिज़ाम से किसी बात में हेठा नहीं है—निज़ामकालेज ओरियण्टलकालेज मेडिकलकालेज के सिवाय सौ के ऊपर छोटे बड़े स्कूल रियासत भर में हैं—राजधानी हैदराबाद मूसा नदी पर ८ मील के घेरे में बड़ा आबाद शहर है सन् ८१ की मर्दुमशुमारी में इसकी आवादी ३१२३९० थी—निज़ाम की महल मसजिदें देखने लायक इमारतें हैं सन् १५८९ ईस्वी में कुतुबशाह महम्मदकुली ने इसकी बुनियाद डाली थी जिस ने गोलकुण्डा को छोड़ हैदराबाद को अपनी दारूस्सलतनत कायम किया था इसके चारो ओर ऊंचे २ पहाड़ हैं समुद्र की सतह से १७०० फुट की ऊंचाई पर यह शहर बसा है—पास ही सिकन्दराबाद है जहां निज़ाम की पलटने रहती हैं ७ मील हैदराबाद से पश्चिम गोलकुण्डा का उजाड़ शहर और किला है निज़ाम का खज़ाना यहीं रहता है—यह बहुत पुराना शहर है वरंगल के राजा ने इसे बसाया था—१३६४ में बहमनी खानदान के बादशाहों के दखल में यह आया और बहमनी बादशाहत के टूटने पर जो ५ जुदी २ रियासतें कायम

हुई उन्में गोलकुण्डा सन् १५१२ में कुतुबशाही घराने के बादशाहों की राजधानी हुआ १६८७ में औरङ्गज़ेब ने इसे फतह कर दिल्ली की सलतनत में मिला लिया पास ही पुराने बादशाहों के मकबरे यहां देखने लायक हैं—हैदराबाद से वायु कोण को प्रायः तीनसौ मील की दूरी पर औरंगज़ेब का बसाया शहर है—आबादी इसकी अनुमान ६०००० के है दिल्ली की सलतनत में यह उस नाम के सूबे की राजधानी था उपरान्त बहुत दिनों तक निज़ाम की भी राजधानी रहा अब वेरौनक हो रहा है—पहाड़ काट कर शहर में पानी की नहर लाई गई है हर तरफ स्वच्छ पानी से भरे हौज़ बने हैं जिन्में फौहारे छुटा करते हैं—बाज़ार लम्बा चौड़ा औरंगज़ेब के महल खँडहर पड़े हैं पास ही उसकी बेटी का मकबरा शंगमर्मर के गुम्बज़ का बना है जिस्में कई जगह फौहारे और पानी की चादरें बनी हैं—औरंगाबाद से ७ मील वायुकोण को दौलताबाद का प्रसिद्ध किला है जो महादेव की पिण्डी की तरह एक खड़े पहाड़ पर बना है इसकी उचाई ५०० फुट से कम न होगी जिस पहाड़ पर यह किला बना है उसका अधोभाग एक तिहाई के अनुमान छील २ दीवाल की तरह सीधा कर दिया गया है और चारो ओर से बेलाग है—राह चढ़ने को किसी तरफ नहीं है पहाड़ के गिर्द खांई है जिसके बाहर दौलताबाद का शहर है चारों ओर जिस्के शहर पनाह है किले के भीतर जाने को पहाड़ काट कर सीढियां भीतर ही भीतर बनाई गई हैं जैसा किसी मीनार में बनाई जाती हैं—मशाल बार कर जाना होता है मालूम नहीं यह किला कब किस ने बनवाया था पहाड़ छीलने में और भीतर सुरंग बनाने में कारीगरी और मेहनत का खयाल करो तो बड़े २ इंजीनियरों की अकिल चक्कर में आती है—लड़कर इस किले को लेना बड़ा कठिन है किले वालों की रसद बन्द कर देने से अलबत्ता हाथ आसक्ता है—पहले इसका नाम देवगढ़ था चौदहवीं सदी के आरंभ में जूनाखां महम्मद तुगलक इस नगर की सुन्दरता पर मोहित हो दिल्ली उजाड़ वहां वालों को दौलताबाद में ले गया था किन्तु इसमें जब वह कृतकार्य न हो सका तो फिर उसे दिल्ली लौटआना पड़ा—पास ही इसके ७ मील वायुकोण को इल्लोरा है किसी समय शहरपनाह के भीतर अच्छा छोटासा शहर था—एक मील लम्बा अर्द्धचन्द्र के आकार पहाड़ काट महाअद्भुत मन्दिर बनाया गया है जिसकी कारीगरी देखते ही बनती है लिख कर कोई उसे कहां तक बता सक्ता है इस मन्दिर का दरवाज़ा १४ फुट ऊंचा है और भीतर का चौक

२४७ फुट लम्बा और १५० फुट चौड़ा है बड़ी बारीक कारीगरी की बहुतसी मूर्तियां यहां बनाई गई हैं—एक बड़ा अचरज यहां इस मन्दिर में यह देखा जाता है कि मन्दिर के उत्तरभाग में जैनमत की मूर्तें हैं दक्षिणभाग में बौद्धमत की बीच का हिस्सा शैवमत की मूर्त्तों से भरा हुआ है—बरसात में जब पहाड़ों से झरने जारी हो जाते होंगे तब यहां बड़ी बहार देखने में आती होगी—न जानिये किस समय किस ने इस मन्दिर को बनवाया है पर असंख्य रुपया इसके बनवाने में लगा होगा—हैदराबद से ७३ मील वायुकोण को शहरपनाह के भीतर ८ मील की लंबाई में विदर का पुराना शहर बसा है पुराना संस्कृत नाम इसका विदर्भ मालूम होता है जस्ते के बने हुक्के रकाबी आबखोरे यहां के प्रसिद्ध हैं—रायचूर इत्यादि कई एक नये और पुराने शहर बहुत सी प्रसिद्ध गुफायें मन्दिर मकबरे निज़ाम की रियासत के देखने योग्य हैं—

इस घराने की बुनियाद डालने वाला औरंगज़ेब के दरबार का एक तुरानी अमीर चिनकिलिचखां नामी था इसके बाप दादे आदि में तुर्किस्तान से आये थे और औरंगज़ेब के साथ लड़ाइयों में बहादुरी और मुल्की इन्तिज़ाम में लियाकत ज़ाहिर करते हुये बराबर बढ़ते गये यहां तक कि दरबार के अमीरों में शामिल कर लिये गये अन्त को १७१३ ईस्वी में किलिचखां को आसफजाह निज़ामुलमुल्क की पदवी दे औरंगजेब ने दक्खिन का सूबेदार मुकर्रर कर हैदराबाद भेज दिया—औरंगज़ेब के पोते महम्मदशाह के समय जो १७१९ में तख्त पर बैठा आसफजाह निज़ामुलमुल्क खास वज़ीर मुकर्रर किया गया और बहुत चाहा कि दिल्ली की सलतनत की रौनक और उरूज़ घटने न पावे किन्तु बादशाह को ऐश में डूबा हुआ पाय बुद्धि और हिम्मत में अत्यन्तदुर्बल देख बादशाह तथा दरबार के सुधरने की आशा से निराश हो अपने सूबे हैदराबाद को लौट आया और इसे अपने राज्य की राजधानी कायम कर स्वच्छन्द होगया—निज़ामुलमुल्क १०४ वर्ष की उमर में सन १७४८ ईस्वी में परलोक को सिधार गया—तब से निज़ाम की यह सलतनत अब तक बराबर कायम है—इसी के समकालीन हैदरटीपू और पेशवा का घराना भी श्रीरंगपट्टन और पूना में अपना २ राज्य स्थापित कर चार दिन की चांदनी के समान थोड़े समय तक बहुत कुछ चमक उठे थे किन्तु निज़ाम हिकमत अमली को काम में लाते हुये अब तक बने हैं इन के समकालीन टीपू और पेशवा उच्छिन्न होगये और ऐसा अस्त हुये कि

उन का अब नाममात्र हिन्दुस्तान के इतिहास में रह गया--सरसलारजंग जो अभी १८८४ में परलोक सिधारे इस रियासत की बड़ी तरक्की कर गये और वही का चलाया प्रबन्ध वहां इस समय चलरहा है जो २ सुधार की बातें सरसलारजंग जारी कर गये उस्के अनुसार प्रबन्ध बना रहेगा तो हिन्दुस्तानी रियासत का बड़ा भारी यह टुकड़ा हमलोगों के आंसू पोछने के लिये अंगरेज़ी राज्य की शान्ति का फायदा उठाता हुआ चिरस्थायी रहेगा और दिन २ तरक्की करता जायगा-शेष-

## रंग में भंग ॥

ईश्वर रंग में भंग की नौबत किसी को न पहुंचावे रंग में भंग का सदमा कभी को ऐसा भारी हो जाता है कि सहारे नहीं सहा जाता—महाराज दशरथ को रामाभिषेक के समय केकई का किया रंग में भंग का ऐसा प्रबल धक्का लगा था कि उस शोक को न सम्हाल सके और जीवन से हाथ धो बैठे—श्रीरामचन्द्र भी यद्यपि तितिक्षा धैर्य और सहिष्णुता आदि पौरुषेय गुणों में अद्वितीय थे किन्तु अपने राज्याभिषेक में रंग में भंग देख यह कही तो डाला «प्रातर्भवामि वसुधाधिपचक्रवर्ती सोहं व्रजामि विपिने जटिलस्तपस्वी»—सच है «अपना चेता होत नहि प्रभु चेता तत्काल» लड़के का व्याह रोपा है लगन मुहूर्त दिन सब स्थिर हो गया व्याह की तैयारी में सैकड़ों हज़ारों खर्च हो गये दूर २ के नेउतहारी आय जमा हुये हैं कल सोहगी है परसों बरात निकलै गी जी में बड़ी २ उमंग और हौसिले भरे हैं सब पूरे होंगे—अचानक घर में साठ बरस की एक डोकरी ढुलक गई रंग में भंग हो गया आये दो वर्ष कोई लगन मुहूर्त बनता नहीं दो वर्ष किसने देखा है सब हौसिला पस्त होगया हाथ मल पछताय रह गये क्या करैं कुछ बस न चला नहीं तो उस डोकरी को दम घुटने से रोक रखते—पूस का महीना है सरदी खूब सुरखी पकड़े है सात सेर रूई की लिहाफ ओढ़े ब्रह्मानन्द के सहोदर सुख का अनुभव करते दंदाने पड़े हुये घर्राटे की नींद में खाब देख रहे हैं कि हम किसी बड़ी रियासत के वज़ीर या कुल सियाह सुफैद के मालिक कर दिये गये हैं हज़ारों मनुष्य दिन रात हमारी खुशामद करते मुहजोह रहे हैं और गोपियों में कान्ह के समान सुख की पराकाष्ठा में पड़े हुये हैं अचानक बड़ी ज़ोर से लघुशंका की बाधा हुई पेड़ू फटने लगा ऐसा कि नींद खुलगई उठना पड़ा रंग में ऐसा भंग होगया कि हम पछ-

साते रह गये रज़ाई के भीतर पड़े सात बादशाहत की हुकूमत का आराम फीकापड़ गया—मोहफिल आरास्ता है तमाशबीनों की भीर चारो ओर से झुकी पड़ती है तबले की ठनक और सारंगी की गमक मोहफिल भर में गुंजी हुई है गाने वाली की मधुर तान की गिटकरी सुनने वालों के कान में रस बरसाय रही है—अचानक एक ओर दो आदमी लड़ने लगे गाली गुफ्ता से बढ़ते २ घुस्सिं घुस्से की नौबत पहुंची दोनों का क्रोध बढ़ता ही गया लाठी और सोंटे बरसने लगे दो चार का सिर फटा लोहू के तर्रारे बहने लगे सब ओर हुल्लड मच गया ऐसा रंग में भंग हुआ कि मोहफिल बरखास्त कर दीगई सब लोग पछताते उदास अपने २ घर रवानाबाशद हुये—इत्यादि थोड़े से उदाहरण हम ने रंग में भंग के दिये राह दिखला दीगई पढ़ने वाले ऐसा ही और बहुत से नमूने इसके जोड़ते चले जांय—

## पुलिसऐक्ट बिलपास होनेमें ऐसी जल्दी क्यों की गई ? ॥

पुलिसऐक्ट बिल पास हो गई किन्तु हम जाना चाहते हैं इसके लिये गवर्नमेंट ने इतनी आतुरता क्यों प्रकाश किया और समस्त शिक्षित समाजकी प्रार्थना और कौंसिल के यावत् हिन्दुस्तानी एतद्देशीय मेम्बरों की विवेकयुक्त सम्मति का अनादर कर इस बिल को एक ही बैठक में क्यों पास कर दिया—हिन्दुस्तानी ही नहीं वरन विलाइत के भी कई एक अंगरेज़ कौंसिल के मेम्बर इसके विरोध में थे कलकत्ता की चेम्बर्स आफ कामर्स इसके विरोध में थी बहुत से नील कर अंगरेज़ भी नहीं चाहते थे कि यह पास हो—क्या इस बिल के तुरन्त पास न करने से गवर्नमेण्ट के राजकोश के प्रबन्ध में कुछ बाधा थी ? क्या यह कोई करेंसीलेजिसलेशन था कि जिसके मुलतबी करने से सर्कार के खज़ाने में भयङ्कर हानि उपस्थित हो जाने का डर था—अथवा क्या इससे किसी विदेशीय राज्य के साथ युद्ध या मेल से कुछ सम्बन्ध था कि तुर्त नहीं पास होती तो मौका हाथ से निकला जाता है—या कोई दूसरी गुप्त बात थी जिसका प्रगट करना राजनीति के विरुद्ध होता था इसी लिये गवर्नमेण्ट ने इसके पास करने में इतनी अकुलाहट प्रगट की—यदि नहीं तो कौंसिल के कई एक मेम्बरों की विवेकयुक्त

प्रार्थना को क्यों स्वीकार न किया मन्दराज की महाजनसभा से प्रार्थनापत्र गया इलाहाबाद की सर्वसाधारण सभा से तथा और २ अनेक सभाओं से भी पत्र गये कि इस बिल का पास होना मुलतवी किया जाय किन्तु गवर्नमेण्ट ने कान न दिया और वरनाकुलरप्रेस ऐक्ट तथा ड्रामेटिकऐक्ट आर्म्सऐक्ट आदि की भांत इसे एक ही बैठक में पास करी तो दिया सो क्यों ? क्या गवर्नमेण्ट सच २ इस देश के पढ़े लिखे लोगों के समूह को विश्वास दिलाया चाहती है कि जिस बात के लिये तुम गिड़गिड़ाय प्रार्थना करोगे वह स्वीकार न की जायगी—यदि ऐसा है तो गवर्नमेण्ट का यह गुप्तभाव राजा प्रजा दोनों के लिये महाअनहित है इस पालिसी को छोड़ देने ही से कल्याण है और प्रजा का चित्त अपनी मूठी में करने का इससे बढ़ कर सहज लटका और क्या हो सक्ता है कि सर्कार उन की प्रार्थना पर न सर्वांश में तो कुछ तो ध्यान दे जिस्में यत्किञ्चित् उन का मनोरञ्जन होता रहे ॥

## म्युनिसिपल एलेक्शन—

इस वर्ष १५ दिन पहले से म्युनिसिपल एलेक्शन की बड़ी धूम मची रही दो दल हो जाने से इतनी धूम एलेक्शन के दिनों में आज तक कभी नहीं मची जैसा इस साल बोट देने वाले बेचारों पर दबाव और बोझ छोड़ा गया—एलेक्शन के पहिले बोट देने वालों की इतनी खुशामद की जाती है और सब तरह की उम्मेद उन्हे दिलाई जाती है काम निकल जाने पर फिर वे ही महाशय जैसा कुछ हाकिमाना बरताव करते हैं वह अखर आता है और चेयरमेन साहब की हां में हां के आगे वह उम्मेद भी उन की हवाई बुर्ज़ हो जाती है—कारण इसका यही जान पड़ता कि जो लोग मुल्क के सच्चे खैरख़ाह हैं म्युनिसिपल कमिशनर होने की पूरी योग्यता रखते हैं और खरे आदमी हैं वे हां में हां मिलाना पसन्द नहीं करते और ऐसे लोग हर एक शहर में दो ही एक होते हैं—रहे वे जिन्हें कलट्टर साहब के साथ कुरसी पर बैठने का शौक है और हाकिम बनने का हौसिला सिर पर सवार है वे ही इसके लिये उम्मेदवार बनते हैं दो उम्मेदवार हुये तो उतरा चढ़ी में बोट देने वालों के जी की सांसत हुई—अस्तु एक आध उन्में से ऐसे चुन लिये जाते हैं जिन के बाह्य तथा आभ्यन्तर चरित्र पर खयाल किया जाता है तो घिन होती है और यही कहावत

मन में आती है ८ तैली भुंजवा लागी हाट गई बाज़ारी बारह बाट ८— इससे हानि यह होगी कि ऐसे २ कम उम्र दूधमुहे जिन्हे ३ एतवार जन्म लिये हुआ है म्युनिसिपलकमिशनर होने से इसकी प्रतिष्ठा कुछ भी न रह जायगी— म्युनिसिपल कमिशनरी को यों ही लोग कम पसन्द करते हैं उन की अश्रद्धा और भी बढ़ती जायगी अन्त को यह म्युनिसिपल कमिशनरी जिसे लार्डरिपन महोदय आत्मशासन प्रणाली की पहिली सीढ़ी समझ इस ढंग पर ढुलका लाये थे ऐसे लोगों से भरती जायगी जिन्हें किसी तरह का तजरिबा नहीं है जो चेयरमेन साहब के रुख पर चलना ही अपना काम समझते हैं—चेयरमेन अच्छे और मुनसिफ मिज़ाज हुये जो बहुधा बहुत कम होते हैं तो प्रजा के लिये कुछ भलाई हुई कड़े और प्रजा का फाइदा और लाभ सत्यानाश कर गवर्नमेंट का लाभ और फाइदा सोचने वाले हुये तो रियाया को हानि पहुंचाने लगे जो प्रयोजन था कि लार्डरिपन महोदय का लगाया यह वृक्ष कुम्हला जाय सो धीरे २ अवश्य होने वाला है—आधे तिहाई भी ऐसे मेम्बर हों जो बड़े विद्वान् और राजनीति के मर्म समझने में पटुबुद्धि हों जिन लोगों ने उन्हें चुना है उन पर हुकूमत करने के जोश के बदले उनके फायदे के खांहा हों तो वह बात पूरी हो सक्ती है जो मतलब लार्डरिपन साहब का था नहीं तो यह सब एक तरह का प्रहसन है—जो ऐसे सुयग्य हैं उन्हे लोग अपने आप बिना किसी का दबाव पड़े चुन लेंगे और वे इस तरह की उतरा चढ़ी बोट के लिये कभी पसन्द न करेंगे—हमारे मन में तो कुछ ऐसा ही आता है कि जब ऐसे लोग म्युनिसिपल मेम्बर होंगे तभी इससे हमारा उपकार होगा—

## भारतीभवन का वार्षिकोत्सव ॥

चौथी फरवरी को भारतीभवन पुस्तकालय का पांचवां वार्षिकोत्सव समारोह बड़े उत्साह के साथ किया गया—टी—सी—लुइस साहब पश्चिमोत्तर और अवध के डइरेक्टर अफ पबलिक इनस्ट्रक्शन सभापति किये गये थे—वार्षिक विवरण के पढ़ने के उपरान्त पं० मदनमोहन मालवीय बी—ए—बी—एल—ने संस्कृत ग्रन्थों के ऐसे पुस्तकालय शहर में होने से क्या उपकार है और संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने की हमे क्यों आवश्यकता है इस्पर एक बड़ी मनोहर वक्तृता दी—उपरान्त बाबू अवधविहारीलाल एम—ए ने—एक रसीली और मधुर वक्तृता

इस बात पर की कि संस्कृत उसी आर्यजाति का बेशकीमती खज़ाना है जिस्का एक हिस्सा यूरोप के जर्मनी आदि भिन्न २ देशों में जा बसा और एक हिस्सा यहां हिन्दुस्ता में आबसा—शीत प्रधान अनुर्बरा योरोप की पर्वतस्थली इस योग्य न थी कि इन नये आये पाहुनो को यथोचित भोजन की सामग्री सम्पादन कर सक्ती न वह देश ही ऐसा था कि हिन्दुस्तान के समान तीनो ओर समुद्र एक ओर अगम्य पहाड़ों की खांई से घिरा हुआ सुरक्षित रहता—इस लिये यूरोप के इन आर्य जातिवालों को दांतो पसीने की मेहनत के उपरान्त पेट पालने की नौबत पहुंची और उसी मेहनत में इन्हें प्राकृतिक दृश्य के साथ लड़ाई करना पड़ा जो आधुनिक नये २ विज्ञान और शिल्प के ईजाद की बुनियाद हुई—आर्य जाति वाले अथाह बुद्धि के गम्भीर सागर होते ही हैं उसी में इन्होंने लोकोत्तर उन्नति कर दिखाया हिन्दुस्तान का सा योरोप सुरक्षित देश न था इस लिये ये बराबर शत्रुओं से युद्ध करते २ युद्धोत्साही वीरपुरुष हुये—हिन्दुस्तान की सर्व-शस्याढ्या उर्वरा पृथ्वी ने इन पाहुनों की सब भांत खातिरदारी की और अमृत रसास्वाद फलों के उपहार के द्वारा पेट पालने की चिन्ता से इन्हें सन्तुष्ट और निश्चिन्त रक्खा तब ये इस फिकिर में लगे कि इन प्राकृतिक दृश्यों के लय होने के उपरान्त फिर उन की क्या दशा होती है और इन की उत्पत्ति कहां से है? यही सब उन का तर्क अनेक प्रकार के दर्शन और उपनिषदों की बुनियाद हुई—पतितपावनीगङ्गा आदि महानदियों के जल की मर्मरध्वनि में ताड़ खजूर नारियल आदि के जंगलों में जिन आर्यमहर्षियों के गाये हुये सामवेद की ध्वनि—"सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन" वृक्षों के पत्तों के खड़खड़स्वनित में मानो अब तक गूंजसी रही है—सुरक्षित देश में आकर बसे और थोड़े ही परि-श्रम में खान पान इन्हें उससे अधिक जब मिलने लगा शत्रु का भी कोई भय न रहा तब ये निर्विघ्न मानसिक उन्नति के साधन में तत्पर हुये यह संस्कृत उन की उसी मानसिक उन्नति का परिणाम है—

बाबू अवधविहारीलाल की वक्तृता के सयुक्तिक तर्क पर सभासद् तथा लुइससाहब भी अत्यन्त प्रसन्न हुये उपरान्त पण्डित आदित्यराम भट्टाचार्य तथा और २ विद्वानों ने भी थोड़ा २ कहा—अन्त में श्रीमान् लुइससाहब ने भारतीभवन के स्थापक की प्रशंसा कर आलिक्ज़ेंड्रिया आदि स्थानों के पुस्तकालयों का इतिहास बड़ी देर तक कहा—स्कूल और कालिजों से निकले छात्रों को अपनी

योग्यता बढ़ाने और पुष्ट करने के लिये शहरों में इस तरह के पुस्तकालयों का होना बहुत आवश्यक है—कालेज से निकलने पर विद्यार्थियों को जैसा दिन रात पढ़ने की आदत पड़ी रहती है उस आदत के रक्षा करने की सहज उपाय यही मालूम होती है इत्यादि ऐसी बहुत सी बालकों के लिये हित और उपदेश की बातें उक्त साहब बहादुर ने कहा—जिन के कथन के प्रकार से हम सब लोगों को यही भासित हुआ कि यह शिक्षा विभाग का अवश्य कुछ उपकार करेंगे और कुछ न करैं तो नेस्फील्ड साहब के लोभ के कारण यहां के शिक्षा-विभाग में जो बिगाड़ होगया है उसे चाहो अवश्य सुधारैं—जो हो लुइससाहब बहुत बातों में अपने भूतपूर्व डैरेक्टरों से अच्छे मालूम होते हैं—अन्त में हमें यह कहते बड़ा हर्ष होता है कि यह भारतीभवन अब ५ वर्ष का हुआ और जिस पौधे को यहां के विद्यारसिकों ने लगाया था वह इस्के स्थापक की उदारता से सिंच सिंचाय अच्छी तरह पुष्ट पड़गया ईश्वर सानुकूल है तो यह अब न टूटेगा और अब कर्मचारियों का भी खयाल इधर रूजू होने लगा है चीफ सेक्रेटरी श्रीमान् लटूस साहब की बड़ी कृपा भारतीभवन पर है—जिन की अनुग्रह से गवर्नमेंट गज़ट भी भवन को मिलने लगा है—ईश्वर इस्की प्रतिदिन उन्नति करता रहै—

## चिरकाल के अनुभव का निचोड़ ॥

हाकिमों को खुश रखना और प्रजा का हित दोनो एक साथ निबाहना वैसा है जैसा एक नौकर दो मालिकों को खुश रखने की चेष्टा करे—सच है शहनाई का बजाना और बहुरी का चबाना एक साथ क्यों कर निभ सक्ता है—पुराने लोगों की बुद्धी और गोठिल अकिल पर उन्निसवी शताब्दी की सभ्यता की नई सिकली चढ़ाने की कोशिश निपट अनारम्भ और व्यर्थ का दिमाग खाली करना है—

मुल्क की तरक्की के लिये सब लोग हज़ार यत्न और कोशिश कर रहे हैं कल बल छल कोई उपाय न बच रही पर किसी का किया कुछ नहीं होता कुम्भकरण की निद्रा में सोये हुये इस देश के ब्राह्मण जिन्में अब केवल ब्राह्मणता का आभास मात्र रह गया है किन्तु पूर्वज ऋषियों के तेज की चिनगारी इन्में हज़ार मन कूड़े के भीतर छिपी हुई पड़ी है—जिस दिन वह आग एक साथ धधक उठैगी उसी दिन न जानिये ये क्या कर डालैं गे सब लोग जो इस कदर हफनाय रहे हैं मुह ताकते रह जांयगे केवल ब्राह्मण देश के उद्धार में अग्रसर हों गे

और वह चिनगारी तब तक न धधकै गी जब तक इन्हें दक्षिणा मिलता जायगा उचित है सब लोग कोशिश कर हरामखोरी की इस आदत को इन से दूरहटावैं—

स्त्रियों की दशा के सुधारने के विना समाज संशोधन की बाहरी चमक दमक चूना पोती कबर के समान है अर्थात् हिन्दुओं में स्त्रियां न कभी इस निकम्मी दशा से उद्धार पावैंगी न हमारी समाज के अनेक दृढ मूल कुसंस्कार कभी हटाये हटैं गे —

कोशिश हमारे देश के रामायनी वाले निरक्षर महाजनों का शिक्षित और विद्या रसिक होना पत्थल पर दूब का जमना है और विना भीत के चित्र का उरेहना है—

इतने मनुष्य सदा सूतकी अपवित्र रहते हैं जिन का स्पर्श भी गंगा में हज़ार वार का धोता आदमी को पाक साफ नहीं कर सकता और वैसे अपवित्र ये हैं—स्त्रीजित जोरूका गुलाम, कौड़ी २ दांत से थांभनेवाला काइयां कट्टर सूम, स्वार्थ लम्पट अनदेक्खा, दांभिक मक्कार "जीभ पर रामराम पेट में कसाई का काम"—

तालीम का प्रवाह हज़ार सोते से बहै किन्तु मुसल्मानो को हिन्दुओं के साथ हमदर्दी सहस्र युग पर्यन्त भी अन होनी है—

विधाता की सृष्टि में ये बातें न कभी किसी ने सुना है न देखा है—पा योनियर को हिन्दुस्तानियों के लिये खैर का कलमा कहते—अंगरेज़ों को हिन्दुस्तानियों के साथ खुले जी से मिलते—गवर्नमेंट को इङ्गलैंड के मुकाबिले इण्डिया को कुछ फाइदा पहुंचाते—मुसल्मान विना तअस्सुब—हिन्दू पुरानी लकीर की पैरवी से खाली—

खराबखस्ता हुआ चाहे तो हिन्दी अखबार की एडिटरी करे—या थोड़ी सी अंगरेज़ी छांसु मिज़ाज में बाबूपन को जगह दै बाप दादों के पेशे से घिनाने लगे—

मुल्क की तरक्की के सहज लटके—हिन्दू धर्म के पीछे सती होता रहै, बाल्यविवाह की चलन को दिन २ तरक्की देता रहे—खाने पीने की छिलावट और चौका पोतने में चौकसी रक्खे—इत्यादि थोड़े से हमने बहुत दिनो के अनुभव के निचोड़ आपको छह सुनाया अभी बहुत से और भी इसी तरह के हमारे सिद्धान्त हैं आज ही सब सुनादें गे तो खज़ाना खाली हो जाय गा इससे क्रम २ से समय २ प्रगट करते रहैं गे—

# हम कभी अपनी गिरीदशा से उठेंगे भी– ?

इस असार संसार में जितने पदार्थ हैं कभी सदा एकसी दशा में नहीं रहते किन्तु आदि मध्य अवसान सब के साथ लगा है–युग वर्ष महीना पखवारे को अलग कर दीजिये दिन और रात के २४ घंटों में कितना अदल बदल होता है सूर्य के उगते ही दिन का आरंभ होता है प्रात समीरण की ठंढी हवा के साथ सूर्य की सुहावनी लाल किरने रात में ८ घंटे की नीन्द के उपरान्त प्राणी मात्र को अपने २ काम में प्रवृत्त होने को प्रोत्साहित करती हैं–वही किरने ६ घंटे बाद मध्यान्ह होते अत्यन्त खरतर और ललाटन्तप हो जाती हैं सब लोग थोड़ी देर के लिये विश्राम की आकांक्षा करने लगते हैं–उपरान्त धीरे २ सूर्य अस्ताचल की ओर झुकने लगते हैं मध्याह्न की किरने मृदुता धारण करने लगती हैं यहां तक कि सांझ को प्रकाश अति मन्द पड़ जाता है सब ओर अन्धकार छाने लगता है उसी को रात कहते हैं तब सूर्य का काम दीपक से निकलता है बिना जिसके काम नहीं चलता उस समय दीपक सूर्य से भी अधिक प्रतिष्ठा पाता है–इसी तरह मास वर्ष युग आदि में भी अवस्थान्तर देखा जाता है–अधिक सोचने से यह भी प्रगट होता है कि काल देश व्यवहार आचार विचार जन-स्थिति सब में अदल बदल हुआ करता है तो सिद्ध हुआ हमारा देश और जाति भी जैसी अब हम देखते हैं पहले ऐसी न थी और न सदा ऐसी ही रहेगी किन्तु अवश्य इसमें कुछ न कुछ परिवर्तन होगा रहा यह कि वह परिवर्तन चाहो भलाई के लिये हो या बुराई के लिये–महाकवि भवभूति ने इस परिवर्तन का बहुत उत्तम चित्र एक जगह उत्तरचरित्र में दरसाया है–

पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमभवत्तत्र सरितां,
विपर्यासो जातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् ।
बहोर्दृष्टं कालादपरमिव मन्ये वनमिदं,
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति ॥

पदार्थ विद्या से यह भी निश्चय किया गया है कि जब एक वस्तु किसी ओर को चलने लगती है तो बिना किसी के रोके वा फेरे नहीं रुकती वा फिरती किन्तु बराबर आगे बढ़ती ही जाती है–खयाल करने की बात है कि हमारे

देश की स्थिति या रीति नीति तरक्की की ओर जा रही है या नीचे को गिरती जाती है—यह सब तरह पर निश्चित और सिद्ध है कि हम हर एक बात में बराबर नीचे को गिर रहे हैं—सिवाय दस बीस हठीले नई रोशनी वालों के जिन के खयाल बिलकुल बदले हुये हैं बड़े हठ के साथ इस बात को मान रहे हैं कि हम तरक्की की सीढ़ी पर बराबर चढ़ते चले जाते हैं बाकी सब लोगों का यही अटल विश्वास है कि पहले से अब हम बल बुद्धि पराक्रम सब में क्षीण और सुख सम्पत्ति विहीन हो गये—प्राकृतिक नियम के अनुसार भी यह बात सिद्ध है कि गति का रोक बिना किसी विरूद्ध प्रेरणा के नहीं होता और जब कोई बात उसके रोक की न हुई तो उसकी वह अवस्था बढ़ती ही जायगी—पुराने खयाल वाले इसे काल और युग का करतब समझ सन्तोष करलेते हैं जिनकी बुद्धि में यही धसा है कि हम नित्य २ बिगड़ते ही जायंगे ईश्वर की इच्छा ही ऐसी है अपना कुछ वश नहीं है वश भी होतो कर क्या सक्ते हैं—

"जानामि धर्मं नच मे प्रवृत्ति,
जानामि पापं नच मे निवृत्तिः ।
केनापि देवेन हृदिस्थितेन,
यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि,, ॥

हज़ार सिरधुनो पुराने लोगों का यह अटल विश्वास हटाये नहीं हटता कोई कला नहीं लहती और यही प्रश्न चित्त में उठता है कि हम कभी अपनी इस गिरीदशा से उठेंगे भी ? अस्तु हिन्दुस्तान की घटती की दशा जो दिनो दिन वेग गति से एक ओर को जा रही है उसके रोकने के कई कारणों में प्रधान कारण हम लोगों की सांप्रतिक दरिद्रता का उच्छेदन है जिस ने यहां की भूमि और जलवायु को अपना घर कर लिया है और जिसके त्रास से अस्थिरालक्ष्मी समुद्र की बड़ी २ लहरों में चकराते दूर २ की खाड़ियों में टकराते द्वीपान्तर को अपना निवासस्थान कर डाला—नई वज़ा नई तरहदारी, नये फेशन, नई अकिल, नई ईजाद, नई रोशनी, नये दिमाग, नई उमंग, को पाय आरत दशा में पड़ा इस पुराने भारत के पुराने भेख, पुराने ढंग, पुराने खयाल, पुराने तर्ज़, पुरानी रीति नीति, को चंचलालक्ष्मी कब पसन्द कर सक्ती है—सच रहीम ने कहा है—चपला यह न रहीम थिर सांच कहत सब कोय—पुरुष पुरातन की बधू

क्यों न चंचला होय,,—यह उसी चंचला के स्थिर हो जाने का फल है कि वहां की मिट्टी कांच और खूदड़ सोने चान्दी के भाव बिकते हैं— महाराणी के तो. शेखाने में बीस २ हज़ार रुपये की चैना मिट्टी की बनी रकाबियां सुनने में आती हैं जितने का हमारे देश के राजा महाराजाओं के तोशेखानो में सोने चांदी का असबाब मुशकिल से निकलेगा—यह क्षीणबित्त होने ही का नतीजा है कि यहां के लोग चीज़ों की कारीगरी और ठोसपन नहीं देखते विलाइत की चमक दमक और सुबुकपन पर मोहित हो सस्ती समझ हीरा दे कांच खरीदते हैं— नहीं तो कौनसी दस्तकारी यहां नहीं है किन्तु सब कदरदानी को जड़ रुपया सो उड़ गया महज़ लिफाफा ही लिफाफा रह गया—नई रोशनी वाले हमारे नवयुवक जिन को अभी अथाह असीम संसारसागर के थहाने का नौका ही नहीं मिला इस बात के सबूत में अपनी लियाकत का सर्वस्व खर्च किये डालते हैं कि पहिले से अब हमारी सब भांत उन्नति है किन्तु विचारवान् जिसे पूर्वापर का अच्छी तरह अनुभव है उस्के निष्पक्ष विचार में यह बात नहीं समाती कि उस बेगगामिनी हमारी अधोगति का अब तक कोई रोक हुआ है वरन हमारी रीति नीति तथा समाज में जो कुछ बाहिरी चमक दमक देख पड़ती है वह सब मिल देश को नित्य २ पोला किये डालती हैं और वास्तविक उन्नति का बीज हम कहीं पर किसी कोने में जमते देखते ही नहीं न नष्ट भ्रष्ट हमारी समाज की जीर्ण दशा उसे जमने देगी न कोई आशा है कि वह बीज कभी को जमेगा—

हम ऊपर दिखला आये हैं कि बड़ा भारी कारण उस्का हमारी दरिद्रता है दूसरा कारण गवर्नमेण्ट की पालिसी और शासन परिपाटी है तीसरा कारण हमारी परिवर्त्तन विमुखता है बल्कि यह अन्तिम कारण सबों में प्रबल है जो हम में ज़रा भी हिलने डोलने की ताकत नहीं आने देता—इस परिवर्त्तन विमुखता ही पर लक्ष्य कर हमे शङ्का होती है कि हम कभी अपनी गिरीदशा से उठेंगे—थोड़ीसी पढ़े लिखे लोगों की शिक्षितमण्डली व्यर्थ का अभिमान कर रही है कि देश तरक्की कर रहा है हम अपने अनुभव से देखते हैं तो उन की शिक्षा का ज़रा भी असर हमारी परिवर्त्तनविमुखता पर नहीं पहुंचा और हम वैसे ही कट्टर "कनसरवेटिव" परिवर्त्तन विमुख बने हैं जैसा ४० वर्ष पहिले रहे बाल बराबर इधर उधर नहीं टसके—शासनकर्त्ता की पालिसी से अलबत्ता धन देश का चुक गया सही किन्तु धन के चुक जाने से भी इन की उस बात में कुछ कमी

हुई हो सो नहीं दस की जगह दो ही से लीक पीटते जायंगे लीक में अन्तर न पड़ने देंगे–रोग शोक विपद संपद चाहो जैसी नाज़ुक दशा में हम आगये हों किन्तु लीक के बाहर न हों—पूरा निश्चय होगया कि हम को लीक की पैरवी ही ने खराबखस्ता करडाला किसी काम के न रहे देश की अधोगति इस लीक ही ने किया किन्तु इतना साहस और हिम्मत कहां कि लीक के बाहर हों—गवर्नमेण्ट भी हमारी इस लीक का भरपूर फाइदा उठा रही है वह जानती है कि लीक के बाहर होना इन के यहां बड़ा भारी पाप है और पाप से ये अत्यन्त डरते हैं तो लाचार हो जिस तरह हम इन्हें रक्खेंगे रहेंगे–हाथ पांव ढीला किये लीक के बन्धे ढर्रे पर अब तक बराबर चले आये और चले जायंगे एक ओर थोड़े से तालीम याफ्ता दूसरी ओर संशोधकों का दल चिल्लाता रहे हमारा ढर्रा हमें मुबारक रहे किम्बहुना–

## पुष्पवती ॥

यह छोटा सा उपन्यास हमें काशीनिवासी बाबू कार्त्तिकप्रसाद द्वारा प्राप्त हुआ है "प्लाट" बन्दिश इसकी अच्छी है पर भाषा क्लिष्ट है जहां पर प्रचलित सहज हिन्दी शब्दों से मतलब निकल सक्ता था वहां पर व्यर्थ बड़े बड़े क्लिष्टसंस्कृत शब्द रक्खे गये हैं । मूल्य ।=) पं० गोकुल नाथ शर्मा औदीच्य कृत यह पुस्तक है ॥

## इत्तिफाक चाहने वालों की एक नकल ॥

संशोधन चाहने वाले देशहितैषी दिमाग खाली किये डालते हैं चिल्लाहट मचाये हुये हैं कि हिन्दुस्तान में एका और इत्तिफाक नहीं है हम कहते हैं सो क्यों हो–एक हो जांयगे तो कौनसा पद हमें मिलैगा न एक हुये तो क्या हानि है—हम एक २ रहैंगे, आधे २ रहैंगे, टुकड़े २ रहैंगे, न रहैंगे, लड़ मरैंगे, कट मरैंगे, तीन तेरह हो जांयगे, फिर तुम्हें क्या तुम्हारा साझा। हाय यह हम अपनी आंखों से क्योंकर देखें कि तुम हमारे आगे निकले जाते हो—हम तुम दोनों का एकसा मास एकसा लोहू एकसा खान पान एकसा रूप रंग एकसी रहन सहन तब कैसे हम से बरदाश्त हो कि तुम आगे बढ़जाओ और हम बैठे २ मुह ताकते रहैं—इत्तिफाक चाहो हो या काली माई के खप्पर में झोंक दिया जाय

किन्तु अपने सकभर डाह को यह आंच हम से नहीं सम्हाली जाती, ऐसे एका में लगै आग पड़ै पत्थर उजहि जाय वह एका--हमारे मन की मौज है जैसे चाहैंगे वैसे रहैंगे हमें डर किस्का-तुम बड़े से बड़े सात ताड़ दस खजूर की ऊंचाई के आगे बढ़े सही फिर हम तुम्हें नहीं मानते--क्या कोई सर्कारी कानून है कि हम तुम से अपने को कम या किसी बात में हेठा समझैं क्या तुम कोई लाट हो, कलट्टर हो, कोतवाल हो, पुलिस के दारोगा हो हम तुम्हें नहीं मानते तुम हमारा क्या करो गे--क्या यह भी ताज़ीरातहिन्द की कोई दफा है कि तुम्हें एक हो कर रहना ही पड़ेगा न रहो गे तो मुजरिम समझे जाओगे अथवा एका कर रहोगे तो तुम्हें बड़ाभारी खिताब दिया जायगा-तुम कहते हो आपस में इत्तिफाक रक्खो तो एकबारगी उछल आसमान के सातवें तबक में जा बैठो-हम दोज़ख में पड़े २ सड़ैंगे पर तुम्हारी बात न मानेंगे-हम रोज़ २ बिगड़ते जाते हैं सब भांत घटते जाते हैं तुम्हारी बला से तुम्हारे बाप की बला से तुम कौन हो जो लम्बे चौड़े व्याख्यान उपदेश और नसीहतें दिया करते हो बस अब भी समझ जाइये अब कभी न कहना कि आपस में इत्तिफाक से रहो, एका करो, मिल के रहो, आगे को कदम बढ़ाओ, इतने पर भी जो तुमने न माना तो जानगये बड़े बेहया हो बेशरम हो इस तरह व्यर्थ की बक बक करने का तुम्हें नसूर पड़ गया है अच्छा तो तुम हज़ार बकोगे हम एक न सुनैंगे-बस अब जाइये घता-

## कसरत ॥

पत्र पढ़ने वालों में नादिहन्दों की कसरत—अदालतों में वकीलों की कसरत-बाज़ारों में विलाइती चीज़ों की-तालीम के इस ज़माने में पढ़े लिखों की-अमीरों के दरवार में अड़ियल टट्टू खुशामसखरों की-महाजनों में सूदखोरों की-रोज़गारियों में दिवालदारियों की-सर्कारी दफ्तरों में ग्रेज्युएट उम्मैदवारों की-हिन्दुस्तान में नाइत्तिफाकी की-अंगरेज़ों में स्वजाति पक्षपात की-सुशिक्षितों में अनीश्वरवाद की-हिन्दूधर्म में चौका और भिन्न २ संप्रदायों की-भारतललनाओं में सतीत्वकी-गव-

र्नमेंट के कर्मचारियों में ऐंगलोइंडियन्स की—अमलों में रिश्वतखोरों की—महकमा डांक और तारबरकी में अधकचड़े कम पढ़ों की—वैद्य और डाक्टरों में नीमहकीमों की—हिन्दूसमाज में भोंदूदास गोबरगनेसों की—पोथी पढ़ने वालों में कथकड़ पुराणभट्टों की—पारसी कश्मीरी गुजराती तथा खत्रियों में हुस्न की—अंगरेज़ी सभ्यता में शराबखारी की—हमारे लेख में चुभने वाली चुटीली रसीली बातों की—इत्यादि—इत्यादि—

## दमयन्तीस्वयंवर—नाटक ॥

इस समय नाटकों के अनेकानेक ग्रन्थ नये२ रङ्ग ढङ्ग पर बनते छपते प्रचार होते चले जाते हैं, इस अवसर में "दमयन्तीस्वयंवर-नाटक" जोकि सन् ९३ के हिन्दीप्रदीप में प्रकाश किया गया था वह पण्डितवर बालकृष्णभट्ट (सम्पादक हिन्दीप्रदीप) जी की आज्ञानुसार देवनागरीभाषा के अनुरागी नाट्यदर्शकों के सुगमतार्थ उक्त पत्र से उद्धृतकर पुस्तकाकार छपा कर तैयार किया गया इस नाटक में महाकवि श्रीहर्ष की ललित और रसीली कविता का सारांश निकाल कर नाटक के आकार में बांधा गया है जो लोग संस्कृत नहीं जानते उन्हें भी श्रीहर्षकृत नैषध ग्रन्थ के पढ़ने का आनन्द मिल सक्ता है जिस का मूल्य डाकव्ययसहित केवल ≡) आना ही मात्र है बस अधिक लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है जिन महाशयों की इच्छा हो ≡) का टिकट निम्नलिखित स्थान में भेजकर मँगा लीजिये ॥

बाबा नारायणदास वैद्य के पुत्र-परमानन्द

शाहलालाबाग—प्रयाग

# हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० १८ सं०५-६-७ } प्रयाग { जनु-फर-मार्च १८९४

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्दमैपोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥

# परिशिष्ट-टिप्पणी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

# हिन्दीप्रदीप ॥


| | | |
|---|---|---|
| जिल्द १८<br>संख्या ५-६-७ | प्रयाग | जन-फर-मार्च-<br>सन् १८९५ ई० |


## पश्चिमोत्तर में तालीम की गिरानी ॥

इस विषय पर हम कई बार कई तरह पर लिख चुके हैं आज पिष्टपेषण की भांत उसी गाई गीत की फिर उधरनी करना पड़ता है—हम अपनी इस दुर्भिक्षकरपीड़ित दशा में जिस तरह पर सब ओर से जकड़े हुये हैं परकटे पखेरू के समान लुंज पुंज हो रहे हैं जितने द्वार सब के सब रुन्धे हुये हैं ऐसा कोई द्वार न बच रहा जिस्पर गवर्नमेंट ने अपना पंजा न फैला रक्खा हो ऐसी नाज़ुक दशा में हम लोगों को ढाढस बंधाने और आसू पोछने की तदबीर केवल तालीम थी—सब तरह का क्लेश सहकर भी सन्तोष किये हुयेथे कि समझ और तालीम का प्रवाह चल निकला है जिस्के अनेकानेक सोते देशभर को एक छोर से दूसरे तक सब ओर से सींच रहे हैं तो कुछ चिन्ता नहीं कभी तो हमारे दिन फिरेंगे—"सम्पद से विपदा भली जो थोड़े दिन की होय" सो अब इस तालीम की गिरानी से मालूम पड़ गया कि हमारी विपत्ति और हर तरह के क्लेश ने हमेशा के लिये हमारा दामन पकड़ रक्खा है जिस्से कभी हमारा गला छुटने वाला नहीं है—कफस में पड़े फड़फड़ाया करें सुख दुख विपद सम्पद न्याय अन्याय जो कुछ आ पड़ै भुगतते रहैं इसी लिये हम पैदा किये गये हैं तब परम्परागत अपने कुलधर्म सहनशीलता में जहां तक हो तरक्की करते ही जांय—खैर आदमी को किसी बात में लासानी और एकता होना चाहिये यूरोप और अमरिका की जुदी २ कौमें हज़ारों बात में आगे निकल गईं और निकली जाती हैं हम लोग सहनशीलता ही में तरक्की किये हुये हैं और किसी कौम को तितिक्षा में अपने आगे नहीं निकलने देते—हम लोग सहन करने में अग्रगण्य हैं संकुचितभाव

से रहना किसे कहते हैं जिस्का मन हो हम से आके सीख जाय—अस्तु इस आल्हा के आल्हापने का प्रयोजन यह कि तालीम हमे बड़ी महगी पड़ती थी सब कुछ गवांय तब यह हमें मिली थी हम तौभी अपनी वर्तमान् हीन दशा में इसे ग-नीमत मान केवल विद्या ही के द्वारा इस गिरी दशा के भरम्मत के लिये लौ-लगाये थे सो इस आशा को भी तिलांजुली देना पड़ा ऐडवोकेट लिखता है—हमारे नये डइरेक्टर लुइस साहब का पहला काम यही सुनने में आया है उन की राय है कि गवर्नमेंट कालेजों में फीस बढ़ा दी जाय—लोगों का इस्पर अनुमान है कि इनटरमीडियेट क्लास में जहां पहले ५) फीस के थे वहां ८)महीना कर दिया जयगा ऐसा ही बी—ए—क्लास में १०) और एम—ए—क्लास में १२) माहवारी पढ़ने वालों को अब देना होगा—जब कालेजों में फीस बढ़ाई जायगी तो स्कूलों में भी उस्का नमूना लिया ही जायगा—गारडेन साहब का मुबारक कदम जब से यहां इला हाबाद के हाईस्कूल में आया है तब से बराबर स्कूलिंग फीस उक्त साहब बढ़ाते ही चले जाते हैं— इन्ट्रेन्स क्लास में ४) माहवारी अभी ही लड़कों से ली जाती है अब और आगे बढ़ने का हौसिला होहीगा—खैर लुइस साहब इसी की निखं और पूंछआछ करते कि मिस्टर गारडेन को क्यों इस कदर सर्वतोमुखी प्रभुता देदी गई है कि वे जो कुछ चाहें सो करें जितना चाहें उतना फीस बढ़ाते चले जांय कभी कोई उन से मुजाहिम न हो—हमारे इन जिलों के मध्यमश्रेणी वाले तो कभी से अपने बालकों को पढ़ाने की ओर से हिम्मत हार बैठे हैं जो सर्कार की हिकमत अमली का मतलब था कि पश्चिमोत्तर में बंगाल बम्बई मन्दराज के समान विद्या बढ़ने न पावे सो फलोन्मुख हुआ—अपने लड़कों को इन्ट्रेन्स तक पहुंचाने में चूर ढीला हो जाता है तो और आगे बढ़ाने का क्या ज़िकिर—और अब तो देश से तालीम के सर्वथा उच्छेद कर देने की जड़ बांधी जाती है अब केवल वेही पढ़ने की हिम्मत करेंगे जो भरपूर रंजे पुंजे खुशहाल बड़े अ-मीर हैं—दौलत पास रहने से तालीम पाने की योग्यता उन्में है रहा यह कि उन का नाज़ुक मिज़ाज और सुकुमार शरीर पढ़ने लिखने की सख्त मेहनत काहे को गंवारा कर सक्ता है—अचक्क माया घर में रक्खी है सब तरह के ऐश और आराम की सामग्री मुहैया है तब उन्हें क्यों कमबख्ती सवार हो कि पढ़ने लिखने में परिश्रम कर मस्तिष्क को क्लेश दें—माना कि "सब नर होंहि न एक समाना" उन के समूह में कोई दो एक ऐसे भी हों जो ऐश आराम को लात

मार दिमाग और बदन की मेहनत बरदाश्त कर पूर्ण विद्वान् हुये तो उन्हें रा-यबहादुर होने का हौसिला बढ़ा या ऊंचे ओहदे की सर्कारी नौकरी पाने की फिकिर में हुये और ये दोनो बातें तभी हो सक्ती हैं जब हाकिम लोग उ-नसे खुश रहैं—गवर्नमेंट की वर्त्तमान पालिसी के अनुसार हाकिमों की खुशनूदी भी तभी हासिल हो सक्ती है जब गवर्नमेंट के मुकाबिले प्रजा को हानि पहु-चावे—दूसरे यह कि उन्हें अपना पद और गौरव «पोज़िशन» कायम रखने की फिकिर उन के लिये क्या कम है जिस्में वे इतना व्यग्र रहते हैं कि सर्वसा-धारण के सम्बन्ध की कोई बात में उन का अगुआ बनना अति कठिन और असंभव सा प्रतीत होता है—अपने मुल्की आदमियों के साथ हमदरदी देशा-नुराग मुल्क की तरक्की का जोश अंगरेज़ी शिक्षा से हम लोगों में आते चला है जो मानों अंगरेज़ी शिक्षा का फल है और यह फल जैसा आसानी से और ज़ाइकेदार मध्यमश्रेणी वालों में पैदा हो सक्ता है वैसा इन उच्चश्रेणी वालों में फलना कुछ उटपटांगसा मालूम होता है—खास कर हिन्दुस्तान की धरती में—हिन्दुस्तान में भी हमारे पश्चिमोत्तर और अवध के अमीर महाजन ज़मीदार तअल्लुकेदारों में—क्योंकि इन्में दौलत एक ऐसा ज़हर है जो शिक्षा के उत्तमगुणों को उन्में आने ही नहीं देता—ये तो देवताओं के समान थापकर एक कोने में बैठा दिये जाते तो अच्छा होता और इन से कह दिया जाता तुम अपनी विभव के अमोद प्रमोद में जी खोल तत्पर हो मुल्क के बनने बिगड़ने की अनेक पेचीदगियों में मस्तिष्क को क्लेश दोगे तो अकिल अजीर्ण रोग तुम्हें पैदा हो जायगा तब जन्मभर पछताते रहोगे—

हम लोगों में तालीम के सम्बन्ध में वही मसल चरितार्थ हुई «जैसा ही मूड़ मुड़ाया वैसा ही ओले पड़े» ज्योंही हम लोग तालीम के फाइदे समझने लगे त्योंही इस्के सोते पर डाट लगा दी गई—यह बंगाल और बंबई नहीं है कि वहां यदि सर्कार बिल्कुल तालीम का बोझ अपने ऊपर से उठा ले तो वहां इतने स्वतंत्र कालेज और स्कूल हैं कि प्रजा को कोई हानि नहीं हो सक्ती—हमारे यहां के रईस और महाजनों को तालीम का रस अभी तक नहीं मिला इसी लिये वे अपना रुपया स्कूल या कालेजों के चलाने और स्थापित करने में नहीं लगाया चाहते—इस्के गुण को समझे होते तो बेइन्तिहा रुपया जो वे ध-र्मार्थ लगा देते हैं और ऐसे धर्म में लगाते हैं जिसे धर्म कहते हंसी आती है

और उन की कम अकली पर अफसोस होता है सो क्यों करते—दूर क्यों जांय हम इलाहाबाद ही के रईसों का नमूना लेते हैं यहां एक निज के स्वतंत्र कालेज की कितनी ज़रूरत है कि कहां तक कहैं—दो लाख आदमियों की बस्ती में केवल एक म्योर कालेज है तब जिन्हें पढ़ना मंज़ूर है वे चाहो जो फीस लगै दे हींगे असंपन्न जिन्हें इतनी ज़ियादह फीस देने की औकात नहीं है आगे बढ़ने से निराश हो बैठ रहते हैं—कम फीस का अपना निज का स्वतन्त्र कालेज होता तो औसत दरजे वाले भी तालीम से क्यों महरूम रहते—हमारे यहां के एक रईस आज़म एक लाख रुपया घाट बनवाने के लिये देगये हैं इतना रुपया खर्च करने पर भी पुण्य का घाटा ही रहा यह बात देशहितैषियों के मन में चुभ रही है—वही रुपया एक हिन्दूकालेज के लिये दिया जाता तो कितना उपकार होता पर क्या किया जाय नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है—तूती की आवाज़ पर किसी का ध्यान होता तो यह क्यों कहा जाता कि तालीम की गिरानी है। अस्तु—

## बड़ों के बड़े हौसिले ॥

हमारे यहां के ग्रन्थकारों ने तृष्णा को पिशाची कहा है और निश्चय कर गये हैं कि इस्का अन्त कभी होता ही नहीं बरन इस्का अन्त होना ही सुख की सीमा है—हम यह दिखाया चाहते हैं कि यह उन की भूल है सुख की सीमा चाहो हो या न हो पर तृष्णा का क्षय हो जाता है—रहा इतना कि जो बेचारे हकीर छोटे लोग हैं उन की तृष्णा भी बड़ी छोटी इंच आध इंच की लम्बी चौड़ी बात की बात में बुझ जा सक्ती है किन्तु जो बड़े लोग कहलाते हैं उन्में उन के बड़प्पन के अनुसार सबी बात बड़ी होती है—"सर्वं हि महतां महत्"—तब हौसिले के नाम से तृष्णा भी उन की बहुत बड़ी होनी ही चाहिये जो थोड़े में कभी बुझती ही नहीं—आसमान के सातवें तहलों बलन्द हौसिले जहां परिन्द भी पर नहीं मार सक्ते थोड़े में कब बुझ सक्ते हैं इसी से लोगों ने सिद्धान्त कर लिया है कि तृष्णा का क्षय हई नहीं किन्तु यह सिद्धान्त उन का क्या भूल से खाली नहीं है—विचार की कसौटी पर कसने से चित्त इसे स्वीकार नहीं करता कि तृष्णा का अन्त हई नहीं—हां बड़े और छोटे लोगों की तृष्णा में फरक अलबत्ता होता है—हम हिन्दुस्तानियों की छोटी बुद्धि छोटी समझ छोटी

वाकफीयत छोटी हैसियत तब हमारी तृष्णा भी नितान्त छोटी हुआ चाहे—पढ़ लिख दस बीस की नौकरी पागये अपने को कृतकृत्य मान बैठे और जो कहीं सौ पचास के हेडक्लर्क इंस्पेक्टर तहसीलदार डिपटी या सदरअमीन कर दिये गये तो फिर क्या भागवानी के ओर छोर को पहुंच गये, सुख की सीमा के पार होगये—हां उन की तृष्णा के क्षय में बेशक़ तरद्दुद आ पड़ता है जो हर तरह पर बलन्द समझे गये हैं अकिल में बलन्द, शाइस्तगी और सभ्यता में बलन्द, ताकत में बलन्द, इत्तिफाक और एका में बलन्द, तबियतदारी में, फेशन की छिलावट में ऊंचे, इमानदारी में बलन्द, तब हौसिला भी उन का बलन्द होना ही चाहिये जब तक छोटे हाकिम जंट से लफटिनेण्ट न हों तृष्णा का अन्त होता ही नहीं—हम लोग रायबहादुर सि एस आई या राजाकर दिये गये हौसिला पूरा होगया—विलाइत के शाही खानदान वाले जो लार्ड या अर्ल कहलाते हैं उन के ऊंचे हौंसिले का अन्त तब तक नहीं होता जब तक प्राइम-निस्टर वज़ीर आज़म या कुल सियाह सुफैद के मालिक महारानी के प्रतिनिधि हिन्दुस्तान के गवर्नरजेनरल न कर दिये जांय—हिन्दुस्तानी फौजी अफ़सर फौज में सौ सवासौ की कोई नौकरी पा जाने ही से सन्तुष्ट हैं उन का हौसिला अपनी बलन्दी के छोर को पहुंच जाता है वही विलाइती फौज के अफ़सर जब तक कमेंडर इनचीफ न हों उन का हौसिला पूरा नहीं होता—हमारे देश के रुपये वालों के हौसिले का अन्त इतने ही से है कि घर बैठे पांचआना चार पाई का व्याज मिलता रहै डेउढ़ी के बाहर पांव न रखना पड़े किसी बड़े कारखाने में रुपया लगा देने से परता फैलाने पर व्याज का घाटा तो सब के पहले है उपरान्त काम न चला तो पूंजी से भी हाथ धोना पड़ेगा—विलाइत वाले एक लाख की पूंजी से जब तक दस लाख का कोई काम न करैं उन का हौसिला बुझता ही नहीं इंगलैंड अमरिका हिन्दुस्तान चीन सब को एक किये हैं—किसी एक काम में कुछ थोड़ासा नुकसान सहना पड़ा तो दूसरे में एक का बीसगुना कर मालामाल हो गये—कम हिम्मती की निशानी व्याज का घाटा हमारे समान विलाइत वाले भी देखते तो इंगलैंड आज दिन तरक्की के जिस ओर छोर को पहुंचा हुआ है कभी न पहुंचता लक्ष्मी सब ओर से सिमिट २ जो विलाइत को अपनी वासभूमि कर रही हैं काहे को कभी करती—वही हमारे यहां रोज़गारियें

के उत्साह का अन्त केवल इतने ही से है कि कलकत्ते का माल बंबई पहुंचा दें और बंबई का दिल्ली लाहोर में ढोय के रख दें इस हम्माली के काम में रुपये पीछे कहीं एक पाई मुनाफा हो गया निहाल हो गये रोज़गार की चरम सीमा डांक गये—हमारे देशी के सुशिक्षित के उत्साह का अन्त इसी में है कि वेश भूषा रहन सहन खान पान में कहीं पर किसी अंश में हिन्दुस्तानी न मालूम हों क्या करैं लाचारी है चमड़ा गोरा नहीं कर सक्ते—कोइला से किरानियों के हौसिलें का खातिमा साहब लोगों की लिस्ट में नाम दर्ज हो जाने से है—पादरी साहब के हौसिला का अन्त तब हो सक्ता है कि दुनिया के सब लोग नार्थपोल से सौथपोल तक ईसा को अपना मुक्तिदाता समझने लगें—हमारे ब्राह्मणों की तृष्णा का अन्त इसी में है कि नित्य उन्हें लड्डू और जलेबी पेटभर खाने को मिला करै और सबेरे से सांझ तक आध सेर सुंघनी सूंघते हुये सांड़ के समान डकारते हुये बैठे रहैं—" परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि पुनः पुनः "—रेलीब्रादर्स के हौसिले का अन्त तब होगा कि हिन्दुस्तान में एक दाना भी गेहूं का न रह जाय सब का सब जहाजों में लाद विलायत तथा और २ मुल्कों में पहुंचाय दें—सैयद साहब के हौसिले का छोर तब होगा कि बीबीउर्दू कुल हिन्दुस्तान की अदालतों में अपना पंजा फैला दे और जितने ऊंचे ओहदे हैं सब उन के कौम वालों के लिये बतौर अमानत के रख दिये जांय—दुर्भिक्ष पीड़ित हमारे किसानों के उत्साह का अन्त और उन के सुख की सीमा इसी में है कि सर्कार की बाकी न रहने पावे पेटभर कदन्न खाने को मिलता रहे, किन्तु मेघराज ने प्रण कर रक्खा है कि हम सो न होने देंगे जब तुम दिन रात दांतों पसीने की मेहनत कर खेती तैयार करोगे तब हम तुम्हें गुड़ दिखाय ढेला मारेंगे और इतना पानी बरसैंगे कि सस्यध्वंस में कसर न पड़े और एक दाना भी तुम्हारे घर में न जाने पावे राजा की नीयत और प्रजा के पुण्य का फल उजागर कर देंगे इत्यादि—

## सारांशसङ्ग्रह ॥

यह थोड़ासा सारांश प्रत्येक वस्तु का हम ने बहुत दिनों के माथा पिच्छी के उपरान्त सङ्ग्रह कर रक्खा है जिसे अपने पढ़ने वालों को सुनाया चाहते हैं—तद्यथा—विलायती चीज़ों का सारांश नफासत और चटकीलापन है—रोज़गार का

सारांश दियानतदारी है—हिन्दूधर्म का सारांश छूत और चौका है—इस देश के पण्डितों में पण्डिताई का सारांश टिट्टिभज् के घरपरे चूरन के साथ फ़ोन्तः के काढ़े की चटनी में चाटने लायक सिद्धान्तकौमुदी की फक्किकायें हैं—अंगरेज़ी सभ्यता का सारांश आज़ादी है—समाज संशोधन का सारांश बाल्यविवाह महाकोढ़ का साफ होना है जो हज़ार कोशिश करो कभी दूर होहोगा नहीं—लायलटी का सारांश पादाघात सहकर भी चूं न करना—खैरखाही का सारांश हाकिमों को जिस तरह हो खुश रखना—कुलांगनाओं में सारांश लज्जा है जैसा माघकवि कह गये हैं—"अन्यदा भूषणं पुंसां क्षमा लज्जैव योषितः । पराक्रमः परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव" हिन्दुस्तान में रियासत का सारांश रूपाजीवा जब तक दरजन आधा दरजन अपने पास गिरो न हों तब तक रियासत नहीं—इस नये ढंग की हिन्दीका सारांश स्वर्गवासी बाबू हरिश्चन्द्र की लिखावट के तर्ज़ का अनुकरण है—अंगरेज़ी अमलदारी का सारांश टिक्कस और मँहगी है—"जहां २ चरण पड़ैं सन्तन के तहँ तहँ बण्टाढार करैं"—अंगरेज़ी शिक्षा का सारांश ईश्वर पर अविश्वास—धूर्त्त मूर्ख ब्राह्मणों की जीविका का सारांश हमारे देश की धर्मशीला मूर्खस्त्रियां हैं—दीनइसलाम का सारांश तअस्सुब, और इसलामी सभ्यता का सारांश नुमाइश और ज़ाहिरदारी है—वी चर्दू का सारांश शीन काफ की तराश खराश—विलायत से लौटे हुये हिन्दुस्तानियों की लियाकत का सारांश मेम और शराबखोरी है—बस अब खज़ाना खाली होगया सोच के फिर बतावेंगे—

# नृपतिचरितावली ॥

## पहिले के आगे से ॥

## मैसूर—

यह राज्य हैदराबाद के दक्षिण चारो ओर सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ २०० मील लम्बा और १५० मील चौड़ा विस्तार में २७४०६ मील मुरब्बा है—यह पूर्व और पश्चिम दोनों ओर पूर्वी और पश्चिमी घाट पहाड़ के बीच चकतरे की तरह पड़ा है—इस राज्य में घाट पर्वत की उंचाई कहीं २ न्यूनाधिक २५०० फुट है शिवगंगा का पहाड़ ४९०० फुट ऊंचा है इस उंचाई के कारन आब हवा यहां की बड़ी नीरोग सदा वसन्तऋतु यहां वास करती है—जंगल भी यहां बहुत

हैं जिस्में खजूर बहुत पैदा होता है धरती यहां की लाल मिट्टी की है बहुधा पथरीली–दीमक बहुत हैं यहां तक कि तस्वीर लगाओ और थोड़े दिन उस्की खबर न लो तो केवल शीशा बच रहेगा कागज़ और चौखटा दोनों दीमकों का भोजन हो जायगा––भिक्षुकी यहां ओर छोर को पहुंची हुई है हिन्दू यहां के दान देने से दान लेने में बड़ा पुण्य मानते हैं–जब कोई बीमार पड़ता है और फिर जीने की आशा नहीं रह जाती तो मन्नत मागता है कि जीजांय तो इतने दिनों तक भीख माग के खांयगे––जब किसी से तकरार होती है तो गधा मार के रास्ते में छोड़ देते हैं उसी दिन वह सारा गांव उजाड़ हो जाता है कोई आदमी उस गांव में फिर नहीं बसता, आमदनी इस राज्य की १०२००००० है और आबादी सन् ८१ में ४९१४११० थी–मैसूर का शुद्ध नाम महीसुर या महिषासुर है मैसूर राजवंश की प्रधान पूज्यदेवी चामुण्डा हैं इस्से भी निश्चय होता है कि महिषासुर का राज्य इसी प्रान्त में रहा होगा–पहाड़ी हिस्सा इस राज्य का हरे भरे जंगलों से ढंपा कुदरती बाग मालूम होता है–सम भूमि या मैदान पास २ गांव और कस्बों के होने से बहुत घना बसा है–राज्य भर में दो प्रधान नदी हैं उत्तर की ओर कृष्णा बहुत सी छोटी बड़ी नदियों को अपने में मिलाते बंगाल की खाड़ी में गिरती है दक्षिण की ओर कावेरी इसी तरह कई नदियों को अपने में मिलाते उसी खाड़ी में गिरती है––रुई चावल मोटे अन्न तमाखू तेलहन यहां की पैदावार है यहां एक जाति बनियों की बहुत है जो लिंगायत कहलाते हैं महादेव का लिंग गले में पहने रहते हैं और बड़े धनी हैं––जैनी भी यहां बहुत हैं और ये भी जाति के बनिये और बड़े धनी हैं व्यौपार यहां का इन्हीं दोनों के आधीन है––केनारी यहां की मुख्य भाषा है––जंगलों मै चन्दन पहाड़ों पर बहुत पैदा होता है–लोग यहां के खेतिहर हैं कारीगरी किसी किस्म की नहीं जानते––कोलार के नज़दीक सोने की खान यहां हाल में प्रगट की गई है––मोटे अन्न नारियल चीनी काफी पान यहां से बाहर जाता है––

मैसूर के राजवंश का हाल बहुत स्पष्ट नहीं है कहते हैं प्राचीन समय में यह बानर राज सुग्रीव का राज्य था उपरान्त कई एक जुदे २ वंश के राजा राज्य करते आये अन्त में यह हैदरअली के अधिकार में आया––जूनाखां महम्मद तोगलक के अत्याचार के कारण जो दक्षिण के सूबे, दिल्ली की हुकूमत से

अलग हो गये उन्में एक विजयनगर भी था यहां के हिन्दूराजा दोसौ वर्ष तक ईस्वी सन की चौदहवीं शताब्दी के मध्यभाग से सोलहवीं सदी के प्रारंभ तक मुसल्मानों से बराबर लडते रहे जिन्में राजा देवराय बड़े प्रतापी हुये और बहमनी खानदान के मुसल्मान बादशाहों से कई बड़ी भारी लड़ाइयां लड़ीं—मैसूर विजय नगर का एक सूबा था १७५० ईस्वी में विजयनगर का पुराना राजवंश अति दुर्बल होगया और राजा का प्रधान मंत्री नंजिराज ने कुल राज्य को अपने अधिकार में कर लिया—इसी समय हैदरअली प्रगट हो राजा और उस्के प्रधान मन्त्री नंजिराज को राज्य से निकाल आप मैसूर का स्वच्छन्द स्वामी बन गया—हैदरअली का खानदान शुरू में पंजाब से मैसूर में आवसा इस्का बाप फतेहमहम्मद विजयनगर के राजा की नौकरी में साधारण हेडकानस्टेबिल था उपरान्त थोड़ीसी फौज का सरदार कर दिया गया था—१७०२ में हैदरअली पैदा हुआ उमर में यह ज्यों २ बड़ा होता गया इसे शिकार खेलने का शौक बढ़ता गया—शिवा जी मराहठे के समान यह भी एक अक्षर पढ़ा लिखा न था किन्तु स्मरणशक्ति इसे बड़ी अद्भुत थी ४७ वर्ष की उमर तक इस्से कोई ऐसा अद्भुत काम नहीं बन पड़ा जिस्से इस्का नाम इतिहासों में प्रगट किया जाता उपरान्त कई एक लड़ाइयों में इस ने ऐसी बीरता प्रकाश की कि नंजिराज ने प्रसन्न हो इसे ५० सवार और २०० पैदल सिपाहियों का सरदार कर दिया—१७५५ ईस्वी में त्रिचनापल्ली के दक्षिण डिंडिगल के किले का किलेदार कर दिया गया और वहां ६ वर्ष तक किलेदार रह अपनी सेना बढ़ाता गया और डिंडिगल के आस पास के देशों को बहुधा लूटता पाटता कुछ थोड़ा सा रूपया भी जमा कर लिया क्रम २ इस ने ७००० अपनी निज की फौज जमा कर लिया इसी समय बालाजी राव पेशवा ने मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टन पर आक्रमण किया और नंजिराज ने लाचार हो बड़ा हिस्सा अपने राज्य का और ३२ लाख रुपया जो पेशवा का इस चढ़ाई में खर्च हुआ था दे पिण्ड छुटाया—खज़ाना खाली होगया था फौज कई महीनों तक तनखाह न पाने से बिगड़ गई थी इस अवसर में हैदर ने नंजिराज से आकर कहा मैं फौज की तनखाह अदा करदूं यदि इस्के बदले जागीर मुझे रियासत से मिले नंजिराज ने इसे स्वीकार कर लिया इस तरह पर जब २ नंजिराज को रूपये की संकीर्णता होती थी यह उसे देता हुआ अपनी निज की बड़ी भारी जागीर बल्कि आधा मैसूर अपना कर लिया और

फौज भी सब इसके आधीन हो गई–अन्त को होते २ हैदर ऐसा प्रबल पड़ गया कि राजा ने ३ लाख सालाने की जागीर अपने लिये और एक लाख की नंजिराज के लिये रख बाकी कुल राज्य हैदर को सिपुर्द कर दिया और हैदर न सिर्फ मैसूर का पूरा मालिक हो गया वरन इस ने कनारा और बेडनोर भी मैसूर में सिलाय कृष्णा के किनारे तक अपनी सलतनत बढ़ाई–श्रीरंगपट्टन को अपनी राजधानी कायम कर इसे एक बड़ा रौनकदार शहर बनाया और अपनी निज की जहाज़ तैयार करनें की फिकर में हुआ जिस्में समुद्र में भी दूर तक अपना अधिकार फैलावे—अब इस समय इसके अधिकार में २०००० घोड़ सवार और ४००००० प्यादे सिपाहियों की जंगी फौज थी और दक्षिण में निज़ाम पेशवा और हैदर ये ३ बड़े प्रबल सम्राट् समझे जाने लगे जो तीनों आपस में लड़ते हुये हिन्दुस्तान को एक बड़े हलचल में छोड़ रक्खा था––इसी समय अंगरेज़ बहादुर अपना कदम बढ़ा चले जो अन्त में ऐसे प्रबल हो गये कि हैदर और पेशवा दोनों को स्वाधीन कर लिया—१७८२ ईस्वी में हैदर ८० वर्ष का हो कर परलोक को सिधार गया और हिन्दुस्तान के पिछले इतिहास में एक चिरस्थायी नाम छोड़ गया—योग्यता वीरता और अपने निज बाहुबल से आदमी कहां तक बढ़ सक्ता है इसका एक उदाहरण हो गया–१७९९ में जब हैदर का बेटा टीपू श्रीरंगपट्टन के मुरचे में मारा गया तब पुराने राजा का कुंवर जिसे टीपू ने कैद में रख छोड़ा था राजा किया गया और राजा की नाबालिगी में पूरनिया एक महाराष्ट्र ब्राह्मण को राज्य का इन्तिज़ाम सौंपा गया–पूरनिया ने बड़ी योग्यता के साथ सब इन्तिज़ाम राज का किया–राजा बालिग होने पर जो कुछ रुपया पूर्निया ने जमा कर रक्खा था सब खर्च डाला और कर्ज़ हो गया तब गवर्नमेंट ने राज्य कोरट कर सब कर्ज़ अदा कर दिया जो अन्दाज़े में ७५ लाख के था और बहुतसा रुपया रियासत का सड़क आबपाशी तालीम इत्यादि काम में लगाया–सन ईस्वी १८७६ से ७८ तक मैसूर में बड़ा काल पड़ा चार साल तक बराबर वर्षा न हुई १० लाख के अनुमान लोग इस दुर्भिक्ष में अन्न के कष्ट से परलोक सिधार गये और अढ़ाई लाख चौपाये मरे ७० लाख रुपया राज्य का इस दुर्भिक्ष में गरीबों के पालन में खर्च हुआ–१८८१ में महाराज चामराजेन्द्र वदेयार राजा किये गये और मैसूर के चीफ कमिश्नर ने राज उक्त महाराज को सौंप दिया–ये महाराज बड़े सुयोग्य हुये बड़े २ ओहदे जिन पर अंगरेज़ मुकर्रर थे

उन पर लायक हिन्दुस्तानियों को मुकर्रर किया और पार्लियामेंट के ढंग की एक सभा राज्य में कायम किया—मालगुज़ारी राज्य की पहिले से बहुत अधिक बढ़ाया और दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है पूरनिया के समय मैसूर की मालगुज़ारी ७४ लाख थी महाराज ने १८८४ में १ करोड़ ६ लाख की और अब १ करोड़ २० लाख है—७३ लाख भूमिकर आता है १२ लाख शराब इत्यादि नशे के चीज़ का महसूल आता है ६ लाख आमदनी जंगल की है २ लाख स्टैम्प की आमदनी है ६ लाख और २ चीज़ों के महसूल की है—मालगुज़ारी में से एक आना रूपया पीछे सड़काना और मदरसाना लिया जाता है—१८८४ में राज्यभर में ८६ म्युनिसिपलिटी थी—राज्यभर में ३०२८ मील रेल की सड़क है जिसमें १४० मील रियासत की ओर से बनाई गई है जिसमें महाराज का ६३ लाख रूपया खर्च हुआ है—महाराज के ओर से बंगलूर में एक कालेज है जिसमें नारमलस्कूल और इञ्जीनियरिङ्गस्कूल भी मिला हुआ है राज्यभर में २३८८ स्कूल हैं जिनमें ५८६६२ लड़के और ३८२८ लड़कियां पढ़ती हैं—३ यहां बड़े अस्पताल हैं और १७ दवाखाने रियासत की ओर से हैं महाराज के प्रधान मन्त्री रंगाचार्लू भी बड़े सुयोग्य हैं और दोनों ने मिल मैसूर राज्य की प्रजा को बहुत फाइदा पहुंचाया—किन्तु दुःख का विषय है कि ऐसे सुयोग्य भारत के देदीप्यमान रत्नस्वरूप गतवर्ष के दिसम्बर मास में कलकत्ते में सुरधाम सिधार गये—यदि महाराज का चलाया हुआ राज्य का सुप्रबन्ध प्रचलित रहा तो मैसूर की श्री और वैभव दिन २ बढ़ता ही जायगा मैसूर मन्दराजहाते का प्रधान राज्य है—हिन्दुस्तान के और २ राजा महाराजा यदि मैसूर के उदाहरण पर चलना आरम्भ कर दें तो हिन्दुस्तान इंगलैंड को दबा दे—

राजधानी मैसूर या महीसुर अथवा महिषासुर लाल मिट्टी की शहरपनाह के भीतर बसा है किला अंगरेज़ी ढंग का बहुत बड़ा बना है और भीतर उसके राजा के महल हैं—किले से ५ मील पहाड़ के पास १००० फुट की उंचाई पर एक तालाब है यहां अजंट साहब रहते हैं और पहाड़ की चोटी पर एक मकान है जहां से देश चारो ओर दूर २ तक दिखलाई देता है—यहां पर १६ फुट ऊंचा पत्थर का एक नन्दी बना है—राजा के यहां हाथियों के रथ हैं सड़कें यहां बहुत चौड़ी हैं शहर चामुण्डा पहाड़ी की तलहटी में बसा है—औरंगज़ेब का दिया देवदारु की लकड़ी का बना एक तख्त है जिसपर हाथीदांत का बहुत

बारीक काम है और सोने चांदी से जड़ा हुआ है-आबादी इसकी ७४ हज़ार के अनुमान है एक कालेज यहां भी है-मैसूर से ९ मील उत्तर कावेरी नदी के टापू पर टीपू सुलतान की राजधानी श्रीरंगपट्टन शहरपनाह के भीतर बसा है-पास ही बाग में संगमूसा का बना हैदर और टीपू का मकबरा है शहर के भीतर टीपू के टूटे फूटे महल उजाड़ पड़े हैं—बाज़ार सीधा गलियां तंग और मैली श्रीरंगनाथ जी का मन्दिर और बड़ी मसजिद देखने लायक हैं—दो पुल निरे पत्थर के कावेरी की दो धारा पर बने हैं एक पुल ऐसा है जिसमें ६७ खम्भे की तीन कतार खड़ी हैं खम्भों में नक्काशी बहुत अच्छी की गई है और पहाड़ की शिलाओं से ये पुल पटे हैं मेहराब किसी में नहीं है दक्षिण धारा वाले पुल से पानी की नहर भी आई है-स्वामी रामानुज चक्रांकितों के आचार्य विक्रमार्क की बारहवीं शताब्दी के अन्त में यहीं हुये हैं जिन की सम्प्रदाय मन्दराजहाते भर में वैसा ही फैली हुई है जैसा बंगाल में कृष्णचैतन्य और गुजरात में वल्लभाचार्य का चलाया हुआ वैष्णवमत ज़ोर पकड़े हुये हैं—यहां सन् ईस्वी १४५४ का बना एक पुराना किला है बहुत दिनों तक देवनगर के राजा के सूबेदार की यह राजधानी थी गवर्नमेंट ने इसपर ३ बार आक्रमण किया और तीसरी दफा १७९९ में टीपू लड़ाई में मारा गया और अंगरेज़ों की विजय हुई हिन्दुस्तान के आधुनिक इतिहास में मैसूर की ये ३ लड़ाइयां बहुत प्रसिद्ध हैं—टीपू के समय इसकी आबादी १६०००० थी अब उजाड़ है-श्रीरंगपट्टन से ७० मील ईशानकोण को लाल मिट्टी की शहरपनाह के भीतर बसा हुआ बंगलूर का शहर है बाज़ार चौड़ा दोनों ओर नारियल के वृक्ष सीधी कतार में लगे हुये बहुत सोहावने मालूम होते हैं-किला यहां का बहुत मज़बूत बना है चारो ओर जिसके गहरी खांई है शहर से एक कोस पर छावनी है आब हवा यहां की बहुत अच्छी है ९१ ईस्वी में इसकी आबादी एक लाख अस्सी हज़ार के अनुमान थी बाग यहां बड़े सोहावने और देखने लायक हैं एक कालेज भी यहां है-बंगलूर से ३६ मील ईशानकोण को चिकाबालापुर है मिसरी और कन्द यहां का बहुत अच्छा होता है—यहां से ८० मील वायुकोण को चित्तल दुर्ग या चित्रदुर्ग है पहाड़ों के झुंड से घिरा ८०० फुट की उंचाई पर एक किला यहां बड़ा मज़बूत बना है किले के भीतर पानी की बहुत इफरात है—बंगलूर से २० मील पश्चिम सुवर्ण दुर्ग है किला यहां पावकोस की उंचाई के एक पहाड़ पर बहुत मज़बूत बनाहै ॥

# ट्रावनकोर ॥

शुद्ध नाम इसका तिरूवनन्त है इसका लम्बान कन्याकुमारी अन्तरीप से कोचीन तक अनुमान १४० मील और चौड़ान ४० मील विस्तार ६७३० मील मुरब्बा है—भूमिकर ६६६६००० है और जनसंख्या ९१ ईस्वी में २५ लाख के अनुमान थी—प्राचीन केरल देश का यह दक्षिणी हिस्सा है केरल देश का बहुत स्थानों में कवि लोगों ने ज़िकिर किया है—रघुवंश में रघुराजा के दिग्विजय के प्रसंग में कालिदास ने लिखा है—"केरला दर्शितपथः कलिंगाभिमुखं ययौ"—दक्षिण हिन्दुस्तान का यह हिस्सा अत्यन्त सोहावना और रमणीक है पश्चिम घाट पर्वत जो कहीं २ इस राज्य में ८००० फुट ऊंचा है सम्पूर्ण हरेभरे जंगलों से आच्छादित है—पहाड़ और समुद्र के बीच जो सम भूभाग आगया है वह अत्यन्त घना बसा है—ठौर २ ताड़ खजूर नारियल और सुपारी के घने जंगलों से पृथ्वी यहां की सब ओर ढँकी हुई नेत्र को एक अद्भुत दृश्य प्रगट करती है सब ओर धान के हरे २ खेतों ने धरती को मानो मरकतमयी कर रक्खा है—नदियां पर्वत से निकल २ जहां समुद्र में मिली हैं वहां झील सी बन गई है दूर से यही मालूम होता है मानो बिल्लौर का चट्टान पड़ा हुआ है—पर्वतों पर चाय काफी इलाइची और कीमती शहतीरें यहां बहुत पैदा होती हैं—मिर्च, नारियल, ताड़, खजूर, चावल, की भी पैदावार इफरात से है—ईसाई इस राज्य में बहुत हैं अनुमान ५ लाख के राज्य भर में होंगे—मुसलमान यहां बहुत कम हैं गांव के गांव ईसाइयों के बसे हैं हिन्दू बहुधा शैवसम्प्रदाय के हैं—भाषा यहां तामिली और मलयालमी बोली जाती है—चूंदी यहां के ब्राह्मण ठीक चांद पर रखते हैं जो पीछे लटकने के एवज़ आगे लटका करती है—यहां पुत्र के बदले भानजा भी रास का उत्तराधिकारी होता है—ब्राह्मणों को यहां के लोग बहुत मानते हैं—ताड़ मिर्च शहतीरें इलायची काफी सोंठ यहां से बाहर जाती है—कपड़े तमाखू तांबा बाहर से आता है—सर राजा माधोराव जब दीवान थे उन्हों ने ट्रावनकोर की रियासत का बहुत अच्छा इन्तिज़ाम किया था और वह अब तक चला जाता है—अंगरेज़ी तालीम की हद्द से ज़ियादह तरक्की है यहां तक कि अंगरेज़ी यहां की प्रचलित भाषा सी होगई है—राजधानी त्रिविन्द्रम समुद्र के तटपर अनुमान ४१ हज़ार आदमियों की बस्ती है किले के भीतर महाराजा का

महल देखने लायक है—पद्मनाभ जी का प्राचीन मन्दिर भी यहां का प्रसिद्ध स्थान देखने योग्य किले के भीतर है—शहर के चारो ओर सब्ज़ी बहुत सोहावनी मालूम होती है एक कालेज भी यहां है राज्य भर में ५ बड़े अस्पताल हैं—राज्य में स्कूल पाठशालायें और पुत्रीपाठशालायें बहुत हैं और बड़ी तरक्की पर हैं—लड़कियों का विवाह यहां के लोग बहुत बड़ी उमर में करते हैं धन्य है यह देश काशीनाथ का अष्टवर्षाभवेद्गौरी वाला श्लोक न जानिये क्यों यहां प्रचार नहीं किया गया—

ट्रावनकोर के राजवंश का पुराना इतिहास सही और सिलसिलेवार मालूम नहीं है पुराणों में जो किस्से कहानियां लिखी हैं उस्से इतना पता अलबत्ता लगता है कि सह्याद्रि पर्वत और समुद्र के बीच की पृथ्वी जो अब ट्रावनकोर और कोचीन ये दो छोटे २ राज्यों में विभक्त है समुद्र से परशुराम जी ने अपने तपोबल के द्वारा प्राप्त कर अपने अधिकार में रक्खा और विक्रमाब्द के सौवर्ष पहले तक ब्राह्मणों के शासन में यह देश रहा—इस किस्से का खुलासा यह मालूम होता है कि पहले किसी समय समुद्र घाटपर्वत से लगा हुआ बहता था परशुराम जो प्राचीन आर्यों में एक बड़े भारी इञ्जीनियर थे अपनी इञ्जीनियरिंग के प्रभाव से समुद्र को पाट कई सौ कोस लम्बा टुकड़ा पृथ्वी का निकाल उस्पर अपना अधिकार स्थापित कर वहां राज्य करने लगे और अनेक अद्भुत विज्ञानशक्ति के बल यहां की भूमि को जहां तक उर्बरा और सोहावनी कर सके किया—ऐसा मालूम होता है कि उस समय के हैहयवंशी क्षत्री ब्राह्मणों की उत्कृष्टता के स्वीकार करने से मुह मोर बैठे थे बल्कि बगावत ठान ली थी परशुरामको इन क्षत्रियों के कुढंग पर ऐसा क्रोध और ग्लानि हुई कि २१ बार इन का संहार कर इन्हें त्याग दूर देश समुद्र के तट पर जाव-से—उपरान्त परशुराम के स्थापित इस राज्य को ब्राह्मणों ने क्षत्रियों को दे दिया जिन्में से एक २ को १२ वर्ष के लिये पारी २ राजा करदिया करते थे—यह क्रम चार सौ वर्ष तक प्रचलित रहा इस तरह पर चुनेहुये राजाओं में सब से पिछला राजा चेरामन हुआ और इस ने अपने राज्य को कर्मचारी नौकरों में बांट रक्खा था—इन कर्मचारियों में जो सब से बड़ा था उस्की राजधानी त्रिवांकोडू हुई इसी त्रिवांकोडू का अपभ्रंश ट्रावनकोर है और अब से बराबर वंश-

परम्परा के क्रम पर यहां राजा होने लगे—एक बार टीपूसुलतान ने ट्रावनकोर पर हमला किया था किन्तु अंगरेज़ी गवर्नमेंट की सहायता से हार कर अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टन को लौट आया तब से आज तक ट्रावनकोर का राज्य निर्विघ्न रह अब तक बराबर तरक्की करता गया—सन ८३ में इसकी मालगुज़ारी ६० लाख थी जिस्में साढ़े १७ लाख भूमि कर था १३ लाख नमक की आमदनी थी कुल ऊपर ७ लाख तमाखू की आमदनी साढ़े ३ लाख शहतीर और इलाइची की आमदनी पौने ४ लाख अफीम की आमदनी और ४ लाख महसूल इत्यादि की आमदनी थी—उसी साल साढ़े ८ लाख सड़क इत्यादि बनवाने में खर्च किया गया—महाराजा क्षत्री हैं सर राजा माधोराव जब दीवान थे राज का बहुत उत्तम प्रबन्ध कर गये जो अब तक यहां प्रचलित है—

## कोचीन ॥

विस्तार इसका १३६१ वर्ग मील आबादी सन् ९० में ७१८० थी मालगुज़ारी १६१८००० सालाना है—यह राज्य ट्रावनकोर और मालाबार के बीच में है छिछिली फ़ीलें यहां बहुत हैं जिसके पास की धरती बिल्कुल दलदली है और बरसात में जल मग्न हो जाती है—राज्य का उत्तर पूर्व घने जगलों से ढंपा हुआ है पहाड़ों पर इलाइची और काफी बहुत पैदा होती है—पैदावार यहां भी वैसी ही है जैसी ट्रावनकोर में है मलयाली और तामिली यहां की मुख्य भाषा है ईसाई और यहूदी यहां भी बहुत हैं—राज्य का प्रबन्ध बहुत उत्तम है अंगरेज़ी की यहां भी अज़हद्द तरक्की है—ईस्वी सन की नवीं सदी में चिरामन सम्पूर्ण केरल देश और मालाबार का राजा था उपरान्त जब केरल देश जुदे २ राज्यों में बट छिन्नभिन्न हो गया तो कोचीन एक स्वच्छन्द राज्य बन गया—वर्तमान राजा अपने को चिरामन के वंश परम्परा में बतलाते हैं—पन्दरहवीं सदी के आरम्भ में पोर्तुगाल वाले यहां आये और एक किला कोचीन में बनाय तिजारत करने लगे यूरोप महाद्वीप के लोग पहले पहिल यहीं आये और क्रम २ इतना फैले कि कुल हिन्दुस्तान को दबा बैठे—हैदर ने कोचीन फतेह कर अपनी सलतनत में मिला लिया था जिस्के अधिकार में यह सत्रहवीं सदी के अन्त तक रहा—गवर्नमेंट ने जब मैसूर फतेह किया तब यहां के पुराने राजा को फिर बहाल किया और अब यह राज्य गवर्नमेंट की सहायता पाय प्रतिदिन उन्नति करता जाता है—

# पट्टाकोटा या पद्मकोट ॥

विस्तार ११०१ वर्ग मील आबादी सन ८१ में ३०२१२७ थी भूमिकर अनुमान ६ लाख साल के है–यह रियासत मन्दराज हाथे के अग्निकोण में है–पृथ्वी यहां की समथर है बीच २ कहीं पर छोटे २ पहाड़ी चटान भी आगये हैं—राज्य के दक्षिण पश्चिम हिस्सों में पहाड़ और जंगल अधिक हैं बाकी हिस्सा इसका अत्यन्त उर्वरा और उपजाऊ है–तालाब और झीलें इस राज्य में बहुत हैं चावल और दूसरे मोटे अन्न यहां अधिक उपजते हैं–रेशमी कपड़े यहां अच्छे बुने जाते हैं तामिल यहां की मुख्य भाषा है—पट्टाकोटा राजधानी १५००० आदमियों की बस्ती बहुत साफ और सुथरा बसा हुआ शहर है–एक कालेज यहां है विद्या की विशेष उन्नति और राज्य का उत्तम प्रबन्ध गवाही दे रहा है कि और २ प्रान्तों की अपेक्षा मन्दराज कहां तक तरक्की के शिखर पर चढ़ रहा है–

# रामनद ॥

यह राज्य मदुरा ज़िले में रामेश्वर के पास है–विस्तार २११२ वर्ग मील आबादी सन ८१ में ४७६२६९ थी और मालगुज़ारी अनुमान साढ़े सात लाख के है–धरती समथर और पट्टाकोटा की रियासत के माफिक झील यहां भी बहुत हैं–महाराज सेतुपति की पदवी अपने नाम के आगे लिखते हैं इससे प्रगट होता है कदाचित सेतुबन्ध रामेश्वरतक इन का राज्य किसी समय में रहा होगा–ईसाई इस राज्य में भी बहुत हैं–राजधानी रामनद ११००० आदमियों की बस्ती है–शहर किले के भीतर बसा है धनी महाजन तथा और २ प्रतिष्ठित लोग सब किले के भीतर बसते हैं गरीब नीच जाति वाले किले के बाहर झोपड़ियों में बसते हैं–५० हज़ार से ५ लाख तक की बहुतसी छोटी २ रियासतें यहां कई एक हैं जिन्में कोई ऐसी प्रसिद्ध बात नहीं हैं कि जिस्पर लक्ष्य किया जाय इस लिये उन को यहां अलग २ लिखना पत्र की केवल जगह छेकनामात्र है–

# व्यंकटगिरि ॥

विस्तार इस ज़मीदारी का २११७ वर्ग मील आबादी ३ लाख के ऊपर और आमदनी अनुमान ३ लाख के गवर्नमेंट की मालगुज़ारी है इस ज़मीदारी के

आस पास बहुत से छोटे २ तअल्लुके हैं वयंकटगिरि यद्यपि स्वच्छन्द राज्य नहीं है पर आमदनी में बहुत से स्वच्छन्द राज्यों से भी बढ़ कर है—

## विजयानगरम् ॥

विस्तार इस ज़िमीदारी का ३००० वर्गमील है आबादी सन् ८१ में ८४४१६८ थी गवर्नमेंट की मालगुज़ारी न्यूनाधिक ५ लाख दे कर २५ लाख के अनुमान इसकी आमदनी है यह ज़िमीदारी बहुत पुरानी और बड़ी वसीह है मन्दराज से ईशान कोण विज़गापट्टम के ज़िले में है—विजयानगरम् की रियासत प्राचीन कलिंगदेश का एक हिस्सा है महाराज राजपूत क्षत्री हैं पाचवीं सदी के अन्त में इन के पूर्वज राजपूतों की जमात अपने साथ ले राज पुना से यहां आय वसे १६५२ ईस्वी में पशुपतिमाधव वर्मा विजयानगर में थोड़ी सी ज़मीदारी पर अपना कब्जा जमाय उसे बढ़ाने लगे यहां तक कि नारदरन् सरकार के इलाके में पशुपतिमाधव का एक प्रसिद्ध घराना हो गया और राजा कहलाने लगे—गोलकुण्डा के नौवाब के दरबार में इज़्ज़त और मरतबे में इस घराने के लोगों का दरजा सब से औवल था—१७८४ ईस्वी में राजा को गवर्नमेंट से महाराज का खिताव दिया गया भूतपूर्व महाराज बड़े विद्वान् थे उन्होंने अपनी ज़िमीदारी में बहुत सी सामाजिक संशोधन की बातें प्रचलित की कई एक स्कूल और अस्पताल कायम किये सड़कें और पुल बनवाये विजयानगर २३००० आदमियों की बस्ती अच्छे किते का शहर है वाज़ार बहुत चौड़ी और स्वच्छ है एक कालेज भी यहां है कई लाख रुपया महाराजा साहब ने स्कूल कालेज और अस्पताल के लिये दान दिये हैं म्योर्सकालेज में भी ८००० रुपये दिये थे—

## कोल्हापुर ॥

यह राज्य हैदराबाद के पश्चिम चारोंओर सर्कारी ज़िलों से ऐसा घिराहुआ है और उन के साथ ऐसा मिला हुआ है कि इसका लम्बान चौड़ान बतलाना कठिन है विस्तार इसका २८१६ वर्गमील आबादी सन् ८१ में ८००१८९ आदमियों की थी मालगुज़ारी कुछ ऊपर ३१ लाख सालाना है—सितारे के सर्कारी ज़िले इसके उत्तर हैं विलगांव दक्षिण घाट पर्वत इसकी पश्चिमी सरहद्द है—महाराष्ट्र और कारनाटक देश के हिस्से मिलकर यह राज्य बना है कुछ लोग महराठी बोलते हैं बाकी

लोग कनारी भाषा बोलते हैं इसका कुछ हिस्सा घाट के पहाड़ों में है कुछ घाट के नीचे—राजधानी कोल्हापुर ४०००० आदमियों की बस्ती पहाड़ों के बीच एक नदी के समीप बसा है इसमें एक कालेज है इसके आसपास बौद्धों के बहुत से स्तूप और मन्दिर टूटे फूटे पाये जाते हैं इससे साबित होता है कि यह पुराना शहर है यहां एक बड़ा पुस्तकालय और कई एक "रीडिंगरूम" हैं राज्यभर में १७४ स्कूल हैं विद्या की यहां बहुत उन्नति है—इस राज्य में पश्चिम की ओर बहुत सी छोटी २ पहाड़ियां हैं जिन्में सिवा शहतीरों के और कुछ नहीं पैदा होता मध्यभाग में भी कई एक छोटी २ पहाड़ियां हैं पूर्वी हिस्सा इसका बड़ा उपजाऊ है जिसमें सब तरह के अन्न ऊख तमाखू कपास आदि पैदा होती हैं—पुराना घराना दक्षिण के बहमनी खानदान के बादशाहों से फतह हो उजाड़ दिया गया—सन् १८५९ ईस्वी में शिवाजी महरठा जिसे भूषण कविने शिवराजबली अपनी कवित्तों में कहा है और जिसने औरंगज़ेब का नाकोंमें दम कर मुसल्मानों के अत्याचार का पूरा बदला चुका लिया, कोल्हापुर फतह कर अपने अधिकार में कर लिया—कोल्हापुर के राजा उसी शिवाजी के कनिष्ठ पुत्र रामराजा के वंश में हैं—

## सामन्तबाड़ी ॥

कोल्हापुर के नैर्ऋत्यकोण और गोवा के उत्तर पश्चिम घाटपर्वत और समुद्र के बीच प्रायः एक हज़ार मील मुरब्बा के विस्तार का यह राज्य है—धरती यहां क्रमशः पश्चिम घाटपर्वत की ओर ऊंची होती गई है—समुद्र की तरफ पृथ्वी धान की कियारियों सी हरीभरी बड़ी सुहावनी मालूम होती है—नारियल सुपारी खजूर केले और ताड़ के वन के वन कोसोंतक चले गये हैं—पहाड़ों पर घने जंगल हैं जिन्मे बड़े दाम की लकड़ी पैदा होती है—चावल यहां की प्रधान उपज है तेलहन मिर्च और दूसरे गरम मसाले यहां बहुत पैदा होते हैं रूई और तमाखू बिल्कुल नहीं उपजती कारचोबी का काम और सींग की पंखी आदि यहां अच्छी बनती हैं—यह रियासत पहले विजयगढ़ फिर बीजापुर अन्त में महाराठों के आधीन पारी २ रही—वर्तमान राजा राजकोट के राजकुमार कालेज में सुशिक्षित किये गये हैं महराठे हैं राज्य का प्रबन्ध अच्छा कर रहे हैं राज्यभर में ४६ स्कूल हैं जिन्मे ३००० बालक पढ़ते होंगे—महाराठी यहां की मुख्य

भाषा है—राजधानी सामन्तवाड़ी ९००० आदिमियों की बस्ती एक झील के किनारे बसी हुई है चारों ओर यह शहर ताड़ के वृक्षों से घिराहुआ है आमदनी ४२०००० सालाना है आबादी सन् ८१ में १७४४३३ थी—

## जंजीरा ॥

बम्बई के दक्षिण कुलाबा और रत्नागिरि के बीच अबादी में आनुमान ८०००० से ३२४ वर्ग मील विस्तार की यह रियासत सामन्तबाड़ी की तरह पहाड़ और जंगलों से भरी है पैदावार भी यहां की वही है जैसा सामन्तवाड़ी की है जहाजों के खेने वाले काले २ मांझी यहीं के होते हैं—यह रियासत अबिसिनिया का रहने वाला सीदी जाति के नौवाब के अधिकार में है जो सन ईस्वी १४८९ में तिजारत के बहाने यहां आया तीन सौ सन्दूक में ३०० सिपाही छिपा लाया और पहले के राजा को लड़ाई में हराय आप इसका स्वामी बन गया—जंजीरा अपभ्रंश अरबी शब्द "जज़ीरह" का है जिसके माने टापू हैं—जंजीरा का किला एक छोटे से टापू पर है जो स्थल से आध मील पर है पश्चिमी हिन्दुस्तान में महराठों के अत्याचार और लूटपाट से केवल यही रियासत बची रही और महराठों के मुकाबिले जंजीरा का नौवाब अपनी स्वच्छन्दता कायम किये रहा आमदनी सालाना दो लाख के ऊपर है—

## धर्मपुर ॥

यह राज्य बिस्तार में ७९४ वर्ग मील आबादी ५०००० के अनुमान है आमदनी इसकी ११२००० सालाना है सम्पूर्ण राज्य पहाड़ और जंगल बम्बई के पास थाना जिले में पश्चिम घाट पहाड़ की तलहटी में है—राजा यहां के सिसोदिया राजपूत और बड़े धर्मिष्ठ हैं—छोटे २ कई एक राज्य यहां और भी हैं जिन्में कोई विशेष बात ऐसी नहीं है जो यहां लिखी जाती इसी लिये हम उन्हें छोड़े देते हैं—अब मध्यहिन्दुस्तान के रजवाड़ों का कुछ हाल लिखते हैं जिन्में दो एक राज्य यद्यपि छोटे हैं किन्तु बड़े पुराने हैं—

## राजनन्दगांव ॥

बिस्तार ९०५ वर्ग मील आबादी सन ईस्वी ८१ में १६४३३९ थी आमदनी २२२००० सालाना है—यह राज्य रायपुर के सर्कारी जिले के पश्चिम उर्वरा और

सम भूभाग में है—राजा यहां के वैरागी हैं १८२३ ईस्वी में नागपुर के राजा से यहां के महन्त को यह रियासत बतौर दान के मिली थी अब यह रियासत बड़ी तरक्की पर है राज्य भर में ८ स्कूल हैं नागपुर छतीसगढ़ रेलवे इसके बीच से हो गुज़री हैं प्रबन्ध राज्य का अच्छा है—

## खैरगढ़ ॥

विस्तार इसका ८४० वर्ग मील है आबादी सन ८१ में १६६१३८ थी मालगुज़ारी २१४७०० सालाना है—यह राज्य नन्दगांव के वायव्यकोण में है रूई और गेहूं यहां की खास पैदावार है राजा यहां के गढ़मंडला के घराने के गोन्द हैं—नागपुर के महाराठे राजाओं का बढ़ाया हुआ यह राज्य भी है—सोनपुर बमरा रायगढ़ सारंगगढ़ आदि कई रियासतें यहां और हैं जो एक लाख के ऊपर सालाना मालगुज़ारी की कोई भी नहीं है न ऐसी कोई विशेष बात उन्में है जिसे हम यहां पर लिखें—रायगढ़ और सारंगगढ़ ये दोनों राज गोन्द राजाओं के हैं और नागपुर के महाराठों के बनाये राजा हैं महानदी इन दोनों रियासतों के बीच हो कर गई है—

## नरसिंहगढ़ ॥

विस्तार ६२३ वर्ग मील आबादी सन ८१ में ११२४२७ थी मालगुज़ारी साढ़े-चार लाख सालाना है यह राज्य बड़ा पुराना है—महाराज यहां के उत्तम राजपूत कुलीन क्षत्री हैं—अन्न और अफीम की यहां अच्छी उपज होती है—पास ही इसके अनुमान ४ लाख सालाना की दूसरी रियासत राजगढ़ की है—राजा यहां के भी उत्तम राजपूत हैं प्रबन्ध इन दोनों रियासतों का उत्तम है और बड़ी पुरानी रियासतें हैं और भूपाल एजेन्सी के अधिकार में हैं—शेष—

## वाणभट्ट ॥

श्रीहर्षचरित्र के पहले उच्छ्वास में वाणभट्ट अपने वंश के सम्बन्ध में यों लिखते हैं—पहले किसी समय ब्रह्मा की सभा में दुर्वासा ऋषि ने मन्दपाल मुनि के साथ विवाद करते हुये क्रोध में आय सामवेद के गान में वेद को एक ऐसे स्वर से गाया जिसका गाना उस स्वर में होना अनुचित था उसे सुन सरस्वती हंस पड़ीं—इसपर दुर्वासा क्रोध में आय सरस्वती को शाप दिया अयि दुर्विनीते! तू स्त्री की

जाति इस योग्य नहीं है कि ऐसे महानुभावों की सभा में रहे, इस लिये अपनी चंचलता का फल भुगतने को तू मर्त्यलोक में जा—दुर्वासा के इस शाप पर सरस्वती को अत्यन्त उदासीन और खिन्न देख ब्रह्मा ने शाप की अवधि कर दिया कि पुत्रोत्पत्ति के उपरान्त तुम फिर यहां आ जाओगी—तब सरस्वती पृथ्वी तल में आय शोणमहानद के तट पर कुटी बनाय रहने लगीं, वहां भृगुवंशी च्यवन ऋषि से शर्याति राजा की सुकन्या नाम कन्या में उत्पन्न दधीचि नाम ऋषिकुमार से इन का प्रेम हो गया और दधीचि के संगम से एक पुत्र उत्पन्न कर ब्रह्मलोक को चली गईं—दधीचि भार्गववंशी किसी ब्राह्मण की पत्नी अक्षमाला को पालन पोषण के लिये अपने पुत्र को दै आप तपोवन को चले गये—सरस्वती से उत्पन्न था इस लिये अक्षमाला ने इसका सारस्वत नाम रक्खा—अक्षमाला का औरस पुत्र वत्स नाम का था किन्तु सारस्वत को इस ने अपने निज पुत्र के समान पाला—माता सरस्वती की कृपा से थोड़ी ही उमर में आप से आप सब विद्या इसे स्फुरित हो गई और सारस्वत ने वह सब विद्या तपोबल के प्रभाव से वत्स में संक्रामित कर दिया इसके उपरान्त सारस्वत अपने पिता दधीचि के पास चला गया और वत्स अपना विवाह कर प्रीतिकूट नामकस्थान में जा बसा—

बाणभट्ट का यह किस्सा निरा अमूलक नहीं मालूम होता—दुर्वासा के शाप से सरस्वती के कोख में सारस्वत के जन्म का वृत्तान्त रत्नमाला नामक वैदिकग्रन्थ में यों लिखा है जिसे ऋग्वेदसंहिता के सायण भाष्य में सायणाचार्य ने उद्धृत किया है जो बम्बई के गणपति कृष्णा के छापे में १८१० शकाब्दमें छपा है—देखो ऋग्वेदसंहिता का अष्टक १ पृष्ठ ७ की टिप्पणी—

"ब्रह्मा की सभा में दुर्वासा साम गाते थे उन्हें तेज से क्रूर देख सरस्वती मुसकुराईं तब क्रोध में भर दुर्वासा ने सरस्वती को शाप दिया कि तू मनुष्य की योनि में जन्म ले अपनी इस अविनीति का फल जाकर भुगत—सरस्वती ने तब विनीतभाव से दुर्वासा को प्रसन्न कर प्रार्थना किया। भगवन्! आप का शाप मुझे शिरोधार्य है किन्तु मैं ब्राह्मण के कुल में जन्म पाऊं दुर्वासा ने कहा ऐसा ही हो और यह कह चले गये—सरस्वतीदेवी तब अत्रि ऋषि के वंश में उत्पन्न हुईं और वेदज्ञपति विद्यानिधि नाम का पुत्र जनीं"—सरस्वती के इस पुत्र को बूढ़ों ने जनेऊ कराय परम्परानुसार वेद पढ़ाया—अवस्था छोटी होने के कारण इस बालक की बुद्धि प्रखर न थी इसलिये पिता ने उसकी पीठ पर बांस

की छड़ी मारी बालक रोने लगा यह देख रोते हुये पुत्र को मा ने गले से लगा लिया और बड़ी दुःखित हो बोली बेटा तू मुझ ऐसी मा को पाय मार खाता है—तब सरस्वती ने चौंसठों कला षडङ्ग वेद ब्रह्मविद्या आदि यावत् विद्या सब अपने पुत्र को थोड़े ही दिन में सिखला उसे सब भांत प्रवीण कर दिया और ऐसी वायुधारणा उसे सिखलाया जिस्से भूख प्यास न लगै—इस तरह सर्वविद्या निधान हो सरस्वती का बड़ा भाग्यवान् उस पुत्र ने कुरुक्षेत्र में मुनि हो ऐसी कठिन तपस्या किया कि देवताओं से भी न बन पड़े—कहते हैं बहुत समय बीतने पर कुरुक्षेत्र में कई वर्ष तक पानी न बरसने से महादुर्भिक्ष पड़ा परन्तु ऋषियों ने सरस्वती के पुत्र को प्राणायाम के बल से हृष्ट पुष्ट देख उस्से कहा तू बड़ा सामर्थ्य वाला है हमे भी कुछ शाक पात भोजन को दे तब इस ने चण्डिका से प्रार्थना किया—हे मा तू इन्हें शाक भोजन दे चण्डिका प्रत्यक्ष हो बोली, यदि शाक से तुम्हारा काम चल सक्ता हो तो मैं तुम सबों को साग का भोजन दै तृप्त कर दूंगी—अनावृष्टि में चण्डिका ने साग खिलाय मुनियों को तृप्त किया इसलिये सारस्वत ने प्रसन्न हो चण्डिका का नाम शाकम्भरी रक्खा अर्थात् शाक आहार के द्वारा मुनियों का प्राणधारण करने वाली जिस्का हवाला मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत दुर्गापाठ में दिया गया है—

"ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥
शाकम्भरीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥"

निदान अकाल बीत जाने पर भी ऋषियों को पहिले का पढ़ा हुआ वेद स्मरण न रहा तब वे एक दूसरे से पूछने लगे किन्तु वेद को सब लोग भूल गये थे और इस बात से बड़े खिन्न थे तब नारद मुनि ने उन से कहा तुम सब लोग सरस्वती के पुत्र से जाकर वेद पढ़ो उस ने समग्र वेद पढ़ा है और याद किये है—तब सब लोग सारस्वत के पास गये और प्रार्थना की कि हे भगवन् ! हमें पढ़ाइये—वे सब ऋषि चौंसठ सहस्र थे उन्हें अलग २ चौंसठ सहस्र शाखा वेद सारस्वत ने पढ़ाया—किन्तु तैत्तिरीय शाखा वाले ब्राह्मण समस्त वेद पढ़के तैत्तिरीय शाखा को सब से विलक्षण पाय आपसमें कहने लगे—अहो मूर्ख बनाय बनावटी शाखा जो सब से विलक्षण है हमे इस ने पढ़ाया है और तैत्तिरीय

शाखी सब एकत्र हो सारस्वत से जाके कहा तुमने हमें वेद नहीं पढ़ाया क्योंकि यह सब शाखाओं से विलक्षण है—तब सारस्वत ने प्रतिज्ञा की जो मैंने तुम्हें पढ़ाया वह यदि वेद न हो तो मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊं और इसका निर्णय करने को सारस्वत और सब मुनि लोग अनेक दूसरे२ ऋषियों के पास गये किन्तु कोई भी इसका निर्णय न कर सके—तब सबों ने ब्रह्मा से जाकर इसका निवेदन किया ब्रह्मा ने कहा सारस्वत सच कहता है इस ने तुम्हारे साथ कोई कपट नहीं किया सारस्वत का पढ़ाया वेद सारस्वत के कहे क्रम से पढ़ना चाहिये नहीं तो पढ़ने का फल न मिलेगा—तब सब लोग सन्तुष्ट हो सारस्वत को बड़ी प्रतिष्ठा दी—यह आख्यायिका यहां अप्रासङ्गिक थी किन्तु बाणभट्ट के हर्षचरित्र में जो आख्यायिका दी हुई है उसको पुष्ट करती है अस्तु प्रकृत का अनुसरण अब फिर करते हैं—

वत्स के वंश में बहुत से अच्छे विद्वान् ब्राह्मण हुये उसी वंश में कुवेर नाम ब्राह्मण हुआ—कादम्बरी में बाणभट्ट ने कुवेर का विशेषण „अनेकगुप्तार्चितपादपद्म„ दिया है इससे विदित होता है कि गुप्त अर्थात् बनिये इन के शिष्य या यजमान रहे होंगे—इन के पाण्डित्य की प्रशंसा में लिखा है कि पिंजरा में बन्द जिस्के घर के तोता मैना यजु और साम के पढ़ने वाले विद्यार्थियों से सुन २ उन वेदों की ऋचायें पढ़ते थे—तद्यथा—

बभूव वात्स्यायनवंशसम्भवो द्विजोजयद्गीतगुणोऽग्रणीः सताम्,
अनेकगुप्तार्चितपादपंकजः कुवेरनामांशइव स्वयंभुवः ।
उवास यस्य श्रुतिशान्तकल्मषे सदा पुरोडाशपवित्रिताधरे,
सरस्वती सोमकषायितोदरे समस्तशास्त्रस्मृतिबन्धुरे मुखे॥
जगुर्गृहे यस्य समस्तवाङ्मयैः ससारिकैः पंजरवर्तिभिः शुकैः ।
निगृह्यमाणा वटवः पदे पदे यजूंषि सामानि च यस्य शंकिताः॥

कुवेर के ४ पुत्र हुये अच्युत, ईशान, हर, पाशुपत—पाशुपत के अर्थपति नामक पुत्र हुआ अर्थपति के ११ पुत्र हुये जिन के नाम ये हैं—भृगु, हंस, शुचि, कपि, महीदत्त, धर्म, जातवेदस, चित्रभानु, अक्ष, अहिदत्त, विश्वरूप, इन्में चित्रभानु से राजदेवी नाम्नी ब्राह्मणी स्त्री में बाण उत्पन्न हुये—बाण की मा का

बचपने ही में परलोक होगया बाप ही ने पाला पोषा यज्ञोपवीत संस्कार के उपरान्त जब बाण १४ वर्ष का था तब इसका पिता भी सुरधाम सिधार गया—पिता के परलोक होने का शोक बाण को बहुत दिनों तक रहा पर अन्त को दुःसंग वश जब ऊपर कोई कोड़ा करने वाला नहीं रहता वैसी दशा में जो कुछ नई जवानी के जोश में लोगों का हाल होता है वही बाण का भी हुआ इसे बहुत से दुर्व्यसन आ घेरे—कादम्बरी में चन्द्रापीड़ को शुकनाश का उपदेश जिस ढंगपर बाण ने लिखा है उससे यह प्रगट होता है कि यह नई जवानी की बुराइयों को जब मनुष्य अविवेक के कारण अन्धा रहता है खूब भुगते हुये था और अपना निज का अनुभव लेखनीबद्ध कर दिखाया है—"तद्यथा"

न परिचयं रक्षति, नाभिजनमीक्षते, न कुलक्रममनुवर्तते, न शीलं पश्यति, न वैदग्ध्यं गणयति, न श्रुतमाकर्णयति, न धर्ममनुरुध्यते, नाचारं पालयति, न सत्यमनुरुध्यते, इत्यादि—,,

चित्रभानु से शूद्रा स्त्री में उत्पन्न चन्द्रसेन और मातृषेण नाम दो भाई बाण के थे—हर्षचरित में जैसा अपने साथियों का वर्णन बाण ने लिखा है उससे जान पड़ता है कि यह कहां तक आवारा था और इसके पास पितृप्राप्त संपत्ति भी अच्छी थी—बाण बड़े राजसी ठाठ से रहते थे गवैये इत्यादि सबों के नाम जैसा अमीरों के दरबार में रहते हैं अलग २ दिये गये हैं—देशान्तर देखने के कौतुक से बाण अपने घर से निकला और बहुत सा घूम घाम फिर अपने घर लौट आया—गरमी के दिनों में एक समय चन्द्रसेन ने आके बाण से कहा—महाराज श्रीहर्षदेव के भाई कृष्णदेवने आप के पास दूत भेजा है दूत आप से मिलने को द्वारपर खड़ा है—बाण ने हर्षदेव के दूत से मिलने पर जाना कि राजा ने हमें बुलाया है और दूत को बिदा कर दूसरे दिन श्रीहर्षदेव से मिलने के लिये प्रस्थान कर दिया—रास्ते में चण्डिकाकानन होते हुये मल्लकूट ग्राम में पहुंचे वहां से गङ्गापार यष्टिगृह नाम वन में होते हुये अजिरवती नदी के निकट मणितार नाम "स्कन्दावार" छावनी में जहां राजा डेरा डाले हुये था आया—इतनी रास्ता बाण ने ३ दिन में तै किया पहली मुलाकात में राजा ने जैसा वर्ताव किया और जैसी बातचीत हुई उससे बाण को प्रगट हो गया कि श्रीहर्षदेव मेरे गुण पर तो प्रसन्न हैं किन्तु मेरे कुचरित्रों का सब समाचार उन्हें मालूम पड़ गया है इससे मेरी ओर

कुछ अश्रद्धा प्रगट की—इसके मन में बड़ी टूट आई और सोचने लगा अब मुझे चाहिये ऐसा यत्न करूं जिससे महाराज के जो में जो खयाल मेरी ओर जमगया है वह दूर हो जाय, निदान बाण वहां से विदा हो अपने घर लौट आया, श्री हर्षदेव भी बाण के चरित्रशोधन का पता लगाता रहा जब उसे ठीक २ पता लग गया कि बाण की चालचलन अब सुधर गई तब उस ने बाण को अपने पास बुला लिया और राजा का विश्वास और प्रेम इसपर दिन २ बढ़ता गया—यहां तक कि यह इसका नर्मसचिव हो गया बड़े मान और आदर के साथ राज्य के सब से बड़े पद पर नियुक्त किया गया—किसी समय बाण अपने भाई बान्धवों से मिलने को अपने घर आया था एक दिन पुस्तकवाचक सुदृष्टिनामक पुराण बांच रहा था उसी समय एक बन्दीने राजा श्रीहर्ष की प्रशंसा में दो श्लोक पढ़े—जिसे सुन बाण के ४ चचेरे भाई गणपति अधिपति तारापति और श्यामल बहुत प्रसन्न हुये और बाण से प्रार्थना की कि आप हमें महाराज श्रीहर्षदेव का चरित्र सुनाय कृतार्थ कीजिये—जिन की प्रेरणा से बाणभट्ट ने श्रीहर्षदेव चरित्र ललित गद्यपद्यावली में कादम्बरी के समान एक दूसरा ग्रन्थ बनाया जो संस्कृत साहित्य का एक बड़ा मनोहर ग्रन्थ काव्यवासनापूर्ण सहृदयविदग्ध मन मानस को सरस करता हुआ आचन्द्रतारक बाणभट्ट की सरस्वती का प्रकाश करता रहेगा—

बाणभट्ट विक्रमी सम्वत् के छठवें शताब्द के अन्त में हुये हैं और दण्डी कवि के समकालीन थे—बाण की पद्य रचना इतनी चटकीली नहीं है जितनी गद्य रचना—इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ जो अबतक छपे और पढ़े पढ़ाये गये, ये हैं—चण्डिकाशतक जो पद्य में है—समास बहुल क्लिष्ट और प्रसाद गुण विहीन चण्डिकाशतक उतना मन को नहीं भावता जितना गद्य रचना श्रीहर्षचरित्र और कादम्बरी काव्यरसिक के मन को मुदित करती है—कादम्बरी का क़िस्सा बाण ने कथासरित्सागर से लिया है पात्रों के नाम बदल अपनी अनुपम प्रतिभा और लोकोत्तर कविता में जिस बात का वर्णन करने लगे हैं उसका अन्त कर दिया है—उपमा रूपक और उत्प्रेक्षा को यहां तक दरसाया है कि उनके उपरान्त के कवि रूपक और उत्प्रेक्षा को जब काम में लावेंगे तो बाण का उच्छिष्ट ही उन्हे मिलेगा इसी से किसी का यह कहना "बाणोच्छिष्टं जगत्त्रयम्" अत्युक्ति नहीं मालूम होती—बाण और दण्डी के मुकाबिले यद्यपि बाण को अलंकारिक वर्णन

की अद्भुत लोकोत्तरशक्ति थी कोई कवि इस छोर को नहीं पहुंचे किन्तु हमारी राय इस विषय में बहुत कम लोगों से मिलैगी—दण्डी बाण के मुकाबिले पद विन्यास में आगे बढे हुये हैं बाण चार पङ्क्ति के महाक्लिष्ट समास में वह बात नहीं ला सके जो लालित्य दण्डी ने एक पद में सारांश और निचोड़सा लाके रख दिया है इसी से "दण्डिनः पदलालित्यम्" निश्चय किया गया है और वह पद लालित्य खास कर बाण के मुकाबिले—चौथा ग्रन्थ बाण का पर्वतीपरिणय भी है पर अब तक देखने में नहीं आया—श्रीहर्षचरित्र और कादम्बरी के मुकाबिले ऐसा मालूम होता है कि श्रीहर्षचरित्र इन्हों ने पहले बनाया—पहले हर्षचरित्र बनाय जब बाण ने अपने में वर्णन की अद्भुत शक्ति खूब मांज लिया है तब कादम्बरी के लिखने में लेखनी उठाई है और कादम्बरी को पूर्ण भी न कर सके इससे भी मालूम होता है कि कादम्बरी बाण ने सब के पीछे लिखा है—भवभूति भी यद्यपि बाण के पीछे हुये और समास की क्लिष्टता में बाण से किसी अंश में कम नहीं है किन्तु भवभूति अपने प्राकृतिक वर्णन से चित्त को चमत्कृत करना और करुणारस के द्वारा हृदय को द्रव कर देना जैसा जानते थे वैसा बाण से नहीं बन पड़ा—बाण ने श्रीहर्षचरित्र में इन के पहिले जो कवि हुये हैं उनके नाम इस तरह पर दिये हैं—पहिले सुबन्धु कवि रचित वासवदत्ता आख्यायिका के सम्बन्ध में यह इनका पद्य है—

कवीनामगलद्दर्पो नूनं वासवदत्तया ।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम्—

सुबन्धु और श्लेषालंकार प्रधान १३ सर्गों में निबद्ध काव्य राघवपाण्डवीय के कर्त्ता कविराज के समकालीन बाण अपने को लिख बड़े अहंकार के साथ लिखते हैं कि वक्रोक्ति में निपुण सिवा इन तीन के चौथा कोई और हो वा न हो—

सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः ।
वक्रोक्तिनिपुणा ह्येते चतुर्थो विद्यते न वा ॥

राघवपाण्डवीय में कविराज ने प्रत्येक श्लोक में भारत और रामायण की कथा बराबर निबाही है—

उपरान्त भट्टारहरिचन्द्र, सातवाहन, प्रवरसेन, भासकवि, कालिदास, इन सबों की प्रशंसा में भी एक २ श्लोक दिया गया है—

गोवर्द्धनाचार्य ने कवियों की गणना में बाणभट्ट की प्रशंसा का यह श्लोक दिया है—

जाताशिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथा भविष्यामि ।
प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी वाणो बभूवेति ॥

पहिले शिखण्डिनी जो एक राजकन्या थी पीछे राजकुमार हो शिखण्डी इस नाम से विख्यात हुई—इसी तरह वाणी अर्थात् सरस्वती अत्यन्त प्रगल्भता पाने के लिये स्त्री से पुरुष हो बाण इस नाम से विख्यात हुई—बाण के बड़प्पन का प्रकाशक किसी ने यह श्लोक भी लिखा है—

निःश्वासोपि न निर्याति वाणे हृदयवर्तिनि ।
किमुपुनर्विकटाटोपपदबन्धा सरस्वती ॥

हृदय में बाण के चुभने पर स्वास भी नहीं निकलती तब विकट आटोपवाली बाण की पदबन्धा सरस्वती जब हृदय में चुभै तो फिर क्या कहना—

बाण ने जो हर्षदेव का चरित्र लिखा है वह कश्मीर वाले श्रीहर्ष नहीं हैं जिन की चर्चा रत्नावली नाटिका में की गई है—

"श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी ।
लोके हारिचवत्सराजचरितं नाट्ये च दक्षा वयम् इति ॥"

यह श्रीहर्षदेव उस समय कान्यकुब्जेश्वर कन्नौज में राज्य करते थे—भोजप्रबन्ध में भवभूति कालिदास इत्यादि के साथ बाण को राजा भोज की सभा के पण्डित लिखा है यह अप्रमाणिक मालूम होता है—भोजप्रबन्ध वाले ने कोई बात ठीक २ पतेवार नहीं लिखा और भोजदेव की प्रशंसा में अत्युक्ति को बहुत ही स्थान दिया इसलिये उसका लेख मोतबिर क्योंकर ठहर सक्ता है—बाण को यद्यपि भट्ट की पदवी थी किन्तु यह दक्षिणी नथे बरन मगधदेश के ब्राह्मण थे—इन का स्थान प्रीतिकूटग्राम कहां पर था कुछ पता नहीं लगता—

## आर्यसमाज और बालापाठशाला ॥

और वर्षों की अपेक्षा इस साल आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव समारोह यहां विशेष उत्साह के साथ किया गया—यद्यपि मैं आर्यसमाज में नहीं हूं किन्तु अपने

भाइयों में किसी को तरक्की करते और सफलोद्यम होते देख ईर्ष्या करना खरे-चोखे उदारभाव में खोटाई को स्थान देना है—आर्यसमाज के कई एक नेताओं को स्त्रीशिक्षा की ओर विशेष यत्न करते देख हमारे चित्त को और अधिक सन्तोष होता है—इस वार्षिकोत्सव समारोह के साथ पुत्री पाठशाला की बालिकाओं को पारितोषिक देने का उत्सव भी किया गया—जिस्में हाईकोर्ट के जज श्रीमान् नांक्स साहब सभापति किये गये जिन्हों ने अपने सरल और गंभीर व्याख्यान में स्त्रीशिक्षा सम्बन्धी कई एक लाभदायक परामर्ष दिये जिन्में एक यह था—जिन स्त्रियों को चित्त से पढ़ने की रुचि है और वय प्राप्त होने पर पति के घर जाने से बाहर किसी पाठशाला में जाकर शिक्षा नहीं प्राप्त कर सक्तीं उन को लेख द्वारा शिक्षा दी जासक्ती है—उसी घर का कोई पढ़ा लिखा या ऐसा पुरुष जिस्पर उस घराने के लोगों का विश्वास हो साप्ताहिक या मासिक पाठ नियत कर दिया करे और अवधि पूरी होने पर उसी पाठ में परीक्षापत्र भेज दिया करे जिस्का उत्तर स्त्रियां लिख कर भेजदें जिसे वह अच्छी तरह जांच शुद्धाशुद्ध का प्रकाश कर निज अनुमतियुक्त लौटा दिया करे—इस ढंग से स्त्रियों की शिक्षा हमेशा तक जारी रह सक्ती है इस्में किसी प्रकार की हानि नहीं है न स्त्रियों के परदे में किसी तरह का अन्तर पड़ सक्ता है—स्त्रीशिक्षा का यह उपाय विलाइत का आजमाया हुआ है हिन्दुस्तान के ऐसे घरों की स्त्रियां जिन्हें गृहस्थी का कोई काम नहीं करना पड़ता यदि चाहें तो परदे में रह कर भी शिक्षा पासक्ती हैं—यह उपाय उन लोगों के शंका को भी दूर कर सक्ता है जो कहते हैं स्त्रियों को पढ़ाने से परदे का रसम उठ जायगा और परदा न रहने से स्त्रियां कुचाल हो जांयगी—इस अन्तिम दिन के समारोह के अतिरिक्त जिस्में लड़कियों को पारितोषिक दिया गया और भी पहले के दो दिनों में व्याख्यान दिये गये और ये व्याख्यान अधिकतर हिन्दी में थे—श्रीमती हरदेवी ने स्त्रियों की हीन दशा पर जो एक लिखा हुआ व्याख्यान पढ़ा उस्से प्रगट होता था कि उक्त श्रीमती को अन्धकार में पड़ी भारत की अभागिनी ललनाओं पर कितना छोह है जिन की निकृष्ट दशा पर इन का सन्ताप व्याख्यान के प्रतिशब्दों में प्रतिध्वनित होता था—पं०—भीमसेन का वेद के गूढार्थों पर व्याख्यान सर्वसाधारण को अति ही गूढ था इन्हों ने भरसक बहुत सरलता के साथ गूढार्थों को कहा परन्तु केवल एक घंटे के थोड़े समय में वेदों का गूढ़ार्थ भला कैसे कोई

प्रगट कर सुनने वालों की बुद्धि में यथावत् स्थापित कर सक्ता है—

पं०—तुलसीराम जी का व्याख्यान सब से अनूठा था साहित्य का लालित्य नाटकों का रहस्य कहावतों के हास्य का मर्म और प्रतिवादी के पक्ष पर आक्षेप तनज़ अवाच्य कुवाच्य इत्यादि बातों की व्याख्यान में कहीं से कमी न थी—पण्डित जी महाशय को एक घंटे से अधिक समय दिया गया था जिस्में से तीन चौथाई समय को इन्हों ने पश्चिम अर्थात् योरोप की आधुनिक विद्याओं के नाम लेने में तथा हर एक विद्या के साथ यह कहने में कि आज कल की शिक्षित समाज इन को प्रमाणिक मानती है व्यर्थ नष्ट किया—बड़े जोश और सरगरमी के साथ यह दिखलाया कि शिक्षित लोग इन आधुनिक विद्याओं के मुकाबिले अपने घर की बातों को नहीं मानते जिस्से प्रत्यक्ष था कि पण्डित जी आधुनिक विद्याओं में कहां तक निपट अनभिज्ञ हैं—पण्डित जी स्वयं शिक्षित होते या सुशिक्षितों का साथ किये होते तो कभी ऐसा कहने का साहस न करते—सुनने वालों में दशांश ऐसे थे जो उन विद्याओं में क्या तात्पर्य है जानते थे किन्तु अधिक उन्में के ऐसे थे जिन्हों ने कभी उन विद्याओं का नाम भी न सुना होगा—उपरान्त देर तक यह कहते रहे कि नास्तिकवाद और शंकर का अद्वैतवाद दोनों एक ही है प्रमाण इसका केवल यही बतलाया कि नास्तिक लोग कहते हैं कि जो कुछ है सब प्रकृति ही प्रकृति है—और अद्वैतवादी कहते हैं जो कुछ है सब ब्रह्म ही ब्रह्म है इस लिये ब्रह्म और प्रकृति दोनों एक ही हैं—पण्डित जी के इस कथन में कि जो कुछ हम लोगों को इन्द्रियों के द्वारा ज्ञात होता है वह सब ब्रह्म ही ब्रह्म है कोई भी वेदान्ती नहीं मानता इन वेदान्तियों का यह सिद्धान्त है कि जो कुछ दृश्यमान है वह वास्तव में नहीं है किन्तु वास्तव में एक ब्रह्म ही है जो हम लोगों को इन्द्रियों से नहीं ज्ञात होता केवल अनुभव द्वारा हम उसे जान सक्ते हैं—यदि पण्डित जी के इस कहने को मान भी लें कि जो कुछ हम लोगों को इन्द्रियों से जाना जाता है वह भी ब्रह्म है तो भी ब्रह्म और प्रकृति दोनों एक कैसे हो सक्ते हैं, जब तक ये दोनों पर्याय शब्द न हों और दोनों का गुण एकसा न हो—नास्तिक लोग प्रकृति के आदि कारण में ज्ञान का होना असम्भव मानते हैं परन्तु अद्वैतवादी पतञ्जलि के योग-शास्त्र से सिद्ध ईश्वर का भी ज्ञान का कारण और वेदों का आदि मूल मानते हैं—पण्डित जी दोनों के एक होने का कलींजी और प्याज के लिये का दृष्टान्त

दिया जैसा ये दोनों चीज़ एक हैं केवल नाम का अन्तर है वैसा ही नास्तिकवाद और अद्वैतवाद दोनों वास्तव में एक है केवल नाममात्र का भेद है और यह भी कहा कि अद्वैतवादी निरे मक्कार हैं दुनियां में अंगुश्तनुमा न हों इस ख़याल से अपने को आस्तिक प्रगट करते हैं—पण्डित जी का यह कथन अतिनिष्ठुर मालूम होता है इन्हों ने कैसे जाना कि अद्वैतवादी मक्कार हैं इन के दृष्टान्त से भी तो मक्कार नहीं ठहरते यदि कोई अनुमान इन के दृष्टान्त से निकलता है तो यही कि वेदान्ती लोग भूल में पड़े हैं कि प्रकृति और ब्रह्म को एक न मान दोनों को पृथक्२ मानते हैं और इस भूल का निवारण तभी हो सक्ता है कि उक्त पण्डित जी व्याससूत्र का अपने मन का अर्थ कर वेदान्तियों को समझा दें कि ईश्वर एक है जीव अनेक हैं तथा प्रकृति ब्रह्म से पृथक् है—इत्यादि—आर्यसमाज का एक हितैषी—

# मायावाद और विशुद्धाद्वैतवाद ॥

## दोनों के सिद्धान्त अलग२ किस ओर अपनी२ झुकावट रखते हैं।

### पं० सरयूप्रसादमिश्र लिखित—

इन्द्रजाल का खेल करने वाला ध्यान जमाने का अभ्यास करते२ यहां तक अद्भुत अनुभवशक्ति प्राप्त कर सक्ता है कि वह अपने मन में जिस वस्तु का ध्यान बांधे उसे ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव कर सक्ता है जैसा साधारण लोग साक्षात् व्यवहार गोचर पदार्थों का प्रत्यक्ष ज्ञान कर लेते हैं—इतना ही नहीं वरन इन्द्रजालिक को अभ्यास के बल यह भी सामर्थ्य हो सक्ती है कि अपने से भिन्न चेतन व्यक्तियों पर भी अपने आत्मा का बल पहुंचा सक्ता है और उन्हें भी वैसा ही अनुभव करा सक्ता है जैसा वह आप अनुभव कर रहा है—तात्पर्य यह कि इस प्रकार रूप खड़ा कर देने की शक्ति को जैसा इन्द्रजालिक करता है माया कहते हैं इसी भूमिका के अनुसार मायावादी अर्थात् शङ्करमतावलम्बी कहते हैं कि ऐसी ही शक्ति के योग से बड़ा भारी इन्द्रजालिक ईश्वर जीवों को जगत् का खेल दिखलाता है—माया से जो कुछ दिखलाया जाता है सब झूठा है पर जैसे मायाजाल का दिखलाने वाला इन्द्रजालिक और देखने वाले लोग सच्चे हैं और मायारचित वस्तु सब झूठी है वैसे ही ईश्वर सच्चा है और जगत् सब झूठा है जगत् जब झूठा ठहरा तब जगत् के भीतर सुख दुःख आदि के भाव भी सब

झूठे ठहरे परन्तु मायाजाल का देखने वाला जब अन्यत्र कहीं उस सच्च अग्नि आदि वस्तु देखे रहता है तभी उसे इन्द्रजालिक के करतब से उत्पन्न मिथ्या अग्नि का बोध हो सक्ता है अन्यथा नहीं—

जगत् के प्रकरण में इस शंका के समाधान के लिये मायावादी माया के कार्य का अनादि प्रवाह मानते हैं जिस्से पहिले के अनुभूत पदार्थ दूसरों के अनुभव के विषय गोचर होते हैं—इस्पर विशुद्धाद्वैतवादी अर्थात् वल्लभमतानुयायी कहते हैं कि माया से मिथ्या अनुभव का उत्पन्न करने वाला इन्द्रजालिक का दृष्टान्त जगत् की सृष्टि के प्रकरण में ईश्वर के लिये सुघटित नहीं है क्यों कि वेदों में ईश्वर को सत्यसङ्कल्प कहा है किन्तु उस्के लिये ऐसे कुशल खेलाड़ी का दृष्टान्त उचित है जो अपने में स्थित अद्भुत सच्ची वस्तु को प्रगट कर दिखावे जैसा मकड़ा जो स्वदेह स्थित सच्ची तार से सच्चा जाला तानता है—मायावादी के मत में जगत् के अनुभव की धारा को रोक रखना प्रलय है विशुद्धाद्वैतवादी मानते हैं मकड़े ने जिस जाले को ताना था उसी का फिर निगल लिया जाना प्रलय है—

मायावादियों ने ऐसा माना है कि मिथ्या संसार में अपनी सच्ची सत्ता चैतन्य और आनन्द की छाया का अनुभव जीवों को ईश्वर इस लिये कराता है कि जीव इस परमार्थ तत्व सच्ची बात को लख लेवे कि सत्ता चैतन्य और आनन्द इन तीनों के अनुभव का अभाव ही दुःख है और उन के अनुभव का होना ही सुख है—इस्मे रहस्य यह है कि जीवों के सांसारिक सुख दुःख की वृत्ति ईश्वर ने आगमापायी रक्खा है जिस्से जीव नितान्त दुःख की निवृत्ति और आत्यन्तिक सुख की सिद्धि की प्राप्ति के लिये उत्सुक हो के उन का खोज करता रहे और खोज में लगा रहे गा तो उपनिषद् महाविद्या के द्वारा जान सके गा कि संसार भर में जितने सुख हैं वे सब एकत्र कर दिये जांय और संसार भर में जितने दुःख हैं वे सब निकाल लिये जांय कहीं दुःख का नाम भी न रह जाय तो वह सुख की राशि परमात्मा के अनुभव के आनन्द के लेश की तुलना को भी नहीं प्राप्त हो सकती—परन्तु परमात्मा के अनुभवानन्द में संसार भर की सुखराशि के समावेश के साथ असीम अविनाशी आनन्द का अनुभव होता है इस कारण "एकैसाधे सब सधै, सब साधे सब जाय" इस न्याय के अनुसार संसार

के यावत् सुख दुःख मात्र से विरक्त हो के ईश्वर के शरणागत होना चाहिये जिस्से कि यह जीव अनुपम आनन्द का अनुभव कर सके—

विशुद्धाद्वैतवादी कहते हैं वस्तु के स्वभाव में तर्क को पांव फैलाने का अवसर नहीं मिलता—यह संपूर्ण विश्व उस महाविराट का सच्चा स्वरूप है इस्से स्पष्ट है कि जगत् के मध्यवर्ती सुख दुःख भी उसी विश्वरूपविराट के रूपभेद हैं उत्पत्ति वा नाश किसी का नहीं होता केवल आविर्भाव तिरोभाव मात्र होता है यदि सुख दुःख आगमापायी न होते तो नित्य सुख का अनुभव होते २ सुख भी फीका लगने लगता पक्षान्तर में यदि नित्य दुःख ही दुःख होता तो अभ्यास पड़जाने के कारण उस्से उद्वेग भी न होता इस्से सिद्ध है कि उस विश्वरूप का दुःखात्मक रूप भी उपयोगी है इस्से अपने २ अवसर में सुख वा दुःख किसी की हेयता "त्याग" नहीं है बरन सबी की उपादेयता "ग्रहण" है—

इस युक्ति से स्पष्ट है कि सांसारिक दुःख की डर से सांसारिक सुख से विमुख हो रहना बुद्धिमत्ता का काम नहीं है सगुण साकार ईश्वर की मूर्ति की उपासना में जो कुछ सुख लाभ होता है निर्गुण निराकार ईश्वर के उपासक उस से भी विरक्त होने का उपदेश देते हैं यह विवेकियों का सिद्धान्त नहीं है—वेद में जो विरक्त होने की अनुमति है वह सगुण उपासनाजन्य सुख से भिन्न सांसारिक सुख दुःख से विरक्त होने की ओर समझी जाती है—विना पहले दुःख उठाये सुख नहीं होता सगुण उपासनाजन्य सुख के प्रगट होने के लिये जो बीच में दुःख उठाना पड़ता है वह अवश्य सहना ही होगा—जैसा पानी का स्वाद अधिक मीठा हो इस्के लिये पहले कसैली हर्रे खानापड़ता है किन्तु वह दुःख भी परिणाम में सगुणोपासनात्मक भगवत् भजन इत्यादि व्यापार से सुखमय हो जाता है अतएव सगुणोपासना गोचर दुःख भी जब सुख सदृश है तब सुख का फिर क्या पूछना—विशुद्धाद्वैतवादियों का यह मत साहित्यशास्त्र द्वारा विप्रलंभ शृंगार करुणा वात्सल्य आदि रस से पुष्ट होता है—

यहां पर मायावादी कहते हैं मनुष्य के मन को यह सामर्थ्य नहीं है कि एक ही समय सांसारिक सुख भी लूटे और ब्रह्मनिष्ठ भी हो—इस्में सन्देह नहीं सगुण उपासना निर्गुण उपासना के लिये सीढ़ी है सगुण उपासना के सुख ही पर सब का पर्यवसान हो सो नहीं—इस्के उत्तर में विशुद्धाद्वैतवादी कहते हैं सगुण उपासना में मनुष्य की जितनी वृत्तियां हैं सबो में सगुण साकार भगवद्मूर्ति का

सम्बन्ध सूत के समान तानावाना सा अनुस्यूत रहता है इस कारण वह चित्त विक्षेप नहीं है किन्तु वह भी ईश्वराराधन का एक अङ्ग है—इस्में सन्देह नहीं कि वल्लभाचार्य कृष्णचैतन्य महाप्रभु हितहरिवंश इत्यादि कई एक महानुभाव भक्तिमार्ग का पोषण कर प्रेम और परस्पर की सहानुभूति की जड़ हिन्दुस्तान में जमाय रक्खा—नहीं तो शंकरप्रभृति मायावादियों ने तो संसार सब माया है अतएव मिथ्या है इस उपदेश को ऐसा फैलादिया था कि प्रेम और सहानुभूति का अंकुर भी कहीं न रह जाता न किसी का किसी में ममत्व पाया जाता—सब के सब ज्ञानी बनते ज्ञान का होना जो लोहे के चने हैं सो तो कहीं किसी में आभास मात्र को भी न रहता मिथ्या ज्ञानी बन कर्मकाण्ड और भक्तिकाण्ड सब से विमुख हो जाते—धूर्तप्रतारक दाम्भिकों का समूह इतना अधिक बढ़ता कि हिन्दुस्तान जो डूबते २ भक्ति और प्रेम की कृपा से कईसौ वर्षलौं थंबा रहा उस्का इन रूखे ज्ञानियों की बदौलत तत्काल तख्तातबाह हो जाता—बचे बचाये थोड़े बहुत इस तरह के वेदान्ती जो कथन में ब्रह्मास्मि बनते हैं पर कर्त्तव्यता में कहीं से त्याग और वैराग्य नाम को भी नहीं देखा जाता जैसा लोगों की प्रवृत्ति बिगाड़ रहे हैं उस्पर घिन होती है देश का देश यदि इस तरह का वेदान्ती बन बैठता तो कौन जाने हिन्दुस्तान किस तबाही की हालत में आजाता—अस्तु विमल अन्तःकरण वाले भक्तजन जो सेव्यसेवक भाव में दृढ़ हो अपने सेव्य साकार परमात्मा की सेवा में तन मन से तत्पर रहे जिन्हे परमात्मा का साक्षात्कार हो गया है वे प्रेम और भक्ति के आनन्द में मग्न मुक्ति और निर्वाण को लात मारते हैं मायावादियों का रूखा वेदान्त कभी उन के सरस हृदय में स्थान भी नहीं पाता है—सूर तुलसी मीरा इत्यादि कितना वेदान्त पढ़े थे कब ये लोग उपनिषद्ब्रह्मविद्या का विचार और अनुशीलन करने बैठे थे किन्तु इन पुरुषों के कहे एक २ पद में कितना आकर्षण है और सीधे सरलचित्त वाले के चित्त पर जैसी चोट लगती है वह ब्रह्मज्ञान और वेदान्त को वर्षों तक पढ़ने पर भी होना असंभव है किन्तु यह चोट भी गूंगे का लड्डू है जिसे कभी लगी हो वही इसके आनन्द का अनुभव कर सक्ता है जीभ को वह सामर्थ्य कहां कि कहकर या लिखकर उसे बतला सके—शंकर मतानुयायी मायावादी इस प्रकार की भक्ति को मूर्खता और अन्धकार कहते हैं अन्धकार प्रकाश का रूप नहीं हो सक्ता वे कहते

हैं अन्धकार मिथ्या है प्रकाश सत्य है अन्धकार दुःख रूप है प्रकाश चिदानन्द सुखस्वरूप है—भगवत् का स्वरूपानन्द कदापि दुःखरूप नहीं हो सकता तस्मात् विशुद्धाद्वैत वादियों की यह सब कल्पना केवल भ्रम मूलक है—इस तरह पर यहां दोनों के सिद्धान्तों की क्या झुकावट है सो दिखाया गया किस सिद्धान्त की कौनसी बात उत्तम और ग्रहण के योग्य है इसका निश्चय हमारे पढ़ने वाले करलें—रुचि प्रत्येक मनुष्य की अलग २ होती है न जानिये किसे क्या पसन्द है पर हम तो ईश्वर के मिलने का वही उत्तम सिद्धान्त मानें गे जिस्से चित्त में सरलभाव को जगह मिले बहुतसा तर्क वितर्क यदि सरल चित्त को भी कुटिल करदे तो उस्से लाभ क्या—तद्यथा —

"येन्येऽरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधोऽनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥"

## नाता ॥

नाता यह नातृ शब्द का अपभ्रंश है—नातृ यह नम धातु से बनता है जिस्का अर्थ झुकना है—जिस्का तात्पर्य यह हुआ कि लोक व्यवहार में नाते ही के कारण लोगों में परस्पर का सम्बन्ध पुष्ट रहता है—नाता या सम्बन्ध मनुष्यों में मुख्य कर तीन तरह पर होता है जन्म से, विद्या से, और प्रेम या नेह से—यह तीसरा नेह वाला सम्बन्ध नाते से अधिक प्रबल होता है जैसा किसी कविने कहा है "नेह सगो सोई सगो देह सगो सो नाहि—त्रिया संग जल जात है माता बैठत रोय"—कहावत भी है "नाता दूर परोसी नियरे" तात्पर्य यह कि परोसी समीप रहने से जैसा घनिष्ट सम्बन्ध प्रेम के कारण रखता है वैसा नाते वाले चचा ताऊ नहीं रख सक्ते—कोई २ नाम की समानता से एक चौथा सम्बन्ध भी मानते हैं जिसे लोक व्यवहार में नामराशि कहते हैं—कभी २ तीनों तरह के सम्बन्ध एक ही में पाये जाते हैं जैसा पिता जन्म का देनेवाला हुवे है विद्या भी दे सक्ता है और प्रेम भी रखता है इस तरह पर एक ही पुरुष में तीनों तरह के रिश्तों का समावेश होगया किन्तु जन्म देने का रिश्ता उस्में सबों में प्रधान है—जन्म से जो नाता रखते हैं वे ज्ञाति कहलाते हैं ज्ञाति में भी जो लोग अपने जन्म के पूर्व बीजदान में हेतु हों वे अभिजन कहलाते हैं जैसा बाप दादा

इत्यादि अभिजन और ज्ञाति ये दोनो शब्द जन धातु से बने हैं जिस्का अर्थ ज-न्मना है—अभिजन शब्द में अभि का अर्थ बड़ा है इसलिये अभिजन का अर्थ हुआ जन्म में बड़ा—किसी २ का मत है ज्ञातिशब्द ज्ञाधातु से बना है उन के मत में ज्ञाति का अर्थ हुआ जिस्से जाना जाय अर्थात् मनुष्यों के समूह में अपने कुल में जन्म हुओं की पहिचान जिस्के द्वारा हो उस्को ज्ञाति कहते हैं—जन्म का सम्बन्ध साक्षात् और परंपरा के भेद से दो प्रकार का है साक्षात् सम्बन्ध जैसा पुत्र का बाप और मा से दूसरा परम्परा सम्बन्ध जैसा नाती का नाना से और भतीजे का चाचा ताऊ इत्यादि से—जन्म के परम्परा सम्बन्ध में पिण्ड को अर्थात् शुक्र शोणित से बने शरीर को नियामक मानते हैं और इस शरीर के साथ जि-तने रिश्ते लगे हुये हैं उन्हें गिनें तो ओर छोर न मिले तौ भी गोत्र या वंश एक ऐसा शब्द है कि लौकिक व्यवहार में बहुत काम इस्से निकल आता है—वंश में भी तीन पीढ़ी और सात पीढ़ी तक माता पिता के शुक्र शोणित का सम्बन्ध व्यवहार में विशेष ग्रहण किया जाता है—बहुधा परीक्षा करने से मालूम हुआ है कि पिता का उपदेश रोग या कोई दूसरा रुधिर विकार किसी २ घराने में सात पीढ़ी तक सन्तान में पहुंचा है—कोई २ पांच ही पीढ़ी तक पिता के बीज की अनुवृत्ति मानते हैं और माता के रज की अनुवृत्ति किसी के मत में पांच पीढ़ी तक और किसी के मत में तीन ही पीढ़ी तक है समान गोत्र में जो हमारे यहां विवाह सम्बन्ध नहीं होता इस का कारण यही है कि जिस्में वीर्य की अनुवृत्ति का ज्ञान होता रहे—जहां विवाह सम्बन्ध मुख्य हो जन्म संबन्ध को प्रधान नहीं रहने देता वहां बन्धुशब्द से व्यवहार होता है जैसे मामा भानजा मौसी बुआ इत्यादि—एक नाता विद्या के लाभ का भी है विद्यालाभ कर मनु-ष्य नया जन्म पाता है जन्म के सम्बन्ध में जो शृंखला है उसे सन्तति या सन्तान कहते हैं वह सन्तति चाहो लड़का हो चाहो लड़की सन्तान शब्द की चरिता-र्थता दोनों में है क्योंकि विस्तार जो सन्ततिशब्द का अर्थ है दोनो से होता है—सन्तति या सन्तान तन धातु से बना है जिस्का अर्थ है विस्तार का होना—सन्तान परम्परा को वंश कहते हैं वंश का अर्थ है बांस का पेड़ बढ़ने में उपमा के सम्बन्ध से वंश गोत्र या कुल के लिये व्यवहार किया जाता है वंश दो तरह पर माना गया है विद्या से और जन्म से—विद्या के सम्बन्ध में गुरु और शिष्य का नाता वैसा ही है जैसा पिता पुत्र का, ये—सब तरह के नाते वैदिक अवैदिक

भेद से दो प्रकार के हैं–वेदविहित नाते वे हैं जो परलोक में श्राद्ध पिण्डदान आदि के क्रम पर बांधे गये हैं और लोक में उन के हिसाब से पैतृक धन का हिस्सा बांट किया जाता है—ऋग्वेद में भिन्न २ सूक्तों के वक्ता भिन्न २ ऋषि हुये हैं जो कोई अपने पहिले के पुरखों में जितने सूक्त वक्ता ऋषियों के बतलाने की परम्परा से परिपाटी रखता है उसका उतना प्रवर गिना जाता है—किन्तु प्रवर में मत भेद है कोई २ प्रवर में यौनिक सम्बन्ध मुख्य मानते हैं प्रवर दोनों का एक रहने से भी विवाह वैसा ही निषिद्ध है जैसा समान गोत्र में निषिद्ध है–विद्या गुरु के संबन्ध में गुरु गुरुभाई इत्यादि नाते भी माने गये हैं—यौनिक और गुरुपरम्परा के सम्बन्ध में सोहर सूतक का विचार एक सा रक्खा है—गुरु गृ धातु से बना है जिस्का अर्थ है बोलना और शिष्य शासधातु से बना है जिस्का अर्थ है सिखाना गुरुभाई को सपाठी या सहपाठी भी कहते हैं जिस्का अर्थ है साथ का पढ़ने वाला–गुरु की इज्जत बाप से भी अधिक करना शास्त्रों में लिखा है–

"यश्चावृणोत्यवितथेन कर्मणा ऋतं ब्रुवन्नमृतं संप्रयच्छन् ।
तं वै मन्येत पितरं मातरं च तं न द्रुह्येत्कृतमस्य जानन् ॥

जो अमृत के समान ज्ञान अर्थात् विद्यादान से अनुग्रह करता है उस्को माता पिता समझे उस्के उपकार पर ध्यान दै उस्से कभी बैर न करै इत्यादि अनेक श्लोक सब ठौर पुराण और धर्मशास्त्रों में बहुत से पाये जाते हैं–पहले कहा गया है कि एक रिश्ता मैत्री का भी होता है मित्र यह मिदधातु से बनता है जिस्का अर्थ है चिकना होना सखा सुहृद् इत्यादि मित्र के पर्याय शब्द हैं–सुहृद्शब्द का अक्षरार्थ है अच्छा हृदय रखने वाला और सखा शब्द का अर्थ है जो एक समान कहलावे–जिन दो में ऐसी गठी प्रीति हो कि एक मन दो तन हों वे सखा हैं—सखा समान शब्द के साथ ख्याधातु के योगसे बना है ख्या के अर्थ हैं कहना जिन दो की समता हर एक बात में हो वे सखा हैं–मित्र के लिये बन्धुशब्द का भी प्रयोग किया जाता है बन्धु ऐसे मित्र को कहेंगे जो अपने मित्र का वियोग न सह सके–बन्धु बन्ध धातु से बना है जिस्का अर्थ है बांधना भाई के लिये भी बन्धुशब्द का प्रयोग किया जाता है–बहुधा समान जाति वालों में विशेष मैत्री होती है—मित्र का विरोधी शब्द शत्रु है भीतर से विरोध रखने वाले को सपत्न कहते हैं–पिता पा धातु से बना है जिस्के अर्थ हैं पालन करने

वाला पिता का वाचक दूसरा शब्द तात है जिस्का अर्थ है वंश का विस्तार करने वाला—बाप का अर्थ है बोने वाला और वप्धातु से बना है—जनक जन्माने वाला जनधातु से बना है—अम्बा माता धात्री जननी आदि शब्द के अलग २ अर्थ इस तरह पर हैं—अम्बा खिलाने वाली अम् धातु से बनता है जिस्के अर्थ हैं भोजन देना। माता मनधातु से बना है जिस्के अर्थ हैं आदर के योग्य, धात्री धे धातु से बना है जिस्के अर्थ हैं दूध पिलाने वाली, जननी जन्म देने वाली जन धातु से है—पति प्रिय भर्ता कान्त रमण आदि शब्दों के अलग २ अर्थ इस तरह पर हैं—प्रिय प्रीधातु से प्यार करना, भर्ता भृधातु से पोषण करना, कान्त कमधातु से इच्छा करना, रमण रमधातु से क्रीड़ा करना—इसी तरह स्त्री जाया भार्या कान्ता पत्नी आदि शब्द हैं स्त्री स्त्यै धातु से बना है जिस्के अर्थ इकट्ठे होना है अर्थात् जिस्के सहारे से कुटुम्ब इकट्ठा हो कर रहे—भार्या भृधातु से पोषण करने वाली जिस्का अर्थ है—जाया अर्थात् पति वीर्य द्वारा जिस्के गर्भ में प्रवेश कर पैदा हो "जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः"—पुत्र सूनु सुत तनय आत्मज आदि पुत्र के वाचक शब्दों का अर्थ इस तरह पर है—पुत् नरक को कहते हैं उस्से जो पिता को बचावे वह पुत्र है—सुत या सूनु सूधातु से बना है जिस्का अर्थ हुआ जो उत्पन्न हुआ हो—तनय तन धातु से बना है वंश का विस्तार करने वाला—आत्मज अपनी देह से उत्पन्न होने वाला—कन्या पुत्री सुता तनया आत्मजा इत्यादि शब्द पुत्री के वाचक हैं—कन्या अर्थात् शोभावती कमधातु से है कोई २ कन्या को शोभार्थक कन्धातु से मानते हैं कोई कमूधातु से जिस्के अर्थ इच्छा करना है—दुहिता दुहधातु से बना है अर्थात् दुहने वाली प्राचीन समय कन्या ही गृहस्थी में दुहने का काम करती थीं—अब पिता का धन दुह लेती है—भ्राता भ्राज्धातु से बना है जिस्का अर्थ है सोहना—बहन को स्वसा और भगिनी भी कहते हैं—स्वसा सु पूर्वक असधातु से बना है अर्थात् अच्छी तरह सोहने वाली—भगिनी अर्थात् ऐश्वर्यवती—पुत्र की स्त्री को वधू और स्नुषा कहते हैं वधू वह धातु से है जिस्के माने हैं ले जाना वहू एक घराने से दूसरे घराने मे लेजाई जाती है—स्नुषा स्नुधातु से है जिस्के अर्थ हैं चुआना या सींचना पतोहू अपने स्तन के दूध से सन्तानों को पोषण करती है अर्थात् वंश को सींचती है—पुत्री के पति को जामाता कहते हैं जाया स्त्री और माता

आदरपूर्वक ग्रहण करने वाला दोनों के मेल से जामाता बना है–पतिका छोटा भाई देवर है जो दिवधातु से बना है जिस्के अर्थ क्रीडा खेलने के हैं–पति की बहन ननान्दा या ननद अर्थात् भौजाई को देख के न आनन्दित होने वाली–शब्द ही यह इस तरह का है जिस्से प्रगट है कि ननद भौजाई से सदा कलह करने वाली–बहनोई को आवुत्त कहते हैं यह आप्त शब्द से बना है जिस्के अर्थ हुये हित सत्यवादी बन्धु या यह आर्य पुत्र का अपभ्रंश है अर्थात् शिष्ट या भले का पुत्र–श्यालक शब्द श्य=सूप अल=भरना इन दो शब्दों से बना है अर्थात् बहन के विवाह के समय सूप में लावा का भरने वाला–इस तरह पर नाते के वाचक जितने शब्द व्यवहार में प्रयोग किये जाते हैं वे किस तरह पर ठीक अर्थ से बनाये गये हैं उदाहरण के ढंग पर कुछ शब्दों का विवरण यहां पर किया गया––नाते के वाचक शब्दों का विस्तार जैसा हमारे यहां किया गया है उतना और किसी देश की भाषा अंगरेज़ी फ़ारसी आदि भाषाओं में नहीं है–इस्से सिद्ध होता है प्राचीन आर्य कैसा परस्पर हिलेमिले एका के साथ रहते थे आपस की फूट और बिगाड़ कहां से इन्में आया किस्से इन्हों ने सीखा इस्का कुछ पता नहीं लगता–इसी तरह पर इन के बड़े२ तेहवार होली दिवाली दसहरा आदि विवाह आदि में जो रसमें होती हैं उन के वाचक शब्दों में भी परस्पर की सहानुभूति और मेल की बेल का फबकना सब ओर से प्रगट होता है तब न जानिये इन्हों ने इस फूट और मादृत्तिफ़ाकी को किस गुरु से सीखा और क्योंकर इस्की दृढ़ नेव यहां ऐसी जम गई है कि सौ २ उपाय करो हिलाये नहीं हिलती जो हो ईश्वरेच्छा बलीयसी–

पं–सरयूप्रसाद मिश्र–

# सौ अजान एक सुजान–

## तेरहवां प्रस्ताव––पहिले के आगे से–

पानी में पानी मिले मिले कीच में कीच–

सवेरे की नमाज़ से फ़ारिग़ अफीम के नशे के झोंक में ऊंघते हुये कोतवाल साहब कुरसी पर बैठे ( मन में )–कोतवाली का भी क्या ही नाज़ुक काम है–उधर शहर के आवारा और बदमाशों को दाव में रखना और उन के ज़रिये गतलब भी निकालना इधर रईसों पर भी चाप चढ़ाये रहना ऐसा कि जिस्में

कोई उभड़ने न पावे जंट से मेजिसटरेट तक सब को अपनी कार गुज़ारी से खुश रखना और उन के खयाल में सुर्खरूई हासिल किये रहना कितना मुशकिल काम है–सुबह से शाम तक ऐसे २ पेचीदह झगड़े आ पड़ते हैं कि कुछ कहा नहीं जाता–उस दिन उस जवैहिरी के दस हज़ार के जवाहिरात उड़ गये मुझे मालूम है जिन लोगों का यह काम है पता भी मैंने लगा लिया है पर जवैहिरी मरदूद बड़ा कज़ाक काइयां है एक झंझी नहीं गला चाहता और बातों ही बात में काम निकाला चाहता है—मैंने सोच रक्खा है आधे पर मामिला तै करेगा तो खैर बेहतर नहीं बचा कुल से हाथ धो बैठेंगे—५०० रुपये रोज़ बिना पैदा किये दातुन करना हराम है अच्छा फिर हमारा गुज़ारा भी तो किसी तरह होना चाहिये–बड़े २ नौवाबों का जो खर्च न होगा वह हम अपने ज़िम्मे बांधे हैं–१० रुपये रोज की बन्नों को ज़रूर ही चाहिये किलेसी बड़ी भारी इमारत जुदा छेड़े हुये हैं जिसमें लक्खों रुपये सोख गये–हमनिवाले दस पांच दोस्त दस्तरख़ान के शरीक न हों तो नाम में फ़र्क पड़े—चार २ फिटन कोतल सवारी के घोड़े वग़ैरः का सब खर्च कहां से आवे आखिर अल्लाहतआला को हमारी भी तो फ़िकिर है–रोज़ नया शिकार न भेजे तो इतना बड़ा अटाला कैसे पार हो–(पीनक से जग) कोई है अबे ओ! फहमुआ (थोड़ा ठहर) अबे ओ फहमुआ मर गया क्या साला ?—

फहमुआ–हां साहब हे आएउं (आंख मींजता हुआ नींद में भरा आता है)

कोतवाल—हरामज़ादा अभी तक पड़ा २ सोता ही था तू अपनी इस आदत से बाज़ न आयेगा–बीसों मरतबा कह चुके तुझे होश नहीं आता समझे रह खाल खिचवा लूंगा–एक चिलम सुलफा भर ला जल्दी से—

फहमुआ–हुजूर माफ करें कसूर भा अब आगे से ऐसा न करिहैं।–(हुक्का भर सामने लाय रख देता है)।

(कोतवाल हुक्के को निगाली होठों के नीचे दाब पीनक में आय फिर मन में)–इसमें कुछ शक नहीं कोतवाली का ओहदा भी एक छोटी सी बादशाहत है मगर हुक्काम जिलह अपने चंगुल में हों तो–पहिले जो साहब थे उन्हें तो मैंने खूब सांट रक्खा था शहर के इन्तिज़ाम का कुल दारमदार साहब ने मुझ पर छोड़ रक्खा था जो चाहता था सो करता था–क्या कहें साहब हमारे बड़े खूबी

के आदमी थे लोगों ने बहुतेरा मेरे खिलाफ़ कान भरा पर उन्हों ने एक न सुना—जो याफ़्त मुझे उन के ज़माने में होगई वह अब काहे को होना है—नया कलक्टर बड़ा सख्त मिज़ाज मालूम होता है आदमी यह बेलौस ज़रूर है मुझे उम्मेद नहीं होती कि यह किसी तरह मेरे चंगुल में आ सकेगा—बेलौस और बड़ा मुनसिफ़ मिज़ाज है रैयत की भलाई का भी उसे बहुत खयाल है—खैर देखा जायगा कल से एक नया शिकार हाथ आया है तीन वारेंट गिरिफ़्तारी अदालत से मेरे नाम आये हैं इस वारेंट में सेठ हीराचन्द के घराने के लोग शामिल हैं मुकद्दमा यह ऐसा हाथ आया है कि खूब ही पाकेट गरम होने का मौका मिलेगा ५ तोड़े भी हाथ न आये तो कुछ न हुआ—इधर कई दिनों से बिलकुल खाली जाता था अल्लाह ने एक साथ भारी रक़म भेज दिया कल रात को बी बन्नो कड़क बिजली और झूमड़ के लिये झगड़ रही थी यह रक़म गोया उसी के नसीब से हाथ आवेगी—दारोगा सुलतानसिंह और नकीअली कानस्टेबिल को मैंने इस के लिये तैनात किया है मालूम नहीं क्या हुआ—( पीनक से जग, एक फूक हुक्के की ले )—अबे फहमुआ नामाकूल कैसी तम्बाखू भर लाया है कलेजा तक झुलस गया अहमक़ तुझ से हज़ार मरतबा कहा गया तू अपनी आदतों से बाज़ न आयेगा—आठ रुपये सेर वाली तमाखू जो अभी कल मिट्ठू तमाखूवाला नज़र में दे गया उसे क्या किया क्यों नहीं भरा—

फहमुआ—साहब भूल गएउं है भरे लावत हैं—

नकीअली सलाम कर नन्दू को सामने हाज़िर कर—हुज़ूर यह तो मिले हैं बाकी दोनों की फिकिर में दारोगा साहब गये हैं—

कोतवाल—आहा आप हैं कहिये आप तो बाबू साहब के बड़े दोस्त हो (मन में) खैर पहले इसी मूंजी से निपटलें यह बड़ा बदमाश और चालाक है अच्छा आज चंगुल में आया (प्रकाश) आप लोग देखने ही के सुफैदपोश हैं पर काम जो आप लोगों से बन पड़ता है वह एक हक़ीर छोटे से छोटा आदमी भी न करेगा—उस जाली दस्तावेज़ में आप का भी दस्तखत है सच बतलाओ तुम ने किस तरह उस्पर दस्तखत किया—आप तो क़ानून से भी वाकिफ़ हो अदालत की बातों को अच्छी तरह समझते हो तब मालूम होता है इसमें कुल शरारत आप ही की है—

नन्दू—हुज़ूर जब वह दस्तावेज़ जाली है तब मेरा दस्तख़त भी जाल से बना लिया गया तो इस्में अचरज क्या है—

कोतवाल—खैर तुम ने भी यक़रार किया कि दस्तावेज़ जाली है औ, यही तो मेरा मतलब है (नकीअली से) अच्छा इसे लेजाओ पहरा में रक्खो उन दोनों को भी आजाने दो तो जो कुछ कारवाई होगी की जायगी—शेष—

## चली सो चली ॥

परमेश्वर की सृष्टि में कितनी ऐसी बातें हैं कि जो चलीं सो चलीं काहे को कभी रुक सक्ती हैं—सौ २ उपाय करो उन का वेग नहीं रुकता—जैसा कर्कशा लड़ाकिन स्त्रियों की ज़बान एक मुह में सौ २ गाली जीभ क्या कतरनी है आंधी है रेल की इंजिन है चली सो चली कौन ऐसा दैव का दूसरा पैदा हुआ है जिस्के रोके रुक सके—गाली से झोटिं झोटे की नौबत पहुंची गटपट हो लड़ते २ लस्त होगईं पर ज़बान न रुकी बाहरे इस चलने का जोश—इसी तरह पर रांड़ का चरखा कुंजड़िन भठियारिनों का मुह बस चला सो चला किस्के रोके रुकै—इस चलने को गिनते चलिये सूरज चलता है, चान्द चलता है, पृथ्वी चलती है, ग्रह उपग्रह नक्षत्र तारागण को साथ लिये आसमान चलता है, दिन चला, रात चली, ५० वर्ष के हुये, सौके हुये, उमर की उमर समाप्त होगई, मुहबाये रह गये, लोगों को खबर हुई बांध बूंध चार जन भाइयों के कन्धे पर सवार हो चलबसे, राम नाम सत्य है, बस चले सो चले अब नहीं लौटैंगे—आज हम चले कल तुम चले परसों किसी दूसरे की बारी आई इस चलने से कोई नहीं बचा कितना ही यत्न करो एक दिन सब को चलना है—"चलाचलमिदं सर्वं" कालचक्र की प्रेरणा से यह ज़माना ही चल रहा है आज और है कल कुछ और है—हुक्म चलता है राजा का हुक्म चलता है—प्रजा का हुक्म चलता है—जोरू का हुक्म चलता है—लाट का हुक्म चलता है—कलट्टर का हुक्म चलता है—कोतवाल का हुक्म चलता है—सफाई के जमादार का हुक्म चलता है—कहां तक गिनावें म्युनिसिपलिटी की कृपा से कूड़ा ढोने वाले मेहतर का हुक्म चलता है—हुमायूं बादशाह के ज़माने में एक शक्केने चाम की चलती चलाई थी इस अंगरेज़ी राज्य में कागज़ का रुपया चलता है लाख रुपया मुट्ठी में दाब लो किसी को मालूम न हो—सब

लोग जिसे गाड़ी कहते हैं सो भी चलती है-रसिक पढ़ने वालों को प्रसन्न करने को हमारी कलम चलती है-लम्पटों के आंख का इशारा चलता है-चोर और उचक्के का पराये माल पर मन चलता है—दलालों में बीच बाजार अद्धी २ के लिये पैजार चलता है-सूदखोर महाजनों का सूद चलता है दिन दूना रात चौगुना सौ दिया दोसौ का तमस्सुक लिखवा लिया एक ही वर्ष में दोसौ का चार सौ बात की बात में होगया—कुलपुत्र सपूतों का नाम चलता है "नाम काल नहिखाय" टोडरमल टिकइत राय सरीखे न जानिये कब हुये हैं जिस तीर्थ में देखो टिकइत राय का धर्मशाला तैयार है-शालिवाहन और विक्रम को किसने देखा है पर उनका शाका और संवत् आज तक चला जाता है-कवि और शायरों के मस्तिष्क का परिणाम उन के २ काव्यों का प्रचार आचन्द्र तारक चलता है-इसी तरह पर साहूकार हुण्डी वालों की साख जो चली सो चली घर में चाहो भूंजी भांग न हो चार महाजनों में साख बँध गई लाखों का भुगतान होता है साख चल पड़ी है हुण्डी पुरजा कहीं से नहीं रुकता—अन्धपरम्परा न्याय के अनुसार बाल्यविवाह इत्यादि कुरीतें जो चलपड़ीं सो चल पड़ीं किसके रोके रुक सक्ती हैं—इत्यादि इस चल पड़ने के नमूने यहां पर थोड़े से दिखलाये गये—इसी के विरुद्ध कितनी बातें ऐसी हैं जो अड़जाने के लिये प्रसिद्ध हैं कितनी ही फिकिर करो जो भर इधर उधर न हटेंगी हमारे जैसा यहां परिवर्त्तन विमुखता पुरानीलीक की पैरवी कितना ही कोई समझावे हमारे पुराने खयाल वाले जो अड़े सो अड़े पुरानीलीक के बाहर न हेंगे—हिन्दुस्तान में मंहगी और दुर्भिक्ष अड़ रहा है-भारत के साथ दुर्दैव विलाइत के साथ सौभाग्य और दिनदूनी रात चौगुनी तरक्की अड़ रही है—हमारे ब्राह्मणों के साथ मुफ्तखोरी की आदत भिक्षुकी वृत्ति अड़ रही है इस भिक्षुकी ने ब्रह्मतेज इन्में न रहने दिया अप्राहिज और अपावन इन्हें कर दिया पुरुषार्थ की कहीं गन्ध भी न रह गई तौ भी दक्षिणा की आशा ने इन का पिण्ड न छोड़ा—

नित्यं प्रसारितकरो दक्षिणाशाप्रसाधकः ।
न केवलमनेनैव दिवसोपि तनूकृतः ॥
एष एव महान्दोषो शालेर्द्विजकरस्य च ।
पुनर्वसुसमृद्धोपि हस्तोदकमपेक्षते ॥

बिलाइत के लोगों के साथ शूरता साहस और सूरमापन अड़ रहा है—हिन्दुस्तानियों के साथ कादरता भीरुता अनुद्यम बड़ी मज़बूती के साथ कदम जमाये अड़ रहा है—हमारे हुज़ूर लोगों में आज़ादी रोब और प्रभुता आय अड़ी हुई है हमारे में हरतरह पर पराधीनता दास्यवृत्ति और सहनशीलता ने अपना अटल राज्य स्थापित कर लिया है—पराधीनता और सहनशीलता की बुनियाद हमारे में न जानिये किस कुसाइत से पड़ी कि नस २ को यह दाबबैठी कहीं से हमें उभड़ने ही नहीं देती—हम समझते हैं बचपन में जन्मघूंटी के साथ हमें पराधीनता का रस निचोड़ कर पिलादिया जाता है और बचपने ही से इस बात की ताकीद रहती है कि खबरदार आज़ादी के पास न खड़े होना इसका ज़हरीला असर तुम्हारे में आजायगा तो खराब जाओगे समाजसम्बन्धी धर्मसम्बन्धी स्वाधीनता को अवकाश टिकजाने के लिये मिल जायगा अन्त को यह बुरा अभ्यास पड़ते २ राजकीय विषयों में भी तुम आज़ाद होने की ख्वाहिश ज़ाहिर करने लगोगे—ये सब तुम्हारे कुलक्षण भारतदुर्दैव से नहीं देखे जाते इसी लिये उसने अपनी सहचरी पराधीनता को तुम्हारे पास भेज दिया और यहां आय अड़ गई—इस तरह पर थोड़ासा नमूना अड़ जाने का दिखलाया गया —सारांश यह कि इस चलने और अड़ जाने के बीच में पड़ इंगलैंड सौभाग्य की सीमा का उल्लंघन किये हुये तरक्की करता जाता है हिन्दुस्तान इसी चलने और अड़ जाने के पेच में पड़ा हुआ नीचे को गिरता हुआ रसातल रसीदा होता जाता है—

श्रीयुत सम्पादक जी हिन्दीप्रदीप प्रयाग—

आपके पत्र में मेरे व्याख्यान पर आक्षेप छपा है कृपा करके इस का उत्तर भी अपने अमूल्य पत्र में छपाकर उदारता का परिचय दीजिये गा —

यद्यपि इस लेख के प्रकाशक महाशय ने अपना नाम वा मत प्रकाशित किसी गोप्य कारण से नहीं किया तथापि मुझे लेख में धियासोफी का गन्ध आता है— लेखक ने यह नहीं बतलाया कि एक "मक्कारी" शब्द के अतिरिक्त उन की दृष्टि में अवाच्य कुवाच्य शब्दों की कमी न थी वे शब्द कौन थे यह तो दूसरी बात है जिस मत का प्रतिवाद किया जाता है उस मतवादी को सभी कुछ अवाच्य कुवाच्य प्रतीत होता है। रहा "मक्कारी" शब्द सो नवीन वेदान्त सिद्धान्त

को मैंने ही मक्कारी नहीं बतलाया किन्तु साङ्ख्य सूत्र के वृत्तिकार प्रसिद्ध पं० विज्ञानभिक्षु ने पद्मपुराण का प्रमाण दे कर भी तो लिखा है कि—

मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्धमेव च ।
मयैव कथितं देवि कलौ ब्राह्मणरूपिणा ॥
अपार्थं श्रुतिवाक्यानां दर्शयंल्लोकगर्हितम् ।
वेदार्थवन्महाशास्त्रं मायावादमवैदिकम् ।
मयैव कथितं देवी जगतां नाशकारणात् ॥

शङ्कर, शिव जिन का अवतार "शङ्कराचार्य्य" माने जाते हैं पार्वती से कहते हैं कि–मायावाद असत् शास्त्र है और छिपाहुवा बौद्धमत है ( इसी को मक्कारी कहते हैं) उस को मैंने ही ब्राह्मण (शङ्कराचार्य) रूपधारण कर कलियुग में वर्णन किया है–यह देखने में वेदार्थ सा प्रतीत होता है वास्तव में अवैदिक सो मैंने ही जगत् के नाश करने को रचा है–

इस से सिद्ध है कि इस को मैंने अपनी गढन्त से मक्कारी नहीं बतलाया किन्तु प्रथम से भी यह खयाल चला आता है—यह बात तो लेखक को ही शोभा देती है कि कहने सुनने वालों में कोई समझदार न था केवल लेखक महाशय ही समझदार थे–"जो कुछ है सब ब्रह्म है, जो दृश्यमान है सो कुछ नहीं" इस का तात्पर्य्य क्या हुआ यही तो हुआ कि सब वस्तु दृश्यमान नाम रूप से प्रतीत होती हैं वास्तव में कुछ नहीं किन्तु ब्रह्म ही है अर्थात् वस्त्वन्तर कुछ नहीं सब ब्रह्मही है ऐसा ही नास्तिक भी मानते हैं कि वस्त्वन्तर कुछ नहीं केवल प्रकृति वा परमाणु ही हैं–उसी में कोई हालत चेतन की जड़ प्रतीत होती है--वेदान्ती भी ब्रह्म को छिपे हुवे शब्दों में जड़ भी मानते हैं–यथा

जीवेशौ च विशुद्धा चिद्भिदश्च तयोर्द्वयोः ।
अविद्या तच्चितोर्योगः षडस्माकमनादयः ॥

अर्थात्, हम अद्वैत वादियों के मत में षट् पदार्थ अनादि हैं १ जीव २ ईश ३ विशुद्ध चेतन ४ जीव ईश का विभेद ५ अविद्या ६–अविद्या और शुद्ध चेतन का योग । इन में से शुद्ध चेतन अनादि अनन्त है और शेष ५ अनादि सान्त

हैं। इस से क्या आया कि ब्रह्म में अनादि काल से अविद्या, अज्ञान, ज्ञानाभाव वा जड़ता है परन्तु वह जड़ता नष्ट भी होती है इसलिये सान्त है अनन्त नहीं—अर्थात् ब्रह्मचिदचिद्विलक्षण है न उस को जड़ न चेतन कह सकें। ऐसा ही नास्तिक मानते हैं कि प्रकृति वा परमाणु जड़ वा चेतन कुछ नहीं कहे जासक्ते हैं किन्तु अवस्था भेद से कभी चेतन कभी जड़ कहे जासक्ते हैं—अर्थात् (वही) चिदचिद्विलक्षण हैं—वास्तव में अद्वैतवाद के गुह्य सिद्धान्त को जानना साधारणों का काम नहीं विशेष कर दूसरी भाषाओं के जानने मात्र से उन का मूल हाथ आना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। रहा यह कि शिक्षितों के ऊपर कटाक्ष बात २ में था सो मुझे इनूकार कब है वास्तव में आत्मविद्या के विषय में पाश्चात्य शिक्षा विशेष उपकारी नहीं यह अमेरिकादि के विद्वान् मानते जाते हैं स्वामी विवेकानन्द जी के उसी अद्वैतवाद पर जिस की समता नास्तिवाद से मैं ने की है जब अमेरिकन लोग इतने चकित हुवे जैसा कि प्रदर्शनी के समाचारों से जाना गया तो स्पष्ट है कि उन की छायामात्र लेने वाले भारत के शिक्षिताभिमानी किस अचम्भे में पड़े होंगे—इसी से शिक्षिताभिमानियों को मैं चेताया करता हूं कि वह घर को देखें बाहरी विद्या पर अभिमत्त वा चकित नहीं होवें इति ॥

तु० रा० स्वामी

# तर्क और विश्वास ॥

तर्क और विश्वास दोनों संसार के चलाने की एक ऐसी अद्भुत शक्ति हैं कि जिन के न रहने से मनुष्य के मनुष्यत्व में अन्तर पड़ जाता है—जब तक आदमी का होशहावास दुरूस्त है तब तक तर्क और विश्वास दोनों भरपूर काम देते हैं विक्षिप्त या पागल में ये दोनों रहते तो हैं परन्तु इन का प्रयोग यथावत् पागल मनुष्य नहीं कर सकता—अब इन दोनों के यथावत् काम देने पर विचार होता है कि इन दोनों का आपस में क्या सम्बन्ध है—कर्म इन्द्रियां अर्थात् हाथ पांव आदि के द्वारा इन के सम्बन्ध का ज्ञान किसी तरह हो ही नहीं सकता क्योंकि इन के संबन्ध का ज्ञानस्थल इन्द्रियों से कोई सरोकार नहीं रखता—अब रहीं ज्ञान इन्द्रियां उसमें तर्क बुद्धि का धर्म है और तर्क अहंकार

की विविध शक्तियों में एक शक्ति है—जब किसी स्थूल वा सूक्ष्म पदार्थ का ज्ञान कर्म या ज्ञान इन्द्रियों से मन के द्वारा अहंकार को होता है तब बुद्धि अपनी तर्कना शक्ति से निश्चय करती है कि यह ज्ञान वास्तव में सत्य है या झूठ—सच झूठ के निश्चय के उपरान्त अहंकार उस पर विश्वास लाता है इससे प्रगट हुआ तर्क और विश्वास में सेवक स्वामी कासा सम्बन्ध है—अब प्रश्न उठ सक्ता है कि जब दोनों में इस प्रकार का सम्बन्ध है तो संसार के मनुष्यों के तर्क और विश्वास में क्यों इस तरह का अन्तराय है उचित था कि सम्पूर्ण मनुष्यमात्र का एकसा विश्वास होता—इसका सुगम उत्तर यह है जिसे हर एक मनुष्य थोड़े ही परिश्रम में जान सक्ते हैं—पक्षपात छोड़ वादी के तर्क करने के तरीके को देखे और तब उससे अपना अनुमान निकाले ऐसा करने से जल्द प्रगट हो जायगा कि संसार के सब मनुष्य क्यों एक विश्वास के नहीं होते कारण इसका यह है कि सब लोग एक ही तरह का तर्क नहीं करते बल्कि लोगों के तर्क करने का प्रकार भिन्न २ है—एक प्रकार के तर्क करने वाले वे हैं जो तर्क करने में ऐसे आलसी होते हैं कि अपनी बुद्धि को थोड़ा भी परिश्रम नहीं दिया चाहते अपने गुरु या बड़े लोगों के किये हुये तर्क पर जल्द विश्वास कर लेते हैं—ऐसे मनुष्यों की तर्क करने की शक्ति प्रतिदिन कुण्ठित होती जाती है—ऐसों का विश्वास वही रहेगा जैसा उन के बाप दादों के समय से चला आता है—बाप दादों का विश्वास चाहो कैसा ही पोच हो पर वे लकीर के फकीर बने ही रहेंगे—ऐसे लोगों से यदि पूछा जाय कि तुम अपनी बुद्धि को क्यों नहीं काम में लाते तो ये पट से यही जवाब देंगे कि क्या हमारे बाप दादे मूर्ख और नासमझ थे क्या हम उन से अधिक बुद्धिमान् हैं—हिन्दुस्तान में तो ऐसे लोगों की इतनी अधिकाई है कि १०० में ९० से कम न होंगे किन्तु थोड़े या बहुत ऐसे मनुष्य तो हर एक जाति और देश में पाये जाते हैं—इसी लिये संसार में इतने तरह के अलग २ मत और एक २ मत में अलग २ बहुत से जुदे २ सम्प्रदाय हैं जिसे बड़े २ लोगों ने अपना मत-लब गांठने को या अपने देश की भलाई या उन्नति के लिये जुदे २ देशों में जुदे २ समय में फैलाया और अब तक फैलाते जाते हैं—यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के इस आज़ादगी के ज़माने में अंगरेज़ी शिक्षा के प्रभाव से अब उन भिन्न २ मत, धर्म या सम्प्रदायों की कोई आवश्यकता नहीं है ॥

दूसरे प्रकार के पुरुष वे हैं जो अपने रोजगार के काम में ऐसी तीखी बुद्धि रखते हैं और तर्क को इतना काम में लाते हैं कि बहुत कम लोग चालाकी बुद्धिमानी और न्यायपूर्वक विचार में उन की बराबरी कर सकते हैं परन्तु जब किसी ऐसे विश्वास को तर्क के द्वारा शुद्ध करने की आवश्यकता पड़ती है तर्क के बदले क्रोध करने लगते हैं यहां तक कि न अपनी बात कहते हैं न दूसरों की सुनते हैं क्रोध में इतना आग बबूला हो जाते हैं कि मानों उठा कर निगल जायंगे और यही समझते हैं कि यह हमारा गुस्सा ही तर्क का पूरा काम देदेगा और हमारे विश्वास की पुष्टता हो गई—पर ऐसे काम के लिये बड़ा चालाक आदमी चाहिये और इस तरह के चालाक बहुत कम पाये जाते हैं ऐसे लोगों से समाज का काम तो भरपूर निकल सकता है परन्तु सत्य का पोषण नहीं हो सकता इस लिये कि उन का विश्वास भी गुस्से की रंगत पकड़ लेता है—

एक प्रकार के पुरुष और भी हैं जो सच्ची नीयत से विश्वास के पोषण में तत्पर हैं और सत्य के अन्वेषण में भी उद्यत हैं किन्तु बुद्धि वैभव में इतने पूर्ण नहीं हैं कि तर्क के द्वारा अपने विश्वास को सत्य के पास तक पहुंचा सकें—तर्क तो करते हैं किन्तु उन का तर्क एकदेशी होता है इस लिये सत्य का पूरा निश्चय नहीं कर सकते और बिना पूरा निश्चय के जो विश्वास वह कच्चा विश्वास है—इत्यादि कई प्रकार के तर्क करने वाले यहां दिखलाये गये—पर सचतो यों है कि विश्वास और तर्क दोनो एक दूसरे के इतना विरुद्ध हैं कि तर्क विश्वास के लिये कुलाढ़ा है—विश्वास को जब तक चित्त में स्थान न दोगे तर्क की शङ्का कभी टूटे हो गी नहीं—

## प्राप्त ग्रन्थ ॥

### सुन्दरीसुधार ॥

यह पुस्तक स्त्रीशिक्षा के लिये एक ही ग्रन्थ है स्त्रीशिक्षा के प्रसंग से दूसरे और २ सामाजिक विषय भी इसमें बहुत अच्छे ढंग से निवाहे गये हैं पुत्रीपाठशाला के ऊंचे दरजों में यह ग्रन्थ प्रचार के योग्य है—फर्रुखाबादस्थ पं० गोपालरावहरी शर्मकृत मूल्य मै डाकमहसूल ।।≠) है—

## राजसिंह–राधारानी इन्दिरा–युगलाङ्गुरीय

ये ४ उपन्यास वंगभाषा के प्रसिद्ध सुलेखक वंकिंचन्द्र के नोवेल्स का अनुवाद स्वर्गवासी–पं० प्रतापनारायण मिश्रकृत–ग्रन्थ ये चारो बड़े उत्तम हैं–वंकिंचन्द्र के नोवेलों का भला क्या कहना उस्में पं० प्रताप मिश्र की ललित भाषा में अनुवादित अधिकस्य अधिकंफलम्—मूल्य चारो का मै पोस्टेज १।–) वांकीपुर खड्गविलास प्रेस में राजकुमार बाबू रामदीन सिंह द्वारा प्रकाशित ॥

## अमरसिंह राठौर॥

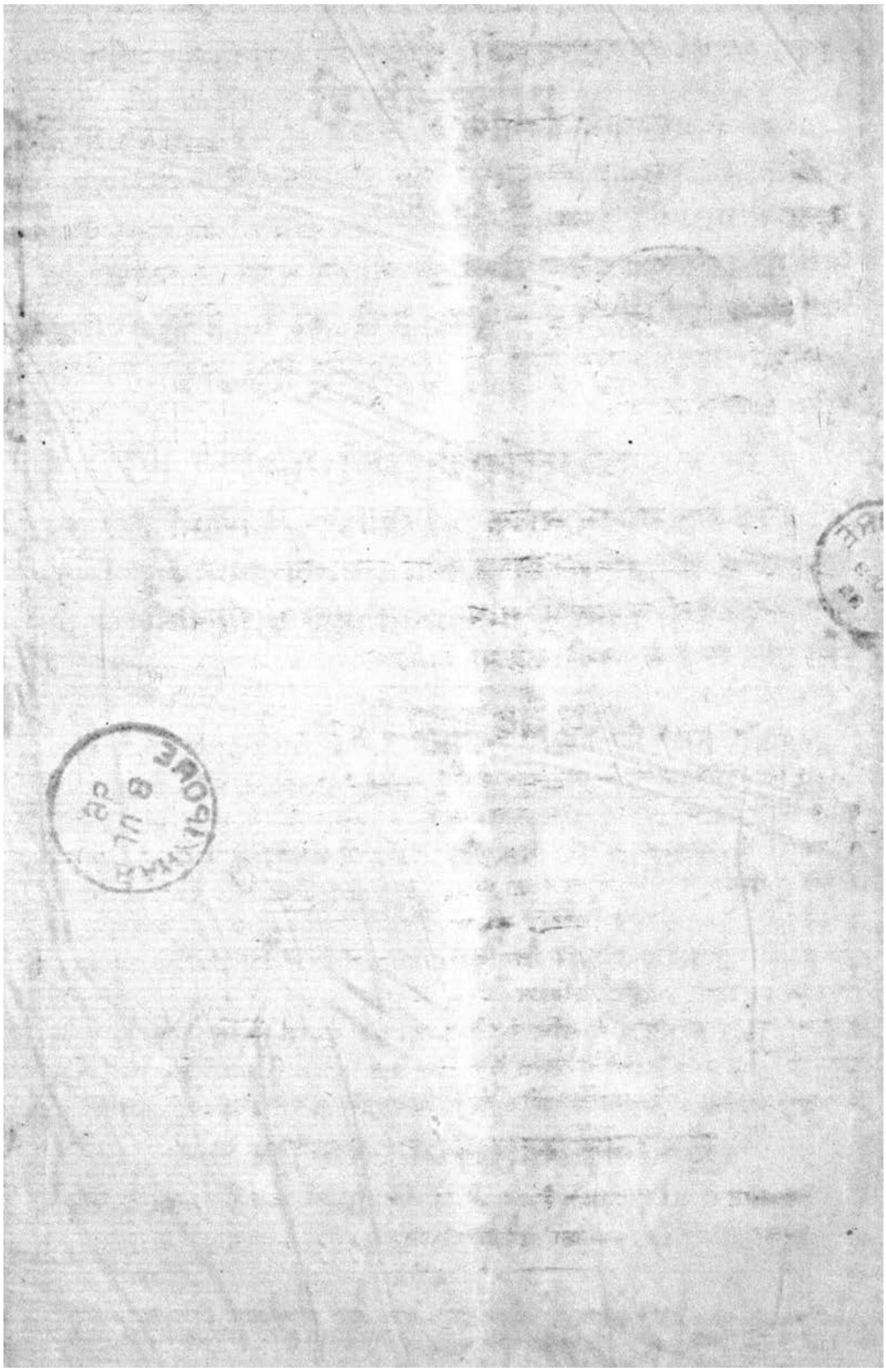
एक ऐतिहासिक नाटक श्री राधाचरण गोस्वामी कृत यद्यपि इस्में रौद्र करुणा हास्य सभी रस दिखलाये गये हैं किन्तु वीर रस इस्में स्थायी है भाषा श्री राधाचरण गोस्वामी की है तब इस ग्रन्थ का क्या कहना मूल्य ।)

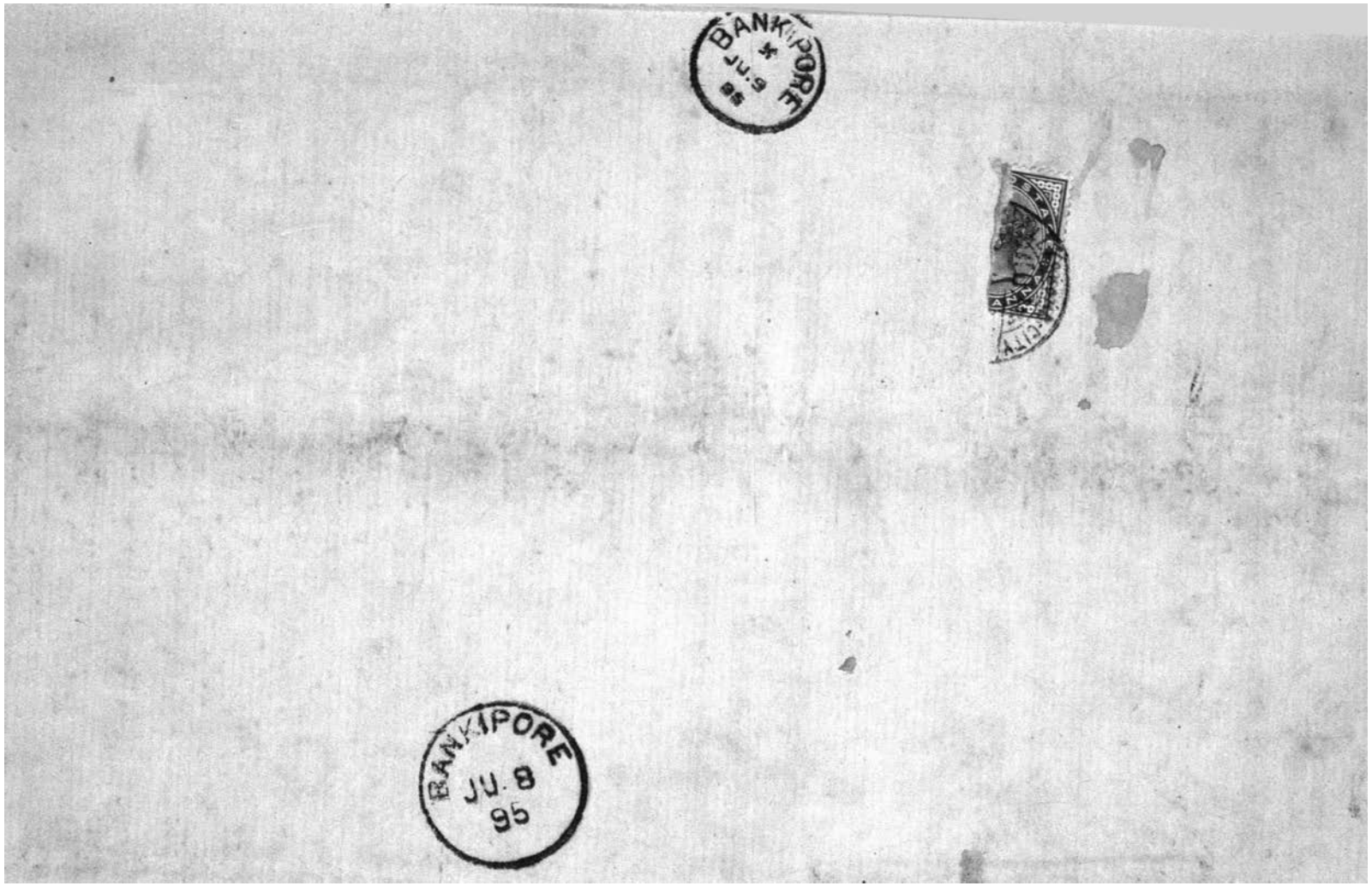
## आयुर्वेदशब्दार्णवः ॥

हारीत धन्वन्तरि चरक सुश्रुत आदि वैद्यक शास्त्र के आचार्यों ने भाव प्रकाश आदि ग्रन्थकारों ने मदन पाल आदि निघण्टकारों ने अमरसिंह आदि कोषकारों ने वैद्यक के जिन २ शब्दों का तथा औषधियों के नाम का प्रयोग अपने २ ग्रन्थों में किया है उन का संग्रह इस्में अकारादि क्रम पर किया गया है और ठेठ हिन्दी में उन शब्दों का अर्थ इस्में दिया गया है–हम समझते हैं ऐसे ही कोई शब्द रह गये हों जिन का संग्रह इस्में न किया गया हो–श्रीगंगाप्रसादशर्मसंग्रहीत श्रीयुत पण्डित वर भीमसेनशर्म द्वारा संशोधित और प्रकाशित यह ग्रन्थ वैद्यक में रुचि रखने वालों का अवश्य संग्रह के योग्य है—मूल्य १) है अगस्त महीने के अन्त तक लेने वालों को ॥।) में मिलेगा–सरस्वतीयन्त्रालय–प्रयाग में छपा है–और वहीं पत्र भेजने से मिलेगा ॥

## दमयन्तीस्वयम्वर–नाटक ॥

यह नाटक अब छप कर तैयार है ≡)॥ मय पोस्टेज के इस्का मूल्य है जिसे लेना मन्जूर हो टिकट ≡)॥ का मेरे पास भेजदें–




BANKIPORE
JU. 8
95
BANKIPORE
JU. 8
95

# हिन्दी-प्रदीप

## मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥


जि० १८सं० ८-९-१० } प्रयाग { एप्रिल-मे-जून १८९५

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
तुलसीराम स्वामी के प्रबन्ध से
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥


मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्दमैपोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥
९-९-९५

# हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १८ संख्या ८–९–१० | प्रयाग | एप्रिल–मे–जून– सन् १८९५ ई०


## हमारे पुराने ऋषि मुनि क्यों माननीय और पूजनीय थे ?

हमारे पुराने ऋषि मुनि जिन के नाम से हम बिक रहे हैं और पाजीदर-पाजी, महापाजी, सब भांत अपाहिज, निकम्मे, राह की टिकरी से बत्तर, इस गिरी दशा में आकर भी हम बड़े बाप के लड़के हैं वंशपरंपरा के क्रम से उन पूज्यतम आर्य ऋषियों के सन्तान हैं इस घमण्ड में फूले नहीं समाते सो उन आर्य ऋषियों में कौनसी ऐसी बात थी जिस्से हम इतना घमण्ड कर रहे हैं—क्या उन के हाथ पांव नाक कान आदि अवयव इस पंचभूत के अतिरिक्त कोई दूसरे पंचभूत के बने थे ? क्या उन के हाड़ चाम लहू मास कुछ और तरह के थे ? उन की जीवनी नाड़ी तथा रक्तसंचालनी शिराओं में जिस जिन्दहदिली के साथ रक्त संचालन होता था वह अब हम में क्यों नहीं होता ? निश्चय वे भी इसी हाड़ चाम के बने थे जैसे हम बने हैं बल्कि हम अधिक सभ्यता के समय में होने का दावा कर सकते हैं; कितने तरह के आराम आसाइशें कितनी तरह की विद्यायें और विज्ञान तथा शिल्प का अंकुर भी उन ऋषियों के समय में प्रकट नहीं हुआ था—जिस समय हमारे वेदप्रवर्तक ऋषि हुये हैं वह समय ऐसी सभ्यता का न था इस उन्नीसवीं शताब्दी की सभ्यता का तो जिकिर ही क्या है सभ्यता की साधारण बातों से भी वे ऋषि सब वञ्चित थे पेड़ की छाल और वल्कल का पहनाव पर्णकुटी में निवास कन्द मूल बन के फल तोवार और प्रसई का

चावल आदि उन के भोजन से भरपूर टठोल हो सकती है कि कहां तक सभ्यता की सामग्री उन्में थी किन्तु दृढ़ता और स्थिर अध्यवसाय से बड़े २ सभ्यों की नाक काटे थे—पूर्णकाम इतने कि जिस बात के लिये अड़ गये उसे करी के छोड़ा हम देखते हैं तो उन ऋषियों का स्थिर अध्यवसाय इस समय अंगरेज़ों में चला गया जिस बात के लिये ये लोग उद्यत होते हैं उसे चाहो जो हो करी के छोड़ते हैं—एक हम हैं कि कितने लोगोंने हज़ार २ सिर पटका कि विलाइती कपड़े हम सब लोग न पहिना करें किन्तु कोई नहीं मानता वही इगलैंड के लोग हैं कि अपने घर से हज़ार कोस की दूरी पर हैं और एक का दस खरचते हैं विलाइत की बनी चीज़ें छोड़ हिन्दुस्तान की बनी चीज़ देख घिनाते हैं—चाहो हिन्दुस्तान की बनी चीज़ें दाम में सस्ती पायदारी में नफ़ासत में विलाइत से भी बढ़कर हों पर हिन्दुस्तान की बनी हैं इस्से घिन के लायक़ हैं—ऋषिगन इन्द्रियग्राम को वश में किये थे आज कल के विषयलम्पटों की तरह प्रमादी और भोगलिप्सु न थे इन्द्रियों को भरपूर कसे थे—विश्वामित्र ऐसे दो एक कभी २ प्रबल इन्द्रियों के वश में आय दृढ़ संयम से च्युत भी हो गये तो फिर अत्यन्त सावधान और द्विगुण संयमी हो कर अपनी तपस्या की उस त्रुटि को पूरी कर डाला—यूरप के लोगों में इन्द्रियों का कसना कहीं हई नहीं ज्यों २ इन्में सभ्यता बढ़ती जाती है त्योंत्यों भोगलिप्सा दसगुनी अधिक होती जाती है और यही एक बात है जिस्से हमे ढाढस बंधी है कि ये भी एक दिन हमारे ही समकक्ष हो जांय गे—हमारे देश के जलवायु का जैसा गुण है कि हम किसी दूसरे के गुण को कभी न लेंगे केवल दोष को गांठ बांधलें गे उस्के अनुसार ऐयाशी नुमाइश नज़ाकत मिथ्याभिसन्धि आदि दुर्गुण हमने मुसल्मानों से लिया अब भोगलिप्सा शराबख़ोरी इत्यादि दोष इन से सीख रहे हैं—हमारे ऋषिगण न केवल इन्द्रियों को कसे थे बरन निर्लोभ और उदारचित्त इतने थे कि सुवर्ण के ढेर और चक्रवर्ती राज्य संपदा को लात मारते थे—इस समय के असंयमी लोभी निकम्मे ब्राह्मणों को देख सब लोग अनुमान करते हैं कि वे ऋषि भी ऐसे ही रहे होंगे—उन की स्वार्थपरता का यह बड़ा पक्का सुबूत है कि अपने सन्तान ब्राह्मणों के लिये कैसी बातें कर गये कि उन का टैक्स से मरने के उपरान्त भी पिण्ड नहीं छूटता—इस शंका के समाधान में हम तो यही कहें गे कि उन आप्त ऋषियों का इस्में कोई दोष नहीं है बरन वे तो ब्राह्मणों के लिये

बड़ी कसौटी सहिष्णुता दमन क्षमा त्याग इत्यादि नियत कर गये हैं—संसार के सुख कामभोग सब क्षुद्र हैं इन के लिये ब्राह्मण का शरीर नहीं बना किन्तु परलोक मे अनन्त सुख की प्राप्ति के अर्थ कृच्छ्र सान्तपन महाकृच्छ्र आदि बड़े कठिनव्रत और तपस्या के लिये ब्राह्मण सृजे गये हैं—

"ब्राह्मणस्यतु देहोयं क्षुद्रकामाय नेष्यते । कृच्छ्राय तपसे चैव प्रेत्यानन्तसुखाय च"

युगधर्म के पेच में पड़ ब्राह्मण नित्य २ बिगड़ते ही गये मसल है "सिरे की भेंड़ जब कानी हुई तो औरों की क्या"—भारत की प्रजामात्र को शिक्षा देनेवाले और राह बतलाने वाले ब्राह्मण ही जब ठीक पद्धति पर न रहे तो बाकी और तीन वर्ण कब तक ढंग पर रह सक्ते हैं और अब तो ब्राह्मण यहां तक लो भी लपट तुच्छ और स्वार्थपर होगये कि इन का उन्हे शुद्धात्मा ऋषियों के वंश में कहना महात्मा ऋषियों के नाम में कलंक लगाना है—दो हज़ार वर्ष के पहिले के बने जितने ग्रन्थ हैं वे शुद्ध ऋषियों के लिखे हैं उन्में कहीं किसी तरह की स्वार्थपरता नहीं पाई जाती न वे सब लेख युक्तिविरुद्ध हैं—उपरान्त बौद्धों ने बहुत से आर्ष ग्रन्थों को जब नष्ट करडाला तब इधर के ब्राह्मणों ने अपने मन के अनेक ग्रन्थ रचे और नाम उन्हीं ऋषियों का रक्खा जिस्में उन्हों ने मन मानता गोड़ा केवल अपना ही पेट भरा, कौड़ी के लिये मसजिद ढ़हाया, हिन्दूधर्म को आड़ में रख जिस्में अपना बने सोई किया, यह कुछ न ख़याल किया कि ऐसी २ रीत और रस्में जारी करने से कौमीयत की जड़ कहां तक कटती है, मुल्क में कमज़ोरी कहां तक जड़ पकड़ती जायगी—भिन्न २ संप्रदाय, खानपान की छिलावट, बाल्यविवाह आदि कुसंस्कार सब उन्ही स्वार्थपरायण ब्राह्मणों की करतूत है । अस्तु फिर भी जब तक मुसलमानों ने अनेक अत्याचार के द्वारा हमारा दलन नहीं किया था, और हमारे खून में जोश बाकी था, हम जित और दास नहीं बनाये गये थे अर्थात् एक हज़ार वर्ष पहले के बने जितने ग्रन्थ हैं उन्में न तो इतनी बेहूदा बातें धर्म के नाम से लिखदी गई हैं, न वे ग्रन्थकार ही इस प्रकार अनाप्त स्वार्थी हो गये थे कि उन का लेख माननीय न हो और न उन ग्रन्थों के लेख के अनुसार चलने से हमारी बहुत कुछ हानि देखी जाती है। हम स्वामीदयानन्द को धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने आर्षग्रन्थों के पठनपाठन का कुछ क्रम अपने मत के मानने वाले आर्यों में आरम्भ किया इसी परिपाटी

से लोग संस्कृत पढ़ें तो वे कभी यह न कहें कि हमारे ऋषि स्वार्थपरायण और लोभी थे—यह बात केवल दयानन्द ही को सूझी कि आर्ष अनार्ष लेख में क्या अन्तर है—एक बात उन्में भी बड़े दोष की थी कि ज़िद्द में आय आज कल के बहुतेरे नष्ट भ्रष्ट ब्राह्मणों के कुचरित्र पर चिढ़ बहुत से ग्रन्थों को गप्प कर दिया—नवीन आधुनिक ग्रन्थों में भी कितनी बातें ऐसी हैं कि पुराने ऋषियों के लेख की छटा उन्में आगई है बल्कि वैद्यक ज्योतिष तथा सभ्यता के अंग कितनी कलाओं पर आधुनिक आचार्यों के लेख और कल्पना ऋषियों के लेख से भी आगे बढ़ी हैं—हम पहले कह आये हैं पुराने ऋषि सभ्यता की अनेक सामग्री से वंचित थे सृष्टि का आदि था अनेक विज्ञान तथा दूसरी २ विद्यायें तब प्रगट भी नहीं हुई थीं—दूसरे यह कि ऋषिगण आध्यात्मिक उन्नति के ऐसा पीछे पड़े कि लोकोपकारी बहुत सी बातों के वसूल पर भी उन का ख़याल न गया तब उन की उन्नति कहां रही—किन्तु स्वामी जी यह नहीं मानते उन के कथन से ऐसा मालूम होता है कि वृक्ष में अंकुर निकलते ही वह रसीले फलों से लद जाता है—सृष्टि के आरम्भ होते ही वे सब बातें सीखे सिखाये लोग माके पेट से पैदा हो गये जिसे वे हज़ारों वर्ष सृष्टि के चलने पर अनुभव करते २ तब कुछ सीखते—अस्तु इससे हमे कोई प्रयोजन नहीं हमारे ऋषि नई सभ्यता के अंश में चाहो पीछे हटे रहे हैं किन्तु आप्त होने के लिये मनुष्य को जो कुछ चाहिये उस में अच्छी तरह भरे पूरे थे—इस समय के लोगों में उन ऋषियों की सौअंश में एक अंश भी तितिक्षा, दृढ़ता, साहस, सत्य पर अटल विश्वास और सत्यप्रियता आदि कोई बात होती तो जिसे वे महर्षिगण बड़े परिश्रम के उपरान्त करने में कृतकार्य हुये थे उसे ये इस तरक्की के ज़माने में सहज ही कर डालते—यही कहावत हुई "दांत रहे तब चने नहीं थे चने हुये तब दांत नहीं हैं" जब हमारे देश के लोग शौर्य धैर्य तितिक्षा सहिष्णुता आदि उत्तम गुण से विभूषित थे तब ये नये २ विज्ञान शिल्पकला का कहीं प्रादुर्भाव भी न था अब वे सब बात अंगरेज़ महाशयों की कृपा से हमें मिल सकतीं हैं तो वे सब उत्कृष्ट गुण सपने के ख़याल और निरे किस्से कहानी की बात हो गईं—इस्में सन्देह नहीं हमारे ब्राह्मण भाई दक्षिणा के सहारे पर अपना जीवन रख अपंग और अपाहिज हो ही गये काहे को कभी दक्षिणा इन से छुटैगी काहे को ये कुछ काम के होंगे—पर हम उन सुसभ्य सुशिक्षितों के कुचरित्र पर जब ध्यान देते हैं तो

रही सही जो कुछ आशा अपने सुदिन के फिर लौट आने की मन में कभी २ झलक उठती है वह सब जड़ पेड़ से निर्मूल हो जाती है—खैर ब्राह्मण तो लोभ और स्वार्थपर हो प्रजामात्र को हर तरह पर अन्धियारे में रख उन्हें नीचे ही को गिराते गये पर ये ही उंजाले कि ओर रोशनी की बड़ी बरकत पाय क्या सुधरे और अपने नमूने से दूसरों को क्या सुधार रहे हैं—इन की सभ्यता और शिक्षा केवल देह को आराम पहुंचाने सब तरह आज़ाद हो आहार विहार आमोद प्रमोद के लिये है हमारे ऋषियों के जितने पौरुषेय गुण थे उस्की कहीं गन्ध भी किसी अंश में यहां पाई जाती है ? मैं तो समझता हूं सद्विवेकी कोई भी इस प्रश्न के उत्तर में हां न करेगा—

हमारे अपढ़ फिर भी इन शिक्षितों से "मारल्स" धर्मनीति समाजनीति दोनों में बड़े दृढ और पक्के हैं—ये समाज के बन्धन से अलबत्ता आज़ाद हो गये कसौटी के समय मारल्स के बड़े पक्के होते तो इन का आज़ाद होना बुरा न लगता न किसी को इन से घिन होती भीतर २ नख से सिख तक सब तरह की "इम्मोरालिटी" कुचरित्र से पूर्ण हैं तब सभ्य बन सिवाय इसके कि हर एक बात में अंगरेज़ों की नकल करैं प्याले पर प्याले ढरकाने में अपना दरजा औवल रक्खैं चाहो जात की चमारिन हो पर एक विलाइती मेम गरे बांधलें नेचरिये बन विश्वास और ईश्वर के अस्तित्व पर कुल्हाड़ा बरसावें और ये क्या कर रहे हैं—यावत् मोरालिटी और चरित्रपालन की बुनियाद विश्वास और ईश्वर उस्की ओर से वहां अन्धकार छाया हुआ है तब उन की शिक्षा और सभ्यता हमारी समाज को सत्यानास में मिलाने के अलावे और क्या कर रही है—"केरेक्टर" चरित्र का एक नमूना आत्मत्याग आत्मनिर्भर आत्मदमन "सेल्फसेक्रीफाइस" "सेल्फरिलायन्स" "सेल्फकनट्रोल" के उदाहरण जितने हमारे अपढ़ अशिक्षितों में देखे जाते हैं उतने भी इन शिक्षितों में नहीं हैं और यही सब हमारे पूर्वज महर्षियों में महर्षिपन था जिस्से उन की प्रतिष्ठा और इज्ज़त हम अब तक करते जाते हैं—अब आप समझे ! हमारे ऋषि मुनि क्यों माननीय और पूजनीय थे ?—ऐसा सोना ही किस काम का कि उस्के पहनने से कान फटै ऐसी सभ्यता और शिक्षा ही किस काम की कि हम जहां तक "डिजनरेट" पतित और च्युत होगये हैं उस्से चार अंगुल और नीचे को गिर जांय—अफसोस

इन नई रोशनी के सुशिक्षितोंने अपनी किताब में आत्म निर्भर इत्यादि क्या है अच्छी तरह पर पढ़ा है पर उसे काम में नहीं लाते और हमारे अपढ़ लोग पुराने ऋषियों के कथन पर विश्वास जमाये चले जा रहे हैं तो बहुधा उन्में आत्मदमन आत्मनिर्भर के बड़े उत्तम और चोखे उदाहरण निकल आते हैं कहीं कुछ पढ़े भी होते तो न जानिये उन से कितना लाभ पहुंचता इसी से हम अपने पूर्वज ऋषियों को देवतुल्य समझ आदर देते हैं–

## दूर की ढोल सुहावनी–

ऊंची दुकान के फीके पकवान—नाम बड़ेरा दरसन थोड़ा--इलाहाबाद म्योरसेन्ट्रलकालेज पश्चिमोत्तर और अवध के सब कालेजों में अपना औवल दरजा क़ायम किये है आठ और दस रुपया माहवारी फीस खासकर इसी कालेज के वास्ते बढ़ाई गई है—बड़े से बड़े नामी प्रोफ़ेसर भी इसी कालेज के लिये नियत किये जाते हैं–और जहां तक होता है इस कालेज की प्रोफ़ेसरी के लिये सिवाय अंगरेज़ के हिन्दुस्तानी चाहो जैसा लायक़ हो नहीं रक्खा जाता शायद यह खयाल हो कि हिन्दुस्तानी प्रोफ़ेसर होने से और कालेजों के मुक़ाबिले इस कालेज के बड़प्पन में फर्क पड़ जायगा–गवर्नमेण्ट का जितना खर्च इस कालेज में होता है उसके आधे खर्च में और २ कालेज अच्छी तरह चल रहे हैं और इम्तिहान के नतीजे में इसके बराबर के या कुछ ही इससे न्यून निकलते हैं–इस साल फर्स्ट आर्ट की परीक्षा मे मालूम हुआ कि १२५ के ऊपर लड़के इस कालेज से इम्तिहान में शरीक हुए जिस्में केवल ३३ पास हुये–इसका कारण हमें प्रोफ़ेसरों की ग़फ़लत और सुस्ती मालूम होती है–पहले साल और दूसरे साल जैसी बेपरवाही देखी जाती है उसका परिणाम सिवाय इसके और क्या हो सक्ता है–बहुधा लड़के शिकायत करते हैं कि प्रोफ़ेसर लोग केवल नोट लिखा देते हैं चाहो कोई समझे चाहो न समझे तालबेइल्म को जीमें बैठा देने की बिल्कुल कोशिश नहीं करते—सर्कार लायक से लायक प्रोफ़ेसर इसी लिये मुकर्रर करती है कि कोई कैसा ही कुन्दजेहन हो उसे भी उन के बताने का लाभ पहुंचे—पहले और दूसरे साल के दरजों की तो पूरे ५ घंटे कभी पढ़ाई भी नहीं होती महीनो तक दो ही घंटे के लिये कालेज में जाना पड़ता है–जो पास भी होते हैं उन के लिये प्रोफ़ेसरों को कोई शाबाशी नहीं है जिन्हें केवल प्रोफ़ेसरों के नोट का भरोसा

है वे अवश्य इम्तिहान में गिर जाते हैं—हां अलबत्ता जो लोग कहीं और जगह अपना सिलसिला लगाये हैं और मेहनती हैं वे अलबत्ता चाहो निकल जांय—जब पूरी इस्तेदाद होगई अपने आप कर लेने की योग्यता आगई जिन्हें प्रोफ़ेसरों के बताने की आकांक्षा न रह गई वे आगे के इम्तिहान में भी निकलते जाते हैं—बी—ए—एम—ए क्लास का नतीजा कभी को इस कालेज का अच्छा भी होता है तो इन प्रोफ़ेसरों की करतूत से नहीं बल्कि उन दरजों के विद्यार्थियों की मेहनत का यह फल हम कहेंगे—पहले ऐसा न था मिस्टर हरिसन और हिल इत्यादि के ज़माने में जैसे उद्दण्ड और विद्या के सागर छात्र निकल चुके हैं वैसे अब कहां निकलते हैं—न जानिये क्यों गवर्नमेंट इस कालेज के प्रोफेसरों को इतना बे फ़िक्र और सुस्त देख कुछ नहीं कहती—हम अवश्य कहेंगे इस तरह की अबतरी प्रोफेसरों की बेफ़िक्री का बाइस है पढ़ने वालों की सुस्ती या बेपरवाही नहीं है और २ कालेजों में प्रोफेसर भरपूर मेहनत करते हैं और लड़कों से भी खातिरख़ाह मेहनत लेते हैं जिस्का नतीजा जो कुछ होता है प्रत्यक्ष है ॥

## महाकवि भारवि ॥

किरातार्जुनीय के सिवाय और कोई काव्य भारवि का बनाया हुआ अब तक नहीं देखने में आया भोजप्रबन्ध के लेख से प्रगट होता है कि भारवि धारेश्वर भोजदेव के समय में हुये हैं और भवभूति बाण मयूर प्रभृति कवियों के समकालीन थे किन्तु भोजप्रबन्ध नितान्त अप्रमाणिक ग्रन्थ है और अत्युक्ति के साथ ऐसे २ खुराफाति किस्से राजा भोजकी तारीफ में लिख दिये गये हैं कि जो उन्हें नहीं कुबूल करता—जो हो भारवि के लेख का गूढ आशय प्रसिद्ध है "भारवेरर्थगौरवम्"—यह ईस्वी सन् की छठवीं शताब्दी के मध्यभाग में हुये हैं—एक पत्थर जो हाल में मिला है उस्में भारवि का नाम एक श्लोक में कालिदास के साथ दिया गया है और ५५६ का शाका उस्में लिखा है जो ईस्वी सन् का ६३४ हुआ वह श्लोक यह है—

"येनायोजि न वेश्म स्थिरमर्थविधौ विवेकिनाजिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्त्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्त्तिः"॥

किन्तु कालिदास भी तीन हुये हैं एक विक्रम के समय में, एक भोज के समय,

कोई २ कहते हैं एक कालिदास अक्बर के समय भी हुये हैं और नलोदय जिसमें केवल यमक के आगे अर्थ चातुरी का बिलकुल खयाल नहीं किया गया इसी अक्बरी कालिदास का किया लोग बतलाते हैं—भोजप्रबन्ध के लेख से भी सिद्ध होता है कि यह कालिदास जिसका नाम भारवि के साथ दिया गया है निश्चय बीच वाले कालिदास रहे होंगे—भाषा के कवियों में भी कई कालिदास हुये हैं अकबरी कालिदास कदाचित् भाषा के कवि रहे हों—भारवि की जन्मभूमि कहां थी इसका कुछ निश्चय नहीं होता अधिक सम्भव यही होता है कि यह दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे—भारवि के सम्बन्ध में यह एक प्रचलित कथानक है किन्तु कहीं इसका लेख नहीं देखा—और वह कथानक यह है—भारवि बाल्य अवस्था से बड़ा परिश्रमी और पढ़ने पढ़ाने में रुचि रखता था किन्तु पिता इसका सदा इसे डांटा करता था आलसी और सुस्त इसका नाम रक्खे था—पढ़ने में तेरा मन नहीं लगता किन्तु पण्डित मानी बनता है इस तरह की अनेक डांट डपट सुनते २ भारवि अत्यन्त उद्विग्न हो ही गया था कि एक दिन पिता ने रोज़ के दस्तूर के माफ़िक़ इसे बहुत ही झिड़का—भारवि बड़ा उदास हो मन में सोचने लगा मैं पढ़ने में इतना परिश्रम करता हूं तौभी पिता जी मुझे आलसी कहते हैं इन के कड़वे वचन और झिड़की कहांतक सुना करूं—आज रात को इन का काम तमाम करडालूं तो रोज़ की झिड़की से गला छूटे—इस तरह का बुरा खयाल मन में ठान अपने पिता के सोने के घर के पास तलवार हाथ में ले शैया के पास जा छिप रहा—रात होने पर बाप और मा दोनों खाट पर पड़े घर गृहस्थी की अनेक बात चीत करने के उपरान्त भारवि की मा बोली देखो कैसी चांदनी खिली हुई है पिता ने कहा हां वैसी ही चांदनी प्रकाशित है जैसा तुम्हारे पुत्र भारवि की बुद्धि का प्रकाश जग में छारहा है—मा ने कहा तब तुम ऐसे बुद्धिमान् लड़के को क्यों सदा डांटा करते हो कि तू कुछ नहीं पढ़ता बड़ा आलसी है—पिता ने कहा मैं उसे इसलिये डांटता रहता हूं कि अपनी तीक्ष्णबुद्धि के भरोसे रह कहीं सच्च २ आलसी न होजाय, श्रम करता रहेगा तो बड़ा भारी पण्डित होगा—दोनों की यह बात चीत भारवि सुन तलवार अलग फेक बाप के पांव पर आय गिर पड़ा और गिड़गिड़ाता हुआ बोला पिता जी मुझे क्षमा कीजिये मैंने आज तुम्हारा बध करना ठान रक्खा था मैं पापी हो चुका मुझे इस पाप का प्रायश्चित्त बतलाइये—पिता फिर चिल्लाने लगा और कहा तू बड़ा दुष्ट है तेरा मन

पढ़ने में नहीं लगता और ऐसे २ बुरे संकल्प विकल्प तेरे चित्त में उठा करते हैं जिस्से तूने पितृवध भी किया होता तुझे ब्रह्महत्या का पाप तो अवश्य ही लगा—पितृघात का प्रायश्चित्त शास्त्र में लिखा है कि इस तरह का पापी सूखे पेड़ के खोढ़र में बैठ आग लगाय उसी में भस्म हो जाय नहीं तो १२ वर्ष तक ससुरार का टुकड़ा तोड़ता हुआ गौ चराया करे—निदान १२ वर्ष के लिये भारवि ससुरार में जा टिके और गौ चराने लगे—एक दिन किसी तेहवार के कारन ससुरार के सब लोग साफ सुथरा कपड़ा पहिन तेहवार मनाने लगे तब भारवि की स्त्री ने इसके पास आय कहा तुम यहां गाय चराते हो घर में हमारा सब लोग बड़ा अनादर करते हैं सबों ने नया साफ कपड़ा पहिन तेहवार मनाया मैं तुम्हारी गरीबी से कहां से कपड़ा पाऊं सो तुम कोई ऐसी उपाय करो जिस्में यह गरीबी दूर हो—भारवि ने कहा मै यह एक श्लोक देता हूं तू इसे माघ नामक बनिया मेरा मित्र है उस्के पास गिरों रख जो रुपया मिले उस्से अपना काम चलाव और एक चिट्ठ कागज पर यह श्लोक लिख उसे दे दिया—

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्य कारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥

स्त्री ने इसे निरा खेलवाड़ समझा तौ भी किसी के हाथ श्लोक को माघ के पास भेज दिया—माघ श्लोक को देख बड़ा प्रसन्न हुआ और एक लाख रुपये पर उसे गिरों रख अपने नौकर के हाथ रुपये भारवि की स्त्री के पास भेज दिये स्त्री इस बात पर बड़े अचरज में आई और उन रुपयों को खर्च कर सुख से रहने लगी—जब भारवि के १२ वर्ष पूरे होगये तब इन ने ब्याज समेत रुपया चुकता कर माघ से अपना श्लोक लौटा मांगा पर माघ ने कहा वह श्लोक तुम हमारे हाथ बेच डालो चाहो एक की जगह दो लाख रुपये हम से लेलो किन्तु भारवि ने अंगीकार न किया और कहा इस श्लोक के विना हमारा काव्य बिगड़ता है तुम कितना ही दोगे हम न मानें गे—यह श्लोक किरातार्जुनीय के दूसरे सर्ग का तीसवां श्लोक है—यदि यह श्लोक भारवि बेंच डालते तो माघ के नाम से प्रसिद्ध होता जैसा धावक कवि ने रत्नावली नाटिका कश्मीर के राजा श्रीहर्ष के हाथ बेच डाला और रत्नावली के कर्ता श्रीहर्ष कहलाये "श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी"—माघ ने बहुत रुपये खर्च, शिशुपालवध नामक काव्य

बनवाया और वह माघ के नाम से प्रसिद्ध हुआ—माघ यद्यपि बहुत से कवियों का बनाया हुआ ग्रन्थ है पर शैली माघ और किरात की एक ही तरह की है बहुत से श्लोक तो ऐसे मिल जाते हैं कि सहज में यह फर्क नहीं हो सक्ता कि यह पद्य माघ का है कि किरात का। यद्यपि माघ बहुत से पण्डितों का बनाया है पर अधिकांश उसके श्लोक भारवि ही के हैं—

तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते च पुनर्माघे भारवेर्भारवेरिव ॥
उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

किरात से माघ को जो बहुत लोग विशिष्ट काव्य मानते हैं उसका यही कारण है कि माघ "सात पांच की लकड़ी एक जने का बोझ" के समान कई एक पण्डित और कवियों के पाण्डित्य का नमूना है किन्तु अर्थ की गम्भीरता भारवि की सी माघ में बहुत कम है और जहां है जैसा माघ के दूसरे सर्ग में देखी जाती है उतना अंश हम समझते हैं भारवि ही का है—माघ की क्लिष्ट कल्पना बहुत स्थानों में अर्थ की गम्भीरता के विना नीरस मालूम होती है फिर भी पण्डितों के पाण्डित्य की कसौटी किरात और माघ दोनों से होजाती है—

हम ऊपर लिख आये हैं दोनों काव्यों की शैली एक है किरात के पहले और दूसरे सर्ग में द्रौपदी और भीमसेन का युधिष्ठिर के प्रति उत्तेजक वाक्य वैसा ही है जैसा माघ के दूसरे सर्ग में बलदेव जी का वाक्य कृष्णचन्द्र के प्रति है—जिसके उत्तर में शान्ति और गंभीरता युक्त उत्तर किरात में युधिष्ठिर का और माघ में उद्धव का एक ही ढंग का है—माघ का अनुष्टुप्छन्द में है और किरात का उत्तर प्रत्युत्तर वंशस्थवृत्त में है किन्तु किरात का अर्थ की गंभीरता पद का लालित्य और क्लिष्ट कल्पना से रहित है—तीसरे सर्ग में किरात के, व्यास जी का आगमन और पाण्डवों को बड़ी उत्तम उक्तियुक्ति के साथ आश्वासन और अर्जुन को तपस्या के लिये भेजना, माघ के पहिले सर्ग में कृष्णचन्द्र की सभा में स्वर्ग से नारद का आगमन और कृष्ण के साथ नारद की बातचीत बहुत कुछ मिलती है—किन्तु माघ में नारद के आगमन का वर्णन विशेष कवित्वकल्पना-

पूर्ण है और किरात से उत्कृष्ट है—उपरान्त किरात के चौथे सर्ग से दसवें सर्ग तक अर्जुन का तपस्या के लिये जाना और उसी में शरत् का वर्णन अर्जुन के प्रलोभन के लिये इन्द्र की भेजी अप्सराओं का जल विहार इन्द्र कील पर्वत की शोभा आदि के वर्णन से भारवि ने अपनी कवित्वशक्ति को एक बहुत ही निराले ढंग से काम में लाये हैं—माघ के तीसरे सर्ग से बारहवें सर्ग तक कृष्णचन्द्र का सेना समेत द्वारिका से इन्द्रप्रस्थ की यात्रा का वर्णन है इसी प्रसंग में रैवतक पर्वत का वर्णन हाथी घोड़े की चाल इत्यादि का वर्णन ऋतुवर्णन वन विहार जलविहार प्रदोषवर्णन सुरतवर्णन प्रभातवर्णन इत्यादि कविता के बड़े आडम्बर के साथ किया गया है जिसे पढ़ते २ जी ऊब जाता है नीरस और फीका जंचने लगता है—माघ भिन्न २ कवियों के मस्तिष्क के नमूने का संग्रह साफ २ मालुम हो जाता है जिससे वर्णन की शृंखला भी टूट सी जाती है—प्रभातवर्णन के थोड़े से श्लोक अलबत्ता बिल्कुल नई उपज के हैं जिन्हे हम यहां पर उद्धृत करते हैं—

विपुलतरनितम्बाभोगरुद्धे रमण्याः ।
शयितुमनधिगच्छन् जीवितेशोऽवकाशम् ॥
रतिपरिचयनश्यन्निद्रतन्द्रः कथंचि ।
द्भ्रमयति शयनीये शर्वरीं किं करोतु ॥
क्षणशयितविबुद्धाः कल्पयन्तः प्रयोगा-,
नुदधिमहति राज्ये काव्यवद्दुर्विगाहे ।
गहनमपररात्रप्राप्तबुद्धिप्रसादाः,
कवय इव महीपाश्चिन्तयन्त्यर्थजातम् ॥
सपदि कुमुदिनीनिर्मीलितं हाक्षपापि,
क्षयमगमदपेतास्तारकास्ताः समस्ताः ।
इति दयितकलत्रश्चिन्तयन्नंगमिन्दु-,
र्वहति कृशमशेषं भ्रष्टशोभं शुचेव ॥
व्रजति विषयमक्ष्णामंशुमाली न याव,

तिमिरमखिलमस्तन्तावदेवारुणेन ।
परपरिभवितेजस्तन्वतामाशु कर्तुं,
प्रभवति हि विपक्षोच्छेदमग्रेसरोऽपि ॥

किरात के ग्यारहवें सर्ग में ब्राह्मण के भेष में अर्जुन की दृढ़ता की परख के लिये आये हुये इन्द्र की अर्जुन से बातचीत में भारवि ने अपनी कवित्व-शक्ति का हीर निकाल के रख दिया है माघ में इसके सानी का कोई प्रबन्ध नहीं है कहीं एक श्लोक में भी किरात का सा ओज लालित्य माधुर्य और प्रसाद माघ में नहीं आया—परिहास व्यंगोक्तियुक्त किरात के ग्यारहवें सर्ग की इन्द्र और अर्जुन की बातचीत कुमारसंभव में वटुरूपधारी महादेव की तपश्चर्यारत पार्वती के साथ बातचीत से बहुत मिलती है—अन्तर उसमें और इसमें इतना अलबत्ता कहेंगे कि कुमार में कालिदास ने निरी चोहल की कविताई किया है किरात में चोहल थोड़ा सा है और उपदेशात्मक कविता बहुत है। चोहल जैसा—

त्वया साधु समारंभि नवे वयसि यत्तपः ।
ह्रियते विषयैः प्रायो बर्षीयानपि मादृशः ॥
श्रेयसीं तव संप्राप्ता गुणसंपदमाकृतिः ॥
सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् ।

इत्यादि २८ श्लोक तक बराबर इसी तरह की बातचीत है जिसमें बीच २ उपदेशात्मक श्लोक हैं जैसा—

शरदम्बुधरच्छायागत्वर्यो यौवनश्रियः ।
आपातरम्या विषयाः पर्यन्तपरितापिनः ॥
यः करोति वधोदर्का निःश्रेयसकरीः क्रियाः ।
ग्लानिदोषच्छिदः स्वच्छास्स मूढः पंकयत्यपः ॥
मूलं दोषस्य हिंसादेरर्थकामौ स्ममापुषः ।
तौ हि तत्त्वावबोधस्य दुरुच्छेदावुपप्लवौ ॥

अभिद्रोहेण भूतानामर्जयन् गत्वरीः श्रियः ।
उदन्वानिव सिन्धूनामापदामेति पात्रताम् ॥
कोपवादः स्तुतिपदे यदशीलेषु चञ्चलाः ।
साधुवृत्तानपि क्षुद्रा विक्षिपन्त्येव संपदः ॥

इसके उत्तर में अर्जुन का वाक्य भी ऐसी उत्तेजना का है जिसे पढ़ चित्त पर बड़ा असर पैदा होता है—

अविज्ञातप्रबन्धस्य वचो वाचस्पतेरपि ।
व्रजत्यफलतामेव नयद्रुह इवेहितम् ॥
स्थित्यतिक्रान्तिभीरूणि स्वच्छान्याकुलितान्यपि—
तोयानि तोयराशीनां मनांसि च मनस्विनाम्—
ध्वंसेत हृदयं सद्यः परिभूतस्य मे परैः ।
यद्यमर्षः प्रतीकारभुजालंभं न लंभयेत् ॥
शक्तिवैकल्यनम्रस्य निस्सारत्वाल्लघीयसः ।
जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समागतिः ॥
स पुमानर्थवज्जन्मा यस्य नाम्नि पुरःस्थिते ।
नान्यांगुलिः समभ्येति संख्यायामुद्यतांगुलिः इत्यादि—

माघ में शिशुपाल की कृष्ण के साथ बातचीत किरातवेषी शिव की बातचीत अर्जुन के साथ बहुत मिलती है, पर भारवि के लेख में विशेष कविता है। अन्त के सर्गों में यमक और सर्वतोभद्र आदि विविध बन्ध भी बहुत मिलते हैं जिससे प्रगट होता है दोनों कवियों में स्पर्द्धा और लागडाट थी—असंस्कृत पाठियों को इसमें कुछ रस न मिलेगा वे हमें क्षमा करेंगे—मधु मंगल मिश्र—

## त्रिविक्रमभट्ट ॥

पद २ में अद्भुत अनोखी नई छटा दरसाने वाले इस कवि के नाम को भी बहुत लोग न जानते होंगे—भंगश्लेषात्मक सरस कल्पना जैसी त्रिविक्रम की देखी गई वैसी प्राचीन या आधुनिक किसी कवि की नहीं सूझी—जिसके जन्म कर्म को

किम्बदन्ती इस तरह पर प्रसिद्ध है—दक्षिण के एक नगर में सकलशास्त्र पारंगत राजपूज्य देवादित्य शर्मा नाम का कोई ब्राह्मण था; लड़कपने ही से अनेक अशिष्ट निन्दित कर्म में प्रवृत्त, निपट मूर्ख, त्रिविक्रम नाम का उसका पुत्र हुआ—देवादित्य राजा के दानाध्यक्ष थे एक समय देवादित्य किसी काम से परदेश गये थे इसी अवसर में कोई बाहरी पण्डित ने राजा से आके कहा, राजन् ! किसी विद्वान् पण्डित से हमारा शास्त्रार्थ कराइये—राजा ने देवादित्य को बुलवाया और देवादित्य को घर में न पाय उसके पुत्र त्रिविक्रम को शास्त्रार्थ के लिये बुला भेजा—त्रिविक्रम अपने को मूर्ख समझ बहुत घबड़ाया और अत्यन्त खिन्न हो सरस्वती देवी की प्रार्थना करने लगा "हे भगवती मुझ मूर्ख पर कृपा कीजिये आज यहां आये हुये नवीन पण्डित से आपके भक्त की हार हुई तो संसार में बड़ा अपयश होगा इस लिये ऐसा अनुग्रह कीजिये कि मैं शास्त्रार्थ में विजय पाऊं" ॥ इस तरह पर सरस्वती की उस मूर्ति के सामने जिसकी इसके बाप नित्य आराधना करते थे यह बहुत गिड़गिड़ाया सरस्वती देवी प्रकट हो बोली "जबतक तुम्हारे पिता परदेश से न आवें गे तब तक हम तुम्हारे मुख में बसूं गी"—इस तरह पर यह त्रिविक्रमभट्ट सरस्वती से वर पाय, राजसभा में जाय, अनेक शास्त्रार्थ के उपरान्त उस आगन्तुक पण्डित को वाद में जीत, राजा से बहुत कुछ पारितोषिक पाय, हाथी पर सवार अपने घर लौटा; तब इस ने सोचा जब तक पिताजी नहीं लौटते तब तक सरस्वती मेरे मुख में बसैंगी तो मैं अपना यश संसार में चिरस्थायी रखने को कोई प्रबन्ध रचूं—ऐसा निश्चय कर पुण्यश्लोक राजा नल के चरित्र पर लक्ष्य कर गद्यपद्यात्मक नलचम्पू नाम का प्रबन्ध रचा—यद्यपि दो एक चम्पू त्रिविक्रमकृत और छपे हुये पाये जाते हैं पर नलचम्पू के से पाण्डित्य का कहीं उनमें लेश भी नहीं है। इससे प्रगट होता है कि सरस्वती के वरदान का किस्सा कदाचित् सत्य हो नहीं तो क्या कारण कि एक ही कवि के बनाये हुये दो ग्रन्थ एक में अद्भुत विच्छिति विशेष, दूसरे ग्रन्थ का लेख अत्यन्त साधारण—सात दिन तक इसका पिता परदेश रहा उसी अरसे में सात उच्छ्वास नलचम्पू का सात दिन में रचा गया उपरान्त कवित्व की वह शक्ति इसे न रही इसलिये इसे खण्डित छोड़ दिया—यद्यपि चम्पू जहां तक छपे हुए देखे जाते हैं ५० के ऊपर होंगे और अब तक नये २ बनते भी जाते हैं अभी हाल में बालकृष्ण चम्पू जीवन जी गोस्वामी के नाम से जन्मान्ध पण्डित गट्टूजी की सहायता से बन कर बम्बई से प्रकाश हुआ है—पर

ये सब चम्पू क्लिष्ट समास और नीरस कठिन संस्कृत की कक्षाओं से भरे हुये कोई ऐसे नहीं हैं कि विद्वज्जन मानस में मराल की नाईं शोभा पाते चम्पूओं में केवल दो प्रशंसा के योग्य हैं—एक कवि कर्णपूरकृत "वृन्दावन चम्पू" दूसरा त्रिविक्रमकृत यह "नल चम्पू" जो अपने अलौकिक लेख से काव्यरसवासनापूर्ण सहृदय के हृदय को अपनी ओर खींच लेते हैं—इन दोनों में भी यद्यपि यमक आदि कई बात "वृन्दावन चम्पू" की उत्कृष्ट हैं किन्तु भंगश्लेष आदि कई गुणों से "नल चम्पू" को नहीं पाता इससे भी निश्चय होता है कि सरस्वती का कवि की जिह्वा पर आकर बास करने का कथानक कदाचित् सत्य ही हो क्योंकि ऐसा एक उत्कृष्ट काव्य बिना देवता की कृपा के नहीं बन सकता फिर दूसरा ग्रन्थ उसी कवि का लिखा हुआ उस तरह का नहीं पाया जाता इससे भी उक्त किम्वदन्ती दृढ़ होती है—अब यह कवि किस समय हुये इसकी मीमांसा की जाती है तो और २ कवियों की तरह त्रिविक्रम के भी ठीक समय का कुछ पता नहीं लगता किन्तु "नलचम्पू" के प्रथम उच्छ्वास में इन्हों ने बाणभट्ट का नाम दिया है और भोजराज कृत सरस्वती कण्ठाभरण में एकावली अलंकार का उदाहरण नलचम्पू के छठवें उच्छ्वास का उनतीसवां श्लोक दिया गया है इससे निश्चय होता है त्रिविक्रम बाणभट्ट के उपरान्त और भोजराज के पहले हुये और भोजदेव बाण के ३०० वर्ष बाद हुये हैं—चम्पू किस प्रकार का काव्य होता है इसके लिखने की कोई आवश्यकता नहीं—भाषा के काव्यों में चम्पू नहीं है न किसी दूसरी भाषाओं में चम्पू के ढंग पर काव्य का कोई ग्रन्थ है चम्पू केवल संस्कृत ही में लिखे गये हैं जिन्हों ने कुछ भी काव्यों के पढ़ने पढ़ाने की ओर रुचि किया है वे जानते हैं कि चम्पू किस तरह का काव्य होता है—अब यहां पर कुछ श्लोक नलचम्पू के बानगी की तरह उद्धृत करते हैं जिससे इस कवि की लोकोत्तर कवित्व शक्ति की टटोल हमारे संस्कृतज्ञ पढ़ने वालों को हो जायगी—

प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणाः ।
भवन्ति कस्यचित्पुण्यैर्मुखे वाचो गृहे स्त्रियः ॥
किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः ।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥

अप्रगल्भाः पदन्यासे जननीरागहेतवः ।
सन्त्येके बहुलालापाः कवयो बालका इव ॥
अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा—
ब्राह्मीव दौर्जनी संसद्वन्दनीया समेखला ॥
निश्चितं स सुरः कोपि न कुलीनः स मे मतिः ।
सर्वथा सुरसंबद्धं काव्यं यो नाभिनन्दति ॥
सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सकोमला ।
तस्मै नमः कृता येन रम्या रामायणी कथा ॥
जानन्ति हि गुणान्वक्तुं तद्विधा एव तादृशाम् ।
वेत्ति विश्वंभरोभारं गिरीणां गरिमाश्रयम् ॥
भवन्ति फाल्गुने मासि वृक्षशाखा विपल्लवाः ।
जायन्ते न तु लोकस्य कदापि च विपल्लवाः ॥
भूमयो बहिरन्तश्च नानारामोपशोभिताः ।
कुर्वन्ति सर्वदा यत्र विचित्रवयसां मुदम् ॥
ब्रह्मण्योपि ब्रह्मवित्तापहारी, स्त्रीयुक्तोपि प्रायशो विप्रयुक्तः ।
सद्वेषोपि द्वेषनिर्मुक्तचित्तः, को वा तादृक् दृश्यते श्रूयते वा ॥
आकारः स मनोहरः स महिमा, तद्वैभवं तद्वयः ।
सा कान्तिः स च विश्वविस्मयकरः, सौभाग्यभाग्योदयः ॥
एकैकस्य विशेषवर्णनविधौ, तस्याः स एव क्षमो ।
यस्यास्मिन्नुरगप्रभोरिव भवे, जिह्वासहस्रद्वयम् ॥
यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकचित्तता ॥

विवेकः सह संपत्त्या विनयो विद्यया सह ।
प्रभुत्वं प्रश्रयोपेतं चिह्नमेतन्महात्मनाम् ॥ इत्यादि

## जात्यन्तरपरिणाम–

पातंजल योग सूत्र के चतुर्थ पाद का दूसरा सूत्र है "जात्यन्तरपरिणामः प्रकृत्यापूरात्" एक जाति के जीव के शरीर और इन्द्रियों का दूसरे जाति के जीव के शरीर और इन्द्रियों में परिणत हो जाना जात्यन्तर परिणाम है जिस्के होने का प्रकार यह है कि मनुष्य के शरीर और इन्द्रियों के गठन की जो सामग्री है वह नई भरते २ भर आती है और पुराने शरीर और इन्द्रियों के गठन को निकालते २ निकाल देती है जिस्से पुरानी जाति का आकार अन्तर्हित हो जाता है और उस्के स्थान में नई जाति के आकार का सन्निवेश हो जाता है–योग-वाशिष्ठ में लिखा है "आम्रएव दशा मेति सहकारी शनैः शनैः" साधारण आम धीरे २ उत्कृष्ट आम हो जाता है–योगवाशिष्ठ निर्वाणप्रकरण अध्याय १२५ श्लो–१८ की टीका से जाना जाता है कि किसी २ जीव के शरीर के अवयवों से उसी जाति के भिन्न २ व्यक्ति के शरीर हो सक्ते हैं–भारत आदि. पर्व अध्याय १०४ श्लोक ७ और ८ की टीका में प्रसिद्ध पण्डित नीलकण्ठ ने लिखा है–

"दावाग्निदग्धा कदली काण्डादपि वेत्राङ्कुरोत्पत्तिदृष्टेः–
श्वमस्तके न्युप्तगोधूमयावनालादेःपलाण्डुलशुनोत्पत्तिदृष्टेः"–

अर्थात् दवाग्नि से जले केले के खंभे से भी बेत का अङ्कुर उत्पन्न होते देखने में आता है और कुत्ते का मूड़ गाड़ के उस्के ऊपर गेहूं या जोंधरी इत्यादि का बीज बोने से प्याज और लसुन के अंकुर उत्पन्न होते देखने में आते हैं–दावाग्नि दग्ध कन्दली के बीज से बेत के अंकुर की उत्पत्ति वेदान्त परिभाषा के टीकाकार ने भी स्वीकार किया है–

विलाइत के डारविन और स्पेन्सर आदि विद्वानों ने जात्यन्तर परिणाम विषय में बहुत कुछ परीक्षा की है अनुमान होता है कि संस्कृत के ग्रन्थों के जो ऊपर वाक्य दरसाये गये हैं वे उक्त महाशयों के परीक्षा गोचर जात्यन्तर परिणाम ही से सम्बन्ध रखते हैं–गदहा और घोड़ी के योग से खच्चर, गोह और सांप के

योग से बिसखपरा पैदा होता है यह बात प्रसिद्ध है तो जात्यन्तर परिणाम की शक्ति से गौ में गोकर्ण नाम ब्राह्मण और भैंस में किसी असुर से महिषासुर की उत्पत्ति अत्यन्त असंभव न होगी—समुद्र में एक प्रकार का कीटाणु पाया जाता है जिसके देह के जितने टुकड़े किये जांय उतने उसी जाति के जीवित देह सद्यः बन जाते हैं और मक्षिका की विष्ठा गिरते ही मात्र तुरन्त भोडिला कीड़ा बन जाता है यदि ये बातें सिद्ध और प्रत्यक्ष हैं तो रक्तबीजों की उत्पत्ति और भारद्वाज के यज्ञ में उत्पन्न प्रतर्दन का तुरन्त १३ वर्ष की अवस्था के देह का हो जाना भी असम्भव नहीं है—प्रतर्दन की कथा भारत के अनुशासन पर्व के तीसवें अध्याय में है—कश्यप की कद्रु विनता सुरसा आदि स्त्रियों में खग मृग सर्प आदि की उत्पत्ति का क़िस्सा, डारविनसाहब का अनुमान बानर से मनुष्यरूप जात्यन्तर परिणाम की अपेक्षा क्या अधिक असंभावित नहीं है? सुद्युम्न जो पुरुष था वह इड़ा नाम की स्त्री हो गया जिससे चन्द्रवंशी राजा उत्पन्न हुये यदि यह बात विश्वास के योग्य है तो जात्यन्तर परिणाम के क्रम पर बानर की देह में तरक्क़ी होते २ मनुष्य हो गया इस बात के विश्वास करने में क्या आपत्ति है? अंजना में बानर की जाति हनुमान पैदा हुये इस प्रकृतिविरुद्ध बात के मानने में ज़रा भी पशोपेश नहीं होता तब बानर से मनुष्य की पैदाइश में क्यों चिढ़ते हो? रामायण में बालि सुग्रीव के क़िस्से से छिपा नहीं है कि वे लोग उस अवस्था के नरबानर थे जिस अवस्था में बानर जाति नर जाति की अवस्था में आ रही थी। बहुत से जीवों को एक ही समय और एक ही स्थान में समानभाव से ऐसे कर्म भोगने पड़ते हैं जिससे उन २ जीवों के अन्तःकरण में एक ही प्रकार की इच्छा और पूर्वाभ्यासजन्य संस्कार का उदय होता है और उन कर्मों के भोगने के निमित्त उन सबों का एक ही भोगायतन शरीर बन जाता है—जैसा बहुत से दीपकों को एक में मिला देने से एक दीपक बन जाता है ऐसे ही बहुत से अन्तःकरण भी एकत्र समुदित हो के एक अन्तःकरण बन जाता है—इसी तरह एक अन्तःकरण विभक्त हो के अनेक अन्तःकरण बन जाते हैं—योगी लोग योगविद्या के बल अपने एक अन्तःकरण को अनेक अन्तःकरण में परिणत कर सकते हैं जब उन को ऐसे कर्म भोगने रहते हैं जो एक ही समय परस्पर विपरीत भिन्न २ स्थान में भोगने योग्य जान पड़ते हैं—एक अन्तःकरण विभक्त हो के जब अनेक अन्तःकरण में परिणत होता है तब उसका भेद अनेक उपाधियों में बंटकर एक ही जीव भिन्न २ अ-

न्तःकरण का अभिमानी हो जाता है इसका उदाहरण यथा—दिति ने इन्द्र के घात के लिये अपने गर्भ में कश्यप से पुत्र मांगा था—वरस भर बराबर अनेक संयम करती २ थक कर एक दिन कुबेला में सांझ को सोगई थी इसी अवसर में इन्द्रने अपने योगबल से दिति के गर्भ में प्रवेश कर उस गर्भ के सात टुकड़े कर दिये पर वह सातों टुकड़े जीते रहे तब एक २ के सात २ टुकड़े और किये और वे सातों टुकड़े भी जीते हुये दिति के ४९ पुत्र मरुत् के नाम से प्रसिद्ध हुये—और भी इसके बहुत से उदाहरण हैं जैसा वरगत का सोर पृथ्वी पकड़ लेने से अलग स्वच्छन्द पेड़ बन जाता है—इक्षु काण्ड दूब इत्यादि अनेक उद्भिज्जों के काण्ड अथवा शाखा पृथ्वी में गाड़ देने से उन्में नया अंकुर फूट निकलता है जिस्से बोध होता है उन के काण्ड और शाखाओं में जीवनी शक्ति विद्यमान है—मूल में उन उद्भिज्जों के बीजरूप जीव एक था उस्के अवयव काण्ड अथवा शाखा उपाधिभेद से उस जीव का एकत्व अनेकरूप में परिणत होगया—यही बात रक्त-बीज के सम्बन्ध में सुघटित होना क्या असंभव है ? जिस्का मूल बीजरूप जीव दूर्वा काण्ड आदि उद्भिज्जों के समान एक २ विन्दु में अलग २ उपाधिरूप से परिणत हो सकता है—तो सिद्ध हुआ जात्यन्तर परिणाम की कल्पना «थिओरी» जैसा डारविन ने प्रकट किया बिल्कुल नई नहीं है हमारे प्राचीन आर्यों का ध्यान भी इस्पर जा चुका था जिस्का पता पुराणों में बहुत स्थानों में पाया जाता है पर उन्हे ऐसे अलंकारिक वर्णन में बांधा है कि निरा किस्सा कहानी हो गया और इस नई रोशनी के ज़माने में लोगों का विश्वास उस्पर से क़िस्सा समझ उखड़ गया है—पं—स—प्र

## कट्टर सूम की एक नक़ल ॥

"अर्थोस्तु नः केवलं, येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाःसमस्ता इमे"

साह खेमकरन (पंखा हांकते २) हाय २ मारे गरमी के फुंके जाते हैं (जीभ से होठ चाटते ) प्यास ऐसी लगी है कि हलक सूखा जाता है (आकाश की ओर देख ) इतना दिन चढ़ आया १० बजते होंगे अबहिन तक पण्डितो जी नहीं आए घर से सन्देसा आया है कि आज वैशाख की पूनो है पितरन के नाम घटदान किए होइ है—भिखवा कहार को छदाम की ककरी लाने को चौक भेजा

है वह भी न जानिए क्या करने लगा जो अब तक नहीं लौटा, गृहस्थी महाजंजाल है रोज उठ एक न एक खर्च लगा ही रहता है आज कुछ नहीं रहा यही जी की सांसत आ लगी, दमड़ी का एक झज्झर मंगाया है पावसेर सत्तू आधा डढबल दक्षिणा कहां तक पण्डित जी को न देना पड़ेगा तौ भी हमे लोग सूम कहते हैं अभी एक लड़की का व्याह कर चुके हैं दूसरी मुह लगे जूझती है कहां तक किफायत करें–दो महीने से देखो धोती फटी है वही एक धोती में गुज़ारा करते हैं सेवाय सूखी रोटी के दमड़ी का घी ज़हर बराबर समझते हैं–तब तो निबाह होता है क्याकरें रोज़गार सब मारा ही पड़ा है जब से लोट चली हुंडी पुर्जा को कोई पूछता ही नहीं धूर की रस्सी बट बट काम चलाते हैं तिस पर भी नहीं जमा बटुरती तो अब कहां तक कृपणता करें ।

## (डांकख़ाने का एक चपड़ासी)

चप–साह जी तुम्हारे नामकी बैरङ्ग चिट्ठी है दो आना पैसा दो और चिट्ठी लो ॥

खेम–(चिट्ठी कई बार उलट पुलट देख मोहर बचाय लिफाफा खोलने लगा )

चप–हां हां यह क्या करते हो बिना महसूल दिए चिट्ठी मत खोलो ॥

खेम–हां हां सबर करो महसूल देंगे ॥

चप–नहीं २ बिना महसूल दिए चिट्ठी खोलने का हुकुम सरकार से नहीं है ।

खेम–ज़रासी चिट्ठी का दो आना महसूल हमने ऐसा अन्धेर कभी नहीं सुना कुछ सोना चांदी तो इसमें होही गा नहीं, बिना सोचे समझे किस ने यह नादानी का काम किया कि एक तो बैरंग चिट्ठी भेजा उस में भी ऐसी भारी कर दिया कि दो आना महसूल देना पड़ता है ॥

चप–अच्छा तो न लो लाओ हम फेर देंगे ॥

खेम–सुनो हमारी तुम्हारी एतने दिनो की जान पहचान क्यों ज़रासी बात के लिए बे मुलहिज़े होते हो–खोलने दो देखें इस में क्या है जो कोई बात मतलब की होगी तो दो आने दे हीं गे नहीं तो ऐसी हिकमत से बन्दकर देंगे कि कोई न जान सकेगा ॥

चप–न कोई जानो भगवान् जो हमारे ईमान धर्म का साक्षी है वह तो जानता है ॥

खेम–उः तुम भी उस को जानने के लिये बहुत सी बातें हैं वह सब बात कहां तक जान सकता है क्या यही बात उस को जानने के लिये है ॥

चप–यह मत समझो कि वह कोई बात नहीं जानता तुम्हारे सिर में केतने बाल हैं यह भी वह गिने बैठा है बिना उस की मर्ज़ी के पेड़ की एक पत्ती तो हिल सकती ही नहीं फिर और किस की कहें शायद इस में किसी ने तुम्हारे नाम की कोई हुंडी भेजा हो ॥

खेम–भाई ऐसा कहां हमारा भाग, जो किसी ने हुंडी भेजा होता तो क्या दो आने महसूल के देते उसे शरम आती थी ॥

चप–शायद तुम्हरे लड़के की चिट्ठी हो बहुत दिन उसे घर से गए बीत गया है ॥

खेम–तो क्या वह यह नहीं जानता कि हमारे बाप के पास कहां से जमा आगई जो हम बेरंग चिट्ठी भेजते हैं यह तो कोई राजाबाबू से हो सकेगा कि दो आने चिट्ठी का महसूल दे । हम कहां से पावें दो आने में हमारी दो दिन रोटी चलेगी तुम ले जाव हम न लेंगे ( चिट्ठी लौटा देता है )

(उस की लड़की विनता अचानक वहां आ जाती है और उसे लौटते देख, खेम करन से )

विनता–बाप ! यह चिट्ठी वाला क्यों लौटा जाता है ? क्या वह चिट्ठी तुम्हारे नाम की नहीं है ? ।

खेम–है तो पर दो आने महसूल के कहां से आवें ? ।

विन–(स्वगत) हाय ऐसा बाप ! शत्रु को भी न मिले कदाचित् यह चिट्ठी भैया के पास से न आई हो इसी के भूमपने से तङ्ग आकर भाई घर छोड़ कर चला गया पर हम कहां जांय ( प्रकाश) बाप ! तो महसूल हम दे देंगी । ( चिट्ठी वाले को फिर बोलाती है और उससे चिट्ठी ले अपने भाई का हस्ताक्षर पहिचान ) यह अक्षर तो भैया के हैं ( बाप से ) हा धिक्कार है केवल दो आना खर्च हो जाने के कारण अपने निज लड़के की चिट्ठी जिस का १० वर्ष से कुछ पता नहीं है कि कहां चला गया बाप ! तुम फेरे देते हो ( चपरासी से ) तुम हमारा विश्वास करो कल हम पैसा कहीं से कर रक्खेंगी तुम आकर ले जाना ।

चप–इस की कुछ चिन्ता नहीं है पर इतना कहे देता हूं कि फिर न फेरूंगा तुम्हारे विश्वास पर चिट्ठी छोड़े जाता हूं नहीं यह छोकरा तो बड़ा कजाक है मैं कभी न मानता (जाता है)

खेम–भला तू पैसा कहां से पावेगी जो देगी महसूल–ऐसी फ़ज़ूल खर्ची में हमारा निबाह काहे को होगा–

विन–मैं पिसौनी कर पैसा देदूंगी दो आना कौन बड़ी बात है—तुम खातिर जमा रक्खो तुम्हे न देना पड़ेगा।

खेम–बेटी यह आदत अच्छी नहीं है जो पैसा तुम मेहनत कर कमाओ वह हमे दे डाला करो तुम अभी जानती नहीं हो पैसा कैसी मेहनत से मिलता है दांतों पसीना आ जाता है—खैर अब की बार तो जो कुछ हुआ सो हुआ आयन्दा से चौकसी रक्खो कि ऐसी २ फ़िज़ूल खर्चियां न करा करो–बेटी मैं तुम्हारे ही फ़ायदे के लिए कहता हूं इन्हीं बातों से मैं तुम्हारे भाई से नाराज़ रहता था सो तुम ने भी उसी राह पर क़दम रखना शूरू किया अच्छा तो पढ़ो इस चिट्ठी को।

वि०–(लिफ़ाफ़ा खोल पढ़ने लगी) प्यारी बहन! तुम्हे याद होगी कि १० वर्ष के लग भग हुए जिस समय मैं अपने बाप के सूमपने और किफ़ायती मिज़ाज से तंग आकर घर छोड़ा था तब मैं यहां तक लाचार हो गया था कि मेरे तन में कपड़ा और पांव में जूती तक नहीं थी और भीख मांगते २ यहां बम्बई तक किसी तरह पहुंचा (विनता–आंख में आंसू भर सिसकती हुई आंसू पोंछते२ स्वगत) हाय ऐसे बाप से तो बे बाप का होना अच्छा जिस को अपने पेट के लड़के से भी रूपया अधिक प्यारा है॥

खेम–हां आगू पढ़ो–

वि–मैंने तो यही समझा था कि सारा संसार मेरे बाप ही का सा है पर यह बात देखने में न आई बहुत से कितने निष्कारण मित्र और दयाशील पड़े हैं पहिली ही मंज़िल में मैं आकर एक ज़मीदार के द्वारे पर टिक रहा जिस ने मुझे अतिथि जान मेरी ऐसी खातर किया कि मुझे ऐसा अच्छा भोजन कभी बाप के घर नहीं मिला था–

खेम–( स्वगत ) अच्छा हुआ जो मैंने दो आने पैसे व्यर्थ नहीं गंवाया–

बहन–इस चिट्ठी से तुम यह मत समझो कि मुझे बाप से प्रेम और उन में भक्ति नहीं है किन्तु ऐसी २ कड़ी बातें इस लिये लिखता हूं कि इसे बांच या सुन उन के जी पर कुछ तो असर होगा जिस्से उन का कठोर हृदय

कोमलता ग्रहण करे और यह ख्याल जो उन के जी में समाना है कि संसार में जो कुछ है सो रुपया है "मर जैहों तोहि न भुजैहैं।" इसे अलग करें–खैर दूसरे दिन वहां से चल दिया राह में कोई दिन मुझे दिन और रात चलते ही बीतता था जङ्गल पहाड़ नाघता डांकता जब बहुत थक जाता था तब किसी पेड़ के नीचे सो रहता था कभी मारे भूख के पेटाग्नि जब नहीं सहार सकता था तब चोरी करने को जी चाहता था अन्त को किसी तरह लुढ़कते पुढकते यहां तक पहुंचा कई दिनों तक मैं यहां धनियों के कई एक सदावर्त्त हैं उन में से अन्न मांग लाता था और रूखे सूखे अन्न से किसी तरह पेट भर रात को कहीं पड़ रहता था ( विनता आंख में आंसू भर स्वगत) हाय जिस के घरमें भगवान् का दिया सब कुछ है उस की ऐसी दशा हो ॥

खेम०–(क्रोध से ) बैठे बैठाए बलवाई सूझी हराम का खाना और गुर्राना–भला मालूम तो पड़ा कि कैसी मसक्कत से खाने को मिलता है बचा ने समझा था कि घर के बाहेर चले जाने से कहीं खजाना रक्खा है खोद लावेंगे विनता यह पत्र तुम्हारे लिये एक शिक्षा है जो सम्हल कर न चलेगा उस की यही दशा होगी अच्छा आगे पढ़ो–

विन०–बस बस बाप अब मुझ से नहीं पढ़ा जाता क्या इससे तुम्हारे कठोर चित्त पर कुछ असर न हुआ–

खेम–असर कैसा ! यह उसी का फल है जो बे हने धुने का खाने को मिलता था तौ भी दूध भात की परोसी थाली में लात मारा–

विन०–बाप धिक्कार है ऐसे खाने को कि लहू पानी कर तुम खाने को देते हो कब तुमने उसे जूड़े जी खाने को दिया था विना फिटकार किए न तुम ने उसे कभी पेटभर खाने को दिया न कपड़ा न ठंडे पेट कभी उससे मुहभर बोले–( स्वगत ) न जानिए यह सब जमा किस के काम आवेगी ऐसे बाप भए तो क्या न भए तो क्या ॥

खेम–बेटी तुम समझती नहीं हो लड़कई ही से बहुत खरच पातकी बान जिस की पड़ जाती है तो आगे चल कर भी उसकी वैसी ही आदत पड़ी रहती है तब वह आदमी आवारा हो जाता है–इससे बहुत खर्च करने की बान

रखना अच्छा नहीं होता सदा दबे हाथ ख़र्च किया करे चार पैसे की जगह एकपैसा ख़र्च करे—जो काम एकपैसा में होता हो उसे जहां तक हो सके तहां तक छदाम में करे—गेहूं की रोटी उर्द की दाल दुकरा भर घी छोड़ और कोई क्या मोती चुगता है, अब कैसे खाने को दिए होता है, हम कहां से पाते जो रोज़ उठ कर उसे दूध मलाई खिलाया करते, तुम देखती हो हम कैसे ग़रीब हैं बनिज व्योपार कुछ करते नहीं न हम से कोई तरह का काम काज हो सके क्योंकि हम जौन ही काम करना विचारते हैं उसी में पहले कुछ ख़र्च देखते हैं पीछे चाहो नफ़ा भी हो।

विनता—हां हां हम जानती हैं जैसे ग़रीब तुम हो; बाप तुम जौ के दरिद्र अलबत्ता हो हम दोनों बड़े प्रसन्न होते जो तुम ग़रीब रहते फिर काहे का गिल्ला करते तन मन से तुम्हारी रखवाली और पालन पोषण करते—बाप! निश्चय जानो तुम्ही ने हमारे भाई को ऐसा दबासा कि वह तुम्हारे कुलच्छन से घर में न रहा।

खेम—बड़ी बज़्ज़ात लड़की है बांच बांच चिट्ठी, न तू बांचे चश्मा ला दे हम बांच लें—

विनता—(फिर चिट्ठी बांचने लगी) प्यारी बहन कितने ऐसे अकारण मित्र दयावान् मनुष्य पड़े हैं जिन से यह वसुधा ठौर २ अलंकृता है—एक दिन एक बुड्ढा मुझे मिला वह मेरा सब हाल पूछ उसे कुछ दया आई तो एक पारसी सेठ की कोठी में अपनी ज़मानत पर १५) महीने का मुझे नौकर रखवा दिया—उस समय मुझे ऐसा सुख हुआ मानो जैसा कोई अन्धेरे में पड़ा टटोलता फिरता हो एकबारगी रोशनी मिलजाने से सब उसे सूझने लगे—छही महीने में मैं अपनी दियानतदारी और कारगुज़ारी से सेठ की कोठी का ख़ास मुनीम कर दिया गया अब मुझे ३०) महीना मिलता है और यह दोसौ रूपए जो मैंने अपने मामूली ख़र्च से बचा रक्खा है हुंडी करा तुम्हे भेजता हूं इस में से आधा बाप को देना आधा अपने पास रखना।

खेम—( विस्मित हो ) क्या! क्या! फिर तो इसे पढ़ २००) भेजा है! नहीं तो जा उस कोठरी में मेरा चश्मा रक्खा है उठाला हमी पढ़ें; २००) में आधा तो मेरा हुई है॥

आधा अपना हिस्सा भी मेरे पास रखदे, तेरे पास रहेगा तो खर्च हो जायगा–तू मुझे नाहक्क को नाम रखती है यह मेरे ही हरदम कोड़ा करने का फल है कि अब वह तीस रुपया महीना कमाने लायक़ हो गया––अच्छा आगे पढ़–

विनता–अपना रुपया हरगिज़ बाप को न देना उन के दम पुचाड़े में आय, दे डालोगी तो पछताओगी––बहन! हम लोग बड़े अभागे हैं कि मा हमारी लड़कपने ही में सुरधाम सिधार गई—मा जो जीती होती तो कहां तक हम लोगों की छोह उन्हें न होती खैर पिता जी से हमारी सलाम कह देना और यह चिट्ठी उन्हें पढ़ के सुना देना–

खेम–(स्वगत) यह रुपया इस्से किसी तरह ले लेना चाहिये इसके हाथ में रुपया रहेगा तो यह बराबर खर्च करती रहेगी मुझ से इसकी शहखर्ची कैसे देखी जायगी––कौनसी ततबीर सोचैं कि किसी तरह इसके हाथ से यह रुपया निकल आवे––अभी तक यह मेरे आधीन थी पास कुछ न रहने से मैं जिस तरह इसे रखता था रहती थी अब यह मन मानता खरच करेगी अफ़सोस खर्च यह करेगी जो मेरा कुढ़ेगा क्या करूं लाचारी है–

सूमड़े की यह एक नक़ल है हमारे पढ़ने वाले इसे निरी कल्पना न समझें बरन इस धरती को बड़ा बोझ न जानिये कितते ऐसे कदर्य इस संसार में पड़े हैं जिन को तन मन यहलोक परलोक जो कुछ है सब रुपया है "मरजैहैं तोहि न भुजैहैं" इस कहावत को चरितार्थ करते धौंकनी के समान सांस लेते "जीवन्नपि मृतोपम हैं"–

## सुनीतितत्वशिक्षा की आवश्यकता–

हमारे नवयुवक पूर्ण विद्वान् हो कालेज छोड़ने पर जब संसार के कारबार में लगते हैं तो बहुधा उन्में के इस बात को मालूम करते हैं कि किस अंश में कहां तक कितनी त्रुटि उन्में है और जिस्में अपने को कम पाते हैं उस कमी का उस तालीम से कोई सरोकार नहीं है जो उन्हें कालेज के प्रोफ़ेसरों के द्वारा दीगई है–अर्थात् पढ़ाने वाले छात्र के बुद्धितत्व के विकाश "इन्टेलेक्चुअल-डिविलपमेंट" का ठीका अलबत्ता लिये रहते हैं उस्के "मारल–डिविलपमेंट"

बाहरी बर्ताव चाल चलन और आभ्यन्तरिक चरित्र शील संकोच इत्यादि के सुधार का जिम्मा वे अपने ऊपर नहीं लेते—हां उसका अंकुर चित्त में उत्तम शिक्षा के द्वारा जमा देते हैं जिसका विकाश छात्र की आत्मशिक्षा सेल्फइजुकेशन के आधीन है—जिस कदर मेहनत उस्ताद लोग लड़कों के पढ़ाने में करते हैं जैसा खर्च तालीम का इस समय बढ़गया है और जैसी तकलीफ विद्यार्थी के अन्तरात्मा को इमतिहान के दिनों में उठाना पड़ता है उसका जोड़ कदाचित नरक की यातना ही कही जा सक्ती है—इस बात का खयाल कर अचरज होता है कि इस सब का परिणाम और उद्देश्य केवल ऊंची से ऊंची डिगरी हासिल कर लेना है चरित्र शोधन पर कभी एक क्षण के लिये भी ध्यान नहीं दिया जाता—हम तो मनुष्य में विद्या के कारण जो लालित्य आता है उससे बढ़ कर चरित्र-शोधन के अनोखे सौन्दर्य को कहेंगे क्योंकि किसी बड़े विद्वान् का संपर्क पाय, हमारा अन्तरात्मा सङ्कुचित सा होजाता है—उस ने हमारे साथ अपने सम्पर्क से हमे क्या दे दिया सिवाय इसके कि अपनी लियाक़त के बोझ से हमे दबा दिया—इसी के विरुद्ध शुद्धचरित्र मनुष्य की सत्प्रकृति का विकाश हरतरह की भलाई जो उसमें पाई जाती है उसका अनुभव कीजिये तो अपने सम्पर्क से प्रसाद की भांत वह हमारे चित्त को बाग़ २ कर देता है—कोई महात्मा साधु हमे किस लोक की सम्पत्ति देदेते हैं किन्तु उन के पास से उठ के आइये तो मालूम होता है कि हम कुछ पूंजी बांध लाये—

"मारल—डिविलपमेंट" चरित्रशोधन के दरजे नहीं देखे जाते जैसा सुशिक्षा के बी—ए, एम—ए—आदि जुदे २ दरजे हैं—इसी तरह मनुष्य के चरित्र के भी दरजे होने चाहिये चरित्र के सम्बन्ध में न दरजे बदरजे की शिक्षा ही कायम की गई है जिस्पर चढ़कर जिज्ञासु चरित्रशोधन के ऊंचे तत्वों तक पहुंचे—विद्या के सम्बन्ध में कभी किसी को शक नहीं होता कि इस दरजे की योग्यता प्राप्त करने की सीढ़ी नहीं है तब इसी तरह ऊंचे दरजे के चरित्रशोधन के तत्वों को जानने के लिये कोई रास्ता अवश्य होना चाहिये—हमारे इस लेख का यही उद्देश्य है कि क्यों इस तरह के कोई रास्ते पर किसी की दृष्टि नहीं जाती—चरित्रशोधन शिक्षा का यह संसार ही एक ऐसा बड़ा भारी क्षेत्र है कि जिसका ओर छोर नहीं है—संसार के सब लोग अलग २ एक २ इसकी पुस्तक हैं हमारे मित्रवर्ग बन्धुबान्धव कुनबेवाले जान पहचान सब उस पुस्तक की एक २

पड़ि हैं—समय २ उन के साथ हमारा उलटा सीधा वर्त्ताव उस पुस्तक की एक २ फक्किकायें हैं गूढ प्रश्न हैं गोरखधन्धा हैं प्रोबलेम हैं कि जिन के सुलझाने या साफ करने में दांतों पसीने आते हैं—प्रतिक्षण हर लहमें यह हमे ऐसी शिक्षा देता है कि हरदम उस्में हमारे पास या फेल होने का खटका लगा रहता है—शुद्ध चरित्र "प्यूरमोरालिटी" महोज्ज्वल रत्न के जो भण्डार हैं और जो इस रत्न के परखने वाले अनोखे जौहरी हैं जिन को इसके परखने की बारीक बीनी दी गई है वैसे लोग इस संसार में बहुत कम बल्कि यों कहिये ऐसों का एक तरह पर अभाव है—जिन्हों ने सुचरित्र के सौन्दर्य के समझने या वर्णन करने की और रियाज़ या तपस्या की है उनको संसार के जितने रमणीक पदार्थ परमसुन्दरी ललना आदि के सौन्दर्य का वर्णन है सब फीका मालूम होता है—जो अपने निर्दोष चरित्र से सन्तुष्ट हैं और आजन्म जिन्हों ने कभी किसी कुचरित्र की ओर दृष्टि भी नहीं किया मुक्ति उन की दासी है, स्वर्गसुख उन के आगे तुच्छ है—मनुष्य को ईश्वर ने अशरफुलमखलूक अर्थात् सृष्ट पदार्थों में सर्वोत्तम माना सो क्या इतने ही से कि वह अहर्निश आमोद प्रमोद में मग्न रह संसार की विषय वासना में परिपक्व हो, किन्तु ईश्वर ने मनुष्य को अपने रूप में सृजा इसके यही आत्पर्य हैं कि वह कड़ी से कड़ी कसौटी में भी अपने चरित्र का दृढ़ और पक्का हो "मलिनमसुभंगेप्यसुकरम्" प्राण चाहो शरीर में न रहे पर मैले काम की ओर झुकावट से दूर रहे—समस्त धर्म कर्म सभ्यता विद्वत्ता का यही सारांश और निचोड़ है तो अब हमारे पढ़ने वालों को मालूम हुआ होगा कि मनुष्यजीवन में सुनीतितत्वशिक्षा की क्यों आवश्यकता है जिस्के विना मनुष्यजीवन की सार्थकता नहीं और जिस्के रहने से वह सब कुछ है और जिस लिये वह सृजा गया है कि अपने गुण कर्म से वह अपने सृजने वाले की समानता अपने में लासके—

## नृपतिचरितावली पहिले के आगे से—

अब हम वीरप्रसविनी पञ्जाब की धरती के प्रधान राजाओं का कुछ हाल लिखते हैं—काश्मीर या जम्बू जो पञ्जाब के सब राज्यों में बड़ा है और हिन्दुस्तान भर का शिरोभाग है पहिले उसी का कुछ वृत्तान्त लिखा चाहते हैं—

काश्मीर हिन्दुस्तान की उत्तर पश्चिम सीमा है—लद्दाक और गिलगिट दो सूबे तिब्बत के भी इसी में शामिल हैं—इसका विस्तार वर्ग मील ८०९००० है जनसंख्या १८९१ में २५११८९० और भूमिकर ८०७६००० है। वायुकोण से अग्निकोण को अनुमान ३५० मील लम्बा है और ईशानकोण से नैर्ऋत्यकोण को २५० मील चौड़ा है—इसके उत्तर पूर्व की ओर चीन का राज्य है पश्चिम की ओर अफगानिस्तान दक्षिण की ओर पञ्जाब के सर्कारी इलाके हैं—काश्मीर के जल वायु तथा यहां की पृथ्वी की जितनी प्रशंसा की जाय सब कम है—इस भूमण्डल में इसके बराबरी का कोई दूसरा देश नहीं है मानो विधाता ने सृष्टि की जितनी अद्भुत बातें और सुन्दरता है सब का नमूना इकट्ठा कर यहां रख दिया है—यह देश चारों ओर हिमालय से घिरा है और बीच में इसके १०० मील के ऊपर लम्बाई में और ६० मील चौड़ाई में समथर मैदान है—किसी समय यह सम्पूर्ण मैदान पानी में डूबा हुआ था लोहा तांबा और सुरमा की यहां खान है छायादार मेवों के पेड़ यहां इस बहुतात से हैं कि समग्र देश का देश बाग मालूम होता है जहां बारहो महीने बसन्त निवास करता है—कोई ऐसा स्थान नहीं है जो हरित-तृणों से खाली है और रंगबरंग के फूल उसमें न फूले हों—वनपशु यहां इतना बहुतात से पैदा होता है कि घास की जगह गाय भैंस उसी को चरती हैं—सेव और नाशपाती इस कसरत से होता है कि जंगल का जंगल पड़ा है—वर्षात यहां बहुत कम होती है बादल पहाड़ों के मध्यभाग में लटके रह जाते हैं भीतर नहीं जा सक्ते—मेवे सेव नाशपाती वगैरह भादों के महीने में पकते हैं जाड़ों में सरदी शिद्दत की होती है और बर्फ खूब पड़ती है—झीलों पर बर्फ तख्ते के माफिक जम जाता है जालीदार हुक्के की भांत मिट्टी की अंगेठियां लोग गले में हरदम लटकाये रहते हैं—बाकी ८ या ९ महीने बसन्त रहता है न गरमी न जाड़ा—धूल गर्द लू और आंधी कैसी होती है यहां के लोग जानते भी नहीं—मई और जून में कभी २ दो चार छींटे पानी के भी पड़ जाते हैं—झेलम जिसका संस्कृत नाम वितस्ता है पूर्व से पश्चिम को बहती चली गई है न बहुत चौड़ी न बहुत सकेती जल इसका बड़ा निर्मल ठंढा और मीठा—गहरी बाखूबी कि जिसमें नावें अच्छी तरह चल सकें—बरसात यहां कम होने से यह नदी घटती बढ़ती भी नहीं न पानी इसका गंदला होता है नदी के दोनो ओर छायादार मेवे के पेड़ बड़ी शोभा देते हैं जिन की डालियां पानी में इस सफाई के साथ

झुकी रहती हैं कि नाव पर बैठे मेवे तोड़ते खाते चले जाइये—नाव की सवारी की यहां बहुत चाल है एक मुहल्ले से दूसरे को जाना हो तो नाव पर चढ़ जाना होता है लोगों के घर ठीक दरिया से लगे हुये बने हैं—सब काम यहां नाव के द्वारा होते हैं नाव भी यहां की बड़ी सुबुक हलकी और हवादार बनी होती हैं—जिसे यहां वाले परिन्दा कहते हैं परिन्दा माने पक्षी के हैं अर्थात् पक्षी के समान उड़ने वाली। वितस्ता नदी जहां से निकली है वह स्थान भी बड़ा रमणीक और देखने योग्य है—सिवाय वितस्ता के और बहुतसी छोटी २ नदियां नहरें सोते और कुण्ड हैं जिन के पानी से सिंच यहां धान की खेती बड़ी उत्तम होती है—सब से अधिक प्रसिद्ध तीर्थ यहां ज्योतिर्लिङ्ग अमरनाथ हैं जो राजधानी श्रीनगर से ८ मंज़िलबर्फ के पहाड़ों के बीच है—श्रावण की पूर्णिमा को यहां बड़ा मेला लगता है रास्ता यहां की अत्यन्त विकट है अन्त को सात आठ कोस बर्फ के ऊपर चलना पड़ता है—मन्दिर या मूर्ति कुछ नहीं है एक गुफा सी है जिस में पहाड़ी बर्फ टिघल कर पिण्डी के आकार बन जाता है—श्रीनगर से अग्निकोण को मार्तण्ड तीर्थ है यहां पुराने समय में सूर्य का बड़ा भारी मन्दिर था अब खंडहर है—काश्मीर वाले यहां श्राद्ध करने से गया के बराबर पुण्य मानते हैं—बौद्ध राजाओं की बनाई यहां बहुत सी इमारत हैं जिन्हे मुसलमानो ने बहुधा तोड़ फोड़ डाला है—श्रीनगर से ४० मील वायुकोण को एक ऐसा भूभाग है जो सदा जलता रहता है मालूम होता है नीचे इसके गन्धक हरताल आदि कई चीजों की खान है—काश्मीर सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध हैं दामोदर कवि का कुट्टिनी मत पढ़ने से मालूम होता है कि लोग यहां के कैसे विषयलम्पट हुये हैं और हैं—काश्मीर सदा से विद्या की प्रधानभूमि प्रसिद्ध है सब विषय के पण्डित यहां हुये हैं व्याकरण और साहित्य के जैसे विद्वान् यहां हुये हिन्दुस्तान के किसी प्रान्त में ऐसे कम हुये हैं—कैयट मंमट क्षेमेन्द्र कल्हण विल्हण दामोदर प्रभृति अनेक विद्वान् और कवि सब यहीं हुये हैं—बस्ती यहां विशेष मुसलमानो की है हिन्दू सब के सब प्रायः भ्रष्ट मुसलमानों की पकाई रोटी खाने में कुछ दोष नहीं मानते—शाल दुशाले जैसे यहां बनते हैं वैसे दुनिया के किसी हिस्से में नहीं बनते—यहां की आबहवा का कुछ ऐसा असर है कि वेही कारीगर दूसरी जगह जा कर जो शाल बुनेंगे वह क़ीमत में वैसा न होगा जैसा खास कश्मीर में तैयार होता है—किसी समय यहां सोलह हज़ार दुकाने शाल बुनने वालों की थीं अब बहुत कम रह गई हैं—पश्मीना

जिस्से शाल बुना जाता है तिब्बत से आता है--छोटी २ लंबे बाल वाली बकरियां जिन के बदन पर पश्मीना होता है सिवाय तिब्बत के और कहीं नहीं पैदा होतीं-केसर यहां साल भर में सत्तर अस्सी मन पैदा होता है-समुद्र की सतह से यहां की धरती ५२०० फुट ऊंची है बर्फ के बीच बड़ी २ "ग्लेशियर्स" अर्थात् बर्फ वाली नदियां कई एक हैं एक उन्में से ३५ मील लम्बी बही है--काश्मीर के दक्षिण ओर के पहाड़ ऐसे ऊंचे नहीं हैं जैसा उत्तर की ओर के कोई २ चोटी इन पहाड़ों की २८ हज़ार फुट से भी अधिक ऊंची हैं-झीलों की बहुतात से चावल यहां बहुत पैदा होता है तीन चौथाई चावल की उपज है बाकी में और अन्न गेहूं आदि उपजते हैं--तख्तों पर मिट्टी पाट ककरी खीरा तर्बूज़ आदि बहुत पैदा होते हैं और वे तख्ते नदी और झीलों पर तैरते रहते हैं झीलों में सिंघाड़े बहुत उपजते हैं जंगलों में बड़ी क़ीमती शहतीरें होती हैं राज्यभर में १३ जुदी २ भाषायें बोली जाती हैं-वितस्ता नदी के किनारे श्रीनगर राजधानी सन् ९१ में १२०००० आदमियों की बस्ती थी जिस्में २०००० हिन्दू बाक़ी मुसल्मान हैं ५ मील की लम्बाई में शहर बसा है घर सब काठ के तीन खण्ड के कोई चार खण्ड के भी हैं-समुद्र की सतह से ५५०० फुट की उंचाई पर यह शहर नदी के दोनों किनारों पर बसता है मकान इस तरह पर बने हैं कि लोग खिड़की और बरामदों में बैठे पानी खींच सक्ते हैं नदी का पाट १५० गज़ से अधिक चौड़ा कहीं पर नहीं है एक पार से दूसरे पार जाने को सात पुल काठ के बने हुये हैं-हम्माम यहां बहुत जगह बने हुये हैं--शहर से उत्तर २५० फुट ऊंचा हरी पर्वत नाम का एक छोटा सा पहाड़ है उस्पर एक छोटा सा क़िला भी बना है--पुराने बादशाही मकान सब खँडहर होगये हैं जिन्में अब धान की खेती होती है-समस्त संसार भर का निचोड़ काश्मीर है काश्मीर भर का निचोड़ डल है-यह डल एक प्रकार की झील निर्मल जल की अत्यन्त गहरी दस मील के घेरे में होगी--नहरों के द्वारा यह झील वितस्ता से मिली हुई है दो तरफ इस्के पहाड हैं और दो तरफ श्रीनगर का शहर बसा है--डल के किनारे पर बाग बहुत हैं बीच २ में टापू अंगूर के पेड़ों से लदा हुआ है-जो लोग एकान्त रम्य सुहावने स्थान में बास करना चाहते हों उन के लिये काश्मीर से बढ़कर दूसरा स्थान नहीं है-

श्रीनगर से १०० मील दक्षिण जम्बू अत्यन्त उजाड़ जगह है काश्मीर जैसा

रमणीक है वैसा ही जम्बू अत्यन्त सूनसान और उजाड़ है—यहां के प्राचीन रहने वाले सूर्य के बड़े भक्त थे और कई एक पुराने मन्दिर सूर्य के यहां पाये जाते हैं—उपरान्त बौद्धों का यह प्रधान स्थान हुआ बौद्ध यहीं से सब ठौर फैले क्षेमेन्द्रकृत अवदानकल्पलता के पढ़ने से इसका भेद बहुत खुलता है कि किस तरह बौद्ध और २ स्थानों से यहां से गये—महमूद ग़ज़नवी ईस्वी सन् की ग्यारहवीं सदी में यहां आया था और तभी से मुसलमानों का पैरा यहां आया—१५८६ ईस्वी में अकबर ने इसे फ़तेह किया—१७५२ ईस्वी में अहमद-शाह दुर्रानी ने कश्मीर फतेह किया और १८१९ तक अफ़ग़ानों के दखल में यह रहा जब कि सिक्खों ने इसे फ़तेह कर१८४५ ईस्वी तक अपने अधिकार में रक्खा—वीर शिरोमणि रणजीतसिंह के समय तक काश्मीर स्वच्छन्द राज्य नहीं हुआ था उपरान्त जब अंगरेज़ी गवर्नमेंट के अधिकार में पंजाब आया तब महाराजा गुलाबसिंह ने जो डोगरा जाति के राजपूत क्षत्री थे और आदि में महाराजा रण-जीतसिंह के मातहत थोड़े से घुड़सवारों के सिरदार थे गवर्नमेंट को ७५ लाख रुपया दे जम्बू और काश्मीर खरीद लिया उपरान्त गुलाबसिंह ने अपना राज्य लद्दाक तक फैलाया-१८५७ में उन के स्वर्गवासी होने पर उन के ज्येष्ठ पुत्र रण-वीरसिंह उत्तराधिकारी हुये—महाराजा रणवीरसिंह १८८५ तक राज्य कर बैकुण्ठ-वासी हुये अब महाराजा प्रतापसिंह बहादुर राज्य करते हैं—थोड़े दिनों तक काश्मीर रिजेन्सी के अधिकार में कर दिया गया था किन्तु उक्त महाराज को गवर्नमेंट ने अब फिर पूरा अधिकार दे दिया—राजतरंगिणी ग्रन्थ में काश्मीर का पुराना इतिवृत्त सिलसिलेवार पूरा २ लिखा गया—तवारीख़ के क्रम का संस्कृत में यदि कोई ग्रन्थ है तो यही राजतरंगिणी है जिस्में युधिष्ठिर के समय से शाह-आलम बादशाह तक तारीख़ समेत सिलसिलेवार हाल काश्मीर के शासन कर्ताओं का मिलता है और उसी के सम्बन्ध में भारतवर्ष के और २ प्रान्तों का कुछ हाल मिलता है—सौराष्ट्र गुजरात मगध बंगाल दूर देश कन्याकुमारी तक के समय २ जो २ राजा हुये हैं जिन से काश्मीर नरेशों से सरोकार हुआ है उन के इतिवृत्त की भी झलक इस्में पाई जाती है—टाड साहब प्रभृति इतिहास लेखकों को राजत-रंगिणी से बहुत सहायता मिली है इस लिये संस्कृत के साहित्य में राजतरंगिणी बड़ा उपकारी ग्रन्थ है—४ जुदे २ पण्डितों के लिखे इसके ४ हिस्से हैं—पहली राज-तरंगिणी कल्हण कविकृत जिस्में युधिष्ठिर के समय से ८ तरङ्गों में २३०२ वर्ष तक

का हाल है–दूसरी जोनराजकृत राजतरङ्गिणी में २७७ वर्ष का हाल दिया गया है–तीसरी राजतरङ्गिणी जोनराजशिष्य श्रीधर पण्डितकृत ४ तरङ्गों में है जिस्में १०० वर्ष का हाल है उपरान्त प्राज्ञ भट्ट ने चौथी राजतरङ्गिणी लिखा है जिस्में शाह आलम तक का हाल दिया गया है–

## पटियाला–

यह राज्य ५९५१ वर्ग मील बहावलपुर की हद्द से ले कर पहाड़ों के बीच शिमले की छावनी तक चला गया है विस्तार इसका बटिण्डे से शिमले तक १७५ मील है–आबादी सन ९१ ईस्वी में १५३८८१० थी मालगुज़ारी ५० लाख सालाना के अनुमान है–इसकी पूर्व की सरहद्द सतलज नदी है–जस्ता ताम्बा और शंगमर्मर की खान इस राज्य में है पटियाला राजधानी ५६००० आदमियों की बस्ती है १७५२ ईस्वी में सरदार अलीसिंह ने इसकी नेव डाली थी एक शाख रेल की भी पटियाला तक गई है–अंगरेज़ी तालीम रोज़ २ इस रियासत में बढ़ती जाती है महाराज अच्छे सुशिक्षित हैं और रियासत का इन्तिज़ाम भी अच्छा कर रहे हैं मज़हब के सिक्ख और जाति के जाट हैं–शहर के बीचों बीच क़िला है जिस्में महाराजा के महल देखने लायक़ हैं–

पटियाला से ५ या ६ कोस बहादुरगढ़ का क़िला है उस्में महाराजा साहब ने जो महल अब बनवाये हैं देखने लायक़ हैं–लुधियाने से ७५ मील नैर्ऋत्यकोण को बटिंडे का क़िला रेगिस्तानी मैदान के बीच बहुत मज़बूत बना है–इस क़िले में महाराज का खज़ाना रहता है क़िले के चारों ओर जो जंगल है उस्में घोड़ों के चरने लायक़ घास अच्छी पैदा होती है–बटिंडा पटियाले की रियासत और बहावलपुर के बीच में है—पटियाले से ३५ मील उत्तर सरहिन्द है बादशाही ज़माने में बड़ा शहर था अब एक छोटा सा क़सबा है–

## बहावलपुर–

दक्षिण इसके जैसलमीर और बीकानेर है उत्तर पञ्जाब के सरकारी ज़िले पश्चिम सिंध और पूरब की ओर पटियाला है–यह राज्य सतलज और सिन्धु के किनारे २ तीन सौ दस मील तक लम्बा चला गया है चौड़ाई इसकी ११० मील के लग भग है विस्तार १७२८६ वर्ग मील है। आबादी सन् ९१ में ६४८९०० 

थी मालगुज़ारी १६ लाख सालाना है—पंजाब राजपुताना और सिन्ध तीनों के बीच में यह रियासत दो तिहाई रेगिस्तानी जंगल बालू का मैदान उजाड़ पड़ी है—८ मील से १४ मील तक चौड़ी नदी के दोनो ओर एक लम्बी धज्जीसी पृथ्वी इसमें ऐसी है जिसमें सब तरह की खेती हो सक्ती है—जो रेगिस्तान पूरब की तरफ राजपुताना से मिला हुआ है उसमें १०० फुट से ५०० फुट तक ऊंचे बालू के टीले हैं—बड़ा हिस्सा खेती का सतलज और नहरों की बाढ़ के आधीन है एक नई नहर ११३ मील लम्बी हाल में खोदी गई है तब से ज़मीन की मालगुज़ारी दो चन्द हो गई है—कपास रेशम और नील यहां की खास पैदावार है—इंडसव्याली स्टेटरेलवे खास भावलपुर में दरिया सिन्ध को डाकती हुई गई है—सिन्ध का पुल यहां अनुमान एक मील के लंबा है राज्य भर में मुसलमान बहुत हैं—नवाब साहब का घराना शुरू में सिन्ध से आकर यहां बसा और नौवाब सर्कार के बड़े खैरख़ाह हैं—काबुल के युद्ध में गवर्नमेंट की बड़ी सहायता की थी इसलिये बहुतसी ज़मीन खैरखाही में पाई है—राजधानी भावलपुर सतलज के किनारे पर १४००० आदमियों की बस्ती कच्ची ढारदिवाली के भीतर ४ मील के घेरे में बसी है—

## झीन्द—

सतलज के पूर्व ६ लाख सालना की यह छोटीसी रियासत विस्तार में १२६६ मील है आबादी इसकी सन् ९१ में २८४३०० थी—महाराजा यहां के भी जाति के जाट और मज़हब के सिक्ख हैं—इस राज्य की बुनियाद १७६३ में पड़ी और दिल्ली के बादशाह से राजा की पदवी दी गई थी—सन् ५७ के बड़े बलवे में महाराजा ने दिल्ली के बलवाइयों के मुकाबिले सर्कार की मदत की थी इसलिये जागीर भी खैरख़ाही में मिली है राजधानी झीन्द ७०००० आदमियों की बस्ती है और पटियाले से ७० मील दक्षिण है—

## नाभा—

पटियाले के उत्तर और सतलज के पूरब यह रियासत विस्तार में ९३६ वर्ग मील आमदनी ७ लाख सालाना आबादी सन् ९१ में २८२७६० थी—महाराजा सिक्ख और जाट हैं—रणजीतसिंह ने जिस समय कुल पञ्जाब को फतेह कर लिया था उस

समय भी अंगरेज़ों की सहायता से यह राज्य स्वच्छन्द बना रहा—राजधानी नाभा १७००० आदमियों की बस्ती पटियाले से १५ मील है—

## कपूरथला—

संस्कृत नाम इसका कर्पूरस्थल है १० लाख सालाना आमदनी का यह राज्य व्यासा नदी के पूर्व और जालन्धर के दक्षिण है—सिक्ख इस राज्य में बहुत हैं कुल आबादी सन् ९१ में अनुमान ३० लाख के थी—विस्तार इसका ५९८ वर्गमील है—यह राज्य पहिले सतलज के दोनो ओर दूर तक था किन्तु गवर्नमेंट के साथ पहिली सिक्खों की लड़ाई में कपूरथला के शामिल हो जाने से सतलज के पूरब की ओर के इलाके ज़प्त कर लिये गये—बल्बे में महाराज रणधीरसिंह ने सर्कार की सहायता की इस लिये ख़ैरख़ाही में इस रियासत को ९ लाख सालाना आमदनी की रियासत अबध में गवर्नमेंट से दी गई है राजधानी कपूरथला १५००० आदमियों की बस्ती है—महाराजा अंगरेज़ी के बड़े विद्वान् हैं और अंगरेज़ी तालीम की अपने राज्य में बड़ी तरक़्क़ी कर रहे हैं—

## फ़रीदकोट ॥

सतलज के पूरब पटियाले से वायव्यकोण को ३ लाख सालाने की यह रियासत ६४३ वर्ग मील की है—इसकी आबादी ११५०४० सन् ९१ में थी सिक्ख इस राज्य में भी बहुत हैं—महाराज जाट और सिक्ख हैं—अकबर के समय में इस राज्य की बुनियाद पड़ी थी रणजीतसिंह ने इसे अपने राज्य में मिला लिया था किन्तु गवर्नमेंट ने पंजाब लेने पर इसे फिर स्वच्छन्द कर दिया राजधानी फरीदकोट ७००० आदमियों की बस्ती है—

## मण्डी ॥

विस्तार में १००० वर्ग मील सालाना आमदनी साढ़े तीन लाख अत्यन्त पहाड़ी यह राज्य कांगड़ा से अग्निकोण को है—सन् ९१ में इसकी आबादी १४७०१७ थी—पहाड़ों के बीच २ जो पृथ्वी आगई है वह अत्यन्त उर्बरा है—सब तरह के अन्न ऊख अफ़ीम तमाखू इत्यादि चीज़ें यहां पैदा होती हैं—महाराज सेन उपाधिधारी चन्द्रवंशी क्षत्री हैं—राजा अजबरसेन १५२१ ईस्वी में मंडी नगर को

बुनियाद डाली थी जो अब ५००० आदमियों की बस्ती है–रियासत की ओर से व्यासा की तीखी धारा पर एक बड़ा सुन्दर पुल मंडी के पास बना है—लोहे की खान भी इस राज्य में है–मंडी से २५ मील वायुकोण व्यासा के बायें किनारे पर १५०० फुट की उंचाई पर कमलागढ़ एक पहाड़ी किला बड़ा मज़बूत बना है–

## चम्बा और सुकेत ॥

उत्तर और पूरब की सरहद्द इसकी काश्मीर और कांगड़ा है रावी नदी इसके बीच होकर गई है विस्तार इसका ३१८० वर्ग मील है आबादी सन् ९१ में ११५७७३ थी—आमदनी २३५००० सालाना है—जंगलों में शहतीरें बहुत होती हैं–ब्राह्मण इस राज्य में बहुत हैं खेती वे ही करते हैं और जाड़ों में भेड़ें चराया करते हैं—चम्बा की पर्वतस्थली में चौपायों के चरने की घास बहुत पैदा होती है–महाराज राजपूत हैं–राजधानी चम्बा ५००० आदमियों की बस्ती है रावी के दहिने किनारे पर अति सुहावने रम्यस्थान में है–सुकेत सतलज से १२ मील पर दो लाख से कम की रियासत है यहां पर खौलते पानी का एक चश्मा है बिल्कुल पहाड़ ही पहाड़ है इसमें कोई ऐसी बात नहीं है जिसका विशेष वर्णन किया जाय–

## सिरमौर ॥

विस्तार इसका १०७७ वर्ग मील है आबादी सन् ८१ में ११२३७१ थी आमदनी २१०००० सालाना है–यह रियासत देहरादून के पश्चिम है उत्तर दक्खिन को ढलुआ है यमुना इसके बीच से हो कर बही है जो कहीं २ बारह सौ फुट की उंचाई से नीचे को गिरती है–पशुओं के चरने की घास यहां बहुत और बड़ी पुष्ट होती है जंगलों में शहतीरें बहुत होती हैं–सोंठ यहां बहुत उपजती है, अन्न अफीम आदि भी पैदा होती है–पशमीने वाली भेड़ें भी यहां होती हैं स्लेट के पत्थर बहुत होते हैं छतें यहां उसी की बनती हैं घर बहुधा तिखंडे बनाये जाते हैं–भाषा यहां हिन्दी बोली जाती है–शिमले से ४० मील दक्खिन नाहन इसकी राजधानी ५००० आदमियों की बस्ती है–राजा जैसलमीर के रावल क्षत्री के राजवंश में हैं १८९५ ईस्वी में जैसलमीर से जा कर वहां बस गये हैं–यह राज्य एक बार गोरखों से फतेह कर लिया गया था किन्तु १८१५ में गवर्नमेंटने

गोरखों को यहां से निकाल रावलवंश के राजा को फिर यहां बहाल किया और वही अब यहां राज करते हैं–

सतलज और जमना के बीच कई एक पहाड़ी राजा, राणा और ठाकुरों के इलाके और जागीरे हैं जिन्में सिरमौर बिसहर और कोहलूर सबों में बड़े हैं–इन तीनों में भी बिसहर सबों में बड़ा ५ लाख सालाना आमदनी का राज्य है और बाकी रियासतें जो गिनती में २३ से कम नहीं हैं ३०० रुपये सालाना आमदनी से ३०००० तक की आमदनी की हैं–एक उन्में से विस्तार में केवल १ मीलमुरब्बा तक की है किन्तु वह भी स्वच्छन्द राज्य है–आबादी छोटे राज्य की २०० आदमियों से अधिक नहीं हैं–कोहलूर की राजधानी बिलासपुर सतलज के बांये किनारे पर सुन्दर मनोहर स्थान में समुद्र की सतह से १५०० फुट की उंचाई पर बसा है–बिलासपुर के पश्चिम दो दिन की राह पर सतलज के तट पर ३००० फुट की उंचाई पर नपना देवी का मन्दिर है पहाड़ काट कर ४००० सीढ़ियां बनाई गई हैं–मन्दिर के ऊपर से नीचे के ओर देखो तो एक तरफ अम्बाला और सरहिन्द के मैदान दूसरी तरफ हिमालय के बर्फ से ढके शिखर हैं जिस्के नीचे दूर तक सतलज बहती हुई देख पड़ती है–बिसहर का इलाका सतलज के किनारे२ हिमालय पर चीन की सरहद्द से जा मिला है–राजधानी जिस्की रामपुर समुद्र से ३३०० फुट की ऊंचाई पर सतलज के बायें किनारे बहुत सकेती जगह में बसा है—विस्तार इस्का ३३२० वर्गमील है कोई २ पहाड़ इस्में ७००० फुट तक की उंचाई के हैं और उपज में तिब्बत के पहाड़ों से बहुत मिल जाते हैं पश्मीने वाली भेड़ यहां बहुत होती हैं जिन के रोयें की सफेद चादरें और कम्बल बीस बाइस रुपये के अच्छे मिलते हैं तारीफ उन के नरम और गरम होने की है–ये कम्बल विलाइत तक यहां से जाते हैं–कनावर का पर्गना इस राज्य में बड़ा मनोहर है शिमले के साहब लोग हवा खाने को उसी तरफ जाया करते हैं–काश्मीर की तरह यहां भी बरसात नहीं होती आबहवा निहायत उमदा–पाण्डवों की तरह कई भाई एक ही स्त्री से व्याह करते हैं ऐसी स्त्रियां यहां बहुत कम हैं जिन्होंने दो तीन बार पति न बदला हो—

## गढवाल

विस्तार इस्का ४१८९ वर्गमील आबादी सन ८१ में १९९८३६ थी मालगुजारी सालाना १४२०००रुपया है–गंगाजी की कई धारा इसी राज्य से हो कर आई हैं

जंगल इसमें बहुत है और हिमालय के कई एक ऊंचे २ शिखर भी इसी राज्य में हैं–१८००० आदमियों की बस्ती तेहरी इसकी राजधानी २२०० फुट की उंचाई पर गङ्गा के बायें किनारे पर बसीहै —महाराज क्षत्री हैं–मोग़लानी सलतनत में सम्पूर्ण गढ़वाल इन्हीं के आधीन था थोड़ा सा कर दिल्ली के बादशाह मुगलों को दिया करते थे–१८०४ ईस्वी में गोरखों ने इसे भी फतह कर लिया था किन्तु १८१५ में गवर्नमेंट ने इसे नैपालियों के हाथ से छुटाय फिर स्वछन्द कर दिया तब से गढ़वाल अलग स्वछन्द राज्य है–

## नयपाल–

उत्तराखण्ड के राजाओं में नयपाल सब भांत स्वच्छन्द और बड़ा पुराना राज्य है बल्कि यों कहिये हिन्दुस्तान की नाक है जहां अब तक बहुतसी पुरानी रीतें वैसी ही प्रचलित हैं जैसा पुराने आर्यों के समय जारी थीं–पश्चिम ओर इसके काली नदी है जो मानसरोवर के दक्षिण हिमालय से निकल सरयू में मिलती है–पूर्व में कंकईनदी हिमालय से निकल और २ नदियों को अपने में मिलाती गंगा में जा गिरी है और शिकम से नयपाल को अलग करती है–उत्तर में हिमालय पार तिब्बत का मुल्क है–दक्षिण में पहाड़ों के नीचे कुछ दूर तक अवध और गोरखपूर का सूबा है फिर सूबेबिहार और बंगाल के ज़िले हैं–इसका लम्बान ४६० और चौड़ाई ११३ मील है विस्तार ५४००० वर्ग मील है–दक्षिण तरफ पहाड़ों के नीचे १० या १२ मील चौड़ा दलदली मैदान है जिसे तराई कहते हैं–सोनामक्खी, लोहा, तांबा, शीसा, रांगा, गन्धक, हरिताल, और सिन्दूर की खान इसमें है–नदियों का बालू धोने से कहीं २ थोड़ा सोना भी मिलता है २९००२ फुट ऊंचा मौंट अबरेस्ट संसार भर में सब से ऊंचा पर्वत यहां है–पैदावार में चावल यहां बहुत पैदा होता है और लोगों का मुख्य भोजन चावल ही है —कोई २ प्रदेश इसके ऐसे उर्वरा हैं कि वहां साल में ३ फसल काटी जाती हैं–सिवाय चावल के जुआर बाजरा अफीम तमाखू तेलहन भी नेपाल की तराई में बहुत होते हैं–फल सब तरह के आम कटहल अखरोट इत्यादि भी बहुत उपजते हैं–बड़ी इलाइची भी बहुत उपजती है–जंगलों में शहतीरें अधिकाई से होती हैं–कई तरह की जाति के लोग यहां रहते हैं—प्राचीन निवासी यहां के तातारी और चीनी लोग थे हुकूमत यहां की गोरखों के हाथ में है जो सूरत में चीनियों से बहुत मिल

जाते हैं–क़द के नाटे वदसूरत लेकिन लड़ने में बड़े सिपाही बिना मोछे के उखान किंपुरुष इन्हीं को कहना चाहिये जिन को मोछा न होने से भ्रम होता है कि ये क्या पुरुष हैं या स्त्री–राजा और ठाकुर लोग उदैपुर के राणा के औलाद हैं और उदैपुर से यहां आके बसे हैं–अफगानी और महम्मद ग़ोरी ने जिस समय हिन्दुस्तान का आक्रमण किया उस समय उदयपुर के राजवंश के कोई २ राजकुमार राजपुताने से प्रयाग कर पहले कमाऊं में जा बसे और कमाऊं से पूरव की ओर आते गये और वहीं के लोगों में व्याह शादी करते हुये पृथक् जाति नैपाली इस नाम से कहलाने लगे—ईस्वी सन् की बारहवीं शताब्दी के अन्त में ये सब ठाकुर और राजा यहां आकर बसे हैं–मांस और लहसुन यहां के लोग बहुत खाते हैं पचास वर्ष पहले इन गोरखों ने कांगड़े तक फतह कर लिया था—व्यौपार यहां का बकरी और भेड़ों के द्वारा होता है दूध यहां का बहुत गाढ़ा और स्वादिष्ट होता है–घी तेलहन अन्न शहतीरें चौपाये चरसे यहां से बाहर जाते हैं–रुई के कपड़े रेशमी कपड़े नमक कपास और शक्कर बाहर से आता है–हाल में सरजंग बहादुर नैपाल राज्य के प्रधान मन्त्री बड़े प्रसिद्ध नीतिज्ञ होगये हैं–सरजंग बहादुर विलाइत भी गये थे और गवर्नमेंट के बड़े दोस्त थे नैपाल की बहुत कुछ उन्नति इन्होंने किया सन् ५७ सत्तावन के बल्वे में सर्कार की बहुत मदत की थी ७७ ईस्वी में सुरधाम सिधार गये–नैपाली अपनी पताका पर हनुमान का चिन्ह रखते हैं–

राजधानी काठमांडू जिस्का शुद्ध नाम काष्ठमन्दिर है ४००० फुट की उंचाई पर वाघमती नदी के संगम पर बसा हुआ ५०००० आदमियों की बस्ती है–घर बहुधा ईंट के बने हुये हैं पक्के से पक्का मकान हो पर उस्पर खपड़ा ज़रूर छाया रहेगा–लोग यहां के शैव होते हैं शहर के बीचोबीच महाराज की महलें बनी हैं बौद्धों के प्राचीन मन्दिर भी यहां बहुत हैं–गलियां तंग और मैली मकान बहुधा दो से चार मरातिब तक काठमाडू की नेह विक्रमाब्द के ६६६ में डाली गई थी–मुख्य तीर्थ यहां का पशुपतिनाथ महादेव हैं जिन्हे भैंसे का बलिदान दिया जाता है–सालाना आमदनी १ करोड़ रुपया है कुल आवादी २०००००० के अनुमान होगी काठमांडू से ४१ मील पश्चिम वायुकोण को गोरखा नाम स्थान अनुमान २०० घरों की बस्ती है गोरखनाथ का यहां मन्दिर है लोग कहते हैं गोरखनाथ यहीं तपस्या कर सिद्ध हुये हैं नैपाल के पुराने राजाओं की जन्मभूमि भी यह स्थान

है—काठमांडू से २ मील दक्षिण वाघमती नदी के दूसरे तट पर ललितपट्टन २५००० आदमियों की बस्ती है—गंडक नदी के बायें तट पर मुक्तिनाथ बड़ा तीर्थ है यहां गरम पानी के ७ सोते हैं जिन से पानी निकल कर नारायणी नदी के नाम से गंडक में गिरता है उन्में से अग्निकुण्ड का एक सोता बहुत अद्भुत है पानी पर अग्नि की ज्वाला दिखलाई देती है—काठमांडू से ८ मंज़िल उत्तर बर्फ़ों के बीच नीलकण्ठ महादेव का एक बड़ा तीर्थ है गरम पानी का कुण्ड यहां भी है—चन्द्रगिरि पर्वत जो काठमांडू के पास है ८५००० फुट ऊंचा होगा—नयपाल के पर्वतों पर अनेक अद्भुत सुरम्य स्थान देखने योग्य हैं—

## शिकम ॥

पश्चिम तरफ कैकई नदी नैपाल से शिकम को अलग करती है—पूरब की ओर तिष्टा नदी भूटान से—उत्तर को हिमालय के उस ओर चीन का राज्य है दक्षिण की ओर कुछ दूर तक सरकारी इलाके कुछ दूर तक नैपाल के इलाके हैं यह राज्य अनुमान ६० मील लम्बा और ४० मील चौड़ा है विस्तार १६०० वर्ग मील है—कोई २ पहाड़ी शिखर इस्के १३००० फुट लम्बे हैं तिष्टा नदी छोटी २ नदियों को अपने में मिलाते इस प्रदेश की मुख्य नदी है और बड़े बेग से बहती है—पहाड़ यहां के बड़े गझिन जङ्गलों से ढके हुये हैं जिन्में बांस और बेंत बहुत उपजते हैं जोंक यहां बहुत हैं—बौद्धमत इस देश का प्रधान धर्म है जिन के मठ यहां बहुत हैं और गुरू लामा के आधीन ये मठ हैं उसी की तरफ से मठधारी इन मठों में नियत किये जाते हैं—यह देश नैपाल से बहुत मिलता है लपचा जाति के लोग जो यहां बहुत हैं सब कुछ खाते पीते हैं—यह कौम बिल्कुल जंगली है तीरों को ज़हर में बुझा रखते हैं और लड़ाई में उसी को काम में लाते हैं—दारजिलिंग का पहाड़ जहां बंगाल के छोटे लाट गरमियों में जा रहते हैं जिस्की ऊंचाई ७००० फुट होगी शिकम के दक्षिण की ओर है—गेहूं जौ चावल तेलहन यहां की उपज है केले शन्तरे और दूसरे २ फल बहुत होते हैं—शिकम वालों का बनिज व्यौपार तिब्बत के साथ है—छोटे टट्टू और भेंड़ यहां बहुत पैदा होती हैं और तमाखू रुई के कपड़े इत्यादि के बदले में वहां वाले उन्हें देते लेते हैं—शिकम के राजा के पुरखे तिब्बत से आय यहां बसे हैं और बरसात में जब पानी बहुत बरसने लगता है राजधानी छोड़ तिब्बत को चले

जाते हैं—३००० रूपया सालाना पर राजा ने दारजिलिंग अंगरेज़ों को दे रक्खा है १७८८ ईस्वी में गोरखों ने शिकम को आक्रमण किया था किन्तु १७९२ में जब उन्हों ने फिर हमला किया शिकम के लोगों ने गोरखों को ऐसी भारी शिकस्त दी कि तब से फिर उनकी हिम्मत इधर नज़र उठाने की न पड़ी विशेष विस्तृत वृत्तान्त यहां का बहुत कम मालूम है यही एक राज्य है जहां अब तक बौद्ध मत प्रचलित है जो किसी समय कुल हिन्दुस्तान में फैला हुवा था—

## भूटान ॥

यह देश जिसे प्राचीन मद्र देश कहते हैं शिकम के पूर्व हिन्दुस्तान के ईशान कोण हिमालय की पर्वतस्थली में कुछ अधिक १०० कोस लम्बा और प्रायः ५० कोस चौड़ा है—बरसात यहां बहुत नहीं होती भोट के टागन प्रसिद्ध हैं भोटिये बड़े मज़बूत ६ फुट लम्बे होते हैं रंग सांवला आंखें छोटी और नुकीली वदन गठीला भौं बरौनी डाढ़ी मूछ बहुत कम और हल्के—कुल आबादी का छठवां हिस्सा घेघे की बीमारी से खाली नहीं—मांस भोटिये भी बहुत खाते हैं मज़हब इन का बौद्ध है राजाधर्मराज साक्षात् बुद्धदेव का अवतार माना जाता है—तसिसुदन इसकी राजधानी है राजा के रहने का महल चौखुंटा सातखण्ड का बना है जिसके ऊपर सोनहरी मुलम्मे का ताम्बे का बड़ा सा छत्र चढ़ा है—पहाड़ भूटान में भी बड़े ऊंचे २ हैं जिन्में से बहुत सी छोटी बड़ी नदियां निकल २ ब्रह्मपुत्र नद में जा मिलती हैं—कई भाई एक ही स्त्री से व्याह कर लेने की प्रथा यहां भी प्रचलित है—मकान यहां बहुधा चारखण्ड के और ऊंचे बनाये जाते हैं—गेहूं जौ जुवार और प्याज यहां की खास पैदावार है—भोटियों की बोली तिब्बत की भाषा से निकली है—पहले यहां कूचबिहार के कूच लोग रहते थे उपरान्त तिब्बत वाले आय इसे फतेह कर कूच लोगों को यहां से निकाल बाहर किया—१७७२ ईस्वी में भोटियों ने कूचबिहार पर हमला किया था किन्तु गवर्नमेंट की सहायता से भोटिये निकाल दिये गये और कूचबिहार स्वच्छन्द कर दिया गया—

भूटानदेश का विशेष वृत्तान्त मालूम नहीं है निदान हिमालय की पर्वतस्थली से हम निपट चुके इस भूमि का जैसा कुछ दृश्य है और यहां जो भिन्न २ नरेश हैं उन का हाल जहां तक मालूम हो सका अपने पढ़ने वालों को कह सुनाया—हमारे पढ़ने वालों में जिस किसी को कुछ विशेष वृत्तान्त मालूम हो हमें लिख भेजैं हम उसे छाप देंगे और उन के बड़े उपकृत होंगे—शेष—

# संसारमहानाट्यशाला ॥

पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, पञ्चमहाभूत की बनी यह विस्तृत नाट्यशाला उस चतुरशिरोमणि सकल गुण आगर नटनागर महानट अनोखे खेलाड़ी सूत्रधार के खेलवाड़ की ऐसी रंगभूमि है जिसमें दृश्य अदृश्य रूप से भासमान हो वह दर्शक तमाशबीनों की दृष्टि से मायामयी जवनिका के भीतर छिप अपने महाविराट वैभव का अनेक ऐसा अभिनय किया करता है जिसमें शृङ्गार वीर करुणा आदि नवों रस बारी २ स्थायी और सञ्चारी होते हुये तमाशबीनों को अद्भुत तमाशे दिखलाते हैं—स्वभाव मधुराकृति प्रकृति उस महासूत्रधार की सहचारिणी नर्तकी इस नाट्यशाला की नटी है—पृथक् पृथक् नामरूप में विचित्र वेषधारी जीव समूह सब उस बड़े नटनागर की नाट्यलीला के सहायक सहकारी नट हैं—इस अद्भुत नाट्यशाला का अभिनय रातों दिन हर घंटे हर घड़ी प्रतिपल प्रतिनिमेष अविच्छिन्नरूप से हुआ करता है—कोई ख़ास घंटा या मिनिट मुक़र्रर नहीं है कि इस समय से इस समय तक अभिनय होगा और इस समय इस नाट्यशाला का दरवाज़ा खुलैगा—न फ़ीस का नियम है कि अमुक २ तमाशबीनों से इस २ दरजे की फ़ीस लीजायगी उस बड़े नटनागर ने सबों को अपना अभिनय देखने की आज्ञा दै रक्खी है उसकी नज़र में कोई छोटा या बड़ा हई नहीं वरन उसका प्राणीमात्र पर एकभाव और सबों के साथ एकसा वर्त्ताव है "बाबा वह दरबार हमारा, हिन्दू मुसलमान से न्यारा—जहां जनेऊ सुनत न होई, पण्डित मुल्लां बसै न कोई"—समस्त जीव राशि का निरन्तर कोलाहल इस नाट्यशाला की सङ्गीत है—एक ओर जयध्वनि पूरित हर्ष निस्वन दूसरी ओर क्लेश और करुणा में भरी हुई रोने की आवाज़ उस जीवराशि अद्भुत यन्त्र के अनोखे तान दर्शकों के मन में एक ही क्षण हर्ष और शोक में मिला हुआ अनिर्वचनीय भाव पैदा करते हैं—सूर्यचन्द्रमा ग्रह नक्षत्र सरित् समुद्र अभ्रंलिह गगनस्पृक् अत्युच्च शिखर वाले हिमधवलित पर्वत इत्यादि कारण सामग्री लाखों वर्ष की पुरानी होजाने पर भी जो अभिनय उन के द्वारा दिखलाये जाते हैं वे सब नये और टटके से टटके होते हैं—अचिन्त्य चातुर्य समन्वित विराट् मूर्त्तिमय यह सम्पूर्ण जगत् देख देखने वाले के मन में रौद्र वीर भयानक अद्भुत आदि रस एक साथ स्थान पाते हैं और उस पुरुष पुरातन महाकवि

की महिमा का विस्तार प्रतिपद में प्रगट करते हैं–

अब अन्तर उस बड़े नट के नाटक में और हम लोग जो नाटक करते हैं यह है कि हम लोग इस दृश्य काव्य नाटक में असिल की नक़ल कर दिखलाते हैं और वहां उस्के नाटक में जो कुछ वह नक़ल कर रहा है वह माया जवनिका के कारण उस्की तरह २ की नकल भी हमे असिल और सत्य मालूम होती है– देखने वाले को उस्की भांत २ की नकल का यहां तक सच्चा असर चित्त में होता है कि हम विवश हो झूठ को सच मान तदाकार हो जाते हैं और उस्के अचिन्त्य दिव्यरूप को जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बड़े से बड़ा ऊंचे से ऊंचा दूर से दूर समीप से समीप है सर्वथा भूल जाते हैं और का और समझ गोते खाया करते हैं और निन्न्यानवे के फेर में पड़ इस चक्कर के बाहर कभी होते ही नहीं—माया की फांसी से जकड़े हुये उस्से अपने को अलग मान अपनी भलाई और तरक्की की अनेक चेष्टा करते हैं किन्तु किसी अदृष्ट दैवीशक्ति से प्रेरित हो जो चाहते हैं नहीं होता "अपना चेता होता नहिं, प्रभु चेता तत्काल" जिस्का कभी सपने में भी खयाल नहीं किया गया वह आ पड़ता है–उस अपनी चेष्टा में कृतकार्य हुये और हमें पात्र बनाय जिस अभिनय को उस ने हमारे द्वारा करना आरम्भ किया था पूरा उतर आया हम फूले नहीं समाते भाग्यवानों की श्रेणी में अपना औ-वल दरजा कायम कर लेते हैं–सर्वथा स्वच्छन्द निरंकुश हो उस छिपी दैवीशक्ति पर ज़रा भी ध्यान न दे हम सब भांत समर्थ हैं–बड़े शूर बीर योद्धा सम्राट् चक्रवर्त्ती जिन की एक बार की भ्रकुटि विक्षेप में भूडोल आजाने की सम्भावना है उन के भी हम महा प्रभु हैं–राम युधिष्ठिर तथा सिकन्दर और दारा प्रभृति विजेता जगद्विजयी हमारे आगे किस गिनती में हैं–उशना और बाचस्पति को तो हमारी वाग्वैभव को देख शरम आती ही है किन्तु चतुरानन भी अपनी चतुराई भूल अचरज में आय हक्का बक्का बन बैठता है—हम सब भांति सिद्ध हैं पूर्णकाम हैं न हमारे सदृश किसी ने यत्न किया होगा न हम सा दानी कोई दूसरा है—आज हम ने एक मुल्क फतेह किया कल दूसरा अपने बश में कर लेंगे अपने विपक्षी शत्रुओं को बिन २ खा डालेंगे एक को भी जीता न छोड़ेंगे—कटक से अटक तक हमारी पताका फहरा रही है संसार की कोई जाति या फ़िरके नहीं बचे जिन के बीच हमारा नाम लिया जाय तो थर्रा न उठते हों–हम सभ्यता की चरम सीमा को पहुंचे हैं किस्की इतनी हिम्मत या

ताक़त जो हमारी बराबरी कर सके–तुम जित हो हम विजेता हैं तुम्हारे स्वामी हैं प्रभु हैं प्रभविष्णु हैं हम जो करेंगे या सोचेंगे सब तुम्हारी भलाई के लिये करते हैं और सोचते हैं–हम जो कानून गढ़ देवें वही व्यवस्था तुम हमारे वशम्बद् हो तो हम जो कहैं वह तुम्हे करना ही पड़ेगा–सब में हम ने अपना पंजा फैला रक्खा है हमारे पंजे के बाहर होने का ज़रा भी मन करोगे खराब होगे कहीं ठिकाना न लगेगा इस लिये "प्रसादभोजिनो दासाः" के अतिरिक्त किसी प्रकार की चेष्टा करोगे कुचल दिये जाओगे–हमारा खान हमारा पान हमारी रहन हमारी सहन सब में हमारे समान बनो–देखो सम्हले रहो कहीं किसी बात में अपनापन न आने पावे—तुम्हें जब हम किसी बात में अपनापन ज़ाहिर करते देखते हैं हमारा जी कुढ़ जाता है जो कुछ तुम्हारी भलाई भी कभी किसी तरह होसक्ती उसे भी हम रोक देते हैं–वरन हम नहीं चाहते कि ऐसी कोई बात का अंकुर भी रह जाय जिस्में तुम ज़ोर पकड़ हमारी बराबरी करने लगो—इत्यादि–भगवद्गीता में भगवान् कृष्णचन्द्र ने ऐसा कहा भी है–

"आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्द्धनम् ॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
ईश्वरोहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥
आढ्योभिजनवानस्मि कोन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ" ॥

अपनी कर्तव्यता में कृतकार्य न हुये जो अभिनय वह उन से करा रहा है पूरा न उतरा उदास विषण्णवदन अत्यन्त दुःखी हो गये उस समय ज़िन्दगी उन्हें फीकी मालूम पड़ती है बल्कि महाशोकग्रस्त हो ऐसे समय लोग जीवन से

हाथ धो बैठते हैं--विष खालेते हैं न आप किसी का मुह देखते हैं न अपना मुह किसी को दिखाते हैं-इस तरह पर इस संसारनाट्यशाला में उस महापुरुष के अनेक अभिनय हैं जिन्हें वह क्रीडाविलसित के समान सर्वथा स्वच्छन्द हो जब जैसा चाहता है वैसा अभिनय करता है-

## नये २ लोगों के नये २ सिद्धान्त ॥

हमारे अपढ़ नये लोगों का सब सिद्धान्तों में महासिद्धान्त यही है कि जो हमारे पहले के पुरखे करते आये हैं उसे ही करते जांय गे देश काल के अनुसार वह चाहो कितना ही विरुद्ध हो कैसी ही हानि उस्से होती हो किन्तु हमारे पुरखे ऐसा ही बराबर करते आये हैं इस लिये हम भी आंख मूंद पुरानी लकीर पीटते जांय गे-नवशिक्षित नेचरिये नये लोगों का सिद्धान्त अमोद प्रमोद ऐश आराम जिन्दगी की लज्जतों का जायका है--हमारे पण्डितों का सिद्धान्त प्रजा को गुमराह रख अपना मतलब साधना है परस्पर स्पर्द्धावद्ध हो अपने से बढ़कर दूसरे को न मानेंगे निरे लंठदास भी हों पर हांव २ और कश्मेदराज़ी में किसी के मुक़ाबिले पीछे न हटें गे--गवर्नमेंट का सिद्धान्त है हर तरह पर हिन्दुस्तान का रुपया दुहें और जैसे हो तैसे अपने मुल्की आदमियों को फ़ाइदा पहुंचावें इन्साफ़ उदारता परमधर्म इन्सानियत सब का खयाल तभी तक जब तक दूसरों के मुक़ाबिले अहल बिलाइतियों की किसी तरह की तौहीन और नुक़सान नहीं है-हिन्दुस्तानी भाइयों का सिद्धान्त है सहन और तितिक्षा--एक जून आधे पेट भी खाने को मिलता रहे तो जगत् के तितिम्बा से कुछ प्रयोजन नहीं-"कोउ नृप होहिं हमें का हानी, चेरी छोड़ न होउब रानी"-मुसल्मानो का सिद्धान्त है हिन्दुओं के साथ कुछ छेड़छाड़ चली जानी चाहिये न चैन लेंगे न चैन लेने देंगे तुम्हारा असगुन हो हम नाक कटाये हैं-मोक्षम्यूलर प्रभृति बिलाइत के पण्डितों का सिद्धान्त है वेद आदि पुराने लेख और पुराने ग्रन्थकारों के शाका सम्वत् को हर तहर पर घटाना जिस्में यहां की कोई बात पांच हज़ार वर्ष से अधिक पुरानी न सिद्ध होने पावे जिस्में ईसा की धर्म पुस्तक की इज्ज़त बनी रहे-कहीं ऐसा न हो कि वेद इंजील की अपेक्षा पुराना सिद्ध हो जाय और ईसा का धर्म वैदिकधर्म के मुक़ाबिले निरा पोच कल का जन्मा साबित हो जाय-पादरी साहबों की बे इज्ज़ती हो और उन की सब कलई खुल जाय-

शिक्षा विभाग के महामहन्तों का सिद्धान्त है मुल्क से तालीम को जैसे हो सके घटाते जांय इसी लिये किताबों का दाम चारगुना छगुना करते जाते हैं फीस बढ़ाते जाते हैं कोर्स की किताबें सख़्त करते जाते हैं इमतिहान कड़ा करते जाते हैं जिस्में किसी तरह लोग पढ़ना लिखना छोड़ बैठें और हिन्दुस्तान फिर अपनी पहली हालत में आजाय पर सो अब काहे को होना है—हमारे हिन्दू समाज का दृढ़ सिद्धान्त बाल्यविवाह आदि कुरीतों को क़ायम रखने का है जिस्में किसी तरह हिन्दूजाति में कर्मठता और क्षमता न आने पावे—ये अपने कामों से औरों के मुक़ाबिले सदा दबी बिल्ली बने रहैं पुरानी कुरीतें जो कोढ़ के रूप में हिन्दू समाज की नस २ में व्याप्त हो रही हैं कभी साफ न हों जिस्में दासत्व की शृङ्खला न टूटै—इत्यादि भिन्न २ सिद्धान्तों का थोड़ा सा सारांश हमने बतलाया इतने को पहले काम में लाओ और उन के अनुसार चलो जब हम देखैं गे इतने सिद्धान्तों को तुम खूब समझ गये और उस्पर अमल करने लगे तो और बतलावें गे—

एक बड़ा पक्का सिद्धान्ती—

## ललितलता ॥

### एक क्षुद्र उपन्यास—बाबू रामप्रकाशलाललिखित—

मुर्शिदाबाद के प्रान्तवर्त्ती एक ग्राम में गोविन्दसाह नाम के एक जन विख्यात धनी थे—बाबू गोविन्दसाह के यहां कोठीवाली लेन देन और इलाकेगीरी का काम भी होता था इस लिये उक्त साह जी चुन २ कर सौके लगभग बैसवारे और भोजपुर के लट्ठबाज़ों को नौकर रक्खे थे—लट्ठबाज़ कहने से हमारे पढ़ने वाले समझ सक्ते हैं कि यह वृत्तान्त "आर्म्सऐक्ट" जारी होने के उपरान्त का है जिस सर्वनाशी ऐक्ट ने वीरसू भारतभूमि को निर्वीर कर डाला मरदानगी और पुरुषत्व का यहां लोप होगया तोप तुपक तलवार बलछी का चलाना जिन के लिये जब सपने के ख़याल होगये तब वे ही सब अब लट्ठबाज़ कहलाने लगे—एक रात को अचानक साह जी के घर डांकू लोग आटूटे आधी रात को इन लट्ठबाज़ और डाकुओं में खूब लाठी चली किन्तु अन्त में इन लठिहारों की हार हुई—दूसरे दिन मालूम हुआ कि साह जी के अगणित धन के एक अंश की भी हानि न हुई रात को साह जी के पुत्र नरहरि को कोलाहल के कारण नींद टूट गई ज्यों

हीं अपनी सेज से उठ बाहर आने लगे त्यों हीं डाकू धक्के मार केवाड़ तोड़ इन के सोने के कमरे में घुस आये—नरहरी अपनी स्त्री को इन डाकुओं से बचा रखने के लिये अग्रसर हुआ सही पर पीछे से किसी ने एक ऐसी लट्ठी जमाई कि यह झोंक में आय गिर पड़ा और ललितलता को ले डाकू लोग चम्पत हुये—

नरहरी को ऐसी गहरी चोट लगी कि एक महीने तक इस की मरहमपट्टी होती रही—इस बीच गोविन्दसाह अपनी पतोहू की कुछ सुध बुध न ली यद्यपि नरहरी को यह बात बहुत बुरी लगी पर वह अपनी चोट के सदमें के कारण सर्वथा अकर्मण्य रहा और अपनी स्त्री के शोधन की कोई उपाय न कर सका—शोक की आग में सन्तापित मन ही मन पड़ा २ झुलसता रहा—अपने बूढ़े बाप को बेअ-कली पर इसे क्रोध तो आता था पर शालीनता के कारण कि मैंने बाप का कभी मुकाबिला नहीं किया कुढ़ता हुआ मसोस कर रह जाता था—पतोहू का पता लगाने को गोविन्दसाह से कोई कुछ कहता था तो वह यही उत्तर देता था कि जिस्को डाकू ले गये और धर्म नष्ट होगया उस्का अनुसन्धान ही करके क्या होगा—

नरहरी ज्योंही चंगा हुआ घाव पुर जाने के उपरान्त चलने फिरने लायक हो गया पहले छिपे छिपे ललितलता का पता लगाता रहा कईएक दिन बाद लोगों में प्रसिद्ध हो गया कि गोविन्ददास का एकलौता बेटा नरहरी ने संन्यास धारण कर लिया—मुर्शिदाबाद से ५ कोस पर यहां के पुराने नौवाब का एक बाग़ है—एक दिन सन्ध्या समय यह संन्यासी इस बाग़ के एक कोने में खड़ा हुआ है जिस कोने को इसने अपने लिये चुना वह मानो अरण्य निर्जन स्थान का एक नमूना था—हवा के झकोर से लम्बे२ ताड़ वृक्षों के पत्तों की खड़खड़ाहट के अतिरिक्त दूर तक पक्षियों की आवाज़ भी कान में न आती थी—ऐसा मालूम होता था जिस किसी को जनसमाज से घिन होगई हो संसार के कुटिल कुटीचरों के कुचरित्र देखते २ जी ऊब गया हो और चंचल मन जो सदा अनेक विषयों पर चलायमान हुआ करता है उसे एकाग्र कर अत्यन्त दुरूह विषय की ओर रुजू किया चाहता हो उस्को इससे बढ़कर शून्य एकान्तस्थान और कहीं न मिलेगा—इस्की चेष्टा से मालूम होता था कि यह किसी की बाट जोह रहा है एक तो यह निर्जन स्थान जहां जाते दिन में भी भय मालूम होती थी दूसरे यह कि बाग के चारों ओर बीस २ कदम पर पहरे वाले हरदम तैनात रहते हैं ऐसी जगह यह तरुण संन्यासी क्योंकर पहुंचा इस्को अपने जीवन का अणुमात्र भी भय क्यों न हुआ—

थोड़ी देर बाद पगली के वेश में एक स्त्री वहां आकर खड़ी हुई युवक संन्यासी अत्यन्त आकुलता में भरा हुआ उसकी ओर दौड़ा ज्यों २ यह उसके समीप जाता था वह युवती दूर हटती जाती थी अन्त में एक वृक्ष की आड़ से अपना मुह छिपाय बोली मुझे मतछुओ मैं चाण्डालिनी तुम्हारे स्पर्श योग्य नहीं हूं युवक ने एक न सुना पागल सरीखा पास जाय उसका एक २ अंग चूमने लगा—दोनों की आंख से आंसू की धारा बहने लगी कुछ देर तक दोनों आपस में मिल फूट २ रोते रहे—युवक बोला अब तुम्हारे उद्धार का क्या उपाय करूं ? मैं तुम्हारे वियोग में इतने दिनों तक बड़ा कष्ट उठाता रहा और बड़ी मुशकिलों से इस बागीचे की छार दिवाली डांक कर आयाहूं और किसी तरह लौट भी जाउंगा पर तुम किस तरह इसके बाहर जा सको गी—तरुणी कुछ उत्तर न दै केवल रोती रही—तरुण बोला इस तरह अधीरज होने से तो काम न चलेगा तुम्हारे उद्धार का एक मात्र उपाय केवल साहस है—तरुणी ने तब कहा अच्छा तो मुझे जो आज्ञा हो वही करूं—इस ने कहा हमने एक उपाय सोचा है—कल आधी रात को हम यहां आवें गे और एक रस्सा अपने साथ लेते आवें गे उसी को थांव तुम बाहर कूद जाना अब यहां हमारा अधिक ठहरना अच्छा नहीं —यह कह यह वहां से चलदिया तरुणी भी जिधर से आई थी उधर ही को फिर लौट गई—शेष—

## अमृतबाज़ार पत्रिका की भूल ॥

कालेजों में फ़ीस बढ़ा देने के लिये पत्रिका के सम्पादक पश्चिमोत्तर के छोटे लाटसाहब के मन्तव्य को कई तरह पर दूषित कर लिखते हैं कि लाटसाहब ने जो यह कहा कि बंगाल और पंजाब में फीस बढ़ाई गई तो यहां भी क्यों न बढ़ाई जाय इसपर पत्रिका के संपादक कहते हैं बंगाल में गवर्नमेंट सात लाख शिक्षाविभाग में सालाना खर्च करती है यहां पश्चिमोत्तर में केवल सवालाख कुल तालीम का खर्च है—सिवाय इसके बंगाल में इतने स्वच्छन्द कालेज हैं कि गवर्नमेंट की सहायता बिना भी वहां विद्या की वृद्धि में कोई हानि नहीं पहुंच सक्ती—पश्चिमोत्तर और अवध अभी विद्यावृद्धि में इतना हटा हुआ है कि फ़ीस का बढ़ाना मानो तालीम का द्वार रूंध देना है इत्यादि—हम कहते हैं सम्पादक महाशय भूल मे पड़े हैं इतने बड़े और प्रसिद्ध सम्पादक होकर भी गवर्नमेंट के स्वरूप को नहीं पहचानते—क्या गवर्नमेंट हिन्दुस्तान का शासन हिन्दुस्तान के

फाइदे के लिये कर रही है बल्कि अपने के फाइदे के लिये-विलाइत में जो तालीम सस्ती है तो वह अपना घर है अपने घर में चिराग सब जलाते हैं दूसरे के घर में चिराग बालने की ज़रूरत क्या है फिर विलाइत के मुकाबिले का हिन्दुस्तान भी होजाय यह क्योंकर सम्भव है- " चेनिस्बत खाकरा बआलमेपाक "

## आल्हारामायण ॥

पं० चतुर्भुजशर्मा प्रधानाध्यापक गवर्नमेंट माडेल स्कूल जोरी कृत-सातोंकाण्ड छपकर तैयार है ५) में पूरा सातोंकाण्ड सङ्ग्रह हो सक्ता है-आल्हाछन्द में रामायण अब तक किसी ने नहीं बनाया था उक्त पण्डित जी को धन्यवाद है इन की जहां तक सहायता हो सके हम सब लोग करें-इस बात को हम पहिले भी कह चुके हैं ग्रन्थकार को नये तुलसीदास कहें तो उचित है-

## कविवर विहारीलाल का जीवनचरित्र ॥

## पारसियों का संक्षिप्त इतिहास ॥

पहली पुस्तक नागरी प्रचारिणीसभा के सभासद् बाबू राधाकृष्णदासलिखित दूसरी उस सभा के सभासद् पं० रामनारायण मिश्र लिखित—पुस्तक ये दोनों बड़ी उत्तम हैं इसके लिखने वालों ने इसके वृत्तान्त के संग्रह में परिश्रम किया है भाषा भी इसकी सरल और शुद्ध हिन्दी है और नागरी प्रचारिणी सभा के उपयुक्त है मूल्य दोनों का मै पोस्टेज ।-) है-

## सीताचरित्र नावल प्रथमभाग ॥

मुं० दयाराम तहसीलदारकृत स्त्रीशिक्षा विषयक उत्तम २ कहानी और स्त्रीधर्मसम्बन्धी उपाख्यानयुक्त सरल मनोहर पुस्तक जिस्में वर्त्तमान स्त्रियों के कुचरित्रों का वर्णन कर विद्यावती नारियों के चरित्रद्वारा शिक्षिता करके दिखाई है अक्षरमात्र पढ़ी हुई स्त्रियां जो एक बार ध्यान देकर पढ़ जायें तो घर का प्रबन्ध भलीभांत कर सकती हैं और पुरुषों को भी अत्यन्त लाभदायक है किञ्चिन्मात्र अवलोकन से चित्त यही चाहता है कि बार २ आद्योपान्त देखा करें । मूल्य ॥।)

नारायणदास वैद्य

परमानन्दकम्पनी, सहरारोबाग-प्रयाग

# हिन्दी-प्रदीप

## मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥


जि० १८सं० ११-१२- } प्रयाग { जुलाई-अगस्त १८९५

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
तुलसीराम स्वामी के प्रबन्ध से
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्दमैपोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥
२०-१२-९५

# हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १८ संख्या ११–१२ | प्रयाग | जुलाई–अगस्त– सन् १८९५ ई०


## ज़बान–

कहने को मनुष्य के शरीर में ५ इन्द्रियां हैं और यह पुतला उन्हीं ५ कर्मेन्द्रियों का बना है किन्तु उन २ इन्द्रियों का प्राबल्य केवल अपने विषय में है अपना विषय छोड़ दूसरे के विषय में वे कुछ अधिकार नहीं रखतीं जैसा कर्णेन्द्रिय का अधिकार शब्द पर है तो कान को रूप से जो नेत्र का विषय है कुछ सरोकार नहीं है–ऐसा ही नेत्र को त्वगिन्द्रिय से जिस्का अधिकार स्पर्श पर है कुछ सरोकार नहीं है कड़ी वस्तु देख नेत्र को न कुछ दुःख मिलता है न मुलाइम को देख कुछ सुख—नासिका का विषय सुगन्धि दुर्गन्धि है शेष ४ शब्द स्पर्श रूप रस से नासिका को कोई प्रयोजन नहीं है—पर ज़बान सब इन्द्रियों में इतनी प्रबल है कि यह ज़ाइका लेने के समय सिवाय रस के जो इस्का प्रधान विषय है शब्द स्पर्श रूप गन्ध सबों को अपने साथ समेटती है–भोजन के समय ज़रा भी दुर्गन्धि हो या खाना जिसे हम खा रहे हैं गन्धाता हो कभी न खाया जायगा खाने की कौन कहे मिचलाई आने लगेगी जो पेट में है वह भी बाहर निकल पड़ेगा–उन की तो बात ही निराली है जिन्हें दुर्गन्धि ही सुगन्धि है हमारे साहबान अंगरेज़ों के साफ़ और सुथरे दस्तरख़ान पर चमाचम रकाबियों में जब तक महीनों की सड़ी मांस या मछली और पनीर न रक्खी हो तब तक लज़्ज़त और ज़ाइका नहीं जिस्की फ़क्फ़क पाय दूर ही से नाक सड़ती है–जितनी ही ज़ियादह फ़क्फ़क हो उतना ही ज़ियादह ज़ाइका–किन्तु सफ़ाई को इतना अधिक अधिकार दिया गया है कि होटलिये हिन्दुस्तानी भाई भी उसी सफ़ाई पर मोहित हो साहबों की जूठी रकाबियों पर मक्खी सा जा टूटते

हैं–इलाइची केउड़ा केशर आदि सुगन्धित द्रव्य इसी प्रयोजन से भोजन के पदार्थों में मिलाये जाते हैं जिस्से उस्में सुगन्धि आजाय और सुगन्धित भोजन मामूली भोजन से सवाया अधिक खाया जाता है–अब दूसरी बात नेत्र को जिह्वा से क्या सरोकार है–साफ़ और स्वच्छपदार्थ देखते ही जीभ से पानी टपकने लगता है स्वादिष्ठ भोजन कसीफ़ और मैला तो हो भाव दुष्ट होने से चित्त उस्पर इतना नहीं लहलोट होता जितना साफ़ और स्वच्छपदार्थ पर जो नेत्र को भावता हो–इसी तरह स्पर्श सुख का सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभव जैसा जीभ कर सकती है वैसा शरीर के दूसरे हिस्से नहीं कर सक्ते इसी से जीभ का रसना यह नाम सब भांत सार्थक है–ईश्वर न करैं रसना किसी की रस के अनुभव में तेज़ और चोखी हो; चटोरी जीभ लाखों रुपया चाट बैठती है और हविस उस्की नहीं बुझती–न जानिये कितने लोग केवल चटोरी जीभ के कारण लाख का घर खाक में मिलाय सब चाट बैठे–जुआ शराब ऐयाशी चटोरापन इन चारों ऐबों में किसी एक का हो जाना बरबादी के छोर तक पहुंचाने के लिये काफ़ी है–दैव के कोप से जिन्में चारो हैं उन की सपूती और लियाक़त का भला क्या कहना–

तावज्जितेन्द्रियो न स्याज्जितान्येन्द्रियः पुमान् ।
न जयेद्रसनं यावत् जितं सर्वं जिते रसे ॥

तब तक मनुष्य जितेन्द्रिय नहीं हो सक्ता चाहो और सब इन्द्रियों को बश में कर भी लिया हो जब तक रसना को अपने बश में नहीं किया । एक जिह्वा को क़ाबू में रख बाक़ी और इन्द्रियां क़ाबू में आसक्ती हैं–और भी–

जिह्वयातिप्रमाथिन्या जनो रसविमोहितः ।
मृत्युमृच्छत्यसद्बुद्धिर्मीनस्तु बडिशैर्यथा ॥

चटोरी जीभ के कारण मनुष्य मूढ़ बन मछली के समान जिह्वा के बश में पड़ नष्ट हो जाता है–

जितने खाद्य पदार्थ हैं उन का स्वाद या ज़ाइक़ा जिह्वा के अग्रभाग से क्षण भर के संयोग का है गले के नीचे उतरा कि स्वादिष्ठ और बेलज़्ज़त भोजन दोनों एक से हैं–

आस्वाद्यस्य हि सर्वस्य जिह्वाग्रे क्षणसंगमः ।
कण्ठनाडीमतीतं च सर्वं कदशनं समम् ॥

केवल स्वाद चखना जीभ का फ़ाइदा हो सो नहीं वरन शरीर के और २ अंग की अपेक्षा इसके गुण या दोष भी सब से अधिक प्रबल हैं—बड़े से बड़ा फ़ाइदा और बड़े से बड़ा नुक़सान दोनों इसके द्वारा हो सक्ते हैं—गांठ का एक पैसा भी बिना गंवाये मीठी ज़बान लाखों का फ़ाइदा सहज में कर सक्ती है—"काग का को धन हरै कोयल का को देय। मीठो वचन सुनाय के यश अपनो कर लेय"—नुक़सान भी आदमी कड़ुई या बदज़बानी से इतना उठाता है कि सब उमदा सिफ़तों के होते भी लोग कटुभाषी या बदज़बान के पास जाते हिचकते हैं कटहा कुत्ता सा वह सबों से बरकाया जाता है—ज़बान को समस्त सभ्यता और शाइस्तगी का सारांश कहना अनुचित नहीं है अब तक जो कुछ तरक़्क़ी संसार में हुई है उसका द्वार ज़बान ही है—इन्सान और हैवान में यही तो अन्तर है कि जानवर हम लोगों की तरह अपने ख़याल ज़बान से कह कर नहीं अदा कर सक्ते नहीं तो और सब इन्द्रियों के लालन पालन में आहार निद्रा भय मैथुन आदि के द्वारा पशु और मनुष्य की समता होने में कौनसा अन्तर बच रहा—लिख कर अक्षरबद्ध रख छोड़ने का क्रम तो बहुत दिनों के बाद निकला प्रारंभ में ज़बान से कहना और कान से सुन उसे याद रखना ही बहुत दिनों तक जारी रहा। ज्यों ज्यों लोग अधिक सभ्य होते गये हिन्दी की चिन्दी निकालने लगे तब वे ही सूत्र जो ज़बान से कहे गये उन पर भाष्य शरह और कमेंटरी होती गई और उन्हें बृहत् होने के कारण स्मरण शक्ति के बाहर समझ लोगों ने संकेत के ढंग पर अक्षर निकाले और लिख कर रख छोड़ने लगे—तात्पर्य यह कि यावत् विद्या और ज्ञान पहले जिह्वा से कह कर प्रकट न किये गये होते तो केवल लेख शक्ति से कुछ न होता न हमारी सभ्यता इस छोर तक पहुंचती—ज़बान को दबाना क्रोध को दबा रखने का एक ही उपाय है कई बार की आज़माई हुई बात है कि कैसा ही क्रोध आया हो चिल्लाने के एवज़ धीरे २ बोलो क्रोध क्रम २ आप ही शान्त हो जायगा—जीभ समाज को कहां तक लाभदायक हुई सो दिखला चुके अब धर्म सम्बन्ध में जिह्वा पर लगाम रखने की कितनी आवश्यकता है सो दिखलाते हैं—सच तो यों है कि जीभ पर बिना कोड़ा रक्खे

धर्मिष्ठों को धर्मधुरन्धर बनने का दावा करना सर्वथा व्यर्थ है—वह अवश्य धोखे में पड़ा है जो अपने को धर्मिष्ठ तो मानता है पर जीभ को अपने क़ाबू में नहीं किया—झूंठ बोलना झूंठी गवाही देना चुग़ली बदगोई इत्यादि से बचना ही जीभ पर लगाम नहीं कहलावेगा क्योंकि झूठी गवाही चुग़ली गाली इत्यादि बड़े २ पापों का विषय निराला है क़ानून फ़ौजदारी " क्रिमिनल ला " के मद्द में उस की गिनती है और सर्कार की ओर से उस के लिये दण्ड नियत हैं जिस्पर जानबूझ शामत सवार होगी वही ऐसे २ अपराधों में अपने को फसाय क़ैद और जुरमाने का सज़ावार बनावेगा—बल्कि ज़बान में लगाम से प्रयोजन गप्पी और वाचाट का है जिसे अपनी गप्पाष्टक के समय आगे पीछे का कुछ ख़याल नहीं रहता न अपनी या पराये की हानि लाभ का—जिन को गप्प हांकने की आदत हो गई है वे इसे अपने लिये दिलबहलाव मानते हैं इस्में किसी तरह ऐब या पाप नहीं समझते और जब उन के गप्प का विषय चुक जाता है कोई बात नहीं रहती जिस्पर वे अपने गप्प को काम में लावें तब वे कुछ ऐसी कल्पना किया करते हैं जिस्से दूसरों को बदनाम करैं जौट उड़ावैं किसी का कुछ कलंक उद्घाटन करैं इत्यादि। चुप चस्से नहीं रहा जाता कुछ कहना अवश्य " मुखमस्ति च वक्तव्यं शतहस्ता हरीतकी " मुख में जीभ ईश्वर ने दिया है तो कुछ कहना चाहिये—हां सुनिये सौ हाथ की हर्रै—ऐसे लोग जिन्हें बहुत बकने का अभ्यास हो गया है अपने बकवाद के जोश में वह बात कह डालते हैं जो न कहना चाहिये या जिसे कह कर वे पीछे पछताते हैं—यहां तक बेफ़ाइदा बकवाद उन्हें पसन्द आती है कि जब तक मन मानता बक न लें अघायं गे नहीं जैसा स्त्रियों में बहुधा ऐसी होती हैं कि २४ घण्टे में कम से कम ६ घण्टे जब तक लड़ न लेंगी उन्हे अन्न न पचैगा—नौवाबों में क़िस्सेगो इस क़िस्म के रहते थे कि दिन भर कहो बकते रहैं उन के क़िस्से की लर न टूटै चण्डूख़ाने में चण्डूबाज़ों की गप्प मशहूर हुई है—इन बकवादियों की भी कई क़िस्में हैं कितने तो ऐसे हैं कि उन की चाहो कोई सुनै या न सुनै उन को बकजाने से काम कितने ऐसे हैं कि उन के बक २ का किसी ने निरादर किया कि उन्हे क्रोध आजाता है बिगड़ खड़े होते हैं—कितने ऐसे हैं कि अपनी बकवाद को रंगीन और दिलचस्प न समझ सुनने वाले को नापसन्दीदा जान चट उस्में कुछ ऐसी ईजाद कर देते हैं कि थोड़ी देर के लिये

सबों का ध्यान उस ओर मुख़ातिब हो जाता है—इसे वे एक हुनर मानते हैं और इस ढंग से बात करते हैं कि उन की सरासर झूठ बात सब लोग सच मान लेते हैं—जीभ को न दबाना अनेक बुराई और क्लेश का कारण है महाभारत ऐसा सर्वनाशी संग्राम इसी जीभ के न दबाने की बदौलत किया गया—द्रौपदी ने यदि दुर्योधन को अन्धे के अन्धे होते हैं इस मर्मवेधी वाक्य को कह मर्म ताड़न न किया होता और दुर्योधन को पाण्डवों से ख़ार न पैदा हुई होती तो परिणाम में १८ अक्षौहिणी सेना काहे को कट मरती जिस्का धक्का जो हिन्दुस्तान को लगा बल्कि जैसा कारी घाव इस्के शरीर में हो गया उस्की मरहमपट्टी आज तक न हो सकी—इन्हीं सब कारणों से सिद्ध हुआ मनुष्य अपनी जीभ पर जहां तक चौकसी कर सके और उस्को दबा सके दबावे इस्पर चौकसी रखने से अनेक भलाइयां हैं और स्वच्छन्द कर देने से सब तरह की बुराइयों की संभावना है—जीभ को दबाना और चौकसी रखने से यह प्रयोजन नहीं है कि हम सर्वथा मूकभाव धारण करलें किन्तु चुप रहने के भी मौके हैं—विद्यावृद्ध वयोवृद्ध या संसार की अनेक ऊंची नीची बातों के अनुभव में जो अपने से अधिक हैं उन के सामने शालीनता के खयाल से चुप रहना होता है जिस्में यह कोई न समझै कि यह छोटे मुह बड़ी बात कह रहा है—बहुत बकने वालों में कितने ऐसे हैं कि घंटों तक बक जाते हैं पर उन के बात करने का खास मतलब क्या था कुछ समझ में नहीं आता इस तरह पर बात करने वालों की कई क़िस्में हम यहां पर गिना सकते हैं—एक वे हैं कि हंसते जाते हैं बात करते जाते हैं "हस्तुर्मूर्खः" "हसन्न जल्पे" इत्यादि वाक्य साक्षी हैं कि बात कहने का यह क्रम मूर्खता की पहचान है—एक सखुन तकिया वाले होते हैं दस लफ़्ज़ का एक जुमला होगा तो ५ लफ़्ज़ उस्में उन के तकिया कलाम के होंगे इन्में जिन्हें गाली की सखुन तकिया पड़ जाती है उन की घिनौनी बात कान को महाअसह्य मालूम होती है—एक वज्रभाषी होते हैं बात उन के मुख से क्या निकली मानो गाज गिरा ऐसों की आदत होती है कि जहां कोई बात बनती हो तो ये वहां पहुंच उसे बिगाड़ देने में कसर न करेंगे "अतीव रोषा कटुका च वाणी नरस्य चिन्हं नरकागतस्य" उन की वज्रभाषी कटु वाणी इस बात का चिन्ह है कि ये नरक झेल कर आये हैं और मर कर फिर नरक में जायगे—इसी के विरुद्ध एक ऐसे भी सुकृती जन हैं

जो अपनी मीठी बोली से मन खींच लेते हैं धन्य हैं वे स्वर्गगामी जन इत्यादि जिह्वा के सम्बन्ध जो कुछ वक्तव्य था हमने सब कह सुनाया—

# गोमसूर्याधान

## "टीका लगाने का प्रकार"

शीतला के उपद्रव से बालक को बचाने के लिये जिस उपाय से गौ के स्तन से शीतला का बीज लाया जाता है उसे गोमसूर्याधान कहते हैं भाषा में भी मसूरिया माता कहते हैं जो गोमसूर्य का अपभ्रंश मालूम होता है यह गो शीतला दूधार गौ के स्तन की ढेपी पर वा स्तन में प्रगट होती है और उसका पानी या पीव बालक के देह पर लगाने से शीतला के उपद्रव की शान्ति रहती है—भारतवर्ष में गोशीतला से टीका लेने का प्रचार प्राचीन काल में था उसके कुछ प्रमाण मिलते हैं यदि इस प्रमाण को आधुनिक विद्वानों की कल्पना न मान लें—यथा ॥

"धेनुस्तन्यमसूरी या नराणां च मसूरिका ।
शस्त्रेणोत्कृत्य तत्पूयं बाहुमूले च धारयेत् ।
तत्पूयं रक्तमिलितं स्फोटज्वरकरं भवेत्"—

अर्थात् गौ के स्तन में और मनुष्य के देह में जो शीतला निकली हो उसे शस्त्र से निकाल उसकी पीव बालक की भुजा के सिरे पर लगा दे उससे स्फोट ज्वर होता है उपरान्त शीतला के दाने निकल आते हैं—

ऊपर के श्लोक को कल्पित हम इस लिये कहते हैं कि सुश्रुत भावप्रकाश आदि ग्रन्थों में कहीं इसका प्रमाण नहीं पाया जाता बल्कि भावप्रकाश में तो वही सब खुराफात बातें शीतला का स्तोत्र और जप आदि लिखे हैं जैसा इन दिनों हो रहा है—हिन्दुस्तान के लोगों को टीका लगाने का प्रकार मालूम था इसका मोतबिर प्रमाण कहीं नहीं मिलता—हमारे देश के लोगों को इसका ज्ञान था यह बात वैसी ही है जैसा रेल तार इत्यादि वैज्ञानिक विषयों को लोग वेद से सिद्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं—इन सब नई ईजादों का धन्यवाद केवल यूरोप के लोगों को है हिन्दुस्तान की तो धरती ही इस किस्म की नहीं है कि यहां के लोग ईश्वर और परमार्थ का पीछा करने के सिवाय और उसी का अंग

खान पान की बारीकी आचार विचार की छिलावट आदि छोड़ ऐसी २ बातों की खोज में कभी प्रवृत्त हुये हैं—जैसा इस श्लोक को धन्वन्तरि संहिता का लिख दिया है वैसे ही अनेक श्लोक और वेद की ऋचायें कल्पित होती जाती हैं जिन में यूरोप के समस्त विज्ञान और उन्नीसवीं शताब्दी की अनेक सभ्यता की बातों का प्रमाण दिया जाता है कि ये सब बात हमारे यहां प्राचीन समय में रहीं—गवर्नमेंट के प्रबन्ध से टीका लगाने की चाल कुल हिन्दुस्तान में अब फैल गई है और शीतला को जो लोग देवी मानते थे उसकी पोल खुल गई सहस्रों बालक जो इस महादारुण रोग के कारण मर जाते थे बच गये ओझा और पुजेरियों का भण्डा आद्ध हो गया—तरह तरह का भय दिखलाय जो यहां की मूर्ख प्रजा को खातिरख़ाह नोचते खसोटते थे अब बेवश हो गये—ब्रूस साहब ने लिखा है कि पारस देश के लोगों में टीके की चाल पहले प्रचलित थी और हंबोल्ट साहब कहते हैं इसकी चाल ऐंड़ीस पर्वत की पर्वतस्थलियों में बसने वालों के बीच सुनी गई है—ऐंडीस पर्वत योरप के स्विटज़रलैंड आदि देशों के बीच हो कर गया है—

इङ्गलैण्ड के ग्लोसेस्टर शायर आदि कई परगनों में के ग्वालों में यह बात देखी गई कि उन को शीतला नहीं निकलीं इसका सबब जो दरियाफ़्त किया गया तो मालूम हुआ कि दूध दुहने के समय गोथन शीतला के दानों का लस उन के अंग में लग शरीर के भीतर प्रविष्ट होकर इस व्याधि से उन्हें मुक्त कर रक्खा—कुछ ऐसा भी पता लगता है कि सन् १७९८ ईस्वी में डाक्टर जेनर ने इसकी अनेक परीक्षा के उपरान्त पहले पहल सन् १७९९ की १८ मई को एक बालक को गोमसूर्याधान संस्कार किया और कृतकार्य भी हुये—तब से आज तक बहुत से प्रसिद्ध डाक्टर इस विषय की छान बीन करते गये और करते जाते हैं—टीका लगाने में कृतकार्य होने के लिये बच्चे का स्वास्थ्य लस की अवस्था अर्थात् लस जिसका प्रयोग टीका में किया जाय वह कैसे बालक का है रोगी बालक हो तो उसका लस कभी न ले और यह लस अच्छी तरह लगाया गया है कि नहीं इन सब बातों पर विशेष ध्यान रहना चाहिये—बच्चे का नीरोग रहना सर्वथा उचित है किन्तु किसी प्रकार के रोग के रहते भी और एक बार शीतला निकल चुकी हों तौ भी टीका दिया जा सकता है—उदरामय अर्थात् पेट का कोई रोग चर्म रोग विसर्पिका इत्यादि कई प्रकार के रोगों के रहते भी टीका दिया जा

सकता है—एक महीना वा ६ सप्ताह की अवस्था तक के बच्चे को यदि वह हृष्ट पुष्ट और नीरोग है तो टीका दिया जा सकता है—१८५६ से ६१ तक में २०५९० मृत्यु शीतला के कारण इंगलैंड में हुई उन्में ५०१० एक वर्ष से कम के बालक थे और टीका इन्में से किसी को नहीं लगाया गया था—बाप मा को यदि उपदंश गरमी या सुज़ाक का रोग रहा हो तो लड़के को भी उस रोग के होने की संभावना हो सक्ती है इससे बच्चा जिसके बाप मा को उपदंश रोग हो उसकी अवस्था जब तक ३ महीने की न हो जाय तब तक टीका न दे—दांत निकलने के समय बहुत तरह के रोगों के होने की संभावना रहती है और इस समय टीका लगाने से बच्चे को बहुत कष्ट होता है इससे ४ या ५ महीने के भीतर ही टीका लगा देना उत्तम है—

गोथन शीतला का थोड़ा भी रस सब से उत्तम है दाने में पीव आजाने और उसके चारो ओर ललाई के प्रगट होने के पहिले अर्थात् टीका देने के ६ या ७ दिन के बीच रस लेना चाहिये क्योंकि उपरान्त लेने से उसका असर कम हो जाता है बल्कि वह रस अनर्थकारी होता है जैसा उत्तम रस बच्चे के शीतला के दाने का होता है वैसा बड़े लड़के के शीतला के दाने का न होगा और युवा का तो और भी कम होगा—जिस बच्चे की त्वचा काली और निर्मल होती है उसका रस बहुत उत्तम होगा—सुई वा छुरी के नोक से चमड़े को छेद उसमें बीज भर दे पुराना क्रम गोदना गोदने का यही था—छुरी के मुख से चमड़ें को खरोचने से थैली के समान गढ़ा हो जाता है उसी में बीज को भर दे—लिखे हुये क्रम के अनुसार गोथन शीतला के बीज का टीका देने से दूसरे दिन घाव का स्थान कुछ ऊंचा हो जाता है—तीसरे और चौथे दिन ललाई सी ला जाती है पांचवें दिन स्पष्ट गोल कोश या दाना देख पड़ता है—इस कोश के नीचे और बगल का हिस्सा ऊंचा हो कर आठवें दिन निर्मल जल से भर जाता है और दाना लाल पड़ता जाता है—नवें और दशवें दिन इसकी ललाई बढ़ती जाती है एकसे तीन इंच लों चौड़ा हो जाता है और उसके पास के स्थान कुछ कड़े होफैल जाते हैं थोड़ा दरद भी इसमें होता है—ग्यारहवें दिन से इसकी गोलाई घटने लगती है, और दाने सूखने लगते हैं २१ दिन बाद पोढी पपरी पड़ जाती है पपरी के उकिल जाने पर जो चिन्ह रहता है उसमें ६ या ८ छोटे २ गढ़े दिखलाई देते हैं—बहुधा ऐसा भी देखा गया है कि एक बार के टीका लगाने से शीतला का उपद्रव शान्त नहीं हुआ इसलिये

दो या तीन बार टीका लगाना उचित है परन्तु एक बार के टीका लगाने पर दूसरे बार जो शीतला निकली हैं तो ज़ोर उतना अधिक नहीं रहा—विशेष कर जब चिन्ह मिट जाय तो दूसरी बार फिर टीका देना चाहिये—गोथन शीतला का लस स्वाभाविक शीतला के लस से उत्तम है बल्कि शीतला से रक्षा होने की शक्ति गोथन शीतला ही के बीज में है स्वाभाविक शीतला के बीज में नहीं—वसन्तऋतु में शीतला का अधिक ज़ोर रहता है इस्से इसे वसन्तरोग भी कहते हैं—टीका लगाने का सब से अच्छा मौसिम जाड़े का है—हरिमङ्गल मिश्र

## सर ऐंटोनी मेग्डानल—

नये लाट साहब सर ऐंटोनीमेग्डानल बड़े नेकमिज़ाज और प्रजातितैषी सुनने में आते हैं इन के नेक होने का पहिला पक्का सुबूत तो एक यही है कि पायोनियर ने खुशी नहीं ज़ाहिर किया बल्कि इन की ओर से उदासीन भाव धारण किये है—तकरुरी के पहिले जैसा और २ सिविलियनों की तारीफ़ में कालम का कालम रंग डालता था वैसा अब की बार इस ने नहीं किया—मेगडानल साहब का यहां के लाट के पद पर सुशोभित होना पश्चिमोत्तर और अवध के सिविलियनों को नहीं अच्छा लगा उक्त साहब बंगाल के सिविलियनों में हैं—एक २ प्रिसीडेंसी के सिविलियन आपस में ऐसी गुट बांधे रहते हैं और ऐसा मिले रहते हैं कि उन्हें अपने मन की करने में पूरी ताक़त हासिल रहती है यही कारण है कि इधर के कई एक लाट ऐसी बात कर गुज़रे जो प्रजा के सर्वथा विरुद्ध रही जिस्से कोई उन से खुश न रहा—इसी लिये गवर्नमेण्ट ने अब इस पालिसी को उचित समझा कि ऊंचे ओहदे के सिविलियनों की एक प्रेसीडेन्सी से दूसरी में तबदीली हो जाया करे जिस्में सिविलियनों का ज़ोर घटा रहे—

मेग्डानल साहब नागपूर में मध्यप्रदेश के चीफ़कमिश्नर भी रह चुके हैं और वहां सब तरह पर नेकनाम रहे सुनते हैं मेजिस्ट्रेट और कलक्टर के ओहदे को इन्हों ने वहां अलग कर दिया है एक ही आदमी को दोनों इख़तियार मिलना प्रजा के लिये अवश्य भलाई का बाइस नहीं है—बंगाल में ६ महीने वहां के लफ़टिनेण्टगवर्नर सरचार्ल्स इलियट की जगह क़ायम मुक़ाम भी ये रहे हैं—अमृतबाज़ारपत्रिका ने इन की प्रशंसा किया है इस्से मालूम होता है कि बंगाल के लोग भी इन से खुश रहे बंगाल वाले जब इन से प्रसन्न रहे तो इन के भले

होने में अब कोई सन्देह न रहा क्योंकि बंगालियों को खुश रख अपनी मूठी में किये रहना सहज बात नहीं है-अस्तु अब उक्त साहब हम लोगों के प्रभुवर नियत होके आये हैं हम सब लोग उचित न्याय के चिरकाल से प्यासे हैं चातक के समान स्वाती के बूंद के तुल्य ताक रहे हैं कि कोई तो ऐसा आता कि अनेक दोषदूषित शासन के बोझ से पिसे हुये हम सब लोगों को आराम पहुंचाता—नये लाट साहब से हमें आशा होती है कि इन का पक्षपातशून्य शासन हमें सुख पहुंचावेगा—अंगरेज़ और हिन्दुस्तानियों के मुक़ाबिले यहां के लोगों का पक्ष करें और जाति पक्षपात के कारण इन्साफ़ में बट्टा न लगने दें ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं--सर ऐंटोनीमेगडानल उन्हीं थोड़े लोगों में एक हैं—बंगाल की छः महीने की लफ़्टिनेंटगवर्नरी में दो एक मौक़े ऐसे आपड़े थे जिस्में इन्हों ने उचित न्याय किया और अपने एक सिविलियन भाई को पदच्युत कर आगे के लिये उस्की तरक़्क़ी रोक दी—तालीम हमारे यहां महामंहगी कर दी गई है उस्को सस्ता करने की हम को सब से अधिक ज़रूरत है-केडिल साहब अपने थोडे से कामयमुक़ामी के समय में सदा याद रहने लायक़ एक बात हमारे साथ करी तो गये कि कालेजों की फ़ीस पहले से डेउढ़ी कर तब हम लोगों से विदा हुये-श्रीमान् मेगडानल साहब से सविनय प्रार्थना है कि इस ओर ध्यान दें और तालीम को जहां तक हो सके सस्ती कर दें जिस्में थोड़ी पूंजी वाले अपने लड़कों को ऊंचे दरजे की शिक्षा दे सकें-गवर्नमेंट व्यर्थ को अपने ऊपर कलङ्क लेती है कि वह सर्वसाधारण को विद्यादान नहीं दिया चाहती—पढ़ लिख जीविका न पाने के कारण लोग आप ही हताश होते जाते हैं पढ़ने की ओर अब सर्वसाधारण का वह अनुराग नहीं देखा जाता जैसा प्रारम्भ में था—पढ़े लिखे लोगों को जैसी रोज़ी की क़िल्लत है उस्से ऐसा मालूम होता है शिक्षा के स्रोत का प्रवाह अब आप ही पतला पड़ जायगा तब सर्कार नाहक़ उस्के घटाने की चेष्टा कर रही है-

## सुगृहिणी-

पण्डितों ने अपनी पोथियों में स्त्रियों को हर तरह पर घटाया है "स्त्रियां बड़ी बेईमान होती हैं कपट की कठपुतली हैं हृदय इन का छूरे की धार के समान होता है बुद्धिमान् इन का विश्वास कभी न करै इत्यादि २" चञ्चला, अबला, प्रबला, भीरु, आदि विशेषण इन के नामों के आगे लगाय जहां तक

निन्दा करते बन पड़ा करते गये उन के यावत् गुणों को मटियामेट कर पुरुषों को उन के मुक़ाबिले सिरताज किया और स्त्रियों को सिवा लौंडी और दासी बनाय रखने के उन्हें किसी काम ही की न रक्खा अपने आधीन रख सब तरह का अत्याचार और ज़ुल्म उन पर करना रवा और उचित समझा—हम इन पण्डितों को कैसे समझावें कि आप लोग भूल में पड़े हो जिन्हें आप चञ्चला भीरु और अविश्वास के योग्य मान बैठे हो वे आप के घर की शोभा हैं संसार की सार पदार्थ हैं—दारुण घोर विपत्ति और अनर्थ जिन्में पड़ मर्द पस्तहिम्मत और किंकर्त्तव्यतामूढ़ हो जाता है और अपने को मिट्टी में मिला मान लेता है उन्में स्त्रियां हतोत्साह न हो निःशंक स्थिरचित्त रह बड़े २ दुःख और मुसीबतों के झकोर को सहती हुई घर के प्राणियों को दिलासा हर तरह पर सहारा और आराम पहुंचाती हैं—जिस कसौटी में कसे जाने पर पुरुष फिसल कर भरे मुह गिरता है उस्में ललना जन नेकचलनी का नमूना दिखलाते हुये पर्वत की शिला सी रह अपने शुद्ध पवित्र चरित्र पर निर्भर हो बेदाग़ रहती हैं—

एक बार एक बड़े पुराने दोस्त से भेंट हुई आशीष प्रणाम और मामूली बात चीत के उपरान्त दोस्त ने कहा भाई तुम बड़े भागवान् हो गृहस्थी न रख बहुत तरह की फ़िक्र और तरद्दुद से बचे हो हम लोगों के लिये घरगृहस्थी भी बड़ी झंझट है उन का जीवन धन्य है जो निहंग लाड़िले नोन तेल लकड़ी की चिन्ता से बरी हैं—

मित्र जी का उदास और मुतरद्दिद चेहरा देख उन के साथ हमदरदी तो मुझे ज़रूर हुई किन्तु कुछ तो चुहल के ख़याल से और कुछ दोस्त साहब को बेवकूफ़ समझ उन्हें बनाने की नीयत से मैंने कहा आप क्यों उदास और फ़िक्रमन्द हो रहे हो—क्या हमारी भाभी साहबा आप की ख़िदमत से इनकार करती हैं—आप तो लड़के बाले वाले हो बाहर कैसा ही तरद्दुद और फ़िक्र में डूबे हो घर पहुंच छोटे २ बच्चों की तोतरी मीठी बोली सुनते ही कलेजा दह हो जाता है सब चिन्ता और फ़िक्र भूल जाती है—मन कैसा ही उदास हो घर वाली ने एक बार मुसकिरा कर प्रेमपूर्वक कटाक्ष से देख दिया मानो जन्म सफल हो गया स्वर्ग सुख तुच्छ और फीका मालूम होने लगता है—इसी मतलब से गृहस्थी की जाती है कि घर के सब लोग मिलकर उस बोझ को हलका किये रहैं जिस्का उठाना एक आदमी के लिये बड़ा मुशकिल है—इस तरह पर अपने दोस्त को मैं देर तक

टटोलता रहा पर उन की उदासी का सबब न खुला—बड़ी देर के बाद अन्त को कुछ ऐसा उन्हों ने ज़ाहिर किया कि मित्रजी को रोज़गार करने का हौसिला चर्राया तो कलकत्ते में जाय दोटकिया चौटकिया गवर्नमेंट पेपर का व्यौपार करने लगे—दोस्त साहब को रुपया पैदा करने की हवस तो बड़ी ही थी इतना अक़िल न ज़ोर कर सकी कि यह व्यौपार बिलकुल जुआ है लग गया तो तीर नहीं तुक्का—लखपती को भी बनते बिगड़ते देर नहीं लगती तो अल्प धन वाले जैसा हमारे मित्र किस गिनती में थे—प्रारंभ में दो एक बार थोड़े दिन तक सर सब्ज़ रहे कलकत्ते के बाबूओं का साथ प्राय मिज़ाज बदल गया बाबूपने की अमीरी ने उसमें जगह कर लिया मन मानता गुलछर्रे उड़ने लगे बालू की भीत सा ओछी पूंजी का व्यौपार कब तक चल सकता है उसमें कलकत्ते का ख़र्च—रुपया बहुत अधिक हो गया हो और लक्ष्मी किसी तरह हटाये न हटती हों तो कलकत्ते या बम्बई में चला जाय और वहां अमीरी के ढंग पर रहने लगे बात की बात में रुपया पास से खसक जायगा और मालूम न होगा—हमारे दोस्त को कागज़ के रोज़गार में ऐसा धक्का लगा कि लेई पूंजी सब गंवाय बैठे कौड़ी २ को मुहताज हो गये बाबूपने की बुलन्द शाहखर्ची को कौन कहे सूरी नोन रोटी को भी तरसने लगे—दोस्त साहब की तवारीख़ में इतना और याद रहे कि जिस समय ये कलकत्ते कमाई करने गये थे और लाखों का वारान्यारा इन के हाथ से हुआ उस समय बहती गंगा में हाथ धोने की भांत कभी एक पैसे का सुलूक अपनी बीवी और लड़के तथा घर वालों के साथ इन्हों ने न किया अब अपाहिज और लाचार हो उन्हीं लड़के और बीवी के गले पड़े—बीवी भी ऐसी नेक बख़्त थी कि पिसना पीस २ ज़ेवर बेच २ लड़कों को पाला—मसल है "जैसा कन्था घर रहे वैसे रहे विदेश" जब स्यां ने लाख कमाये तब भी वैसे ही और अब भी जब उन्होंने लाख को ख़ाक में मिलाय धूर फांकने लगे तब भी वैसे ही—मैं बड़ी देर तक पशोपेश में पड़ा रहा कि अब आगे इन का और भेद क्यों कर मिले कुछ थोड़ा ठहर फिर मैंने पूछा कि क्या हमारी भावज को तुम्हारा यह सब हाल मालूम नहीं है—

मित्र जी ने कहा यही तो एक और मेरे दिल को बड़ा सदमा है जैसा किसी को भीतरी चोट पिराती तो है पर ऊपर कोई उसका चिह्न नहीं देख पड़ता—जब मैं खुशहाल था उस समय मेरा कुछ और ही ढंग था कभी गुमान

था कि मैं इस हालत को पहुंचूगा ?–अब सिवाय बेहयाई इख़्तियार कर लेने के और क्या करूं–आदमी के लिये मुफ़लिसी बड़ी बला है सच है "अहो निधनता सर्वापदामास्पदम्" मैं फिर भी अपनी घरवाली की तारीफ़ करूंगा कि वह कभी मुझ से एक बात नहीं कहती बल्कि उलटा हमी को समझाती है कि तुम क्यों इतना उदास रहते हो गृहस्थी की चिन्ता मत करो भगवान् ने मुह-चीरा है तो खाने को दे हीगा तुम शरीर से सुखी रहो तुम हो तो मेरे नथुनी बिछिया की लाज बनी है–मेरा जीवन तो तुम्ही से है जो कुछ ज़ेवर बचे हैं ले जाओ फिर कोई रोज़गार करो ख़रच की तंगई मत सहो ईश्वर करेगा फिर सब कुछ हो जायगा आदमी की नीयत दुरस्त रहनी चाहिये जिन की नीयत में फ़रक नहीं पड़ा उन की रखवाली भगवान् करता है–मुझे ऐसा विश्वास न था कि स्त्रियों में ऐसी हमदरदी होती है मुझे अब निश्चय हो गया कि व्यर्थ ही लोग स्त्रियों को दोष देते हैं वास्तव में पुरुष की जाति बड़ी खुदगर्ज़ निठुर और निर्दय है अपने आराम और फ़ाइदे के लिये मर्दों ने औरतों को हर तरह पर बदनाम कर रक्खा है–इस्के पहले मेरा भी यही ख़याल था और मैंने उसे बड़े २ क्लेश दिये मैं समझता हूं यह उसी का फल है कि मैंने इतने २ दुःख सहे खैर अब तो आगे के लिये तोबाः करता हूं कि कभी कोई ऐसी बात न करूंगा जो घरवाली के विरुद्ध हो––यह कह मित्र जी मुझ से विदा हुये और मैंने भी अपने घर की राह ली और यह सोचने लगा कि मित्र हमारे कम अक़िल तो ज़रूर हैं पर स्त्री इन को बुद्धिमती और नेक मिली है—अपनी कम अक़िली का फल ये पाचुके अब राह पर आगये तो अवश्य अब इन की ऐसी दशा न रहेगी—ऐसा ही हुआ भी। मित्र ने थोड़ी ही पूंजी से फिर रोज़गार करना शुरू किया और कुछ दिन बाद इन का दुःख दरिद्र दूर हो गया साथ सुख और आराम के अपने दिन काटने लगे सच है–

"सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव गृहे नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्"–

जिस घर में भार्या से भर्ता और भर्ता से भार्या परस्पर प्रसन्न रहते हैं वहां सब सम्पदा सदा वास करती हैं–

## सोशल कान्फ़रेन्स—

हम कई बार लिख चुके बराबर कहते आये कि "यह सोशल कान्फ़रेन्स बड़ी बला है थोड़े से होटलिये बाम्बे और पूना के महरट्ठे इसके जन्मदाता हैं जिन का प्रयोजन केवल हिन्दू समाज को छिन्न भिन्न करने और हिन्दूधर्म को जहां तक जल्द हो सके तहस नहस कर देने का है क्योंकि वे ही इसमें अधिक सिर उठाये हुये हैं—इस लिये इस बला का जहां तक जल्द हो सके अभी ही मूलोच्छेद हो जाना चाहिये" तब हमारी किसी ने न सुना —यद्यपि कान्ग्रेस के मुखियाओं में से कोई भी सरगरमी के साथ कान्फ़रेन्स के सहायक और सहानुभूति करने वाले न थे किन्तु संकोचवश खुल के न कह सके कि कान्ग्रेस के पण्डाल में यह न किया जाय—अब वही बात इस साल के पूना के कान्ग्रेस में आगे आई कि वहां कान्ग्रेस के सहायकों में दो दल हो गये हैं एक दल इसके अनुकूल दूसरा प्रतिकूल है और दोनों की लड़ाई से कान्ग्रेस के कार्य में अवश्यमेव कुछ न कुछ विघ्न हुई है—ये वे ही पूना वाले हैं जो नागपूर के कान्ग्रेस में कान्फ़रेन्स के एक दिन पहिले रात भर चांव २ मचाये रहे यहां तक कि हम लोगों को स्वस्थता के साथ निद्रा न आ सकी—अंकुर उन की आपस की फूट और विद्रोह का तभी से जमते चला था अब वह पुष्ट पड़ कान्ग्रेस को हानि पहुंचा रहा है—खैर अभी कुछ नहीं बिगड़ा अब भी जो कान्फ़रेन्स कान्ग्रेस से अलग करदी जाय तो अच्छा नहीं आगे चल यह और अधिक हानि पहुंचावे गी—

## रोगजनितविपर्यय का मनुष्य की स्मरण शक्ति पर क्या असर पहुंचता है इसके दृष्टान्त—

रोग के कारण मनुष्य के शरीर में जो विपर्यय होता है उसका असर दिमाग़ "मस्तिष्क" पर बहुत जल्द पहुंचता है—इसमें कुछ शक नहीं मनुष्य बेहोशी की दशा में जो कुछ कहता या करता है या जो कुछ उस ने देखा या सुना है वह वैसा ही है जैसा हम स्वप्न की दशा में जो कुछ कहते या करते हैं देखते या सुनते हैं वह सब उस समय तो सच मालूम होता है पर सर्वथा झूठ रहता है—मनुष्य बहुधा बहुतसी छोटी २ बातों को जागने की साधारण दशा में नहीं याद कर सक्ते पर निद्रा की दशा में पूरी तरह पर स्मरण कर सक्ते हैं—जैसा कि हम

जागते समय अपने किसी मित्र के स्वरूप का ध्यान करैं तो वह हमारी स्मरण-शक्ति के सामने वैसे पूर्णरूप से प्रत्यक्ष न होगा जैसा कि निद्रा या बेहोशी की दशा में—इस्से प्रकट होता है कि बेहोशी की दशा के बढ़ने से मनुष्य में पिछली बातों के स्मरण करने की शक्ति बढ़ जाती है—

यह तो प्रत्यक्ष है कि हम स्वप्न तभी देखते हैं जब गाढ़ी नींद नहीं है और गाढ़ी नींद में क्या होता है सो बिलकुल याद नहीं रहता किन्तु यह निश्चय है और इस्का सुबूत भी है कि गाढ़ी नींद में भी मनुष्य अवश्य कुछ न कुछ सोचता रहता है—बहुधा देखा गया है कि सोता हुआ के द में ऐसी २ बातें कह गया जागने पर जिस्का उस्को बिलकुल स्मरण न रहा हो पर दूसरा मनुष्य जो उस समय जागता था उस्की कही हुई बातों को ठीक २ समझता गया—मेरे एक भाई मुझ से कहते थे कि मैं एक बार पढ़ते २ सो गया पर उन के पास उन का एक मित्र और बैठा था नींद में वे ईसाई मत के खण्डन का व्याख्यान देने लगे और उन के मित्र उस्को सुनते गये—चुप हो जाने पर मित्र ने उन्हे जगा कर पूछा कि तुम ने कहां खड़े हो कर व्याख्यान दिया तब उन्होंने कहा नहीं मै तो कहीं व्याख्यान देने नहीं गया मै तो सोता था—मेरे भाई यह भी कहते थे कि जिस दिन नींद में वे बर्राने थे उस दिन सांझ को एक ईसाई को व्याख्यान देते सुना था—एक बात ध्यान के योग्य और है कि उन दिनों वे इतनी अंगरेज़ी नहीं पढे थे कि शुद्ध व्याख्यान दे सकैं पर उन के मित्र कहते थे कि तुमने व्याख्यान में ग्रामर की एक ग़लती भी नहीं की—इस्से विदित होता है कि जिसे हम नींद कहते हैं कि सो गये थे उस्का मतलब है कि हमें याद नहीं कि हम उस समय क्या करते थे अर्थात् हम उस समय बेहोश थे—यहां बेहोशी से मतलब उस दशा का समझना चाहिये जिस्में किये हुये काम या सोची हुई बातों का उस मनुष्य को जो बेहोश हुआ था बेहोशी के बाद बिलकुल स्मरण न रहे—बेहोशी की दशा में हमारी स्मरण शक्ति पर उस बेहोशी का क्या असर पहुंचता है इस्के अनेक उदाहरण हैं—

एक साहब ने लिखा है कि एक मनुष्य जो फ्रान्स में जन्मा था पर चिरकाल तक इंगलैंड में रहने के कारण फ़रासीसी भाषा बोलना भूल गया था किसी समय सिर में चोट खाकर उन के पास आया और उस दशा में वह फ़रासीसी भाषा बोलता था—ऐसा ही एक दूसरा उदाहरण लण्डन के टास्सन अस्पताल में

देखा गया—एक मनुष्य जिस्के सिर में चोट लगी थी पीड़ा कम होने पर एक ऐसी भाषा बोलने लगा जिसे उस अस्पताल में कोई नहीं समझ सक्ता था पर पीछे पता लगा कि वह वेल्स भाषा बोलता था अनुसन्धान करने से मालूम हुआ कि ३० वर्ष पहले वह वेल्स में रहता था चोट लगने के पूर्व उस भाषा में सम्भाषण करना बिल्कुल भूल गया था आरोग्य होने पर वेल्स भाषा फिर भूल गया और अंगरेज़ी बोलने लगा—डाक्टर पिकार्ड ने ऐसा ही एक उदाहरण एक स्त्री का दिया है जो बेहोशी की हालत में एक ऐसी भाषा बोलने लगी जिसे आस पास के लोग नहीं समझ सक्ते थे—पता लगाने से मालूम हुआ कि उस की धाई एक ऐसी भाषा बोलती थी जो वेल्श भाषा से मिलती थी—इसी तरह पर जर्मन देश की एक स्त्री ने एक अंगरेज़ से व्याह किया और अच्छी तरह अंगरेज़ी बोलने लगी पर बीमार होने हर अंगरेज़ी बोलना भूल गई केवल जर्मन भाषा बोल सक्ती थी—और नौकरों को अपना मतलब समझाने में उसे बड़ा परिश्रम करना पड़ता था क्योंकि नौकर जर्मन भाषा नहीं जानते थे—

किसी लड़के की ४ वर्ष की अवस्था में खोपड़ी टूट गई थी और उस्को बेहोश कर खोपड़ी में शलाका ठोकी गई होश आने पर कील ठोकने की उसे बिल्कुल याद न रही किन्तु १५ वर्ष की अवस्था में ज्वर के प्रलाप में उस ने अपनी मा से कील ठोकने के समय की सब बातें व्यौरेवार कह सुनाया कि कौन २ उस समय उपस्थित थे कैसा कपड़ा पहिने थे और हाथ में क्या लिये थे—इस्के पूर्व इस दशा का वर्णन कभी उस ने नहीं किया था न उस्से किसी ने इस हाल को कहा था—मेरे एक मित्र मुझे लिखते हैं कि वे एक समय ज्वरपीड़ित दशा में होमरकवि के काव्य का बहुत सा हिस्सा ठीक २ पढ़ गये जिसे उन्होंने आरोग्य दशा में न पहिले कभी कहा था और न आराम होने पर फिर कभी कह सके—ऐसे ही और एक मनुष्य को ज्वर की दशा मे स्काटलैंड की यात्रा की छोटी २ बातों का स्मरण हुआ जिसे वह आरोग्य दशा में नहीं स्मरण कर सका और न फिर आरोग्य होने पर उसे याद रही—

इस्से उलटे भी उदाहरण मिलते हैं अर्थात् अभी तक तो यह दिखलाया कि पूर्व में जो भाषा बोलते थे और बोलने का प्रसंग न पड़ने से वह भाषा भूल गई थी रोग मे या चोट खाने पर वह भाषा फिर याद आगई—अब यह दिखलावेंगे कि जो कई भाषा बोल सक्ता है वह रोग मे बेहोशी में या चोटखाने पर केवल एक भाषा बोल सका और सब भाषायें भूल गईं—

डाक्टर ग्रेगरी लिखते हैं कि एक पादरीसाहब जो कई भाषा जानते थे दिमाग़ की एक बीमारी में एक हीब्रू भाषा छोड़ और सब भाषा भूल गये—मिरगी के रोग के कारण भी बहुत से ऐसे हाल डाक्टरों ने लिखे हैं—एक स्त्री ने मिरगी के मिट जाने पर कहा मैं सोगई थी और जो २ बातें उसपर हुईं सब बतलाने लगी—अब तक ऐसे उदाहरण दिये जिन की स्मरण शक्ति कुछ काल के लिये घट गई वा बढ़ गई अब ऐसा उदाहरण दिया चाहते हैं जिसमें यह दिखलावेंगे कि ऐसी शक्ति को मनुष्य अधिक दिन तक धारण किये रहता है इस दशा को बेहोशी या मूर्छा कहते हैं और इससे अधिक देर तक को वैलक्ष्य या पागलपन कहते हैं—पागलपन की दशा कभी को सदा के लिये हो जाती है और कभी को धीरे २ छूट जाती है—एक साहब लिखते हैं एक मनुष्य प्यूट्रिड ज्वर से आरोग्य होने पर अपनी पहली दशा को बिल्कुल भूल गया उसकी स्मरण शक्ति बिल्कुल जाती रही—न वह किसी को पहचानता था न उसे पिछली बातों की याद रही दो महीने तक उसका यही हाल रहा उपरान्त क्रम २ से अच्छा हुआ—मानो आरोग्य होने पर उसका फिर से जन्म हुआ क्योंकि धीरे २ जगत् की सब बातों को उसे फिर से सीखना पड़ा इस तरह के बहुधा बहुत से उदाहरण मिले हैं कि कड़ी बीमारी से आरोग्य होने पर पिछली बातों का कुछ भी स्मरण न रहा और क्रम २ पहली बातें याद आने लगीं—इस दशा से एकाएक छूट जाना भी ध्यान देने योग्य है फिलाडेलफिया नगर के एक डाक्टर एक विद्यार्थी का हाल लिखते हैं कि एक विद्यार्थी जो बड़ा विद्वान् हो गया था एक बार ज्वर से अच्छा होने पर उसकी पूर्व संचित विद्या उसे बिल्कुल भूल गई तब यह निराश हो लाटिन पढ़ने लगा—एक दिन अपना पाठ याद करने के लिये उग्र परिश्रम कर रहा था कि अचानक उसे पहले की पढ़ी सब विद्या याद आगई और फिर पहले का सा विद्वान् हो गया—मस्तक में थोड़ी चोट लगने से जो स्मरण शक्ति जाती रहती है वह धीरे २ और अद्भुत रीति से फिर आ जाती है एक बार एक लड़का दीवाल से गिर पड़ा और पत्थल पर उसका सिर पड़ने से फूट गया बेहोशी में उसे लोग घर ले गये और जल्द अच्छा भी हो गया पर उस लड़के को गिरने आदि का कुछ हाल मालूम न रहा—थोड़े दिन उपरान्त उसे याद आया कि उसके सिर में चोट लगी थी और क्रम २ याद आने लगी कि पत्थर से उसका सिर फूटा और फिर याद आया कि वह दीवाल से गिर पड़ा था उपरान्त यह याद आया

सन् ५७ के बलवे में ५००० की जागीर नवाब को खैरखाही में और भी मिली—रियासत का इन्तिज़ाम अच्छे ढंग से चल रहा है पहले से अब यह राज्य तरक्की पर है—पश्चिमोत्तर के रईसों में नवाब साहब का औवल दर्जा है और रियासत में तालीम की भी तरक्की है—

## बलरामपुर—

अवध में बहुत से तअल्लुकेदार हैं किन्तु बलरामपुर के बराबरी के कोई नहीं हैं चौदहवीं सदी के मध्य भाग में जनवर जाति के क्षत्री बलराम दास ने बलरामपुर के आस पास के देश को फतेह कर अपने नाम का बलरामपुर नगर बसाया इस घराने के सब से प्रसिद्धराजा नवलसिंह हुये जो १७७७ ईस्वी में राज्यपद पर सुशोभित हुये—नवलसिंह ने यद्यपि बादशाही फौज से कई बार शिकस्त पाई पर अपनी आज़ादी कायम किये रहे—उन के पोते महाराज दिग्विजयसिंह १८३६ में राज्य पदारूढ़ हुये और सत्तावन के बल्वे में जब अवध के कई एक तअल्लुकेदार बागी हो गये थे महाराजा दिग्विजयसिंह सरकार के खैर खाह बने रहे—जिस्के एवज़ में तुलसीपुर के इलाके जो ज़ब्ती में आगये थे इन को दे दिये गये—बलरामपुर का तअल्लुका परगनह बहराइच में है—५५५३५९ रूपया सालाना सर्कारी मालगुज़ारी अदा कर १० लाख सालाने की बचत का इलाक़ा बलरामपुर है—शहर की आबादी १३००० आदमियों की सन ८१ में थी बलरामपुर में स्कूल और अस्पताल भी महाराज के ख़र्च से चल रहा है राज्य का प्रबन्ध उत्तम है—

भिनगा आदि छोटे बड़े बहुत से तअल्लुके अवध में हैं जिन का अलग २ विशेष वर्णन हम फिर के लिखेंगे अब पश्चिमोत्तर के प्रसिद्ध जमीदार और तअल्लुकेदारों का हाल लिखते है पहले महाराज रामनगर का इतिहास जो कुछ मालूम हो सका लिखते हैं—

रामनगर के राजा के मूल पुरुष मनसाराम जो सन ईस्वी १७३९ में सुरधाम सिधारे अवध के नवाब विज़ीर के समय बनारस के समीप उतरइया ग्राम के ज़मीदार थे उन के उत्तराधिकारी बलवन्तसिंह ने दिल्ली के बादशाह को २१ हज़ार रूपया दे जौनपुर बनारस और चुनार की चकलेदारी और राजाबहादुर

की उपाधि प्राप्त किया और कई एक गढ़ी मिरज़ापुर के ज़िले में भी फतह कर उन सब देशों का स्वच्छन्द राजा बन गया उपरान्त २३ वर्ष के अरसे में गाज़ीपुर तक अपना राज्य फैलाया–१७६३ ईस्वी की वक्सर की लड़ाई में जिस्मे दिल्ली के बादशाह और अवध के नौवाब वज़ीर दोनों अंगरेज़ों से हार गये थे और अंगरेज़ों ने कलकत्ते से इलाहाबाद तक अपना क़ब्ज़ा जमा लिया था उस लड़ाई में बलवन्तसिंह भी बादशाह के साथ २००० सवाल और ५०० पैदर सिपाही लेकर लड़ने गया था–१७७५ में जो सुलहनामा नवाब वज़ीर के साथ अंगरेज़ों का हुआ था उस्में बलवन्तसिंह के उत्तराधिकारी चेतसिंह को अंगरेज़ों ने वैसा ही राजपद पर नियत रक्खा जैसा यह नौवाब के समय में रहा पर पीछे वारेनहेस्टिंग की नीयत खास हुई और चेतसिंह के साथ ऐसी कड़ाई से पेश आये कि चेतसिंह बिगड़ खड़ा हुआ–इस्पर वारेनहेस्टिंग चेतसिंह को कैद कर आगरे के किले में नज़रबन्द रक्खा जहां उन के सन्तान अब तक हैं और राजामहीपनारायणसिंह राजा किये गये बनारस की दीवानी और फौजदारी का कुल इख्तियार अंगरेज़ों ने अपने हाथ में रक्खा और ४०००००० रूपया भी महीप नारायण से वसूल किया जिस्के लिये चेतसिंह वारेनहेस्टिंग से बिगड़ गया था–महाराज की कुल ज़मीदारी ९८५ वर्ग मील है और मालगुज़ारी ३ लाख वगर्नमेंट को दे कर ८ लाख सालाना की बचत की है–इलाहाबाद और बनारस की कमिशनरी में काशीनरेश की बराबरी का रईस दूसरा नहीं है बलबे के बाद खैरखाही में ग्राम भी इन्हें मिले हैं–इन की ज़मीदारी में चकिया नाम का स्थान बड़ी उत्तम आखेट भूमि है जहां हाकिम लोग बहुधा शिकार के लिये जाया करते हैं जिस्को महाराज ने परम रमणीय दृश्य बना रक्खा है–प्रति वर्ष काशीनरेश का बहुत सा खर्च हाकिमों के जाने में और उन के सत्कार में होता है ॥

पश्चिमोत्तर के और २ ज़मीदार और रईसों का थोड़ा हाल जो अब तक मालूम हुआ है फिर लिखैं गे–अब बंगाल और बिहार के प्रधान ज़मीदारों का कुछ वृत्तान्त लिखते हैं–बंगाल में सबों में प्रधान महाराजा वर्द्धमान हैं–कलकत्ता के पश्चिम वर्द्धवान जिस्का शुद्ध नाम वर्द्धमान है बंगाल के और २ ज़िलों की अपेक्षा सब से अधिक उर्वरा और घना बसा हुआ ज़िलअ है–महाराज पंजाबी खत्री हैं इन के पूर्व पुरुष पंजाब से आ कर यहां बसे मुगलानी सलतनत में

अबूराय पहले बादशाह की तरफ से फौजदार मुकर्रर हुये और अपना अधिकार दिन प्रतिदिन बढ़ाते गये--अबूराय के पोते ने अपने लिये औरंगज़ेब से फरमान भी हासिल किया था--उपरान्त मुगलानी सलतनत के टूट जाने पर जब महराठों ने ज़ोर पकड़ा उस समय बरदवान् की रियासत को महराठों की लूट पाट से बड़ा नुकसान भी सहना पड़ा और १७७० के महादुर्भिक्ष में बर्दवान् बहुत बुरी दशा में आ गया प्रजा को दुर्भिक्ष से बचाने को महाराज ने रानियों के ज़ेवर तक बेच डाले खज़ाने में एक पैसा भी न बच रहा किन्तु अब अंगरेज़ी राज्य की शान्ति और स्वास्थ्य पाय यह रियासत उनीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से आज तक बराबर तरक्की कर रही है अब इस समय सर्कारी मालगुज़ारी अदा कर ३० लाख के ऊपर सालाना आमदनी इस्की है राज्य का प्रबन्ध बहुत अच्छा है महाराजा बड़े विद्वान् और सुशिक्षित हैं--डंकनी बन्दोबस्त के कारण बंगाल और बिहार के ज़मीदार इन प्रान्तों के ज़मीदारों से बहुत अच्छी दशा में हैं और कई एक बड़े ज़मीदार जो अब राजा और महाराजा की उपाधि रखते हैं स्वच्छन्द रियासतों से भी आमदनी में बढ़े हुये हैं इन में और स्वच्छन्द राज में अन्तर केवल इतना ही है कि इन को स्वच्छन्द राजाओं की भांत दीवानी और फौजदारी का इखतियार नहीं है पर वास्तव में गवर्नमेंट के वशवर्ती ये दोनों हैं स्वच्छन्द राजाओं पर रेज़िडेंट और एजेंट अलग २ हुकूमत कर रहे हैं इन को ज़िले का एक कलक्टर और छोटे से छोटा जंट अपने चंगुल में रखने को काफी और सब तरह समर्थ हैं--

## महाराजा दरभंगा ॥

गंगा के उत्तर तिरहुत का पूरबी हिस्सा सब दरभंगा की ज़िमीदारी में है--सर्कारी मालगुज़ारी अदा करने के बाद अनुमान २५ लाख सालाना की रियासत यह है--राजधानी दरभंगा ७४ हज़ार आदमियों की बस्ती है--महाराज बड़े विद्वान् और देशहितैषी कामों में सदा अग्रसर रहते हैं--सातलाख रुपया खरच कर अपनी ज़िमीदारी में ठौर २ आसपाशी के लिये नहरें तालाब कुये बनवा दिये हैं जिस्से प्रजा को बड़ा सुख मिल रहा है और आमदनी भी बढ़ गई हैं--महाराज जाति के मैथिल ब्राह्मण हैं--बेतिया हथुआ आदि और कई बड़ी २

रियासतें तिब्बत में हैं और छोटी २ रियासतें १०००० सालाना मुनाफा से ५ लाख सालाना मुनाफे की तो कई एक हैं जिन का थोड़ा वृत्तान्त जो अबतक मालूम हो सका है फिर लिखेंगे–

## तिपरा या त्रिपुर

यह पहाड़ी राज्य बंगाल के पूर्व की ओर विस्तार में ४०८६ वर्गमील और आबादी में अनुमान ९६ हज़ार के है आमदनी इसकी अढ़ाई लाख सालाना की है––इस राज्य में ५ या ३ पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण को हैं जो क्रमशः ऊंची होती गई हैं–पहाड़ियों पर बांस के जंगल बहुत हैं और नीचे उसके दलदली ज़मीन है और वह भी जंगली पेड़ों से ढंकी हुई है–चावल यहां की खास पैदावार है शहतीरें और बांस किश्तियों पर लाद बाहर जाता है–महाराज चन्द्रवंशी क्षत्री हैं और लोग यहां के शैव होते हैं––बहुत सा हिस्सा तिपड़ा का सुन्दर बन में आगया है बारहवीं सदी के अन्त से सोलहवीं सदी के आरम्भ तक तिपड़ा बड़ी बहादुरी के साथ मुसलमानों से मुक़ाबिला करता रहा और कभी उन के आधीन न हुआ हाथी भी तिपरा के जंगलों में बहुत होते हैं–

## कूचविहार

विस्तार इस राज्य का १३०७ वर्गमील है आबादी सन् ८१ में ६०२०८४ थी और मालगुजारी अनुमान १४ के है यह राज्य बंगाल के उत्तर त्रिकोण के आकार है छोटी बड़ी कई एक नदियां इसमें आजाने से धरती यहां की बड़ी उपजाऊ है राज्य के पूर्वी हिस्से में थोड़े से जंगल भी हैं तीनचौथाई पृथ्वी ऐसी है जिसमें केवल चावल उपजता है तमाखू और दूसरे किस्म के अन्न की भी कुछ थोड़ी उपज यहां होती है–जूट तमाखू तेलहन और शहतीरें यहां से बाहर को जातीहैं–काव्यों में बहुधा कामरूप देश का वर्णन पाया जाता है वह कामरूप यही कूचविहार है पन्द्रहवीं सदी के अन्त में गौर के अफ़ग़न बादशाहने इसे फतेह कर अपने राज्य में मिला लिया था किन्तु अफगानी सलतनत के बरबाद होने पर हिमालय के जंगली फिरके कामरूप पर आक्रमण करने लगे जिन्में कूच जाति के सबों में अग्रसर रहे और यहां बस भी गये तब से इसका नाम ही कूचविहार पड़ गया–एक समय ये कूच लोग इतने प्रबल पड़ गये थे कि बि-

एकुल आसाम फतह कर लिया भूटान और शिकम के राजा को भी अपना कैद कर लिया था—अंगरेजी राज्य के पूर्व ही कूच विहार घटती की दशा में आ चुका था—इसके वर्तमान राजा बड़े विद्वान् हैं विलाइत हो आये हैं राज्य का प्रबन्ध बिलकुल अंगरेज़ी ढंग का किये हुये हैं—अपने राज्य में विद्या की बड़ी उन्नति कर रहे हैं राजधानी कूचविहार १० हज़ार आदमियें बस्ती है—

## मनीपुर या मणिपुर ॥

विस्तार इसका ८००० वर्ग मील आबादी सन् ८१ में २२०००० थी मालगुज़ारी अनुमान लाख रुपया सालाना है—यह राज्य हिन्दुस्तान के ईशानकोण को ब्रह्मा और हिन्दुस्तान के बीच में है और आसाम के चीफ़कमिशनर के मातहत है—३६ मील लंबी और २० मील चौड़ी दो पहाड़ियों के बीच एक घाटी इसमें ऐसी आ गई है कि बिलकुल रियासत भर की मानो नाक है और पृथ्वी भी इतनी बड़ी उर्वरा है चावल तमाखू तेलहन आदि की अच्छी उपज इसमें होती है पहाड़ों पर बांस के जंगल बहुत हैं—शकल में मनीपुरिये चीनियों से मिलते हैं—स्त्रियों में परदा यहां नहीं होता बाज़ार हाट का सब काम वे ही करती हैं—कपड़ा यहां बहुधा लोग अपने हाथ का बना पहनते हैं स्त्रियां जब और सब काम से खाली होती हैं तब चरखा कातती हैं और कपड़े बुनती हैं—सन् १८२४ में बर्म्मा वालोंने मनीपुर पर हमला किया था पर गवर्नमेंट की मदद से वे लोग निरस्त कर दिये गये तब से यह गवर्नमेंट की पनाही में रहा हाल में यहां का राजा बिगड़ गया इस लिये सर्कार ने उसे खारिज कर दूसरे को इस राज्य पर स्थापित किया—

## हमारे हिन्दुस्तानी नई रोशनी वाले ॥

कहावत है "न घर के न घाट के" हमारे नई रोशनी वाले इस कहावत के पूरे उदाहरण हैं—जी तोड़ मेहनत कर पच मरे, सब कुछ पढ़ा लिखा, सब तरह की योग्यता प्राप्त की, जात छोड़ा, पांत छोड़ा, लोग कुटुम्ब सब छोड़ विलाइत सिधारे, बरफिस्तान की ठंढी हवा में रह सैकड़ों सख्तियां झेलीं, भाई बिरादरी से अलग कर दिये गये, अंगरेज़ी चाल चलने लगे, उन्हीं का सा खान, उन्हीं का सा पान, उन्हीं का सा पहनावा, उन्हीं की दिन रात सोहबत, बोल

चाल रंग ढंग सब में अंगरेज़ी तरीका इखतियार किया, सोचते थे कि अब हमारा नया जन्म हो गया हम विहिश्त के रहने वालों में शालिम हो हिन्दुस्तान में पहुंच साहब लोगों में दाखिल होंगे किन्तु रंग अपने शरीर का गोरा न कर सके—अपने समूह से च्युत तो उसी दिन हो गये थे जिस दिन विलाइत के लिये जहाज़ पर पांव रक्खा था—रंग गोरा नहीं है इस लिये साहब लोगों में प्रवेश न पासके इतो भ्रष्टास्ततोभ्रष्टः न घर के हुये न घाट के—न तालीम ने अपना कुछ असर पहुंचाया न सभ्यता से कुछ हुआ न नई रोशनी कुदरती काले रंग को बदल सकी—बरतन होता ठठेरी को दे कर बदल डालते हाज़ारों मन साबुन पोत डाला सौदागरों की दूकान की दूकान खाली कर दी तौ भी तिलभर चमड़ा गोरा न हो सका—कौआ ने हंस की चाल चलना चाहा अपनी चाल भी भूल गया ये सब नई रोशनी के उमंग में भरे विलाइत इस लिये जाते हैं कि वहां जब तक रहैं मन माना आमोद प्रमोद में आसक्त हो स्वर्ग के सुख का अनुभव इसी जीवन में करैं और वहां से लौट यहां आय हमे जानवर असभ्य अर्द्ध शिक्षित और नितान्तमूर्ख समझैं और एहसान के बोझ से हमे दबावैं कि हम तो भ्रातृस्नेह की डोरी से खिंच मातृभूमि के उद्धार के लिये अनेक कष्ट सह विलाइत गये थे किन्तु कपट और बनावट कब तक छिप सक्ती है जो बात हकीकत में सच रहती है कभी मुमकिन नहीं कि न खुल पड़े—सच्चा देशानुराग का लेशमात्र भी यदि इन्में होता तो "सेल्फसेक्रिफइस" आत्म त्याग कहां तक इन के चित्त में जगह न पाता—देशोद्धार की चोट लगी होती तो काबुल जाय मुगल होके न आते "आब २ कह पुतऊ मरगये खटिया तर रह पानी"—यद्यपि हम लोग बिल्कुल बेअकिल हैं बेवकूफ हैं पुराने खयाल में जकड़े हुये हैं फिर भी साधारण बुद्धि "कामनसेन्स" से खाली हों ऐसा कभी हो ही नहीं सक्ता अपना हित अनहित जानवर तक पहचान लेते हैं तो हम तो मनुष्य और अशरफुल मख़लूकात हैं—आत्म त्याग की वासना से रहित इन नई रोशनी वालों का विलायत गमन हमारे लिये बड़ा ही हानिकारक है बहुत अच्छा और हमारी बड़ी भलाई इस्में है कि ये साहब लोगों के समूह से च्युत रहते हैं नहीं तो ये न जानिये क्या कर डालते—बंगाल बाम्बे और पश्चिमोत्तर के भी कई सौ से अधिक विलाइत से लौट यहां आ चुके पर उन्में किसी एक ने भी कुछ करके दिखलाया तब हम क्योंकर समझैं कि विलाइत की यात्रा हमारी भलाई के लिये

है प्रत्युत ये भी हमारे लिये वैसा ही सरदर्द हैं जैसा और २ कौम के लोग हैं-

# भाग्य की परख ॥

## एक मनोरंजक उपन्यास

वसन्त का अन्त और ग्रीष्म का प्रारम्भ है सायंकाल के समय मन्द २ समीर सूर्य की खरतर किरणों से तची पृथ्वी को स्वास्थ्य पहुंचा रहा है-बेसिखे गवैये की भांत लय पूर्ण सुरीले शब्द से कुहक २ चिड़ियायें कान को सुख दे रही हैं-भौंरे मन्नाते हुये फूलों के रस का स्वाद चख रहे हैं-सड़क के एक ओर पहाड़ों की चटान पर टकराता हुआ सोता मानो इन गवइयों की सहायता के लिये सुर भर रहा है-इसी लम्बी चौड़ी सड़क पर एक खड़खड़िया सोहावनी चाल से जा रही थी और एक सुन्दर सब्ज़रंग का टट्टू उसमें जुता हुआ था—इस खड़खड़िये में एक लड़का जिसका वयक्रम १७ या १८ वर्ष का होगा कोचवानी का काम कर रहा था-चाहो इसके पहनाव और देह की रुखाई से यह कोई ग्रामीण दिहाती मालूम होता हो पर कोई भारी बात गंवारपने की इसमें न थी-मोटी पर साफ और सुथरी इसकी पोशाक से यह नहीं बोध होता था कि यह निरा गंवार है-इसके गोल सुडौल चेहरे से खुशी और तनदुरुस्ती झलक रही थी इसकी सुहावनी सूरत कितनों की बनावटी खूबसूरती के बहुत आगे बढ़ी हुई थी इसकी सीधी नासिका समधरातल पर लम्ब के समान थी मानो विधिना इसके गढ़ने के समय रेखागणित के अभ्यास में तत्पर रहा-इसके ऊपर और नीचे के होठ मोटे तो थे किन्तु किनारे पर बहुत पतले होगये थे जब वह मुसकिराता था तो कुन्द की कली से चमकते हुये दान्तों की आभा उसके गुलाबी होठों पर अरुणोदय बेला में दामिनी की दमक का अनुहार करती थी काले घूंघुर वाले केश कलाप रेशम के लच्छे से चमकते थे उसकी सावधानी रसीली चितवन घोड़े की बागडोर की ओर लगी थी—इसके चेहरे से ऐसा मालूम होता था कि इसे अपने सुडौल अङ्ग का कुछ थोड़ा घमण्ड है और यह रमणलाल केवल नाम ही का रमणलाल न था वरन अपने अनेक गुणों से गांव के नवयुवकों में सबों के मन को रमाने वाला था-

यह लड़का जो इस समय कोचवानी का काम दे रहा था अकेला न था वरन भीतर उस खड़खड़िये के एक नवयुवती तरुणी भी बैठी थी और थोड़ी

सी गृहस्थी के काम की वस्तु भी उस गाड़ी पर रक्खी थी—जो देहातियों के रहन सहन के क्रम से जानकार हैं वे जान सक्ते हैं कि गांव के लोग बहुधा घर गृहस्थी की चीज़ों को शहर से ले जाया करते हैं—यह बालक और बालिका भी ज़रूरत की चीज़ों को रथ पर रक्खे लिये जाते थे और दोनों को नई सफर थी इसके पहले ये कभी घर के बाहर नहीं निकले थे—इस तरुणी की उमर १४ और १५ के बीच में थी इसका सौन्दर्य भी एक अनोखे ही ढंग का था—इस चन्द्रमुखी के चिक्कण गोल कपोलों पर उगते सूर्य की अरुणिमा झलक रही थी—पतले होटों में पान बीड़ी रची हुई थी चिकने बालों का जूड़ा उसके सिर पर गुड़िला बांधे नागिन सा सोहता था—इसकी रतनार कटीली आखें पद्मपत्र की प्रभा को हरे लेती थीं अपने कुटिल कटाक्ष से एक बार जिसे देख देती थी उसके हृदय को टुकड़े २ कर देती थी और घूंघट के ओट से उसका झाकना मानो उन घायल दिलों का तमाशा देखने को था किन्तु निष्पाप और सरल चित्तयुक्त सुशीलता उसके नेत्रों से प्रकट होती थी—भालपट्ट पर कमानसी तिरछी आड़ी भौहैं देख मालूम होता था मानो विधाताने चित्रकारी में अपने हाथ की सफाई दिखलाने को काली रेखा खीच दिया है—सुआ के टोंट सी नासिका और नारंगी सी गोल ठुड्ढी मुख की शोभा को दोचन्द बढ़ा रही थीं—उसके ईषत्हास्य में मोतियों की लरीसी दंन्तावली शंख के समान चमकती थी सौन्दर्य में मानुषी क्या वरन देवाङ्गनाओं में भी ऐसी बिरली थीं—नीली साड़ी जो वह पहने थी उसके गौरांग पर सूर्यातप में काली घटा सी शोभा देरही थी कानों में झुमके और करनफूल झूम २ उसके चन्द्र मुख का चुम्बन कर रहे थे—कमल की नाल से पतले हाथों में काली चूड़ियां पहने थी और पैरों में पायज़ेब और झांझ वह गजगामिनी अपने मन्दगमन के समय मानो विश्वविजेता मदन को विजय दुन्दुभि का काम देने के लिये पहने थी—यह तरुणी जिसका पूरा परिचय हम देचु के मिरज़ापुर के प्रान्तवर्ती एक गांव के ज़मीदार की लड़की थी और मायामती इसका नाम था—अपने बाप मा की यह एकलौती लड़की थी—यह जब बहुत छोटी थी तभी मा इसकी सुरधाम सिधार कर मातृस्नेह से इसे वंचित कर गई इसकी मौसी जो बहुत सुशीला और पढ़ी लिखी थी इसे निज कोख में पैदा कन्या के समान पाला पोषा और पांच ही वर्ष की थी तभी से इसकी मौसी बुद्धिमती इसे अच्छी शिक्षा पढ़ाना लिखना और दूसरे २ गृहस्थी के सब काम

सिखलाने लगी--मायावती अपनी संस्कारी बुद्धि और बुद्धिमती के प्रयत्न से जल्द बड़ी प्रवीण हो गई होती और गृहस्थों में शायद ही इसके समान कोई दूसरी लड़की निकलती किन्तु शोक इसको पूर्ण शिक्षा न हुई थी तभी इसकी मौसी भी कालवश हो इसे अनाथा छोड़ गई--किन्तु अपने निष्कपट बर्ताव सिधाई और सुशीलता से गांव की बहुधा स्त्रियों को यह अपने वश में किये थी। दीन दुखियाओं को देखते ही दया उसके मन में तड़ित के समान व्याप्त हो जाती थी भलाई किसी के साथ कर ऐसा छिपाती जैसा लोग बुरे कामों को छिपाते है-इन कारणों से सब लोग इस लड़की की प्रशंसा करते थे-

अब हमारे पढ़ने वाले उत्सुक होंगे कि रमणलाल का इस नवयुवती से क्या लागाव था-रमणलाल का इसके साथ गुप्त प्रेम ही चला था परन्तु उसे इतनी हिम्मत न होती थी कि अपना भीतरी भाव प्रकट कर सके और उसके प्रति प्यार की सांस ले सके स्वाभाविक लज्जा के कारण दोनों मन ही मन प्रीति की सांस भरते थे-एक कारण इसमें और था कि रमणलाल को मायावती के पिता मदनलाल ने लड़कांई से पाला पोषा था--यह एक त्यक्त बालक था मदनलाल ने इसे मोल लिया था इन दोनों का लड़कांई से साथ था और मयामती की मौसी बुद्धिमती ने इसे भी वैसा ही यत्न से पढ़ाया लिखाया जैसा बुद्धिमती को पढ़ाया था और यह भी तेजी और चालाकी में कुछ कम न था तो उसे खुल के मायावती के साथ उस तरह की प्रीति जैसी स्त्रीपुरुष में होना चाहिये प्रगट करते कुछ क्षोभ सा होता था और लोकनिन्दा का डरता भी था किन्तु भीतरी प्रेम दोनों का परस्पर बढ़ता ही गया-

इन दोनों का यथोचित्त परिचय दे अब हम अपने कथानक को आगे बढ़ाते हैं-जब खड़खड़िया सड़क के छोर पर पहुंची सड़क को काट दूसरी पर जा रही थी और मदनलाल का महल दिखाई देने लगा था कि वह लड़का जो कोचवानी का काम कर रहा था एक बुड्ढे को सड़क के किनारे पर पड़ा हुआ देखा इसकी उलटी सांस चल रही थी धीरे२ फरकते हुये होठों से कराहने का शब्द सुन पड़ता था-मायामती भी इस बूढ़े को देख बोली रमणलाल ठहरो मालूम होता है यह दुखिया रोग से अत्यन्त पीड़ित है जहां तक हो सके इसकी सहायता करनी चाहिये--गाड़ी तुरन्त ठहर गई रमणलाल जल्द नीचे कूद पड़ा और

मायावती के उतारने की चेष्टा कर रहा था कि वह खुद गाड़ी से उतर उस बूढ़े के पास जा पहुंची—यह बूढ़ा बड़ा गरीब था कपड़े जो वह पहिने था अत्यन्त जीर्ण और मैले थे सिर और डाढ़ी के बाल बिलकुल खिचड़ी थे चेहरा भी बद-सूरत और मुर्दनी उसपर छाई थी—उलटी सांस चलने से और भीतरी यन्त्रणा से शरीर इसका ऐंठा जाता था—इन दोनो ने मिल उसे उठा कर बैठाया जिस्में श्वास लेने में उसे विशेष क्लेश न हो—रमणलाल गाड़ी पर से एक हांड़ी उठा लाया और कटोरी उस्में से निकाल पास के झरने से पानी भर बुकनीसी कोई दवा उसी हांडी से निकाल पानी में घोल उसे पिला दिया और दोनो उसके सिर पर पानी बार २ छिड़कते रहे—देखते ही देखते वह रोगी चैतन्य होने लगा किन्तु इस लायक न था कि अकेला छोड़ दिया जाता—मायावती मीठे शब्द में बोली अब तो तुम कुछ चंगे मालूम होते हो हम लोगों का घर यहां से आध कोस पर है हमारे पिता तुम्हारा बहुत आदर करेंगे जी चाहता हो तो हमारे साथ घर चलो—

वह बूढ़ा दोनों के चेहरे को देर तक बड़े ध्यान से देख और थोड़े शब्दों में उन का धन्यवाद कर बोला मैं अपस्मार रोग से बड़ा पीड़ित हूं तुम दोनों की इस समय की सहायता से मरते २ बच गया मैं तुम्हारे साथ चलता यदि तुम मेरी बीमारी दूर हो जाने की पूरी फिकिर करते—रमणलाल बोल उठा—इस सन्देह को दूर करो मैं तुम्हारी फिकिर सब तरह से करूंगा—

आओ मायावती इन को उठा के गाड़ी पर बैठावें—एक कंबल गाड़ी पर बिछा दिया और बूढ़े को सुलाया मायावती कर कमलों से पंखा झलने लगी और रमणलाल धीरे २ टट्टू को हंकाता आगे बढ़ा—थोड़ी देर में महल के पास पहुंचे गाड़ी को सामने के अस्तबाल में ठहराय बरामदे के समाने एक गोल-कमरे में वे तीनो गये जहां मदनलाल बड़े रोब से एक सुथरी कुरसी पर बैठा हुआ था—यह एक लम्बे कद का दुबला आदमी था—उमर में ५० डांके था शरीर का बड़ा मज़बूत न था चेहरे की सिकुड़न और ज़र्दी से साबित था कि इसे कोई ऐसा रोग है जो बदन को धीरे २ गलाता है किन्तु उदारता सरलता और पुरुषार्थ उसके चेहरे पर झलक रहा था—सामने एक मेज़ पर जड़ाऊ पान का डब्बा रक्खा था चान्दी की गुड़गुड़ी और पीकदान नीचे रक्खे थे—

मायामती गाड़ी से उतर बड़े प्रेम और विनीत भाव के साथ पास की एक कुरसी पर जा बैठी और यह भी अपनी दुलारी कन्या को प्यार की नज़र से देखने लगा थोड़ी देर के बाद इस ने अपनी नई सफर का कुल हाल कह सुनाया और हाथ से उस बूढ़े की ओर इशारा कर उस की भी सब कथा कहा—मदनलाल इस की पीठ ठोंक बोला मेरीप्यारी बेटी तुम ने बड़ा अच्छा काम किया अब गाड़ी से उसे उतार एक साफ कमरे मे रख जहां तक हो सके दवा दारू की सब फिकिर कर उसे आराम पहुचाओ—नौकरों से कहा उस छोटे कमरे को खाली कर गाड़ी से उस बूढ़े को उतार लाओ और मायामती और रमणलाल को उस की सब फिकिर करने के लिये तैनात किया—मायामती इस की सेवा टहल मे लगी और रमणलाल उसी गाड़ी में दूसरा तेज़ घोड़ जोत वैद्य को बुला लाया—वैद्य ने उसे देख कहा रोग तो असाध्य है किन्तु मैं चिकित्सा करूंगा ईश्वर चाहे गा यह रोगी चंगा हो जाय गा "कदाचिद्दैवयोगेन दृष्टा रिष्टोपि जीवति" और नित्य उस की चिकित्सा के लिये आया करता था—एक दिन यह रोगी मायामती को नख से सिख तक देख बोला हमारे कुर्ते की जेब में एक छोटी सी पुस्तक है उसे तुम मुझे लादो तो बड़ी कृपा हो मैं अशक्त हूं नहीं तो तुम्हे क्लेश न देता—मायामती ने किताब को इस के फटे कुर्ते से ढूंढ लाकर देदिया यह उसे कई बार उलट पुलट बड़ी नम्रता के साथ धीरे से बोला—तुम देखती हो हम कैसे गरीब हैं तोहम निश्चय रक्खो हम तुम को सर्वथा बोझ न हेंगे और अपने भर सक दवा दारू का खर्च तथा इस एहसान का बदला चुकाने में न चूकैं गे—इसपर मायामती कुछ चिढ़ सी गई और घमण्ड के साथ जवाबदिया यहां तुम्हारी सब तरह फिकिर होगी और बदले में कुछ भी नलें गे—हमारे बाप की ओर से इस बात की ताकीद है कि जो कोई मेहमान रूखा सूखा हमारे यहां आजाय उस को किसी तरह की तकलीफ न हो इस लिये विश्वास रक्खो हम लोगों से जहां तक हो सकेगा तुम्हारी सब तरह की खातिर और फिकिर मे न चूकैं गे—यह सुन उस रोगी का चेहरा सुस्त पड़ गया शरमा सा गया धन्यवाद के शब्द बुदबुदाता किताब तकिये के नीचे रख दिया और जब तक बीमार रहा उसे अपने पास रक्खा—शेष—म—प्र—

# आवागमन ॥

पहले इसके कि आवागमन के सम्बन्ध में कुछ लिखा जाय इस बात को याद रखना उचित है कि तीन बात का मानना अति अवश्यक हो गा—एक ईश्वर दूसरे माया तीसरे जीव—ईश्वर शब्द से यहां पर अभिप्राय है कि जो न्यायकारी दयालु जीव मात्र के सुख दुःख का नियोजक है—माया से अभिप्राय इस प्रत्यक्ष संसार का अज्ञात दशा से ज्ञातदशा में लाने वाले कारण का है—जीव से केवल यही प्रयोजन है कि जो इस भौतिक पिण्डदेह में अहंभाव का प्रयोजक हो—वेदान्ती लोग आत्मा का आवागमन कदाचित् न मानेंगे क्योंकि आत्मा सर्व-व्यापी एकरस और अनादि है—इन का कथन है कि आत्मा के व्यतिरिक्त जो २३ पदार्थ अर्थात् ५ स्थूल तत्व ५ सूक्ष्म तत्व ५ कर्मेन्द्रिय ५ ज्ञानेन्द्रिय मन बुद्धि अहंकार हैं इन्हीं में स्थूल तत्वों को छोड़ १८ पदार्थों का बना लिंग शरीर आवागमन के चक्र में पड़ा है जिसे बलवान् कर्म सदा प्रेरित किये रहते हैं और उन्हीं कर्मों की प्रेरणा से यह शरीर कर्ता भोक्ता अहंकारवान् उत्तम से उत्तम स्वर्ग सुख देव योनि में प्राप्त हो भोगता है तथा निकृष्ट से निकृष्ट नरक की यातनाओं को प्रेतयोनि में प्रवेश कर भोगता है और इससे भी अधम योनि कीट पतंग से लेकर स्थावर वृक्ष आदि की दशा को पाता है—आवागमन के सिद्धान्त की पोषक और कई युक्तियां हैं हिन्दू तथा बौद्धों को भी छोड़ संसार में बहुतेरे असभ्य जाति के लोग भी पाये जाते हैं जो आवागमन का दृढ़ निश्चय रखते हैं जैसा अमरिका के रहने वालों का विश्वास है कि मरने के कुछ दिवस उपरान्त मनुष्य का जीव फिर पृथ्वी पर आता है और दूसरी योनि को प्राप्त होता है—इसी तरह अफरिका के योरोबा जाति के हबशी जब लड़का पैदा होता है तो पूछते हैं तुम कौन हो और इसका निश्चय करते हैं कौन से पितर का जीवात्मा इस लड़के में उतरा है—इतना ही नहीं बल्कि यह एक पुराना खयाल है कि मनुष्य और पशुओं में एक प्रकार का मेल है इन उदाहरणों से प्रत्यक्ष होता है कि मनुष्य यदि पक्षपात से रहित हो और किसी तरह की शिक्षा आवागमन के प्रतिकूल न पाये हो तो वह स्वतः इसे मानलेगा—इस बात के पोषण करने को हुबत से ऐतिहासिक प्रमाण भी हैं जैसा मिसर देश के प्राचीन रहने वालों

का विश्वास था कि जीवात्मा अनेक जीव जन्तुओं में भ्रमण करता हुआ ३००० वर्ष के उपरान्त पुनः पहले शरीर में आसकता है इसी लिये उन लोगों ने अपने मुर्दे को बहुत दिनो तक रक्षित रखने को एक वस्तु ममी नाम की बनाई जिस्के लगाने से मुर्दे कभी नहीं सड़ते थे यहां तक कि उन के मुर्दे जिन्हे मरे ४००० वर्ष हुये आज तक वैसे ही पाये जाते हैं मानो कल गाड़े गये हैं—ऐसा ही यूनानी लोग भी आवागमन को मानते थे पैथागोरस जो प्रख्यात यूनानी हकीम था लिखता है मैं अनेक योनि में भ्रमण करता रहा यहां तक कि एक समय जब वह डेलफी के मन्दिर में गया तो वहां पर एक ढ़ाल टंगी हुई देख कर कहा यह वही ढाल है जिसे लै मै ट्रोजन नामक युद्ध में लड़ा था—इसी तरह एक दिन कोई मनुष्य एक कुत्ते को मार रहा था कुत्ता चिल्लाया जिसे सुन पैथागोरस बोल उठा इसे न मारो इस्में मेरे एक मित्र की जीवात्मा प्रवेश किये है—इन पुराने लोगों के कहने पर इस उन्नीसवीं शताब्दी के बड़े २ फिलासोफर भी ध्यान देते हैं और इसे पोषण करते हैं—फिचटी एक प्रसिद्ध दार्शनिक कहता है यदि जीवात्मा आगे रहैगी तो इस्के पहले भी अवश्य रही होगी—एक जरमन फिलासोफर शापनहार कहता है कि आवागमन तो भौतिक प्रत्यक्ष प्रमाणों से भी सिद्ध हो सक्ता है—उन का कथन है कि नये लोगों की उत्पत्ति और पुराने लोगों की मृत्यु में एक बराबर का संम्बन्ध पाया जाता है क्योंकि १४ सदी में जब ब्लैकडेथ ने प्राचीप्र गोलार्द्ध को सत्यानाश कर दिया तब यथाक्रम के व्यतिरिक्त उत्पत्ति होने लगी अर्थात् जुड़वे लड़के अधिकतर उत्पन्न हुये—एक और भी अचरज की बात है कि जितने लड़के उस समय पैदा हुये बत्तीसो दान्त पूरे २ किसी के न जमे जिस्से प्रगट होता है कि प्रकृति प्रत्येक अवयवों के बनाने में यथावत् शक्ति नहीं रखती—कास्पर इस बात का प्रमाण देता है कि किसी देश की आबादी में जन्म संख्या वहां के मनुष्यों के आयुर्बल तथा मृत्यु पर अधिक असर रखती है इस लिये जन्म और मृत्यु बराबर एक प्रकार घटती बढ़ती है जिस्की उस ने बहुत से पृथक् २ नगर और देशों में परीक्षा किया और अपने सिद्धान्त के अनुसार पाया—इगलैंड का प्रसिद्ध फिलासोफर ह्यूम नास्तिक होने पर भी लिखता है कि आवागमन का सिद्धान्त अपने ढंग पर बिलकुल अनूठा है जिस्पर दार्शनिकों को अवश्य ध्यान देना चाहिये—लेसिंग कहता है कि मैं फिर २ जन्म ले नवीन बुद्धि और नया अनुभव क्यों न इकट्ठा करता जाऊं—हेनरी बाद्यम का

निम्न कथन है अहा मैं कितना उत्कण्ठित हो रहा हूं कि फिर २ जन्म ले प्राचीन मार्ग का पुनः २ अनुसरण करूं—इस तरह का सिद्धान्त अन्य देशीय विद्वानों का है जो कदाचित् हिन्दुओं के आवागमन के सिद्धान्त के सम्पूर्ण मर्म को नहीं जानते न उन्हें जनाने का हम लोगों की ओर से कोई यत्न किया गया—अब मैं उन मोटी २ बातों को कहा चाहता हूं जिन्हें सर्वसाधारण बिना फ़िलासोफ़ी दर्शनों के जाने भी समझ सकते हैं—

जानना चाहिये कि जब ईश्वर दयालु और न्यायकारी है तो मनुष्यों के गुण और शारीरिक अवयवों में क्यों इस तरह विभिन्नता देखी जाती है—कोई तो थोड़ी ही अवस्था में स्वाभाविक ज्ञानवान् होता है जैसा भगवान् शंकराचार्य थे जिन के ज्ञान का पार न था बड़े २ विद्वान् जन्मपर्यन्त विद्या में परिश्रम करने पर भी वह ज्ञान नहीं पा सकते जितना शंकर को स्वाभाविक था—इसी के विरुद्ध बहुधा मनुष्य जन्म ही से ऐसे मन्दबुद्धि होते हैं जिन्हें परख जड़ भरत को भी अपनी जड़ता पर घमण्ड होता है—अपरंच बहुत से मनुष्य स्वभाव ही से कोमल दयालु और सज्जन होते हैं दूसरे ऐसे कठोरचित्त कुटिल और दुर्जन होते हैं जिन्हें देख रावण कंस नीरो और हेरड भी दयालु कहे जा सकते हैं—इसी तरह कितने जन्म ही से नीरोग हृष्टपुष्ट साक्षात् कामदेव के सदृश सौन्दर्यशाली होते हैं—कितने मा के पेट से अन्धे बहिरे गूंगे कोढ़ी अपाहिज और बदसूरत होते हैं—ईश्वर को दयालु और न्यायकारी मानने वाले इन भिन्न २ प्रकार के लोगों को देख कैसे कह सकते हैं कि वह यथोक्त न्यायगुणसंपन्न है—अतएव जब आवागमन का सिद्धान्त पक्का है तो इन भिन्न २ प्रकार की सृष्टि और ईश्वर का न्याय और दया सब संगत हो सकती है—दूसरे यह कि बिना आवागमन के मनुष्य मात्र को अपनी मुक्ति का अवसर मिल सक्ता है—मनुष्य की आयु अधिक से अधिक १०० वर्ष की वा १२० वर्ष की मानी गई है किन्तु दस हिस्से में ९ हिस्सा ६० वर्ष के भीतर ही निपट जाते हैं और ६० या ७० वर्ष परमायु समझी जाती है तो अब सोचना चाहिये कि लड़कपन के ११ या १५ वर्ष मनुष्य के ज्ञान के संचय में जाते हैं और ५० के उपरान्त ज्ञान के ह्रास में—रहे ३० या ४० वर्ष जिस्में संसार के सब काम बुद्धि को इस तरह जकड़े रहते हैं कि यह ईश्वर परलोक या धर्म के बारे में कुछ सोच ही नहीं सक्ता—जब मनुष्य मात्र की यह दशा है तो थोड़े से परिमित समय के कर्म से अपरिमित अनन्तकाल के लिये किसी को स्वर्ग सुख भोगने वाला किसी को अनन्त काल तक नरक की आग में झुलसने वाला बनाने से ईश्वर में पक्षपात दोष आरोपित होता है और हर एक मनुष्य को यथोचित अवसर मिली नहीं सक्ता है कि वह अपने को सुधारे—

तीसरे प्रचण्ड पाप की पताका हर एकस्थान में फहरा रहा है तो प्रश्न उठ सक्ता है कि यह पाप ईश्वर के पवित्र संसार में कैसे आया—यदि कहा जाय

कि आदि पुरुष ने ईश्वर की आज्ञा का उल्लङ्घन किया तब से यह पाप संसार में आया तो फिर यह पूंछा जा सक्ता है कि उस आदि पुरुष में ऐसी बुद्धि ही क्यों आई जब तक यह न माने कि ऐसी बुद्धि ईश्वर ने जान बूझ स्वतः बनाई—इस तरह आवागमन के बिना माने ऐसी बुद्धि का बनाने वाला ईश्वर ही ठहर सक्ता है—चाहे वह बुद्धि एक वार प्रथम आदम में रख दी गई या चाहो ईश्वर प्रति मनुष्य में प्रति दिन बनाता रहता है—

चौथे यह भी एक प्रश्न उठ सक्ता है कि ईश्वर ने मनुष्यों को पैदा ही क्यों किया—यदि यह कहैं कि उसकी इच्छा वह सब भांत स्वच्छन्द है जो चाहै सो करै तो मनुष्यमात्र अपने शुभ अशुभ कर्म के उत्तरदाता नहीं हो सक्ते और स्वर्ग नरक भी कुछ नहीं है उसी की इच्छा पर है वह जिसे जहां चाहे भेज सक्ता है—सिवा इसके आवागमन का सिद्धान्त यह भी सिखलाता है कि संसार इसके पहिले था तब आवश्यक हुआ कि फिर भी होगा न कि यह मानना कि जीव समष्टि इस बन्धन से छूट नित्यता को प्राप्त होंगे और निर्वाण पद में सबों का लय हो जायगा—

पांचवें यह प्रतिदिन देखा जाता है कि पिता पुत्र तथा सहोदर भाइयों की प्रकृति में स्वभाव से इतना अन्तर पाया जाता है कि कोई दूसरा सिद्धान्त इसको अच्छी तरह सिद्ध करी नहीं सक्ता—यदि कहा जाय "थियरीआफइवोल्यूशन" परिणामवाद इसको अच्छी तरह सिद्ध कर देता है तो यह बात सब हालतों में ठीक नहीं हो सक्ती—हां जहां तक शारीरिक अवयवों का संबन्ध है वहां तक परिणामवाद का आधुनिक सिद्धान्त अपना कर्त्तव्य पूरा करता है क्योंकि कोढ़ी के कोढ़ी बहुधा देखने में आये हैं अन्धों के अन्धे लंगड़ों के लंगड़े काणों के काणे न भी पैदा हुये तो क्या—पर जब यह प्रश्न पूंछा जाता है कि पुत्र के मानसिक वृत्तियों की विभिन्नता का कारण क्या है कि पुत्र की बहुत सी बातें पिता से नहीं मिलतीं तो ये आधुनिक दार्शनिक कोना झांकने लगते हैं—अब अन्त में यह कहना बहुत आवश्यक है कि जितने आस्तिक हैं वे सब इस बात को मानते हैं कि मनुष्य जो कुछ भला या बुरा काम करता है उसका सुख या दुःख मरने के उपरान्त परिणाम रूप हो उसे अवश्य भोगना पड़ेगा तो अब दो ही दशा हो सक्ती हैं कि या तो यही शरीर उसे फिर मिले या कोई दूसरा शरीर पावे जिसमें प्रवेश कर यह जीव अपने किये हुये काम का फल भोगे—यदि सब आस्तिक लोग यह मान लें कि किये हुये कर्म के भोगने के लिये दूसरा शरीर मिलेगा तो आवागमन सिद्ध होगया और यदि यदि माना जाय कि यही शरीर न्याय के दिन ईश्वर की शक्ति से फिर उठेगा और अपने आत्मा को धारण कर पूर्वकृत पुण्य या पाप का फल सुख दुःख सहेगा तो कई एक दोष उठते हैं जिसके परिहार के लिये कोई अच्छी युक्ति नहीं मिलती—पहले तो देखने में आता है कि समुद्र में डूबी हुई जहाजों के मांझियों की हड्डियां

पृथक् २ द्वीपों में जा पड़ती हैं जैसा किसी के हाथ की हड्डी लहरों में हिलकोरा खाते अफ्रिका में जा पड़ी पैर की हड्डी अमरिका के किनारे जा लगी मूंड लहरों में चक्कर खाता हुआ यूरोप में जा लगा इस तरह उसके शरीर के प्रत्येक अवयव कितने दूर जापड़े कि जिन को बटोर कर एकत्र करना मनुष्यशक्तिबाह्य है बरन ईश्वर का काम हो सक्ता है-सम्भव है ईश्वर सर्वशक्तिमान् है मनुष्य के लिये वह इतना क्लेश उठावे और उन अवयवों को जोड़ एकत्र कर दे-तब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि जब किसी शरीर से जीवात्मा निकल गया और वह शरीर किसी नदी या तालाब में फेंक दिया गया जल के जीव मछलियें ने उसे खालिया और उन मछलियों को इन दिनों के सुसभ्य शिक्षितों ने जिह्वा के स्वाद में काम लाये और उन्हीं से उन के शरीर के अवयव बने-एक अवयव जो पहले एक जीव के शरीर का था वही अब दूसरे मनुष्य के शरीर का अवयव हो गया तो यहां पर यह प्रश्न उठ सक्ता है कि एक ही अवयव एक काल में दो जीवात्मा का कैसे रह सक्ता है इस दशा में ईश्वर का न्याय क्या कर सक्ता है-इतना ही नहीं बरन फिज़ियालोजी पदार्थविद्या के बड़े विद्वान् कहते हैं कि मनुष्य के शरीर का अवयव १२ वर्ष में बिल्कुल बदल कर नया बनता है जब १२ में एक नया शरीर बना तो १२० वर्ष की आयु में मनुष्य के १० शरीर २ अवयव बने और न्याय के दिन एक जीवात्मा के लिये १० पृथक्२ शरीर बन के खड़ा होगा जिस्में वह अपने किये हुये सुकृत दुष्कृत का फल भोग सक्ता है-इन युक्तियों से ईसा या महम्मद् के मतावलम्बियों के अनुसार केवल न्याय के दिन आत्मा का शरीर के साथ संयोग होना नितान्त असंगत है और आवागमन को छोड़ कोई दूसरा सिद्धान्त नहीं है जो मनुष्यों को अपने किये हुये भले या बुरे कामों का फल भोगने का यथावत् प्रमाणिक उत्तर दे सके-इस सब लेख का सारांश यह हुआ कि आवागमन पर विश्वास स्वभाव सिद्ध है प्राचीन काल से आज तक बड़े २ विद्वान् यहां के और दूसरे २ देशों के भी बराबर मानते चले आये और मनुष्य की साधारण बुद्धि पक्षपात रहित हो इस सिद्धान्त को छोड़ दूसरा कोई सिद्धान्त नहीं पाती जिस्पर विश्वास रख चित्त की अनेक शंकाओं को दूर कर सके-जब तक ईश्वर जीव और माया ये तीनों पृथक् ज्ञात होते हैं तब तक मनुष्य के साथ आवागमन लगा है त्रिकाल में यह जीवात्मा इससे छुटकारा नहीं पा सक्ता-

न्याय के दिन जीव का शरीर के साथ संयोग मानने वालों के मत में एक आपत्ति और भी आ पड़ेगी कल्पना करो कि एक बालक १० दिन का हो शरीर को त्यागे दूसरा ९९ वर्ष का बूढ़ा होकर संसार से कूंच करे तो ये दोनों न्याय के दिन अपना २ वही शरीर पावेंगे या कोई दूसरा शरीर—यदि दूसरा शरीर पावें गे तो आवागमन को एक प्रकार मान लेना हुआ और यदि यह माना जाय कि १० दिवस वाला बालक वही १० दिवस वाले शरीर को पावेगा और

९९ वर्ष वाला बूढ़ा वही अपने बूढ़े शरीर को पावेगा तो प्रत्यक्ष हुआ कि लूला लंगड़ा जो जैसे शरीर से तन त्यागेगा वह वैसा ही शरीर पावेगा—चाहो वह कैसा ही धर्मिष्ठ और पवित्र आत्मा का हो पर स्वर्ग में जाकर भी लूला चलने फिरने और अन्धा देखने आदि से सब तरह वञ्चित रहेगा न मनुष्य के शारीरिक या मानसिक गुणों में किसी तरह की ह्रास या वृद्धि हो सक्ती है—तो निश्चय हुआ कि स्वर्ग भी केवल न्याय के दिन जीवात्मा का शरीर के साथ संयोग मानने वालों के मत में एक प्रकार खेलवाड़ है और जो २ उपाधि जीव के साथ यहां लगी हैं वही सब उपाधियां वहां भी दामनगीर रहेंगी और एक ही दिन उसका न्याय होगा तो यह जीवात्मा बेचारा सदा के लिये भुगतमान भोगता रहेगा कभी उद्धार पावेहीगा नहीं। दे-नं-ला-

## पुस्तक प्राप्ति वीरेन्द्रवीर

यह नवीन उपन्यास बाबू देवकीनन्दन कृत नागरीप्रचारणी सभा बनारस के प्रबन्ध से छापा गया है इसका आख्यात और भाषा दोनो बहुत उत्तम हैं पढ़ने योग्य उपन्यास है नागरीसाहित्य का एक अंग अवश्य ऐसी पुस्तकों को कहना उचित है—मूल्य ॥=)

जयप्रकाशसर्वस्व आदि कई पुस्तकें मुफ्त में पढ़ने को दीजाती हैं जिन्में राजा जयप्रकाशलाल की कर्त्तव्यता का वर्णन किया गया है पं०—नकछेदीलाल तिवारी को लिखने से मिल सकती है—

## निवेदन

हम अपने कृपालु पढ़ने वालों से सविनय निवेदन करते हैं कि वर्ष किसी न किसी तरह पूरा हो गया है अब हमारा मूल्य जिन्से जो कुछ पावना हो भेजदें बड़े अनुगृहीत होंगे-सच मानिये विलम्ब में हमारे प्रकाश होने का कारण केवल द्रव्य की संकीर्णता है यदि ग्राहक जन हमें सहायता देते रहैं तो ऐसा कभी न हो-हम अधिक ग्राहक नहीं चाहते बरन जितने अब हैं वे ही ठीक समय पर मूल्य भेजदें तो काम चलता जाय और ठीक समय पर हम उन से आकर सिलते रहैं नहीं तो "नकटा जिया बुरे हवाल" वाली कहावत के अनुसार लड़खड़ाते लंगड़ाते किसी न किसी तरह जब तक चल सकैं गे चलें ही गे-

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

JANUARY 1895 VOL. XXIV—NO 1

मासिक पत्र ।

जनवरी १८९५ । चौबीसवां भाग—नम्बर १

१ सन १८९४ ।
२ नागरी ।
३ पद्य ।
४ स्फुट विषय
५ प्रहसन ।
६ स्फुट कविता ।
७ समाचारावली ।
८ कायस्थ कौन्फरेन्स ।
९ सिराजुद्दौला ।
१० शृंगार निर्णय ।

बांकीपुर
"बिहार-बन्धु" छापाखाना,
१८९५ ।

# बिहार-बन्धु।

न० १—जनवरी १८९५।

सन १८९४।

समाचार पत्र।

इस वर्ष के आरम्भ में दो अँगरेज़ी और एक हिन्दी पत्र इस प्रान्त से निकले एक बिहार पेट्रियट और दूसरा बिहार टाइम्स, हिन्दी का हरिश्चन्द्र कौमुदी। बिहार पेट्रियट जैसा निकला वैसा न निकला दोनों अवस्था बराबर ही समझनी चाहिये क्यों कि थोड़े ही दिनों में अकाल मृत्यु की प्राप्त हुआ। पर बिहार टाइम्स ने एक वर्ष में बहुत कुछ उन्नति की है इस प्रान्त की राजनैतिक अवस्था पर विशेष लक्ष्य इसका रहता है इसका स्थायी होना ग्राहक अनुग्राहक वर्ग ही पर स्थिर है देखा चाहिये कहां तक वे अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं। एक वर्ष के अन्तर में बहुत उपयोगी विषय इसने अपने हाथ में लिये हैं अभी और भी बहुत बाक़ी हैं जिन पर आशा की जाती है कि समयानुसार यह ध्यान देगा, बिहार बन्धु की अवस्था का उल्लेख करना यहां सर्वथा वृथा है क्यों कि इसकी अवस्था में इस वर्ष में कोई ऐसा फेरफार नहीं हुआ।

रौयल अफ़्यून कमिशन

अब बिहार प्रान्त में क्या क्या इस वर्ष में हुआ संक्षेप से हम पाठकों को सुनाते हैं क्यों कि हमको क्या कि प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि इतने बड़े समयमें जो कुछ घटनायें हो गई हैं उनको एक बार स्मरण

कर लें। वर्ष के आरंभ ही में रीयल अफ़्यून कमीशन यहां आया जिसके कारण बहुतकुछ हल चल रहा। संभव है कि महाराजा दरभंगा इसके एक मेम्बर थे इसी से लोग अपना स्वाभाविक आलस्य छोड़ इस की कार्य वाही पर विशेष ध्यान दिये हुए थे। कमीशन के होने से कोई लाभ न हुआ अवस्था पहले ही की सी रही यदि यथार्थ में देखा जाये तो इसका खर्चा प्रजा के मत्थे बैठा। हां बिहार के लोग यह मतलब लगावें कि कमीशन न होता तो जनवरी से सरकार एक रुपया अधिक भाव बढ़ा कर अफ़्यून न लेती। लोग चाहें जो समझें पर अफ़्यून की खेती में पहले का सा लाभ अब न रहा दूसरे दूसरे जिन्स की खेती से अधिक लाभ होता है। एक रुपया दर में बढ़ाया गया तो क्या पर अभी सन्देह ही इस बात का है कि सरकार को और भी रेट कहीं न बढ़ाना पड़े। भांग गांजा का भी कमीशन बैठा पर उस पर लोगों का इतना ध्यान नहीं गया।

**हिन्दू धर्म पर श्रद्धा**

जनवरी के अन्त में बीवी बेसन्ट का आना और उनकी वक्तृता की धूम से अंगरेज़ी शिक्षित युवकों की भक्ति एक बार अपने बड़ों के पुराने हिन्दू धर्म पर जाग उठी। कई नई सभायें स्थापित हुईं और पुरानी थियोसोफ़ीकल सोसाइटियों का जीर्णोद्धार हुआ। थियोसोफ़िकल गुरु मिस्टर वर्द्धम काइटली ने पिछले दिनों में आकर सभाओं में नवीन उत्साह का समावेश कर दिया। और कुछ हो या न हो पर विधर्मी होने का खीत जो प्रबल वेग से लड़कों में प्रवाहित हो रहा था रुक गया और हिन्दू धर्म की ओर चलने लगा।

**बृक्षों पर मिट्टी**

बृक्षों पर मिट्टी का लसेड़ा जाना और उन में बालों का पाया जाना इस वर्ष में एक ऐसी बात हुई कि बिहार प्रान्त का नाम विलायत तक पहुंच गया और वहां वाले इस घटना के कारण बहुत कुछ विचलित हो गये। यद्यपि इसका भेद कुछ न खुला पर निस्सन्देह राजनीति से इसको कुछ लगाव न था। बहुत से लोगों ने इसका सम्पर्क नैशनल कौंग्रेस से समझा था पर वह समाज ऐसा है कि जिसका प्रभाव केवल

अंगरेज़ी शिक्षित लोगों की छोड़ जन साधारण पर बहुत कम है। वे यह भी नहीं जानते कि नैशनल कौंग्रेस क्या बस्तु है। इस कारण मिट्टी का लगना और नैशनल कौंग्रेस—इन में सम्पर्क समझने वालों की सर्वथा भूल ही थी। पहले पहल यह समाचार सुनने में आया कि जनकपुर में [ जो उत्तर प्रान्त में नयपाल के समीप है ] रात भर में एक तालाब खुद गया और उसकी मिट्टी आस पास के वृक्षों में लगी हुई पाई गई। पहले तो इस समाचार की बहुत दिल्लगी उड़ी ऐंग्लोइंडियन पत्रों के सम्बाद दाताओं ने भी जहां तक बना इसको निर्मूल सिद्ध करने में कसर न रक्खी पर यद्यपि तालाब का खुदना तो निर्मूल हुआ पर मिट्टी का लगना सच ही रहा। और जब यह आसपास के गांव में पहुंचा फिर वहां से आस पास के ज़िलों में, तब तो हंसी के बदले आश्चर्य होने लगा फिर आश्चर्य ने भय का रूप धारण किया। यहां तक कि विलायत के समाचार पत्र और बड़े बड़े लोगों के सामने सन १८५७ के ग़दर की मूर्त्ति खड़ी हो गई वहां और यहां के साहब लोग ऐसी ऐसी बातें करने लगे मानो अंगरेज़ी राज के अन्तिम दिन आ गये। यह चर्चा जब बहुत दिन बीत गये तब उठ गया और लोगों का संदेह दूर हुआ।

हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा और गोबध।

बहुत से दुरात्माओं ने इस मिट्टी लगने को हिन्दू मुसलमान के गोबध के कारण दंगे का कारण ठहराया और बात को ऐसी बढ़ा दिया कि सच ही सन १८८४ के बकरीद में ऐसे दंगे का खटका हो गया। पर जब बकरीद हो गई तो वे अपना सा मुंह लिये रह गये और उनकी बात झूठी ठहरी। म्यूनिसिपैलिटी के भीतर गोबध के सम्बन्ध में एक चीठी सर चार्ल्स इलीयट ने पटने के कमिश्नर को लिखी थी इसी पर बंगाले के युद्धा मुसल्मानों का चित्त चंचल हुआ उसकी हवा बिहार के मुसल्मानों को लगी फिर उस असन्तोष का फल हिन्दुओं में भी झलकने लगा। अन्त को सब बात दब दबा गई। मिस्टर लेमेशर साहब के ऊपर गोबध सम्बन्धी तकरार का कारण ढूंढ़ने का भार सौंपा गया। उनके रिपोर्ट से सरकार को बहुत काम की बातें प्रगट हो गईं

होंगी क्यों कि यद्यपि वह रिपोर्ट प्रकाशित नहीं हुआ पर बिहार प्रान्त के दंगों के प्रति सरकार के पिछले बर्ताव से प्रतीत होता है कि उक्त साहब ने दोनों दल का निष्पक्ष विचार करके न्याय किया होगा। इस विषय को नील वाले साहबों ने भी अपने हाथ में लिया था और एक प्रार्थना पत्र बड़े लाट को भेजा जिसके साथ मिस्टर रीजर्स का इन गोवध सम्बन्धी दंगों के दूर करने का उपाय भी था। सुनने में आया था कि रीजर्स साहब ने अपने जीवन का अधिकांश समय इस विषय में लगाया था और लेसेश्वर साहब ने उन उपायों को पसन्द भी किया था। यह बात पार्लिमेन्ट में भी छिड़ी थी इस पर कोई कार्यवाही होते न देखी गई। वर्ष के अन्त में सुनने में आया कि रीजर्स साहब नौकरी से बरखास्त किये गये कोई कोई इसका कारण "गोवध सम्बन्धी प्रश्न से लगाव" ही समझते हैं।

अलम।

इस प्रश्न के साथ ही साथ आपस में मुसल्मानों के भी अलम निकालने के सम्बन्ध में बहुत मतान्तर रहा, गया में यह मत भेद अधिक पर भागलपुर छपरा आदि स्थानों में कम रहा। गया के शीया लोगों ने मश्क और तीर के सहित अलम निकालने की आज्ञा मांगी थी पर सरकार ने फ़रवरी १८८४ में नामंजूर कर दिया। यह आज्ञा ठीक नहीं हुई क्यों कि आपस का बिवाद एक रीति से दोनों समाज में तय हो गया था। इस आज्ञा के प्रतिवाद में गया पटना छपरा आरा मुज़फ़्फ़रपुर मुंगेर भागलपुर आदि सभी स्थानों में सभा हुई थी अन्त की अक्टीवर में उन लोगों ने बड़ी लम्बी चौड़ी एक दरख़ास्त बड़े लाट के पास भेजी है यदि वहा से भी कुछ नहीं होगा तो उनकी इच्छा राज सिंहासन तक इंग्लिस्तान में पहुंचने की है।

बुद्ध गया मंदिर।

बुद्ध गया मंदिर के विषय में भी बड़ा भारी आन्दोलन इस वर्ष रहा। कुछ लोगों की इच्छा है कि यह मंदिर अन्य देश बासी की जैसे चीन जापान आदि देश के लोगों को सौंप दिया जावे क्यों कि ये बौद्ध

मतावलम्बी हैं और यह मंदिर उनके देवता का है। पर हिन्दू लोग और वहां के महन्थ कहते हैं कि यह देवता हिन्दुओं के हैं इस लिये उनको किसी तरह नहीं सौंपा जा सकता। इसमें बड़े बड़े लोग पड़ेंगे देखा चाहिये क्या निश्चय होता है।

सर्वे पैमाइश।

सर्वे पैमाइश का काम धूम धाम से सरकार की ओर से होता रहा ज़मींदार और प्रजा दोनों इस बात से नाराज़ रहे। पहले तो प्रजा ने प्रतिवाद में साथ नहीं दिया था पर जब सर्वे होने लगा और उसकी लीला आखों देख पड़ी तो फिर वह भी प्रतिवाद करने लगी। सन १८८४ के पहले तीन महीनों में जहां तहां से प्रतिवाद की सभा का समाचार मिलने लगा। लोगों में यह विश्वास हो गया है कि पार्लिमेन्ट तक पुकार पहुंचाने से अवश्य ही सुनाई होगी और जब यह समाचार मिला कि कई एक मेम्बर जैसे मिस्टर बिलसन आदि हिन्दुस्तान में आये हुए हैं तब तो उन लोगों ने समझा कि इनके पास पहुंचने से पार्लिमेन्ट ही के पास पहुंच गये। अन्त को एक डेपुटेशन प्रजा की ओर से आगरे में उन मेम्बरों के पास जा पहुंचा और उसने अपना दुखरा सुनाया फल तो इसका कुछ नहीं निकला पर वह लोग बराबर इस सर्वे के सम्बन्ध में प्रश्न करते रहे। बंगाल और बिहार प्रान्त की सभाओं की ओर से जो मेमोरियल भेजा गया था उसका उत्तर स्टेट सेक्रटरी ने जो दिया सब उससे निराश हो गये। सर्वे का काम देखने के लिये छोटे लाट भी आये और सर रीपर लेथब्रिज भी आये। उन्होंने अपनी आंखों से देख सुन कलकत्ते में जाकर एक स्पीच दी, फिर सर डब्लू हन्टर साहब ने पुरानी सरकारी कागज़ों को प्रकाश किया इन सब से ज़मींदारों का पक्ष ही बलवान रहा पर "हाकिम करे सो न्याव" के अनुसार बलवान होने पर भी राजा की आज्ञा तो माननाही पड़ेगा। ज़मींदार लोग बराबर आन्दोलन करते चले जायें तो फिर किसी की दृष्टि इस पर पड़ ही जायेगी और कुछ फल मिल भी जायेगा।

कौंग्रेस का हाल एक रीति उदास ही रहा मद्रास कौंग्रेस में भी यहां से डेलिगेट कोई नहीं गये।

कौंग्रेस।

इस प्रान्त की म्युनिसिपैलिटियों में नये बाइस चेयरमैन चुने जाने के अवसर में लोगों का बहुत कुछ मनोयोग रहा। पटने में पुराने बाईस चेयरमैन के फिर चुने जाने के समय दृढ़ता के साथ प्रतिबाद हुआ पर सफलता नहीं प्राप्त हुई। सुनने में आया है कि यद्यपि यह प्रतिबाद सफल नहीं हुआ पर इससे नवीन उत्साह का संचार म्युनिसिपैलिटी में हो गया है। देखा चाहिये क्या करतूत अगले वर्ष देखने में आती है। इसकी आमदनी यद्यपि अधिक है और इस साल और भी बढ़ाई गई है तो भी बुरी दशा ही रही इसकी शिकायत बराबर ही सुनने में आई। सरकार भी बराबर धिक्कारती ही आई और रेट पेअर भी सदा निरास ही होते रहे पर तो भी दशा न सुधरी अधिक दोष इस बिषय में म्युनिसिपल कमिश्नरों ही का देना चाहिये।

स्थानीय आत्म शासन।

लाट साहब का आगमन सन १८८४ में तीन बार हुआ। पहली बार उनका आना बिशेष करके पैमाइश की कार्यवाही ही देखने के लिये हुआ। दूसरी बार आरा जल कल खोलने के उद्देश्य से हुआ और तीसरी बार कई कारणों से हुआ जिनमें दफ़्तरों का मुलाहज़ा फिर सर्वे का काम देखना मुख्य हैं इस बार में स्पीच आप का बिहारी और मुसलमानों का सरकारी कामों में नियुक्त करने के बिषय में बड़ा भारी हुआ। गया और खास बिहार की ओर लाट साहब का स्वागत अति उत्तम हुआ।

लाट साहब का आगमन।

आईन क़ानून सम्बन्धी विषय में मुफ़स्सिल म्युनिसिपैलिटी बिल, बाकी मालगुज़ारीमें नीलाम के आईन का संशोधन, सैनिटरी ड्रेनेज बिल, और देव धन में आईन द्वारा हस्तक्षेप यही हैं। देव सम्पत्ति के विषय में बहुत सी दरख़ास्तें गई थीं नई रौशनी वालोंने मद्रास से और बंगालीसे भी इसके

आईन कानून।

पक्ष में प्रार्थना की थी। पर जब बड़े लाट का बिचार इस विषय में प्रगट हुआ कि सरकार ऐसी बात में हस्तक्षेप नहीं करना चाहती तब लोगों के जी में जी आया क्यों अंग्रेज ज़ीदाओं से धर्म सम्बन्धी बातों में प्रायः सभी को खटका रहता है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी बातों में पहला नम्बर आरा का जल कल का होना चाहिये जिसे लाट साहब ने आप अप्रिल १८८४ में आकर खोला। यह राजा राजेश्वरी प्रसादसिंहकी उदारता का चिन्ह स्वरूप है जिन के दान से आरा नगर निवासियों को जल कल का सुख मिला। मिस्टर स्काईन जब आरे से बदल कर भागलपुर गये तो वहां भी उन्हों ने जल कल की दुरुस्तगी की ओर ध्यान दिया है यद्यपि सरकारी अफ़सर जल कल होनेको स्वास्थोन्नति का सहायक समझते हैं यह बात कहां तक ठीक है कलवाले और बिना कलवाले स्थानों को मिलाने से प्रकट होगा मुज़फ़्फ़रपुर में ड्रेनेज का काम जारी रहा, ड्रेनेज और जल कल की ओर गया में बन्दोबस्त होता रहा ओर पटने में नाली का काम जारी रहा पर अधूरा ही रहा और जो पूरा हुआ वह भी सन्तोष दायक नहीं हुआ। साधारणोपयोगी काम में कहने योग्य लक्खी सराय की रेल और भागलपुर बन्सी रेलवे की लाट साहब की मंज़ूरी मुख्य है जब यह लाईन बन जायेगी लोगों को आने जाने का सुख तो अलबत्ता हो जायेगा पर और बातों का जो भी रहा सहा सुख है दूर हो जायेगा। इस सम्बन्ध में दो बांध का ज़िक्र भी किया जा सकता है जिन पर लोगों का ध्यान रहा। (१) कोसी का बांध (२) घाघरा की बांध जिस के विषय में १८८४ के फरवरी महीने में लाट साहब का रिज़ोल्यूशन छपा था। उन्हों ने इंजीनीयरों की राय ले कर इस काम की जोखिम वाला ठहराया पर पुराने बांध की (दमड़ी से रावल तक) मंज़ूरी की।

स्वास्थ्य सम्बन्धी और साधारणोपयोगी काम।

गत वर्षमें बहुतसे मुक़दमें दीवानी और फ़ौजदारी के हुए। उनमें से मुख्य ये हैं—(१) टिकारी राज के

मुक़दमें।

विल का मुक़द्दमा जिसमें राजा के गोतिये लोग चाहते थे कि राजा की पोती को कुछ न मिले यह मुक़द्दमा प्रीवीकौन्सिल से पोती के पक्ष में हुआ। (२) अमांवा का मुक़द्दमा जो पटने के जजी में एक करोड़ तीस लाख के दावे का था अब यह मुक़दमा हाईकोर्ट में मुद्दई की अपील से गया है। (३) बनैली राज का मुक़दमा जो भागलपुर के एक वकील पर चला दावी एक लाख से ऊपर की इसमें थी। (४) गया अलम का मुक़द्दमा जिसमें मौज़ा पाली के शिया लोगों ने अलम निकालने की हक़ीयत क़रार देने की दरख़ास्त की थी डिग्री उनकी हुई पर सुन्नी लोगों ने उसकी अपील हाईकोर्ट में की है। (५) नरहन का मुक़द्दमा जिसमें बोर्ड ने उस राज की कोर्ट अफ़वार्डस के आधीन रखना ही वाजिब ठहराया। (६) पटना म्युनिसिपैलिटी बनाम एक रेट पेअर वास्ते वसूली टैक्स और फिर वही रेटपेअर बनाम म्युनिसिपैलिटी वास्ते दिला पाने ख़िसारा बाबत बेज़ाप्ति कुर्की। इसमें दोनों ओर के वकीलों में बड़ी चख चुख हुआ की देखने वालों की बहुत बड़ी भीड़ रहा करती थी। फ़ौजदारी मुक़द्दमों में बसन्तपुर वाले मुक़द्दमे की हाईकोर्ट में अपील और मिया कुपरा की कोठी का मुक़द्दमा जिनके बारेमें (बंगाल का काउन्सिल) में कई बार प्रश्न हुए। पटने के दो नामी वकीलों पर एक हतक इज़्ज़ती का मुक़द्दमा जिसे एक मुसलमान ज़मीदार ने चलाया। मुद्दई ने बम्बई से बैरिस्टर मंगाया था इसमें दोनों मुद्दालह छूट गये। और राय ईश्वरी प्रसाद का मुक़दमा जो अभी ज़ेर तजवीज़ है।

इस वर्ष में बड़ी बड़ी शोक जनक घटनायें हुईं। महाराजा

शोक मयी घटना।

डुमरांवके मृत्यु से सारे प्रान्तमें शोक हुआ। महाराजा साहब के गुण किसी से छिपे नहीं थे उनका पुनरुल्लेख करना मानो शोक को फिर उभाड़ना है। इस घटना का सविस्तर वर्णन उसी समय बि० ब० में

किया जा चुका है इधर अन्तिम दिनों में महाराजा सर राधा प्रसाद सिंह ने अपने राज काज का काम दीवान राय जय प्रकाश लाल बहादुर पर छोड़ दिया था। दीवान साहब पर पूर्ण विश्वास राजा साहब का था इसके प्रमाण में इतना ही कहना बहुत है कि अपने विलमें उन्हीं ने महारानी साहबा और दीवान जी को अपने राज्य का रक्षक नियत किया है। सरकार ने इस विषय में हस्तक्षेप करना नहीं चाहा इससे राजकाज पुराने दीवान उसी तरह चला रहे हैं जैसा महाराजा साहब के समय में चलाते थे। महारानी साहबा को गोद लेने का अधिकार हुई है अभी तक किसी को नहीं उन्होंने लिया है आशा दृढ़ है कि भविष्यत राजा को, चाहे वह जो हों, अच्छी शिक्षा दी जायेगी। दूसरी घटना महाराजा बेतिया के अकाल मृत्यु की है यह सन १८८३ के अन्त में हुई थी। महारानी बेतिया को भी गोद लेनेका अधिकार है पर अभी तक कोई नहीं लिया गया है दूसरी शोकमयी घटनाओं में मुज़फ़्फ़रपुर के बाबू परमेश्वरनारायण महथा के भाई बाबू सिद्धेश्वर नारायण महथा का देहान्त, राय बहादुर बाबू राम प्रसाद साबिक सदर आला, राजदेव के मनेजर बाबू भुवन लाल, भिखना पहाड़ी के नवाब हुसैन कूलीख़ां, नेवरा के शमसुलउलमा मोलवी वहीदउद्दीनख़ां बहादुर। नवाब सइयद अमीर हुसैन ख़ां सी० आई० ई० के भाई मौलवी अबुल हसन ख़ां, पटने की मुतम्मात इमाम बांदी बेगम और मुज़फ़्फ़रपुर के बाबू नन्दन लाल और बाबू रामधारी सहाय की मृत्यु उल्लेख करने के योग्य है।

**देश का स्वास्थ।**

और और वर्षों में गर्मी बर्सात में प्रायः फसली बीमारी बहुत हुआ करती थी और रोगी की उस के बाद जब ज्वर आ जाता था तो अच्छे होने की आशा लोगों की होती थी पर इस वर्ष फ़सली बीमारी तो थी ही बुखार का भी बड़ा ज़ोर रहा और इस से बहुत आदमी मरे।

**इस प्रान्त में हिन्दी की शिक्षा।**

यद्यपि इस प्रान्त में शिक्षा बिभाग को परीपाटी से चलाने के लिये स्कूल बुक कमीटी और इन्स्पेक्टर आदि नियुक्त हैं तो भी इस बिभाग की कार्यवाही साधारण की सन्तोषदायक नहीं होती। प्रायः सभी प्रान्तों से

दबी दबाई असन्तोष की धुन सुनने में आती है। इस असन्तोष प्रकट करने वालों में वह भी हैं जिन को नित्य कष्ट का अनुभव होता है और जिन का भविष्यत उत्तम मध्यम और अधम शिक्षा पर निर्भर है। सर्वथा दोष स्कूल बुक कमीटी का ही सुनने में आता है जो अपने कर्त्तव्य की भली भांति पालन नहीं करती। कमीटी को यह भली भांति अपने ध्यान में रखना उचित है कि उन की थोड़ी सी सावधानी या असावधानी पर कई सहस्र लड़कों का भविष्यत जो प्रति वर्ष पढ़ते और परीक्षा देते है निर्भर है। कमीटी के दोष से यदि उन बिचारों का अपकार होता है तो वह निन्दा की क्रोड़ स्तुति भाजन कभी नहीं हो सकती। भला इन्स्पेक्टर तो परदेशीय अंग्रेज़ ठहरे वह अपने जानते जहां तक बनता है ठीक ठीक ही काम करते हैं उन को साधारण के सन्तोष असन्तोष का समाचार नहीं मिल सकता। तथापि वह चाहें तो अपनी गश्त में इस असन्तोष का हाल पा सकते हैं। पर स्कूल बुक कमीटी के मेम्बर गण तो देशीय हैं वह तो अपने देश और देशीय बालकों का भला बुरा बिचार सकते हैं। इस असावधानी से, जिस का समाचार बराबर सुनने में आता है, कमीटी देशकी दृष्टि में तो हई है परमेश्वर के सामने भी अपने को दोषी बनाती है।

---

## नागरी ।

ना :—नाचि केतु नाकनाथ नाट्य प्रिय नाथ और नाइलाच्च नारायण जाके त्रिभुवन हैं। नाव नासिकामल औ नाभिज महान देव नाकसद नारद जे नाद बिलच्चण हैं। नाथाधिनाथ नाग भूषण नागेन्द्र देव जपत जाहि नाम नाश होत दुख जन हैं। मंगल जू भनत धरि टेक नारायण पै, नागरि नाकार नाथ येते देव गण है ॥

ग :—गदी गणदेव गरुड़ बाहन गणेश जू, गद मरकंठ गवीश्वर गुण खानि ये। गदाधेर गंधवाह और हू गणाग्रणी देव जू गदाम्बज गभस्ति आदि मानिये। गण औ गगनेश जू प्रचंड गण नायिका पुनि सो गणाधिप गंभीर हिय आनिये। मंगल की मूल देव गणपति गरिष्ट जू, नागरी गकार नाथ येते देव जानिये ॥

री :—रिधम दुरधर्ष बज्र हस्त रिपु देव जू, और रिधिनाथ देव गुण के निधान हैं। रिषभ रिषिवल्लभ और रिद्धि काम दाइनी देव रिपु हंता रिषिनाथ यश खान है। रिभु रितुराज स्वामि और हू रिभुच्च जू श्रुति रिग्वेद रिण मोचन भगवान है। मंगल जू रिपंजय विलोकि नाथ बंदिये नागरी रिकार देव येते महामान है ॥

---

शुद्ध अति साफ याते जाल नहिं हीनवारी चाही सो लिखैा नहिं अखरन की खागरी। रावरे सरोखे श्रेष्ट सुजन सयानन की नागरी गुणागरी अति ही प्रिय लागरी। सहज सुभाव सिद्ध नागरी नरेश भाषा मनोभिरंजन यदि नागरी ही नागरी। कहै पुकार मंगल सकल सुजान सुनो, निपट नदान वे है केर भर कागरी ॥

नागरी नगीना नहि नीकी जग लागु केहि चन्द के प्रकाशे नीकी लागु पृथराज की। फैज़ी सुलतान खान खान बुद्धिमान नीकी लागु सो अकब्बर यौन राज सिर्ताज की। नीकी लागु ग्रीस ग्रीयर्सन आदि गौरवान एशिया सोसाइटी के सभ्य इंगराज की। ऐसे ऐसे हिन्दु मुसलमान क्रिस्तानन की नीकी पै फीकी मंगल लागु जालसाज की।

अच्चर अनेक नहिं एक उच्चारण की औ ना आकार एक बहुत आखरन की। सकै ही सहज न रूप परिवर्तन याकी अच्चर अनोखे दाव देन जाल करन की। चलै ना उलटी चाल सुगति मराल याकी मानी सत्‌बादी सादी नारी सुघरन की। अकबर लुभायी लेखि जर्मन जुड़ायी जानि मंगल है ऐसी भाषा आर्य्य बरन की॥

अच्चय भंडार बुटि नेकु सुशब्दन की सुंदर सुमंजु लेख रद्य गुण खानी की। पद्य में प्रसिद्ध यासन दूजो नहिं जगत बीच चित्र शब्दार्थ अलंकार लासानी की। तुलना करीये यदि याकी सब भाषन सी दासीवत दीखै सब भाषा भाषरानी की। मधुर मनोहर सी मंगल लावण्य मई सादृश संतान है परम देव बानी की॥

## पारसी।

बिन्दू बढ़ाए एक बदले बहु अर्थ जाकी देत फाकी बाप औ मोकिर अनेकन की। नुक्ता प्रसिद्ध जाकी करत काज सिद्ध बाकी जाके जी जाल फांस फंद औ फरेबन की। लिखै कछु पढ़ै और बदले अर्थ ठौर २ किये बिन गौर दुःपाठ्य सुचेतन की। मंगल ध्यान त्यागिये सुज्ञान अस भाषा की पढ़िवे में जाके भ्रम होत घनेरन को॥

मंगल चन्द्र टेक नारायण बिरचित।

" दुनियां के जो मजे हैं, हरगिज़ ये कम न होंगे।
चर्चा यही रहेगा; पर अफसोस ! हम न होंगे ॥"

दोहा।

ब्रह्म ज्ञान, इक ज्ञान है, और ज्ञान नहीं जान।
या में तन मन वचन तें, अपने मन को आन ॥

चौपाई।

सुख संसार कबहुं नहिं हानी। भोग करहिं जो जीवहिं प्रानी ॥
खेद बड़ी मेरी मन उपजत। निसि दिन मम जीवन जग छीजत ॥

मोरठा।

छीजत जीवन मोर; नहिं छीजत सुख सम्पदा।
यह माया धन घोर; घोर कष्ट को धाम है ॥

सवैया।

कष्ट को धाम जलाइ सदा, भव दुःख, बिहीन अदीन, निरन्तर। तू नहिं दीन, मलीन, अधीन; सदा निर्लिप्त, प्रशस्त पटुतर ॥ ब्रह्म विशाल दयाल, कृपाल; तुही जग-व्यापक, व्यापक अन्तर। काहे को सोच करै मन मूरख, तू निज-बोध, सुबोध, स्वतन्तर ॥

दोहा।

दुनियां के जो सुख अहैं; कोउ न होइ हैं कम्।
चर्चा चिर रह जायेगी; रहै न मेरा दम् !—

चौपाई।

जो सब सुख हैं जग के भीतर ; होइ हैं कबहुं न तीतर बीतर।
केवल खेद इहै मन माहीं ; मैं नहिं रहिहौं जग के माहीं।

दोहा।

जो सुख हैं संसार के ; सब ही नष्ट लखाहिं।
तुम अनष्ट, क्यों नष्ट के हेतु, सदा तरसाहिं।
जग अनित्य, तुम नित्य अस ; करि निश्चै मन जान।
भव के सुख, सब सुख नहीं ; ब्रह्म सुखहिं सुखमान।

ब्रह्म नित्य पुनि नित्य तुम ; तुम अरु ब्रह्म समान।
त्यागो सब मन-खेद को ; खेद रहित जिय जान।

## चोपाई।

जस अरबुद नभ माहिं उड़ाहीं। रबि कर निकट कबहुं नहिं जाहीं॥
तस माया व्यापै नहिं तोरे। अस प्रतीति परिहरिय न, भोरे॥

## दोहा।

सुत, दारा, पितु, मातु, सब; दुःख-दायक जिय जान।
त्यागि प्रेम इन तें सदा; हरि-सुख में सुख मान॥

## सोरठा।

कीउ न जइहैं संग ; सुत दारा, धन, धरणि जग।
चारि दिनन के रंग ; क्यों भूलि मन बावरे ?॥

## चौपाई।

सुत, पितु, मातु नारि जग जेते। अन्तहुं तोहि तजैंगे तेते॥
तू क्यों तजे न अब ही भाई। सुख इन तें कब किस ने पाई॥

## सवैया।

अपनी सुख हेतु पिता जग में, सुत सुन्दर जाचत देवन तें॥ अपने सुख हेतु त्रिया नर तो, पति पत्निहिं जाचत अन्तर तें॥ निज लाभ बिहीन कीउ जग में नहिं हीलन चाहत औरन तें। बस; राम धनी सब काम की, त्यागि कै; रामहिं राम भजो मन तें।

रे मन मूरख बूझत नाहिं, सदाहि अबूझ कि होइ रहोगे। बाप गये तब, भाइ गये तब, माइ गई तब, तू हूं चलोगे॥ एक अनित्य न दीख पड़े, सब आज, कि कल्ह में जाइ बसैंगे। काहे की प्रेम करे इन तें, करि प्रेम सदा-हि को खेद लहोगे॥

---

( सारन हरपुर निवासी सरस्वती दत्त मिश्र रचित )

## प्रातस्मरणीय ( प्राती )

राखिये दृग कीर अम्बे राखिये दृग कीर—टेक। देवतन की आश परिहरि आयऊं तव थीर। तुहूं जो मोहि के त्यागि दीगी होइहें का गति मोर, अम्बे राखिये० १। पातकी यदि नाम मेरी पतित पावनि तोर। यहि से हृदय भरोस आवे दोगी नहीं मोहि छोड़ अम्बे राखिये० २। महिष आदिक मारने में बहुत नामन तोर। हम से पापी के तरन में होइहें तव जग शोर अम्बे राखिये० ३। पुण्यजन निज पुण्य के बल जात भव की ओर। हम से पापी के तरन हित तुम्हरो नाम न थोड़ अम्बे राखिये० ४। तुम से अन्तर्यामिनी ढिग जो कहूं सब थोड़। ऊस उचित तस करिये माता दत्त कहे कर जोड़ अम्बेराखिये दृग कीर। ५।

## भजन ( बिनय )

जाऊं कहां तजि चरण तुम्हारे- टेक। जेहि चरण सुर नर मुनि ध्यावत नेति नेति कहि वेद पुकारे। सेहि चरण सकली जग व्यापत शिव अजविष्णु नचावन हारे जाउं कहां० १। जेहि चरण अनुकूल भय तें नारायण मधुकैटभ मारे। रामचन्द्र अवतार होइके लंका में दससीस पछारे जाउं कहां० २। द्वापर में श्री कृष्ण भये जब अष्ट भुजी का नाम उचारे। अका बका कंसहुं की मारे सी लीला यह जग बिस्तारे जाउं कहां० ३। अगणित औगुण मोर यद्यपि जिमि आकाश के तारे। पै तुम्हार नाम नउकाबल जइहीं दृढ़ भवसागर पारे जाउं कहां० ४। देह गेह के नेह कुटै बलु कुटै न नेह तुम्हारे। यह बरदान देहु मोहि माता दत्त इहे संसारे जाउं कहां तजि चरण तुम्हारे ॥ ५ ॥

## बाकीपुर विषयक ( जगन्नथिया हो भाय इस धुन पर )

इसकुलिया ही भाय बांकीपुर सुरति मन में रखिह—टेक। उहे बांकीपुर हमसे कहले बुझाय पछिला साथिन के दीह समुझाय इसकुलिया० १। पछिला साथी चिउरा जनि खाय कि आवते मातर मल पड़ि जाय इसकुलिया० २। डेरा खातिर मत होइहें हैरान पढ़नी जाइ

ना होइ ठेकान इसकुलिया० ३। ओहि बांकीपुर में काका बिकाय कितना ढेबुआ ओमे लागि जाय इसकुलिया० ४। पूरी कचौरी औ सिरनी बिकाय लड़िकन के पइसा कूट होइ जाय इसकुलिया० ५। सब का उपर कोठा के माल सेहुत लड़िकन पर फेंकेला जाल इसकुलिया० ६। तेहसे इसकुलिया रहिह बड़ि दूर फंदा लगाय नाहित करी चुर चूर इसकुलिया० ७। जब इसकुलिया रहले दस दिन तेकरे बादत में भइल धात क्षीन इसकुलिया० ८। एहि एक कारण से बहुत बहुत रोग, देखला से भंखेला डाक्टर लोग इसकुलिया० ९। हाथी के पांवसा पांव होइ जाय अंडी की बूडि तो कहली न जाय इसकुलिया० १०। बवासीर के नाहीं ठेकान डाक्टर हकिम और बैदी हैरान इसकुलिया० ११। आपन आपन लेक्चर करि कम्प्लीट धरहिं का तरफ लगवलन दीठ इसकुलिया० १२। एफे और बीए का इही मुतार मेडिकल लीग का कवन आधार इसकुलिया० १३। भोरे से साम तक कइले दौड़ धूप मेहनत का मारे भइले बारे चूप इसकुलिया० १४। राति के पढ़स कि सुतस नीन एही का सोच से भइल बारे खीन इसकुलिया० १५। पहिला इयर में कुटियो होय दूसरा तिसरा तातीले ना कोय इसकुलिया० १६। ओहि बांकीपुर में और कवन रोग जेकरा मारे हैरान सब लोग इसकुलिया० १७। दाइ मजुरिन के दामे बहुत, नोकर और चाकर का लागेला भूत इसकुलिया० १८। कौनो तो नोकर भागि भागि जाय कौनो बांकीपुर में सैर करे जाय इसकुलिया० १९। दूदिन का घुमलामे भइल एक रोग तेकरो कुटे के नाहीं ह जोग इसकुलिया० २०। पहिले मालिक से रखलन छिपाय पीछे का होय जब रखले न जाय इसकुलिया० २१। नोकर का दुख से मालिक दुखीत पढ़स कइसे जब भइल दूचीत इसकुलिया० २२। जे बांकी पुरसे जाला नीदाग से इसकुलिया के ह बड़ा भाग इसकुलिया० २३। अइसन नगर से जे पढ़ि जाय तेकरापर जानो कि ईश्वर सहाय इसकुलिया० २४। दत्त सरस्वती कहे कर जोर राखोये दुर्गा जी आंखि का कोर इसकुलिया इसकुलिया हो भाय बांकीपुर सुरति मन में रखिह। २५।

## नाखून।

१ नाखून पर सफ़ेद निशान विपत की निशानी है।
२ नाखूनों का पीला या काला रंग मनुष्य का उदास होना प्रकट करता है।
३ पतले नाखून के आदमी हौसलेवाले और हुज्जती होते हैं।
४ चौड़ा नाखून शान्त और भीरू स्वभाव सूचित करता है।
५ विद्या के प्रेमी और स्वाधीन चित्त वालों का नाखून गोल होता है।
६ छोटा नाखून दिल का छोटापन ज़िद और घमंड का चिन्ह है।
७ वह नाखून जिस का कीना या कीर मांस से दबा हो भोगी स्वभाव प्रगट करता है।

---

## कान।

१ पतले नोकीले कान बदमिज़ाजी और बेरहमीकी निशानी है।
२ छोटे और पतले कान सुकुमारता और स्वच्छता प्रगट करते हैं।
३ संगीत प्रिय लोगों के कान बड़े होते हैं।
४ बेढब बड़े और मोटे कानों से अइयाशी झलकती है।
५ बड़े बड़े हाकिम और पंडितों के कान बड़े और झुके हुए पाये गये हैं।
६ नेपोलियन का कान छोटा सुन्दर झुका हुआ था।
७ मिस्टर ग्लैडस्टोन का कान झुका हुआ और सिर से सटा हुआ है।

---

## दिन।

१ लंडन नगर में सब से बड़ा दिन १६। घंटोंका होता है।
२ हेमबर्ग और डैंज़िग में १७ घंटोंका।
३ स्टौक हौल्म में १८॥ घंटों का।
४ पीटर्स बर्ग और टुबौल्स्क में १९ घंटों का।
५ फिनलैन्ड में २१वीं जून को दिन २२ घंटों का।

६ नौर्वे के वार्डवरी में सब से बड़ा दिन २१वीं मई से २२वीं जूलाई तक लगातार रहता है और स्पिटज़ बर्गेन में सब से बड़ा दिन ३॥ महीने का होता है।

७ सेंट लूईस में बड़ा दिन कुछ कम १५ घंटों का और मौन ट्रीयल में १६ घंटों का होता है।

---

## प्रहसन।

एक छोटे लड़के की जूतियां खो गईं। तमाम घर ढूढ़ डाला कहीं पता न लगा तब वह अपने बाप के कुतुबखानें में जाकर १ कीष के वरक उलटने लगा। बाप ने पूछा "बेटा इस में क्या देखते हो" लड़का बोला "अब्बा अपनी जूतियां ढूढ़ता हूं" बाप ने हंसकर कहा अरे पागल किताब के अन्दर तेरी जूतियां कहां से आईं जो तूं ढूढ़ता है?" लड़के ने भोले पन के साथ जवाब दिया "अब्बा तुम की जिस किसी चीज़ की तलाश होती है तो वह इसी में से निकल आती है तो क्या मेरी जूतियां न मिलेंगी।

---

एक मनिहारा चूड़ियों की गठरी सिर पर रक्खे हुये चला जाता था एक चोर ने उसकी माल समझ कर लूटना चाहा और पीछे से आकर गठरी में एक लाठी मार के कहा कि बता इसमें क्या है? मनिहारे ने जवाब दिया कि बस एक लाठी और मार दे तो इसमें कुछ भी नहीं है।

---

एक गुरू कहीं से चेला किये आते थे जब अपने ग्राम के निकट आये समाचार पूछने के पश्चात उन्हीं के वर्ग का एक लड़का पूछने लगा कि ए बाबा किस मंत्र से चेला करते हो बाबाजी हंस कर बोले बचा मंत्र कठिन नहीं है कोई एक मंत्र कण्ठ कर लो बस उसी से मुड़ा करो हमकोतो एक मंत्र आता है वह यह है "देव्यु बाच" इसीसे हम चेला करते हैं।

---

कलकत्ते के एक हौंस के साहब के पास कोई माड़वारी दलाल रामानन्दी तिलक लगाये हुए कुछ सौदा करने को गया। इतिफ़ाक से किसी बात में हुज्जत आ गई जिससे सौदा न पटा। थोड़ी देर के बाद एक दूसरा दलाल वैसाही तिलक लगाये हुए साहब के सामने गया और चाहता था कि उससे भाव वग़ैरह दर्याफ़्त करें लेकिन साहब झुंझला कर बोले कि "बस साहब बस" इस मार्केके आदमी से हमारा सौदा न पटेगा।

---

एक आदमी जिसने अपने औरत के मर जाने के बाद दूसरी शादी कर ली थी अक्सर अपनी नई जोरू के सामने अपनी पहली बीबी की बड़ाई किया करता। एक रोज उसकी नई औरत ने झुंझला कर जवाब दिया कि आप सच कहते हैं लेकिन यकीन मानिये कि उस नेक बख़्त के मरने से जो मुसीबत मुझ पर आई है वह किसी पर न होगी।

---

## पवित्र संकल्प।

अज व्यापक नित्य महा विभु की, करुणा कर धाम सदा हरि की।
बहिरन्तर जीव चराचर जी, पूजिहौ मनलाय सदा शिवजी॥ १॥
जड मुग्ध अमंगल नाश जिन्हैं, गमनागम भाव कुभाव तिन्हैं।
मद मोह समाकुल देवहु की, पुजिहौ न कदापि नृदेहन की॥ २॥
न वृथा नहि हास्य कथा न कमे, शपथे कुपथे न घृणा करमे।
नहि चित्त बिसारि कहा करबौ, हरि नाम पवित्र रटा करबौ॥ ३॥
रजनी दिन बीच नहि पल की, ऋतु वर्ष समागम में छण की।
करबौ नवृथा परिकै खलमें, जिय शीचि चलापन जीवनमें॥ ४॥
पितु मातुन के हित साधन में, गुरु मान्य तथा नर श्रेष्टन में।
अति वृद्ध दरिद्र तथा पशुमें, करु बद्ध सदा रहबौ हितमें॥ ५॥
सब जीव चराचर जो जगमें, प्रिय सुन्दर है सब के मनमें।
करबौ मन को नहि मारणमें, प्रभु ही तुमही इन जीवन में॥ ६॥
कटु तीक्ष्ण कुवाक्य कथा त्यजबौ, मधुरस्वरते सबसे मिलबौ।
अपवित्र अमंगल साधन कौ, त्यजि मंगल कार्य्य सदा गहबौ॥ ७॥

धन हीन कुभाग्य बरू रह वौ,　　पर संपति को न चिते लयबौ।
मन तुच्छ करी मति धर्म्म हरी,　　तजि चोरी कुकर्म्म नहीं करबौ ॥ ८ ॥
जग किल्विष कारण मानव के,　　परतीति नशावन योगिहु के।
डरवौ मुनि पाय असत्य कथा,　　असुधातक बासुकि काल यथा ॥ ९ ॥

---

## ईश्वर प्रार्थना।

जग मंगल सुन्दर रूप धर,　　जगती तल जीवन शन्ति कर।
करणा बरुणालय दुःख हर,　　शतशो जन पालक काल पर ॥ १ ॥
सब काल पिता सब लोगन के,　　सब देश बिदेश बिराजत तू।
मुनि योगी तथा जनवन्य दुखी,　　तुम ही सब सेवत धन्य तुही ॥ २ ॥
तव तेज प्रकाशित सूर्य्य शशी,　　तुम से महि मण्डल शस्य भरी।
तब पुण्य सुगन्ध सुपूर्ण कली,　　हर हेजन दुःख सुखी कुरु तू ॥ ३ ॥
पहिला जग कारण कूट मयी,　　मन मंगल सुन्दर दीव्य तुही।
हम अन्ध असभ्य मलीमस हे,　　मति मन्दन जानत ईश्वर हे ॥ ४ ॥
यदि पाप परायण काम बशी,　　मम बुद्धि कुपन्थ सदा रहती।
हर हे हरि हारण कारण तू,　　हम है तुमरे तुम भिन्न नहीं ॥ ५ ॥
जब संग कुसंग बिलास रती,　　जिस से भवसागर पार नहीं।
भय देहि तदा इह लोक हरी,　　बरु नाशहु तेहि अपुण्य धरी ॥ ६ ॥
यह बिश्व पवित्र अनन्त गहें,　　तब सुन्दर मंगल रूप हरे।
मधुरस्वर गान परा बिहगा,　　मनुजा तब पूजत शान्त पदा ॥ ७ ॥
अब देहि पिता करुणा हृदये,　　सब बन्धु मिलै अरु बैर त्यजे।
दुख देखि उन्हे हम होऊं दुखी,　　मिलि होऊं सुखी यश गाऊं तबे ॥ ८ ॥
तुम एक पिता तव नाम बहू,　　तुम जीवन की इक सीत बिभू।
पृथिवी पर कौम अनेक भयी,　　पर है सब एक बिचारि कही ॥ ९ ॥
धन धान्य तुही जननी तुम ही,　　कुल बन्धु गुरु सबही तुम ही।
तुम भिन्न नहीं किछु देखि परी,　　जग में तुम ही तुम में जग ही ॥ १० ॥

शिवशंकर चौधरी।

[ शीतलपुर सारन निवासी दामोदर सहाय सिंह रचित ]

( पूर्व प्रकाशितान्तर )

## हरिगीतिका।

दिन रैन सेवत नीच जन मिथ्या नितहि भाषण करौं।
खल करम परम प्रवीण हीन सुबुद्धि रुचि लाखन करौं॥
अपकार रत उपकार रतनहिं साधु संग न भावई।
तुम बिनु कवन प्रभु देखि मम गुण भांति यहि बिसरावई॥ १५॥
अगणित समूह अधीन के करि अपर जूह सुजांचि के।
तिन माहि मोहि बखान प्रथम पुरारि लोकन सांचि के॥
तुम ताहु दामोदरहिं तारण हेतु जब हिम्मत कियो।
किमि सकत तव महिमां मनुज कहि मौन पन्नग पति लियो॥१६॥
जब ते जगत बिधि रचेउ तब ते तुमहि अभिलाषा रही।
अति पाप रत जेहि तारिबे में कबहुं कोउ समरथ नहीं॥
तेहि तारिबी रुचि आप की मद नारि सुधि जब पायऊ।
मन काम तब पूरण करण हित नाथ तुम पहं आयऊ॥ १७॥
जेहि दरसि भव भय नीर नीधि जल सूखि छन महं जात है।
मद मोह मान मनोज जनित बिकार सकल नसात है॥
जो अति बिचित्र बिचित्र गति अति अशिव शिव शिव शिव करै।
सोइ नाथ तव मूरति बिमल मम शोक सन्तापहिं हरै॥ १८॥

## सवैया।

मनि पाइन वारि हुताशन पन्नग हारन के हरि बारन में।
हरि में हर में पिय में तिय में बन में घर में रिपु यारन में॥
करि के सम दीठ दमोदर जू कछु भेद न कारज कारन में।
जपते शिव मोर कबै कटि हैं दिन पुण्य बिहारन आरन में॥१८॥

## सिंहावलोकन सवैया।

पति की रखवार सदा जन के जिन टारि सकैं बिधि की गति की।
गति की लखु दीन दयालुता की बरदान दये जिननै रति की॥

रति की चरणाम्बुज की जिनके अभिमान सुनीश महा मति की।
मति की भ्रम त्यागि दमोदर जू भजुरे तेहि पारवती पति की॥ २०॥

## सवैया।

रहिये गहि मौन सदा तजि के भव मूरख आन पै मांगहिं सी।
सुरभी गृह छाड़ि के पावन की पय आकन खोजन लागहिं सी॥
कर जोरी दमोदर जू प्रभु पै करिके बिनती अनुरागहिं सी।
कहिये जो कछू अपनी दुख ती दुख दारिद दारु दवा गहिं सी॥ २१॥

## सिंहावलोकन सवैया।

हेरिये नाथ बिपत्ति में काहि जहां तहां जान जरूर अनेरिये।
नेरिये नाथ बिहाय तुम्है किमि दूरहिं मूरखता बश टेरिये॥
टेरिये नाथ सुहात तुम्है दुख मेटि अबै सुख के दिन फेरिये।
फेरिये नाथ दया दृग कीर दमोदर दीनहुं की टुक हेरिये॥ २२॥

## सवैया।

मीत सगे हितु लोगन की कछु नाहिं बची इक आसरा तेरिये।
व्याधि बियोग औ शोकहिं बेगि हरौ प्रभु लेत ये बर्बस घेरिये॥
देह दयाल सदा सुबिचारु उमापति जू भ्रम की मति फेरिये।
फेरि के नाथ दया दृग कीर दमोदर दीनहुं की टुक हेरिये॥ २३॥
दुख दूरि किये जन के छिन में जिन एकहुं बार पुकार करी।
वह बानि पुरानी तजी धौं कहां कछु नूतन नीति बिचार करी॥
कि सुनात न टेर दमोदर जू यहितें अस मोहि बिसार करी।
सुख टेरत टेरत थाकि गयी केहि कारण प्यारे अबार करी॥ २४॥

क्रमशः

## समाचारावली।

—अमरिका में एक ऐसे मनुष्य हैं जो ऊचाई में ढाई हाथ से अधिक नहीं होते।

—वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि वृष्टि के पहले और पीछे फूलों की सुगन्ध बहुत फैलती है।

—इंग्लैन्ड में एक युवा स्त्री कुल अठारह इंच ऊंचाई में है।

—लंडन में, हिसाब करके देखा गया है, मेम लोग प्रति चार मिनिट में एक सन्तान प्रसव करती हैं कुछ ठिकाना है।

—मद्रास में एक जैन ने तीन महीने तक का उपवास किया।

—विलायत के एक वैज्ञानिक ने वैज्ञानिक विधान से विवाह किया है। विवाह के दिन आप तो वह थे पैरिस में और कन्या अपने मकान में कहीं दूर थी। तार के द्वारा विवाह हुआ। मंत्र तो पाद्री ने पढ़ा था पर बिरादरी का भोजन भी क्या तार द्वारा हुआ था?

न्यूयौर्क में एक मनुष्य के कुत्ते की दृष्टि में कुछ दोष हो गया था। उस ने उसे चश्मा पहनाया। कुत्ते को सूझने लगा अब बराबर चश्मा लगाये रहता है। बुद्धि का भी क्या कुछ हद है।

—होलेन्ड मे बर से नहीं पर उस के दस्ताने से विवाह होता है। तब बहु घर आती है। बरात भी क्या दस्ताने की निकलती है?

—एक वैज्ञानिक कहते हैं भौर की लोगों का पैर छोटा हो जाता है। धूप लगने से धीरे धीरे बढ़ जाता है। सावधान! कोई भौर की जूता न ख़रीदे।

—ईरान के शाह को बिल्ली का बहुत शौक़ है। उन के यहां तीन हज़ार बिल्लियां पली हुई हैं। सब से प्यारा बिल्ला "बावर खां" तो शाह के साथ ही आहार करता है।

—मिस्र देश में जब किसी गर्भवती की प्रसव होने में कष्ट होता है तो उस का पेट चीर कर सन्तान बाहर निकाल लिया जाता है। फिर पेट सी दिया जाता है और किसी विशेष वृक्ष का रस लगा दिया जाता है बस, बिलकुल आराम ही आराम! बंग निवासी।

—शंख को लोग बतौर तुरही के प्राचीन काल में काम में लाते थे। न्युफौण्डलैण्ड के मकुए लोग शंख बजाकर अपने साथियों को बुलाया करते थे। बेल्स स्थान के निवासी लोग भोजन करने के लिये लोगों को शंख बजाकर बुलाते थे। ग्वेरन्सी की खान में काम करने वाले लोग शंख को उस समय बजाया करते थे जब कभी उन लोगों की आपत्ति की सूचना करनी पड़ती थी।

—ककुवों की दांत नहीं होते।

—जितने जानवर पागुर करते हैं उन का खुर मिला नहीं होता।

—घोड़ों की भंवें नहीं होतीं। जिस घोड़े की आखों में सफ़ेदी ज़ियादा हो वह बदज़ात होता है।

—बेंग मुंह खोल कर सांस नहीं ले सकता है। अगर किसी तरह उस का मुंह खुला रह जाये तो उस की सांस बन्द हो जायेगी और वह मर जायेगा।

—खरगोशकी आंखें बन्द नहीं होतीं क्यों कि उसे पलक नहीं होती।

—मछलियां बिन चिबाये अपना आहार तुरत निगल जाती हैं।

—उल्लू पक्षी की आखें नहीं घूमती।

—भेंड़ी को ऊपर का दांत नहीं होता।

—जौर्ज वाशिंगटन ने गत शताब्दि के अन्तिम वर्ष में, अन्तिम महीने के अन्तिम सप्ताह में, और अन्तिम सप्ताह के अन्तिम दिन और अन्तिम दिन के अन्तिम घंटे में प्राण त्यागा।

—एक मनुष्य सहारनपूर का रहने वाला है उस का मुद्दत से यह नियम है कि जाड़ों में सातवें दिन पानी पीता है और गरमियों में तीसरे दिन मरु देश में यात्रा करने के लिये उसे बहुत कुछ सुझीता है।

—स्वीज़रलैण्ड में एक गाय अधिक दूध देती है यदि उस का दूहने वाला दुहने के समय मधुर २ बातें उस गाय के सुश्रूषा में कहे।

हिन्द महासागर के तीर पर केंकड़ा एक २ गज़ का लम्बा पाया जाता है।

## कायस्थ कौन्फरेन्स।

कायस्थ कौन्फरेन्स का आठवां अधिवेशन २८वीं से ३०वीं दिसम्बर तक बड़े धूम धाम से काशी में हो गया इसमें भी कौंग्रेस ही की तरह बड़े लोगों के लेक्चर आदि होते हैं पर विषय सामाजिक ही रहता है। बड़े आनन्द का विषय है कि इतने कायस्थ लोग इकट्ठे हो अपनी उन्नति करने की श्रद्धा प्रति वर्ष भारतवर्ष के एक न एक बड़े नगर में दिखलाया करते हैं। केवल बिहार प्रान्त ही के कायस्थों में सामाजिक उन्नति का बढ़ता हुआ उत्साह नहीं देख पड़ता। ऐसे समय में जब कि और और प्रान्त के कायस्थ इतना उद्योग कर रहे हैं बिहार बासियों को हतोत्साह हो कर अपनी हंसी नहीं कराना चाहिये। इस प्रान्त से कौनफरेन्स में उत्साह से योग देने वालों में कायस्थ जाति के अग्रगण्य दीवान जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आई० ई० का नाम सर्वदा सुना जाता है इस काशी के अधिवेशन में भी दीवान साहब को निमंत्रण भेजा गया था।

दीवान बहादुर २७ वीं तारीख़ की रात्रि में पहुंचे। उनके यहां के मुख्य राज पण्डित श्री युत पण्डित शिवनारायण जी भोर चारही बजे पहुंच गये थे। दीवान साहब की रिसेप्शन कमीटी के मेम्बरों ने बड़े सत्कार से अगवानी की और उनके ठहरने इत्यादि का जो सामान पहलेही से दुरुस्त था उसमें और भी उत्तम प्रबन्ध कर दिया गया। २८ वीं ता० को क़रीब १२ बजे दिन को श्री युत दीवान साहब कानफरेन्स को पधारे। ज्यों ही जोड़ी गाड़ी द्वार पर पहुंची रिसेप्शन कमीटी के मेम्बरों ने बड़े आदर से उन्हें उतारा। उनके उतरतेही ब्याण्ड का बाजा बजा और दीवान साहब कानफरेन्स हाल के अन्दर पधारे जहां ऊंचे चबूतरे के ऊपर एक अत्यन्त सत्कारिक स्थान पर वे बिराजे। तदुपरान्त सभा की कार्रवाई शुरू हुई। दीवान बहादुर की सच्ची राज्य हितैषिता, उत्तम राज्यप्रबन्ध और हिन्दू मुसलमानों में ऐक्य प्रचार के

गुण से मोहित होकर काशी की ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा की ओर से भी एक ऐड्रेस दिया गया था । कानफ्रेंस हाल में काशी के समस्त विद्वान उपस्थित थे।

कौन्फरेन्स की कार्यवाही के उपरान्त काशी की विद्वन्मंडली की ओर से भी जो ऐड्रेस दिया गया था उसका भाषान्तर नीचे प्रकाशित किया जाता है।

संस्कृत एड्रेस का अनुवाद जो २८-१२-८४ ई० की कायस्थ कान्फ्रेन्स बनारस में, काशीस्थ पण्डितों की सभा की ओर से मनुस्मृति की पुस्तक सहित आनरेबुल राय जयप्रकाश लाल साहब बहादुर सी, आई, ई, दीवान राज डुमरांव को दिया गया।

( बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर बी० ए० द्वारा अनुवादित )

श्रीरस्तु ।

आनरेबुल श्री राय जयप्रकाश लाल बहादुर सी, आई, ई, दीवान राज डुमरांव, महाशय !

श्री भोजपुर प्रान्त पुरन्दर, विक्रम कुलकमल दिवाकर, निरस्त समस्त प्रचण्ड शत्रु मण्डल विनाशन कर्णकीर्तिशाली, विविधविरुदावली विराजित, श्री महाराज सर राधाप्रसाद सिंह देव बर्म्मा का देहान्त किस गुणिजन के शोक का कारण और किस आश्रितवर्ग तथा प्रजागण के हृदय की पीड़ा का हेतु नहीं हुआ ? यह बात हम लोगों के हृदय की अनुभूत और सभी सहृदय के हृदयों के क्लेश का कारण है। इस बात में वाणी का गम्य नहीं है और न लेखनी की अधिक सामर्थ। क्या कहें ! किससे कहें ! ! अपने हाथ से जब चिन्तामणि निकल जाता है तो चित्त में केवल चिन्ता ही संचित होती है।

जिन का निज धर्मानुराग, विद्यारसिकता, गुण ग्राहिता, प्रजावात्सल्य, गवर्मेण्ट की सच्ची शुभचिन्तकता, और सांसारिक विषयों में वैराग्य मरण पर भी मूर्तिमान है। इन सब बातों को कह कर विशेष शोक क्यों बढ़ावें।

परन्तु दिन मणि के अस्त होते ही संपूर्ण राज कार्य में हल चल पड़ते ही, आश्रितवर्गों के शोकान्धकार से आच्छादित होते ही, आकाल

सूर्यास्त रूपी महीत्पात देख वेदाध्ययन को त्याग ब्राह्मणों के मौनव्रत धारण करते ही, और सुजनजन के मुखकमल के संकुचित तथा प्रभाहीन होते ही, आपने जो कि शोकमहोदधि में निमग्न थे स्वाभाविक निज उदारता गुणप्रभाव से उदय ही, और निज मति चमत्कृतचंद्रिकाकला कलित होकर समस्त राज काज को पूर्ववत परिपूर्ण कर दिया।

आपने उस अपूर्व नीति रूपी अस्त्र का प्रयोग किया जिस से घालक पालक दोनों की अनीति रूपी आलबालोत्पन्न, महाविषपूरितकटुफल-पाकशाली, कलहबनजनित, प्रजानाशक और अत्यन्त कण्टकित वृक्ष अनायासही शान्त हो गया।

आपने राजपरिवार के लोगों के चिरस्थित सत्व की पोषण किया। राज काज परिपाटी का परिशोधन किया, महाराज साहब की शास्त्रोक्त और्द्ध्वदैहिक क्रियाओं में भोजपुर प्रान्तीय ब्राह्मणों को सन्तुष्टि की, विविध विद्याविराजित देश देशान्तरीय गुणियों का पूजन किया, और देश के हित के अर्थ तथा प्राचीन संस्कृत भाषोन्नति के निमित्त संस्कृत पाठशाला की व्यवस्था की।

कैसा ही अपरचित अतिथि आवे उस का आप सत्कार करते हैं, राजकीय मर्यादा का संस्कार करते हैं संपूर्ण नीति भूमि पर अधिकार करते हैं, प्राचीन नीति निपुणलोगों का अनुसरणकरते हैं और अपने परिश्रम पर बिना ध्यान दिये प्रजा का क्लेश दूर करते हैं।

अतएव आप के गुणों की गुरुता से उत्साहित हो कर काशीस्थ बिबुध मंडली आप को हृदय से दीर्घ आशीर्वाद देती है और आप ही की राजनीति से उत्तम दृष्टक ग्रहण द्वारा भोजकुल की चिरस्थित की सम्भावना और उस की श्रेष्ठ शिक्षा में राजकीय प्रबन्धों की सुव्यवस्था की आशा करती है।

साक्षात मूर्तिमान आशीर्वाद स्वरूप मानवधर्म शास्त्र आप को देते हैं, जो कि ब्रह्मिष्टों की चित्तस्थितिसाधन का मन्दिर, सन्यासी लोगों की इन्द्रियों का दमनमन्दिर, द्विजातियों की सर्वस्व, नीति निपुण लोगों की रहस्य, निर्बल लोगों की त्राण, उद्दण्ड लोगों की दण्ड स्वरूप, नीतिमार्गी

लोगों को अनुग्रह, वेद विद्याओं का मर्मभूत, राजधर्मों का बर्मभूत, (कवच) कर्मकाण्डियों का कर्मभूत और धार्मिक लोगों का धर्मभूत है, सच पूछिये तो संसार में जीव मात्र का सुखसाधन है।

आप ने महासभा के बीच में विजयदशमी पर कमिश्नर साहब बहादुर के समक्ष महाराज के हाथ से वृहद खड्ग प्राप्ति किया है, अपने गुण गौरव द्वारा कायस्थ महा सभा से स्वकीर्ति की बिस्तृत करने वाली ढाल उपलब्ध की है, गवर्नमेन्ट से नाना प्रकार की उपाधि (खिताब) पाई हैं, और प्रति दिन आप नीति नम्रतादि गुणों के कारण अनेकानेक आशीर्बाद लिया करते हैं।

श्री विश्वेश्वर प्रियपुरी, काशी, आषाढ़ कृष्ण ३, गुरुवार बिक्रम सम्बत १९५१। (काशीस्थ प्रधान पण्डितों द्वारा स्वाक्षरित)

पण्डित कैलाशचन्द्रशिरोमणि भट्टाचार्य। पं० प्रियानाथ बंगाली। पं० बैजनाथ दीक्षित चौधरी। पं० नवीननारायण शर्म्मा तर्कालंकार। पं० सीताराम शास्त्री। पं० विष्णु दत्त शर्म्मा। श्री कृष्णनाथ शर्म्मा। पं० मोहकमराम शर्म्मा। पं० अनन्त राम शर्म्मा ज्योतिषी। पं० हरिहर दत्त शर्मा। पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्म्मा। प० विभव राम शर्म्मा। प० श्री जय देव मिश्र शर्म्मा। प० भागीरथ प्रसाद। प० श्री संगम लाल शर्म्मा प० शोभा राम शर्म्मा। प० युगल किशोर पाठक। प० ज्योतिषी राजा जी शर्म्मा। प० गौरी नाथ शास्त्री। प० द्वारका दत्त व्यास। प० शिव कुमार मिश्र। प० बलराम शास्त्री। प० गया दत्त शर्म्मा। प० महिमादत्त पाठक। प० बाबू लाल शर्म्मा ज्योतिषी। पं० श्रीप्रसन्नकुमार शर्म्मा। प० श्री मधुसूदन शर्म्मा प० राम कृष्ण शास्त्री। प० रामाचार्य शर्मा। प० राम दीहल शर्मा। प० लक्ष्मण शर्म्मा। प० बासुदेव शास्त्री। प० केशव शर्म्मा। प० पाठकोपनामक दुर्गा शङ्कर शर्म्मा। प० ज्योतिषुपनामक जगन्नाथ शर्म्मा प० ठाकुर दत्त शर्म्मा। प० श्री सन्तगोपाल शर्म्मा। प० चेत राम। प० कृष्ण दत्त शर्म्मा। प० श्री राघवेन्द्र शर्म्मा मिश्र। प० इशान चन्द्र देव शर्म्मा। प० गणेश दत्त पाठशालीय। प० बिन्ध्य प्रसाद। प० बालमकुन्द मालवीय। प० गौरी शङ्कर शर्म्मा। प० श्री सुरेन्द्र लाल

शर्म्मा। प० जनार्दन शर्म्मा। प० रघुनाथ शर्म्मा। प० श्री काशी चन्द्र शर्म्मा। प० राम लाल जी। प० भवानी दत्त दिक्षित। प० श्री नाथ झा। प० गौरी दत्त शर्म्मा। श्री भगवती चरन शर्म्मा। प० श्री महादेव शर्म्मा। प० प्रथमनाथ भट्ट चार्य्य। प० श्री पीतांबर भट्ट चार्य्य। प० श्री भागवता चार्य्य। प० पापाशास्त्री। प० रामकृष्ण शास्त्री। प० अधीरनाथ भट्ट चार्य। प० गंगा पण्डित। प० श्री हारानचन्द भट्ट चार्य्य। प० श्री गणेस भट्ट चार्य्य। प० गणेशदत्त ज्यौतिषी। प० महादेव भट्ट घाटे। प० गणपतिदेव शास्त्री। प० सीतारामभट्ट भट्ट। प० रामकृष्ण शास्त्री। प० गंगाधर शास्त्री। प० सीताराम शास्त्री। प० बिष्णु दीक्षित शर्म्मा। पटवर्द्धनोपा०ह नारायण शास्त्री की। प० अष्टपुत्रीा०ह भटु शास्त्री। प० रामशास्त्री तैलंग। प० पार्वतीवकेशव शास्त्री। प० सुधाकर द्विवेदी (महा महोपाध्याय)। प० रामेश्वरदत्त ज्योतिषी। प० गोविन्द पांडे (नगवा पाठशाला) प० गौरीशंकर ज्योतिषी। प० द्विवेदी रामदयाल शर्म्मा। प० कन्नू जी शर्म्मा। प० बेनीदत्त शर्म्मा। प० अयोध्यानाथ शर्म्मा। प० अम्बिका प्रसाद शर्म्मा। प० गणेश शर्मा। प० गणेश प्रसाद शर्म्मा। प० देवकृष्ण ज्योतिषी। प० मन्नूलाल मिश्र। प० श्री जयराम बेदानुबागीस। प० श्री श्यामाचरण शर्म्मा (ज्यौतिषी)। प० हरिबल्लभाचार्य शर्म्मा। प० शीतल प्रसाद त्रिपाठी। प० ऋषिप्रसाद शर्म्मा। प० श्रीधर शर्म्मा। प० ज्योतिषी हरिशङ्कर शर्म्मा। प० बामना चार्य। प० कृष्ण शास्त्री। प० गणेश शास्त्री कर्नाटक। प० नागेश्वरपन्त धर्म्माधिकारी। प० शिवदत्त शर्म्मा। प० बैकुण्ठदत्त शर्म्मा। प० चन्द्रधर शर्म्मा। रामेश्वर शर्म्मा प० नित्यानन्द शर्म्मा पर्वतीय। प० भीकूपन्त शेष। प० ज्यौतिषी छगन जी शर्म्मा। प० ज्यौतिषी अनन्तराम शर्म्मा। प० ज्यौतिषी उमाशंकर शर्म्मा। प० गोबिन्दाचारी। प० रघुनन्दन त्रिपाठी। प० श्री दीपचन्द्रचन्द्र शर्म्मा। प० यागेश्वर शर्म्मा। प० स्वामीराम मिश्र शास्त्री। प० सुब्रह्मण्ड शास्त्री। प० रघुबीर मिश्र। प० दामोदर शास्त्री। प० राम शास्त्री। प० हरिबल्लभ स्वामी। हरिबल्लभा चार्य। प० दामोदरदेव शास्त्री। प० हरिराम पाठक सप्तर्षि। प० गोविन्द शास्त्री

द्राविड़। प० चण्डीदत्त शर्म्मा। प० काशीनाथ शर्म्मा। प० गोपाल त्रिपाठी (वैद्य)। प० तुलाराम।

एड्रेस के बाद बरेली के प्रसिद्ध वकील बाबू बलदेव प्रसाद जी ने समस्त डेलिगेटों के प्रतिनिधि स्वरूप ही एक स्पीच दी।

इन के बैठने पर दीवान बहादुर ने स्वयं खड़े होकर समस्त पण्डित मण्डली को धन्यवाद दिया और कहा कि मैं आप लोगों की कृपा का अत्यन्त अनुगृहीत हूं जो आप लोगों ने मेरे परिश्रम को इस योग्य समझा कि मुझे एक ऐड्रेस से भूषित किया। आप लोगों ने जो संस्कृत पाठशाला स्थापन करने का उल्लेख किया है सो बहुत यथार्थ है। स्वर्गवासी महाराजा साहब की संस्कृत विद्या में बड़ाही प्रेम था और उनकी यह अन्तिम आज्ञा थी कि अवश्य एक संस्कृत पाठशाला डुमराँव में खोली जाये सो शीघ्रही आप लोगों के आशीर्वाद से खुलेगी। राज्य की धर्म निष्ठा बराबर सनातन से जैसी चली आई है अबलों वैसीही है जैसा कि आप लोग प्रायः हर वर्ष रामनवमी और जन्माष्टमी के उत्सव पर देखतेही हैं। हिन्दू मुसल्मानों में ऐक्य स्थापन करने का उल्लेख जो आप लोगों ने किया वह निस्सन्देह अत्यन्त उपयुक्त है। प्रत्येक राजहितैषी और राज भक्त प्रजा का यह परम धर्म है कि वह हिन्दू और मुसल्मान भाइयों में एका बढ़ावे उनमें कदापि फूट न होने देवे क्यों कि उनकी फूट से सरासर हमलोगों की नुकसान है और उनके मेल से बड़ा आनन्द और लाभ रहता है। कैसे आनन्द की बात है कि हिन्दू मुसल्मान एकही स्थान में बस कर एक दूसरे से प्रेम रक्खें और मेल बढ़ावें। जब आपस के पड़ोसियों में बैर रहता है तो उन्हें कदापि नींद नहीं आती। हिन्दू मुसल्मान से और मुसल्मान हिन्दू से सदा भयभीत रहते हैं। जिस समय हमको मालूम हुआ कि दोनों दलों में झगड़ा हुआ चाहता है हमने स्वयं उपस्थित होकर उन्हें समझाया बुझाया और ईश्वर की कृपा तथाच आपलोगों के आशीर्वाद से हमारे रियासत में कहीं भी झगड़ा न हुआ और सर्वत्र शान्ति रही और इसी कारण गवर्मेन्ट ने भी प्रसन्न होकर अपना धन्यवाद और हर्ष प्रकाश किया है।

आपलोगों ने जो दत्तक के बारे में कहा है सो बहुत ही यथार्थ है मैं भरशक बहुत सुयोग्य और उपयुक्त बालक को महाराणी साहबा के गोद लेने का उद्योग करूंगा और जैसी आपलोगों की अनुमति है उन्हें बहुत ही उत्तम रीति से शिक्षा दी जायगी जिसमें वे राज काज को भली प्रकार सम्हाल सकें और इस प्राचीन वंश का नाम निभावें।

मैं इस मनुस्मृति नामक पुस्तक को जो आप लोगों ने मुझे कृपा कर दिया है शिरोधारण करता हूं और जगदीश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे उसके समझने और उसके अनुसार काम करने की बुद्धि दे।"

दीवान बहादुर की इस वक्तृता के उपरान्त सभापति को धन्यवाद देकर सभा समाप्त हुई। तब श्री युत पण्डित शिव नारायण जी ओझा ने खड़े होकर समस्त पण्डितों को सतकार रूप से सभा की बिदाई दिलाई और दीवान बहादुर ने स्वयं अपने हाथसे प्रत्येक पण्डित महाशय की केसर का टीका लगाया और फूलों की माला पहिना सभों का सत्कार किया। जिस भक्ति और प्रेम से राय बहादुर दीवान जयप्रकाश लाल जी सी० आई० ई० ने समस्त पण्डितों का सत्कार किया वह अवश्य प्रशंसा के योग्य है। समग्र वृद्ध मण्डली उन से प्रसन्न रही और अन्त में आशीर्वाद के साथ सभा समाप्त हुई।

---

अकलू लाल ने छाप कर प्रकाश किया।

हिय बोयो॥ दास जू दै दै गुलाल की मारनि अंकुरिबो उहि बीज को खोयो। भावते भाल को जावक ओठ को अंजनही को नखच्छत गोयो॥ १८१॥

तिलक। प्रौढ़ा धीरादि के तीनों भेद याही में हैं।

मानिनी ल० दोहा।

पिअपराध लखि मान को, किये मानिनी बाम।
लघु मध्यम गुरु मान को, उदै होत जा काम॥१८२॥

लघुमान यथा सवैया।

है यह तौ घर आपनोई उत तौ करि आओ मिलाप की घातें। यों दुचिताई मै प्रीति सुनै न बनैगी कछू रस गीति सुहातें॥ दासही मोहि लगी अबलों अबलौं ढिगई सुहौं जानतो जातें। नाहकही की कही अंखियानहीं नाहकही हम सों करौ बातें॥ १८३॥

मध्यममान।

तब और की ओर निहारि को जू करो नित्तही मेरी दोहाइयै जू। मुलक्ख्यो हम आपने नैनन सो कहा कीवेकरो चतुराइयै जू॥ बतलातही लाल जितै तितही अब जाइ सुखै बतलाइयै जू। इत जोरि जो रावरी सो न जुरै न जरै पर लोन लगाइयै जू॥ १८४॥

गुरु मान यथा।

लाल ए लोचन काहे प्रिया हैं दियो ह्वै है मोचन रंग मजीठी। मोतै उठी है जो बैठे अरीन की मीठी क्यों बोलो मिलाय ल्यो मीठी॥ चूक कहो किमि चूकत सो जिन्है लागी रहै उपदेश बसीठी। झूठी सबै तुम सांचे लला यह झूठी तिहारेहू पाग की चीठी॥ १८५॥

इति खंडिता। अथ कलहंतरिता। दोहा।

कलहंतरिता मान कै, चूक मानि पछताय।
सहज मनावन की जतन, मान शांति ह्वै जाय॥१८६॥

यथा सवैया।

जीवों तौ देखते पाय परौं अब मोतिहु के महलैकिन होई। आज तें मान को नांव न लेउं करौं टहलै महलै अति जोई॥ दास जू दै न सकी बिख दै मिख मान कौ बैरिन प्रान लियोई। एरी सखी कहूं क्योंहूं लखी पिय सो करि मान जियै तिय कोई॥ १८७॥

लघुमान शांति।

जानि कै वापै निहारत मेरे गई फिरि वाकी कमान सी भौंहें। दास जू डारि गरे भुज बाल के लाल करी चतुराई अगो हैं॥ प्रान प्रिया लखि तौ वा गंवारि के सामुहें ब्योम उड़े खग को हैं। बोली हंसोहैं जु दीजिये जान कियें रहियें मुख मो मुख सोहैं॥ १८८॥

मध्यम मान शांति।

बातें करी उनसों धरीचारिलों सो निज नैननि देखततो हैं। कीजै कहा जो बनावरी बांधि कै दास कियो गुरु लोगन को हैं॥ बैठो जू बैठो न सोच करो हिय मेरे तो जात भयो सुभ दोहैं। जान्यो मै मान छोड़ायवे की तुमै आवती लाल बड़ी बड़ी गौंहैं॥ १८९॥

गुरुमान शांति।

जान्यो मैं वा तिल तेल नहीं पहिले जब भामिनि भौंह चढ़ाई। कान्ह जू आज करामत किन्ही कहालों सराहों मचा सुघराई॥ दास बसो सदा गोपन मै यह अद्भुत

बैदई कौने सिखाई। पाय लिलार लगाय ललाई तिय नैनन की लियो ऐंच ललाई॥ १९०॥

साधारण मान शांति।

आजतें नेह को नातो गयो तुम नेम गहो हौंहूं नेम गहौंगी। दास जू भूलि न चाहिये मोहि तुमै अब क्यों हूं न हौं हूं चहौंगी॥ वा दिन मेरी प्रङ्क में सोयेहो हौं वह दाव लहो पै लहौंगी। मानो बुरो कि भलो मनमोहन सैन तिहारी मैं सोइ रहौंगी॥ १९१॥

विप्रलब्धा ल० दोहा।

मिलन आस दै पति छली, औरहि रत ह्वै जाइ।
बिप्र लब्ध सो दुःखिता, पर संभोग सुभाइ॥ १९२॥

यथा कवित्त।

जानि कै सहेट गई कुंजन मिलन तुमै जान्यो न सहेट के बटैया ब्रज राज से। सूनो लखि सदन सिंगार ज्यों अंगार भये मुख देन वारे भए दुखद समाज से। दास सुख कंद मंद सीतल पवन भए तन तेज लाव उपजावन इलाज से। बाल के बिलापन बियोग तन तापन सो लाज भई मुकुत मुकुत भए लाज से॥ १९३॥

अन्य संभोग दुःखिता यथा सवैया।

ढीली परोसिनि बेनी निहारि कै जानि गई यह नायक गूंदी। औरै बिचार बढ़ो बहुस्यो लखि आपनी भांति की नीबी की फूंदो॥ दास बनो अपनो पहिचानत जानी सबै जु हुती कछु मूंदी। ऊभि उसास गही तरुनी बरुनी नमे छाय रही जल बूंदी॥ १९४॥

पुनः।

केलि कै भौन में सोवत गौन बिलोकि जगायबेकी भुज काढ़ी। सैन मैं पेखि चुगीन के चूरन तूरन तेइ गई गहि गाढ़ी॥ दास महाउर छाप निहारि महा उर ताप मनोज की बाढ़ी। रोस भरी अंखियां नित घूरति मूरति ऐसी बिमूरति ठाढ़ी॥ १९५॥

पुनः कवित्त।

ल्याई बटिकाही सो सिंगार हार जानती हौं कंटन को लाग्यो है उरोजन में घावरी। दौरि दौरि टहल कै कहे लह्यो बादिही बिगास्यो उर चंदन दृगंजन बनावरी॥ मेरो कहा दोस दास बातें जौन बूझि लीनी अपनी हीं सूझि तूतो भरि आई भांवरी। पीत पटवारे को बलावन पठाई मैं तू पीत पट काहे को रंगाय ल्याई बावरी॥१९६॥

प्रोषित पतिका दोहा।

कहिये प्रोषित भर्तिका, पति परदेशी जानि।
चलन रहत आवत मिलत, चारि भेद उनमानि॥१९७॥
प्रथम प्रवत्सत प्रेयसी, प्रोषित पतिका फेरि।
आगच्छत पतिका बहुरि, आगत पतिका हेरि॥१९८॥

प्रवत्सत प्रेयसी सवैया।

बात चली यह है जब तें तब तें चले काम के तीर हजारन। भूख औ प्यास चली मन तें अंसुआ चले नैनन तें सजि धारन॥ दास चली करतें बलया रसना चली लंक तें लागी अवार न। प्रान के नाथ चले अनते तन तें नहिं प्रान चले किहि कारन॥ १९९॥

प्रोषित पतिका ।

भाँझ के ऐबे की औधि दै आए वितावन चाहत याहू विहानहिं । कान्ह जू कैसे दयाके निधान हौ जानो न काहू के प्रेम प्रमानहिं ॥ दास बड़ोई विछोह कै मानती जात समीप के घाट नहानहिं ॥ कोस के बीच कियो तुम डेरो तौ को सकै राखि पियारी के प्रानहिं ॥२००

आगच्छत पतिका ।

बाम दई कियो बाम भुजा अंखियां फरकै को प्रमान टरोसो । झूठो संदेसिया औ सगुनौती कहैयनको पस्यो एक परोसो ॥ दास जू प्रीतम की पतिया पतियात जो है पतियाइ मरोसो । भाग भरो सोई छोड़ि दियो हम का गहिये अब काग भरोसो ॥२०१॥

आगत पतिका ।

देखि परै सब गात कटीले न ऐसे मै ऐसी प्रिया मस कोय कै ॥ आदर होत उठे प्रति रोम है दास यों दीन दयालता जोय कै ॥ कंत विदेसी मिले सुख चाहिये प्रान प्रिया तू मिलै किमि रोय कै ॥ जीवन नाथ सरूप लख्यो यह मै मलिनी निज आंखिन धोय कै ॥ २०२ ॥

उत्तमादि भेद दोहा ।

जितनी तिय वर नीति सब, तीन भांति के जानि ।
तिन्हैं उत्तमा मध्यमा, अधमा नाम बखानि ॥२०३॥
उत्तम मान बिहीन है, लघु मध्यम मधिमान ॥
बिन अपराधहि करत है, अधम नारि गुरुमान ॥२०४॥

उत्तमा यथा सवैया ।

बावरी भागनितें पतियाइये जो मति मोहै अनेक तिया

की । भोर की आवनी कुंजबिहारी की मेरी तो दास जू ज्यारी जिया की ॥ आज तें मो सिख लै तू अली दै गली तजि सीखनि छीछी क्रिया की । प्रान पियारे तें मान करै तो कसाइनि कूर कठोर च्यिा की ॥ २०५ ॥

मध्यमा यथा ।

जागी निसा कठिनाई धरे रहै पाहन सो मन जात बिचारो ॥ दास जू देखति धाम गोपाल को पाखा सो छोत घरी धुनि न्यारो । तेह की बातें कहो तुम एती पै मो मन छोत न नेकु पत्यारो ॥ पूस को भानहू वाइ कृसान सो मूढ़ अग्यान सो मान तिहारो ॥२९६॥

अधमा यथा कवित्त ।

माधो अपराधो तिल आधो न बिचारो मुद्ध साधही तें राधे हठ आर धन ठानती । दास यों अली के बैन ठीकै करि मानो न्यान ह्वै है दुख जीकै यह नीकै हम जानती ॥ बाकी सिखा पाय वहै ध्यान धन ठहराई और को सिखाई कछु कानन न आनती ॥ मान करि मानिनी मनाय मानै बावरी न कोऊ गुरु मानै सत गुरु मान मानती ॥२०७॥

इति आलम्बन विभाव ।

अथ उद्दीपन विभाव सखीजन वर्णन । दोहा ।

तिय पिय की हित कारिनी, सखी कहे कविराव ।
उत्तम मध्यम अधम त्रै, प्रगट दूतिका भाव ॥२९८॥

साधारण सखी यथा कवित्त ।

कवि ना बरनि जिन मुरति बढ़ाई नई लगनि उपाय आन घात न मिलाई है । मान मै मनायो पीर बिरह बुझा यो परदेस में बसीठी करि चीठी पहुंचाई है ॥ दास जू

संयोग मै सुबैन न सुनाय मैन प्रीति न बढ़ाय रस रीति न बढ़ाई है॥ चंद्रावलि राधा जू की ललिता गोपाल जू की सखियां सोहाई कैधों भाग की भलाई है॥ २०९॥

नायक हित सखी।

तेरी खीझिबेकी रुख रीझ मन मोहन की यातें बहै साज सजि सजि नित आवते। आपुही तें कुंकुम की छाप नखछत गात अंजन अधर भाल जावक लगावते॥ ज्यों ज्यों तू अयानी अनखानी दरसावै त्यों त्यों स्याम कृत आपने लहै को सुख पावते। तिनही खिसावै दास ज्यों तू योंसुनावै तुम योंही मनभावते हमारे मन भावते॥ २१०॥

नायिका हित सखी।

केसरि के केसर को उरमै नखच्छत कै करलै कपोलनि मै पीक लपटाई है। हारावली तोरि छोरि कचनिविथोरि खोरि मोहू गनि भोरि इत भोर उठि आई है। पीकै बिन प्रेम को उदास इहि नेम परपंच करि पंच में सोहागिनि कहाई है॥ हांती करि हांती मोहि ऐसी ना सोहाती भेख कंत है तकत यह कैसी चतुराई है॥ २११॥

उत्तम दूती यथा। सवैया।

मोहि सो आज भई सिगरी बिगरी सब आज संवार करौंगी। बीर की सौं बल बीर बताय ल्यों आज सुखी इक बार करौंगी॥ दास निसालों निसा करिये दिन बूड़त व्योंत हजार करौंगी। आज बिहारी तिहारी पियारी तिहारे मै हीय को हार करौंगी॥ ११२॥

मध्यम दूती यथा कवित्त।

प्यारी कोमलांगी औ कुमुद बंधु बदनी सुगंधन की खानि को क्यों सकत सताय ही॥ बेनी लखि मोरे दोरे मुख को चकोर दास स्वासनिको भोर किन किन को बराय ही॥ वह तो तिहारे हेत अबहीं पधारे पै धौं तुमहीं बिचारो कैसे धीरज धराय ही। ह्वै है काम पालकी बरस गांठि वाही मिस अबमै गोपालकीसों पालकी मै ल्यायहौं ॥२१३॥

अधम दूती यथा सवैया।

किल कंचन सी वह अंग कहा कह रंग कंदबन की तुम कारो। कह सेज कली बिकली वह छोड़ कहा तुम मोड़ रहो गहि डारो॥ नित दास जू ल्यावची ल्याव कहो कछू आपनो वाको न भेद बिचारो। वह कौल सो कोरी किसोरी कहा औ कहा गिरधारन पानि तिहारो॥२१४॥

सखी कर्म। दोहा।

मंडन संदरसन हंसी, संघट्टन सुभ धर्म।
मान प्रवर्जन पत्रिका, दान सखिनके कर्म॥२१५॥
उपालंभ निच्छास्तुती, बिनय जट्टना उक्ति।
विरह निवेदन जुत सुकवि, बरनत हैं बहुजुक्ति॥२१६॥
इन बातनि पिय तिय करै, जहां सु अवसर पाइ॥
वहै स्वयंदूतत्व है, सो हौं कहौं बनाय॥२१७॥

मंडन यथा सवैया।

प्रीतम पाग संवारि सखी सुघराई जनायो पृया अपनी है। प्यारी कपोल के चित्र बनावत प्यारे विचित्रता चारु सनी है॥ दास दुहूं को दुहूं को सराहिबो देखि लह्यो सुख

## बिहार-बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)
छ महीने का ... ... ... ... १।)
राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)
विद्यार्थियों से ... ... ... ... १।)
प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

५—विज्ञापन एक बार छपवाना हो तो प्रति पंक्ति तीन आना लिया जायेगा अधिक दिनों के लिये पत्र लिखना चाहिये।

६—बैरिंग चिठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर
बिहार-बन्धु प्रेस
बांकीपुर।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

FURUARY 1895 VOL, XXIV—NO

मासिक पत्र।

फरवरी १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर २

१ धर्म्म प्रेमियों की दशा।
२ टौरपीडो क्या बस्तु है ?
३ भाषा।
४ काम की बातें।
५ जोलगी।
६ प्राप्ति स्वीकार।
७ स्फुट कविता।
८ स्फुट विषय।
९ सिराजुद्दौला।
१० शृंगार निर्णय।




बाँकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

# बिहार-बन्धु।

नं० २—फरवरी १८९५।

---

## धर्म्म प्रेमियों की दशा।

धर्म का प्रभाव कैसा प्रबल है। यह निर्बल मनुष्यों को महा बलवान बनाता और मरते हुओं को भी मानसिक सुख प्रदान करता है। चाहे कोई मनुष्य धर्म के गूढ़ तत्वसे अभिज्ञ न भी हो परन्तु जिसकी वह अपने अन्तःकरण से धर्म मानता है और जिस धर्म में श्रद्धा रखता है यदि उस धर्म से छोड़ा उसे बलात विधर्मी बनाने की चेष्टा की जाती है तो वह मनुष्य अपने धर्म को अपने शरीर से भी प्रिय समझ निज धर्म रक्षा के लिये प्रायः अपने प्राणों को खो बैठता है परन्तु विधर्मी नहीं बनता। इस कथन की पुष्टिमें जगत के भिन्न २ जातियों के इतिहासों में सहस्रों प्रमाण प्रस्तुत हैं। जब बौद्ध मत की शाखा, कृस्तानी धर्मका उदय, एशिया में हुआ था तो कृस्तानी धर्म के आचार्य्य निज मत में महती प्रीति रखने वाले ईसा तथा उनके पश्चात उनके अनेक अनुयायी यूहूदियों तथा रोमियों के हाथ मारे गये थे। प्राचीन ग्रीस (यूनान) का अद्वितीय विद्वान सौक्रेटीज़ धर्म शिक्षा प्रदान करने तथा महासत्यवादी होने के कारण ही हेमलाक विष के द्वारा मारा गया था। योरोप का प्रसिद्ध संशोधक (रिफ़ार्मर) लूथर पोप रोम के अनुयायियों से भांति २ वलेशित किया गया और उसके अनेक अनुयायी योरोपीय पोप धर्मावलम्बियों से मारे और जलाये गये थे। जब तुर्कों ने टर्की का देश अपने अधिकार में कर मुसल्मानी धर्म को तलवार के ज़ोर से योरोप में फैलाना चाहा था तब उस समय के योरोपीय ईसाई प्रायः अपने धर्म की रक्षा में अपना

सर्वस्व खो बैठते तथा अपने प्राणों को भी परित्याग कर देते थे परन्तु विधर्मी बनना नहीं चाहते थे। अन्तको मुसल्मानों के अत्याचारका यह प्रतिफल हुआ कि योरोपके सम्पूर्ण ईसाई सम्राट ने अपनी २ सेनाओं को एकत्रिक कर अत्याचारी तुर्कों से लड़ने के लिये भेजा। क्रुसेड नाम प्रसिद्ध संग्राम बहुत दिनों तक तुर्क और ईसाईयों के बीच होता रहा। लचों ईसाई खूंखार तुर्कों के हाथ मारे गये परन्तु ईसाइयों ने युद्ध से पृथक होना उचित न समझा और अन्तको तुर्कों पर विजय लाभ कर अपने धर्मकी रक्षा करने लगे। ऐंकी नाम अमेरिका बासियों के धर्मपर जब जब योरोपीय ईसाइयों ने अत्याचार किया तो ऐंकी यावत् शक्ति तो ईसाईयों से लड़े परन्तु अन्तको अपने गृहादि सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को परित्याग अपने धर्म के साथ पहाड़ और जङ्गलों में भाग गये। मुसल्मानों से जहां तक बना अफ्रिका के मिश्री लोगों को भी मुसल्मान बनाने के लिये तंग किया और अनेक मिश्रीने भी निज धर्मकी रक्षा के लिये प्रागात्याग दिये। ज़ोरोस्टर के धर्मानुयायी पारसियों पर जब मुसल्मानों का अत्याचार हुआ और जब बहुत से पारसी निजधर्म रक्षा के लिये प्राण परित्याग कर चुके तो पारसी निज घर द्वार राजलक्ष्मी को छोड़ अपने बाल बच्चों के साथ मुसल्मानो राजसे बहुत दूर भारत के बम्बई प्रदेश में जा बसे। शायद भारत में विधर्मी बनाने के लिये किसी को प्राचीन काल में दुख नहीं दिया जाता था। यद्यपि बुद्धदेव के अनुयायी वैदिक धर्म की निन्दा करते और ब्राह्मणों की हानि पहुंचाते थे परन्तु कोई भी ब्राह्मण बौद्धों को अन्याय से मार डालने की चेष्टा नहीं करता था। केवल दो तीन जनों ने ही प्रसिद्ध धर्मोपदेशक शङ्कर स्वामी को विष दे अपनी जातिको एकवार महाकलंकित कर दिया था। जब मुसल्मानों का आक्रमण भारत पर होने लगा तब भारत बासियों को मालूम हुआ कि निज धर्म (चाहे वह परम पवित्र ही क्यों न हो) परित्याग करने के लिये भी मनुष्य बाध्य किया जाता, दण्ड पाता और प्राणों से वियुक्त किया जाता है। पैठान और मुग़ल नाम मुसल्मानों के राज्य के समय कितने हिन्दुओं को निज धर्म के लिये प्राण छोड़ना पड़ा उसकी गणना कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता। उस

समय भारत में अत्याचार ही का राज्य था। हिन्दू गुप्त और प्रकट रीति से मारे जाते उनके घर नगर भस्म किये जाते कभी २ उनकी स्त्रियां और बेटियां उनसे छीन मुसल्मानों को सौंपी जाती थीं। आख्वों की मार उन का यज्ञोपवीत तौला जाता और उसके द्वारा मृतकों की संख्या ठैराई जाती थी! परन्तु यह घोर अहितीय अत्याचार भी भारत सरीखे नम्र देश को बिलकुल मुसल्मान न बना सका प्रत्युत अति नम्र भारत बासियों में भी धर्म शत्रुओं के कण्ठ काटने की शिक्षा फैला दी। दक्षिण के महाराष्ट्रों में, राजपुताने के क्षत्रियों में, पञ्जाब के सिक्खों में कितने नर नारी और बच्चे हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिये रणक्षेत्र में तथा शत्रुओं के बन्दीगृह में मरे और मारे गये थे उसकी संख्या नहीं हो सकती! आज कल के जो प्रचरित छोटे २ भारतीय इतिहास हैं उनसे उन महा पुरुषों के चरित्र का पता नहीं लग सकता जो लोग मुसल्मानों की जलाई हुई अग्नि, मुसल्मानी तलवार, शरीर को पेर २ कर मारने वाली मुसल्मानी चरखी आदि के घोर यंत्रणाओं को सह कर भी शरीर परित्याग अपने धर्म को अपने साथ लेते गये। आज कल के स्कूलों के इतिहास अधिकतर इन्ही बातों को बतलाते हैं कि किस प्रकार किस जाति ने भारत पर आक्रमण किया हिन्दू किस प्रकार प्रायः परास्त किये गये और कभी २ विजयी हुए। बूढ़े गुरु तेग़ बहादुर पर जिस प्रकार मुसल्मानों ने अत्याचार किया उसका स्मरण होने से ही आंखों से आंसू निकल आता है धन्य थे गुरु तेग़ बहादुर जिन्हो ने मुसल्मानों के बन्दी में रह भूख से अपने शरीर को सुखा दिया मुसल्मानी तलवार से काटे भी गये परन्तु अपने धर्म्म को न छोड़ा! अदूरदर्शी मुसल्मानों के अत्याचार ने गोविन्द सिंह सरीखे नव युवकों को भी सिंह बना दिया और गुरु गोविन्द सिंह सुख की आशा परित्याग बराबर मुसल्मानों के साथ लड़ने ही में तत्पर रह गये और लड़ते ही लड़ते मर गये। वृद्ध और युवकों की तो बात दूर रहे उस समय छोटे २ बच्चों के हृदय में भी धर्म भाव ऐसा प्रबल हुआ कि उन बालकों ने भी शरीर छीड़ना उत्तम समझा परन्तु निज धर्म को परित्याग नहीं किया! गुरु गोविन्द सिंह के दो छोटे २ बच्चों को जिन

की अवस्था शायद दश बारह वर्षों की थी जब मुसलमान हाकिम ने मुसलमान बनाना चाहा और बहुत समझा बुझा कर कहा कि बच्चे मुसलमान हो जाओ बड़ा सुख मिलेगा, बड़े लड़के ने उतर दिया "क्या हम प्रह्लाद भक्त से भी छोटे हैं जो अपने सच्चे प्यारे धर्म्म को छोड़ दें? जिस धर्म्म के लिये हमारे पुरुषा गुरु तेग़ बहादुर ने प्राण छोड़ दिया जिसके लिये हमारे पिता गोबिन्द सिंह महादुख उठा रहे हैं उनके हम बच्चे क्या प्राण के लोभ से अपने धर्म्म को छोड़ देंगे?"। फिर भी मुसलमान हाकिम ने बच्चों को बहुत सा प्रलोभन, भयादि दिया परन्तु बच्चे अपने धर्म्म पर दृढ़ रहे और अन्त को उन बच्चों के जीते शरीर के साथ दीवार चुनी गई और बच्चे उसी दीवार में मर गये। यह तो नमूने के लिये दो तीन भारतीय धर्म्म प्रेमियों का यहां उल्लेख किया है ऐसे २ सहस्त्रों पुरुष स्त्री और बालक उस मुसलमानी अत्याचार के समय में हुए हैं जिन्हों ने मुसलमानों के क़ैद में आकर दुस्सह क्लेशों को बारम्बार सहन कर भी अपना शरीर छोड़ दिया परन्तु धर्म्म की परित्याग न किया।

* * * आर्यावर्त

---

## टौरपीडो क्या बस्तु है?

आप लोगोंने किस्सी कहानियों में विशेषत: मुसलमानों की लिखी किताबों में पानी के नीचे नीचे चलने वाली नावों की चर्चा पढ़ी सुनी होगी। ऐसा न समझिये, कि वे किस्से बिलकुल झूठे हैं, और नीचे नाव नहीं चल सकती और न रह सकती है। आज कल फ़रंगिस्थान के प्राय: सब बड़े महाराजाओं के पास इस तरह की नाव है। किन्तु ये नावें गुप्त रीति से बनाई जाती हैं और गुप्त रीति से रक्खी जाती हैं, इस कारण उनकी सूरत या चर्चा साधारण लोग न अधिक देखने पाते हैं और न सुनने पाते हैं। आज उन्हीं नावों का थोड़ा वर्णन यहां करना चाहते हैं।

इस तरह की सब से अच्छी नावें फ्रान्सीसी सरकार के यहां हैं। अंगरेज़, रूस, जर्मन, चीन, जापान आदि सब के यहां इस तरह की

नाव हैं और सब की प्रायः एक ही तरह की हैं—केवल दो चार छोटे छोटे विषयों का उनमें भेद मालूम पड़ता है। ये लोहे की नहीं बनतीं और न लकड़ी की। बनती हैं, तांबा वा ऐसी अन्य धातु की जिनपर चुम्बक का असर बहुत कम होता है। देखने में इनकी सूरत आगे और पीछे से मछली की तरह होती है—वही सिर, मुंह आंख और नाक, और वही पूंछ तथा डैने। बीच में यह लोहे के पीपे की तरह एकदम गोल रहती है। नाक के ऊपर एक खाली पीपा १०।१२ फुट लम्बा सीधा खड़ा रहता है। मछलियों की तरह यह नाव डैने और पूंछ से पानी काटती हुई बड़ी तेज़ी से पानी के नीचे इधर उधर चलती है। आंख की जगह दो सुराख रहते हैं जिसमें तीप कीसी कल लगी रहती है और वास्तव में तीप का काम देते हैं। कहना नहीं होगा, कि इस नाव के भीतर एक बूंद भी पानी नहीं जा सकता है।

इस नाव के भीतर मनुष्य रह सकते हैं और रहते हैं, पर उन्हें सोने वा कुरसी मेज़ रखने की जगह यहां नहीं मिलती है, क्यों कि तमाम जगह कलों से भरी रहती है। नाक पर के पीपे की जड़ में एक टेबल पर सफेद कपड़ा पड़ा रहता है और उस पीपे की फुनगी पर एक दूरबीन लगी रहती है। दूरबीन के द्वारा पानी के भीतर की सब चीज़ों की परछांही ठीक ठीक उस कपड़े पर पड़ती है और जब नाव पानी की सतह से केवल ६ फुट नीचे रहती है तब पानी के ऊपर की चीज़ें भी उसी तरह देखी जाती हैं। इस नाव की पेंदी में एक खाली कोठरी रहती है जिसमें पानी की आमद रफ़्त कप्तान की आज्ञानुसार होती है। एक कोठरी हवा रहने के लिये भी इस नाव में बनी रहती है। जितनी हवा ज़मीन पर १ सौ हाथ लम्बी, १ सौ हाथ चौड़ी और १ सौ हाथ ऊंची जगह में रह सकती है वह इस कोठरी में केवल १० हाथ लम्बी, १० हाथ चौड़ी और १० हाथ ऊंची जगह में बन्द कर दी जाती है। इसी हवा की सहायता से नाव में आदमी रहते हैं, पेंदी में पानी की आमदरफ्त होती है, और अनेक तरह के काम चलते हैं। इस नाव की शक्ति,—भीतर की रोशनी और आंख पर की तीपों का पलीता,—बिजली

के द्वारा मिलती है, जिसकी लाने के लिये नाव २४ घण्टे के अन्दर बन्दरगाह में आ जाती है।

यह नाव सौदागरी का माल ढोने के लिये नहीं बनती है और न देशान्तर में जाकर शत्रुओं को पराजित करने के लिये! यह नाव बन्दरगाहों में रहती है और आगत शत्रुओं से उसकी रक्षा करती है। कोई शत्रु अपना जहाज अगर उस बन्दरगाह के पास ले जाय और उसे तोपों से उड़ाना चाहे तो यह पानी के नीचे जानेवाली नाव गोता लगावेगी और उसके पास नीचे नीचे जाकर अपनी नाकों से दो तोप ऐसी तेजी से छोड़ेगी कि शत्रु का जहाज लोहे का बना, सैकड़ों तोपों से सजा, हज़ारों आदमियों से भरा और करोड़ों रुपयों का होने पर भी बात की बात में टूट कर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। चलने में तेज़ रहने पर भी इसकी गतिका परिमाण है; और देखा गया है कि १४ घण्टे से अधिक देर तक पानी के नीचे चलाते रहने से इसकी हानि होती है। इसी कारण यह दूर के शत्रु जहाज को नहीं तोड़ सकती है और न बन्दरगाह से अधिक दूर जा सकती है। ऊपर पानी के बोझ से चूर हो जाने के भय से यह नाव समुद्र में बहुत नीचे नहीं जा सकती है।

इस प्रकार की सब से अच्छी फ्रान्सीसी नाव १ सौ ६० फुट अर्थात १ सौ ७ हाथ लम्बी है और बीच के गोल हिस्से का व्यास १२ फुट अर्थात ८ हाथ है। तौलने से वह नाव वजन में सवा ६ हज़ार मन पाई गई है। इस तरह की नाव हमारी सरकार के भी कई हैं, पर उनका रहना, उनकी बनावट का हाल, उनकी शक्ति आदि का समाचार इतनी गुप्त रीति से रक्खा जाता है, कि सम्पूर्ण विलायत में भी किसी एक नाव की सब बातें चार पांच से अधिक मनुष्यों को मालूम नहीं है! महाराणी विक्टोरिया वा उनके मन्त्री लोग भी यह भेद नहीं जानते हैं, दूसरों की कौन गिनती है। ऐसी नावों के विषय में फ्रान्सीसी सरकार की बड़ाई सुन कर हमारी सरकार भी बहुत सी नावें बनवाने की कोशिश में लगी है।—बंगवासी।

## भाषा।

भाषा जाति का जीवन है। भाषा से जाति की दशा प्रतीत होती है। भाषा जाति का इतिहास है। भाषा ही से जाना जाता है, कि कौन जाति किस समय में उन्नत थी, और किस जाति की अब कैसी उन्नति है। जिस प्रकार आकाश में संसार की तीनों दशाओं के परमाणु सदा बने रहते हैं, उसी प्रकार भाषा में जातीय जीवन की एक एक घटना के परमाणु मिले रहते हैं।

भाषा ही से हिन्दुओं का प्राचीन महत्त्व संसार भर में विदित हुआ है। संस्कृत की उन्नति आर्यगण की पुरानी उन्नति का पता देती है। संस्कृत के काव्य, राजनीति, दर्शन और दूसरे शास्त्रों का कुछ कुछ आभास पाकर पृथिवी भर के विद्वान मानने लगे हैं, कि हिन्दू जो उन्नति कर चुके हैं, वह औरों से होना बहुत कठिन है। आज भी हमारी जो कुछ दशा है, हमारी भाषा से उसका पता सहज में लग जाता है। जो हमारी दशा है, वही हमारी भाषा की दशा है।

अंगरेज़ी की उन्नति से अंगरेज़ों की उन्नति का परिचय वहां भी मिल सकता है, जहां अंगरेज़ों का राज्य नहीं है और जहां अंगरेज़ तथा उनके राज्य को कोई जानता भी नहीं है। अंगरेज़ जहां जाते हैं, वहीं अंगरेज़ी प्रधान हो जाती है। उन्हें अपने राज्य के बिस्तार के साथ भाषा के बिस्तार का भी पूरा ध्यान रहता है। और इससे यह नहीं, कि उनका भाषा प्रेम ही प्रगट होता है, बरञ्च राज्य बिस्तार और राज्य प्रबन्ध में बड़ी सहायता मिलती है।

२८ करोड़ प्रजा से भरे बिशाल भारतवर्ष में अंगरेज़ी की प्रधानता चारो ओर प्रत्यक्ष होती है। अंगरेज़ तो इस देश में एक लाख भी नहीं हैं, परन्तु इससे क्या? वह सजीव जाति के लोग हैं, और फिर इस देश के राजा। इसीसे रेल तार में, सब आफ़िसों में स्कूल कालिजों

में, सर्वत्र अंगरेज़ी का अधिकार है। मन्दिर मसजिदों में, धर्म पुस्तकों में नाना रूप से अंगरेज़ी जा घुसी है।

भाषा की वृद्धि जाति से है। यदि कोई जाति अपनी भाषा की उन्नति करना चाहे तो हो सकती है। भाषा पर जाति का प्रेम ही भाषा की उन्नति है। परन्तु राजा की सहायता भी भाषा के लिये मुख्य है। विक्रम भोज आदि के समय में अच्छे कवियों की उत्साह मिलने से भाषा की कैसी कुछ उन्नति हुई थी। फ़िरदोसी कवि को महमूद बादशाह ने एक एक बैत के लिये एक एक अशरफी देनी करके फारसी का प्रसिद्ध ग्रन्थ "शाहनामा" लिखवाया था। फ़िरदोसी को धन का लोभ न होता तो कभी अपनी सारी उम्र को एक ही पुस्तक में खोकर लाख बैत न लिखता। बिहारी कवि को महाराज जय सिंह भारी इनाम का लालच न देते तो "सतसई" सी पुस्तक हिन्दी भाषा की कविता में शायद दिखाई भी न देती।

विलायती प्रजा केवल प्रजा ही नहीं है। उसे बहुत से स्वत्व राजा कैसे प्राप्त हैं। वहां प्रजा तन मन धन से भाषा को पूरी सहायता देने को मौजूद है। इस हालत में वहां राजा की सहायता बिना भी भाषा की खूब उन्नति हो सकती है। फिर राजा भी निश्चिन्त नहीं है। वहां राजा की ओर से भी इस काम में सहायता की कमी नहीं होती है। राज कवि टेनिसन विलायती राज सभा के कवि थे। उनका गुण और नाम राज कवि होने ही से प्रकाश हुआ। यदि उनको राजा से सहायता न मिलती तो ऐसी कीर्त्ति भी प्राप्त होना कठिन था।

परन्तु यहां की दशा कुछ और है। यहां प्रजा हीन और नितान्त निर्बल है। वह स्वयं इस योग्य नहीं है, कि अपनी भाषा की उन्नति के लिये कुछ सहायता कर सके। ऐसी दशा में राजा की सहायता बिना कैसे काम चले? परन्तु राजा तो कुछ सहायता नहीं करता। वह बिजातीय है। अपनी ही भाषा की ओर उसका ध्यान है! अभागी भारत भाषा इसीसे अनादृत है! इसीसे उसके लिये कहीं ठिकाना नहीं है। पञ्जाब क्या और पश्चिमोत्तर क्या कहीं उसका कोई पूछने वाला

नहीं। दफ्तरों से निकाली गई, विश्वविद्यालय से निकाली गई। और भी जहां जहां है, वहां से निकाल देने का उद्योग हो रहा है। जिनकी वह भाषा है, स्वयं उनमें भी उसका कुछ सम्मान नहीं है। इतने पर भी अभागी हिन्दी देश में है, यही बड़ा आश्चर्य है! हिन्दी की बड़ी कठोर जान है!! इतने सदमे सह कर उसका प्राण वायु बाहर नहीं होता है!!!

बंगवासी

## काम की बातें।

एक शीशी में थोड़े लौंग के अर्क में फासफूरस रक्खो और शीशी के मुंह को खूब बन्द कर दो और इस शीशी को अंधेरे घर में ले जाकर खोल दो। निहायत ही उम्दे रौशनी होगी।

अगर शीशे की किसी चीज़ से धात वग़ैरह का कोई टूटना जोड़ना चाही (जैसे शीशे के लैम्प पर पीतल की ढिबरी होती है) तो थोड़ी सी फिटकिरी आग पर पघिलाकर और गर्म टूटने में डाल कर शीशे में दबा दो निहायत ही मज़बूत जुड़ जायेगा और देर तक न उखड़ेगा।

काठ का बुरादः आध पाव, काग़ज़ी नेम्बू का अर्क आध पाव मिला कर लोहे या मिट्टी के बर्त्तन में हल कर लो जब आधा रह जाये छान लो उमदः सुर्ख़ रौशनाई बन जावेगी।

खटमल दूर करने की रीति—जिस चारपाई में खटमल हों उस के चारों ओर गन्धक की धूनी देना चाहिये।

पारा के बर्तन आदि बनाने की रीति—जितने पारे का बर्त्तन बनाने की आवश्यकता हो उतना पारा ले कर लोहे के गहरे बर्त्तन में डाले और साथ ही में ज़ैतून का तेल भी उस लोहे के बर्त्तन में भर दे और नरम २ आंच से जोश देवे, जब वह तेल सूखने पर हो आवे तब और ज़ैतून का तेल अथवा तेज़ाब हल्दी का डालता रहे जब पारा जम जावे तब इस कार्य्य को बन्द करो फिर पारे की जो वस्तु बनाना हो बना लेवे। हिन्दी०

चमड़े की काली वारनिश—अलसी के तेल को खूब गरम करके उस में मुरदारसंग पीस कर मिला देवे तद पश्चात् काजल डालकर खूब घोटे तो काली वारनिश बन जावेगी।

दीमक के दूर करने की औषधी—एक पत्र का कथन है कि जिस स्थान पर वृक्ष वा पौधे में दीमक लग गया हो वहां पर थोड़ी सी हींग तेल में मिला कर छिड़कना चाहिये। इस उपाय से दीमक भाग जाते हैं।

मृगी की औषधी—मृगी रोग की साधारण औषधी एक साधु ने यह बतलायी है कि जो मनुष्य इस रोग से ग्रसित हो उस को उचित है कि १५ दिन तक मसूर की दाल की खीचरी को दिन रात्रि में दो बार खाया करे। प्रातः काल खीचरी को खाकर बमन कर डाला करे और रात्रि को दूसरी खीचरी खाकर सो रहे तो १५ दिन में उक्त रोग से रहित हो जायगा।

बिसूचिका की औषधि—एक माशे कर्पूर, ३ कोटी इलायची, ६ माशे शहद ३ माशे अदरख का रस इन सब को पत्थर के हुरसे पर रख के सफ़ेद चन्दन की सुठिया से घिस कर ३—३ माशे आध आध घण्टे में चटाने से बिसूचिका रोग दूर हो जाता है यह तृष्णा, बमन और मुख सूखने में भी हित कर होता है।

चिकित्सा—मछली खाने से यदि अजीर्ण हो जावे तो दूध की कांजी पी जानी चाहिये। केला खाने से अजीर्ण होवे तो सेंधा निमक खा लेना चाहिये। अन्न खाने से अजीर्ण हो जावे तो नमक और अजवाइन दोनों को मिला कर थोड़े से जल के साथ खा लेना चाहिये। मिठाई खाने से यदि अजीर्ण हो जावे तो लौंग खाकर जल पीना चाहिये।

सिर दर्द की औषधी—यदि शिर में दर्द हो तो रक्त चंदन को घिस कर लगाना चाहिये। वा पान के रस को निचोड़ कर चार पांच बेर माथे में लगाना चाहिये। ऐसा करने से दर्द शीघ्र ही दूर हो जाता है।

## अक्सर होने वाली बीमारियों के लिये सीधे सीधे नुस्खे।

बुखार—परवर के पत्ते, हर्रे, चिरायता, बासे के पत्ते और गुरिच (गिलोय) इन का काढ़ा पीने से कफ का बुखार दूर हो जाता है। धनिया और परवर के पत्तों का काढ़ा पीने से पित्त का बुखार दूर होता है। खितपापड़ा और हरसिंगार के पत्तों का रस एक तोला लेकर उस में थोड़ा शहत मिला कर पीने से विषमज्वर जाता रहता है।

रक्तातिसार—कच्चाबेल, कुरैया की छाल, मोथा और अतीस इन सब का काढ़ा पीने से रक्तातिसार अच्छा हो जाता है।

हिचकी—दो या तीन तोला अनार के रस में थोड़ा सेन्धा नमक मिला कर पीने से हिचकी रोग का नाश होता है। अनार के पत्ते के एक तोला रस में थोड़ा शहत मिला कर पीने से हिचकी रोग दूर हो जाता है।

प्यास—थोड़े सौंफ की पोटली बना कर पानी में भिगो दे, फिर उस पानी को बार बार पीने से और उस पोटली को चूसने से प्यास बिलकुल दूर हो जाती है। कबाब चीनी में पका पानी बार बार पीने से प्यास नहीं लगती।

रक्तपित्त—दोनों कुम्हड़े के रसमें आधा तोला अथवा उससे कुछ कम लाख मिला कर सेवन करने से उरःक्षत और रक्तपित्त रोग शेष नहीं रहता।

अम्लपित्त—सतावर का रस दो तोला हर रोज़ सवेरे खाने से शूल और सब प्रकार का अम्लपित्त रोग दूर हो जाता है।

अश्मरी (पथरी रोग)—मूली के दो तोला रस में चीनी मिला कर खाने से सब प्रकार की अश्मरी (पथरी रोग) दूर हो जाती है।

नाक से रुधिर गिरने की दवा—अनार के फूलों का रस और सफ़ेद दूब का रस अथवा कुदरूं के पत्तों का रस दिन में दो बार सुरकने से किसी कारणसे नाक से गिरता हुआ रुधिर बन्द हो जाता है।

प्रमेह—आधपाव दूध में दो तोला सतावर का रस मिला कर पीने से सब प्रकार के प्रमेह रोग दूर हो जाते हैं।

खुजली—केले की जड़ की राख और पिसी हलदी इन दोनों को समान मिला कर लेप करने से खुजली के दाग़ तक दूर हो जाते हैं।

दादरोग—दूध, हरे, सेंधा नमक चाकुल के बीज, मूली के पत्ते इन को कांजी अथवा मट्ठे में पीस कर लगाने से दाद का नाश होता है।

आग से जले की दवा—मक्खन और दूध में पिसे तिल लगाने से उसी समय जलन बन्द हो जाती है।

कुत्ते काटने की दवा—ऊंख का गुड़, सरसों का तेल और आक का दूध इन सब को एक में मिला कर जहां काटा हो तहां लगाने से कुत्ते का जहर दूर हो जाता है।

बीछी काटने की दवा—जहां बीछी ने काटा हो उस स्थान में गो मूत्र में पिसा सेंधानमक लगाने से बिष दूर हो जाता है। गोबर गर्म्म करके लेप करने से भी बही फल होता है।

अजीर्ण—अजवाइन और एक तोला सोंठ इन को थोड़ा कूट कर डेढ़ पाव गर्म्म पानी में भिगो दे, फिर थोड़ी देर के बाद उस पानी के पीने से अजीर्ण आदि दूर हो जाते हैं।

आमवात—रसुन १ तोला, लाल अरण्ड की गिरी १ तोला इन्हें बासी पानी में पीस कर गर्म्म करके लगावे अथवा कुचिला को गोमूत्र में पकाकर लगावे।

कर्णरोग—हुरहुर के पत्ती का रस थोड़ा गर्म्म करके कान में छोड़े तो उसी समय कान का दर्द दूर हो जाता है।

रुधिर बहने की दवा—रुधिर की के और रक्त प्रदर में भी इसी दवा से खून बन्द हो जाता है शस्त्र आदि लगने से जो किसी शरीर में से खून बहने लगे तो अनार के पत्ती का रस लगाने से उसी समय रुधिर बन्द हो जाता है और घाव में भी बहुत फ़ायदा है, बकरी का दूध और चावल का जल एक में मिला कर पीने से रुधिर बहना बन्द हो जाता है।

---

## जोलगी ।

एक बाबू साहब की बीमारी की दशा में उनके सेवक ने औषधि के धोके स्याही पिला दी। जब ज्ञात हुआ तो सेवक ने बाबू साहब से कहा कि दोष क्षमा कीजिये मैंने आपको स्याही पीला दी है बाबूसाहब ने कहा कुछ हर्ज नहीं हम ब्लाटिङ्ग पेपर निगल लेंगे।

आध सेर काग से एक आदमी पानी में नहीं डूबता है।

शराब के गुण—कहते हैं कि जब हज़रत आदम ने सृष्टि की आदि में अंगूर की बोया तो शैतान ने आकर उसकी बेल पर एक मोर मारा और उसका लोहू उस बेल में प्रवेश हो गया। जब वह फली और उसके पत्ते निकले शैतान ने आकर एक लंगूर मारा जिसका लोहू भी उसी बेल में चला गया। जब उस बेल में फल लगे तो शैतान ने आकर उस पर एक शेर मारा

कि जिसका लोहू भी उसी में प्रवेश हो गया। फल पकने पर शैतान ने उसी बेल पर एक मेंडक मारा जिसका लोहू भी वह बेल पी गई। इस लिये जो मनुष्य शराब को पीता है उसमें वह चार गुण होते हैं (१) शराब पीने के पश्चात उसके मुखका रंग लाल हो जाता है और उसका मन ऐसा प्रफुल्ल हो जाता है जैसा मोर।

(२) जब ज़रा उसका असर होता है तो वह खेलता है तालियां बजाता है और लंगूर की तरह नांचता है। (३) जब उसका पूरा असर हो जाता है तो वह शेरकी तरह गरजता है और हरेक को छेड़ता है। (४) फिर अन्त को मेंडक की भांति कींचड़ में लोटता है अधिक सोता है और बल हीन हो शीघ्र मरजाता है। भा०

---

## प्राप्ति स्वीकार।

मन रंजन संग्रह—यह नवीन सामग्री हिन्दी भाषा को सम्पादक भट्ट भास्कर कानपुर द्वारा प्रकाशित की गई है इस पुस्तक को फूलों का गुच्छा कहें तो अत्युक्ति नहीं क्यों कि इस में रंग रंग के फूलों की नाईं भाषा के कवियों के प्राचीन तथा नवीन सुन्दर सुललित कवित्त आदि मनोहर छन्दों का संग्रह है यह आठ अंकों में—श्री रघुनाथ शतक, प्रेम सुधाकर (जिस के प्रेम तरंग, ऋतुराज ग्रीष्म, वर्षा वर्णन आदि उप विभाग हैं) रसिक विनोद, हीरी वर्णन, शृंगार सार प्रथम भाग, द्वितीय भाग, वीर विनोद और पियूष प्रवाह—विभक्त है। आकार इस का रौयल १६ पेजी का २३४ पृष्ट अतएव जेब में रखने के योग्य है। प्रकाशक ने सब के सुबीते के लिये मूल्य इस का जिल्द बंधी का ।≈ और बेजिल्द बंधी का ।≈) रक्खा है। कविता रसिकों को उत्साह वर्द्धन करना उचित है।

---

श्री राधा सहस्र नाम—अब तक यह अप्रकाशित सामग्री थी। इसे श्री मदगोस्वामी गोवर्द्धन लाल जी महाराज—पटना निवासी ने सुन्दर अक्षर और सुन्दर कागज़ पर मूर्ति पूजकोंको बिना मूल्य देनेके संकल्पसे छपवाया है यदि मांगने वाले वैष्णव होंगे तो उन की डाक महसूल भी नहीं देना

पड़ेगा। वैष्णवी और पूर्ति पूजकी! यह अवसर तुम्हारी भक्ति दिखलाने का आ गया है। जिन को मंगवाना हो उक्त महाराज जी को पत्र लिखें।

दी ग्रीनरेब्ल राजा राम पाल सिंह की (संक्षिप्त) जीवनी—उक्त राजा साहब को कौन नहीं जानता कि अद्वितीय उत्साही और दैनिक हिन्दीस्थान के मालिक हैं उन ही का जीवन चरित्र गहमर निवासी पंडित शीतल प्रसाद उपाध्याय ने लिखा है और कालाकांकर हनुमत्प्रेस में छपवाया है। छोटी सी ४० पृष्ट की पुस्तक देखने योग्य है।

---

बिश्व कर्मा—प्रथम भाग नम्बर १ इस नवीन मासिक पत्र के निकालने का उद्देश्य प्रकाशक ने यों वर्णन किया है कि नौकरी ढूढ़ने से भी नहीं मिलती और व्यापार का सिखलाने वाला भी कोई न रहा जो जानते है वह अच्छी तरह नहीं बतलाते इसी अभाव को दूर करने के लिये यह पत्र प्रकाशित किया गया है। इस अंक में गिलट करने का प्रकरण सबिस्तर वर्णन किया गया है मूल्य २) वार्षिक और प्रति अंक का ।) है। जिन को रुचि न भी हो एक नमूने के लिये भी तो मंगाकर देखे।

---

✓ कृष्ण रामायण अर्थात श्री कृष्ण प्रति यशोदा कथित रामायण। मूल्य २)। हरि प्रकाश यंत्रालय काशी में छपी है और रामायणों की तरह इस में भी सात काण्ड है इस के अतिरिक्त एक पृथक बृज विलास कांड इस पुस्तक में हैं जिस में श्री कृष्ण की लीला का वर्णन है। एक अंश इस का संगीत से भी सम्पर्क रखता है। ग्रन्थ कर्त्ता का उद्योग सराहनीय है अलबत्ता परिश्रम इस के रचने में विशेष हुआ है तिस पर भी राम चर्चा जो लोग ख़रीद देगें उन का मूल्य निस्सन्देह वसूल हो जायेगा। इस पुस्तक की धन गाई परगना दनवार ज़िला शाहाबाद निवासी घनारंग कवि ने जो स्वर्गवासी बड़े राजा महेश्वर बख़्श सिंह बहादुर सी० एस० आई डुमराव के दरबार में रहा करते थे बनाया है। कई कारणों से यह ग्रन्थ रचयिता के जीवन काल में नहीं छपा उन के देहान्त होने पर अपने चचा की कीर्त्ति लोप के भय से, काशी मित्र मंडली की सहायता से संगीता चार्य बच्चु मलिक उपनाम प्रकाश कवि ने प्रकाशित किया है।

## भजन।

क्यों न लेत सुधि नाथ हमारी।
सुनतहि प्रथम पुकार जनन के दूर किये छिन में दुख भारी ॥ १ ॥
जेहि अनुकूल सुरनर मुनि गावत सकत न कहि श्रुति शारद हारी।
की वह बानि तजी अपनी प्रभु की नवीन कछु रीति बिचारी ॥ २ ॥
कीधौं अचल समाधि लगाई भाल बाल रजनी कर धारी।
की कछु अपर काज में बझि के द्रवत न प्रभु यहि भांति बिसारी ॥३॥
जो कछु हीय हेतु तुम जानत जानत हम न मदन छय कारी।
याद रहे पर दामोदर को है केवल इक आस तुम्हारी ॥ ४ ॥

## कुण्डलिया।

मानत नहिं शिव तव कृपा, और आपनी चूक।
ज्यों रवि के उपकार को, मानत नाहिं उलूक ॥
मानत नाहिं उलूक दिवस रैनहिं करि जाने।
रजनी ही को दिवस कोटि दिनकर को माने ॥
दामोदर बसि गंग भेक महिमा नहिं जानत।
तिमि हौ हर के राज्य निवसि प्रभु गुण नहिं मानत ॥

## छप्पय।

प्रभु राखौ जेहि भांति हमै तो रहना ही है।
जो जेहि बिधि करिहौ कृपालु सब सहनाहीं है ॥
सम्पति बिपति बियोग शोक संयोग दुःख सुख।
जानत हौ तुम आप कहा प्रकटौं अपने मुख ॥
दामोदर गिरिबरजा रमण, मदनान्तक पंकज नयन।
टुक करिय कृपा करुणायतन, सदा भक्त जन सुख दयन ॥२७॥

## दोहा।

मल्ली मधु लम्पट मधुप, बल्ली अपर न जात।
तिमि हर मम मन तजन तव, शरण चरण जल जात ॥२८॥

## बरवा।

सुनतहिं बिबिध बिनतिया शिव सुख दान।
भयउ प्रफुल्लित मनवा परम सुजान ॥ २९ ॥

कीन्ह अभय दामोदर सिर धरि हाथ।
जन गन माहिं बनावल गिरिजा नाथ ॥ ३० ॥
जे पढ़िहे अस्तुतिया यह चित लाइ।
सुख सम्पति सब पैहन नसै बलाई ॥ ३१ ॥
अन्त परम गति लाभहिं जहं शिव लोक।
जैहन अवशि उहां जहं मोह न शोक ॥ ३२ ॥
माघ मास तिथि चौदस पाख सुश्याम।
सुन्दर सुखद सुहावन दिन अभिराम ॥ ३३ ॥
बिक्रम सम्बत उन्नीस एक पचास।
दामोदर यह अस्तुति कीन प्रकास ॥ ३४ ॥
शीतलपुर निवासी सारन माहिं।
बिहच्चरण सुसेवन उद्यम जाहिं ॥ ३५ ॥
क्षमब सुजन जे अवगुण भूलन मोर।
करि सुदया हग कोरहिं मेरी ओर ॥ ३६ ॥

इति श्री दामोदर सहाय सिंह बिरचितं शिव स्तोत्रम समाप्तम्।

---

हथुवा के महाराज बहादुर के० सी० आई० ई० आज कल काशीमें अपने पिशाच मोचनी राज बाड़ी में ठहरे हुए हैं। काशी से प्रयाग भी जायें तो आश्चर्य नहीं। श्री मान के साथ उनके दीवान और बाबू देवेन्द्र नाथ दत्त और डाक्टर रमण कृष्ण दे और बहुत से सहचर हैं।

---

महाराजा बहादुर दरभंगा के छोटे भाई ने सहस्र गोदान किया है।

---

श्री मती बेतिया की महारानी साहबा तीन मास से काशी में दान पुण्य और ब्राह्मण सत्कार कर रही हैं।

---

बड़े खुशी की बात है कि औनरेब्ल जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आई० ई० के चिरंजीव बाबू हरोजी की तिलक २८ वीं फरवरी को चढ़ा और बैसाख में बांसी। गोरखपुर में बरात जायेगी।

लूटि घनी है । वै कहै भावतो कैसी बनी वै कहै मन भाव ते कैसी बनी है ॥२१८॥

मंदरसन यथा ।

आहट पाय गोपाल को बाल सनेह के गांसनि सो गंसि जाती । दौरि दरीची के सामुहें ह्वै दृग जोरि सो भौंहन में हंसि जाती ॥ प्यारे कितारे कसौटिनमै अपनी छबि कंचन सी कसि जाती । दास न जानत कोऊ कहूं तन मै मन मै छबि मै बसि जाती ॥२१९॥

पुनः ।

काहे को दास महस महेस्वरि पूजन काज प्रसूनन तूरति । काहे को प्रात नहाननि कै बहु दाननि दै व्रत संयम पूरति ॥ देख री देख अगोरि कै नैननि कोटि मनोज मनोहर मूरति । येई हैं लाल गोपाल अली जिहि लागि रहै दिन रैन बिसूरति ॥२२०॥

परिहास ।

मोहन आपनो राधिका को बिपरीति को चित्र बिचित्र बनाय कै । दीठि बचाय सलोनी की आरसी मैं चपकाय गयो बहराय कै ॥ घूमि घरीक में आप कह्यो कहा बैठी कपोलन चंदन लाय कै । दर्पन त्यों तिय चाह्यो तहीं सिरनाय रही मुसकाय लजाय कै ॥ २२१ ॥

संघटन यथा ।

लेहु जू ल्याई सुगेह तिहारे परे जिहि नेह संदेह खरे मै । भेटो भुजा भरि भेटो व्यथा निसि भेटी जु तौ सुख साध भरे मै ॥ संभुज्यों आवेही अंग लगायो बसायो

कि श्रीपति ज्यों हियरे मै। दास भरी रस केलि सकेलिये आनंद बेलि सी मेलि गरे मै ॥ २२२ ॥

पुनः।

आपने आपने गेह के द्वार तें देखा देखी कै रहे हिलि दोऊ। त्योंही अंध्यारो कियो झपि मेघनि मैन के बान गए खिलि दोऊ॥ दास चितै चहुंधा चित चाय सो औसर पाय चले मिलि दोऊ। प्रेम उमंडि रहे रस मंडित अंतर की मड़ई मिलि दोऊ॥ २२३ ॥

मान प्रवर्जन यथा कवित्त।

पंकज चरन की सो जानु सुबरन की सो लंक तनु की सो जाकी अलख मरति है। तृबली तरंग कुच संभु जुग संग की सो हरावलि गंग की सो जो उत बहति है॥ श्रुति सज धारी वा बदन द्विजराज की सो एरी प्रान प्यारी कोप का पै तू गहति है। सांची हौं कहति तुव बेनी सो कमल नैनी तेरी सुधि सुधा मोहि ज्यावत रहति है॥ २२४ ॥

पत्रिका दान यथा सवैया।

कैसी री कागद ल्याई नई पतिया है दई बृष भान कुमारी। भीगी सुक्यों असुआन के धारे जरी कहि कैसे उसासन जारी॥ आखर दास देखाई न देत अचेत हुती बहुतै गिरधारी। एती तो जीयमें ज्यारी रही जब छाती धरे रहे पाती तिहारी॥ २२५ ॥

उपालंभ यथा कवित्त।

मुख द्विजराज अधिकारी मखतूल अलकनि को है तासों बिना काज दुख लहिये। नैन श्रुति सेवी सर ह्वै के

उर लागत है नाक मुकुतन मंगी ताके दाह दहिये॥ दास मन भावती न भावती चलन तेरो अधर अमीके अवलोकि मोहि रहिये। ह्वै के संभु रूपी ह्वै उरज ये कठोर ये कठोर ताई एतो करै कासो जाइ कहिये॥२२६॥

शिक्षा यथा सवैया।

वाही घरी तें न ग्यान रहै न रहै सखियान की सीख सिखाई। दास न लाज को भाज रहै न रहै सजनी गृह काज की घाई॥ ह्यां सिख साधनि बारे रहो तबहीं लों भटू सब भांति भलाई। देखत कान्ह न चेत रहै री न चित्त रहै न रहै चतुराई॥ २२७॥

स्तुति यथा कवित्त।

राधे तो वदन सम होता हिमकर तो अमर प्रति मासन बिगारते क्यों रहते। क्यों हूं कर पद सिर पावते जो इन्दीवर सर में गड़तो दिन टारते क्यों रहते॥ दास दुति दंतन की देत्यो दई दारिमैं तो पचि पचि उदर बिदारते क्यों रहते। एरी तेरे कुच सरि होत करि कुंभ तो वै उन पर लै लै कार डारते क्यों रहते॥ २२८॥

विनय यथा सवैया।

जात भए गृह लोग कहूं न परोसहूं को कछु आहट पैये। दीन दयाल दया करि कै बहु दोसनि को तन ताप बुझैये॥ दास ये चांदनी चांदनी चोसर ओसर बीते न ओसर पैये। गोहन छाड़ि कछू मिस कै मन मोहन आज यहां रहि जैये॥ २२९॥

जड़ता।

सुनि चंद मुखी रहि रैनि लख्यो मै अनंद समूह सख्यो सपनो। दृग मीचनी खेलत तो संग दास दयो बिधि फेरि सुबालपनो। लगी ढूढ़न चंपलता लतिका चलिता छन मोहि बन्यो छपनो। जनु पायो नहीं ते छिपाय रही तू ओढ़ाय कै अंचल ही अपनो॥ २३०॥

पुनः कवित्त।

गति नरनारिन की पच्छी देह धारिन की तृन कै अहारिन की एकै बार बंधई। टीनी बिकलाई सुधि बुधि बिसराई ऐसी निरदै कसाई तो सो करि न सकै दई॥ बिधि के सँवारे कान्ह कारे औ कपट वारे दास जू न इन की अनीति आज की नई। सुर को प्रभासिनि अधर सेजवासिनि सुबंस कौ ह्वै बंसी तू कुपंथिन कहा भई॥२३१॥

बिरह निवेदन यथा सवैया।

दास जू आलस लालसा त्रास उसास न पास तजै दिन रातैं। चिन्ता कठोरता दीनता मोह उदीनता संग कियो करै बातैं॥ आधि उपाधि असाधिता व्याधिन राधिकै कैसहू ह्वैसकै हाते। तेरे मिलाप बिना बृजनाथ इन्हैं अपनाये रहै तिय नाते॥ २३२॥

उद्दीपन विभाव यथा कवित्त।

बाग कै बगर अनुराग रली देखतिही सुखमा सलोनी सुगनावलि अछेह की। द्वार लगि जाती फेरि ईठि ठहराती बोलै बोरनि रिसाती माती आसव अदेह की॥ दास अवनी के अभि भरति उसास री सुबांसुरी की धुनि प्रति

पांसुरी में बेह की। गंसी गांसी नेह की बिसानी झर मेह की रही न सुधि तेह की न टेह की न गेह की ॥२३३॥

अनुभाव ल० दोहा।

सु अनुभाव जिहि पाइये, मन को प्रेम प्रभाव।
याही में बरनै सुकवि, आठो सात्विक भाव ॥ २३४ ॥

यथा सवैया।

जी बंधि ही बंधि जात है ज्यों ज्यों सुनीवी तनीन को बांधति छोरति। दास कटीले ह्वै गात कंपै बिहंसौंही हंसौंही बसै दृग लोरति ॥ भौंह मरोरति नाक सकोरति चीर निचोरति औ चित चोरति। प्यारे गुलाब के नीर में बोर्‌यो प्रिया लपटे रसभीर में बोरति ॥ २३५ ॥

सात्विक भाव दोहा।

थंभ स्वेद रोमांच स्वर, भंग कंप बै वर्ण।
अश्रु प्रलय ये स्वात्वि की, भाव के ऊदा हर्ण ॥ २३६ ॥

यथा कवित्त।

कहि कहि प्यारी अबै चढ़ती अटारिन पै काहि अवलोक्यो यह कैसो भयो ढंग है। औरे ओर तकति चकति उचकति दास खरी सखी पास पै न जानै कोऊ संग है ॥ थकि रही दीठि पग परत धरनि नीठि रोमनि उमंग भो बदलि गयो रंग है। नैन छलकोहैं बर बैन बलकोहैं औ कपोल फलकोहैं झलकोहैं भये अंग हैं ॥ २३७ ॥

विभिचारी भेद।

निरवेद ग्लानि संका असूया औ मद श्रम आलस दीनता चिन्ता मोह स्मृति धृति जानि। ब्रीड़ा चपलता हर्ष आवेग जड़ता विखाद उत कंठा निद्रा गर्ब अपसमार

मानि ॥ स्वपन बिबोध अमरख अवहित्था गनि उग्रता औ मति व्याधि उन्माद मरन आनि। त्रास औ बितर्क व्यभिचारी भाव तेंतिसये सिगरे रसनि के सहायक से पहिचानि ॥ २३८ ॥

यथा।

सुमिरि सकुचि न थिरति संकि त्रसति तरति उय बानि सगिलानि इरखाति है। उनीदति अलसाति सोवत सधीर चौंकि चाहि चित श्रमित सगर्व इरखाति है॥ दास पिय नेह छिन छिन भाव बदलति स्यामा सबिराग दीन मति कै मखाति है। जल्पति जकाति कहरति कठिनाति माति मोहति मरति बिललाति बिलखाति है ॥ २३९ ॥

थाई भाव ल० दोहा।

थाई भाव सिंगार को, प्रीति कहावै मित्त।
तिहि बिन होत न एकऊ, रस सिंगार कबित्त ॥ २४० ॥
थाई भाव बिभाव अनु, भाव संचारी भाव।
पैये एक कबित्त मै, सो पूरन रस राव ॥ २४१ ॥

यथा कबित्त।

आज चंन्द्रभागा चंपलतिका बिसाखा को पठाई इरिबाग ते कला मैं करि कोटि कोटि। सांझ समै बोथिन मै ठानी दृग मीचनी भोराई तिनराधे का जुगुति कै निखोटि खोटि॥ ललिता के लोचन मिचाय चंद्रभागा सो दुरायवे को ल्याई वे तहांई दास धोटि पोटि। जानि जानि धरी तिय बानी लख रीत सब आली तिहि धरी हसि हंसि परी लोटि लोटि ॥ २४२ ॥

शृंगार हेत ल० दोहा ।

कहत संजोग बियोग है, हेत सिंगारहि लोग ।
संगम सुखद संजोग है बिछुरे दुखद बियोग ॥२४३॥

संजोग शृंगार यथा कवित्त ।

जानु जानु बाहु बाहु मुख मुख भाल भाल भिरत सामुहें भट मानो थरु थरु है । गाढ़े गाढ़े उरज ढलैत तन घाय रेत ढाहै ढिग करन संजोगी बीर बरु है ॥ टूटै नग छूटै बान सिंजित बिरद बोलै भर्मरन भारु बाजै बाजत प्रबरु है । राधे हरि क्रीड़त अनेगनि समर कला मानो मड़ी सोभा औ सिंगार सो समरु है ॥ २४४ ॥

सुरतान्त यथा ।

उठी परजंक तें मयंक बदनी को लखि अंक भरि वे को फेरि लाल मन ललकै । दास अँगिरति जमुहाति तकि झुकि जाति दीने पट अंतर अनंत ओप झलकै ॥ तैसे अंग अंगन खुले हैं स्वेद जलकन खुली अलकन खरी खुली छबि छलकै । अध खुली आँगी हद अध खुली नखरेख अध खुली हांसी तैसी अध खुली पलकैं ॥ २४५ ॥

हाव भेद दोहा ।

अलंकार बनितान के, पाय संजोग सिंगार ।
होत हाव दस भांति को, ताको सुनो प्रकार ॥ २४६ ॥
लीला ललित बिलास किल, किंचित बिचित बिछित्त ।
मोट्टाइत कुट्टमित बिब्बोक, बिभ्रमो मित्त ॥ २४७ ॥

लीला हाव ल०।

स्वांग केलि को करत है, जहां हास्य रस भाव।
दंपति सुख क्रीड़ा निरखि, कहिये लीला हाव ॥२४८॥

यथा कवित्त।

चांदनी में चैत की सकल बृज वारी बारी दास मिलि रास रस खेलन भुलानी है। राधे मोर मुकुट लकुट बनमाल धरि हरि ह्वै करत तहां अकह कहानी है॥ त्योंहीं तिय रूप हरि आई तहिं धाई धरि कहि कै रिसौंहें चली बोल्यो नंद रानी है। सिगरी भगानी पहिचानी प्यारी मुसकानी छूटिगो सकुच सुख लूटि सरसानी है॥ २४९॥

केलिहाव सवैया।

नाते की गारी सिखाय कै सारी को पींजरो लै पिय के कर दीने। मैना पढ़ो सुनते वहि दास जू बार हजार उहै रट लीने॥ बूझती आली हंसौंहें कहा कहैं बोल खिसौंहें लला रस भीने। आपु अनन्द भरी हंसिबो करैं चंचल चारु दृगंचल कोने॥ २५०॥

ललित हाव ल० दोहा।

ललित हाव बरन्यो निरखि, तिय को सहज सिंगारु।
अभरन पट सुकुमारता, गति सुगंधता चारु॥ २५१॥

यथा कबित्त।

पंकज से पायन मै गूजरी जरायन की घांघरे को घेर दीठि घेर घेर रखियां। दास मन मोहनी मनिन के बनाव बने कंठ माल कंचुकी हमेलहार पखियां॥ अंगन की जोति जाल फैलावत रंग लाल आवत मतंग चाल

## बिहार बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)
छ महीने का ... ... ... ... १।)
राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)
विद्यार्थियों से ... ... ... ... १।)
प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी

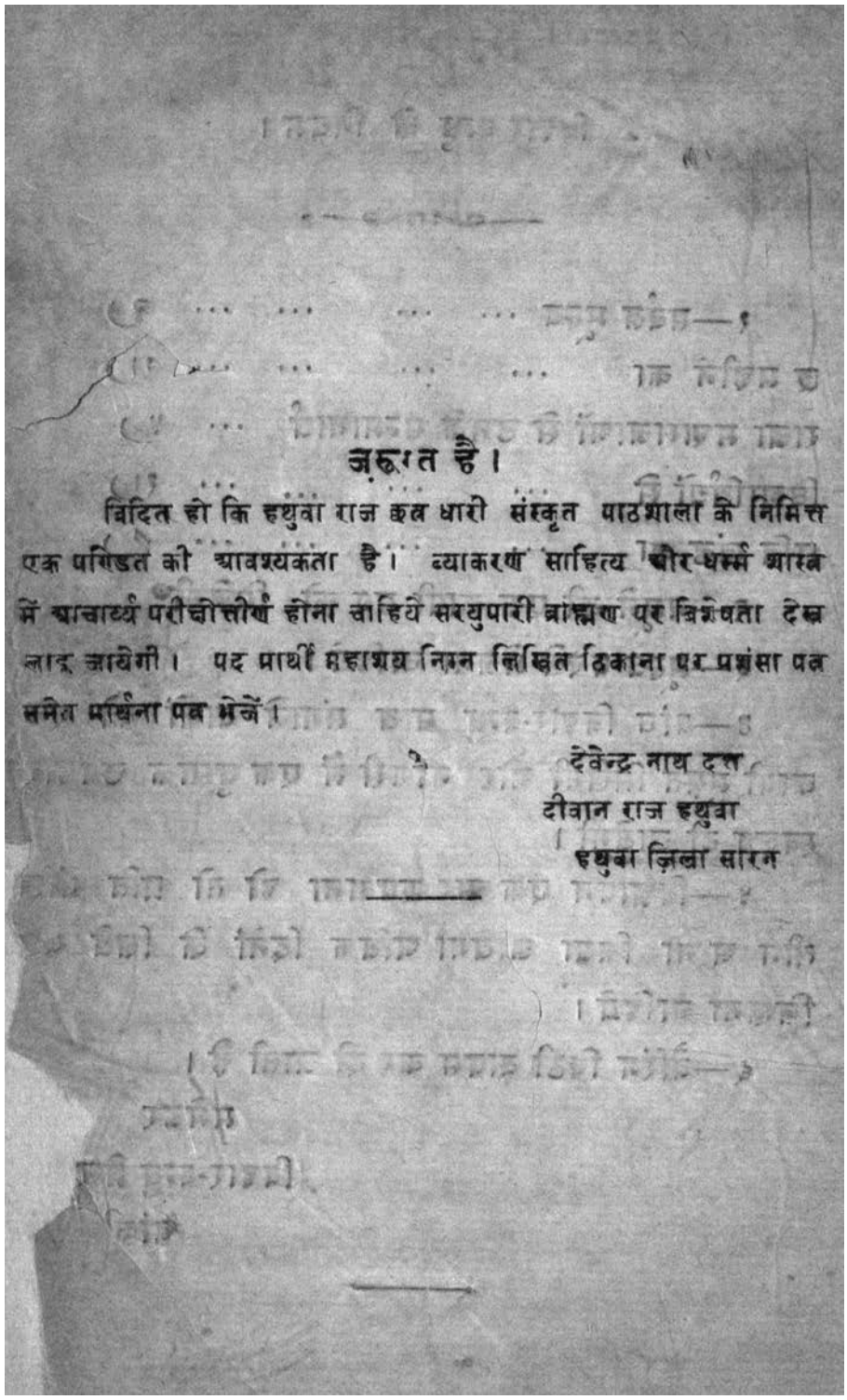
३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

५—विज्ञापन एक बार छपवाना हो तो प्रति पंक्ति तीन आना लिया जायेगा अधिक दिनों के लिये पत्र लिखना चाहिये।

६—बैरिंग चिठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर
बिहार-बन्धु प्रेस
बांकीपुर।



## ज़रूरत है।

विदित हो कि हथुवा राज कुल धारी संस्कृत पाठशाला के निमित्त एक पण्डित की आवश्यकता है। व्याकरण साहित्य और धर्म्म शास्त्र में आचार्य्य परीक्षोत्तीर्ण होना चाहिये सरयुपारी ब्राह्मण पर विशेषता देख लाद जायेगी। पद प्रार्थी महाशय निम्न लिखित ठिकाना पर प्रशंसा पत्र समेत प्रार्थना पत्र भेजें।

देवेन्द्र नाथ दत्त
दीवान राज हथुवा
हथुवा ज़िला सारन

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

MARCH 1895 VOL. XXIV—NO 3

मासिक पत्र।

मार्च १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर ३

१ दीन भारत।
२ डाक्टरी और ब्रह्मरेख।
३ दो देश की बातें।
४ अंगिरा संहिता।
५ कुण्डलिया।
६ अथार्य शास्त्रोक्त धर्म्म।
७ श्री पटना सुजन समाज।
८ डुमरांव।
९ समाचारावली।
१० सिराजुद्दौला।
११ शृंगार निर्णय।
१२ विज्ञापन।
१३ मनोहारिणी विद्या।




बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

# THE BEHAR-BANDHU

A MONTHLY HINDI JOURNAL

# बिहार-बन्धु।

नं० ३—मार्च १८९५।

---

## दीन भारत!

हमारे विदेशी महाराज की सहायता से विदेशी वणिक हमारे भारतवर्ष को दिन दिन दीन बनाते जाते हैं, किन्तु हमारे देशी भाई इस ओर कदापि ध्यान नहीं देते। असली बात तो यह है—उधर अंगरेज़ सौदागरों की बहकावट में फंसे तथा अपनी दशा को न बिचारने वाले कहते हैं, कि भारतवर्ष दिन दिन अमीर होता जाता है, और इसके प्रमाण देने में कहते हैं, कि पहले यहां इतना रुपया नहीं था, इतने लोगों को अमीर नहीं देखते थे, पर अब जिधर देखिये, उधर ही रुपये की चमक दीख पड़ती है, जिधर कान पसारिये, उधरही से रुपये की ठनक सुन पड़ती है, और जहां जाइये, वहीं घोड़े बग्गी चढ़ने वाले कीट पतलून पहिरे भले बाबुओं का दर्शन होता है। हमारे भूले देशबासी कहते हैं, कि यह सब पहले कहीं नहीं देखते थे, इस लिये पहले से भारतवर्ष अब अमीर हो गया है।

बैसाख—जेठ के असह्य आतप ताप से तपते हुए बालू की चमक बनवासी भोले मृगों को वैसे भारी भ्रम में नहीं डालती हैं, घर के भीतर जलती हुई बत्ती की स्वच्छ और निर्मल शोभा देख कर अबोध कीट पतंगों की उतनी शोचनीय भूल नहीं होती है, वास्तव में विदेशी चीजों की सुन्दरता, रुपये की चमक और घोड़े बग्गी की शोभा देखकर भारतवर्ष को अमीर कहने वाले हिन्दुस्थानियों को जो भ्रम होता है वह लहमे विषय भोग से चित्त हटाकर तथा क्षण भर प्रेमालाप की भूल

कर सदा के विषयी तथा लम्पट को भी अपने चित्त के कृत्रिम वैराग्य के विषय में वैसा धोखा नहीं होता।

अवश्य ही भारतवर्ष में अन्य देशों से कुछ सोना चांदी आता है और इस सोना चांदी की अशरफी और रुपया भी यहां बनता है, पर क्या विदेश से केवल थोड़ा सा सोना चांदी आने के कारण हम लोग अमीर हो गये? कदापि नहीं। सूक्ष्म भाव से विचार करने पर विदित हो जायगा, कि विदेश से इतना सोना और चांदी आने पर भी भारतवर्ष दिन दिन दीन होता जाता है।

घोड़ा, बग्गी, तथा चमकीले रुपये को देख कर जो महाशय अपने को तथा अपने देश को अमीर कहते हैं उन्हें ज़रा सोचना चाहिये कि उन घोड़े बग्गी आदि के प्राप्त करने में उनको कितना खर्च करना पड़ा है, और यदि उस घोड़े आदि के दाम से अधिक खर्च पड़ा है, तो घोड़ा आदि रख कर वह ग़रीब कहलावेंगे वा नहीं? जिस किसान के घर में कभी एक रुपया नहीं था, वह अगर २०० मन गेहूं वा धान देकर ५०) हासिल करें, तो वह ५०) रख कर ग़रीब कहावेगा वा नहीं, यदि आप के एक हाथ में हम ५) रख दें और आप के जेब से ५००) रुपये की घड़ी निकाल लें, तो आप रुपये वाले तो अवश्य ही जायेंगे, पर अमीर कभी नहीं कहलावेंगे। भारतवर्ष की यही दशा हो रही है! जितने रुपये के सोना, चांदी आदि पदार्थ यहां आते हैं उनसे कहीं अधिक रुपये का गेहूं चावल रूई इत्यादि देश से चली जाती हैं।

अंगरेज़ों के हिसाब से प्रतिसाल हमारी लगभग १५ करोड़ रुपये की हानि होती है! पर यदि सूक्ष्म भावसे विचारें, तो ५० करोड़ से कम की हानि नहीं होती है। जितनी चीज़ें जहाज़ों से उतरीं वा जहाज़ों पर लादी गईं, उनका दाम बांध कर अंगरेज़ी हिसाब किया जाता है। पर हमलोग यदि उन चीज़ों को बाज़ारों में देख कर हिसाब करें, तो मालूम हो जायेगा, कि हमलोगों की सचमुच कितनी हानि होती है। वास्तव में विदेशी आमदनी और रफ़्तनी दोनों ही से हमलोगों की महा हानि होती है।

यहां से चावल, गेहूं, नील, चमड़ा, अरसी, सरसों, चाय, बांगा इत्यादि चीज़ें भेजी जाती हैं। और विदेशों से लोहे की चीज़, सूती चीज़, खिलौने शराब, किरोसिन तेल, इत्यादि चीज़ें अधिक आती हैं। लोहे की चीज़ों में अधिकतर कल सब आती हैं, उनके स्वामी प्रायः अंगरेज़ ही हैं, देशियों को उनसे कुछ विशेष काम नहीं है। सूती कपड़ों के आने से हमारे देश के जुलाहे भूखों मरने लगे हैं। खिलौने दो चार दिन में टूट फूट जाते हैं, न किसी के काम के होते हैं और न रहते हैं। विलायती शराब विशेषतः अंगरेज़ों के ही काम की होती है, और यदि दो चार देशी भी उसे लेते हैं, तो उससे न उनकी, न उनके परिवार की और न उनके देश की भलाई होती है। इस लिये इन सब विदेशी चीज़ों के दाम को भी हमलोगों की हानियों के खाते में जोड़ लेना चाहिये। सो जितनी चीज़ें मंगाई जाती हैं, उनके देश में आने से देशवासी के भोजन में वज्र गिरता है और जितनी चीज़ें यहां से भेजी जाती हैं, उनके चले जाने से भी देशी लोग भूखों मरते हैं। इस कारण आमदनी तथा रफ़्तनी दोनों की चीज़ों का दाम हानि कारक ही हैं।

इसी सरकारी हिसाब के अनुसारही, हमारे देश की प्रतिसाल १५ करोड़ रुपये की हानि होती है; यदि उसमें उक्त शराब आदि विदेशी तथा हमारी हानिकारी चीज़ों का दाम भी जोड़ दें तो हम लोगों की वास्तविक हानि लगभग ५० करोड़ रुपये की मालूम होगी।

प्रतिवर्ष देश से ५० करोड़ रुपये की चीज़ निकलने पर यदि हमलोग दिन दिन भिखारियों की संख्या बढ़ते देखते हैं; प्रति वर्ष अकाल की खबर सुनते हैं, और सदा अनेक प्रकार का कष्ट भोगते रहते हैं, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हमारे देश हितैषी भाई यदि सभा कमेटी न किया करें, लम्बी चौड़ी वक्तृता न सुनाया करें, केवल अपने देश का वाणिज्य बढ़ाने की चेष्टा करें,—इन विदेशी चीज़ों का व्यवहार एक दम तज कर उनका देश में आना रोक दें और उक्त स्वदेशी लाभकारी चीज़ों का जाना बन्द कर के उन्हें अपने काम में लगाने का प्रबन्ध करें

तथा अपने देश की बनी हुई चीज़ें अन्य देशों में भेजने का यत्न करें तो देश की अधिक उन्नति होगी। यदि मातृ भूमि का कुछ भी प्रेम हो, यदि अपनी अवनति ना पसन्द हो, यदि इस जीविका की कठोर लड़ाई में जीना स्वीकार हो, तो इस विदेशीय लूट को रोकने का यत्न करना ही अत्यावश्यक है।

अम्बिका प्रसाद सिंह
मौज़े अफ़ज़र,

---

## डाक्टरी और ब्रह्म रेख।

डाक्टरी के विद्यार्थी जिन को हिन्दू धर्म्म में सहज प्रेम नहीं है, अथवा अनान्यमत वाले जब कपाल की हड्डी पढ़ते हैं तो उन को स्मरण हो आता है कि हमारे हिन्दू साथी लोग कहते हैं कि कपाल में ब्रह्मा का लिखा कुछ रहता है और तुरत अक्सीपल फ्रौण्टल इत्यादि हड्डियों में ब्रह्मा कि लीपि ढूढ़ने लगते हैं और नहीं पाकर कहते हैं कि क्या ही बेवकूफ हिन्दू जाति है कि जो कुछ उन के जंगली ऋषियों ने लिख दिया है उस को मानते हैं मैं तो कहीं नहीं ब्रह्म लेख देखता और दो चार कपाल जमा करके इस बात की निश्चय करने में त्रुटि नहीं करते और निदान निश्चय ही कर लेते हैं यह बात झूठी है और इस बात को सब से कहने लग जाते हैं।

जब डिसेक्शन आता है तो उन का ध्यान हिन्दू मत खण्डन ही की ओर रहता है और हार्ट का पार्ट डिसेक्ट करने के समय हार्ट को निकाल कर देखने लगते हैं कि यह कमल सा है वा नहीं! क्यों कि हिन्दू लोग इस को कमल सा बताते हैं और उस में फूल पत्ता इत्यादि ढूढ़ कर हैरान होते हैं और कहते हैं सब हिन्दू मूर्ख हैं।

पर हिन्दू धर्म्म को सत्यासत्य बताने में ज़रा माइण्ड में बल चाहिये, समय बहुत चाहिये, और न्याय चाहिये।

देह के सभी अंगों में कुछ न कुछ किसी प्रकार के चिन्ह पाये जाते हैं जिस्से पंडित लोग शुभाशुभ लक्षण बताते हैं। जैसे हाथ पैर

की रेखायें, नखों की उज्वलता वा ललाई, ललाट की उंचाई वा नीचाई कान और आखों की छोटाई बड़ाई इत्यादि देख कर पंडित लोग कह सकते हैं कि अमुक चिन्ह वाला पुरुष पापी वा पुण्यात्मा, धनी वा निर्धन, संतती वाला वा निसन्तान इत्यादि होगा। अब यहां सोचने की बात है कि ये बातें क्या उन के अंग में किसी भाषा में किसी अक्षर में लिखी रहती हैं कदापि नहीं! बल्कि ये सामुद्रिक शास्त्र की विद्या का बल है जिस विद्या का प्रचार अब जाता रहा अब तो केवल अंगरेज़ी ही अंगरेज़ी है जिस के पढ़ने से इन सब विद्याओं से स्नेह कम पड़कर उन में ऐब की बातें सूझने लगती है भाई ब्रह्मा किसी विशेष देश के वासी नहीं हैं किसी विशेष भाषा के पंडित नहीं हैं कि संस्कृत, लाटिन, ग्रीक अथवा अरबी की भाषा में नागरी अथवा अन्य किसी अक्षर में लिख दें। उन का कपाल ऊंचा कर देने ही के अर्थ सबड़ी पत्र पर, वरीनल लम्बडाएड सूचरी के हेर फेर ही हज़ारों पत्र पर और ब्रेन के उठाव दबावही के अर्थ लाखों पत्र पर लिखे जा सकते हैं इस लिये ब्रह्म रेखा ठीक है और हिन्दू सत्य हैं और उन के धर्म्म की सत्यता में न्यूनता नहीं है उन के ऋषियों ने जो कुछ लिखा है सो सब ठीक है।

अब रह गई हार्ट (हृदय) की बात तो मैं ने स्वयं हार्ट को पार्ट डिसेक्ट करके देखा है यह प्रायः कमल सा होता है। कोमल भी वैसा ही है इस की डंटी भी एवार्ट पलमोनरी वेन आर्टरी इत्यादि है और पत्ती भी देखे जा सकते हैं पर उस की दीखाने वाला कोई योगी होना चाहिये एम, डी, अथवा एल्, एम्, एस से नहीं हो सकता है जो कहिये कि ठीक कमल सा नहीं है तो एनाटोमी में बहुतेरे ऐसे पदार्थ हैं जिन का नाम किसी पदार्थ सा होने से वैसा ही रक्खा गया है जैसे थ्रथमाएड का अर्थ चलनी होने पर चलनी सा नहीं, स्कैमसपीर्शन का अर्थ मछली का छिलका होने पर भी वैसा नहीं, पीट्रसपीर्शन, पत्थर के अर्थ में होने पर भी पत्थर सा नहीं वीमर हल का अर्थ देने पर भी फारपरिहथ रहित मेन्युब्रियम, तलवार के मूठ सा नहीं, ग्लेडायलस, तलवार सा नहीं क्रोकाएड प्रासेस ठीक कौए के चोंच सा नहीं रटीलेट लिगामेंट सूर्य्य के

किरण सा नहीं, सोलियसमरल सील मछली सा ठीक प्रतीत नहीं होता और ऐसे हज़ारों उदाहरण दिये जा सकते हैं इस लिये हिन्दुओं को झूठ मत कहिये उन के धर्म्म को अपने कलुषित दृष्टि से देख कर कलुषित मत कहिये।

सरस्वती दत्त मिश्र
पटना टेम्प्ल मेडिकल स्कूल।

---

## दो देश की बातें।

( नागरी नीरद )

'समय परे की बात बाज पर झपटत बगुला'

( चीन पिनक लेता और जापान आता है। )

जा।—( चीन के सिर में एक थीपी मार कर ) अजी बाबा जी सलाम !

ची।—( पिनक से जागकर ) अबे क्यों तंग करता है, नाहक ?

जा।—अजी अभी क्या तंग किया, अभी तो कुछ थोड़ा ही सा—

ची।—अबे ज़रा शेखी तो न बघार ! शुक्र कर खुदा का, कि—"अन्धे के हाथ बटेर लग गई।" इसे कुछ कम ग़नीमत मत समझ।

जा।—( हंस कर ) वाह ! यह अच्छी कही ! अजी मियां तुमारी बुद्धि तो मारी ही गई है, पर क्या किये के रंग ऊपर की भी फूट गई है जो इतने निकट भी नहीं सुझाई देता ! अरे कहां तो कोरिया के अधिकार के मनसूबे थे। अब मञ्चूरिया पोर्ट अर्थर, फ़ंगहुँग, और कैहवे में भी आप के दांत तोड़ डाले तो भी अभी—"अन्धे ही के हाथ बटेर लगी ?"

ची।—( फिर पिनक में झूमता है। )

जा।—( गाल पर एक तमाचा मार कर ) ए बड़े मियां ?

ची।—अबे कुछ दीवाना तो नहीं हो गया है ? बेअदब नामाकूल !

जा।—जी अभी तो मुझे बहुत कुछ बेअदबी करना है, आप अभी से घबराये जाते हैं ?

ची।—घबराने की तो बात ही है, जब कि कोई बेअक्ल खुद अपने बुज़ुर्ग से बेअदबी करे, और उसके दर्गुज़र पर और भी शोख होता जाय !

जा।—हां २ आप अब तक अपनी को मालिक और मुझे गुलाम समझते, और दर्गुज़र कर रहे हैं? तो धन्य हैं! अच्छा इसी भांति थोड़े दिन और दर्गुज़र कीजिये, बस फिर बड़े और छोटे का भ्रम दूर हो जाता है।

ची।—(फिर पिनक लेता है।)

जा।—(चीन की नाक ज़ोर से ऐंठ कर) अजी बड़े मियां, तनिक सावधान हूजिये नहीं तो बस मूछें उखाड़ी लूंगा।

ची।—अरे, रे, रे, रे मर नालायक कहीं के! तू तो बहुत ही शरारत पर आमादा हो गया है। क्या सचमुच शामतही आ गई है?

जा।—शामत न आती तो मुझ से क्यों छेड़ होती!

ची।—अबे लड़ता न तो क्या करता, जब कोई खाहमखाह तकरार पर आमादा हो?

जा।—हां, परन्तु यदि सामर्थ्य ही तब न? यों बैठे बैठाये सिर-गंजा करा डालने से क्या लाभ? और तुमने तो मियां व्यर्थ अफ़ीम के झोंके में मार २ चिल्लाकर मार खाई है? नहीं तो कोरिया देश से तुम्हें भला क्या सम्बन्ध था?

ची।—भला! हमी से वास्ता न था? खैर! कोरिया गया भाड़ में, उसे तू ही ले जा! जो तू कहता है वही सही!

जा।—अबे कोरिया २ क्या चिल्लाता है? वह तो हमारा हुई है, हम ने लेई लिया है; अब तू अपनी कह?

ची।—बचा ज़रा होश की दवा करो, मुझे तुम जानते भी हो कि मैं कौन हूं?

जा।—अरे मैं तुझे जानता न होता, तो इस भांति क्यों तेरी नाक मरोड़ने पर उद्यत हो जाता? हां तू अवश्य मुझे नहीं जानता था, परन्तु क्या अब भी मेरा यथार्थ रूप नहीं सूझता, कि जो काल के बश अण्ड ही बण्ड बक रहा है।

ची।—अबे इतना अज़खुद रफ़्ता हो कर क्यों बक रहा है? बहुत शेखी मत बघार! ज़रा अपनी आपे में आ जा।

जा।—अजी मियां, बिल्ली जब सिंह की आखें भी निकाल कर शेखी न करेगी, तो फिर क्या तू इस व्यर्थ के बड़े डील डौल वाला, कि जो भय के मारे भगा जा रहा है।

ची।—अबे पाजी ज़बान संभाल के बोल! (क्रुद्धित हो एक तमाचा मारता है।)

जा।—हां २! अच्छा तो लेव ससुर जी! [दोनों गालों में दो डुच्च (अंगरेज़ी चाल का घूंसा) मारता है।]

ची।—(गालों पर दोनों हाथ रख कर) ऊः २ अरररेरे! दौड़ो भाइयो! अरे अमेरिका! अरे रूस! अरे फ्रांस! अरे इंग्लैण्ड! दौड़ो! २ दौड़ते जाओ! मेरी सहायता करते जाओ! तुम लोग जो कहोगे मैं वही कबूल करूंगा!

जा।—(चीन की दोनों ओर की मूंछें दोनों हाथों से पकड़ कर) अरे उल्लू के पट्ठे वे होते कौन हैं जो इस बीच में बोलेंगे। और ले अब तेरा नाश ही करते छोड़ता हूं।

ची।—अच्छा भाई क्षमा करो। जो हुआ, सो हुआ।

जा।—अच्छा! २ (मूंछों को दोनों ओर से तानता है।)

ची।—अरेरेरे! भाई अब छोड़ दो। क्या कहते हो? क्या चाहते हो?

जा।—नहीं! अभी कहने सुनने का समय नहीं है।

ची।—फिर कब?

जा।—जब मौकडेन ओर पेकिन स्वरूप तेरी दोनों मूंछें उखाड़ लूंगा, तब।

ची।—अरे ऐसी बातें मुंह से मत निकाल कि जो खुदा से भी न सुनी जायें।

जा।—अरे मूर्ख बह क्या प्रलाप करता है, हां! वह तेरी दुर्व्यसनशीलता विषयान्धता, कामीपभोगिता, और कदर्यता अवश्य उस असह्य हुई, कि उसने मेरे द्वारा तेरा गर्व ध्वंस किया। और मैं तो सब उसकी कहाई बातें कहता हूं।

ची।—अच्छा देखो! वह अमेरिका क्या कह रहा है!

जा।—अबे यूरप और अमेरिका क्या कहेंगे, और फिर उनकी सुनता कौन है? तुझे जो कहना हो सो कह! पर मूछें उखाड़ लेने दे, तब।

ची।—अरे इससे तुझे क्या फ़ायदा होगा!

जा।—क्या फ़ायदा होगा? अरे अभी तक लाभ क्या हुआ है? इतने परिश्रम का इतना भी तो फल हो, कि इन दोनों में भरी असंख्य धन सम्पत्ति का कुछ भाग भी तो हाथ लगे! फिर तेरा यह गर्व ध्वंस हो जाय तो इससे अधिक लाभ क्या होगा?

ची।—अरे यार यों बहक बहक कर बातें न करो! बुरे दिन सभी पर आते हैं! किसी मुसीबतज़दा पर यों चुटकियां लेनी ठीक नहीं! किसी हिन्दी शायर का क़ौल है, कि—"जो कोऊ रोवै तो वा पैं न हंस रे।"

जा।—खैर जो रोना स्वीकार कर लिया तो अब हार मान कर—जो जो हम कहें स्वीकार करता चल। और अब से मेरा दास बन।

ची।—सुनो कुछ दिल में तर्स खाओ, और रहम लाओ और बातें ऐसी कहो कि जो मानी जा सकें।

जा।—तभी न कहते हैं कि अभी तेरी बुद्धि ठीक नहीं हुई।

ची।—क्यों?

जा।—यों कि जब तक ये तेरी मूछें न उखड़ जायेंगी, बुद्धि ठीक न होगी। और शुद्ध तो तभी होगी कि जब तेरा पूरा नाश हो जाय।

ची।—हां जब मूछें उखड़ीं, तब बाकी ही क्या रहेगा, मगर याद रख कि मेरी तबाही और बर्बादी के साथ ही साथ, न सिर्फ़ तेरीही बर्बादी होती है; बल्कि कुल एशिया का चिराग़ गुल समझ लेना।

जा।—यह क्यों?२

ची।—इसलिये कि तू फ़तह करके भी मेरे कुल मुल्क पर तो हर्गिज़ बादशाहत करनेहीं न पायेगा, बल्कि यह जो बादशाहानि युरप वग़ैरह अभी टूर टूर फिर रहे हैं, या धमकेंगे; और तमाचे मार मार

कर तुझ से सब मुल्क बांट लेंगे! और फिर ऐसी ऐसी हिकमत अमली की कार्रवइयां करेंगे कि तुझे अपने घर में भी भागना पड़ेगा। और एक दिन वह आवेगा कि इस दुनियां पर सिवा ईसाइयों के दूसरी कौम न रह जायगी।

जा।—अरे यह भय औरों को दिखा, तू तातारी म्लेच्छवंसी है, तू डर। हम लोग सूर्यवंसी क्षत्रियों के बंस हैं, ऐसी बातों से नहीं डरते "एक बार कालहु सन लरहीं।" और युरप वाले तो मनुष्य ही हैं, उनसे जब आपड़ेगी तो हम देख लेंगे, अभी तू अपनी तो कह।

ची।—ये खुदा क्या तुझे सचमुच दुनियां में ईसाइयों ही की सलतनत मंजूर है? [ जापान से ] अच्छा फिर ज़रा कान इधर ला तो कहें।

[ दोनों की कान में बातें। ]

---

[ शीतलपुर सारन निवासी पांडेय दामोदर सहाय सिंह बिरचित ]

## ( कविबर बिहारी के दोहों पर कुण्डलिया )

बिहंसति सकुचति सी दिये, कुच आंचर बिच बांह ।
भीजे पट घर को चली, न्हाय सरोबर मांह ॥
न्हाय सरोवर माहि सकल निज अंग बटोरे ।
थापति चरण निशान देत पग मारग कोरे ॥
निदरति सी निज चाल कीर बरन हंसन की गति ।
दामोदर इमि जाति मनहिमन बिहंसति सकुचति ॥ १ ॥

छला छबीले लाल को, नवल नेह लहि नारि ।
चाटत चूमत लाइ उर, पहिरति धरति उतारि ॥
पहिरति धरति उतारि ताहि पुनि पहिरि उतारै ।
लखि लखि बारहिं बार प्राण तन मन धन बारै ॥
दामोदर हिय लाइ कबौं कह न रसीले ।
पति सुख यों अनुभवति बाम लखि छला छबीले ॥ २ ॥

लाज लगाम न मानही, नैना मो बस नाहिं ।
ये मुहजोर तुरंगलौं, ऐंचत हूं चलि जाहिं ॥
ऐंचत हूं चलि जाहिं रहैं नहिं तनिक सम्हारे ।
थाके बहु उद्योग बहुत उपचारउ हारे ॥
दामोदर कछु सुनै नाहि सखियान सिखावन ।
तजि गुरुजन भय लाज निदर ये लाज लगामन ॥ ३ ॥

थोरेई गुण रीझते, बिसराई वह बानि ।
तुमहूं कान्ह भये मनो, आज कालिह के दानि ॥
आज कालिह के दानि होइ सनमान गवायी ।

दीनबन्धु करुणा समुद्र के नाम मिटायो ॥
दामोदर उपहास भई निजगुण जे छोरे।
करी बहुत की खोज आजु रीझत गुण थोरे ॥ ४ ॥

## ( समस्या—पूर्त्ति )

समस्या—" शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग कब "।

### ( कुप्पय )

दिन कर पश्चिम उग्यो चन्द्र बिष राशि चुआई।
अमिय पियत ही मृत्यु निकट तुरतहि चलि आई ॥
नखत लख्यो दिन माहिं नैन बृश्चिक के देख्यो।
पत्थर हूं की नाव तरत जल माहिं परेख्यो ॥
दामोदर पूर्वोक्त सब बस्तु भये बिपरीत जब।
शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग तब ॥ १ ॥

जब पूजन कुड़वाइ इन्द्र पर्बत पुजवायो।
तब बासव श्री कृष्णचन्द्र पै अमित रिसायो ॥
दै अनुशासन मेघ महा जल प्रलय करायो।
धरि गोबर्द्धन नख गुपाल गोपाल बचायो ॥
दामोदर तब कहत अस समुझि सुनत अचरज लहब।
शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग तब ॥ २ ॥

लिखत हस्त थिरात लेखनी कंपत पलहिं पल।
हृदय टूक ह्वै जात याद करि दृश्य जलहिं जल ॥
कतहुं न थल की नाम अकंटक राज्य तीय कै।
कहिय प्रलय केहि कहिय सबै इक चित्त होय कै ॥
दामोदर कह सुनहु अस भयउ सृष्टि की हाल जब।
शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग तब ॥ ३ ॥

* कृष्ण बरण सुख धाम पीत पट सुघर सुछाजित।
शैल नील मणि सान बिटप शिर मुकुट बिराजित॥
तापै पंख मयूर जासु में चित्र नैन के।
लखत चित्त अस कहइ अब शिये मीन मैन के॥
दामोदर तब कहत अस भयउ निम्न रूपक सुढब।
शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग तब॥ ४॥

* मकरध्वज लै चढ़यो बिटप बट पुष्प चाप सर।
जेहि तरु हर कैलास बैठि मृग चर्म्म ध्यान धर॥
फुल्यो सुमन नव पर्ण द्रुमन निकसे नवांकुरित।
गो ऋतु राज बिराज काम बश भये जीव जित॥
मकराकृत कुंडल उपरि दामोदर अध पत्र जब।
शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग तब॥ ५॥

करि सागर जब कोप सकल पृथिवी तल तीपे।
नगर बाग बन बिटप सरित पर्वत सर लोपे॥
बचेउ नाहि कोउ शैल शिखर जहं रह्यो न पानी।
बिकल सकल जग जन्तु पंख युत उड़े जे प्रानी॥
कह दामोदर यह धरा भई बारिमय दृश्य जब।
शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग तब॥ ६॥

अतिशय बुद्धि बिहीन कहा निज कहौं बिनाई।
सत्संगति नहीं करी आयु इह व्यर्थ गंवाई॥

---

| * | (४) | (५) |
|---|---|---|
| (१) शैल — | श्याम शरीर ... | हिमालय |
| (२) शृंग — | शिर ... ... | कैलास |
| (३) द्रुम — | मुकुट ... ... | बट |
| (४) पत्र — | मयूर पँख ... | बट पत्र |
| (५) मीन — | मीनाकार चित्र ... | मकराकृत कुण्डल |

कवित दोष गुण विविध भांति जानत नहिं सोच ॥
कहत प्रचारि प्रचारि जानि लीजै सब कीज।
कहहु काहि विधि पूर्त्ति तब दामोदर कह हम करब।
"शैल शृंग द्रुम पत्र पै मीन कीन रति रंग कब" ॥ ७ ॥

( परज कलिंगड़ा )

रसना कसना शिव नाम लेत। अघराशि अमंगल नाश हेत ॥ टेक ॥
कलि में भवरुज भेषज अनूप, मंगल बिनोद कल्याण रूप।
अवगुण करिबर मृग निकर भूप, सब कपट छाड़ श्रद्धा समेत ॥ रसना०
अज्ञान उरग हित पन्नगारि, बरदायक जनु दूसर पुरारि।
पावन कर सुरसरि बिमल बारि, भ्रम रिपुदल नाशक समर खेत ॥ रसना०
अघ गहन दहन बन अनल धीर, जन चातक स्वाती जल अधीर।
दामोदर हिमकर पुनि चकोर, रघुपति उर सरबर हंस स्वेत ॥
रसना कसना शिव नाम लेत। अघराशि अमंगल नाश हेत ॥

इति।

---

## अथार्य्य शास्त्रोक्त धर्म्म।

धर्म्मे विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा धर्म्मेण पापम् नुदंति धर्म्मिष्टं प्रजा उपसर्प्पंति धर्म्मे सर्वं प्रतिष्ठितम् तस्माद्धर्म्मं परमं वदन्ति। इति श्रुतिः।

भा०—यह निखिल संसार धर्म ही के आश्रित है, धर्म ही से अधर्म अर्थात पाप का बिनाश होता है, प्रजा गण धर्मात्मा ही के शरणागत होती है, धर्मही से समस्त पदार्थों की प्रतिष्ठा है, अतएव धर्म ही सर्व श्रेष्ठ और अति उत्तम है।

महाभारत में धर्म का लक्षण यों लिखा है:—

धर्म्मं यो बाधते धर्म्मो नस धर्म्मः कुधर्म्म तत्।
अविरोधातु यो धर्म्मः स धर्म्मः सत्य विक्रमः।

भा०—जो धर्म धर्मान्तर का बिरोधी अर्थात औरों और धर्मों की निन्दा करता है वह धर्म नहीं है, उसको कुधर्म जानना चाहिये, और जो

धर्म दूसरे धर्मों का विरोधी नहीं है अर्थात अन्यान्य धर्मों की निन्दा नहीं करता है वही यथार्थ और प्रकृत धर्म है।

भावार्थ।

एक पुरुष के सैंकड़ों सन्तान हैं वे सन्तान गण परस्पर जैसा वैर विरोध रखते हैं, वह पितृ पुरुष उन लोगों से नहीं रखता, कोई कोई कुलांगार सन्तान ऐसी भी होते हैं जो अपने पितृ की भी निन्दा करते हैं परन्तु पितृ अपने सन्तानों की निन्दा नहीं करता, इसी प्रकार आर्य्य सनातन धर्म जो सब धर्मों का जनक अर्थात जिससे संसार के सब धर्म निकले हैं, किसी धर्म से विरोध नहीं रखता और न किसी की निन्दा करता। जितने आधुनिक धर्म हैं वे परस्पर एक दूसरे की निन्दा किया करते हैं परन्तु आर्य सनातन धर्म किसी धर्म की निन्दा नहीं करता, सन्तान की निन्दा क्या?—

अद्रोह सर्व भूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहं च दानं च सतां धर्म्मः सनातनः।

भा०—मन, वाक्य और कर्म से किसी का अनिष्ट नहीं करना, सब जीवों के प्रति सद्व्यवहार करना और दान येही साधुओं के सनातन धर्म हैं। मत्स्य पुराण में सनातन धर्म के मूल लक्षण यों लिखे हैं:—

अद्रोह श्चाप्य लोभश्च दमो भूत दया तपः ब्रह्मचर्य्यं ततः सत्यमनुक्रोशः क्षमा धृतिः सनातनस्य धर्म्मस्य मूल मेतद् प्रकाशदम्।

भा०—द्रोह नहीं करना, निर्लोभ रहना, मन को वश में रखना, सब जीवों के प्रति दया, तपस्या, ब्रह्मचर्य्य, सत्य, अनुक्रोश, क्षमा और धृति, येही दश सनातन धर्म के मूल हैं।

पद्म पुराण में धर्म्म के अंग यों लिखे हैं।

ब्रह्मचर्य्येण सत्येन तपसा च प्रवर्त्तते। दानेन नियमेनापि क्षमा शौचेन वत्सव ॥ १ ॥ अहिंसया सुशान्त्याच अस्तेयेनापि वर्त्तते। एतैर्दशभिरंगैस्तु धर्म्ममेव प्रवृद्धयेत् ॥ २ ॥

भा० ब्रह्मचर्य्य, सत्य, तपस्या, दान, नियम, क्षमा, शौच, अहिंसा, शान्ति और अस्तेय, ये ही दश धर्म्मांङ्गों से धर्म्म की वृद्धि होती है।

पूज्यवर मनु ने धर्म्म का लक्षण यों लिखा है:—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकंधर्म्म लक्षणम्॥

भा०—धृति अर्थात् संतोष, क्षमा, दम अर्थात मन को बश में रखना, अस्तेय अर्थात चोरी न करना, शौच अर्थात पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध ये ही धर्म्म के दश लक्षण हैं॥

गोन्दू झा

पटना सुजन समाज

---

## श्री पटना सुजन समाज।

१७ वीं मार्च दिन एतवार को सुर्तुजिगंज में पटना सुजन समाज की ओर से सनातन धर्म्म पर व्याख्या हुई थी, श्रोता लगभग सौ के उपस्थित थे व्याख्या के शेष होने पर श्रोताओं ने अपनी प्रसन्नता प्रगट की और उक्त समाज के उन सभासदों से जो वहां उपस्थित थे दूसरे एतवार को फिर व्याख्या होने के लिये प्रार्थना की, समाज की ओर से कहा गया कि "आप लोगों की यदि ऐसी श्रद्धा है तो अबकी एतवार को तो नहीं, समय मिलने से और किसी एतवार को यहां फिर व्याख्या होगी।

२४ वीं मार्च दिन एतवार को इस नगर के सुप्रसिद्ध विद्यालय बिहार नैशनल कौलेज में पटना सुजन समाज की ओर से मानव धर्म्म के विषय में व्याख्या हुई थी, व्याख्या के समय उक्त कौलेज और गवर्नमेन्ट कौलेज के श्री मान संस्कृत प्रोफेसर लोग भी उपस्थित थे, श्रोताओं से कमरा भर गया था। चार बजे से छ बजे तक व्याख्या हुई, समयाभाव के कारण धर्म्म के छ ही अंग कहे गये, अवशिष्ट चार दूसरी व्याख्या में कहे जायेंगे। व्याख्या के अंत में श्रोताओं ने प्रसन्नता प्रगट की; और हिन्दू बोयज़ ऐसोसिएशन के सभासदों ने अनुमोदन किया। श्रोताओं के प्रार्थनानुसार उक्त विद्यालय में फिर व्याख्या होगी।

## सूचना।

आर्य्य सनातन धर्म्मावलम्बी सज्जन महाशयों की सूचना दी जाती है कि पटना सुजन समाज ने अब से सुफस्सिल में भी घूम २ कर व्याख्या करने का प्रस्ताव किया है अतएव जिस धर्म्म सभा की इच्छा अपने यहां व्याख्या कराने की हो कृपा कर हमारे पास लिखें। इति शुभम्।

पं० नारायण प्रसाद शर्म्मा सेक्रेटेरी

३० मार्च १८८५ पटना सुजन समाज

आलम गंज, पटना॥

---

## डुमरांव।

हाल ही कलकत्ते के कैम्बेल हस्पताल में हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों के लिये बोर्डिंग हाउस बननेवाला है उसकी सहायतार्थ महारानी डुमरांव ने २०००) रुपये प्रदान किये हैं। निस्सन्देह विद्यार्थी गण इनको अन्तरिक आशीर्बाद देंगे।

## प्रोग्राम।

आनरेबुल राय जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आई० ई० दीवान डुमरांव के जेष्ट पुत्र बाबू हरिहर प्रसाद जी के बिवाह का प्रोग्राम।

१ बैशाख कृष्ण ३ वार शुक्र सम्वत १९५२ आठ बजे रात के बाद कलसस्थापन।

२ बैशाख कृष्ण ४ वार शनि मातृ पूजा।

३ बैसाख कृष्ण ५ वार रवि-बारह बजे दिन में परछावन तथा बारात कूच।

४ बैशाख कृष्ण ६ वार सीमार स्थान उसका ज़िला बस्ती में मकाम।

५ बैशाख कृष्ण ७ वार मंगल शाम ५ बजे बांसी में पहुंच कर दरवाज़े लगना तथा समग्रात व्यतीत होने पर उसी दिनकी रात के सवेरे ४ बजके ३८ मिनट पर मीन लग्न में बिवाह।

६ बैसाख कृष्ण ८ वार बुध तथा बीफे दो रोज़ बारात का मकाम बांसी में।

७ बैशाख कृष्ण १० वार शुक्र बरात कूच डुमरांव की।

८ बैशाख कृष्ण ११ वार शनि तथा रवि मोकाम रास्ता में।

९ बैशाख कृष्ण १३ वार सीमार डुमरांव में पहुंच कर दस बजे दिन के भीतर गृहिप्रवेश।

---

## समाचारावली।

बर्लिन की घोड़ा गाड़ियों में बड़ी ही आश्चर्य दायिनी कलें रहती हैं। उस कल के द्वारा यात्रियों को भाड़े का लेखा मालूम हो जाता है और गाड़ी के मालिक को यह ज्ञात हो जाता है कि उस गाड़ी द्वारा एक दिन में कितने यात्रियों ने यात्रा की है। अतः उस कल के होने से न तो यात्री और गाड़ी हांकने वाले ही के परस्पर में और न गाड़ी हांकने वाले और गाड़ी के मालिक के परस्पर में किसी प्रकार से भाड़े के निमित्त बखेड़ा उठ सकता है।

प्राचीन महाराष्ट्र देशीय लोग बाघ नख नामक हथियार को काम में लाते थे। उक्त हथियार हाथ की अंगुलियों में पहिना जाता था। मिस्टर इगर्टन कहते हैं कि शिवा जीने अफ़ज़ल खां को बाघनख ही नामक हथियार से जान से मार डाला था।

पैरिस के पशुशाला के बन्दरों को चन्द लड़कों ने चुरूट जलाकर दे दिया। कहते हैं कि उन बन्दरों ने उस चुरूट को बड़े मज़े में पीलिया।

## औपयोगिक।

डाक्टर अमृत लाल कबिराज सी, आई, ई, लिखते हैं कि यदि केले के पक्के फल को तीन भाग में बिभाजित करके सिंह के चमड़े को एक एक रत्ती एक एक टुकड़े में रख कर जिसे कुत्ता काटे हो उसे तीन तीन घण्टे के पश्चात खिलाये तो विष दूर हो जाता है।

चेहरे पर के दागों को दूर करने के लिये निम्न लिखित औषधि उपयोगी होगी, नीबू का रस १ औन्स सुहागा पाव ड्राम चीनी आधा ड्राम तीनों बस्तुओं को मिलाकर कुछ दिनों तक एक बीतल में रख छोड़े फिर उस को अपने चेहरे पर मला करें तो थोड़े ही दिनों में दाग दूर हो जायेंगे।

जीने संग सखियां। भाग भरी भामिनी सोहाग भरी सारी सुही मांग भरी मोती अनुराग भरी अंखियां ॥२५२॥

सुकुमारता यथा सवैया।

घांघरो झीन सो सारी महीन सो पीन नितंबनि भार उठ्यो खचि। दास सुबास सिंगार सिंगारति बोझनि ऊपर बोझ उठै मचि॥ स्वेद चलै मुख चंदनि च्वै डग द्वैक धरै मचि फूलनि सो सचि। जात है पंकज वारि बयारि सो वा सुकुमारि को लंक लला लचि॥ २५३॥

बिलास हाव ल० दोहा।

बोलनि हंसनि बिलोकिवो, और भृकुटि को भाव।
क्यों हूं चकित सुभाव जहं, सो बिलास है हाव॥२५४॥

यथा कवित्त।

आदरस आगे धरि आंगन में बठी बाल इन्दु से बदन को बनाव दरसति है। भौंहन मरोरि मोरि अधर सकोरि नाक अलक सुधारति कपोल परसति है॥ सखी व्यंग्य बोली को उठावति बिहंसि कंज चोली तर सुखमा अमोली सरसति है। खुलित पयोधर प्रकास बस दास नन्द नन्द जू के नैननि अनंद बरसति है॥ २५५॥

किल किंचित हाव दोहा।

हर्ष बिषाद अमादि जो, हिये होत बहु भाव।
भाव सबल शृंगार को, सो किल किंचित हाव॥२५६॥

यथा कवित्त।

कान्हर कटाच्छन की जाय झरि लाई बाल बैठी ही जहांई वृषभान महारानी है। दास दृग साधन की पूतरी लौं आरि दृग पूतरी घुमरि बाही ओर ठहरानी है॥

केती अनाकनी कै जंभानी अंगिरानी पै न अंतर को पीर वहरूपै बहरानी है। थकी थहरानी छबि छकी छहरानी धक धकी घहरानी जिमिलकी लहरानी है ॥ २५७ ॥

चकित हाव यथा सवैया।

आज को कौतुक देखिवे को हों कहा कहिये सजनी तू कहा रही। कैसी महाछबि छाय अनेक छबीली छकाय हिते अहितै रही। ओट तें चोट बिरी करी पीय की बार सुधारत बैठी जितै रही ॥ चंचल चारु दृगंचल कै तब चंद मुखी चहुंओर चितै रही ॥ २५८ ॥

बिहित हाव ल० दोहा।

हिलि मिलि सकै न लाज बस, जिये भरी अभिलाख।
ललचावै मन दै मनहिं, बिहित हाव ज्यों दाख ॥२५९॥

यथा कवित्त।

प्यारे केलि मंदिर तें करत इसारो उत जाइवे को प्यारी हू के मन अभिलाख्यो है। दास गुरुजन पास बासर प्रकास ते न धीरज न जात क्यों हूं लाज उर नाख्यो है ॥ नैन ललचौंहैं पै न क्योंहूं निरखत बनै ओठ फरकोहैं पै न जात कछु भाख्यो है। काजन के बाज बाही देहरी के सामुहें ह्वै सामुहें के भौन आवा गौन करि राख्यो है ॥ २६० ॥

बिच्छित्त हाव ल० दोहा।

बिन भूखन कै थोरही, भूखन छबि सरसाय।
क कार हाव बिच्छित्त हैं, जे प्रवीन कबिराय ॥ २६१ ॥

यथा कवित्त।

काहे को कपोलनि कलित कै देखावती है मकलि

का पवन की अमल हथौटि है। आभरन जाल सब अंगन संवारि कै अनंग की अनीसी कत राखति अगोटि है॥ दास भनि काहे को अन्यास दरसावती भयावनी भुअंगिनि सी बेनी लौटि लौटि है। हम ऐसो आसिक अनेकन के मारिवे को कौल नैनी केवल कटाच्छ तेरी कोटि है॥ २६२॥

फेरि फेरि हेरि हेरि करि करि अभिलाख लाख लाख उपमा बिचारत है कहने। बिधिहि मनावैं जो घनेरे दृग पावैं तौ चहत याही संतत निहारतही रहने॥ निमिखि निमिखि दास रीझत निहाल होत लूटे लेत मानो लाख कोटिन के लहने। एरी बाल तेरे भाल चंदन की लेप आगे लोपि जात और के हजारन के गहने॥ २६३॥

मोट्टाइत हाव लं० दोहा।

अनचाही बाहिर प्रगट, मन मिलाप की बात।
मोट्टाइत तासो कहैं, प्रेम उदीपति बात॥ २६४॥

यथा सवैया।

पिय प्रात कृया करै आंगन मैं तिय बैठी सुजेठिन के थल मै। सुख की सुधि तें उमहै अंसुवा बहरावै जंभाइन के छल मै॥ न अघानी जऊ सिगरी निसि दास जू काम कलानि कियो कल मै। अंखियां झखियां ललकैं फिरि बूड़वे को हरि की छबि के जल मै॥ २६५॥

मोहि न देखो अकेलियै दास जू घाटहू बाटहू लोग भरे सो। बोलि उठौनी बरै ते लै नाम तो लागि है आपनी दाउ अनैसो॥ कान्ह कुबानि संभारे रहो निज

वैसी न हौं तुम चाहत जैसो। ऐबो इतै करौ लेन दही को चले वो कहीं को कहीं कर कैसो॥ २६६॥

कुट्टमित ल० दोहा।

केलि कलह को कहत हैं, हाव कुट्टमित मित्त।
ककु दुख लै सुख सो सन्यो, जहं नायक को चित्त २६७

यथा सवैया।

रूखी ह्वै जैबो पियूख बगारिबो बंक बिलोकिबो आदरिबो है। सौंहें दिखायबो गारी सुनायबो प्रेम प्रसंसनि उच्चरिबो है॥ लातन मारिबो झारिबो बांह निसंक ह्वै अंकनि को भरिबो है। दास नवेली को केलि समै में नहीं नहीं कीबो इहा करिबो है॥ २६८॥

बिब्बोक हाव ल० दोहा।

जहं पीतम को करति है, कपट अनादर बाल।
ककु इरिखा ककु मद लिये, सो बिब्बोक रसाल॥२६९॥

यथा सवैया।

मान कै बैठी सखीन के सम्मत बूझिबे को पिय प्रेम प्रभाइन। दास दसा सुनि द्वार तें पीतम आतुर आयो भस्यो दुचिताइन॥ बूझि रह्यो पै न हेत लह्यो कहूं अंत कहा कै गह्यो तिय पाइन। आली लखै बिन कौड़ी को कौतुक ठोढ़ी गहे बिहंसै ठकुराइन॥ २७०॥

देखती हौ इहि ढोठे अहीर को कैसेधौं भीतरी आवन पायो। दास अधीन ह्वै कीनो सलाम न दूरितें दीन ह्वै हेत जनायो॥ बैठिगो मेरे पलंकही ऊपर जाने को याको कहा मन भायो। गाइन की चरवाही बिहाय कै बेपरवाही जनावन आयो॥ २७१॥

बिभ्रम हाव ल०दोहा।

कहियत बिभ्रम हाव जहं, भूलि काज कै जाइ।
कौतूहल बिच्छेप बिधि, वाही में ठहराइ ॥ २७२॥

यथा कवित्त।

उलटी यों सारी की किनारी वारी पहिचानो यह के प्रकास या जुन्हाई बिमलाई मै। दास उलटीयै बेंदी उलटीये आंगी उलटोई अतरौटा पहिरेहो उतलाई मै॥ भेद न बिचार्‌यो गुंजमालै औ गुली कमालै नीली यकपटी अरु मीली एक लाई मै। लली कित गली कित जाती हौ निडर चली कसे कटि कंकन औ किंकिनि कलाई मै॥ २७३॥

कौतूहल हाव यथा सवैया।

नासमु कौतुक सौधलै सौध पै धाय चढ़ी बृषभान किसोरी। दास न दूरि तें दीठि थिरै सुदरी दरी झांकति-ही फिरै दोरी॥ लोग लग्यो इहि कौतुक कौतुक कौतुक बारे को जातही भोरी। चंद उदोत इतौत चितौत चखी सबकी चख चारु चकोरी॥ २७४॥

बिच्छेप हाव यथा।

आज तौ राधेजू कैसी थकीसी तकै चहुंओर बिहाइ निमेखै। अंगनि तोरै खरो अंगिराय जंभाइ झुकै पै न नींद बिसेखै॥ कैती भरै बिन काज की भांवरी बावरी सी कहियै इहि लेखै। दास कोऊ कहै कैसी दसा है तौ मूखी सुनावती सांवरे देखै॥ २७५॥

मुग्ध हाव ल०दो०।

जानि बूझि कै बोरई, जहां धरति है बाम।

मुग्ध हाव तासों कहैं, विभ्रम ही को धाम ॥ २७६ ॥

यथा सवैया।

लाहु कहा खयें बेंदी दिये औ कहा है तरौना की बाह गड़ाये। कंकन पीठि दिये मसि रेख की बात बनै बलि मोहि बताये ॥ दास कहा गुण ओठ में अंजन भाल में जावक लीक लगाये। कान्ह सुभावही पूकृति हौं मैं कहा फल नैननि प्रान खवाये ॥ २७७ ॥

हेला हाव ल० दी०।

भावन में जहं होत है, निपटै प्रेम प्रकास।
तासों हेला कहत हैं, सकल सुकविजन दास ॥ २७८ ॥
एक हाव में मिलत जहं, हाव अनेकनिफेरि।
समुझि लेहिंगे सुमति यह, लीला हाबै हेरि ॥२७९॥

यथा ॥ कवित्त।

पी को पहिराव प्यारी पहिरे सुभाव पिय भाव ह्वै गई है सुधि आपनी न आवती। दास हरि आइ त्योंहीं सामुहें निहारे खरे राति मन भावती को देखि मन भावती ॥ आपनो मुकुर में विलोकि उन मानि के गोपालै आपनीयै प्रतिबिम्ब ठहरावती। ल्याउ ल्याउ ज्याउ ज्याउ रूप रस प्याउ प्याउ राधे राधे कान्ह ही लौं ललितै सुनावती ॥ २८० ॥

इति संयोग शृंगार। अथ बियोग शृंगार दी०।

बिन मिलाप संताप अति, सो बियोग शृंगार।
तपन हावहू तेहि कहैं, पंडित बुद्धि उदार ॥ २८१ ॥
ताके चार बिभाव हैं, इक पूरवानुराग।
बिरह कहत मानहिं मिलत, पुनि प्रबास बड़ भाग ॥२८२॥

अनुरागी बिरही बहुरि, मानी प्रोषित मानि ।
चहूं वियोग बिधानि तें, चारो नायक जानि ॥ २८३ ॥

पूर्वानुराग ।

सो पूरवानुराग जहं, बढ़े मिले बिन प्रीति ।
आलंबन ताको गनैं, सज्जन दरसन रीति ॥ २८४ ॥
दृष्टि श्रुतौ द्वै भांति के, दरसन जानो मित्त ।
दृष्टि दरस परतछ सपन, छाया माया चित्त ॥ २८५ ॥

परत्यच्छ यथा कवित्त ।

आली दौरि दरस दरस लेहि बेरी इन्दु वदनी अटा मैं नदनंद भूमि थल मैं। देखादेखी होतही सकुच छूटी दुहुन की दोऊ दुहूं हाथनि बिकाने एक पल मै ॥ दुहूं हिय दास खरी अरी मैं न सर गांसी परी दृढ़ प्रेम फांसी दुहुन के गल मैं। राधे नैन पैरत गोविन्द तन पानिप मैं पैरत गोविन्द नैन राधे रूप जल मैं ॥ २८६ ॥

स्वप्न यथा सवैया ।

मोहन आयो इहां सपने मुसुकात औ खात बिनोद सो बोरो। बैठी हुती परजंक में हौंहूं उठी मिलवे कहं कै मन धीरो ॥ ऐसे मैं दास बिसासिन दासी जगायो डोलाय केवार जंजीरो। झूठो भयो मिलिबो बृजनाथ को एरी गयोगिरि हाथ को हीरो ॥ २८७ ॥

छाया यथा ।

आज सवारही नंद कुमार हुते उत न्हात कलिन्द जा मांही। ऊपर आइ तू झांकी उतै कछु जाय परी जल में परछांहीं ॥ तातें ह्वै मोहित श्री मन मोहन दास दसा बरनी मोहि पांहीं। जानतो हौ बिन तोहि मिले बृज जीवन को अब जीवन नाहीं ॥ २८८ ॥

माया दर्शन यथा।

कालि जु तेरी अटा की दरी मै खरी हुती एक प्रदीप सिखा री। मै कह्यो मोहन राधे वहै हरि हेरि रहे पगि प्रेमनि भारी॥ तातें तो दास जू बारहीबार सराहत तोहि निसा गई सारी। या छबि चाहि कहा धौं करैंगे मह्य सुख पुंजनि कुंज बिहारी॥ २८९॥

चित्र दर्शन यथा।

कौनि सी औनी को है अवतंस कियो कहि बंस कृतारथ काको। नाम कवै पावन जन्म भए किन पातिन के अधरा अधरा को॥ दास दै बेगि बताय अली अब मो तन प्रान निदान है वाको। सो है कहा वह रूप उजागर मोहै छियो यह कागरुजा को॥ २९०॥

श्रुति दर्शन दोहा।

गुनन सुनै पत्री मिले, जब तब सुमिरन ध्यान।
दृष्टि दरस बिन होत है, श्रुति दरसन यों जान २९१

यथा कवित्त।

जब जब रावरो बखान करै कोऊ तब तब छबि ध्यान कै लखोई उनमानतै। जाने पतियान पतियान को प्रबीनताई बिन सुर लीन ह्वै सुरनि उर आनतै॥ चंद अरबिन्दनि मलिन्दनि सो दास मुख नैन कच कांति सै सुनेही नेह ठानतै। तन मन प्रानन बसीयै सी रहति हो कहति हौ कि कान्ह मोहि कैसे पहिचानतै॥ २९२॥

बिरह ल० दोहा।

मिलन होत कबहूं छिनक, बिछुरन होत सदाहिं।
तिहि अंतर की दुखन को, बिरह गुनो मन माहिं २९३

## बिहार बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)

छ महीने का ... ... ... ... १।)

राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)

विद्यार्थियों से ... ... ... ... १)

प्रति खंड का ... ... ... ... ।)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है! जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है।

एकवार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ।)॥

तीनवार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ।)।

छवार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ।)

बारह वार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिवार ... )॥

बारह वार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह वार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिवार देने के बाद, जितने दिनों तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति वार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—शाहाबाद।

## प्राप्ति स्वीकार।

१ प्रेम निवास।

२ श्री हरिश्चन्द्र पुस्तकालय जमीर का सूची पत्र।

३ दी आनरेब्ल राजा रामपाल सिंह जी की जीवनी।

### सूचना

जिन जिन महाशयों के यहां बि० ब० का मूल्य पिछला रह गया है कृपा करके भेज दें जिस में तकाज़ा अलग न भेजना पड़े क्यों कि नये वर्ष के भी चार महीने बीत गये।

प्रबन्ध कर्त्ता।

---

### सूचना

बिहार बन्धु का प्रति अंक बहुत से लोगों के पास बिना मांगे भी भेजा जाता है। उन से प्रार्थना है कि इस के ग्राहक आप भी हों और अपने इष्ट मित्रों को भी ग्राहक होने का उत्साह देकर इस की सहायता करें। इस प्रान्त का सब से पुराना पत्र यही है। २४ वर्ष इसे हो गये। यदि देशवासियों की अश्रद्धा के कारण इस की दशा उन्नत न हो सकी तो उनहीं के लिये लज्जा की बात है।

प्रकाशक।

इस वर्ष के बि० ब० के पिछले अंक अभी भी मिलते हैं।

## सूचना।

### काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

गत २० फेब्रुअरी सन् १८८५ की उक्त सभा सम्बन्धीय प्रबन्धकारिणी सभा का एक अधिवेशन हुआ था इस में और कार्य्यों के अतिरिक्त निम्न लिखित दो प्रस्ताव सभा ने हिन्दी भण्डार के पूर्त्यर्थ स्वीकार किये और सर्व साधारण में इन की सूचना देना निश्चय किया।

### हिन्दी भाषा का इतिहास।

जो महाशय इस पर सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ लिखेंगे उन्हें सभा एक चांदी का पदक ( Medal ) प्रदान करेगी। इस ग्रन्थ में नाटक उपन्यास आदि के भेद तथा उन के पूर्ण वर्णन के व्यतिरिक्त निम्न लिखित १० प्रश्नों का उत्तर भली प्रकार से आना चाहिये:—

(१) भारत वर्ष की प्राचीन भाषा कौन थी और उस के क्या रूपान्तर हुए?

(२) कब किन किन भाषाओं से और कैसे हिन्दी की उत्पति हुई?

(३) प्रारम्भकाल से आज तक इस के क्या क्या रूपान्तर हुए-उदाहरण सहित इसका सविस्तर वर्णन ?

(४) किस शताब्दी में सर्व साधारण में हिन्दी की कैसी अवस्था हुई कौन कौन प्रधान लेखक हुए और उन्हों ने किस किस विषय के कौन कौन से ग्रन्थ लिखे और किस भाषा को प्रधान अंग रक्खा ?

(५) गद्य लिखने की प्रथा कब से चली ?

(६) प्रथम गद्य लेखक कौन हुआ और उस ने कौन कौन ग्रन्थ लिखे, उन की भाषा का उदाहरण तथा उस के पीछे का इतिहास ?

(७) सारे भारत वर्ष में कितनी तरह की हिन्दी बोली जाती है और उन के रूपान्तर कैसे हैं तथा बंगला, गुजराती आदि से हिन्दी का क्या सम्बन्ध है।

(८) इस समय हिन्दी की कैसी अवस्था है ?

(९) इस समय हिन्दी गद्य में किन बातों का अभाव है ?

(१०) गद्य लिखने की प्रणाली कैसी है और उस में किन किन बातों की त्रुटि है और उस का संशोधन कैसा होना चाहिये ?

यह ग्रन्थ ११ जुलाई सन् १८८५ तक सभा में आ जाना चाहिये। इस के परीक्षक आदि ग्रन्थ पहुंचने पर नियत किये जायेंगे॥

यह ग्रन्थ किसी भाषा (हिन्दी, उर्दू, अङ्गरेज़ी या बंगला परन्तु स्पष्ट अक्षरों में) में लिखा जा सक्ता है परन्तु हिन्दी में अनुवादित होकर छापा जायगा॥

## हिन्दी भाषा का व्याकरण।

जो महाशय हिन्दी भाषा का व्याकरण सर्वोत्कृष्ट लिखेंगे उन्हें सभा एक बड़ा सोने का पदक (Medal) प्रदान करेगी। यह व्याकरण सर्वांग पूर्ण और सब प्रकार से उत्तम होना चाहिये। इस में विभक्ति प्रत्ययों तथा लिखने के नियमादि का वर्णन पूर्ण रूप से होना चाहिये। विदित हो कि इस में वर्त्तमान समय में जो जो रीति विदेशीय भाषाओं की प्रचलित हो गई हैं और जैसी हिन्दी आजकल लिखी जाती है उन का पूरा वर्णन होना भी आवश्यक है॥

यह ग्रन्थ हिन्दी के व्यतिरिक्त दूसरी भाषा में न होना चाहिये और इसी सभा में ११ जनवरी सन् १८८६ तक पहुंच जाना चाहिये।

परीक्षक आदि ग्रन्थ आने पर नियत किये जायेंगे ॥

जो महाशय उपरोक्त दो ग्रन्थों में से एक वा दोनों ग्रन्थ लिखें उन से निवेदन है कि वे पत्र द्वारा अपनी इच्छा जहां तक शीघ्र हो सके सभा पर प्रगट कर दें जिस से कि एतत् सम्बन्धीय जो कुछ विशेष सूचना जो कि सभा की ओर से प्रकाशित हो उन के पास भेज दी जावे ॥

जो महाशय इन दो ग्रन्थों में से कोई ग्रन्थ सभा को भेजें उन से निवेदन है कि उस ग्रन्थ को रजिस्टरी करके भेजें जिस से उस के खो जाने की किसी प्रकार से सम्भावना न हो ॥

## पत्र सम्पादकों से सविनय निवेदन ।

पत्र सम्पादकों से निवेदन है कि वे इन उपरोक्त प्रस्तावों की सूचना अपने २ पत्र द्वारा इस प्रकार से दे देवें कि हिन्दी रसिक और विज्ञ समाज इसे जान जावें और हिन्दी भण्डार की पूर्त्ति करें। आशा है कि सम्पादकगण इस विज्ञापन को अपने २ पत्र में कम से कम तीन वेर अवश्य छापेंगे ॥

ता० २५ फेब्रुअरी १८८५ ।

श्यामसुन्दर दास
सेक्रेटरी नागरी
प्रचारिणी सभा
बनारस सिटी ।


## भट्ट भास्कर ।

काव्य का अद्वितीय मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य केवल १।) नमूने का ) ॥ मात्र ।

मिलने का पता—

गौरीशंकर भट्ट ( कमीशन एजेन्ट )

कवि समाज कानपुर की कोठी

कानपुर ।

# मनोहारिणी विद्या।

विद्या का उत्पत्ति स्थान भारतवर्ष है, इसी मुल्क से विद्या प्रचलित हुई थी और सब से पहले इसी मुल्क के आदमियों ने विद्या अभ्यास में चित्त लगाया। यहां के पण्डित सर्वदा से नामी, ज्ञानी, सब अन्य देशियों के मान्य और शिरोमणि रहे। मिश्र और ग्रीस वाले जिन्हों ने सारे यूरप को आदमी बनाया वे अपने श्रेष्ट पण्डितों के वर्णन में यही लिखते हैं कि वे भारतवर्ष ही से विद्या सीख आये थे। सिकन्दर सा बड़ा बादशाह भी जिसकी सभा में "अरस्तू" ऐसे ऐसे कितने योग्य विद्वान रहते भारतवर्ष के उस समय के सामान्य पण्डित को जिनका नाम "कलन" बताते हैं अति स्नेह और सन्मान से अपने देश में ले गया था। और उनके मरणान्तर उनके आचरण विषय में बहुत प्रशंसा की है। अब देखना चाहिये कि गान विद्या भी इसी मुल्क से निकली है। अन्यान्य मुल्कवालों ने इसी मुल्क के द्वारा गान विद्या सीखी है। ईरान के प्रतापी शाह बहराम ने यहीं से एक गवैया मंगवाया था। वास्तव में गान विद्या अब तक भी भारतवर्ष के तुल्य दूसरी जगह नहीं है। यहीं के आचार्य्यों ने ताल, सुर, राग, रागिनियों के भेदों को वर्णन करने में ऐसी विद्वत्ता और चतुराई दिखलाई है कि जिसका कथन करना अति दुस्तर है और यहां की संगीत विद्या का रस और मुख का लय (यथा स्थान) केवल उन्हीं लोगों को ही सवता है जो कि गान विद्या में निपुण हो देशी, विदेशी गान विद्या को स्वर समता कर नृत्य करेंगे। ऐसे मनुष्य वर्तमान दशा में तो कहां वरन भूत में भी दोही एक हुये हैं। बंग के राजा मोहन ठाकुर और यतीन्द्र मोहन ठाकुर गान विद्या में अद्वितिय लिखते हैं कि इस देश की ऐसी उत्तम गान विद्या दूसरे देश की कदापि नहीं। मुख्यता तो यह है कि हमारे अनादि ग्रन्थ वेद जिसका एक खण्ड सामवेद है बिना गान विद्या के जाने ठीक ठीक कोई नहीं पढ़ सकता है। यद्यपि मुसलमानी धर्म में संगीत विद्या गाना अथवा सीखना हराम है तथापि अकबर शाह ने

इस विद्या में चौदहों विद्याओं से मोहनी शक्ति अधिक तर जान यहां के गान पर प्रसन्न हो, तानसेन, बिजूबावरा, आदि कई एक गवैये रक्खे थे। अब अतिशय सोच का विषय है कि यह प्रत्यक्ष मोहिनी विद्या जो दिन दिन इस भारत को छोड़ परम कठोर की भांति चली जाती है इसका क्या कारण है ? कारण कई एक दृष्टि गोचर होते हैं एक तो यह कि इस विद्या का गुरू बेदरद्द होना चाहिये किन्तु ऐसे मनुष्य दैवात ही मिलते हैं। दूसरा यह कि इस विषय में पुस्तक कोई ऐसा सुगम नहीं है जिसे सर्व साधारण पढ़ सकें यद्यपि संगीत रत्नाकर आदि कई ग्रंथ संस्कृत में बने हुये हैं पर इसका पढ़ानेहारा कोई नहीं है। तीसरा यह कि यह विद्या करीब आठ सौ वर्ष से राजदरबार से निकाली हुई है जो विद्या राजदरबार में मानमीय नहीं है उसकी कभी उन्नति नहीं होती। मुसलमानों ने तो इसे हराम समझ परित्याग किया और अंगरेज़ इस देश के संगीत के भेदों को नहीं जानने के कारण इसकी ओर आंख नहीं फेरते क्यों कि डाक्टर हण्टर साहब ने लिखा है कि यद्यपि यहां का गाना यूरप वाले अच्छा नहीं समझते पर जो कोई विज्ञ जन इसकी ओर ध्यान देगा तो अवश्य ही प्रसन्न होगा पर उसके साथ यह भी है कि—

दोहा।

बिधि रूठे तूठे कवन, को करि सके सहाय।
बन दव भय जल गत नलिन, तहं हिम देत जराय॥

इति।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

APRIL 1895 VOL. XXIV—NO 4

मासिक पत्र।

अप्रिल १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर ४

१ अर्थ शास्त्र क्या है ?
२ अंगिरः संहिता।
३ समाचारावली।
४ सावन सोहावन।
५ सिराजुद्दौला।
६ शृंगार निर्णय।
७ स्फुट विषय।

बाँकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाख़ाना,

# बिहार-बन्धु।

न० ४—एप्रिल १८९५।

---

## अर्थ शास्त्र क्या है ?

अर्थ शास्त्र हाल की विद्या है, इसके नियम स्थापन होने को अभी सौ वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं। पर यह विद्या ऐसी उपयोगी है कि सृष्टि के आरंभ ही से लोग इसके पीछे पड़े हैं। अर्थ शास्त्र का विषय द्रव्य है इससे द्रव्य क्यों कर उत्पन्न होता है, उत्पन्न होने पर क्यों कर किन किन नियमों के अनुसार उत्पादकों को मिलता है, तथा मनुष्य जाति की द्रव्य सम्बन्धी स्थिति में किस किस कारण से भलाई बुराई होती है—यही सब बातें अर्थ शास्त्र में विचारी गई हैं।

अब हमको पहले यह समझना चाहिये कि द्रव्य क्या है ? द्रव्य की व्याख्या करना तो कठिन है पर प्रत्येक मनुष्य के मन में उसका कुछ न कुछ ध्यान बंधा हुआ है। यह कौन नहीं जानता कि द्रव्य से शूरता नहीं होती, द्रव्य से कला कौशल नहीं आती, द्रव्य से सद्गुण नहीं होते ? इसमें कोई सन्देह नहीं कि शौर्य विद्वत्ता, कला कौशल और सद्गुण से द्रव्य को बहुत लगाव है। और ऐसा भी हुआ है कि शौर्यवान, विद्वान, कलावान और गुणवान लोगों ने द्रव्य पाया है पर तो भी इन सब गुणों से यथार्थ में द्रव्य भिन्न है। द्रव्य शब्द के कहने से जो भाव सब के मनों में उदय होता है उसके अर्थ के विषय में बहुत सी भूलें हैं। उन

भूल भरे बिचारों के कारण बहुत काल तक बैपार आदि के विषय में मनुष्य जाति की बहुत ही भ्रम पूर्ण बुद्धि रही है।

पृथ्वी के अधिकांश भाग में पहले लोग ऐसा समझते थे और आज कल अपने देश में थोड़े बहुत लोग ऐसा समझते हैं कि पैसे ही को द्रव्य कहते हैं; पैसे को छोड़ और कोई पदार्थ "द्रव्य" नहीं समझा जा सकता, द्रव्य की उपमा के योग्य और कुछ भी नहीं है। पैसा विशेष करके सोने रूपे ही का होता है, इस लिये यह ठीक है कि सोना रूपा भी द्रव्य ही है पर लोगों का बिचार है कि इन्हें छोड़ और कोई वस्तु द्रव्य नहीं है। इस भ्रम पूर्ण समझ से लोग ऐसा अनुमान करते हैं कि जिस जिस कारण से देश में से पैसा बाहर जाता है उससे देश ग़रीब होता है और जिस जिस से देश में पैसा खिंच आता है उस उस से देश धनवान होता है। यदि परदेश का माल अपने यहां आवे तो उससे हम लोगों को पैसा देना पड़ता है, इस लिये ऐसे व्यापार से देश को लाभ नहीं है, और यदि अपने देश का माल बाहर जाये और उसके बदले में हम लोगों को रक़म मिले तो उससे अपना देश धनवान होता है, इस कारण ऐसे बैपार से देश का द्रव्य बढ़ता है—ऐसे ही ऐसे दूषित अनुमान की बहुत से लोग मानते हैं। यदि इन अनुमानों को सच मान लें तो बैपार से संसार को कभी लाभ न हो, क्यों कि जितना पैसा एक देश का बैपारी माल के बदले लेगा, उतना ही दूसरे का कम होगा—पर आगे यह दिखलाया जायेगा कि परस्पर के बैपार से दोनों पक्ष का लाभ है।

परन्तु यह भूल हमारे ही देशवासी करते हैं यह बात नहीं है, इस भूल ने पहले युरप के लोगों को भरमाया था और एक समय वह था कि उन लोगों के बिचार भी द्रव्य के सम्बन्ध में हमारे इस देश बासियों ही की तरह दूषित थे यथार्थतः देखा जाये तो यह स्वाभाविक भूल है और साधारण लोग इस भूल में पड़ जायें तो कोई अचरज की बात नहीं है। हर एक मनुष्य अपनी पूंजी का हिसाब रुपये के हिसाब से करता है और यदि कोई द्रव्यवान होना चाहे तो उसे रुपया इकट्ठा करना

चाहिये। यह भी सच है कि किसी की पूंजी का हिसाब करने के समय हम लोग उसकी माल मिलकीयत घर, द्वार, बाग़ बगीचा आदि की भी गिनती करते हैं, पर इन सब की गिनती करने का कारण यही है कि उनसे रुपया उत्पन्न होता है। यदि उस मिलकियत से थोड़ा रुपया आता है तो उसकी पूंजी थोड़ी और अधिक आता है तो बड़ी पूंजी समझी जाती है। केवल पैसे वाले की पूंजी का अन्दाज़ रुपये ही से नहीं होता पर हर एक मनुष्य को जो कुछ प्राप्ति होती है वह सोने चांदी ही में होती है। जितने अधिक तलब पर अथवा रोज़ पर अथवा काम के प्रमाण से परिश्रम होता है उतना ही अधिक उसे रुपया मिलता है और लोग अपने मन ही से रुपये के लिये काम करते हैं। बैपारी बैपार करता है वह भी जब माल बेच खुर्दा करता है तो अपने उद्यम को सफल समझता है, और रोज़ी के लिये परिश्रम करने वाला हर एक मनुष्य ऐसा ही समझता है कि मैं जो परिश्रम कर रहा हूं रुपये ही के लिये। चाहे कैसी ही दामी वस्तु क्यों न हो पर उसका मूल्य रुपये ही से लगाया जाता है। सारांश यह है कि द्रव्यवान के द्रव्य का लेखा रुपये ही से लगता है। सभी मिहनती मनुष्य ऐसा ही समझते हैं कि हम जो मिहनत करते हैं पैसे ही के लिये। व्यापारी इतनी हैरानी पैसे ही के लिये उठाता है और माल का मूल्य रुपये ही से लगाता है। इन बातों पर दृष्टि रख कर, साधारण मनुष्य ऐसी चूक करे कि रुपया यही द्रव्य है और रुपये के सिवाय दूसरा कोई द्रव्य हइ नहीं तो इसमें उसका क्या दोष है?

पर भूल तो भूल ही है, भूल स्वाभाविक ही हो तो उससे क्या? जब बिचार करने को बैठते हैं तब तो तुरतही सूझ जाता है कि पैसा आप तो हमारे किसी काम में नही आता; इससे हमारा कोई काम नहीं होता। हमारे भरण पोषण के और दूसरे दूसरे शारीरिक वैभव तो पैसे से जो जो चीज़ें आती हैं उनसे होता है; पैसे से नहीं होता। पैसा न हो तो काम चल सकता है पर अन्न, कपड़ा आदि चीज़ों के बिना पल भर नहीं चल सकता। हम लोग द्रव्य की इच्छा करते हैं वह अपने

अथवा दूसरों के वर्तमान वा भविष्य सुख के अर्थ इच्छा करते हैं। और यह सुख तो अनाज कपड़ा आदि वस्तुओं से मिलता है। इससे यथार्थ में उपयोगी द्रव्य ये ही चीज़ें हैं। पैसे के बदले में ये चीज़ें हमको मिल सकती हैं इस लिये सिर्फ़ पैसा ही द्रव्य नहीं कहा जा सकता है। अनाज के बदले में भी हर एक चीज़ मिल सकती है इस लिये यह कोई नहीं कहता कि सिवाय अन्न के दूसरा कुछ द्रव्य ही नहीं है। पैसे में गुण पूछो तो इतना ही है कि जब जब जितनी जितनी वस्तुओं का हम को काम पड़ता है, तब तब उतनी ही उतनी चीज़ें हमको मिल जाती है और मिल सकती है। पर केवल पैसाही द्रव्य है दूसरा कुछ द्रव्य नहीं है यह कहना दूषित है।

अब द्रव्य शब्द का बहुत कुछ निर्णय हो गया। जिन जिन बाहरी पदार्थों से हमारी शारीरिक कामनायें पूर्ण होती हैं वे सभी द्रव्य हैं। सब प्रकार की खाने की वस्तु, सब प्रकार की पहनने की वस्तु, सब प्रकार की आखों को आनन्द देने वाली चीज़ें—सारांश यह कि जिन जिन करोड़ों पदार्थों से मनुष्य को देह सम्बन्धी सुख मिलता है वे सब ही द्रव्य हैं। पर इस व्याख्या में ज़रा सा अतिव्याप्ति दोष आ जाता है अर्थात जितना अर्थ होना चाहिये उससे अधिक समझा जाता है। बहुत सी वस्तु तो हमारे ऐसे काम की हैं कि उनके बिना घड़ी भर नहीं चल सकता, पर उनकी गिनती अर्थ शास्त्र में द्रव्य की नहीं है। हवा बिना हम लोग पल भर भी नहीं जी सकते पर उसकी गिनती द्रव्य में नहीं है। हवा कोई संग्रह नहीं कर सकता, न यह बिक ही सकती है और न इसकी कीमत मिलती है। इन कारणों से व्याख्यान में अर्थ शास्त्र वाले फेर फार कर के यों कहते हैं कि "जिस जिस मूल्यवान पदार्थ से मनुष्य का शारीरिक सुख बढ़ता है वह वह पदार्थ द्रव्य है"।

अर्थ शास्त्र संबन्धी जो द्रव्य है उसका व्याख्यान तो पूरा हो गया। पर द्रव्य द्रव्य में भी अन्तर है। बहुत सी वस्तु ऐसी हैं कि उनकी गिनती किसी मनुष्य के द्रव्य में होती है, पर सारे देश की प्रजा

उससे द्रव्यवान नहीं कहलाती, जैसे किसी पुरुष को दूसरे के मकान पर हक़ हो उसके लिये तो वह हक़ द्रव्य ही के बराबर है और जो वह बेचे तो उसका मूल्य (पैसा) भी मिलेगा। पर इस हक़ से देश का द्रव्य न बढ़ता है न घटता है, यह हक़ किसी कारण से डूब भी जाये तो लोगों का द्रव्य कुछ बिगड़ेगा नहीं, उसी भांति एक देश के लोग दूसरे से रुपया मांगते हों तो उनका यह लेना द्रव्य है पर इससे दुनियां के द्रव्य में कुछ घट बढ़ नहीं होता। किसी कारण से यह लहना डूब जाये तो भी यह दुनियां की सामुदायक पूंजी के सामने जों की तों ही रहेगी। यह अर्थ शास्त्र प्रत्येक प्रत्येक पुरुष के द्रव्य के विषय में तर्क नहीं करता; यह तो देश का सामुदायिक द्रव्य कौन कौन से उपाय से बढ़ता है और देश के रहने वालों में द्रव्य के प्रसार का क्या क्या नियम है और वह किस किस कारण से बढ़ता घटता है आदि ऐसी ही ऐसी बातों का वर्णन करता है।

परन्तु द्रव्य की उत्पत्ति एक कारण पर आधार नहीं रखती। भिन्न भिन्न देश की प्रजाओं की सृष्टि के नियमों का जैसा २ ज्ञान होता है, जैसे जैसे क़ायदे होते हैं, उन का जैसा जैसा राज्य होता है, जैसा जैसा धर्म होता है, वैसा ही वैसा उन का द्रव्य होता है। द्रव्य उत्पत्ति के नियम समझने के पहले सृष्टिजन्य पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाली जो सब विद्यायें हैं—जैसे रसायन शास्त्र, भूविद्या उद्भिद विद्या आदि का ज्ञान उसी प्रकार सब प्रकार की कलाओं का भी ज्ञान होना चाहिये। क़ायदा बनाने की विद्या का ज्ञान होना चाहिये, राजकीय विद्या का ज्ञान होना चाहिये, धर्म शास्त्र का ज्ञान होना चाहिये, इस के अतिरिक्त और भी बहुत सी बातों का ज्ञान होना चाहिये। तो क्या अर्थ शास्त्र जो कि द्रव्य की उत्पत्ति का वर्णन करता है वह इन विद्याओं में भी अपना विस्तार करता है ? नहीं। इतनी सब विद्याओं का इकट्ठा वर्णन होना बहुत ही बिकट है और अर्थ शास्त्र इन सब को इकट्ठा करना चाहता भी नहीं। सृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त और उस पर से निकले हुनरों की सब मान द्रव्य की उत्पत्ति में मानसिक अथवा मनुष्य के मन के गठन पर

आधार रखने वाले जो जो नियम हैं और मनुष्य के बनाये जो रिवाज और रीति है उन का विचार वह करता है जानता है कि देश में माल उत्पन्न करने वाले तो हैं पर वे उत्पन्न करने वाले किस किस उपाय से द्रव्य को बहुत और कम पैदा करते हैं और किन किन क़ायदों से इस द्रव्य की उत्पत्ति में लाभ हानि होगी, ऐसी ऐसी बातों का विचार और और लेखों में किया जायेगा।

———

## समाचारावली।

फल यदि नियमानुसार खाये जायें तो मनुष्य के शरीर को बहुत लाभ पहुंचे। फलों को या तो खाली पेट खाना चाहिये अथवा केवल रोटी के साथ, परन्तु तरकारियों के साथ इसे कभी न खाना चाहिये, प्रातः काल के समय फल खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है और शरीर को बड़ा लाभ पहुंचता है।

---

फ्रान्स का एक विज्ञान सम्बन्धीय समाचार पत्र लिखता है कि मनुष्य की चाल प्रति सेकेन्ड ४ फ़ीट है। एक अच्छा घोड़ा प्रति सेकन्ड १२ फ़ीट चलता है। बर्फ़ पर चलने वाले हिरन की चाल प्रति सेकन्ड २६ फ़ीट है। घुड़दौड़ के एक अंग्रेज़ी घोड़े की चाल एक सेकन्ड में ४१ फ़ीट है। ख़रगोश एक सेकन्ड में २८ फ़ीट चलता है। एक उमदा पालदार जहाज़ प्रति सेकन्ड १४ फ़ीट चलता है। तूफ़ानी हवा की चाल प्रति सेकन्ड ८२ फ़ीट है।

---

यदि पेंच ज़ंग के कारण काठ से नहीं निकाला जा सकता हो तो उसके निकालने के लिये एक लोहे को आग में खूब तप्त करना चाहिये जब वह लोहे का टुकड़ा तप्त होकर लाल हो जावे तो उसको इस अन्दाज़ा से उस पेंच के मत्थे पर रखना चाहिये कि जिसमें काठ न जल जाये कुछ देर के पश्चात जब लोहे के तप्त टुकड़े की गरमी का असर पेंच पर होगा तो उसी समय पेंचकस के द्वारा पेंच निकालने का उद्योग करना चाहिये उपरोक्त क्रिया से पेंच कितनाहू ज़ंग लगा हो परन्तु शीघ्र निकल आवेगा।

---

अफ्रिका के जंगलों में एक इस प्रकार का वृक्ष पाया गया है कि जिसके बीज यदि पानीमें पीस दिये जायें तो उनमें से एक प्रकारका मक्खन निकलता है जो गाय भैंस के मक्खन से कहीं बढ़ कर स्वादिष्ट होता है।

पृथ्वी भरमें सब से बड़ी धातु की मूर्ति सेण्टपीटर्सवर्ग में है। वह मूर्ति पिटर दी ग्रेट की है और पीतल से बनायी गयी है। उस मूर्ति का वज़न १०० टन है। एक टन २८ मन का होता है।

आयरलैण्ड में किङ्गस कौण्टी के एक युवा पुरुष ने एक मरी हुई बिल्ली की सड़क के एक किनारे देख कर उसको अपनी छड़ी से ठक ठकाना शुरू किया परन्तु बड़े आश्चर्य्य की बात है कि ठीक उसी समय एक बिल्ली एक दूसरी जगह से आन पड़ी और उसने उस मनुष्य के पैर और अंगुलियों को अपने दांतों से ज़ख़्मी कर दिया! अन्त में उस मनुष्य के सारे अंगों को अपने तेज़ पञ्जों से नोच, खसोट कर भाग गई।

---

संसार में सब से ऊंचा मकान, जिस में मनुष्य रहते हैं, मुल्क पेरू में एक चुल्ली घर है, वह समुद्र की सितह से १६००० फ़ीट ऊंचा है।

---

दुनिया भर के कुत्तों से छोटा कुत्ता औस्ट्रिया के युवराज की स्त्री के पास है। यह कुत्ता तौल में पाव भर और ऊंचाई लम्बाई में सात इंच से भी कम है। यह कुत्ता आदमी के हथेली पर सुख से सो सकता है? कुत्ता क्या, चूहा है!

---

जपान में एक वृक्ष ऐसा है कि जिस की शाखाओं में से सूर्य्यास्त के पश्चात धूंआ निकलता है।

---

नर मधुमक्खी ६ मासों तक जिवित रहता है, परन्तु मादा ४ वर्षों तक जीवित रहती है।

---

सब से छोटा शकर खोरा पक्षी तौल में २० ग्रेन के बराबर होता है।

---

एक घोंघा १४ दिन और ५ घन्टे में एक मील चलता है।

[ शीतलपुर सारन निवासी पांडेय दामोदर सहाय सिंह बिरचित ]

## यथा रुचि।

इत बेटी बृषभानु की, उत नन्द कुमार।
इत छबि रति मद निदरती, उत निदरति मार ॥ १ ॥
इत फहरति बर चूनरी, उत सुठि पट पीत।
इत सुप्रेम दिन दूनरी, उत तिमि नव प्रीत ॥ २ ॥
इत तरुणी तनु सुन्दरी, उत सुतरुण देह।
इत रंग सुबरन निन्दरी, उत स्यामल मेह ॥ ३ ॥
इत लट सूधी चीकनी, उत कुंचित केश।
इत इंगुर बेंदी बनी, उत तिलक सुदेश ॥ ४ ॥
इत मणिमाल सुछाजती, उत उर बन माल।
इत अँखिया बड़ी राजती, उत नैन बिशाल ॥ ५ ॥
इत मुख द्युति शशि सी बनी, उत बदन मयंक।
इत तिरछी बर ताकनी, उत चितवन बंक ॥ ६ ॥
इत उत दीउ इक ठौर ह्वै, दम्पति सरदार।
दामोदर हिय निवसिये, संयुत सिङ्गार ॥ ७ ॥

---

## समस्या पूर्त्ति।

समस्या—" नन्द के कन्हैया की बलैया लेउं बार बार "

### कबित्त

हार हार माने वेद जाके गुणगावन में, जाके भय कांपत बिधीश हूं के हार हार। जाहि निम्मोणत प्रभेदमति जेऊ मुनि, ह्वै के एक सत्य भवसागर असार सार॥ दामोदर जाके बल गनैना गनागन की, करत कबित्त जाके गुण गाथ चार चार। बार बार प्राण धर बार बार बार बार सबै, " नन्द के कन्हैया की बलैया लेंउ बार बार " ॥ १ ॥

धरा धेनु देवन के दुख भार मेट्यो जौन, अलख अरूप हूं अनेक रूप धार धार। सर्व्व समरत्थ औ अकत्थ गुणगत्थ जाके, कोटि कोटि अधिन दया के दीन तार तार॥ आगे करै अनिल दिने से रजनी से करै, चहै तो सुमेरे करै छिन माझ छार छार। परम उदार अरु दामोदर के अधार, "नन्द के कन्हैया की बलैया लेउं बार बार"॥ २॥

---

## प्राप्त।

सम्वत उनीस सै बावन शुभ सुन्दर में मास मधु शुवल तिथि सप्तमी जनायी है॥ १॥ मंगल के बार लीड एलगिन पुर पटना में नगर बिलोकवे को वायखाय आयी है॥ २॥ मेहराब औ पताका से शोभित पुर पटना है याकी देखिवे को लोग बहु धायी है॥ ३॥ दीपन के पुंज के प्रकाश को कहां लो कहौं कवि की बिलोक निसि नाथहूं लजायी है॥४॥

## सिंहावलोकन छन्द।

डारन पै ये पलाश के वृच के कोयल की सखी मीठी पुकारन॥ १॥ पुकारन चातक की अति सुन्दर सुन्दरता बन की सखी पारन॥ २॥ पारन है सखो कामिनी की दुख बैन सुनी यह घोर उचारन॥ ३॥ उचारन मीहि सुहात नहीं झरि लागे अंगार पलाश की डारन॥ ४।

दीपन ज्योति की देखि मयंक लजाय रह्यो बनवार सवारी॥ १॥ गावत गीत सबे मिलि सुन्दरी राम की रूप अनूप निहारी॥ २॥ राम प्रसाद कहेंरी अली कवि कौन कहे कवि की गति न्यारी॥ ३। भूल गई अवधेश की नाम सुनावे लगी मिथिलेश की गारी॥ ४॥

## सवैया।

गोपिन के अंशुवान के नीर पनारे बहे बहिके भये नारे॥ १। नारे भये नदियां बहिके नदियां बहिके भये काटि करारे॥ २॥ बेगि चलो तो चलो बृज में कवि तीष कहें बहु प्राणन प्यारे॥ ३॥ वेनद चाहत सिन्धु भये तब सिन्धुते ह्वै है जला हल सारे॥ ४॥

बाजी गयंद न जायेंगे साथ न पुत्र कलत्र न मित्र जुटे ॥ १ ॥ पुण्य औ सत्य के साथ रही अरु आयुष काल से जात लुटे ॥ २ ॥ राम प्रसाद विचारि कहैं सब पाप से दूर रही तु फुटे ॥ ३ ॥ श्री राम के नाम की भूली नहीं कहीं तीप सहर की न धम से छुटे ॥ ४ ॥

प्रेम लगावत ही तुम दुष्ट से धर्म्म औ कर्म्म से दूर फुटे ॥ १ ॥ श्री राम की नाम सुहात नहीं अति प्रेम से पाप में जाय जुटे ॥ २ ॥ तुमरे लिए धर्म्म से भिन्न नहीं अब बाल किशोर युवा से लुटे ॥ ३ ॥ गेठरी की भी बांधी औ चौंक उठो कहीं तीप सहर की न धम से छुटे ॥ ४ ॥

---

## श्री राम नाम सत्य है।

यह कौन नहीं जानता कि सम्पूर्ण संसार असत्य है एक राम नाम सत्य है।

आपही जब कोई कार की नेव देते हैं और नहीं बनता तो झंख के कहते हैं "अपनी चेती हीत नहीं प्रभु चेती ततकाल" बस सब की इच्छा असत्य है राम नाम सत्य है।

हमारे सत्य धर्म्मावलम्बी गण जब कोई निज धर्म्म निन्दक के नये स्थान में जाते हैं और श्री रामचन्द्र की निन्दा सुन पाते हैं तो कहते हैं कि इसका कहना असत्य है राम नाम सत्य। "सब कर मत खगनायक एहा, करिय राम पद पंकज नेहा।" बस अब ज़्यादे कहने की ज़रूरत नहीं है राम नाम सत्य है। सपने होय भिखारि नृप रंक नाक पति होय। जागे हानि न लाभ कछु तिमि प्रपंच जिय जोय ॥ तो खूब सोची कि स्वप्न असत्य है राम नाम सत्य है।

परमेश्वर नामानि सत्य नेकानि पार्वती परंतु राम नामेदं सर्वेषा मुत मोत्तमं ॥ हमारे ऋषियों का वाक्य है अतः हम भी कहते हैं कि राम नाम सत्य है।

देह धरे कर यह फल भाई। भजहु राम सब काम बिहाई ॥ देखो चौपाई क्या कहती है कि राम भजो क्यों कि यही राम का नाम सत्य है।

तूं कहता है अरे ग़ाफ़िल ये मेरा है ये मेरा है। ये जिसका है उसी का है न मेरा है न तेरा है॥ यह राम जीका है इसी से कहते हैं कि राम नाम सत्य है।

दील्ली में जाइये बादशाहों के क़ब्रों को देखिये। जो न समायो बाहुं बल अटक कटक के बीच। तीन हाथ पृथ्वी तले मीच कियो वह नीच॥ बस आप के चित्त में जम जायगा कि हमारा गुमान असत्य है राम नाम सत्य है।

अपने अपने मत लगे बाद मचावत सोर। ज्यों ज्यों करिकै सेईबो पैकै नन्द किशोर॥ तब फिर झगड़ा क्या? राम नाम सत्य है। देखो कबि ने कैसा चेताया है। चार चार दिन की चवाव सब कोई करी अंत लुटिजैहो जैसे पुतरी बरात की। क्यों कि यह सब असत्य है राम नाम सत्य है।

आर्य्य समाजी ब्रह्म समाजो ईसाई मुसाई चाहे कोई पंथ के क्यों न हों परंतु यदि मुंह से नहीं कहे होंगे तो कान से अवश्य सुने होंगे कि राम नाम सत्य है।

अच्छा अब हमारे लेख को आंख से देख भी लीजिये कि राम नाम सत्य है। राम नाम सत्य। राम नाम सत्य है।

राम नाम का प्रेमी
श्याम बिहारी मिश्र
गाज़ीपुर।

---

यथा कवित्त ॥

जब तें मिलाप करि केलि कै कलाप करि आनंद अलाप करि आए रसलीन जू। तब तें तो दून्यो तन छीत छिन छिन छीन पून्यो की कला ज्यों दिन दिन होति दीन जू॥ दास जू सतावन अतन अति लाग्यो अब ज्यावत जतन वाकी तुमही अधीन जू। ऐसोई जोहिरदै की निरदै निनारे ह्वो तो काहे को सिधारे उत प्यारे पर-बीन जू॥ २९४॥

मान बियोग ल० दी०।

इरषा दया परमाख तें, प्रिय तिय ठानै मान।
बढ़ बियोग दसहूं दिसह, मान बिरह सो जान॥२९५॥

यथा कवित्त।

नींद भूख प्यास उन्हैं व्यापत न तापसी लों ताप सी चढ़त तन चंदन लगाये तें। अतिही अचेत होत चैत-हू की चांदनी में चंद्रकन खाए तें गुलाब जल न्हाये तें॥ दास भो जगतप्रान प्रान को बधिक औ कृसान तें अधिक भए सुमन बिछाए तें। नेह की लगाये वो न्हाये तें कछु पाये तेरो पाइबो न जानौ अब भौंहनि चढ़ाए तें॥ २९६॥

प्रवास बियोग दो०॥

प्रिय बिदेस प्यारी सदन, दुःसह दुक्ख प्रवास।
पत्री संदेसनि सखी, दुहुं दिसि करै प्रकास॥ २९७॥

प्रोषित नायक यथा कवित्त॥

चंद चढ़ि देखो चारु आनन प्रवीन गति लीन होते माते गज राजनि को ठिलि ठिलि। बारिधर धारनि तें बारनि पै ह्वै रहे पयोधरनि ह्वै रहे पहारनि को पिलि

पिलि॥ दई निरदई दास दीनो है बिदेस तऊ करो न अंदेस तुव ध्यान ही सो हिलि हिलि। एक दुख तेरो ह्वै दुखारी नत प्रान प्यारी मेरो मन तोसो नित आवत है मिलि मिलि॥ २९८॥

लहलह लता डह डह तरु डारैं गह गह भयो गगन कै आयो कौन बरिहै। चह चह चिरी धुनि कह कह केकिन की घह घह घन सोर सुनते अखरि है॥ दास यह यहहीं पवन डोलि महं महं रह रह यहई सुनावत दवरि है। सह सह समर की बह बह बीज भई तहं तहं तिय प्रान लीवे की खबरि है॥ २९९॥

दशा भेद दो॰॥

दरसन सकल प्रकार पुनि, इनै तिहुंन में मानि।
चहूं भेद में दास पुनि, दसो दसा पहिचानि॥ ३००॥
लालस चिन्ता गुन कथन, स्मृति उद्बेग प्रलाप।
उन्मादहि ब्याधिहि गनो, जड़ता मरन संताप॥३०१॥

लालसा दशा।

नैन बैन मन मिलि रहै, चाह्यो मिलन सरीर।
कथन प्रेम लालस दसा, उर अभिलाख गंभीर॥३०२॥

यथा सवैया॥

बारहो मांस निरास रहै ज्यों चहै वहै चातिक स्वाति की बुन्दहि। दास ज्यों कंज के भानु को काम बिचारे न घाम के तेज के तुंदहि॥ ज्यों जलही में जियैं झखियां लखि आज उसंगिन के दुख दुंदहि। त्यों तरसाय मरैं सखियां अंखियां चहैं मोहन लाल मुकुन्दहि॥ ३०३॥

चिन्ता दशला० दो० ।

मनसूबनि तें मिलन को, जहं संकल्प बिकल्प ।
ताहि कहैं चिन्ता दसा, जिन के बुद्धि न अल्प ॥३०४॥

यथा सवैया ।

ये बिधि जो बिरहागि के बान सो मारत हो तो इहै बर मागौं । जौ पसु होउं तऊ मरि कैसहूं पांवरी ह्वै हरि के पग लागौं ॥ दास पखेरुन में करो मोर जु नन्द किशोर प्रभा अनुरागौं । भूखन कीजिये तौ बन मालहि जातें गोपालहि के हिय लागौं ॥ ३०५ ॥

कवित्त ॥

काहू को न देती इन बातन को अंत लै यकंत कंत मानि कै अनंत सुख ठानती । ज्यों को त्यों बनाइ फेरि हेरि इत उत हियराहि में दुराइ गृह काजनि बितानती ॥ दास जू सकल भांति होती दुचिताई फेरि ऐसी दुचिताई मन भूलेहू न आनती । चित्र के अनूप वृज भूप के सरूप को जो क्यों हूं आप रूप ब्रज भूप करि मानती ॥ ३०६ ॥

बिकल्प चिन्ता यथा सवैया ॥

कोठनि कोठनि बीच फिर्‌यो वह भेख बनाय भुलावनवारो । ऊपरी बात सुनाइ कै आपनी लै गयो भीतरी भेद हमारो ॥ दास लियो मन योटि अगोटि उपाइ मनोज महोप जुझारो । छूटै न क्यों सखी लाज गढ़ी पहिले ही गयो सुधि लै हरिकारो ॥ ३०७ ॥

गुन कथन दो० ।

दास दसा गुन कथन में, सुमिरि सुमिरि तिय पीय ।
अंग अंगनि बरनै सचित, रस रंगनि रमनीय ॥ ३०८ ॥

यथा सवैया ॥

चंद सो आननकी चटकीलता कुंदन से तन की छबि न्यारी। मंजु मनोहर बार को बानक जागे की वे अंखियां रतनारी ॥ होत बिदा गहि कंठ लगावहु बाहु बिसाल प्रभा अधिकारी। वे सुधि थी मन मोहन की मन आनत ही करिबे सुधि भारी ॥ ३०९ ॥

स्मृति दशा दी० ।

जहं यकाय चित करि धरे, मन भावन को ध्यान ।
स्मृति दसा तेहि कहत हैं, लखि लखि बुद्धि निधान ॥३१०॥

यथा सवैया ।

स्याम सुभाय में नेह निकाय मैं आप हू ह्वै गए राधिका जैसी । राधे करै अवराधे जु माधौ मैं प्रेम प्रतीति भई तनमै सी ॥ ध्यान हीं ध्यान तें ऐसो भयो अब कोऊ कुतर्क करै यह कैसी। जानत हौं इन्हें दास मिल्यो कहूं मंत्र महा पर पिंड प्रवेसी ॥ ३११ ॥

राधिका आधिक नैननि मूदि हियेही हिये हरि को छबि हेरति। मोर पखा मुरली बनमाल पितंबर पांवरी मै मनु फेरति ॥ गाइ बराइ हिये ही हिये लखि सांझ समै घर धाइ को घेरति। दास दसा निज भूलि प्रकास हरे ही हरे ही हियो हियो टेरति ॥ ३१२ ॥

उद्वेग दशा दी० ।

जहां दुःख रूपी लगै, सुखद जु वस्तु अनेग ।
रहिबो कहुं न सोहात सो, दुसह दसा उदबेग ॥३१३॥

यथा कबित्त ।

मेरी बिन प्रीतम प्रकृत मेरी औरै भई तातें अनुमानो अब जीवन अलप है । काल की कुमारी सी सहेली

हितकारी लगैं गीत रसवारी मानो गारी की जलप है ॥ बिखसे बसन लागे आगसी असन जारै जोन्ह को जमन काल मानहुं कलप है। दसौ दिसि दावा सी पजावा सी पवरि भई आवासी अजिनि औनि तावासी तलप है ॥३१४॥

पुनः सवैया।

याहि खराद्यो खराद चढ़ाय बिरंचि बिचारि कछू मलिनाई। चूर वहै बगस्यो चहुंओर तरैयन की जू लसै छबि छाई॥ दासन ये जुगुनू मग फैले निसा रज है इत हूं मरि आई। चोखन है कि या धाम अनोखो ससी न अली यह है सबिताई॥ ३१५॥

प्रलाप दशा दोहा।

सखिजन सो कै जड़नि सो, तन मन भस्यो संताप॥
मोह बैन बकिबो करै, ताको कहत प्रलाप॥ ३१६॥

यथा सवैया।

तिहारे बियोग से द्योस बिभावरी बावरी सी भई डावरी डोलै। रसाल के बौरनि भौंरनि बूझती दास कहा तज्यो नागर नोलै॥ खरी खरी द्वार हरी हरी डार चितै बररातो बरी बरी होलै। अरी अरी बीर नरी नरी धीर मरी मरी पीर घरी घरी बोलै॥ ३१७॥

पुनः।

चंदन पंक लगाय कै अंक जगावति आगि सखी बर जोरै। तापर दास सुबासन ढारि कै देति है बारि बयारि झकोरै॥ पापी पपीहा न जोहा थकै तुव पीपी पुकार करै उठि भोरै। देत कहे है दहे पर दाह गई करि जाहु दई के निहोरै॥ ३१८॥

पुनः।

जाति में होति सुजानि कुजानि न कानन फोरि करो अध सांसी। केवल कान्ह की आस जियो जग दास करो किन कोटिन चांसी॥ नारि कुलीन कुलीननि लै रमै मै उनमै चह्यो एकन आंसी। गोकुल नाथ के हाथ बिकानी हौं सो कुलहीन तौ हौं कुलनासी॥ ३१९॥

उन्माद दशा दोहा।

सो उनमाद दसा दुसह, धरै बौरई साज।
रोइ रोज बिनवत उठै, करै मोह मै काज॥ ३२०॥

यथा सवैया।

क्यों चलि फेरि बचायो न क्यों हूं कहा बलि बैठे बिचारो बिचारनि। धीर न कोऊ धरै बल बीर चढ़्यो बृज नीर पहार पगारनि॥ दास जू राख्यो बड़े बरखा जिहि छांहं में गोकुल गाइ गुआरनि। छैल जू सैल सो बूड़्यो चहै अब भावती के अंसुआन के धारनि॥ ३२१॥

पुनः कवित्त।

तो बिन बिहारी की निहारी गति औरई मै बौरई के बृन्दनि समेटत फिरत है। दारिम के फूलन मै दास दास्यो दोनो भरि चूमि मधु रसनि लपेटत फिरत है॥ खंजनि चकोरनि परेवा पिक मोरनि मराल सुक भौंरनि समेटत फिरत है। कासमीर हारनि को सोन जुही मारनि को चंपक की डारनि को भेंटत फिरत है॥ ३२२॥

व्याधि दशा दोहा।

ताप दुबरई स्वास अति, व्याधि दसा मै लेखि।
आहि आहि बकिवो करै, त्राहि त्राहि सब देखि॥३२३॥

यथा कवित्त।

एरे निरदई दई दरस तो देरे वह ऐसी भई तेरे या बिरह ज्वाल जागि कै। दास आस पास पुर नगर के बासी उत माहहू को जानत निदाहै रह्यो लागि कै॥ लै लै सीरे जतन भिगाये तन ईठि कोऊ नीठि ठिग जावै तऊ आवै फिरि भागि कै। दीसी मै गुलाब जल सीसी में मगहि मूखै सासी यों पिघिलि परै अंचल सो दागि कै॥ १२४॥

कामता यथा सवैया।

कोऊ कहै कर स्फटक तंत में कोऊ परागन मै उनमानी। ढूंढ़हुरी मकरंद की बुन्द मै दास कहै जल जागु न ज्ञानी॥ कामता पाय रमा ह्वै गई परजंक कहा करै राधिका रानी। कौल मै दास निवास किये है तलास किये हूं न पावत प्रानी॥ १२५॥

जड़ता दशा दोहा।

जड़ता में सब आचरन, भूलि जात अन्यास।
तिमि निद्रा बोलनि हंसनि, भूख प्यास रस वास॥ १२६॥

यथा सवैया।

बात कहे न सुनै कछु काहू सो वादिन तें भई वैसियै मूरति॥ साठ्यो घरी परजंक परी सु निमेख भरी अखियानि सो घूरति। भूख न प्यास न काहू की वास न पास ब्रतीन सो दास कछू रति॥ कौनै मुहूरत सोने कही तुम कौने की है यह सोने की मूरति॥ १२७॥

मरन दशा दोहा।

मरन दसा सब भांति सो, ह्वै निरास मरि जाय।
जीवन मृत कै बरनिये, तहं रस भंग बराय॥ १२८॥

यथा सवैया।

नारी न हाथ रची उहि नारी के भारनी मोही मनोज मद्य की। जीवन ढंग कहातें रह्यो परजंक में आधे रही मिलि जाकी॥ बात को बोलिबो गात को डोलिबो हेरै को दास उसासऊ थाकी। सीरी ह्वै आई ततार्ई सिधाई कहो मरिवे में कहा रह्यो बाकी॥ ३२९॥

इति श्री शृंगार निर्णय श्री भिखारी दास कायस्थ कृत सम्पूर्ण शुभमभूयात्।

अकलू लाल ने छाप कर प्रकाश किया।

# सूचना।

प्रगट हो कि जब तक दूसरी सूचना न हो ग़ाज़ीपुर निवासी परमोत्साही श्री श्याम बिहारीमिश्रजी बिहार-बन्धु के सहकारी सम्पादकों में नियुक्त हुए।

प्रबन्ध कर्त्ता।

## बिहार-बन्धु के नियम।

१—प्रवंत मूल्य ... ... ... ... २)

छ महीने का ... ... ... ... १।)

राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)

विद्यार्थियों से ... ... ... ... १)

प्रति खंड का ... ... ... ... ।)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है।

एकवार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ।)॥

तीनवार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ।)।

छ वार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ।)

बारह वार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिवार ... ।)

बारह वार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह वार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिवार देने के बाद, जितने दिनो तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति वार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

MAY 1895 VOL. XXIV—NO 5

मासिक पत्र ।

मई १८९५ । चौबीसवां भाग—नम्बर ५

१ द्रव्य की उत्पत्ति के लिये आवश्यक चीज़ें ।
२ भरतपुर की लड़ाई ।
३ हिंदी भाषा की शोचनीय अवस्था हमें दूर क्यों नहीं करनी चाहिये?
४ देशी समाचार पत्र ।
५ ( सवैया ) परकीया खण्डिता ।
६ बाराणसी साधु शुश्रूषालय ।
७ राजा शिवप्रसाद सी० आई० ई० ।
८ राजस्थान समाचार ।
९ स्थानीय ।
१० परोपकारी पुरुष ।
११ सावन सोहावन ।
१२ बिराजुद्दौला ।

बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाख़ाना,

# बिहार-बन्धु।

न० ५—मई १८९५।


## द्रव्य की उत्पत्ति के लिये आवश्यक चीज़ें।

द्रव्य की उत्पन्न करने के लिये आवश्यक दो बातें हैं। एक तो मिहनत, और दूसरे काम में आते सृष्टि के पदार्थ। मिहनत भी दो तरह की है; शारीरिक और मानसिक। किसी काम में मिहनत कितनी पड़ती है उसका अन्दाज़ ठीक करने के समय केवल शारीरिक या मानसिक श्रम ही पर दृष्टि नहीं रखना चाहिये। पर उस श्रम के साथ दूसरे तरह के जितने कष्ट और दुख उठाने पड़ते हैं उनको भी ध्यान में लाना चाहिये। सृष्टि के पदार्थ में तो मनुष्य की इच्छा पूरी ही ऐसे ही कितने पदार्थ पैदा होते हैं, केवल उनको हाथ में लाने की जो मिहनत होती है वही माफ़ है। कितने पहाड़ों में गुफायें होती हैं, पेड़ों में खोखले होते हैं जो ऐसे रहते हैं जिनमें मनुष्य रह सकें। फिर मेवा, मधु, कंद मूल आदि पदार्थों से भी मनुष्यों का काम एक दम पूरा हो जाता है पर इसमें भी उनको लाकर अपने हाथ करने की मिहनत पड़ती है।

इनके अलावे दूसरी बहुत सी बातों में केवल पदार्थों को अपने हाथ ही करने की मिहनत नहीं पड़ती पर हस्तगत करने के बाद भी बिना कुछ श्रम किये मनुष्य के काम नहीं आते। जो जंगली लोग शिकार से अपना गुज़ारा करते हैं वह भी केवल शिकार ही पाकर कृतार्थ

नहीं होते। शिकार को खाने के योग्य बनाने में भी थोड़ी बहुत मिहनत करनी पड़ती है। बहुत से पदार्थ तो जैसे सृष्टि में मिलते हैं वैसे ही काम में नहीं आते। थोड़ी बहुत मिहनत सभी में करनी पड़ती है किसी का काम में लाने के पहले बिलकुल स्वरूप बदल देना पड़ता है। खान का निकला हुआ लोहा और जिस लोहे की छूरी बनती है उसमें कितना अंतर होता है! जिस कागज़ पर यह छपा है और जिस कपास से यह कागज़ बना है दोनों में कितना प्रभेद है! लैम्प का शीशा और वह बालू जिससे यह बना दोनों में कितना फ़र्क़ है!

इन बातों से यह नहीं समझना चाहिये कि जो वस्तु मनुष्य को केवल हस्तगत करने ही से मिल जाती है वह तो ईश्वर कृत है और बाक़ी तो ईश्वर ने जो सामग्री दी थी उससे मनुष्य ने बनाई। दोनों में मनुष्य केवल मिहनत मात्र का अधिकारी है; उसने केवल परिश्रम के और कुछ नहीं किया। बाक़ी सब का करने वाला ईश्वर कृत नियम है। इसी पगड़ी को विचार पूर्वक देखिये जिसे हम मनुष्य की बनाई समझते हैं उसमें हमने क्या किया? मनुष्य ने हाथ हिला कर अपने हाथ में कुदाल ले ली और हाथ ही हिला कर ज़मीन में लगाई। ज़मीन को परमेश्वर ने नरम बनाई है और यह नियम किया है कि नरम वस्तु में कठिन पदार्थ गड़ायें तो वह नरम वस्तु जगह दे देती है इसी नियम के अनुसार कुदाल के पड़ते ही ज़मीन उखड़ उखड़ कर फुलकी हो गई फिर मनुष्य ने परिश्रम करके उसमें बीज बोई वह गुरुत्वाकर्षण से नीचे गई। मनुष्य ने परिश्रम कर के पानी खींचा वह यांत्रिक नियम के अनुसार ऊपर आया, और पानी का डील उस बीज पर परिश्रम करके ढाला गया इससे सृष्टि के नियम के अनुसार पानी उस बीज पर उमला गया। बीज भींगा और रसायन के नियम के अनुसार पानी बीज और ज़मीन के संसर्ग से वह बीज और ज़मीन का पृथक करण हुआ। ज़मीन बीज सी होकर बीज में मिल गई, गर्मी से बीज बड़ा हुआ, अंकुर निकला उसका पेड़ हुआ, पेड़ बड़ा हुआ उसमें फल निकला, मनुष्य ने तोड़ कर उसे वृक्ष से अलग किया फिर सृष्टि के नियम के अनुसार हाथ हिला

कर उसने रूई निकाली फिर रूई को दोनों हाथों से खींचा, इससे उसके स्वाभाविक गुण के अनुसार तागा निकला फिर इन तागों को लंबा आड़ा, ताना भरनी के नियम के अनुसार हाथ हिला हिला कर ठीक करने से पगड़ी बनी। अब इसमें पूर्ण विचार करके बारीक दृष्टि से देखना उचित है कि इन सब में मनुष्य से कितना काम हुआ और सृष्टि के नियम से कितना हुआ। पक्का विचार करने से इतना ही मालूम होगा कि मनुष्य ने केवल हाथ पैर हिलाने के सिवाय दूसरा कुछ भी काम नहीं किया। पर हाथ पैर इस ढंग से हिलाया कि सृष्टि का नियम आपही आप काम करता चला जाये और उन नियमों से अपने काम की वस्तु उत्पन्न हो जाये। सारांश यह कि गति का पैदा करना और गति को रोकना इसके सिवाय मनुष्य के बल से दूसरा कुछ नहीं होता बाकी जो कुछ होता है सृष्टि के नियम से होता है।

जो कोई ऐसी शंका करे कि जब मनुष्य से गति के सिवाय और कुछ नहीं बनता तब बुद्धि, सूक्ष्म दृष्टि युक्ति आदि का उपयोग ही क्या ? इनके रहने ही से क्या और नहीं ही रहने से क्या ? इसका उत्तर यही है कि मनुष्य के पास गति पैदा करने की और गति रोकने की शक्ति है इसी से मनुष्य को जो चाहता है मिल जाता है बुद्धि आदि जिन मन की शक्तियों का ऊपर नाम लिया गया वे द्रव्य उत्पत्ति में बड़े काम की हैं। ऐसी गति पैदा करने से ऐसा फल होगा यह बुद्धि सूक्ष्म दृष्टि विचार और तर्क बिना नहीं समझ पड़ता! सृष्टि के नियम कि जिन पर द्रव्य उत्पत्ति का मुख्य आधार है उसे ढूंढ़ कर निकालने और उसका फ़ायदा उठाना इसमें बुद्धि का बहुत ही खर्च है।

सृष्टि जन्य पदार्थों में बहुत से ऐसे हैं जो समाप्त नहीं हो सकते, और बहुत से ऐसे हैं जो समाप्त हो जाते हैं। "समाप्त नहीं हो सकते" इससे यह नहीं समझना चाहिये कि कभी घटेहींगे नहीं पर यह कि अभी घट गये तो क्या हुआ पर उससे भी अधिक हो जायें ऐसे ही से तात्पर्य है। ऐसे देशों में जहां नई बस्ती हुई है ज़मीन इतनी अधिक होती है कि कई पीढ़ी तक लोगों की बस्ती बढ़ती ही चली जाये

या नये बसनेवाले आ जावें तो भी न समाप्त हो। पर पुराने देश में कहीं कहीं तो ढूंढ़ने से भी ज़मीन नहीं मिलती बहुत से देशों में ऐसा हो गया है कि अच्छी जोतने लायक ज़मीन नहीं मिलती है। मीठा पानी भी बहुत से स्थानों में जितना चाहिये उतना मिल सकता है पर उसका भी बहुत से स्थानों में अभाव हो रहा है, और कहीं कहीं तो पानी की कमी नहीं है पर उन स्थानों में ज़मीन जितनी चाहते हैं नहीं मिलती। ज़मीन से जो चीज़ें निकलती हैं वे भी प्रायः खाली हो जाती हैं। विलायत में बहुत सी कोयले की खाने खाली हो गई हैं और बाकी के विषय में यह भय है कि तीन सौ वर्ष में खाली हो जायेंगी। जो जो धातु ज़मीन में से निकलती है उसका भी यही हाल समझना चाहिये पुरानी खानों में से सोना चांदी दिन दिन समाप्त होता जाता है और यदि नई खाने न निकलतीं तो सोना चांदी की उत्पत्ति का अन्त कब न हो गया होता।

थोड़े बहुत पदार्थ समाप्त हो जाने वाले हैं पर नियमित हैं उसी पर दुनियां के हाल की अर्थ सम्बन्धी रचना का आधार है। जब तक कोई वस्तु इतनी रहती है कि समाप्त नहीं होती तब तक उसकी कोई कीमत नहीं उपजती क्यों कि जो वस्तु मुफ़्त में मिल सकती है उसके लिये कोई पैसा नहीं खर्च करता। पर उस वस्तु को एक दो आदमी एका करके आप ही ले ले और भाव उपजावें तो उपज सकता है।

ज़मीन जब तक अधिक रहती है तब तक कोई उसका भाड़ा नहीं देता पर ज़मीन की उसमें भी अच्छी ज़मीन का अब अभाव है उसका एक फल तो यह निकला कि उसका भाड़ा अथवा मालगुज़ारी देना पड़ता है और दूसरे यह कि मनुष्य की बस्ती बढ़ाने में रोक रखने की आवश्यकता है।

---

# भरतपुर की लड़ाई ।

## ( ऐतिहासिक विषय )

भरतपुर के युद्ध के सम्बन्ध में एक गीत प्रचलित है जिसे सहयोगी एडुकेशन गज़ट के पत्र प्रेरक ने छापा है। इस गीत में पहली और दूसरी दोनों लड़ाई का वर्णन है। इस गीत से राज काज कैसे होता है? कम्पनी कौन है? युद्ध के आरंभ में किसी किसी सिपाही का कैसा व्यवहार हुआ। भरतपुर के अधिकार के समय में किसी किसी देशीय सरदार के विश्वासघात के सम्बन्ध में साधारण लोगों का क्या विश्वास था आदि बहुत सी बातें प्रगट होती हैं। कुछ दिन हुए नौर्थइंडियन नोट्स नाम एक अंग्रेज़ी मासिक पत्र में यह गीत रोमन अक्षरों में प्रकाशित हुआ था। वह गीत यह है—

कलकत्ते में बैठके मसकत (?) करि भाई।
सब मिलके अंग्रेज़ों ने एक अर्ज़ी बनाई ॥ १ ॥
वे बोले कि रवाना करो चिट्ठी की शिताबि।
जो इस पर हुक्म जल्दी से ही आवे किताबि ॥ २ ॥
लिख कर अर्ज़ी के तईं नाव में डाला।
जब नाव लगी पार तो अर्ज़ी को निकाला ॥ ३ ॥
जिसे कंपनी कहते हैं उसे अर्ज़ी सुनाई।
अर्ज़ी सुनके वह बहुत दिल में सराही ॥ ४ ॥

गीत बनानेवाला शायद कम्पनी किसी एक आदमी या बहदे का नाम समझता था।

मंसूबा लगे करने सुनके फिरंगी।
तैयार करी फौज जहां तक है कि जंगी ॥ ५ ॥
परवाना ले हरकारे तरफ़ चारों के कूटे।
सब फौज जमा होके गोया तारों से टूटे ॥ ६ ॥
कलकत्ते में सब फौज जमा हो गई आकर।
तब लाट गवर्नर ने कहा कूचको जाकर ॥ ७ ॥
साहब ने कहा जाओ फ़ज़र कूच की ठहरी।
तब रोने तिलंगों की लगी मा और महरी ॥ ८ ॥

एहिवार मेरे चोटियों की रक्खो गीसइयां।
जो आन मिले मुझको मेरे जल्दी से सइयां ॥ ८ ॥
ले लिहे दो ढाई बरदा जीत के खइहें।
इस बहन की बुरी चाकरी कि बन्दूक न धरिहें ॥ १० ॥
सुन सुनके खबर उनके बूता फाटे।
जो खाते खुराकों की हाथी के से पट्ठे ॥ ११ ॥
अंटा गुड़ गुड़ ने करी पहले चढ़ाई।
जान से जाता रहा पर फते न पाई ॥ १२ ॥

अंटा गुड़ गुड़ (किसी अंग्रेज़ अफ़सर का नाम सिपाहियों का रक्खा)। पहली बार की चढ़ाई में कर्नल मेटलैन्ड किले की दीवार तक पहुंच गये थे पर वहीं मारे गये पर जीत न सके-संभव है कि उनही का नाम लोगों ने रक्खा हो।

मालूम नहीं किस तरह पहुंचा था किले पर।
और तोप की जल्दी से गोलन्दाज़ ने भर कर ॥ १३ ॥
इस क़दर गोलन्दाज़ ने गोले से उड़ाया।
लोगोंने उड़ाया ढूंढ़ा तो कहीं खोज न पाया ॥ १४ ॥
और फिर कर करी भरतपुर की तइयारी।
क्या जाने अब कैसी करें बलदेव बिहारी ॥ १५ ॥

अब दूसरी बार की चढ़ाई की तइयारी जो २१ वर्ष के बाद हुई उस का वर्णन आरंभ हुआ।

साहब ने कहा सन्वी "वेल" तुम न डरेगा।
जब योंही कज़ा आये तो क्या मय न मरेगा ॥ १६ ॥
एक सींक से झाड़ो तो कहां झड़ता है यारो।
सौ सींक से झाड़ो तो पहाड़ों को बहारो ॥ १७ ॥
जिधर सुनो मर्दों की उधर नामवरी है।
छिनड़ों ने भी तलवार कहीं रण में करी है ॥ १८ ॥
गड़ गड़, गड़ गड़, गड़ गड़ गड़ गड़।
तम्बूर बजा दिये पकड़ जानुओं पर धर कर ॥ १९ ॥

लश्कर में उखड़ने लगे तम्बू और क़नातें।
कितने सिपाहियों की लगी छिपने की घातें ॥ २० ॥

(लड़ाई पर जाने का मौक़ा देख बहुत से सिपाही छिपने की घात में लगे कि जिस में न लड़ना पड़े)

जो भागे सो पकड़े हवालात में दिये।
और बेत लगे डेढ़ सौ हर एक महीने ॥ २१ ॥
हर एक सिपाही पर विकट पहरा और चौकी।
मुद्दत से तलब खाते रहे आठ और नव की ॥ २२ ॥
मुद्दत से खिलाया है तुम्हें अपना ख़ज़ाना।
अब वक़्त लड़ाई के बताते हो बहाना ॥ २३ ॥

इतिहास से यह बात प्रगट है कि गीत बनाने वाले ने वृथा सिपाहियों की निन्दा की है क्यों कि इस लड़ाई में गोरे लोगों ने भी जहां जीतने की आशा छोड़ हुक्म पाने पर भी आगे बढ़ने पर इन्कार किया था—वैसी भयानक जगह में देसी सिपाहियों ने अपनी इच्छा से दृढ़ता के साथ अपने प्राणों की विसर्जन किया। यह तो बहुत दिन की बात हो गई हाल में भी मिस्र, अफ्रिका, बर्मा, अफ़्गानिस्तान जिधर देखो अंग्रेज़ी सिपाही हमेशा पीछे रहे सदा देसी सिपाहियों ही की बहादुरी रही।

फिर कुछ हुआ फ़ौज का दल टिड्डी सा सजा।
ताक़त नहीं ऐसी जो फ़तह पावे राजा ॥ २४ ॥
दिन रात चली फ़ौजें कहीं ठहरने न पाईं।
दिल्ली और मिरट की वहां छावनी आईं ॥ २५ ॥
सब घेर चारो तरफ़ पर गईं फ़ौजें।
फ़ौज से उठने लगी दरिया की मौजें ॥ २६ ॥
राजा ने चढ़ कर क़िला अपने से देखा।
बे गिन्ती पड़ी फ़ौजें कुछ भीड़ का न लेखा ॥ २७ ॥
राजा की चारो तरफ़ फिरंगी नवक हलाली।
तब राजा ने सब अपने गोलन्दाज़ डाली ॥ २८ ॥
साहब से कहो, हट कर कलकत्तेमें कुछ बा।

गर बर्सों लड़े तो भी फ़तह न पावे ॥ २९ ॥
तुम ने तो किया मोती झील पर डेरा।
मालूम हुआ हम को तुम्हें मौत ने घेरा ॥ ३० ॥
जब नौ सै नवासी पकड़ चरखी मरोड़ूं।
तब गोरे फिरंगी के तईं एक न छोड़ूं ॥ ३१ ॥

[ चर्खी मरोड़ना अर्थात तोप आदि लड़ाई के शस्त्र चलाना। ]

या जानो कि एक लहमे में भूचाल मचेगा।
हाथी और घोड़ा कहीं साबित न बचेगा ॥ ३२ ॥
तुम लोगों को परछाहीं न कभी देवेगी दिखाई।
लाट का सिर काट कर फिराय जाट की दोहाई ॥ ३३ ॥
तब लाट गवर्नर ने कहा सुन रे अभिमानी।
मालूम हुआ तुझको तेरी मौत ही लानी ॥ ३४ ॥
ये कम्पू हैं हमारे गीदा बर्रे के कुत्ते।
एक लहमे में करते हैं किला मार कर लत्ते ॥ ३५ ॥
कुर्सी तो बिछा दूंगा महल बीच में जाकर।
दो घड़ी तो आराम करूं हाज़री खा कर ॥ ३६ ॥
होते ही हुकुम चलने लगे गोले पर गोले।
तब लाट गवर्नर गोलन्दाज़ों से बोले ॥ ३७ ॥
इधर से तुम्हारा भी चले बम्ब का गोला।
हमको दी जवाहिर ने यों आ के डोला ॥ ३८ ॥

मन ही मन कहने लगे कि जवाहिर ने मुझे धोखा दिया सहज ही में भरतपुर दखल कराने की बात थी अब तो युद्ध होने लगा। यह जवाहिर भरतपुर राज का विश्वस्त कर्मचारी और अपनायत जवाहिर-साल था।

मारे हैं किला बीच में ये तौल कर गोले।
गिरते हैं बादल के ज्यों झड़ बांध कर ओले ॥ ३९ ॥
एक र बजो दिया हूं फिरंगी को बनाय।
जो दंग [illegible] कर क्यों धूम मचाये ॥ ४० ॥

फिर लिख के जवाहिर भेजा एक बीच से अर्ज़ी।
उसमें तो मज़मून था खुद अपनी गर्ज़ी॥ ४१॥

ऐसी चीठी भी हो सकती है जिससे युद्ध में निरत अंग्रेज़ भयभीत होंगे; ऐसी असम्भव बात राजा ने विश्वास करके चीठी लिखने की जब आज्ञा दी तब बीच में जवाहिर ने अंग्रेज़ों की जो चीठी लिखी उसमें सिर्फ़ स्वार्थ की बात थी (मालिक के उपकार की कोई नहीं)

यह शर्त है कोई तम्बूर न बजावे।
फिर जान से वह वहीं मारा जावे॥ ४२॥
[ तम्बूर अर्थात लड़ाई का बाजा। ]
बढ़ कर अंग्रेज़ों ने तम्बूर बजाया।
राजाने कहा हाय! फिरंगी धस आया॥ ४३॥

यह बात गीतमें साफ़ नहीं है कि अंग्रेज़ दूसरी बार की चढ़ाई में कैसे भरतपुर में चढ़ आये। पर यह साफ़ है कि जवाहिर के किसी तरह की विश्वासघातकता और उसकी लिखी लड़ाई का बाजा न बजाने ही की शर्त से किसी न किसी प्रकार यह घटना हुई।

मर जाये वह किया जिसने यह साखा (?)
वहां आप मिला मुझको बात में रक्खा॥ ४४॥
जब लीनी पठानोंने वहां मियान से संगीं।
औचक में घबरा गये सब गोरे फिरंगी॥ ४५॥
काट के सब गोरे और फिरंगी वहां डाले।
और खून के बहने लगे नदी औ नाले॥ ४६॥
फिर पीछे से जब सज कर एक कंपनी आई।
तब देखी पठानों की वहां मौत सर आई॥ ४७॥
तम्बूरचीं तम्बूर लगे धूम से बजाने।
सूर लगे रण में, कला नट की सिखाने॥ ४८॥
सद-आफ़री करिये कि करि नमक हलाली।
मर गया पर हाथ से तलवार न डाली॥ ४९॥
गिटविट गिटविट से अंग्रेज़ी में कुछ बात सुनाई।

तब गोरों ने बंदूकों पर संगीन चढ़ाई ॥ ५० ॥
ले लीन भरतपुर का क़िला ही गया हल्ला ।
ज्यों लिया विभीषण ने रावण से लंका ॥ ५१ ॥

विश्वास घातकता के बाद जवाहिर साल को विजयी अंग्रेज़ों ने भरतपुर का राज प्रति निधि नियुक्त किया था इसी से गीत बनाने वाले ने उस की विभीषण से तुलना की है ।

तब पकड़ जवाहिर के तईं क़ैद कराया ।
वेल ! तुझसा हरामी हमने कहीं न पाया ॥ ५२ ॥

गीत बनाने वाले की लिखावट से जान पड़ता है कि बीर गवर्नर ने जवाहिर की विश्वासघातकता से अवश्य ही घृणा दिखलाया होगा । मिल साहब के इतिहास में लिखा है कि—दुर्जन साल को क़ैद करके इलाहाबाद में भेजा गया । क़िला जीतने के दूसरे दिन सेनापति लौर्ड कपरमियर और सर चार्ल्स मेटकाफ़ ने गढ़ के भीतर प्रवेश किया और २० वीं जनवरी को बालक राजा बलवन्त सिंह को पैतृक सिंहासन पर बिठाया । लड़के के पिता की प्रधान स्त्री को राज प्रतिनिधि और बालक की रक्षक होने की घोषणा की गई । राज काज का भार उस लड़के के पिता के विश्वस्त कर्मचारी जवाहिर साल और चिन्तामन फ़ौजदार के हाथ दिया गया पर व्यवस्था ऐसी की गई कि वे भरतपुर में रक्खे हुए एक अंग्रेज़ रेज़ीडेन्ट के मत से सब काम करें । इन दोनों सरदारों पर प्रजा को बड़ी घृणा थी । सब के दिल में ऐसा विश्वास जमा हुआ था कि इन ही दोनों की विश्वासघातकता के कारण अंग्रेज़ों का भरतपुर जीतना सहज हो गया । अंग्रेज़ों की छावनी में भी यह विश्वास इतना प्रबल हो गया था कि जब ये सरदार प्रधान सेनापति से मिलने को आये तो बहुत से देशीय लोगों ने उन की पालकी घेर ली और गाली देना शुरू किया । बहुत से देशीय लोग अंग्रेज़ों ही के फ़ौज के आदमी होंगे दूसरों का वहां जाना कैसे सम्भव है । गाली देने के अलावे उन के आदमियों को भी पीटा और यदि उन की रक्षा के लिये एक युरपीयन सेना न नियुक्त की जाती तो आश्चर्य क्या कि उन का प्राण भी चला जाता । "

इतिहास से यह बात नहीं जान पड़ती कि प्रधान सेनापति और जवाहिर से तम्बू में क्या बातें हुईं। पर यदि जवाहिर यथार्थ ही दोषी हो तो स्वदेश द्रोही विश्वासघाती को देख वीर अंग्रेज़ सेनापति के मुंह से घृणा एक बारगी प्रकाश हो जाना असम्भव क्या है। ऐसा होने से छावनी के लोगों का उस बात का जान जाना और फिर धीरे धीरे गीत बनाने वाले का भी सुनना कुछ विचित्र नहीं है।

☞ इस प्रबन्ध में कहीं कहीं तुक आदि ठीक नहीं है उसका कारण यह है कि असल में जैसा है वैसाही यहां भी लिखा गया।

---

## हिन्दी भाषा की शोचनीय अवस्था हमें दूर क्यों नहीं करनी चाहिये ?

राजस्थान समाचार।

"से गौ जैसा उत्तम दूध उसके चराने वाले और सेवा कर के सुख से रखने वाले हिन्दू को देती है वैसा ही उस को कष्ट देनेवाले, या मारने वाले दूसरे लोगों को देती है, भेद इस में इतना ही है कि आर्य्य लोगों ने तो इस को परमोपकारी पशु समझ कर इस का पालन पोषण करना अपना कर्त्तव्य समझा इस से ये लोग लाभ अधिक उठाते हैं और दूसरे इस से दूर रहने से पूरा लाभ नहीं उठाते किन्तु इस उपकारी पशु को मार कर उस की और संसार की जिस में वे आप भी आ गये हानि करते हैं। इसी प्रकार देवनागरी अक्षर और आर्य्य भाषा है जिस का दूसरा नाम हिन्दी है। देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को ठीक कामधेनु की उपमा दी जाय तो अत्युक्ति नहीं है। आज तक जितनी लिपि जानी गई हैं उन सब में देवनागरी लिपि सुवाच्य और निर्भ्रम है। इसी कारण से इस के सीखने में बहुत थोड़े काल की आवश्यकता पड़ती है। इसे आर्य्य लोग सीखी लिखी वा मुसलमान अंग्रेज आदि यह दूसरी लिपियों की अपेक्षा शीघ्र आवेगी और निर्भ्रम लिखी जायगी, फिर यदि इस से कोई लाभ न उठावे तो इसका क्या दोष है ?

भारतवर्ष में जितनी लिपियें इस समय वर्त्तमान हैं उन सब में देवनागरी प्रधान है और दूसरी है वे भी इसी के रूपांतर हैं जो इस के सीखे पीछे सुगम ही जाती हैं। जैसा शरीर और आत्मा का घनिष्ट संबन्ध होता है वैसा ही लिपि और भाषाओं का संबन्ध रहता है। जिस भाषा के लिखने के लिये जो लिपि बुद्धिमानों ने निकाली है वह भाषा उसी लिपि में शीघ्र और उत्तम प्रकार से लिखी जायगी। यदि उस की दूसरी लिपि में लिखें तो बड़ी कठिनाइयें पड़ेंगी देर से लिखी जायगी और उस में अनेक त्रुटियें रह जांयगी। भारत वर्ष की सब भाषाओं का देवनागरी लिपि से घनिष्ट सम्बन्ध हैं इस में वा इस से निकली हुई यहां की लिपियों में ही यहां की भाषा ठीक और सुगमता पूर्वक लिखी जाती हैं फारसी या अंगरेज़ी लिपि में लिखें तो काल अधिक लगे और ठीक ठीक लिख भी नहीं सकते। यदि नवीन चिन्ह बना कर भी लिखते हैं तो यथार्थ लिख नहीं सकते। हां कितने शब्द ठीक ठीक लिखे जा सकेंगे परन्तु अनेक ऐसे शब्द आ जायं जो लिखे ही नहीं जा सकते। जैसे "रामण" शब्द फारसी लिपि में और तकार और ड़ वाले सब शब्द अंगरेज़ी में शुद्ध लिखे ही नहीं जायंगे। जैसे "भरत" और "रूड़मल्ल" शब्द अंगरेज़ी में लिखेंगे तो "भरट" और "रूरमल्ल" लिखना पड़ेगा क्यों कि उस में "त" और "ड़" अक्षर ही नहीं हैं ऐसी और भी अनेक त्रुटियें रह जाती हैं। कदाचित कोई यह कहे कि नवीन चिन्ह बना कर कार्य्य निकाल लेंगे तो हम कहते हैं कि चाहे जितने चिन्ह बनाये जायंगे तो भी उन लिपियों में हमारी भाषा के सब शब्द ठीक ठीक नहीं लिखे जायंगे। अनेक चिन्ह बनाने पर भी उन का ऐसा बिढंगा स्वरूप रहता कि एक शब्द को कई प्रकार से पढ़ लो फिर उस परिश्रम का क्या फल हुआ? इधर हमारी देवनागरी लिपि ऐसी सुन्दर और निश्चयात्मक है कि जो लिख दी सो ही पढ़ा जाय, इधर उधर अन्तर ही न पड़े तो फिर इस को छोड़ कर उस में क्यों लिखें? भारतवर्ष के लोगों में से अधिक भाग की मातृ भाषा हिन्दी है और इस का देवनागरी लिपि से घनिष्ट सम्बन्ध है तो क्या आवश्यकता पड़ी है कि इस लिपि को छोड़ कर हिन्दी

भाषा दूसरी लिपि में लिखी जाय ?। उर्दू और रोमन अक्षरों में हिन्दी लिखें तो ठीक ठीक कभी नहीं लिख सकते इस लिये हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में ही लिखी जानी चाहिये। जिन जिन भाषाओं के लिये जो जो लिपियें हैं उन को छोड़ कर यदि दूसरी लिपियों में लिखेंगे तो अवश्य अन्तर आ जायगा। हमारी भाषा के शब्द फारसी और अंग्रेज़ी लिपि में लिखे जाने से अनेक अशुद्ध हो गये जिन का कुछ ठिकाना नहीं। इन दूसरी भाषाओं के योग से हमारी हिन्दी भाषा के-सौंदर्य्य में बड़ी हानि पहुंची है। यदि कोई यह कहे कि जैसे दूसरी लिपियों में हिन्दी के शब्द शुद्ध नहीं लिखे जा सकते वैसे देवनागरी लिपि में भी तो अंगरेज़ी फारसी आदि भाषाओं के शब्द शुद्ध नहीं लिखे जा सकते फिर तुम इस में क्या विशेषता बतलाते हो ? इस का उत्तर हम यह देते हैं कि हां कई शब्द हमारी देवनागरी लिपि में भी दूसरी भाषाओं के यथार्थ नहीं लिखे जायंगे परन्तु और लिपियों में नवीन चिन्ह कलपित करने से जितना काम निकल सकता है उससे अधिक काम हमारी लिपि में नवीन चिन्ह बनाने से निकल सकता है। दूसरा लाभ यह है कि जैसे उन लिपियों में चिन्ह किये हुये शब्द भी कई प्रकार से पढ़े जा सकते हैं वैसी दुर्दशा हमारी लिपि की नहीं है इसमें जो लिख दिया जायेगा वही पढ़ा जायेगा। और यह लिपि निश्चयात्मका है इसीसे शीघ्र आ जाती है। दूसरी लिपियों में जितना बोध एक वर्ष में होता है उतनाही बोध देवनागरी में तीन मास में हो सकता है फिर इससे अधिक लाभ लिपि से और क्या चाहते हैं ? ऐसी उत्तम लिपि हमारे घर में मौजूद है तिस पर भी यदि हम इसको छोड़ कर पैशाची लिपियों के पीछे दौड़ें तो इससे अधिक दुःख का विषय क्या हो सकता है ? जिस मनुष्य के पास उत्तम वस्तु मौजूद है और वह उसको छोड़ कर दूसरी निकृष्ट वस्तुओं से काम ले तो उस पर ईश्वर का कोप समझना चाहिये। हमारे पास सब से सुन्दर देवनागरी लिपि विद्यमान है इसको छोड़ कर घर की चिट्ठियें हिसाब किताब हम दूसरी लिपियों में लिखते हैं इस से अधिक हमारी मूर्खता क्या होगी ? हम यह नहीं कहते कि दूसरे देश की लिपि वा भाषा मत

सीखो वा उन से काम मतलो परन्तु हमारा प्रयोजन यह है कि जहां अपनी लिपि और भाषा से काम नहीं निकलता और दूसरी से निकलता है तो उस से अवश्य लो परन्तु अपनी भाषा से काम निकल सके वहां उन को बीच में क्यों अड़ाते हो? एक अंगरेज़ और एक मुसलमान को पत्र लिखना हो और वे दोनों हिन्दी समझ सकें तो तुम उनको पत्र हिन्दी ही में लिखो क्यों कि पत्र के पढ़ने से लिखना कठिन है तुम अपने हार्द को अपनी भाषा में उत्तम प्रकार से प्रगट कर सकोगे और वे पढ़ लेंगे। जो वे तुम्हारी भाषा और लिपि न समझ सकें तो उन की भाषा और लिपि में पत्र लिखो। परन्तु तुम अपने घरकों को ही विदेशी भाषाओं में पत्र लिखो तो हिन्दी भाषा का गला काटने के लिए इस से बुरी कौन सी छुरी होगी? बम्बई की ओर के मुसलमान बोहरे लोग गुजराती भाषा में अपने भईयाने रखते हैं वे बड़े आराम में हैं, वेही यदि उर्दू में रखें तो कभी ऐसा सुन्दर और थोड़े में हिसाब नहीं रख सकते, ऐसे ही यदि समस्त मुसलमान भाई और यहां रहने वाले अंग्रेज़ हिन्दी पढ़ें, और इस से काम लें तो बहुत संतुष्ट हो। यह कामधेनु की नाईं जैसा दान हिन्दुओं को देती है वैसा ही मुसलमान और अंग्रेज़ों को देती। परन्तु दुःख का विषय है ये दोनों जातियें इस से लाभ नहीं लेतीं। परन्तु सब से अधिक असहय शोक यह है कि आर्य्य लोग भी अपनी लिपि और भाषा को छोड़ कर विदेशी लिपि और भाषाओं की जो भले प्रकार आती ही नहीं टांग पूंछ तोड़ते हैं। और यही कारण हिन्दी की दुर्दशा का है। जिन लोगों की हिन्दी भाषा है वेही लोग यदि इसका आदर न करें तो दूसरे उसका कब आदर करेंगे? जो मनुष्य स्वयं अपनी माता को आदर नहीं देता वह यह आशा किस आधार से कर सकता है कि मेरी माता को दूसरे आदर दें?

यदि यूरोप के लोगों के पास हमारी सी भाषा और लिपि होती तो वे उसे जगत भर में फैला देते परन्तु हम ऐसे अकर्मण्य हो गये हैं कि अपनी लिपि और भाषा से घर में भी काम नहीं लेते। क्या ऐसे लोगों का कभी उदय हो सकता है? यह निश्चित बात है कि जब तक किसी

जाति की भाषा की उन्नति नहीं हो सकती तब तक उस जाति की उन्नति कभी नहीं हो सकती।

आज कल भारत वर्ष में कुछ ऐसा रंग ढंग हो गया है कि उत्तम और लाभ कारी बात के लिये भी यदि हिन्दू लोग कहते हैं तो कई मुसलमान भाई और कितने अंगरेज़ अधिकारी उस से उलटे जाते हैं जिससे देश की और अपनी दोनों की हानि करते हैं। ऐसे लोगों का मुखिया पायोनियर पत्र ता० ८ मई के अंक में लिखता है कि "हायर" और "लोअर" स्टेण्डर्ड की परीक्षा में से हिन्दी उड़ा दी गई और अब लोग आसानी से उर्दू में तय्यारी करेंगे। वह यह भी कहता है कि यह सुधार आज से कई वर्ष पहले करना चाहिये था परन्तु संकीर्ण नीति के लोगों ने इस में बाधा डाली। वह उर्दू के एक साधारण बागोबहार नामक पुस्तक की स्तुति करता है। लोग कहते हैं कि हिन्दी की उन्नति करनी चाहिये परन्तु हाथ कोई नहीं हिलाता घरोंमें बैठे उन्नति २ पुकारते हैं परन्तु बाहर निकल कर सरकार के चित्त पर इसका प्रभाव कोई नहीं जमाना। पुकारते हैं परंतु बाहर निकल कर सरकार के चित्त पर इस का प्रभाव कोई नहीं जमाता।

पायरयोनि और उस के पक्ष के लोगों को स्मरण रहे कि देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा ये आप की निकाली नहीं निकलेंगी, एक दिन वह होगा कि हिन्दी भाषा समस्त भारत वर्ष की भाषा होगी और सरकारी दफ़्तरों में जारी करनी पड़ेगी। बीच में इस अच्छे काम में जितनी बाधा डाली जाती है उतनी ही देश और सरकार दोनों को ही हानि होती है।

हिन्दी के हितैषियों को हम सचेत करते हैं कि आप को देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा दोनों ही सर्वोत्तम है आप लोग बराबर उद्योग कीजिये जब तक हिन्दी का प्रचार ठीक २ न हो जाय तब तक चुप न हूजिये एक दिन अवश्य उन्नति होगी। हमें इस बात से बड़ा सन्तोष है कि काशी की देवनागरी प्रचारिणि सभा इसके लिये बड़ा उद्योग करती है। इस सभा की नाईं समस्त भारत वर्ष में देवनागरी प्रचारिणी सभाऐं स्थापित हो जाइये और वे मिलकर उद्योग करें तो अवश्य सफलता होगी।

## देशी समाचार पत्र।

हमारे देश के जो मनुष्य थोड़ी सी भी अंग्रेज़ी जानते हैं उनकी दृष्टि में देशी भाषाओं के समाचार पत्र एक परम तुच्छ पदार्थ है और अंग्रेज़ी पत्र स्वर्ग सोपान से समधिक समादर की सामग्री हैं, इस विषम दृष्टि का और चाहे कोई कुफल हो वा न हो परन्तु इतना तो अवश्य है कि गोयास सियार की प्राप्त होता है अर्थात जो धन देशी मनुष्यों से देशी पत्रों की प्राप्त होना चाहिये था वह पायोनियर आदि विदेशी पत्र पाते हैं। दूसरा कुफल यह भी होता है कि जो विदेशी पत्र हमारे देश के निवासियों का धन लेते हैं वही भारतवासियों की शत्रुता करते हैं, और देशी पत्र बिना धन पाये भी देशहितकारी लेख लिखते हैं पर गवर्नमेण्ट और देशीय प्रजा इस कारण कुछ ध्यान नहीं देती है कि देशी पत्रों के ग्राहक अधिक नहीं होते हैं, कहिये तो जब इतने कुफल उत्पन्न होते हैं तब हमारे देश के निवासियों का देशी पत्रों की सहायता न देना देश की दुर्दशा का मूल कारण है वा नहीं।

यदि हमारे देश के निवासी कहैं कि देशी पत्रों में होता ही क्या है? जो हम उनके ग्राहक बनें और उनको पढ़के अपने चित को बहला वें? तो इसका उत्तर यह है कि अंग्रेज़ी पढ़े हुओं का परम प्रीति पात्र पायोनियर अपने पत्र में स्वयं लिखता है कि देशी पत्र वास्तव में आज कल अपने देश के प्रतिनिधि कहलाने योग्य हैं क्यों कि वह अपने कर्तव्य को बड़ी सावधानी और गम्भीरता के साथ करते हैं, पायोनियर के इस वचन को सुनके नव शिक्षित हिन्दुस्तानी क्या कुछ लज्जित न होंगे?

यदि हमारे देशी नवशिक्षित महाशय वृन्द कहैं कि देशी पत्रों में अंग्रेज़ी पत्रों की अपेक्षा पुराने समाचार छपते हैं तो यह भी उन्हीं नवशिक्षित देशियों की भूल है क्यों कि प्रत्येक अंग्रेज़ चाहे वह किसी सर्कारी आफिस में नौकर हों वा अन्य कोई कार्य्य करते हों पर अंग्रेज़ी [illegible] के समाचार सदैव भेजते हैं, यदि आईन [illegible]

खुद न भेजें तो अपनी स्त्री वा पुत्र के ही नाम से समाचार पत्रों को अवश्य ही समाचार भेजते हैं, यदि देशी मनुष्य भी अंग्रेजों के समान साहसी होकर देशी पत्रों के पास समाचार भेजा करें तो यह शिकायत काहे की रहै, देशी पत्रों के संपादक जो आजकल लिख रहे हैं वह केवल अपने परिश्रम से वा कतिपय ग़रीब हिन्दी रसिकों की सहायता से ही लिखते हैं और अपने स्वल्प धन से अपने पत्र को चला रहे हैं।

✓आज कल हमारे देश के नवशिक्षितों की यह दशा है कि जहां उन्हों ने स्कूल छोड़ा और कोई नौकरी मिली कि झट उनको पायोनियर ने नियरा लिया वा इङ्गलिशमैन की सैसने मोहित कर लिया हमने देशी पत्रों के ग्राहकों की सूचि में डिपटी कलेक्टर तहसीलदार सबार्डीनेट जज आदि महाशयों के नाम बहुत कम लिखे देखे हैं परन्तु अंग्रेजी पत्र के ग्राहक की लिस्ट देखिये तो हजारों डिपटी कलेक्टर आदि हिन्दुस्तानी सर्कारी नौकरों के नाम उनमें लिखे मिलेंगे परन्तु हम यह प्रतिज्ञा पूर्वक कह सकते हैं कि यदि हमारे देशी महाशय वृन्द देशीय पत्रों को कुछ भी सहायता दें तो देशी पत्र अपने ग्राहकों को तथा भारतवर्ष के संपूर्ण निवासियों को इतना लाभ पहुंचावें कि जो अंग्रेजी पत्रों से प्राप्त होनी असम्भव है क्यों कि जिन दुखों को देश की दीन प्रजा भोग रही है उसही दुखः दावा नल से दलित हो रहे थे इस कारण देशी पत्र संपादक भारतवासियों की दुर्दशा को दर्सासकते हैं वैसी उत्तम रीति से अंग्रेजी पत्र कदापि प्रकाशित नहीं कर सकते हैं, क्यों कि अंग्रेज संपादकों को हमारे देश की आन्तरिक अवस्था मालूम नहीं हो सकती है, रही यह बात कि अंग्रेजी पत्र जलदी समाचार प्रकाशित करते हैं इसके कारण यह है कि देशी पत्रों की धन सम्बन्धी अवस्था अच्छी नहीं है इस कारण वह समाचारों को शीघ्र प्रकाशित करने में असमर्थ हैं, भारत वर्ष में एक भी देशी अखबार ऐसा नहीं है जो रूटर कंपनी को दाम देके तार समाचार मोल लेता अथवा जिसके समाचार का प्रस्ताव लेखक लेखों के और समाचारों के एवज कुछ धन पाते हों तब कहिये कि हिन्दुस्तानी पत्र नवीन समाचार कैसे प्रकाशित कर सकते हैं परन्तु देशीपत्रों की इस दुर्बलता का कारण केवल भारतवासियों की लापरवाई है यदि भारतवासी अपने देशके पत्रों की सहायता दें तो देशीपत्र अंग्रेजी पत्रों से उत्तम हो जायं। (भा० मि०)

[ शीतलपुर सारन निवासी पांडेय दामोदर सहाय सिंह बिरचित ]

समस्या—" करि प्रीति पछिताने परी "

## ( सवैया ) परकीया खण्डिता।

बस में करिके सब ही बिधि ते विधिना बस हाथ बिराने परी। इक मानिक पाइ प्रयास बिना तेहि नाहक आजु हिराने परी॥ लिखि औ पढ़ि पण्डित होइ महा अब मूरख राज कहाने परी। बिना बूझे बिचारे अरी सजनी " करि प्रीति महा पछिताने परी " ॥ १ ॥

मृगवारि निहारि सुदूरहि ते सब ही निज आस नसाने परी। गर में इक पन्नग औचक ही मनिमाल अमोल बहाने परी। सुसुधा अवलोकि सुनैनन ते सुहलाहल खातहिं जाने परी। बिना बूझे बिचारे अरी सजनी " करि प्रीति महा पछिताने परी " ॥ २ ॥

कुल दाग लगाइ कलंकिनी ह्वै कुलटा बसुधा में कहाने परी। रहिके परदा में सदा नितही अब घूंघट खोलि दिखाने परी॥ सजि सुन्दर सीरही साज अबै यह जोगिन बेष बनाने परी। बिना बूझे बिचारे अरी सजनी " करि प्रीति महा पछिताने परी " ॥ ३ ॥

अब ती मुंह कारिख ते रंगिके उजली एक टीकी लगाने परी। मुंह गोरी सियाह रुमालहिं लै सखियानहुं देखि छपाने परी॥ सरदारन सींहि " दमीदर जू " निहचै सिर नीचे नवाने परी। बिना बूझे बिचारे अरी सजनी " करि प्रीति महा पछिताने परी " ॥ ४ ॥

तजि पावन निर्म्मल देव नदी गड़हा गुड़ही में नहाने परी। अपने करते अपने पग दीउ कुठारते काटि गिराने परी। गर गागरि बांधि गंवारिनी ह्वै अपनी तन आप बुड़ाने परी। बिना बूझे बिचारे अरी सजनी " करि प्रीति महा पछिताने परी " ॥ ५ ॥

समस्या—" प्रेम की बारुनी छान चुकी "

## सवैया।

घर की बनकी नर नारि जिते हमरी कुलटापन जान चुकी। गुरु लोगन के अभिमान दमोदर दीरघसान गुमान चुकी॥ ब्रज माहि चबाव चलावन की सखियानहुं की वह बान चुकी। तबते असहाल भयी जबते हम " प्रेम की बारुनी छान चुकी " ॥ १ ॥

सिख सुन्दर कारिहि तूनहुं की हठिकै उनको अपमान चुकी। सिरभार कलंक लई सी दमोदर जानि तमाम जहान चुकी॥ तुम्हरेई लिये चहिये सो करी अब ते सबही इहसान चुकी। तुम कानी न कानी चही सो करी हम "प्रेम की बारुनी छान चुकी"॥ २॥

तब दूबर देह भयो जब हीं झरी लागी झरै चख मेघहुं की। सुधि आन की राखिबी दूर दमोदर राखतिना अपने तनु की॥ इतते उत डोलत बोलत ना कछु कानन बात करै हितु की। तुमको तबहीं पहिचान चुकी तुम "प्रेम की बारुनी छान चुकी"॥ ३॥

करि कोटिन यत्न अनेक थकीं कहुं प्रीति न या जग माहिं लुकी। बिपरीत भई फलरीत दमोदर जे उन कीन्ह उपायहुं की॥ छिन देखो बिचारि ज़रा हियमें सरिता रतनाकर पै न रुकी। अब याते कहौं सुनि लेहु सबै हम "प्रेम की बारुनी छान चुकी"॥ ४॥

हरि प्रेषित आवत उद्धव को लखि के ब्रज की बनितान झुकी। अरु पूछत नाम सुठाम दमोदर हेतु सुया ब्रज आवनु की॥ सुनि सो तिन भाषत औ उपदेश संदेश सुने हरि से हितु की। कछु काम बिराग अमी को नहीं हम "प्रेम की बारुनी छान चुकी"॥ ५॥

फल पूजन ते कहा प्रेतन के परमेशहिं की जो अराध चुकी। घर बार ते कौन प्रयोजन है रिस राग सबै जब त्याग चुकी॥ कहा काज दमोदर घूघट को जब बीच सभा महँ नाच चुकी। मधु योग की कौन प्रयोग हमै जब "प्रेम की बारुनी छान चुकी"॥ ६॥

सब हीं सुख सम्पति जे हरि पै तन प्राण निछावर मान चुकी। इक आस भरोस उन्हीं की दमोदर जेती रही सब आन चुकी॥ हित मीत सखा पति जो कहिये उनही को सबै कछु जान चुकी। धन वे जिन या बसुधा बसिके हरि "प्रेम की बारुनी छान चुकी"॥ ७॥

---

## बाराणसी साधु शुश्रूषालय।

यह बात सब ही लोगोंको बिदित है कि बनारस अथवा काशी भारतवर्ष का एक बहुत प्राचीन नगर और पुण्य क्षेत्र है। शास्त्रों में भी

कहा है कि सब तीर्थों का १५ कला महात्म्य इस पुण्यक्षेत्र काशी में वर्तमान है। ऐसे कोई देवता नहीं हैं कि जिनकी प्रतिष्ठा काशी में न हो। अतएव कह सकते हैं कि काशीधाम महात्म्य कैलाश की अपेक्षा कम नहीं है। इसीमें भूतभावन भगवान् भूतेश्वरी योगमाया भगवती को संग लेकर विश्वेश्वर अन्नपूर्णा रूपसे सदा विराजमान रहकर हर घड़ी मुक्तिद्वार को उन्मुक्त किये रहते हैं। इसी कारण भारतवर्ष के सकल प्रान्तों के पापी, तापी, साधु, असाधु प्रायः सबही प्रकार के जन इस पवित्र धाम में आया जाया करते हैं। इस प्रकार यहां बड़ी भीड़भाड़ रहती है जिस के कारण समय २ पर कई प्रकार के रोग फैलते जाते हैं और कई लोग इस संसार से विदा होते चले जाते हैं। और यद्यपि हमारी दयावती सर्कार ने तथा प्रदेश के कई धनी और भद्रपुरुषों ने इन रोगग्रस्त साधुओं और अनाथों के चिकित्सार्थ कई चिकित्सालय अथवा अस्पताल खोल रक्खे हैं परन्तु तथापि इन चिकित्सालयों के द्वारा वहां के समस्त रोगियों की चिकित्सा नहीं हो सकती है, क्यों कि इन चिकित्सालयों में बहुधा अंगरेजी औषधियां रहती हैं और अंगरेजी चिकित्सा होती है, और जो धर्म्मशास्त्रों के दृढ़ अनुगामी हैं वे अंगरेजी औषधियों का सेवन करना कदापि नहीं चाहते। ये धर्मात्मा साधुजन इस महाकठिन व्रतको धारण किये हुए रहते हैं कि प्राण तो अर्पण कर देंगे परन्तु अंगरेजी औषधियों को तब भी ग्रहण नहीं करेंगे।

इन सब बातों से सुपरिचित होकर तथा उन रोगियों के चिकित्सार्थ जो धर्म्मशास्त्रों के दृढ़ अनुगामी हैं और अंगरेजी औषधियों को ग्रहण करने की अपेक्षा प्राणत्याग करना उचित मानते हैं एक शुद्ध और हिन्दुस्तानी चिकित्सालय के होने की बड़ी आवश्यकता जानकर बनारस के कई ज्ञानवान परोपकारी भद्रपुरुषों ने कुछ समय से यह उद्योग आरम्भ कर रक्खा है कि वहां "वाराणसी साधु शुश्रूषालय" के नामसे एक शुद्ध और आयुर्वेदिक औषधियोंसे सम्पन्न चिकित्सालय खोला जाय जिसमें ऐसे साधुजन और तीर्थ यात्रियोंकी जो अंगरेजी औषधियोंको ग्रहण नहीं करते हैं चिकित्सा और शुश्रूषा हो। उक्त महाशयोंका यह सदुद्योग निस्सन्देह अतीव सराहनीय और आवश्यकीय है। परमेश्वर उनके इस सदुद्योग को पूर्ण सफलता दे।

उक्त महाशयों ने अपने विज्ञापन पत्र में जिसकी एक कापी हमारेपास भी आई है यह बात भलीभांति दिखलाई है कि ऐसे चिकित्सालय के खोले जाने की कितनी बड़ी आवश्यकता है। इस विज्ञापन में यह बात भी प्रकाश की गई है कि इन साधु और तीर्थ यात्रियों के पोषण के लिये दयाशील धार्म्मिक महाशयों ने बहुतेरे अन्न सत्र खोल रक्खे हैं जिनसे उन्हें सबही प्रकार के भोज्य पदार्थ प्रचुर परिमाण से मिल जाते हैं। और यदि "भोग से रोग और रोग से मृत्यु" इस वाक्य के अनुसार साधु और तीर्थ यात्री लोग क्रमशः पीड़ित रहें और बहुधा अकाल ही काल कवल में पतित होते रहें तो इसमें सन्देह ही क्या है? अतः यह क्यों कर महादुःखका विषय नहीं है कि इनकी चिकित्साके लिये कुछभी प्रबन्ध न हो।

इस प्रकार के चिकित्सालयों का खोलाजाना तो भारत वर्ष के सबही मुख्य तीर्थ स्थानों में आवश्यक और महोपकारी जानपड़ता है परन्तु जैसा कि उक्त महाशय समझते हैं उसमें बड़े परिश्रम और बहुत धनकी आवश्यकता है। अतः परीक्षार्थ ऐसे एक चिकित्सालय को पहिले बनारस ही में खोलने का प्रयत्न करना उपयुक्त होगा।

उक्त महाशय अब इस सदुद्योग और महत्कार्य्य में सफलता प्राप्त करने के अभिप्राय से सर्वसामान्य की सहायता ढूंढ रहे हैं। आशा है कि भारतवर्ष के राजा महाराजा तथा ज्ञानवान धार्म्मिक और परोपकारी सज्जन महाशय इस सुअवसर पर अपनी उदार सहायता प्रदान करने में नहीं चूकेंगे बल्कि थोड़े ही समय में तीन लक्ष मुद्रा की पूंजी जो इस महत्कार्य्य के निमित्त एस्टिमेट किई गई है इकट्ठी कर देंगे और रोगी साधु तथा यात्रियों से अनेकानेक धन्यवाद पाकर काशीवास का पुण्य प्राप्त करेंगे।

इस विषय में जिन सज्जनों को विशेष पूछ पाछ करनी हो निम्न लिखित ठिकाने से पत्रालाप करें।—केदार घाट हड़हे का बाग़—बनारस।

---

## राजा शिवप्रसाद सी० आई० ई०।

पश्चिमोत्तर प्रान्त के एक प्रसिद्ध पुरुष राजा शिवप्रसाद सी० आई० ई० का देहान्त हो गया। इनकी अवस्था ७२ वर्ष की थी। बाल्यावस्था

ही में इनके पिता ऋण भार छोड़ परलोक सिधारे। राजा साहब ऐसी अवस्था में हिम्मत और धीरज की सहायता से संसार के युद्ध में प्रवृत्त हुए, घूमते घामते और काम के अलावे राजपुताने के एक राज्य में बड़े पद पर जा पहुंचे पर वहां की लीला इनको पसन्द न पड़ी इससे फिर काशी में लौट आये। कुछ दिनों तक यौंहीं बीतने के बाद दूसरी सिक्ख लड़ाई के समय पँजाब में जाकर बड़े लाट के मुन्शी हो गये तब से इनकी दशा फिरती ही चली गई। स्कूलों के इन्स्पेक्टर का काम भी इन्हीं ने बड़ी योग्यता के साथ किया। १८७० में इनको सी० आई० ई० का पद मिला चार वर्ष के बाद राजा का खिताब इनको मिला जो तेरह वर्ष के बाद इनके बंश परंपरा को मिल गया। इन्होंने बहुत उत्तम उत्तम पुस्तक बनाये हैं जिससे भी इनका नाम बहुत निकल गया भाषा के बिषय में यद्यपि इनकी राय अधिकांश लोगों से भिन्न रही तथापि यह सब कोई मानेंगे कि इनसे शिक्षा बिभाग का बहुत कुछ भला हुआ और यह बड़े योग्य पुरुष थे। इधर जैसे जैसे लोग उठते गये हैं इनके भी उठ जाने से देश की क्षति हुई जिसका शीघ्र पूर्ण होना असम्भव ही है। ईश्वर इनकी आत्मा को शान्ति दे।

---

## राजस्थान समाचार।

यद्यपि हिन्दी के कई पत्र योग्यता से चलाये जा रहे हैं पर जो दशा राज स्थान समाचार की आज तक देखने में आई अति प्रशंसनीय रही। इसके लेख और विषय सदा से रुचिकर और उपयोगी होते आये कई वर्ष तक यह बराबर साप्ताहिक रहा। आज कल बिशेष कर हिन्दी समाचार पत्रों का चलाना कैसा क्लेश कर हो रहा है किसी से छिपा नहीं है। हम को यह देख कर बहुत ही हर्ष हुआ कि यह पत्र अब अप्रिल मास से सप्ताह में दो बार छपने लगा। कागज़ छपाई आदि की उत्तमता इसकी अविदित नहीं है तिस पर भी वार्षिक मूल्य इसका मुन्शी समर्थदान जी ने ५) ही रक्खा है। इसके अतिरिक्त मुन्शी जी ने अपने पत्र को सप्ताह में एक बार चित्र सहित बड़े बड़े लोगों के

जीवन चरित्र देकर प्रकाश करके और भी मनोहर बना डाला है। ईश्वर इनके उत्साह को बनाये रक्खें कि यह पत्र उत्तरोत्तर उन्नति करता जाये।

---

## स्थानीय।

मुज़फ़्फ़रपुर के ज़िले में आज कल डकैती की धूम है। डकैती का भय दिखला कर डाकू लोग रुपया भी धनवानों से वसूल करते हैं। अंग्रेजी राज्य में ऐसी बात!

---

बिहार प्रान्त में मुसलमान लड़कों के सहायता के लिये प[illegible]के मृत क़ाज़ी सईयद रज़ा हुसैन की बी बी मुसम्मात कज़ीमन ने दस हज़ार रुपये दान किये हैं। स्वजाति प्रेमका यह उत्तम दृष्टान्त है। हिन्दुओंमें अब यह भाव नहीं देख पड़ता। नई रोशनीके कारण न तो समाज बन्धन ही इनको अच्छा लगता है और न अब जातीय प्रेम ही रहा। ज़बानी सब कुछ है।

---

सबडिविज़न बिहार में एक स्कूल और खोला गया था पर उठ गया कर्तृपक्षों के मत में वह फ़ज़ूल था अभी दूसरे स्कूलकी वहां समाई नहीं है।

---

जल कल का होना वहां अब निश्चय ही समझना चाहिये। कमिश्नर साहब का नोट इस विषय पर प्रकाशित हुआ है उसमें सब बातें तो हुई है पर म्युनिसिपल कमिश्नरों को इस बात की सलाह दी गई है कि पटने में टैक्स लोगों पर बहुत कम है १०) सैकड़ा के हिसाब से टैक्स लगाओ रुपया बहुत जल्दी जमा हो जायेगा मज़े में कल का पानी पीयो। इसमें अब नहीं करने का साहस किसी म्युनिसिपल कमिश्नर को नहीं होगा क्यों कि सलाह रुपान्तर में हुआ है। रेटपेअर्स तबाह ही रहे हैं पर यह तो शहर के अमीर लोग नहीं समझते। आरा, भागलपुर, काशी, प्रयाग इन स्थानों में जल कल होने पर जो लीला वहां देखने में आ रही है जैसा सुख साधारण प्रजा उठा रही है उसे देख कर भी जो लोग नहीं देखना चाहते और शिक्षा उठा सकते उनकी बात ही निराली है। इन स्थानों में जल कल बन जाने पर भी लोग यही कहते हैं कि इसकी यहां ज़रूरत नहीं थी फ़ज़ूल काम हुआ। टैक्स का दंड लगता है वह अलावे। पर इन शहरों में साहबों के निकट

जाने आने वाले अमीर लोग जिनको यह बल नहीं है कि हाकिमों के सामने ग़रीबों का पूरा हाल कह सुनाये यही कहा करते हैं कि जल कल से बड़ा आराम हुआ पर मेरा तात्पर्य यह नहीं कि इससे आराम नहीं होता हमारे कहने का अर्थ यह है कि जिस काम से साधारण को कष्ट और थोड़े को सुख हुआ वह काम किसी तरह उत्तम नहीं कहला सकता ऐसा काम न हो वही अच्छा। वास्तव में जल कल का रोग इधर बहुत शीघ्रता से फैल रहा है। जल कल की विशेष आवश्यकता यह दिखाई गई है कि बिना इसके पक्की नालियां जो बनी हैं साफ़ नहीं रह सकतीं। वाह क्या खूब! पहले यह बात नहीं सूझी थी। तो फिर ऐसी नाली ही बनाने के बिना क्या हर्ज हुआ जाता था जब कि इसके बनाने से एक और अधिक खर्च और बखेड़े का काम करना पड़ा इससे पूर्व की अवस्था अब से कहीं अच्छी थी।

---

श्री सम्पादक बिहार-बन्धु महाशय समीपेषु!

कृपा कर इस लेख को अपने अमूल्य पत्र में स्थान दान दीजिये।

## परोपकारी पुरुष।

पाठक महाशयो,

हर्ष का विषय है कि सकल गुण निधान, अद्वैत महान, भारतभूषण, महा माननीय आनरेबुल श्री युत राजा रामपाल सिंह जी साहब बहादुर मेम्बर लेजिस लेटिव कौंसिल तथा दैनिक हिन्दोस्थान पत्र कालाकांकर के सम्पादक यहां ३० मार्च शनिवार को सुशोभित हुए। और यहां के रईस वो ताल्लुकेदार पण्डित श्री नाथ देव जी साहब के यहां ठहरे, श्री मान राजा साहब बहादुर के अगवानी के लिये टारी घाट और दिलदार नगर स्टेशन पर पण्डित श्री नाथदेव जी साहब और कई एक महाशय लोग गये थे, नग्र में प्रथम ही से श्री मान राजा साहब बहादुर के सुशोभित होने का समाचार सम्पूर्ण भली भांति फैल गया था उसके दूसरे दिन ३१ मार्च चैत्र शु० ५ रविवार के संध्या समय ५ बजे ग्राम की कीतवाली टाउन हाल में व्याख्यान (स्पीच) देने का समय निश्चित किया था। सूचना भी उर्दू में छप कर श्री नाथदेव साहब की ओर से

वकील, पण्डित अर्जुन जी पांड़े वकील, इत्यादि लोगों ने क्रमशः अपना अपना धन्यवाद दे श्री मान राजा साहब के सूर्यवत व्याख्यान का पूर्ण पूर्ण प्रशंसा कर अपनी अपनी प्रसन्ता प्रगट की । टाउनहाल में उस समय इतनी भीड़ थी कि अनगनित लोग स्थान न मिलने के कारण चानक चकोर की भांति ध्यानावस्थित ही बाहर खड़े थे । पश्चात अनुमान सात बजे सभा बिसर्ज्जित हुई शहर के माननीय रईस और तालुकेदार सभा पति, बाबू शिवनाथ सिंह साहब और द्वितीय रईस और ताल्लुकेदार पण्डित श्री नाथ देव जी साहब और बाबू रासबिहारी लाल जी चौबे और महाजन बाबू बिहारी लाल जी और बाबू उदित नारायण लाल जी वकील, दीप निर्वाण के अनुवादक, बाबू भोलाराय वकील, बी० ए० पण्डित कवलेश्वर प्रसाद जी वकील, पण्डित सत्यनारायण जी पांड़े इत्यादि सुहृद महाशय लोग सभा में उस समय सुशोभित थे सभा में सब लोगों को पण्डित कवलेश्वर प्रसाद जी वकील और पण्डित श्याम बिहारी जी मिस्र में लोग, जो जैसे आते थे उन्हें वैसा स्थान प्रदान कर बैठाते थे, श्री पण्डित श्री नाथ देव जी साहबकी ओरसे श्री मान राजा साहब बहादुर के आगत स्वागत शयन इत्यादि का सम्पूर्ण प्रबंध बहुत उत्तम और सराहनीय किया गया था उसके दूसरे दिन पहिली एप्रिल सोमवार के बारह बजे दिन को श्री मान राजा साहब बहादुर फर्स्ट क्लास के मेल ट्रेन में काशी की यात्रा की, श्री मान के पहुंचाने के लिये श्री पण्डित श्री नाथ देव जी साहब, बाबू गुरसरन लाल बाबू जगत नारायन सिंह पण्डित सत नारायन पांड़े बाबू देवी प्रशाद इत्यादि लोग गये थे ।

पाठकों ! जिस प्रकार यहां के समस्त रईस और वकील, महाजन, मोख्तार सुहृद सुहृद सज्जनों ने श्री सर्व्व गुण संपन्न राजा साहब बहादुर के स्पीच को श्रवण कर अत्यंत आल्हादित हुए और अपना अपना हार्दिक धन्यवाद दे श्री मानको अत्यंत प्रसन्न किया, उसी प्रकार अब सब लोगों को उचित है कि सिविल सर्विस परिक्षा के लिये पूर्ण उद्योग कर श्री मानराजा साहब बहादुरके गौरवमें सच्चे भारत हितैषी प्रगट हों । किमधिकम बिद्वदवरेषु !

द्विजकञ्ज चरण चंचरीक तथा ! श्री मान राजा साहब बहादुर का
अहर्निश शुभचिन्तक ! सीताराम शर्मा चुनार प्रेषक गाज़ीपुर ।

सर्व्व साधारण के विदितार्थ बांटी गई थी, और मुख्य मुख्य रईस, ताल्लुकेदार, महाजन, वकील, मोख़्तार, इत्यादि लोगों के लिये सुना गया कि निमंत्रित पत्र भी बांटा गया था, उक्त समयानुसार ३१ मार्च को ५ बजे संध्या समय कोतवाली टाउनहाल में श्री मान राजा साहब बहादुर का मनहरण, बहुत उत्तम, रोचक, व्याख्यान हुआ, जिस समय टाउन हाल में सब ख़ास वो आम एकत्रित हुए। उस समय प्रथम बाबू भोला राय साहब वकील ने सिविल सर्विस परिचा के विषय में अपने स्पीच द्वारा इस बात को दर्साया कि इस समय (आप लोगों के हितार्थ) श्री मान राजा साहब बहादुर इस विषय में अपना कुछ व्याख्यान देंगे। तात्पर्य्य यह है कि वकील साहब ने पूर्ण रीत्याऽनुसार राजा साहब बहादुर के इस हेतु पधारने, तथा मानसिक इच्छा के प्रगट करने, और व्याख्यान देने का बिस्तार पूर्वक मंतव्य प्रकाशित किया तत्पश्चात श्री मान राजा साहब बहादुर ने अपने व्याख्यान (स्पीच) को अनुमान दो घंटे तक कि जिसका मुख्य सारांस यही था कि "सिविल सर्विस परिचा यहां भी होना चाहिये" अनेकानेक प्रकार से अपने अमृत भरे, लहलहाते, और उत्तम उत्तम दिल चस्प उदाहरणों के सहित ऐसे उत्तमता, और पुष्पता, तीव्रता, उच्चता, के साथ दर्साया कि सुन कर सब लोगों के दिल पर श्री मान के कथन का पूरा असर जम गया, इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्री मान राजा साहब बहादुर भारत के सच्चे हितैषी, और "परोपकारी पुरुष" हैं। भाइयों! यह श्री मान राजा साहब बहादुर ही का काम है कि जो तन मन धन के व्यय सहित अपने परिश्रम को परिश्रम न समझ भारत भलाई और परोपकार के लिये इस भांति उद्यत रहते हैं। इस कारण हम लोग क्यों नहीं, श्री मान राजा साहब बहादुर की अनेकानेक प्रशंसा के साथ धन्यवाद दे ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि इनकी इसी भांति सदैव उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहै। और ये सदैव कमल के समान प्रफुल्लित बने रहैं और इनका, यश गौरव, प्रताप, चन्द्रकला की नाईं दिन दिन बढ़ती जाय "यावत चन्द्र दिवाकर" अवश्य अवश्य कहेंगे।

पश्चात श्री मान राजा साहब बहादुर का व्याख्यान पूर्ण होने पर लाला गुरसरन लाल, बाबू उसमान खां साहब मोख्तार, लाला कुबेर नाथ

## सूचना ।

इस वर्षाऋतु में पाठकों की भेंट सावन सुहावन समाप्त हो गया इस बार उसका कवरिंग भी भेजते हैं कि पाठक यदि चाहें तो अलग पुस्तकाकार बना लें।

## बिहार-बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)
छ महीने का ... ... ... ... १)
राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)
विद्यार्थियों से ... ... ... ... १)
प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में बिज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है बिज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है।

एकबार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ≠)॥
तीनबार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ≠)।
छ बार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ≠)
बारह बार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिबार ... ≠)

बारह बार तक बिज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह बार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिबार देने के बाद, जितने दिनो तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति बार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

JUNE 1895 VOL. XXIV—NO. VI

मासिक पत्र।

जून १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर ६

१ द्रव्य उत्पत्ति का साधन-मिहनत।
२ आम फल।
३ चींवटी।
४ बामोकीनाई चींवटी।
५ बन्दर कमीटी।
६ सिमला माहात्म्य।
७ प्राप्ति स्वीकार।
८ लावनी।
९ ध्यान में रखने की बातें।
१० विज्ञापन।

बाँकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

## बिहार-बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)

छ महीने का ... ... ... ... १।)

राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)

विद्यार्थियों से ... ... ... ... १)

प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी।

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है।

एकबार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ≠)॥

तीनबार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ≠)।

छ बार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ≠)

बारह बार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिबार ... ≠)॥

बारह बार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह बार तक ≠)॥ प्रति लाईन प्रतिबार देने के बाद, जितने दिनो तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति बार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

# बिहार-बन्धु।

नं० ६—जून १८९५।

## द्रव्य उत्पति का साधन—मिहनत।

पहले यह बात कही जा चुकी है कि मिहनत और सृष्टि जन्य पदार्थ के बिना द्रव्य उत्पन्न नहीं होता। किसी वस्तु के भी पैदा करने में जो मिहनत करनी पड़ती है वह बहुत तरह की होती है। हमलोग जो मलमल का अंगरखा पहनते हैं उसी को लेकर देखिये कि इसमें कितने तरह की मिहनत हुई होगी। आख़री मिहनत तो दरज़ी की हुई है जिसने उसे सी कर पहनने के लायक़ बनाया। पर दरज़ी को छोड़ और भी बहुत से लोगों ने मिहनत की है तब अंगरखा तइयार हुआ है! एक तो थान बेचने वाले की मिहनत; दूसरे जहां थान बनता है वहां से बेचने की जगह थान लाने की मिहनत; तीसरे जिन जिन साधन के कारण वह थान बनने की जगह से बेचने की जगह आया उन उन साधनों के बनाने और चलाने की मिहनत (इसमें गाड़ी, रेल गाड़ी, जहाज़ आदि के बनाने की मिहनत आ गई) थान बुनने की मिहनत; बुनने के हथियारों के बनाने की मिहनत, कपास से रूई जुदा करने की मिहनत, जुदा करने के हथियारों के बनाने की मिहनत, ज़मीन खोदने की, कपास बोने की, बढ़ाने की, तोड़ कर जमा करने की, और साफ़ करने की मिहनत, हल बनाने की मिहनत इत्यादि। इन में से किसी मनुष्य की भी मिहनत न हुई होती तो वैसा मलमल इतना सस्ता

न मिलता। इन बातों से समझदार पाठकों के मन में यह बात अच्छी तरह आ गई होगी कि आख़री कारीगर के हाथ में आने के पहले किसी पदार्थ के लिये बहुत तरह की मिहनत लगानी पड़ती है जिनका वर्णन नीचे किया जाता है—

पहले तो यह पदार्थ जिस सामग्री का बनता है उस सामग्री के पैदा करने की मिहनत—जैसे कि पगड़ी सूत की बनती है उस सूत के पैदा करने में इस प्रकार की मिहनत है। रूई और सन पैदा करने की मिहनत, रेशम के कीड़े की पाल पोस कर रेशम निकालने वालों की मिहनत कीसुम आदि पैदा करने वालों की मिहनत, तिल सरसों रेड़ी आदि तैल मय बनस्पति उत्पन्न करने की मिहनत, ऊन के लिये भेंड़ी पालने और मूड़ने की मिहनत, संक्षेप यह कि जो जो पदार्थ दूसरे कामों में साहित्य की तरह काम में लाये जाने के बाद मनुष्य के ख़र्च में आते हैं उन सब पदार्थों के उत्पन्न करने की मिहनत इस प्रकार की है। यह बात नहीं है कि इस प्रकार की मिहनत सदा नये पदार्थ ही के पैदा करने के काम में आती हैं। कभी कभी तो पैदा करने के लिये कुछ होता ही नहीं। सोना, रूपा, लोहा, तांबा, खान खोदने वाले खान में से निकालते हैं, वे कुछ नया नहीं पैदा करते पर उनकी मिहनत इस प्रकार की समझी जाती है, कारण यह है कि उसकी मिहनत से जो कुछ उत्पन्न होता है उससे मनुष्य का काम एक बारगी पूरा नहीं होता पर केवल दूसरे काम में वह साहित्य की तरह ख़र्च में आता है। उसी तरह बागवान, शीशम के बन में से जो लोग मिहनत कर के मकानों के लायक़ लकड़ियां काट लाते हैं उनकी मिहनत भी इस प्रकार की है, क्यों कि उससे मनुष्य का काम एक बारगी नहीं चलता पर वह केवल बढ़ई ही के काम में साहित्य की तरह ख़र्च में आता है। इन ऊपर कही हुई बातों से ऐसा नहीं समझना चाहिये कि खान खोदने वाले और लकड़ी काटने वाले जो जो मिहनत करते हैं वह सब इसी प्रकार की हैं। खनक जो खान से कोयला निकाले अथवा लकड़हारे जो जंगल से लकड़ी काट लावें और जो वह कोयला अथवा लकड़ी

मनुष्य के जलाने के काम में आवे तो उसके लाने की मिहनत इस पहले प्रकार की मिहनत में नहीं गिनी जा सकती क्यों कि वह कोयला या लकड़ी दूसरे किसी काम में साहित्य की तरह नहीं आती पर मनुष्य का काम आप ही आप उससे होता है।

दूसरे याद रखने योग्य इतना ही है कि कोई पदार्थ एक रोज़गार में तइयार माल समझा जाता है और दूसरे रोज़गार में साहित्य की तरह ख़र्च होता है। जैसे जोलाहे के लिये मोटिया कपड़ा उसका तइयार माल है पर तम्बु बनाने वाले के लिये वह तम्बु का साहित्य है। ताम्बे का चदरा बनाने वाले ने चदरा बनाया, यह उसका तइयार माल हुआ। पर यह तइयार माल कसेरे के लिये साहित्य है। रेशम ऊन या तसर का तागा बनाने वाले के धन्धे में यह तइयार माल है पर दरज़ी के लिये वह साहित्य है। किसान के लिये अनाज तइयार माल है, पर आंटा पीसने वाले या हलवाई के पेशे में वह साहित्य है।

दूसरे प्रकार की मिहनत—जिस मिहनत के कारण से उद्यम चलाने के साधन आदि पैदा होते हैं वह दूसरे प्रकार की मिहनत है जो जो बस्तु किसी भी चीज़ के पैदा करने में साधन की रीति में काम में आती है उन सब को हम औज़ार कहेंगे। राज, बढ़ई, मोची, लोहार, सोनार के अनेक तरह के औज़ार, चरखा, जांता, चकरी, आरा, पहिया, हल, रूई कातने और कपड़ा बुनने, और छापने, और रंगने के सांचे वग़ैरह जो लाखों पदार्थ किसी भी हुनर और पेशे के हथियार औज़ार जो यन्त्र की तरह ख़र्च में आते हैं उन सब के बनाने की मिहनत इस प्रकार की है। पर कितने पदार्थ ऐसे हैं कि उन्हें साहित्य में समझें या साधन में समझें कुछ समझ ही नहीं पड़ता। रेशम रंगने का रंग आदि और छापेख़ाने वालों की छापने की स्याही इनको साहित्य कहें या साधन कहें? साहित्य और साधन में क्या भेद रक्खा जाये? अब सब से सहज भेद यही जान पड़ता है कि जो पदार्थ एक ही बार किसी काम में ख़र्च हो उसे साहित्य समझें और जो पदार्थ एक बार काम में लाने से अपना काम पूरा करके अलग नहीं हो जाता उसी का नाम साधन

समझें। कोसुम आदि जो रेशम वग़ैरह कपड़ों के रंगने के काम में आता है वह साहित्य में समझ सकते हैं साधन में नहीं गिने जा सकते, क्यों कि वह एक बार काम में आने के बाद फिर दूसरे काम में नहीं आने के, उसी तरह छापने की स्याही को भी समझना चाहिये तेली का कील्हू एक बार काम में लाने मे यह नहीं कहा जा सकता कि वह अपना काम कर चुका इस लिये उसकी गिनती औज़ार में हुई। कल में जो लकड़ी या कोयला जलता है वह साधन में नहीं, पर साहित्य में समझा जायेगा क्यों कि एक बार जलने के बाद फिर से काम में नहीं आ सकता। बहुत सी चीज़ें साहित्य में गिनी जाती हैं पर दो तीन अथवा अधिक बार ख़र्च में आती हैं। जैसे ताम्बे का घड़ा टूटने के बाद दूसरे काम में लाया जा सकता है। जिस रंग में पगड़ी रंगी गई ही उसे उतार कर दूसरा कपड़ा रंग सकते हैं पर इस कारण से इन्हें साहित्य कहने में कोई दोष नहीं होता। क्यों कि जब तक वह एक काम पूरा करते हैं तब तक उनसे दूसरा नहीं होता। पर जिनका नाम साधन रक्खा गया है वे जब तक घिस नहीं जाते तब तक नया नया काम हमेशा किये ही जाते हैं।

साहित्य और साधन में भेद डालने का फल यह है कि जो बस्तु साहित्य में समझी जाती है उसके बनाने की मिहनत का बदला जो कोई चीज़ उत्पन्न करने में आई उसी से मिलना चाहिये। पर साधन तो बहुत बस्तुओं के पैदा करने के काम में आता है इस लिये उस साधन के बनाने की मिहनत का फल उन साधनों से जो जो बस्तु बने उसमें से भाग के अनुसार मिलना चाहिये। इससे एक एक बस्तु के भाग में छोटा अंश आवेगा। एक कल से जितना सूत या कपड़ा बनता है उन सब पर कल के बनाने का ख़र्च और उसके चलाने का ख़र्च बैठता आता है।

और प्रकार की मिहनत का वर्णन आगामी बार किया जायेगा।

---

## आम फल ।

आर्य्यावर्त्त ।

आर्य्यावर्त्त में आम सब फलों से उत्तम समझा जाता है । भारतवर्ष के सब प्रदेशों में बहुत अधिकता से उत्पन्न होता है ।

संस्कृत में आम को आम्र रसाल, सहकार, अति सौरभ, कामाङ्ग, मधदूत, माकन्द, पिकबल्लभ कहते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| हिन्दी | आम, अम्बिया । | मरहठी | आंबा । |
| गुजराती | आंबी । | कांगड़ा | माविन । |
| अरबी | अम्बा । | फारसी | अबा । |
| अंगरेज़ी | मंगो । | | |

भारतवर्ष में आम ही एक मेवा है कि जिस को राजे महाराजे से लेकर निर्धन मज़दूर भिक्षुक ग़रीब दुखी आदि रुपयों से ले के कौड़ियों तक के ख़रीद २ के खाते और प्रसन्न होते हैं जिस साल में आम अधिक होता है गावों के ग़रीब लोग कच्चे दशा में भून २ मीठा वा नमक मिला के वा अति दरिद्र लोग बिला किसी चीज़ के मिलाये ही खाते हैं गांवों के अधिक ग़रीब जिन को अन्न नहीं मिलता इसी को खा के जीते हैं और अपना अहोभाग्य समझते हैं ।

गांव व शहरों के भी ग़रीब लोग इस की गुठलियों को उबाल वा भून के खाते और अपने दिन व्यतीत करते हैं ।

अकाल के समयों में आम और इस की गुठलियों की ग़रीबों के लिये मृतसंजीवनी अमृतमोदक वा स्वर्ग का मेवा कहना चाहिये ।

गांव व शहरों के दुःखी लोग आम की गुठलियों की जिस को लोग फेंक देते हैं प्रति दिन बीन २ के इकट्ठा करते हैं और वर्षात में भून २ वा उबाल कर खाते हैं इत्यादि अनेक प्रकार से भारत वर्ष का आम जीवन है जिस वर्ष आम की फ़सिल नहीं होती ग़रीब लोग निराहार मरते हैं ।

आम का पक्का फल भारतवर्ष के सब फलों की अपेक्षा अधिक स्वादिष्ट और पुष्टि कारक होता है। पके आम का पाक, हलुआ (मोहनभोग) शर्बत, मीठी चटनी, मालपुआ दुग्धाम्र और कढ़ी आदि बनती है। आम की हर फ़सिल में हलवाइयों की मिठाइयां बहुत कम बिकती हैं जिस साल आम अधिक होता है उस साल साधारण हलवाइयों का दिवाला निकल जाता है कदाचित् बारहीं मास आम पैदा होने लगेगा तो मिठाइयों की दूकाने बहुत ही कम रह जायेंगी। जब कच्चा रहता है तब खटाई, भांति २ की चटनी मुरब्बा और अचार बना के खाया जाता है बीज के भीतर की गरी और आम की गुठली का तेल अनेक रोगों में काम आता है।

छाल, बौर, गोंद और नवपल्लवादि का भी साधारण रीति से औषध में प्रयोग किया जाता है।

क्रिया और रोगों में प्रयोग—आम की गुठली अतिसार नाशक रक्त की रोकने वाली और कृमिका नाश करने वाली है।

डाक्टर कार्कपाट्रिक ने आम की गुठली के चूर्ण की दस पन्द्रह रत्ती मात्रा करके कृमिरोग में बहुत उपकार पाया है वे कहते हैं कि इस के अधिक परिमाण में गैलिक एसिड रहता है। इस कारण रक्त बहाने वाला अर्श (बवासीर) और स्त्रियों के रजस्वला समय में अधिक रक्त जारी होने पर वा प्रदर रोग में प्रयोग करने को कहते हैं।

लूह के लिये आम के पन्ने से बढ़ के दुनियां में कोई भी दवा नहीं मानी जाती जब लूह लगी हो और लूह लगने का डर हो तो आम का पन्ना बना के पिला देने से ठण्ढक और तरावट आ जाती है। अधिक लूह लगी हो तो आम के पन्ने को हाथ पैरों में लगाने से भी फ़ायदा होता है। बैशाख जेठ के लूह के दिनों में आम के पन्ने को पी के घाम वा लूह में कितना ही रहै लूह पास नहीं फटकती आम के न मिलने पर इमली भी काम देती है।

इस वृक्ष से लाल रङ्ग का और कुछ पीलापन लिये गोंद निकलता है। उस को नींबू के रस वा तेल के साथ लगाने से खुजली और बहुत

प्रकार के चर्म्मरोगों में विशेष लाभ होता है। इस की छाल नवपल्लव और गोंद बहुत सी औषधियों के गुण से भरे होते हैं किन्तु इन की क्रियाओं की परीक्षा आज तक भली भांति नहीं की गई है।

प्रश्न—यह तो आप ने अपने अनुभव से वा अन्यान्य अनुभव वालों के विचार से कहा वा लिखा अब बताइये कि आयुर्वेद के चरक सुश्रुतादि ने आम के विषय में क्या लिखा है।

उत्तर—सुश्रुत नामक ग्रंथ में धन्वन्तरिजी निम्न लिखित गुण कहते हैं-पित्ता निलकरं बालं पितलं बहुकेशरं हृद्यं वर्णकरं रुच्यं रक्तमांस बलप्रदम्॥ कषायानुरसंस्वादु वातघ्नम् बृंहणगुरु। पित्ताविरोधि संपक्वमाम्रं शुक्रविवर्द्धनम्॥ बृंहणं मधुरं बल्यं गुरु विष्टभ्य जीर्यति॥

अर्थ-कोटी अमिया पित्त और वायु को उत्पन्न करती है और इस का रेशा पित्त को उत्पन्न करता है, हृदय के लिये उपकारी (बुद्धि बढ़ाने वाला) काले आदमियों के रङ्ग को गोरा करने वाला, खाने में रुचि बढ़ाता, रक्त मांस और बल को बढ़ाने वाला कसैला और मीठा रसवाला स्वादिष्ट (ज़ायकेदार) वायुनाशक बृंहण (शरीर को मोटा करने वाला) देर में पचता और पक्का आम पित्त को नहीं बिगाड़ता किन्तु वीर्य्य को बढ़ाता बृंहण (शरीर को मोटा करने हारा) मीठा बलकारी गुरु और देर में पचता है।

भाव प्रकाश में आम के फूल के निम्नलिखित गुण बतलाये गये हैं। आम्रपुष्पमतीसार कफपित्तप्रमेहनुत्। असृग्दुष्टिहरं शीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम्॥

अर्थ—आम का पुष्प (बौर) अतिसार, कफ, पित्त, प्रमेह तथा रुधिर की दुष्टता को दूर करता है। शीतल रुचिकारी, ग्राही और वातल है॥ आम्रं बारंकषायाम्लं रुच्यं मारुतपित्तकृत्

अर्थ—कच्ची अमियां कषैली, खट्टी रुचिकारी, वादी और पित्त करती है॥ तरुणं तु दत्यम्लं रुच्यंदोष त्रयासृककृत्।

अर्थ—तरुण आम अर्थात बड़ा और बिना पका हुआ अत्यन्त खट्टा, रुच्य त्रिदोष और रुधिर में विकार करता है। आम्रमाभंत्वचाहीनंआतपेऽतिविशोषितम्। अम्लस्वादु कषायंस्यादभेद्नं कफवातचित्॥

अर्थ—कच्चे आम के ऊपर का छिलका छील फिर कतर के धूप में सुखाय ले इस को हिन्दी में अमचुर और आमकली वा अमेहरी कहते हैं। यह खट्टा स्वादु, कषैला, दस्तावर और और कफ बात को जीतता है।

पक्वंतु मधुरं बृष्यं स्निग्धंबलसुखप्रदं। गुरुवातहरं हृद्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम्॥ कषायानु रसं वन्हिश्लेश्मशुक्रविवर्द्धनम्। तदेव वृक्ष सम्पक्वं गुरुवातहरं परं॥ मधुराम्लरसं किञ्चिद्भवेत्पित्तप्रकोपणम्॥

अर्थ—पका हुआ आम मधुर, बृष्य स्निग्ध, बल और सुख देता है। भारी बातहरण कर्त्ता हृदय की हितकारी देह के रङ्ग को उज्ज्वल अर्थात् साफ वा गोरा करने वाला शीतल है और पित्त को नहीं उत्पन्न करता तथा कषैली, रसयुक्त, अग्नि, कफ और वीर्य्य बढ़ाने वाला है।

वही आम यदि वृक्षपर का पका हो तो देर में पचने वाला अत्यन्त बातनाशक मधुर और खट्टा और थोड़ा पित्त को कुपित करता है॥

आम्रं कृत्रिमपक्वं च तद्भवेत्पित्त नाशनम्

अर्थ—कृत्रिम पक्व अर्थात् पालका पकाया हुआ आम पित्तनाशक इस में खट्टा रस थोड़ा और मिठास अधिक होता है।

रहस्याम्लस्य हीनस्तु माधुर्य्याच्च विशेषतः उषितं तत्परं रुच्यं बल्यं वीर्य्य करं लघु॥ शीतलं शीघ्रपाकित्वा द्वातपित्तहरंसरम्॥

अर्थ यदि यह बासित हो जाय तो परम रुचिकारी, बलकर्त्ता, वीर्य्य कर्त्ता और हलका है शीतल, शीघ्र पचाने वाला, बात पित्त हरण कर्त्ता और दस्तावर है।

शिवराम पांड़े वैद्य।

---

## चींवटी।

प्रायः बाईस सौ बरस हुए कि ग्रीक दार्शनिक क्लियान्थिस ने इस बिचित्र छोटे कीड़े के कामों को तज्वीज़ किया था। उनके बाद बहुत से बिद्वान इन चींवटियों के अनुसन्धान में लगे रहे।

इनके शरीर की बनावट बहुत सुन्दर है। बदन के हिसाब से सिर बड़ा होता है, मुंह मज़बूत होती है। पैर उनके बहुत ही छोटे और अन्त में उनके हाथ की तरह होते हैं जिसके बल वह कोई न कोई अवलंब पा कर सहज ही में लटक जाती हैं। उनका शरीर बहुत ही छोटा और उस पर कोई आच्छादन रोंयें आदि का सा नहीं होता। इनकी मादीन अपने बच्चों का बहुत यत्न करती हैं।

चींवटियों का शरीर छोटा होने पर भी बहुत तेज़ चलती हैं। आंखें बहुत रहने के कारण अत्यन्त सहज में बिपद से बच जाती हैं। उनमें एक तरह का रस होता है जिससे अपने शत्रु को नाश करती हैं। कोई कोई इस की जाति पेड़ में बिल बनाती हैं वह या तो काला हो जाता या जल जाता है।

उन लोगों में पूरे तौर से साधारण तन्त्र प्रणाली चलित है। इन कीड़ों के राज्य में सब सम्पत्ति साधारण की समझी जाती है। यहां तक कि चींवटी के बच्चे भी साधारण सम्पत्ति समझी जाती है। इन लोगों में राज शक्ति प्रजा के हाथ है जैसा कि अमरिका में।

चींवटी के समाज में मादीन का पूरे तौर से सम्मान होता है। चीवटियों की स्त्रियां जब थक जाती हैं तो कंधे पर ढोई जाती हैं और सब से अच्छा खाना उन्हीं को मिलता है। यहां तक कि उनके मृत देह की समाधि बड़े धूम धाम से होती है। स्त्रियों पर भक्ति, प्रजा की राज्य प्रणाली, परिश्रम और अध्यवसाय—ये चार बातें बहुतेरे कीड़ों की मनुष्य के सीखने योग्य हैं।

उनको सूंघने की स्पर्श करने की इन्द्रियां सूंग में रहती हैं उसी से वे अपनी राह मालूम कर लेती हैं। उनकी राह रोक कर इधर उधर कर दिया जाये तो वह पागल सी हो जाती हैं उनको कुछ समझ नहीं पड़ता कि किधर जायें कुछ देर तक इधर उधर घूमा करती हैं। अन्त को सूंग ही से राह का पता लगा कर फिर अपनी पहली जगह पर आती हैं वहां दिशा का निर्णय कर अपनी राह से चलती हैं।

सिर में जो सूंग रहते हैं इसी से ये अपने शत्रु और मित्र को पहचान लेती हैं। कोई इशारा होता है उसी से एक बिल में रहने वाली सब आपस में एक दूसरे को पहचान लेती हैं। ये ईशारे की भाषा ही से हर तरह के मन के भाव को प्रगट कर लेती हैं। पहले दो चींवटियां सामने सामने खड़ी हो जाती हैं और एक दूसरे के सिर से निकले हुए सूंग को छूती हैं इसी से एक दूसरे का मतलब समझ लेती हैं।

लाल रंग की बीर चींवटियां लड़ने में सब को जीत कर आलसी और बिलासी हो गई हैं। वे काली चींवटियों को हरा कर उनकी काम काजी स्त्रियों को क़ैद कर ले जाती हैं। इन चींवटियों के समाज में शूद्र कोई नहीं है। स्त्रियां ( मादीन ) ही सब काम काज करतीं हैं। ये ही समाज के हित के लिये बहुत प्रयत्न के साथ शिशुपालन और सब काम किया करती हैं। इसी लिये क़ैद की हुई मादीनों के साथ ख़रीदी हुई लौंड़ियों की तरह व्यवहार होता है और अंडा पालने के काम पर रक्खी जाती हैं।

इस बात में बहुत से विद्वानों में मत भेद है कि कीटे कीड़े मकोड़ों की आत्मा होती है या नहीं। उनकी आत्मा हो या न हो चींवटियों के कामों को देखने से साफ़ प्रगट होगा कि आत्मा न रहने पर भी उनकी मन अर्थात चिन्ता शक्ति निस्सन्देह है।

---

## बामीकोनाई चींवटी।

अफ्रिका में इस नाम की एक चींवटी होती है जो बड़ी भयानक होती है। ये झुंड को झुंड एक स्थान से दूसरे स्थान में जाया करती हैं। इनको देखते ही हाथी या गोरिला नामं के बन्दर प्राण लेकर भागते हैं। वहां के आदिम रहने वाले भी प्राण के भय से भाग जाते हैं। एक साहब ज़ैम्बीज़ी नदी के किनारे टहलने को गये तो क्या देखते हैं कि एक गांव के रहने वाले एका एक अपनी चीज़ वस्तु लेकर भागे जाते हैं। साहब ने पहले समझा था कि कोई शत्रु आया होगा पर अन्त को जब उन्हीं ने सुना कि चींवटियों के भय से वे भागे जा रहे हैं तब तो उनके आश्चर्य का कुछ ठिकाना न रहा। यह चींवटी जब किसी मकान में प्रवेश करती है तो कई पल के बीच उस मकान में किसी प्राणी को जीता नहीं छोड़ती। बिछौतिया, चूहा, बिच्छू आदि जितने कीड़े मकोड़े जो कुछ वहां रहें कुल को मुहूर्त भर में वे खा लेती हैं। एक बड़े और बलवान चूहे को मारते इनको कई सेकन्ड मात्र को देर लगती है एक मिनिट के बीच सिर्फ़ हड्डी ही पड़ी रह जाती है कुत्ता, चीता या हरिण को भी मारने और खा लेने में इनको इतनी कम देर लगती है कि जो अचरज में आ जाता है। लम्बाई इनकी बस आधी इंच होती है। इनमें भी एक ज़ात ऐसी होती है जो काटकर मांस नोच लेती है। मरे हुए किसी कीड़े को नहीं छूतीं।

इनके अलावे अफ्रिका की बालू में एक चींवटी ऐसी होती है जिसके काटने से बिच्छु के डंसने से भी अधिक ज्वाला होती है।

कई किस्म के मच्छड़ भी वहां ऐसे होते हैं जिनके डंस से लोग बिह्वल हो जाते हैं। इगोगीनाई जातीय मच्छड़ के डंस से मोटे चमड़े वाले काफ्री तक कष्ट उठाते हैं और काटी हुई जगह पर कठिन घाव हो जाता है। इबोलिआई नाम की मक्खी के काटने में ठीक सूई गड़ाने का सा मालूम होता है। रिचाउमा (मच्छड़) जब तक शरीर का रक्त

पान करता है तब तक कुछ कष्ट नहीं मालूम होता जोंहीं उड़ा कि जलन मालूम होती है जो चार घंटों तक रहती है और बीच बीच में टीस मालूम हुआ करती है। एक तरह की मक्खी होती है जो जल में रहने का स्थान बना कर रहती है शक्ल मधुमक्खी से कुछ छोटी होती है। जल में छिपने से भी इनसे बचना कठिन है। अगर संयोग से कोई नाव इनके रहने के जगह से सट गई तो सवार लोग नाव सहित जल में डूब कर इनसे बचने की चेष्टा करते हैं।

---

## "बन्दर कमीटी"

(स्थान जङ्गल—एक मंडप के नीचे मिस्टर भिल्ल, आनरेबिल गर्दभदास, डाक्टर बानर जी तथा सभासद बैठे हैं)

मिस्टर भिल्ल फरसीडंड—(टेबुल पर खड़े हो कर) खों खों खों आज बरी खुशी का डिन है कि हमारे जल्से की नया बरस शुरू हुआ है! खों खों खों

डाक्टर बानर जी—(बाइस फरसीडंड) कूं कूं कूं मैं चाहता हूं कि सेक्रेटरी साहब रिपोर्ट पढ़ें! कूं कूं

सिकट्टरी—(आनरेबिल गर्दभदास) सीपों सीपों सीपों नब्बे हज़ार साल हमारे जल्से को कायम हुये गुजरा दिन पर दिन हम को तुरक्की करने की खुबर सुनाई देती है। आज कल मुल्क भर में किसी शिकायत को कमी नहीं है। सीपों सीपों सीपों

### गज़ल

मेरे जल्से को सफ़ाई देखिये। हिंद की सूरत बनाई देखिये॥
कर लिये ज़र पास अपने बेशुमार। हम मिहरबों की कमाई देखिये॥
साल में कुल पाव भर आदम मरी। डाक्टर जी की दवाई देखिये॥
जाबजा मैला पड़ा है खेत में। क्या हिना है रंग लाई देखिये॥
मोरियों में अब तक बहने, लगा। मेम्बरों की कारसाई देखिये॥
चुंगियां भी हर तरफ जारी हुईं। मुनशियों की खूब आई देखिये॥
सैकड़ों चंदे दिये जिन्नाद को। लालटैनों की लगाई देखिये॥

क्रोड़पत्र।

# गर्म्मी की बहार। हैजे से बचनेका सहज उपाय।

## काफूरकी माला।



इस तरह तो भारतवर्षमें भी बहुत रकमकी चीजोंके विज्ञापन देखनेमें आते है परंतु आज तक इस अद्भुत अपूर्व काफूर की मालाको ग्राहकोंने कमही सुना होगा। हमलोगोंने अपना तन मन धन लगाकर इस पांचगुण-वाली मालाको जिस मिहनत और कारीगरीके साथ तयार किया है सो ग्राहक लोग देखने पर आपही तअज्जुब करेंगे जो ऐसी चीजें भी हिन्दुस्थानमें बनती हैं। एकतो गलेमें पहरतेही मुखमण्डल और स्वच्छ वस्त्रों की चौगुनी सोभा बढ़ता है यानीं ठीक मोतियोंकी मालाके मांफिक मालूम होती है इन काफूर की मालाओंके दाने बहुत ही उम्दा, सफेद, चिकने और चमकीले बनाये गये हैं। इसका एक एक दाना (जो कि बड़े गोलाबेरकी बराबर हैं) दो दो सौ रुपयेके मोतीयोंको मांत करता है। दूसरे हैजे आदि अनेक रोग इसको पास रखनेसे नहीं आसकते। तीसरे हरवक्त सुगन्धसे मगजको तर रखती है। चौथे अपने ईष्टदेवके स्मरण करनेके काम भी आती है। पांचवें जिस खाने पीनेकी चीजको सुगन्धित करना चाहै उसहीको इस मालाके द्वारा सुबासित करसकते हैं इन मालाओंका काफूर वह नहीं है जो दस बारह दिनमें ही उड़जावे बल्कि यह माला यदि ऐतयातसे रक्खी जावे तो बरसों काम देती है। इन पांचगुण भरी मालकी तारीफ हम खुद न करेंगे। वैसे यदि लम्बे चौड़े विज्ञापन तारीफों से भरकर पढ़नेकी तकलीफ ग्राहकोंको न देंगे मगर हां इतना जरुर कहेंगे कि जिस जिसने इस मालाको देखा यही कहा जो 'वाहवा! वाहवा! क्या कारीगरी हैं!' इसके सिवाय और कुछ मुखसे न निकला। जरा जरासी बिलायती कारीगरीको देखकर लोग मोहित होजाते हैं मगर जो लोग इस मालाको देखेंगे वह लोग यही कहेंगे जो हिन्दुस्थानमें भी अभी बहुत कुछ कारीगरी है। सब ग्राहकों से हमलोगोंकी यही अर्ज है जो इस मिहनत और देशी कारीगरीको देखकर उन्नती करनेकी तयार हों [यानीं देशी चीजोंको कदर करें]' कीमत सिर्फ १॥।) रु० पेंकिंग चार्ज ।) आना।

## काफूर की चेंन

इसमें भी वही उपरोक्त गुण हैं। परंतु घड़ी में इस चेंनको लगाने से घड़ीकी शोभा अधिक है। कीमत सिर्फ १॥) रुपया।

NANDLAL VARMA. Manager, Friend & Co.
Muttra City, N. W. P.

आपलोगोंका शुभकांक्षी नन्दलाल वर्म्मा
मैनेजर फ्रेण्ड एण्ड कम्पनी—मथुरा सिटी।

"भारतमित्र" छापाखाना नं० २२२ हारिसन रोड, कलकत्ता।

नेटिवों को रंजो ग़म हरदम दिया। साफ़ रंगों मे मिलाई देखिये॥
ऐंठ कर टमटम सवारी मोल ली। हाय हाये क्या मचाई देखिये॥
जाके हीटल में दिये टीटल मियां। एक भी डिग्री न पाई देखिये॥
बन के जा बैठे मजिस्टर मुफ़्त में। बेवकूफी की रसाई देखिये॥

(एक चपरासी का प्रवेग)

चपरासी—संड एंड कंपनी को दूकान पर मैला पड़ा है और हिन्दोस्तानी गलियों में बदबू आती है इस का इन्तज़ाम किया जाय।

सिकट्टरी—(चीख कर) अरे बैरा! दौड़ी दौड़ी!! संड कम्पनी की दूकान का कूड़ा अभी साफ़ किया जाय अगर मज़दूर न मिले तो खुद मेम्बर लोग जा कर साफ़ करें। हिन्दुस्तानी रास्तों में कुछ काम नहीं है।

डाक्टर बानर जी—बेशक २ बहुट ठीक हिन्दुस्टानी साब कोई मेला पसांड कारटा है क्यों कि साब मेम्बर मोरी का जाल सूघते और खुश राइटे हाय! (सब ताली बजा कर खड़े होकर पढ़ते हैं)

## ग़ज़ल

साहबों ने आज कल भी क्या किया है क्यों न हो। हिंद को किस किस मुसीबत से लिया है क्यों न हो॥ शाह काबुल ने निकाला जब से खतरा नाकिसी। भर के थैली सुर्खरू उस की किया है क्यों न हो॥ देके दौलत कुल छुये मजिलिस रसां ऐ दोस्तां। देशियों से क्या शिका बदला लिया है क्यों न हो॥ लेके झाड़ू टोकरा मुर्शद बने इस अम्र के। साहिबों की पेशवाई का किया है क्यों न हो॥ अब खतावों की मिलेगी टोकरी सर पर मियां। क्यों कि हज़रत ने मज़ा गहरा लिया है क्यों न हो॥ इस कमेटी को खुदा गारत करे क्यों कर नहीं। इस ने बेशक माल फोकट का पिया है क्यों न हो॥

(सब जाते हैं)

इति बंदर कमेटी समाप्तम्

(श्री शिवनाथ शर्मा लिखित)

---

## सिमला माहात्म्य।

आज कल पुराने पुराणों का व्यवहार कम हो गया है इस लिये यह नई कथा सुनो।

### श्लोक

सिमलाबासं महापूजा सिमलाबासं महातपः॥
गिरींद्रबद्रि निकटे सिमला तीर्थ नमो नमः॥

### दोहा

प्रतिसन ऋतु पति मध्य जब, मार्च महीना आय।
बीबी बगल दबाय नर, सिमला दौड़ी जाय॥

### चौपाई

महा पुण्य सिमला कर बासा। दूजे लहहु तमासा खासा॥
जे नर विधि सों सेवें सिमला। पूर्व जनम सो पावत बिमला॥
महा प्रसाद लखै हीटल कर। तासी मृत्यु चलै टल टल कर॥
सिमला सम दूजी भुंइ नाहीं। गोरी लाल बदन जह जाहीं॥
चौर न भूमि रहन सो भाई। काली बरन महा ह्वै जाइ॥
बायु गरम चल लूलू करि है। बुद्धि बल ऊन बस्त्र सब हरि है॥
जे सब सुख सिमला मह अहहीं। ब्रह्मा करत बखान न सकहीं॥

### दोहा

जहां लार्ड लेडी सुवर, मूरति राजित दीउ।
जग मह स्वर्ग समान सुभ, धरनि उत्तमा सीउ॥

### चौपाई

सिमला स्वर्ग स्वर्ग को नाना। जहं नव शिक्षित करत पयाना॥
पूर्व पुण्य महा जेहि होई। सिमला जाय बसै नर सोई॥
जहं बहु बूट बजत खट खट पट। लेडिन चलत चाल अति नटखट॥
जहां शरद कैलाश समाना। हारमोनिमादिक सुभ ताना॥
झील निकट टीनन के बासन। पूरित मच्छि सच्छि कै मासन॥

जहं बंदूक चलत दिन २ भर। निर अपराध पक्षि मारत भर ॥
गिटपिट गिटपिट बोली बोलत। चलत चाल जनु भुइयां डोलत ॥

दोहा

बड़ेन बड़ेन की वह मसल, होत देख नव ठाठ।
जन्म न देखा बोरिया, सुपने आई खाट ॥

चौपाई

चहै लुटै कै घर रह जाई। सिमला देखी सहित लुगाई ॥
प्रजा चहै भूखन मरि जाई। बिना सैर नहिं बनत बनाई ॥
न्याय अन्याय धरो छप्पर पर। सिमला बिलखि करी लोचन तर ॥
सब अमला लै सिमला धावौ। पूर्व जन्म सुफल करि आवौ ॥
बायु बयारि शुभ शुभ शीतल। रहत ठंढ नित कोयला ही तल ॥
चरबी चुरट बिस्कुटन सवादा। चली ऐंठिकर ओढ़ लबादा ॥

छंद

पुरखा कभी सिमला गये नहि हम तो सिमला जायेंगे। कीऊ मरहु कोउ जियहु हम तो सकृद मनाएंगे ॥ जगदीश की कछु भय नहीं जासों जो कछु सरमाएंगे। कर लें बिहार सिहार अब फिर तो निषिद्ध कहाएंगे ॥

चौपाई

कथा पुराण भागबत गीता। सो सब सुख सिमला मा जीता ॥
एकादशी ब्रतादि महाना। जन्माष्टमी अभीज समाना ॥
जप तप ब्रत नियमादिक पूजा। सिमला सम जग महं नहिं दूजा ॥
बाजपेई कोटिन जग जेते। षोड़स कला न पावत तेते ॥
पढ़ै महातम सिमला जोई। लिखै सुनावे सुने जो कोई ॥

दोहा

प्रात प्रथम सूरज उदय, पढ़ै पाठ यह जौन।
जियत सुरग मरतहि सुरग, स्वर्गहि पावे तौन ॥

इति इंडियन पीकदान पुराणे सिमला माहात्म्य सम्पूर्णम्

श्री शिवनाथ शर्मा ।

## बीर बालक ओ बीर रमणी।

( श्री राम प्रकाश लाल जी लिखित )

सन १५६७ खृष्टाब्दि में जब कि पराक्रान्त मोगल सम्राट अकबर शाह ने चित्तौर पर चढ़ाई किया था, जब कि स्वाधीनता प्रिय बीरगण गरीयसी जन्मभूमि के निमित्त अकातर रणभूमि की माता की गोद समझ कर लेटे थे, जिस समय राजपूत गौरव जयमल्ल शत्रुओं के हाथ से मारा गया था, षोड़श बर्षीय पुत्र जिस काल असीम उत्साह से स्वाधीनता का जय पताका उड़ाता हुआ शत्रु के सन्मुख पहुंचा था, उस समय बीर भूमि चित्तौर की तीन बीरांगना ने स्वदेश के लिये अपना प्राण न्योछावर कर डाला था, कोमल देह में कठिन बख्तर पहिन कर, कोमल हस्तों में कठोर अस्त्र धारण करके लक्ष लक्ष मोगल सेना की गति रोकने को खड़ी हुई थीं। ये तीनों ललनायें शत्रु निपीड़ित राजस्थान की प्रकृत वीरांगना थीं, स्वाधीनता की ज्वलन्त मूर्त्ति थीं, आत्म त्याग की अद्वितीय दृष्टान्त थीं।

पराक्रान्त जयमल्ल स्वर्ग को पधार चुके हैं, अन्याय समर में पुरुष सिंह अनन्त निद्रा के बश हो गये हैं, चित्तौर की रक्षा कौन करेगा? अत्याचारी मोगल द्वार पर आ पहुंचा है, उसको कौन रोकेगा? स्वाधीनता की लीला भूमि पराधीनता के शृंखल में बंध रही है, इस कठिन ज़ंजीर को कौन तोड़ेगा? बीरभूमि आज हताश और हतोद्यम हो रही है। इसी समय में एक बीर बालक गरीयसी जन्मभूमि के निमित्त प्राण देने को प्रस्तुत हुआ, जयमल्ल जन्म भर के लिये चित्तौर से बिदा ले चुके हैं, उनके बिना चित्तौर शून्य हो रहा है, पुत्रने उस शून्य स्थान को पूर्ण किया, पुत्र का वय १६ वर्ष का था, अवस्था में तो बालक थे किन्तु साहस विक्रम ओ क्षमता में जवानों का कान काटते थे, पुत्र माता से बिदा हुआ, कर्म देवी ने आश्वस्त हृदय से प्रियतम पुत्र को युद्ध स्थल में जाने को कहा, पुत्र प्रियतमा के निकट गये, कमलावती ने प्रफुल्ल हृदय

से प्राणाधिक स्वामी को बिदा किया, भगिनी कर्णवती ने जन्मभूमि की रक्षा के निमित्त सहोदर को उत्तेजित किया। सोलह वर्ष का बालक चित्तौर का अद्वितीय बीर, इस जन्म के लिये बिदा होकर असीम उत्साह के सहित पवित्र कार्य्य साधन करने को रणभूमि में उपस्थित हुआ। मोगल सेना दो भागों में विभक्त थी, एक भाग का सेनापति स्वयं अकबरशाह था, दूसरा भाग एक दूसरे बहादुर योद्धा के अधीन था, द्वितीय दल से पुत्र का घोर युद्ध उपस्थित हुआ, बादशाह दूसरी ओर से पुत्र को रोकने के लिये आया।

दोपहर का समय था; सूर्य्य ऊपर अपना प्रभाव दिखा रहे थे, सुकण्ठ विहंग कुल पेड़ों पर बैठकर चारों ओर अपने कण्ठस्वर का माधुर्य्य झाड़ रहे थे, यह स्वर लहरी मध्यान्ह समीरण को भेद करके चित्तौर की पहाड़ो पर टक्कर खाती थी, उसी समय अकबर के सैन्य सहसा युद्ध स्थल में व्यतिव्यस्त हुए; वे पुत्रकी ओर अग्रसर हो रहे थे; अचानचक उनकी गति रोकी गई; सामने पतली पहाड़ी सड़क थी। सड़क के आगे दो एक श्यामल पत्राच्छादित वृक्ष थे; इन वृक्षों के पीछे से गोली पर गोली आकर मोगल सैन्यका व्यूह भेद करने लगी; मोगल स्तम्भित हुए; लगातार गोलियों के आघात से सैन्यगण रंग भूमि के क्रीड़शायी हो रहे थे; अकबर ने विस्मय पूर्वक देखा कि तीन बीरांगना पहाड़ी रास्ते का आश्रय करके खड़ी हैं; एक उनमें वर्षीयसी है और दो किंचित विकसित कमल दल सरीखी अपूर्ण युवती हैं; तीनों घोड़े पर सवार हैं, तीनों ही दुर्भेद्य कवच से ढकी हैं, तीनों शस्त्र चलाने में चतुर हैं; मधुरता के सहित भीषणता का ऐसा संमिश्रण देख कर अकबर का हृदय विचलित हुआ; इन तीन बीरांगना के पराक्रम से अपने असंख्य सैन्य की गति रुकते और उनके दृढ़ औ निश्चित निशानों से बहुतेरे सैन्य को रण स्थल में देह त्यागते देख कर भारत का अद्वितीय सम्राट क्षोभ औ लज्जा से अधोबदन हुआ।

उधर घोर युद्ध होने लगा; इस युद्ध में कर्म देवी कमलावती औ कर्णवती अपना २ लोकातीत पराक्रम दिखाने लगी; षोड़शवर्षीय पुत्र स्नेह का एक मात्र अवलम्बन; प्रबल शत्रु के सहित अकेला युद्ध करे, इस को

कर्म देवी स्थिर चित्त से नहीं देख सकती; प्रियतम स्वामी—पवित्र प्रेम का अद्वितीय आस्पद—अकेला मोगल शस्त्र के आघात से क्षत विक्षत हो अकेले गरीयसी जन्म भूमि के लिये प्राण त्याग करे, कमलावती प्राण रहते इसे कब सह सकती थी? प्यार औ प्रीति का आश्रय भूमि, सहोदर पवित्र कार्य्य में देह त्याग करे, दुरन्त शत्रु स्वदेश की स्वाधीनता हरण कर लेवे, क्या कर्णवती इसे चुपचाप देख सकती थी? पुत्र मोगल सैन्य के एक दल पर आक्रमण किये हैं, अकबर दूसरा दल लेकर पुत्र के विरुद्ध आ रहे हैं; कर्मदेवी, कमलावती, कर्णवतीने हठात् इस सैन्य की गति रोक दी; तुच्छ प्राण की ममता छोड़कर, कोमल देह में कठिन बख्तर पहिन कर, पवित्र देश की पवित्र स्वाधीनता रक्षा करने को शत्रु का व्यूह भेद करने को दण्डायमान हुई; एक ओर षोड़शवर्षीय पुत्र और एक ओर उनकी वर्षीयसी जननी एवं अपूर्ण वयस्का प्रणयिनी और सहोदरा—चित्तौर के वीर्य्य वह्नि की ये उज्ज्वलशिखायें दिल्ली सम्राट के असंख्य सैन्य को भस्म करने को उद्यत थीं, इस अपूर्व दृश्य की अनन्त महिमा आज कौन समझेगा? भारत आज निर्जीव, भारत आज वीरत्व रहित, भारत आज जातीय जीवन शून्य हो रहा है, क्या भारत आज इस वीर बालक और वीरांगना के पवित्र वीरत्व की पूजा करेगा?

आंधी बहने लगी; तीनों वीरांगना की गोलियों के आघात से मोगल सेना नष्ट होने लगी; दोपहर से संध्या पर्य्यन्त युद्ध होता रहा, विराम नहीं है, विश्राम का नाम नहीं है, दोप्रहर से संध्या पर्य्यन्त तीनो वीर्य्यवती वीरांगना दुरन्त शत्रु की गति रोध किये खड़ी रहीं; इन के अस्त्र चलाने से अनेक सैन्य नष्ट हुए; अकबर प्रकृत वीर पुरुष थे, इन वीरांगनाओं के वीरत्व से स्तम्भित औ मोहित हुए, इस वीरत्व का यथोचित सन्मान करने का उनको आग्रह हुआ; उन्हों ने घोषणा कर दी कि इन वीरांगनाओं की जो जीवित अवस्था में धर लावेगा, उसको बहुत धन पारितोषिक दिया जायगा; किन्तु सभी युद्ध में उन्मत्त थे, इस घोषणा का कोई फल नहीं हुआ, मोगलगण ज्ञान शून्य होकर लड़ने लगे। तीनो वीरांगना भी असीम साहस से उनके आक्रमण को रोकती गई; अचानचक

कर्णवती का शरीर अवश हुआ, टूटे हुए कुसुम की नाईं भूतल पर गिर गई; किन्तु कर्म देवी ने उधर दृष्टि नहीं की। प्राणाधिक दुहिता को भूतल शायिनी देख कर कातर न हुई, अविचलित हृदय से शत्रु पर गोली बरसाती रहीं; इस बीच में एक गोला आकर कमलावती के बांये हाथ में आ लगा, किन्तु इस भीषण आघात से भी कमलावती थोड़े काल तक न डोली; स्थिर भाव से खड़ी रह कर शत्रु की सेना नष्ट करती रही; जब कमलावती औ कर्मदेवी दोनों ही भूतलशायिनी हुईं, तो पुत्र सम्राट के सैन्य को पराजय करके उस पहाड़ी राहके निकट पहुंचे; उन की आराध्य जननी, प्रियतमा प्रणयिनी औ प्राणाधिका सहोदराकी देह युद्ध स्थल में लोट रही थी; पुत्रने इसको देखा और देख कर पराक्रान्त मोगल सेना को बहुत कुछ नाश करने लगे; उधर कमलावती औ कर्म देवी का गला रुका जाता था; पुत्रने बांह पसार कर उन्हें उठा लिया; कमलावतीने धीरभाव से प्राणकान्त की ओर देखा, धीरभाव से पतिप्राणा साध्वी सती प्राणेश्वर के कन्धे पर मस्तक रख कर अनन्त निद्रा में अभिभूत हुईं; कर्म देवी ने प्रियतम पुत्र को फिर युद्ध करने को कहा एवं स्वदेश की स्वाधीनता के निमित्त अपने सहित स्वर्ग में आने का अनुरोध करके इस लोक से चलती हुईं; पुत्र क्षण भर चिन्ता कर, क्षण भर में भीषण स्वर से "हर हर" शब्द बोलते हुए शत्रु के बीच घुस पड़े; बहुत देर तक युद्ध करके बहुतेरे सैन्य को नष्ट करके षोड़शवर्षीय वीर जन्म भूमि की गोद में चिरनिद्रित हुए, पुत्र की देह उनकी प्रणयिनी के सहित एक चिता पर एकत्र दग्ध हुआ; कर्मदेवी औ कर्णवती का शरीर एक दूसरी चिता पर शायित हुआ। सब अमरलोक को गये, भूलोक में उन की अनन्त कीर्त्ति अक्षय अक्षरों में रह गई।

---

## प्राप्ति स्वीकार।

१। रेलवे ऐडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट सन १८८४-८५।

२। इन्डियन टेली ग्राफ गाईड

३। दी इन्डियन फिलैन्थ्रोपिस्ट

४। ज्वर चिकित्सा—सम्पादक आरोग्य दर्पण श्री जगन्नाथ शर्मा वैद्य प्रयाग द्वारा रचित। इस पुस्तक का विषय नाम ही से प्रगट है वैद्य जी ने इस में ज्वर का प्रथम रूप, निदान, ज्वर वाले को कैसे मकान में रखना, कैसा जल पिलाना, किसे लंघन कराना किसे न कराना आदि विषय उत्तमता से लिखी गई हैं। यों तो आयुर्वेद में इस विषय के ग्रन्थों का अभाव नहीं है पर ऐसे बहुत कम वैद्य होंगे जिन को उस में की कुल ओषधियों को परीक्षा करने का अवसर प्राप्त हुआ हो पर वैद्य जी ने वर्तमान देश कालानुसार सप्रमाण और परीक्षित औषधियां ही इस में लिखी हैं जिन से असंख्य रोगी आरोग्य हुए हैं यह अत्यन्त प्रशंसनीय है। इस पुस्तक के समझने में कुछ भी कष्ट नहीं होता। मूल्य भी इस का केवल ।≈ ही है और पृष्ट १६८ हैं। जो लोग इसे लेना चाहें—पंडित जगन्नाथ शर्मा राज वैद्य—इलाहाबाद इसी पते से चीठी लिखें।

५। रबर स्टैम्प की कृति—आज कल लोगों में रबर की मुहर बनाने का शौक बढ़ता देख अपने अनुभव से इन के बनाने का उपाय आदि सिखलाया है। मूल्य एक रुपया—मिलने का पता—बलदन्त लक्ष्मण पावगी रबर स्टैम्प मेकर और कमीशन एजंट—दूध विनायक—बनारस है। शौकीनों को इसे मंगा कर देखना चाहिये।

६। विशाल विलास—इस में गानें योग्य १३८ पद हर एक रीति के रागों के गाने के योग्य हैं। मूल्य ≈)॥ मिलने का पता गणेश दास ऐण्ड कंपनी चौक बनारस।

७ विनय बईसा—नाम ही से विषय झलकता है—इस के रचयिता मिरज़ापुर निवासी श्री राधा कृष्ण टण्डन उपनाम मधुर कवि हैं।

पं० श्यामबिहारी मिश्र जी रचित ।

## लावनी ।

कर्म्म धर्म्म औ नेम छेमका लेता हर्गिज़ नाम नहीं ।
सिवा प्रेम के हमे तो और से है कुछ काम नहीं ॥
बिला यार दिलदार प्रेम की बात किसी से कहैं नहीं ।
सिवाय उसके गैर की बात ज़री सी सहैं नहीं ॥
एक उसी को क़ीड़ जहां में और से तो कुछ चहैं नहीं ।
खुश रहते हैं हमेशा दिल को अपने दहैं नहीं ॥
चाहे जहां बिठावे मेरे लिये छांह औ घाम नहीं ॥ १ ॥
सिवा प्रेम के०

जो चाहें वे कहें करें हम ज़रा भी ना मुंह मोड़ैंगे ।
बैठ पास में पैर पड़ हाथ सामने जोड़ैंगे ॥
प्रेम ऐसही चीज़ है जो कर लिया तो अब ना तोड़ैंगे ।
चहै वे छोड़ैं मगर हम दम रहैंते ना छोड़ैंगे ॥
अगर कहैंगे जाव घरै हम कहैंगे हमको धाम नहीं ॥ २ ॥
सिवा प्रेम के०

गा कि एशोअशरत का सामान हमारे पास नहीं ।
तोभी ज़रासा अपने चित्त को करूं उदास नहीं ॥
क्यों कि जो है दुनियां में यह किसी का है कुछ खास नहीं ।
यही समझ कर किसी बातों का करूं तलाश नहीं ॥
और क्या कोई कहेगा हमको हमती हुए गुलाम नहीं ॥ ३ ॥
सिवा प्रेम के०

तुमरे मिल कहाय गैर के पास जाय हम क्यों रोवैं ।
चाहे दो दुख मगर सुख मान उसी में खुश होवैं ॥
तुम्हरे द्वार निहार प्रेम सो एक बार चौकठ धोवैं ।
जो कुछ होय उसी में मग्न रहें सुख सो सोवैं ॥
श्याम बिहारी सच जो पूछो तो तुझ बिना आराम नहीं ॥ ४ ॥
सिवा प्रेम के०

क्या कहें बात कुछ कहा नहीं जाता है।
बेकहे बात के रहा नहीं जाता है॥
आहा कलियुग ऐसा प्रताप फैलाया।
सब रट बदल करि भारत कुगति दिखाया।
ब्राह्मण को शुद्र और शुद्रहि विप्र बनाया॥
सबही पर सब विध फैलाया है माया।
कमअसल असल बन डंका बजवाता है॥१॥
क्या कहें बात०
कोई है देसी लंगूरी भेष बनाते।
होटल में बैठ कर जूते पेन्हे खाते॥
पूछने से अपने को ब्राह्मण बतलाते।
पर मद्य बोतलों पीते नहीं लजाते॥
कहिये तो धर्म्म से इनसे क्या नाता है॥२॥
क्या कहें बात०
कैसा है धर्म्म यह अपना नेक न जानें।
कोई बने ईसाई ईसाही को मानें॥
कोई कोई शठ अपने हठ को ठानें।
अपनी मुख अपने पुरखहिं मूर्ख बखानें॥
ऐसे दुष्टों को शर्म नहीं आती है॥४॥
क्या कहूं बात०
मैं इन गोबर गणेश से सब विध हारा।
ये अकिल के अंधे कुछ ना सुने हमारा॥
इन बेवकूफों पर क्या है अपना चारा।
जो अपने कर निज पांव कुल्हाड़ी मारा॥
श्री श्याम बिहारी लखि यह घबराती है॥४॥
क्या कहूं बात०

---

## ध्यान में रखने की बातें।

एमेरिका देश के न्यूयार्क नगर में मान्यवर स्टिफन एलन साहब हेनरी नामक नौका में डूबे। उस समय उन के जेब में एक छपा हुआ पत्र निकला जिसमें निम्न लिखित शिक्षायें थीं, जो हर एक युवा पुरुष के स्मरण रखने और उसके अनुसार बर्त्तने योग्य है।

१—अच्छे का साथ करो यदि अच्छा न मिले तो न करो।

२—कभी सुस्त मत हो।

३—यदि तुम काम करने में अशक्त हो तो बुद्धि बर्द्धन में ही श्रम करो।

४—सर्वदा सत्य बोलो।

५—इकरार थोड़े करो।

६—अपने परिश्रम पर जीवन व्यतीत करना निश्चय रक्खो।

७—गुप्त भेद की क्रियायें रक्खो।

८—किसी से सम्भाषण करने के समय उसके मुख की ओर देखते रहो।

९—अच्छे मनुष्य का साथ और संभाषण लाभदायक होता है।

१०—नेक चलन होना सर्व गुणों में उत्तम है।

११—तुम्हारी चाल चलन तुम्हारे बुरे कर्मों के बिना कदापि नहीं बिगड़ सकती।

१२—अपने बर्त्ताव को ऐसा बनाये रक्खो कि यदि कोई मनुष्य तुम्हारी निन्दा करे तो उसका लोग विश्वास न करे।

१३—कभी मादक पदार्थ ( नशे की चीज ) मत पियो।

१४—सदा अपनी आय ( आमदनी ) से अधिक व्यय मत करो। क्यों कि विपत्ति आ पड़ने का भय है।

१५—शयन गृह में जाकर पहिले दिन भर में किये हुये अपने कामों को स्मरण करो।

१६—यदि धनवान होने की आशा है तो एक साथ बहुत धन मिलने की इच्छा न करो।

१७—धीरे धीरे और गम्भीरता से प्राप्त किया हुआ लाभ सुखी करता है।

१८—किसी प्रकार का जुआ मत खेलो।

१९—जिस वस्तु के उपार्जन करने में भय है उसके लिये लालच न करो।

२०—व्यय करने से पहिले उपार्जन करलो।

२१—तुम्हें ऋण से छूटने का मार्ग न दीखे वहां तक ऋण कभी मत लो।

२२—यदि पीछे लेने की असंभावना है तो उधार मत दो।

२३—यदि अपनी स्त्री का सन्तोष वा पालन करने में अशक्त हो तो विवाह ही मत करो।

२४—किसी की निन्दा मत करो।

२५—न्याय में प्रसन्न रहो।

२६—बुढ़ापे में व्यय करने के लिये यौवना वस्था में धन बचा रक्खो

२७—इन शिक्षाओं की प्रति सप्ताह में एक बार तो पढ़ही लो।

## सूचना।

जब तक दूसरी सूचना इस विषय में नहीं दी जाती तब तक श्री गोस्वामी वामनाचार्य जी मिर्ज़ापुर और पंडित सीताराम जी ग़ाज़ीपुर निवासी इस वि० ब० पत्र के सहकारी सम्पादकों के श्रेणी भुक्त किये गये।

प्रबन्ध कर्त्ता।

---

## दोहा।

A B B G I O P. K. T K देन।
C धी T क सवार K O ठ सुधारस लेन॥

---

# बिज्ञापन।

## आरोग्यता दर्पण।

### बिबिध वैद्यक विद्या बिषय पूरित मासिक पत्र।

### अच्छर टाइप नये, पुष्ट कागज़, ३ फर्मे की पुस्तक॥

ऐसा पत्र आजतक नहीं प्रकाशित हुआ।

---

ऐसे तो अनेक सम्बाद पत्रादि साप्ताहिक तथा मासिक देशोद्धारक प्रकाशित होते हैं किन्तु सिवाय आरोग्य दर्पण के शरीर रक्षक काम औरों से नहीं हो सकता है। यह पत्र अपने देश के उपकारत्व में अद्वितीय है।

इस पत्र के ग्राहक की इससे क्या लाभ होता है या होगा ग्राहक होने ही से मालूम हो सकता है। सिर्फ़ इतना निस्सन्देह कह सकते हैं कि इस पत्र के ग्राहकों को शरीक रक्षक वह २ बिषय प्राप्त होंगे जो लाखों रुपये खर्च करने वाले सेठ साहूकारों को दुर्लभ है।

इसमें समयानुकूल रोग का निदान कारण परीक्षित चिकित्सा किस देशवाले तथा प्रकृतिके लोगों को कौन वस्तु लाभ दायक और कौन हानिकर है इसके अलावा अनङ्गरङ्गादि काम शास्त्र द्वारा स्त्री पुरुष व्यवहार बीर्य रक्षादि उपाय, अधिक उमर तक जीने की युक्ति खेचरी गुटिका आदि बनाने की क्रिया कि जिसके बल से भूतपूर्व योगीश्वर लोग अद्भुत २ कार्य करते थे और भी अनेक विषय जो पढ़ने से मालूम हो सकते हैं। मूल्य भी बहुत नहीं है सिर्फ़ अग्रिम वार्षिक डाकव्यय सहित १॥)

आशा है कि जो महाशय अपने शरीर की रक्षा तथा दत्तचित्त से आयुर्वेद का जीर्णोद्धार करना चाहते हैं अवश्य ग्राहक होंगे।

पण्डित जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य

सम्पादक आरोग्य दर्पण

जानसेनगंज इलाहाबाद

---

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

JULY 1895 VOL. XXIV—NO VII

मासिक पत्र।

जुलाई १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर ७

१ चिमकी कैसे तइयार होती है।
२ वीर धात्री।
३ उद्योग और श्रम।
४ स्फुट कविता।
५ आवागमन।
६ बीबी साहब वा वेश्या।
७ तंत्र।
८ प्राप्ति—स्वीकार।
९ हंसी तफ़रीह।
१० मदसनुल्मुल्क।
११ चिट्ठी पत्री।
१२ विज्ञापन।



बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

## बिहार-बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)
छ महीने का ... ... ... ... १।)
राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)
विद्यार्थियों से ... ... ... ... १।)
प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी।

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है।

एकवार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ≠)॥
तीनवार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ≠)।
छ वार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ≠)
बारह वार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिवार ... )॥

बारह वार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह वार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिवार देने के बाद, जितने दिनो तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति वार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

# बिहार-बन्धु।

नं० ७—जुलाई १८९५।

---

## चिमकी कैसे तइयार होती है।

सच्चा झूठा हर क़िस्म का ज़र का ज़ूता बनात टोपी आदि चीज़ों में एक तरह की छोटी सोनहली और रुपहली रंग की पतली पतली चमकती व्यवहार में आती है उसी को चिमकी कहते हैं। वह नीचे लिखे प्रकार से तइयार होती है।

यदि झूठी चिमकी बनाना हो तो पहले आवश्यकता के अनुसार मोटे ताम्बे के तार पर रूपा या सोने का गिलट कर लिया जाता है। इस के बाद गिलट किये हुए तार को मझोली सूई से ईस्पात लोहे पर इस तरह घना लपेटते हैं जैसे रील पर डोरा लपेटा रहता है या गाड़ी के लालटेन के भीतर स्प्रिंग रहता है। ईस्पात के तार का खूब लम्बा होना ज़रूर नहीं है एक बित्ता भर ही रहने से काम चल सकता है। गिलट किये हुए ताम्बे के तार की लपेट लेने के बाद ईस्पात का तार अलग लिया जाता है। बीच में खाली पड़ जाने से माला के ऐसा ही जावेगा इस तरह जब बहुत सा बन गया तो उसके बीच में जो छिद्र रहता है तो उसमें कसा रहे इस ढंग का एक लोहा—या ईस्पात का तार उस में घुसा दिया जाता है। इसके बाद ईस्पात की तेज़ और पतली छेनी और छोटी हथोड़ी से जितनी दूर तक इस गिलट किये हुए तार में ईस्पात या लोहे का तार कस कर घुसा दिया गया है उतनी दूर तक काट लिया जाता है। इसी तरह सब की काट डालने पर बहुत सी छोटी छोटी अंगूठी या कल्ला बन जायेगा।

प्रायः तीन इंच वर्ग और दो इंच ऊंचा इस्पात का टुकड़ा ऊपर को और घस और मांज कर आईने सा साफ़ और चिकना कर लिया जाता है। क़रीब सेर भर के वज़न की एक हथौड़ी भी नीचे की ओर यानी जिधर से चोट दी जाती है वह भी खूब चिकना कर लिया जाता है। चिमकी पीटने के समय ये छोटे छोटे छल्ले उसी चिकना बनाया हुआ इस्पात के पास रख लिया जाता है तब कारीगर बांये हाथ से एक छल्ला चींवटी से उठा कर उसी आईने से साफ़ इस्पात के टुकड़े पर रख लेता है और दाहिने हाथ से उसी चिकनी हथौड़ी से छल्ले पर एक ही चोट देकर गोदमें एक साफ़ चादर रहती है उसी पर खींच लेता है। उसचिकनी नेहाई और हथौड़ी की आपस की चोट से वह छल्ला पतला बीच में छेदयुक्त और एक ओर कटी हुई छोटी सी चकती हो जाती है और चमकने लगती है।

अभ्यास के कारण कारीगर लोग ऐसी फुर्ती से पीटते हैं कि एक एक के बनने में एक सेकन्ड भी समय नहीं लगता। प्रति सेकन्ड में यदि एक चिमकी पीटी जाये तो लगातार आठ घंटे की मिहनत में अठाईस हज़ार चिमकी पीटी जा सकती है। जहां यह बनती है वहां दूकान पर जाकर खड़े रहने से इसका ज्ञान हो सकता है।

सोना रूपा की चिमकी तय्यार करने में भी इसी तरह रूपा के तार पर सोने का गिलट कर लिया जाता है। इस रोज़गार में अच्छा लाभ है। एक होशियार कारीगर २५) की पूंजी से इस काम में बेखटक दो रुपये रोज़ पैदाकर सकता है।

---

## बीर धात्री।

(श्री रामप्रकाश लाल जी लिखित।)

मेवाड़ की वीरधात्री की अपूर्व कहानी अलौकिक भाव से पूर्ण है। यह धात्री एक समय ऐसी महा प्राणता और राज भक्ति दिखा गई है कि वह अवश्य इतिहासों में वर्णन योग्य है।

राजपूत कुल गौरव पराक्रान्त संग्राम सिंह लोकान्तरित हो चुके हैं; साहस में जो अविचलित और वीरत्व में अतुल्य थे, अस्त्राघात के

अस्सी गौरव सूचक चिन्ह ने जिस की देह को अलंकृत किया था, जिन्हों ने अधर्मी यवनों के सहित युद्ध में भग्नपाद और छिन्नहस्त होकर भी अपने वीरत्व और गौरव की रक्षा की थी—उन का देह पंचभूत में मिल चुका है; शत्रु के चक्रान्त जाल में पड़ कर पुरुष सिंह अनन्त निद्रा के वश हो गये हैं; मेवाड़ का अति उज्ज्वल सूर्य सदा के लिये अस्त हो चुका है; उन के शिशु सन्तान आज शत्रु के हाथ में हैं; भविष्यत विपद से अनजान ६ वर्ष का बालक निश्चिन्त मन से खाता पीता है, निर्भय सोता है; उधर दूरन्त शत्रु उस के प्राण नाश की चेष्टा कर रहा है. सीधा सादा भोला लड़का उस की क्या जानता है? संग्राम सिंह का दासी पुत्र बनबीर मेवाड़ का सिंहासन अपने अधिकार में रखने की आशा से इस कोमल नव कुसुमित फूल की डंटी तोड़ने को हाथ पसारता है। इस घोर विपद से आज पराक्रान्त संग्राम सिंह के बच्चे उदय सिंह की रक्षा कौन करेगा? बप्पाराव का पवित्र वंश निर्मूल हुआ चाहता है, इस वंश का आज कौन उद्धार करेगा? आज एक असहाय रमणी इस घोर विपद से उदय सिंह का उद्धार करने को अग्रसर होती है; अनाथ बालक आज एक तेजस्विनी धात्री के आश्रय अपना जीवन रक्षा करता है; धात्री पन्ना आज अकथनीय स्वार्थ त्याग के बल से बप्पाराव के वंशधर को जीवित रखने पर उद्यत होती है।

किस उपाय से पन्ना ने इस दुष्कर कार्य्य को साधन किया? किस उपाय से पितृ हीन सहाय हीन बालक जीता बचा? इस को सुन कर हृदय कांप उठता है; रात्रि के समय उदय सिंह आहार करके सोये हैं, उस काल एक हजाम ने आकर धात्री को जनाया कि बनबीर उदय सिंह को मारने आता है; धात्री ने उसी क्षण एक बांस की चंगेरी में निद्रित उदय सिंह को रख कर और उस को पत्रादि से ढांक कर नाई को समर्पण किया, विश्वासी नाई उस चंगेरी को लेकर किसी निरापद स्थान में चला गया; तब तक बनबीर हाथ में तलवार लिये उस घर में पहुंच कर धात्री से उदय सिंह का हाल पूछने लगा; धात्री मुंह से न बोली, चुपचाप नीचे सिर किये उस ने अपने निद्रित पुत्र की ओर अंगुली दिखा दी; बनबीर

उदय सिंह जान कर उस धात्री के पुत्र का ही प्राण संहार करके चला गया; उधर राज वंशीय कामिनी गण के रोदन ध्वनि में उस धात्री पुत्र की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई; धात्री चुप चाप अश्रु पूर्ण नयनों से अपने लड़के की प्रेत क्रिया देख कर हजाम के निकट गई। इस प्रकार पन्ना ने छलना करके बिना संकोच अपने हृदय रंजन शिशु सन्तान को घातक के हाथ में देकर महाराणा संग्राम सिंह के पुत्र की प्राण रक्षा की जिस रमणी ने चित्तौर के निमित्त, बप्पाराव की वंश रक्षा के लिये अपने जीवन का अद्वितीय अवलम्बन, स्नेह की एक मात्र पुतली, नयनों के तारा स्वरूप सन्तान की मृत्यु के मुंह में समर्पण किया, उस का स्वार्थ त्याग कितना बड़ा था ? जो रमणी कि हृदय रंजन को खिले हुए फूल की डंटी टूटने की नाईं देख कर भी अपने कर्त्तव्य साधन से विमुख न हुई, उस का हृदय कहां तक तेजस्विता का परिपोषक था ! आज इस महान स्वार्थ त्याग औ महीयसी तेजस्विता का गौरव कौन समझेगा ? हम डरपोक हैं, प्रकृत तेजस्विता आज हमारे हृदय में प्रवेश नहीं करती, प्रकृत स्वदेश-हितैषिता का महान भाव हम बूझ नहीं सकते; इसी से पन्ना को राक्षसी कह कर बहुतेरे घृणा भी करेंगे, किन्तु यथार्थ तेजस्वी औ यथार्थ हितैषी पुरुष इस असामान्य धात्री को दूसरे ही भाव से देखेंगे; इस असाधारण भाव को समझने का साधारण लोगों की अधिकार नहीं है; असाधारण जन ही उस के गौरव को समझने के समर्थ हैं। हाय ! आज भारत में ऐसे असाधारण कय जन रह गये हैं ! प्रतिध्वनि भी विपन्न भाव से पूछती है कय जन रह गये हैं ?" भारत आज निर्जीव औ निश्चेष्ट हो रहा है; भारत शीत संकुचित वृद्ध अथवा ककुआ सरीखा आप ही आप छिप रहा है। इस प्रश्न का कौन उत्तर दे ? फिर भी प्रतिध्वनि कहती है " कौन उत्तर दे ? "

---

## । उद्योग और श्रम ।

प्रिय पाठक बृन्द महाशयो !

बिचारणीय स्थल है कि " उद्योग और श्रम " यह क्या वस्तु है और इससे क्या क्या लाभ हो सक्ता है। देखिये परमेश्वर ने इस संसार

में मुख्य जीवही के अर्थ यावत प्रकार के पदार्थ और उद्योग और श्रम साध्य उत्पन्न किये हैं। बिना "उद्योग और श्रम" के कोई वस्तु कदापि प्राप्त नहीं ही सक्ती, उद्योग, खोज, उपाय, श्रम, परिश्रम, थोड़ा वा बहुत सब वस्तु में विद्यमान है, और उसी परमेश्वर के इच्छानुसार यथायोग्य, सूर्य्य, चन्द्रमा, तारागण, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, जीव, जन्तु, पशु, पक्षी, जलचर, वनचर, यानें यावत प्रकार के जीव इत्यादि सब अपने अपने नियत कार्य्य में यथा स्थित "उद्योग और श्रम" करने में प्रवृत्त हैं। यह तो प्रायः सभी कहेंगे, कि मनुष्य भी "उद्योग और श्रम" करके भली भांति अपना कालक्षेप और सुख से निर्वाह कर सक्ता है। इसमें कोई सन्देह नहीं, परंच इस समय हमारे इस लिख के लिखने का यही तात्पर्य्य है कि कितने ऐसे मनुष्य देखे गये हैं कि वे उद्योग और श्रम को जानते ही नहीं कि यह क्या वस्तु है, केवल अपने भाग्य के मस्तक पर उद्योग और श्रम साध्य असहनीय बोझ लाद चट ईश्वर की दोषी बना संतोषी बने बैठे रहते हैं। सोचना चाहिये क्या धनवान, क्या सामान्य, क्या गरीब, छोटे बड़े सब लोग जो जैसे हैं उन्हें उसी प्रकार "उद्योग और श्रम" राहु की भांति ग्रसित किये हुए हैं ऐसा कोई न ध्यान करें कि हम उद्योग और श्रम से रहित हैं और जो अपने को रहित समझते हैं उनकी दशा लिखना कोई आवश्यकता नहीं। हम तो यही कहेंगे कि जो मनुष्य कोई कार्य्य न करें तो ईश्वर सहायता किस बात पर करेगा उसी ईश्वर ने मनुष्य को सब कुछ भला बुरा का ज्ञान दिया है यह किस लिये? उसपर खेद कि ईश्वर को दोषी बनाना क्या यह बुद्धिमानी में गणित हो सक्ता है? कदापि नहीं इसी से स्पष्ट ज्ञात होता है कि महा कराल कलिकाल का यह वर्तमान काल सत्य है कि जो ईश्वर को मनुष्य ने दोषी बना डाला, तो फिर और लोगों को दोषी बनाते मनुष्य को क्या बिलम्ब है। हां यदि इस समय आप लोग यह कहें कि कितने मनुष्य अनेक उपाय करते हैं उनको सिद्ध क्यों नहीं होता। तो इसके उत्तर में हम तीन कारण लिखेंगे, एक तो यह कि जो यथार्थ उद्योग और श्रम जिस कार्य्य में जैसा चाहिये वैसा न बने उदाहरण

यह है कि जैसे वृक्ष का बीज बोया जाता है और बोने के पश्चात् लोग यत्न करते हैं और ध्यान रखते हैं कि उसका समय जब आवेगा तभी फल मिलेगा और जो कोई चाहे कि बीज बोतेही उसका फल डाल से तोड़ कर उसी समय खा लें तो यह कदापि नहीं हो सकता इसी प्रकार, कार्य्य उद्योग, श्रम, में लगे रहने से समयानुसार कार्य्य की सिद्धि अवश्यही होगी—देखिये ईश्वर ने यावत प्रकार के वस्तुओं के लिये "काल"की अवधि भी नियत की है—सर्वदा समय एक समान बराबर नहीं जाता। यदि यह कहा जाय कि प्रारब्ध बलवान है। प्रारब्ध में जो होगा सो मिलेगा, यह ठीक है। परंच प्रारब्ध भी तो पूर्व संचित कर्म्म करके हुआ है। और क्रियमान कर्म्म जो अब करते हैं वही अगले जन्म में अथवा आगे पर प्रारब्ध होता है और जो कार्य्य के निमित्त उद्योग और परिश्रम किया उसका फल इस जन्म में मिलने का समय न आया तो वही किये का फल अगले जन्म में अनायास अथवा थोड़े परिश्रम में प्राप्त हो जाता है उसी को लोग प्रारब्ध से मिला कहते हैं। और फिर इसी उद्योग करके इस जन्म में राजा अथवा लखपति जो न हुए परन्तु अपना निर्वाह ही अच्छी रीति से कर सकते हैं उन्हें भी एक प्रकार उत्तम हीं कहना चाहिये। जैसे एक मनुष्य एक दिन मे महल नहीं बना सकता परन्तु अपने सुख से रहने के लिये एक झोपड़ी अवश्य बना सकता है कि ओस और धूपके कष्ट से बचें पश्चात उद्योग और श्रम करते करते कुछ काल में पक्का मकान बन जायेगा। और जो कार्य्य में लगाही नहीं रहेगा तो यह बताइये कि कब कार्य्य की सिद्धि हो सक्ती है पाठको अब लिख बड़ा हो गया—शेष आगे।

द्विज कञ्ज चरण चंचरीक।

पं० सीताराम—चुनार।

---

## स्फुट कबिता।

पाठक महाशयो,

इस वर्षाकाल में आप लोगों की नई नई कबिताओं की भेंट करता हूं। आशा है कि इस से आप लोगों का चित्त अवश्यही कुछ बहलेगा और आनन्द प्राप्त होगा, क्योंकि कहा भी है कि "काव्य शास्त्रविनोदेन कालोगच्छति धीमताम्"

### सवैया।

उज्वल पांति बलाकन की लखि आवति खौरि दिये सुखधाम की।
मोरन देखि के याद परे मुकिरीट मयूर के पंख ललाम की।
त्योंहिं दमोदर देखतहीं चपला छबि कुंडल के अभिरामकी।
कैसे रहैं ब्रजबालकहो "घनश्याम लखे सुधि ही घनश्यामकी" ॥ १ ॥
बादर दादुर औ पपिहा पिक चातक शब्दन को न सुनावैं।
मोरहु नाच करैं न कहूं नहिं बारिद बारि हूं की झर लावैं।
त्योंहिं दमोदर जू बिजुरी जुगुनी चमकै चिनगी न लगावैं।
रोकहु जाइ अरी सजनी "बर साथ न हैं बरसात न आवैं" ॥ २ ॥
नीद न रैन परै सखियां अखियां ये रहै दिनरात खुलीई।
बातन काहूं की आवति है मन लागत भूख न भावै रसोई।
भूषण भार दमोदर भो बरु नैनन ते जल जात चलीई।
आपन भाग्यको दूषण है "बरसात गई बर साथ न सोई" ॥ ३ ॥
दूबरि देह भई थकि के लखि के सखियां करि चाव बड़ोई।
पूछत कारण काह कहौं सुख आवति ना कछु बात कहीई॥
बाढ़ी सुगाढ़ी बियोग व्यथा नहिंजात दमोदर धीर धरीई।
प्राण रहैं कि पयान करै "बरसात गई बर साथ न सोई॥ ४ ॥
पावस आय गयी हरि के बिनु प्राण ये कैसे के धीर धरेंगे।
झूलिहैं कौन हिंडोरन में मिलि काके भुजा मोहि अंक भरेंगे।

कौन दमोदर भींजि के आप बचाइ हमैं उपकार करेंगे ।
प्राणप्यारी हमैं कहि के सुमनोज व्यथा श्रमकौन हरेंगे ॥ ५ ॥

## संचारी भाव--धृति ।

मारग जानि परै न कहूं सबहीं थल छापी लिये असवास है । घेरि किये घन ऐसे अंधार दमोदर सूझै न जो अति पास है । तूही बिचार करै किन रे मन सा कत दूर जहां पिय बास है। आवन कैसे करैं मनभावन सावन जो पै सुहावन मास है ॥ ६ ॥

## दोहा ।

धरै क्यों न धीरज हिये, रे मन निपट अयान
आवहिंगे बीते अवशि, पावस मीत सुजान

यह लीजिये स्वप्न दर्शण की आनन्द मदिरा पान कर मत्तवत प्रेम प्रवाह में मग्न हूजिये देखिये कैसा मज़ा है ।

## सवैया ।

निशि सीवत एक रही सजनी रजनी युगयाम रही तीनहीं ।
सखि औचक आइ परे सपने दृग में घनश्याम लखी जबहीं ।
ढिग आइ दमोदर त्योंहिं दोऊ हरि बांह हमारी गहाजुगही ।
डरपी डरती अंखियाचु खुली " मनकी मनसा मनही में रही " ॥ १ ॥
रही अपने गृह सीवति मैं दुघरी रही यामिनी हीन की भोर ।
लगे बन मोर मचावन शोर लगे गरजे उनये घन घोर ।
लखी सपने तेहि काल दमोदर मोहनी मूरति नन्द किशोर ।
चली निंदिया भजि नैनन ते चित ते भजि त्योंहिं चल्यो चित चोर ॥२॥
सुन्दर सेज अलंकृत मन्दिर दीपन ते चख माहिं चका चकी ।
आइ दमोदर जू तितही सपने मे करी रस हीं की छका छकी ।
अंकहि मेलि सकेलि गही सुबढ़ी चित चाव हिये मे हका हकी ।
आंखै गई खुलि नीन्द गई "न तिया की गई कतियाकी धका धकी" ॥३॥

## कान्ता बिरहाग्नि तप्त ।

सुनिये, प्रोषितनायक आर्त्त नाद से क्या कह रहा है, बिचारिये तो सही ।

## कवित्त

जाके अपमानिवे की मनुने निषेध कह्यो जाकी पराचीन ते सुमान चलि आयी है। बिपुरा मुरारी मीन केतु कर धारी अरि दामोदर जाकी अरधाङ्गिनी बनायी है। जेहि के वियोग की व्यथा में रामचन्द्र हूं ने बिलपि बिपिन बीच दिवस बितायो है। ताकी कुड़वाई बिरहागि में जरावन की मीकी परदेश यह पेट पापी लायी है ॥ १ ॥

## दोहा।

कहा कहौं कासो कहौं, ककुक कह्यो नहि जात।
रत्नाकर विच्छेद में, प्रतिपल गीता खात ॥

## सवैया।

आखिन ते निदिया हुं गई जल बुन्द लगे जनु तीर कटारी।
त्योंहि दमोदर सीरे समीर हुताशन धाह भयङ्कर भारी।
देश बिहाय परे परदेश मनोज चलावत बान सुधारी।
हाय उपाय कहा करिये बिनु प्यारी कटै नहिं यामिनी कारी ॥ २ ॥

## दोहा।

बिधना या परदेश में, चहुंदिशि देखत रोय।
दुख मेटन हारो कहौं, नजर न आवे कोय ॥

रसिक गण, नवीन तथा प्राचीन मुकरियों का नमूना मात्र लीजिये और सूक्ष्म दृष्टि से कहिये तो नये और पुराने ज़माने में क्या अन्तर है ?

( पुराने ज़माने की मुकरी )

पीताम्बर तन सुन्दर श्याम। करत शब्द मुरली अभिराम ॥
आइ मिल्यो कुञ्जन मग दीरा। क्यों सखि सज्जन ना सखि भीरा ॥

( नये ज़माने की मुकरी )

खट खट अजब अवाज सुनावे। लाखन कोस खबर ले धावे ॥
जात तनिक नहिं लागी बार। क्यों सखि सज्जन ना सखि तार ॥

प्रेमियों का प्रेमी—पांडेय दामोदर सहाय।
सेकिन्डइअर क्लास, बी० एन० कालिज-बांकीपुर।

## आवागमन ।

( भारत सुदशा प्रवर्तक )

भारतवर्षीय शास्त्रों में जो सिद्धान्त लिखे हैं निश्चय वे बडे दृढ़ गम्भीर और लोकोपकारी हैं, उनका मानना लोक परलोक में सुख का हेतु है। तथापि कितने ही पुरुष ऐसे हैं जो इस विषय में अपने दृढ़ पक्षपात बुद्धि भ्रम अथवा अपनी समझ को ही सबके ऊपर मान दूसरे की बात को ध्यान में नहीं लाते; और अनेक भांति तर्क बितर्क करने लग जाते हैं। उनकी शङ्काओं का यथामति उत्तर देना, उत्तर और वैदिक सिद्धान्त का दिखलाना हमारे इस लेख का मुख्य अभिप्राय है।

प्रथम इसका निर्णय अवश्य है कि आवागमन किसे कहते हैं? आवागमन का अर्थ आना और जाना है। अर्थात् पाप पुण्य के अनुसार इस संसार में दुःख सुख भोगने के लिये बारम्बार पैदा होना और मरना इसी का नाम आवागमन ( तनासुख ) है।

( प्रश्न)—यदि मनुष्य मरकर फिर उत्पन्न होता है तो उसे पहिले जन्म की बातें क्यों स्मरण नहीं रहतीं?

( उत्तर )—प्रत्येक बात मनुष्य को याद रहे यह नियम नहीं है। इसी जन्म में कालान्तर पड़ने पर सुध नहीं रहती तो पूर्व जन्म का स्मरण कैसे रह सकता है। कौन कह सकता है कि पांच वर्ष की अवस्था में हमने अमुक २ काम किए थे; काम दूर रहे [ बड़े २ दुख भी तो भूल जाते हैं ] जब बच्चा पैदा होता तो उसकी स्मरण शक्ति भी प्राकृतिक [ नेचुरल ] निर्बल होती है। जब कि उसको तुरन्त की सिखाई बात धारण करने की शक्ति नहीं होती तो पीछली बातें कैसे बता सकता है। जब कोई युवाजन [ जवान आदमी ] रोगी होकर अत्यन्त बलहीन हो जाता व जब कि मनुष्य को बुढ़ापा और कमज़ोरी होती है तो उस समय उसकी याद भी कम हो जाती है। लोग कहते भी हैं कि "भाई हमें तो अब हाथ की धरी

वस्तु भूलती है " इसी प्रकार बालक की दशा समझनी चाहिये बूढ़े में भी उक्त स्मर्ण शक्ति निर्बल होती है।

( प्रश्न )—किसी को कुछ तो स्मरण होना चाहिए ? सो कोई कुछ नहीं बताता इसलिये आवागमन मानना भ्रम है ॥

( उत्तर )—किसी २ को कुछ सुध रहती भी है। अनेक छोटे बालकों मध्ये यह सुना गया कि उन्हीं से बचपन में जब कि उनका मुंह खुलने लगा पूर्व जन्म का कुछ परिचय दिया। और वह अनुसंधान करने पर ठीक वैसाही पाया गया और यह भी देखने में आया कि प्रायः ३।४ वर्ष के बालकों ने जो कुछ कहा वह बरस छ महीने का अन्तर पड़ने पर उनके दत्तचित्त से उतर गया ऐसी बातें विश्वस्त सच्चे पुरुषों से सुनी गई और बिना किसी प्रयोजन के उन्हीं ने कहीं। मनुष्य के हृदय पटल पर अनेक चित्र नित्त खिचते और बिगड़ते रहते हैं। बहुत दफा रटी बात भी किसी समय बार २ सोचने पर ध्यान में नहीं आती।

प्रत्येक पुरुष अपनी देखी सुनी बात की तबही कह सकता है जब कि कोई उद्दीपक ( याद दिलाने वाली वस्तु ) पाता है। जैसे किसी की चोरी हो गई वा उसे उग्र रोग हुआ तो जब वह किसी दूसरे की चोरी वा अन्य के रोग की दशा देखता है तब अपनी पिछली बात की सुध करता है।

बच्चे की गर्भ व बहुत छोटे पन पर उद्दीपक पदार्थों का व्यवहार न पड़ने और चित्त के निर्बल होने से याद नहीं आती वा आकर भी रपट जाती है।

आपलोग स्वप्न में अपनी हालत का बिचार कर सकते हैं, कि उसमें कैसा बावला बनना पड़ता है। तो यह जीव जो कि एक स्थान से निकल गर्भ में जाता और वहां महीनों अंधकार में पड़ा रहता; फिर बचपन की दशा में आता, इतने समय बिना किसी उद्दीपक के सब भूल सा जाता है यह भुलाव इस प्रकार का होता है जैसे किसी ने १० वर्ष की अवस्था में व्याकरण पढ़ फिर ५० वर्ष उसे उसका कुछ भी काम न पड़ा तो वह कहता है कि मुझे बिलकुल याद नहीं—परन्तु जब पढ़ता है तो शीघ्र कण्ठ हो जाता है। जो कि पूर्व संस्कार के कारण ऐसा होता है। यह संस्कार

जीव के साथ अवश्य रहता है। बालक उत्पन्न होने पर माका दूध पीने लगता है। और मा बहुत जल्द कहता है, मनुष्य नहीं किन्तु गाय आदि पशुओं के बच्चे भी मा, मामा या मेमे आदि मकार में मिलते हुए शब्द अनायास [ कुदरती तौरपर ] उच्चारण करने लगते हैं—यह पूर्व जन्म के अभ्यास का कारण है। बस इतना मात्र संस्कार रहता है, किसी २ को ज्यादा याद रहता है। यह बात दूसरी है परन्तु सबकी नहीं ।

कितने ही लोग ऐसे देखे गये कि उनकी थोड़ी चेष्टा से बहुत विद्या आती है और बहुतेरों की बहुत बताने पर उनके ध्यान में बात नहीं चढ़ती,—यह भी पूर्व जन्म के श्रम का कारण है अर्थात् जो विद्वान मरते वे जल्द सीख जाते हैं। और जन्मान्तर के गावदी देर में नहीं समझ पाते। इसके सिवा एक बात और भी देखते हैं कि किसी की बुद्धि किसी बात में और किसी की बुद्धि किसी विषय में प्रबल पड़ती है—इससे ऐसा बोध होता है कि जिसकी समझ जिस विषय में सुभीते से [ बआसानी ] फैलती है उनको पूर्व जन्म का अभ्यास सहायता देता है। जैसे कोई जन कुछ दिन किसी जहाज का कप्तान रहा है तो उसको कुछ काल काम छुड़ादेने के पीछे तब उस काम में लगाना चाहो तो वह बमुकाबले दूसरे कामों के जिनकी उसने नहीं किया ( यद्यपि बुद्धिबल से कर सकता है ) प्रवृत्त होने में बहुत मन बिगाड़ता है। अर्थात् बिना कुछ अभ्यास के उलझता है इसी प्रकार यहां भी जानो। जैसे अंगरेज़ी में मसला है Poets are born not made अर्थात् शायर खुद होता है न कि बनाने से बस यह कुदरत पूर्व जन्म का अभ्यास है—क्योंकि दीमाग़ में कोई खाना कबिता या गणित विद्या का जुदा नहीं होता जिसे देख कहा जाय कि यह स्वाभाविक ( कुदरती ) कबि वा गणितज्ञ है।

सबलोग इस व्यवस्था को प्रत्यक्ष देखते हैं कि जिन २ बिषयों का मनुष्य अनुभव कर चुकता है उनको कालान्तर में काम पड़ने पर उन बातों के करने में उलझता नहीं बरन आनन्द से प्रवृत्त हो जाता है—इसी प्रकार एक जन्म का असर ( जीव के न बदलने के कारण दूसरे जन्म में जा पड़ता है।

संसार में सुख दुख की व्यवस्था भी हमको आवागमन का दृष्टान्त देती है। जो लोग परमेश्वर को न्यायकारी आदि गुणों सहित मानते हैं वे अवश्य स्वीकार करेंगे कि कोई पुरुष जीवों को उनके कार्य्य के अनुसार धनी वा निर्धन के घर जन्म देता है अर्थात् पाप पुण्य का फलभोग कराता है।

स्कोपनहार नामक प्रसिद्ध विद्वान अपने ग्रन्थ "डाईवेल्ट अलस विली अण्ड वीर्सटेलङ्ग" में लिखता है कि जो लाभ मनुष्य को सुषुप्ति से प्राप्त होता है वही लाभ इच्छा (आत्मा) को मृत्यु से प्राप्त होता है। यदि आत्मा को निज कर्मों तथा दुखों का स्मरण ज्यों का त्यों सर्वदा बना रहे तो आत्मा एकही प्रकार के कामों को अनन्त काल तक न तो बारम्बार कर सकेगा और न एक ही प्रकार के दुःखों को बारम्बार सह कर किसी प्रकार का लाभ उठा सकेगा। मृत्यु नाम सुषुप्ति में शयन करते समय आत्मा निज स्मरण आदि को अन्त रहित कर देता और पुनः इस सषुप्ति को मिटा नूतन संकल्पादि के साथ नये शरीर में प्रगट होता है, मानो आत्मा के लिये नूतन दिन उदय होता है। जिसमें वह नई २ कामनाओं के पूर्ण करने में प्रवृ होता है—इत्यादि

फलतः आवागमन का सिद्धान्त परम गम्भीर है। भारतवर्ष के सिवा दूसरे देशों के लोग भी थोड़े २ हेरफेर के साथ इसको मानते हैं। इंगलैंड, मिश्र यूनान, चीन, पारस प्रभृति अनेक देशों के कतिपय जन आत्मा का नाश नहीं मानते।

साउदी नाम प्रसिद्ध अंगरेज़ी कबि कहता है कि जीवन शक्ति की विद्यमानता को देख कर हमें पूर्ण बिश्वास हो गया है कि यह जीवन शक्ति सर्वदा वर्त्तमान रहेगी संभव है कि यही चेतन शक्ति किसी अन्य प्रकार के शरीर को धारण कर ले जैसा इसने पूर्व में धारण किया था,—एमरीका का एमर्सन नामक प्रसिद्ध बिद्वान एक बालक की ओर इशारा कर बोलता है कि "इस बालक के भोले वेशपर मत भूलो इनकी अवस्था हज़ारों वर्षों की है"।

बिशप बारबर्टन लिखते हैं कि आवागमन का सिद्धान्त बड़े २ बिद्वानों से हरएक समय में माना गया है। इससे हम लोगों के कतिपय

कठिनतर प्रश्न हल हो जाते हैं जर्मनी का प्रसिद्ध विद्वान गोथी अपने फिलासोफी के ग्रन्थों में इस सिद्धान्त को पूर्ण रूप से पुष्ट करता है।

कवि प्लाटो (अफ़लातू) ने भी पुनर्जन्म माना है। मुहम्मदी भी पुनर्जन्म मानने से रहित नहीं हो सकते जब कि वे इस बात को मानते हैं कि रूहे कयामत तक इकट्ठी रहेगी बाद को खुदा न्याय कर सजा या जजा देगा मुसल्मानों में सूफी लोग भी रूह का फिर पैदा होना मानते हैं।

कुरान के चौथे सिपारे में एक आयत में लिखा है कि इन्सान मरता और पैदा मरता और पैदा होता, यह दुबारा लिखा जाने से यही अभिप्राय है कि बार २ जन्म होता है जैसा आवागमन अर्थात् आना और जाना है।

युनान के प्रसिद्ध विद्वान पिथागोरस ने भी जो कि भारतवर्ष में आया था आवागमन का मानने वाला है।

स्कोपनहार का सिद्धान्त ऊपर दिखा दिया प्रोफेसर मेक्समूलर ने "रायल इन्स्टीट्यूडर" नाम की महती सभा में बड़े २ विद्वानों के सन्मुख कहा था कि जीव ने जैसा उत्तम वा निकृष्ट कर्म्म किया उसी प्रकार शुभाशुभ फल भोगता है और जैसा करेगा वैसाही भविष्य जन्म में पावेगा।

---

## बीबी साहब वा वेश्या

इन के समान भाग्यवती रमणी पुण्य भूमि भारतवर्ष भिन्न और कहीं नयन गोचर नहीं होतीं। सती साध्वी हिन्दू रमणी देश के साथ ही अगण्या ही कर अन्तःपुर ही में रहती हैं। उन के सौन्दर्य की आभा अन्तःपुर ही में विलीन होती है, उन की वाणी कय जन के कर्ण गोचर होती है? लोग समझते हैं कि लाला, बाबू उन के रूप गुण और पवित्रता से मुग्ध हो कर तन्मय हो रहे हैं, वे देवियां हृदय की धन हो रही हैं। सहस्र मुखों से जब सती साध्वी के गुण की कीर्तन करते हैं तब संदेह किसी को क्या हो सकता है? पर बिना वेश्या के पवित्र संगीत के लाला बाबू का आनन्द प्रभा रहित, उन की पूजार्चना असम्पूर्ण, उन की सब क्रिया अंगहीन सारा उत्सव शून्य रहता है। इसी से कहना पड़ता है कि बीबी साहब अति भाग्यवती रमणी होती हैं।

बिहार बन्धू का **॥ साहित्य सरोज ॥** क्रोड़ पत्र

हिन्दी में गिनती के लिये तो बहुत से मासिक तथा पाक्षिक पत्र छपते हैं किन्तु दो एक को छोड़कर सभी रद्दी से हैं इनमें ठीक समय पर न निकलना, भाषा की सजावट पर ध्यान नदेना, अनावश्यक झगड़ों में उलझ जाना, लेखों का वेढङ्गापन, भाषा की मन मानी खिचावट आदि दोशों से ग्राहकोंके श्रद्धा भाजन बहुत ही कम देखे जाते हैं हिन्दी में ऐसा कोईभी पाक्षिक पत्र नहीं जो बङ्गभाषा के साहित्य और साधना एवम् भारती और जन्म भूमि का पद पाने योग्य हो मरहटी और अंग्रेजी के मैगजीनों की साहश्यता कर सक्ते हों—इसी विचार से

हिन्दी साहित्य के उद्यान में रसीले और मीठे फल दायक पौदे लगाने वाला, रहस्य, रमायन और गद्य पद्य की छटा दिखाने वाला, नये नये नाटक उपन्यास और नवन्यासों का मन भावन स्वाद चखाने वाला, घर घर चटकदार लेखों की चटनी चाटने वाला, पंच प्रपंच और सण्ड भण्डके सुन्दर और हास्यमय प्रस्तावों से पाठकों को ही ही हंसाकर दिलकी कली खिलाने वाला, पोलिटिकल सोशल मारल विषयक गम्भीर लेखों से राजा प्रजा को चिंता कर विशेष लाभ पहुंचाने वाला, " साहित्य सरोज " जुलाई सन् १८८५ ई० से महीने में दो बार हर पहिली और पन्द्रवीं तारीख़ को प्रकाशित हुआ करेगा—आकार में पुस्तकाकार १६ पेजका सुन्दर टाइप और सुवोध अक्षरों में पुष्ट चिकने और स्वच्छ कागज पर बड़ी सुन्दरता से छपेगा इतना मनोरंजन योग्य होतेभी मूल्य केवल डाकव्यय सहित आग्रिम वार्षिक २।) विना महसूल २) हैं पत्र छपने से पहिले मूल्य सहित ग्राहक होने का कार्ड भेजने वालों से १॥) महसूल सहित २) लिया जायगा।

भारत वर्ष के प्रसिद्ध और योग्य लेखक गण इसके सहकारी सम्पादक और प्रधान लेखक नियुक्त किये गये हैं

साहित्य सरोज के ग्राहकों को नकद इनाम

जो महाशय साहित्य सरोज का आग्रिम वार्षिक मूल्य दरख्वास्त के कार्ड सहित भेजेंगे उनके लिये हमने पांच इनाम हर ढाई सौ दरख्वास्तों पर इस प्रकार नियत किये हैं कि जिनके ग्राहक होने के कार्ड नागरी के सुन्दर और शुद्ध अक्षरों में सब से अधिक पंक्ति सहित आवेंगे उनको प्रथम श्रेणी का इनाम८) रु० का दिया जायगा इसी प्रकार दूसरे को ६) तीसरे को ४) चौथे को २) और पांचवें को १) रुपया उपहार दिया जावेगा—दरख्वास्त अथवा मूल्य भेजने का पता प्रयाग दास गुप्त मैनेजिंग प्रोप्राईटर साहित्य सरोज—मेरठ सिटी॥

Lightning Press—*Meerut.*

उन का यह सौभाग्य नया नहीं है। बीबी साहब इन्द्र के सभा की नर्त्तकी और नायिका हैं, इन्द्र स्वर्ग के राजा हैं सुख का अन्त स्वर्ग ही है। सब कोई जो धर्म कर्म कर रहे हैं किस लिये? स्वर्ग सुख भोग ही के लिये न? वहां परिजातक के सुगन्ध से हृदय उन्मत्त हो जाता है, स्थिर यौवना उर्वशी के नृत्य गीत से हृदय प्लावित उल्लासित और कृतार्थ होता है। यही उर्वशी की शाप भ्रष्टा भगिनी है।

बीबी साहब के नुपूर की झुनझुन, नितम्ब का ललित ललन नयन का कटाक्ष बाण, सुमधुर हास्य, हाव भाव—यह सब देव पूजा की सामग्री है। जिस मठ में बीबी नहीं वह मठ ही नहीं, वहां देव देवियों की पाषाण मूर्ति है पर अन्तरात्मा नहीं है।

बी बी साहब को उपेक्षा नहीं हो सकती। बीबी साहब के पवित्र द्वार की शुद्ध मृत्तिका बिना लिये जगत्तारिणी आद्याशक्ति का पवित्राभिषेक नहीं सम्पन्न हो सकता। जिस द्वार पर दिन रात निष्ठा निर्मलता धर्म और समाज का इकट्ठा बलिदान हो रहा है उसी द्वार की मृत्तिका पवित्र समझी जाती है। इसी से यह भी कहना पड़ता है कि बीबी साहब का अधिकार सनातन से है।

यह षड़ैश्वर्य शालिनी भी हैं। नारि जाति के अनमोल निधि सतीत्व को जलांजली दे, समाज के मस्तक पर पदाघात कर लज्जा और धर्म को नदी में डुबा कर कलंक की टोकरी सिर पर लिये भुजंगिनी गर्व से विचरण करती हैं, कौन कहता है कि इन को वीर्य नहीं है! तुम को और तुम्हारे समाज को यह तृण से भी हलका और रेंड से भी कम ज़ोर समझती है।

लाला, बाबू के यहां विवाह है। समाज के अपने यगाने बन्धु बान्धव सब का न्योता होगा, सब मिल कर आनन्द मनायेंगे। कहीं कहीं इस आनन्द में भाग अन्तःपुर निवासिनी महिलाओं को भी मिलता है। चिक के पर्दे के पीछे से नेपथ्य में रंगरस का आस्वादन करती हैं। स्वयं घर भी खाली नहीं रहेंगे। सभा में सब से ऊंचे स्थान पर बैठ अपने बड़े लोगों के बीच अलहाद आनन्द में दीक्षित होंगे। बीबी

साहब के सौभाग्यवती होने में क्या सन्देह है बाबू ने वरण करके उन को अपने यहां बुलाया है। भले आदमी के यहां कुलटा प्रवेश करके अन्तःपुर की महिलाओं के सामने हाव भाव मुद्रा आदि के साथ नृत्य करने लगी। सुमधुर टप्पा ठुमरी में कटाक्ष सुधा मिला कर वाह्यज्ञान शून्य बाबू लोगों के चित्त चकोर को जी भर कर पान कराने लगी, लाला बाबू आनन्द में मग्न हो गये। घर ने संसार की प्रथम शिक्षा पाई। लाला बाबुओं की रुचि, कैसी मार्जित, कैसी विशुद्ध कैसी उन्नत है ! ! ! शोक है, रुचि की बलिहारी है। अपने यगाने, बन्धु बांधव के मध्य में बारांगना को बिठाना और आनन्द प्रमोद करना क्या बिशुद्ध रुचि को प्रगट करता है ?

---

## तंत्र।

इस नाम के बहुत से ग्रन्थ हैं जो भगवान महेश्वर के अभिप्राय के अवलम्बन से रचे गये हैं। काल प्रभाव से लोग सब ऐसे पापाच्छन्न और अज्ञानता से ढके रहेंगे कि उस पाप के दुसह दुख से निस्तार पाने के लिये कोई उपाय भी उनसे न होगा। पर जिस नाम की महिमा से उन के सब पाप नष्ट हो सकते हैं उसी नाम से घोर पाप के समय में भी भक्ति और अनुरक्ति रखने से परित्राण की आशा भी रहती है और सम्भावना भी रहती है। वेदविहित धर्मोपदेश जब लोग पालन कर सकेंगे उस समय में लोगों की प्रवृत्ति के अनुकूल ही धर्मोपदेश देना बहुत आवश्यक है! इसी आवश्यकता के कारण भगवान शंकर ने भगवती शंकरी को उपलक्ष करके कलिके मनुष्यों के लिये बहुत सा उपदेश प्रदान किया था। कलि ही के लिये वे उपदेश थे इस लिये पहले युगों में उन उपदेशों का धार्मिक समाज में बहुत प्रचार नहीं था। पर जान पड़ता है कि इनही उपदेशों से रावण प्रभृति राक्षस लोग और दैत्य दानव भूत प्रेत आदि तमोगुण प्रधान जाति समूह विशेष विशेष शक्ति लाभ करती थी। तंत्र के अनुसार बिना पाप किये धर्म कार्य करने का भी बहुत उपदेश है और बहुत से शुद्ध चरित के लोग उसी के

अनुसार चलते भी हैं पर कलि के प्रभाव से वैसे शुद्ध चरित्र के लोगों की संख्या धीरे धीरे कमही हुई जाती है। और जैसे जैसे लोगों के लिये तंत्र शास्त्र का विशेष प्रयोजन है वैसे ही लोग दिन दिन अब बढ़ते जाते हैं। यद्यपि तंत्र सब शिव के अभिप्रायानुसार ही रचित हुए हैं तथापि रचना कारियों के सामयिक भावों का उसमें प्रयुक्त होना असम्भव नहीं मालूम होता इसी से तंत्र में स्थान स्थान में परस्पर विरुद्ध भाव देख पड़ता है। जो हो यह तो अवश्य ही स्वीकार करना होगा कि तंत्री का अभिप्राय बड़ा है और साधको के लिये सारवान हैं कोई उनका बुरा बरताव करे तो ग्रन्थों का क्या दोष है।

---

## प्राप्ति—स्वीकार

(१) चरखारी भूषण—पाक्षिक पत्र बुन्देलखंडान्तर्गत चरखारी राज्य से लेथो में छप कर प्रकाशित होता है मूल्य सर्वसाधारण से १॥) विद्यार्थी तथा असमर्थों से १) राजा महाराजाओं से ५) गवर्नमेन्ट से १०) है अभी इसके दोही अंक देखने में आये हैं इस से अभी इसकी प्रशंसा वा निन्दा कुछ नहीं की जा सकती।

(२) पारसियों का संक्षिप्त इतिहास (२० पृष्ट)

(३) कविवर बिहारी लाल (१८ पृष्ट)

उपरोक्त दोनों लेख जो छोटे पुस्तकाकार में छपे हुए हैं नागरी प्रचारिणी सभा के अधिवेशन में पढे गये थे। मूल्य दोनों का दो दो आना है। सभा ने इनको प्रकाश कर अच्छा काम किया है। कविवर बिहारी लाल पर श्री बाबू राधाकृष्ण दास के उस लेख को पढ़ जाने से बहुत सी बातें सोचने की मिल जाती हैं। रसिक जनों को उचित है कि इसे ले कर पढ़ें और जहां तक हो सके पता लगा कर कवि के जीवन चरित्र को सर्वांग सम्पूर्ण करने में सहायता देने में न चूकें।

मिलने का पता—नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

साहित्य सरोज—हिन्दी भाषा का पाक्षिक पत्र मेरठ से प्रकाशित हुआ है। तीन अंक अभी मिले हैं। इन तीनों के लेख तो अच्छे और

उत्सुकता बढ़ाने वाले हैं परमेश्वर इसकी उन्नति करे और आज कल के और और हिन्दी भाषा के पत्रों की नाईं इसे अल्पायु न दे। मेरठ वासियों से इसका वार्षिक मूल्य २) और अन्यत्र वालों से १।४) लिया जाता है।

---

## हंसी तफ़रीह ।

रजनी बाबू ने एक दिन मास्टरसे पूछा कि मेरा लड़का कैसा पढ़ता है।

मास्टर ने कहा—आप का लड़का पढ़ने लिखने में तेज़ है, क्लास में सब से ऊपर रहता है रोज़ वक़्त पर स्कूल आता है।

रजनी बाबू ने कहा—लड़कपन में इन बातों के लिये मेरी भी सब कोई तारीफ़ करते थे। देखते हैं कि हमारे लड़के ने पितृ गुण पाया है।

मास्टर ने कहा—लेकिन लड़का आप का सब से लड़ता और मार पीट करता है।

रजनी बाबू (ज़रा सोच कर बोले)—तब तो देखते हैं कि लड़के ने मातृ गुण भी पाये हैं।

---

एक मौलवी ने लड़कों को पढ़ाते समय एक लड़के से यह कहा कि मैं तुझको जी से इतना पढ़ाता हूं लेकिन तेरी मां मुझ को कभी कुछ खिलाती नहीं। लड़के ने जाकर अपनी मां से कहा उसकी मां ने एक दिन मौलवी साहब की दावत खीर वग़ैरः की की। मौलवी साहब खाते जाते थे और तारीफ़ हर लुकमों में करते जाते थे आख़िर को मौलवी साहब ने यह कहा कि आज क्या है जो तेरी मां ने मुझे उमदा खाना खिलाया क्या वह मेरे ऊपर आशिक़ है लड़के ने जवाब दिया कि यह तो मैं नहीं जानता अब्बा के लिये खिर पकी थी उसमें कुत्ते ने मुंह डाल दिया था सो मां ने कहा कि मौलवी साहब को दे आओ मौलवी साहब ने यह सुन कर कहा लाहौल बिला कूवत और गुस्सा में उस खीर के बरतन को फेंक दिया तब लड़का देख कर रो उठा और मौलवी साहब से कहने लगा कि आप ने यह क्या ग़ज़ब किया इस मिट्टी के बरतन में मेरा छोटा

भाई पाख़ाना फिरा करता था सो आपने तोड़ डाला अम्मा नाराज़ होंगी यह बात सुन कर मौलवी साहब और भी वल्ला बिल्ला मचाने लगे और फिर अहद किया कि अब लड़कों के साथ ऐसी मज़ाक़ कभी न करेंगे और तब ही से लड़कों का पढ़ाना छोड़ कर गोशः नशीनी इख़्तियार कर लिया।

---

## महसनुलमुल्क।

एक सभा ता० २ जून सन ८५ ई० को बड़े धूम धाम से डुमरांव में हुई जिसके सभा पति मौलाना शाह महम्मद अमानतुल्लाह साहब के पुत्र मौलाना अबुलख़ैर साहब हुए थे। यह सभा सबेरे नव बजे से एक बजे दिन तक बड़े समारोह के साथ दीवान साहब के सभालय में रही। इसमें मुन्शी बिसेसर दयाल साहब अफ़सर आला महकमे रेयासत मुन्शी रणधीर प्रसाद साहब ख़ास कलम श्री मती महारानी साहबा, मुन्शी राम लगन लाल साहब अफ़सर महकमे कोठी कलां इत्यादि प्रायः हर महकमे के सब हिन्दू और मुसलमान नौकर तथा प्रजा इकट्ठे हुए थे। सभा में प्रथम वह पत्र पढ़ा गया जिसमें श्री मती महारानी साहबा ने दीवान साहब के (महसनुलमुल्क) "देशहितैषी" का ख़िताब पाने पर अपनी सच्ची प्रसन्नता प्रगट किया था इसके बाद जनाब मौलाना अबुल ख़ैर साहब ने बड़ी देर तक इस विषय में असरदार वक्तृता दी और साथ ही यह कहा कि हम बड़े ही शुक्रगुज़ार होंगे कि मुन्शी बिसेसर दयाल साहब अफ़सर आला महकमे रेयासत आज के तारीख़ से इस बात के लिये एक यहकाम जारी करें कि सब लोग दीवान साहब के नाम के साथ इस ख़िताब को लिखा करें। इसके बाद मुन्शी बिसेसर दयाल साहब ने इस बात को बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। इन सब बातों के हो जाने पर श्री युत दीवान साहब बहादुर उठे और सब लोग मुख़ातिब हुए। प्रथम दीवान साहब बहादुर ने श्री मान महाराजा साहब बहादुर के वैकुण्ठ धाम होने के समय से आज तक की सब कठिनाइयों तथा कार्यों की कथन किया तद पश्चात श्री बिहारी जी, श्री मती महारानी साहबा और गवर्नमेन्ट को धन्यवाद दिया। इसके उपरान्त

हिन्दू मुसल्मान मंडली की शान्ति स्थापन करने के कारण धन्यबाद दिया और नीति भरी अनेक प्रकार की बातों से एक उत्तम असरदार वक्तृता दी जिसका असर सब लोगों के चेहरे से साबित होता था। इसके उपरान्त सब लोग सहमत हुए और एक बज के बाईस मिनट पर सभा बिसर्जन हुई।

इस खिताब "महसनुल्मुल्क" के विषय में जनाब बड़े मौलाना शाह महम्मद अमानतुल्लाह साहब के समय में ता० २५ मे से ३१ मे सन ९५ ई० तक बड़े समारोह के साथ कई सभायें हो चुकी थीं परन्तु श्री मती महारानी साहबा तथा साधारण के हृदय प्रकाशार्थ इस सभा का होना अत्यावश्यक था यतएव यह सभा हुई और ईश्वरानुग्रह से यह कार्य्य बिधि पूर्वक आद्योपान्त समाप्त हुआ। ऐसे अवसर में हमको भी हर्ष प्रकाश किये बिना और दीवान साहब बहादुर को धन्यबाद दिये बिना नहीं रहा जाता क्यों कि भारतवर्ष की ऐसी दीन मलीन दशा में ऐसा देश हितैषी पुरुष का होना साधारण के वास्ते थोड़ा सौभाग्य का कारण नहीं है।

---

निम्न लिखित महाशयों ने हमारे पास निम्न लिखित ग्रंथ भेजे है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं।

१ श्री युत बाबू उदित नारायण लाल जी वकील कलक्टरी गाज़ीपुर

१ सती नाटक। २ दीप निर्वाण।

२ श्री युत पंडित ज्वाला प्रसाद जी मिश्र मुरादा बाद।

१ बेणी संहार नाटक। २ शिव तांडव।

श्री युत पं० सीताराम जी उपाध्या पिलकिछा जौनपुर।

१ मडली मंडन। २ काव्य कलामीनी। ३ रम्भा शुक सम्बाद। ४ नाम प्रताप शतक। ५ श्री गारांकुर। ६ बामा मनरंजन (पद्य)।

४ श्री युत पं० अजोध्या सिंह उपाध्या निजामबाद आजमगढ़।

१ प्रदुम्न बिजय। २ रूक्मिणी परिणय।

५ श्री युत गोस्वामी बामनाचार्य्य जी मिर्जापुर।

१ बामन बिनोद। २ बैसाख नन्दन। ३ सुन्दरी सौदामिनी।

६ श्री युत शिवप्रशाद जी दरभंगा।

१ श्री लक्ष्मीरवर भूषण। २ ऋतुप्रकाश।

७ श्री मती चन्द्रकला बाई बूंदी। १ राम चरित्र।

८ श्री युत गुलाबराव जी बूंदी। १ शुक्रनीति। २ निति मंजरी।

९ श्री युत पण्डित राधा बल्लभ जी डुमरांव।

१ महिम्न लतिका।२ रसिकरंजन रामायण। ३ अंगरत्नाकर।

४ बिजयोत्सव।

१० श्रीयुत बाबू गोपालराम जी एडिटर भाषाभूषण १ बसंत बिकास।

११ श्री युत बाबू गौरीशंकर भट्ट सम्पादक भट्टभास्कर कान्हपुर।

१ मनरंजन संग्रह। २ जन्मोत्सव। ३ ब्रह्मभट्ट प्रकाश।

१२ श्री युत बाबू शंकर दयाल जी भट्ट। १ मापसार छन्दावली।

समालोचना समय पाकर करेंगे।

भवदीय कृपाकांक्षी

श्यामबिहारी मिश्र

गाज़ीपुर।

---

## चिट्ठी पत्री।

महाशय!

निम्नलिखित विषय की बिचारार्थ आप की सेवा में भेज कर निवेदन करते हैं कि जिस कार्य्य में हम आपकी सहायता और उद्योग की प्रार्थना करते हैं वह ऐसा उत्तम है कि उसके लिये किसी प्रकार की विशेष प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है, यद्यपि प्रबन्धकर्तृ सभा पर वे सारे कष्ट और भार जो इस मनोर्थ की सिद्धि में उसको सहने पड़ेंगे भली भांति प्रगट हैं तथापि आपकी सहायता के भरोसे पर इस साहसिक कार्य्य का भार भी उठा लिया है।

इस धर्म्म सम्बन्धी विशेष उद्योग के मुख्य ये तीन उद्देश्य हैं।

(१) सारे मतावलम्बियों की सच्चे धर्म्म में रुचि बढ़े।

(२) भिन्न २ मत के मुख्य २ आचार्य्यों के लिये कोई ऐसा एक स्थान नियत किया जावे कि जहां वे लोग अपने २ मत के मर्म्मभूत सिद्धान्तों को किञ्चित मात्र भी किसी मत की विरुद्धता वा खण्डन मण्डन किये बिना पूर्ण रीति से वर्णन कर सकें !

(३) विद्वानों और पढ़े लिखे मनुष्यों को प्रत्येक मत का विश्वास के योग्य सच्चा वृत्तान्त सुगमता से प्राप्त हो सके जिसकी सहायता से उनके गुण वा दोषों को वे स्वयम् आपही निर्णय कर लें ।

हमको आशा है कि ये उद्देश्य स्वयम् ही अपना महत्व आप पर प्रगट करेंगे क्योंकि उनका प्रयोजन भिन्न २ मत के मनुष्यों में एकता की वृद्धि करने का है कि जिसकी आवश्यकता बहुत काल से दृष्टि पड़ती है ।

हमें विश्वास है कि इस उद्योग में आप हमारे साथ अवश्य सहमत होंगे इसलिये हम आपसे निम्नलिखित निवेदन करने का भी साहस करते हैं ।

आप (जहां तक आपसे बन सके) स्वयम् अधिवेशन में उपस्थित होने के लिये परिश्रम करें। अबतक तो यही नियत हुआ है कि यह अधिवेशन इस वर्ष के आगामी सितम्बर मास की २६, २७ और २८ तारीख की होगा ।

आप उस मत के उपदेशक वा मुख्य आचार्य्य को जिसके आप भी अनुगामी हैं इस बात के लिये प्रवृत्त करें कि वह न केवल अपने बिचारों को लिख कर भेज दें वरन स्वयम् भी आकर इस सभा को सुशोभित करें ।

यह अधिवेशन अजमेर नगर में होगा कि जो रेल का स्टेशन है और पञ्जाब पश्चिमोत्तर देश बम्बई आदि प्रान्त निवासियों के लिये थोड़ा और बहुत मध्यवर्त्ती भी है और आशा है कि महाराणी विक्टोरिया के उदार और शान्तशील राज्य में जो जो रेल वा अन्य किसी रीति से सहज सुख के साधन हैं वे आपको भी उपकारी होंगे ।

यहां उक्त समय पर आपके निवास के हेतु यथावश्यक सारा प्रबन्ध अच्छी रीति से कर दिया जावेगा परन्तु उसका व्यौरेवार वृत्तान्त आपकी पीछे से सूचित करेंगे ।

अब अन्त में आपसे हमारा सविनय निवेदन यह है कि इस धर्म्म महोत्सव के अधिवेशन की सिद्धि केवल आपही पर निर्भर है। हमको आशा है कि इस कार्य के सुफल होने में आप अपनी शक्ति भर जहां तक आपसे हो सकै पूर्ण सहायता प्रदान किये बिना नहीं रहेंगे।

इस धर्म्म महोत्सव के अधिवेशन में निम्न लिखित विषयों पर बिचार होगा।

(१) परमात्मा (२) जीवात्मा (३) पाप (४) पुनर्जन्म (५) शारीरिक आरोग्यता (६) गृहस्थधर्म्म (७) सामाजिक धर्म्म (८) ईश्वरीय पुस्तक (९) मध्यस्थ मुक्ति दाता और अवतार (१०) और मोक्ष।

पण्डित सालिग्राम शास्त्री संस्कृत प्रोफेसर अजमेर गवर्नमेन्ट कालेजप्रेसीडेण्ट

फतहचन्द महता बी० ए० एल० एल० बी० सेक्रेटरी

बिट्ठलनाथ मिश्र अजमेर। "

---


# बिज्ञापन।

## स्वप्न राजिस्थान।

राजपूताने का चित्र देखने के लिये यह एकही अपूर्व पुस्तक है इस में राजपूताने की राजधानियों के अप्रबंध की स्वप्नावस्था में भली भांति से दिखाया है।

राजनीति सीखना होय वा राजधानियोंमें नौकरी करना होय राजप्रबंध से रखने की इच्छा हो तो प्रथम इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये।

यह पुस्तक राजा महाराजा और राज्यकर्म्मचारियों और प्रबंध-कर्त्ताओं को तो अत्यन्त ही लाभकारी है ऐसा अपूर्व और अनूठा पुस्तक आज तक देखा न सुना ऐसा अमील रत्न जिस पर भी मुल्य केवल ।≈) ही आना मात्र है।

वेल्यूपेबिल द्वारा मंगाकर घर में बैठकर राजपूताने की सैर करलो। पुस्तक मिलने का ठिकाना पंडित बनवारीलाल मिश्र सम्पादक भारत प्रकाश मुरादाबाद।


---

अवश्य देखिये ! अवश्य देखिये ! ! अवश्य देखिये ! ! !

गान विद्या का अपूर्व-पुस्तक ।

अर्थात

**अनमोल रत्न ।**

लीजिये ! लीजिये !! महाशय क्या अनूठा पुस्तक है फिर हाथ न आयेगा ऐसा अपूर्व और अद्भुत पुस्तक राग रागनियों का आज तक किसी ने न देखा सुना होगा जिसमें नये २ धुरपद वा ख्याल तर्राना चन-रंग- ठुमरी लावनी होली चैत गज़ल बारह मासा कवित्त सवैया आदि अनेक राग रागनी के ताल ठेका और उनके गाने का समय ठीकर लिखा है ।

जिनकी गाना सीखने की रुचि हो उनको तो यह पुस्तक अत्यन्त लाभ दायक है और गुणी जनों का तो मूल धन है ऐसा अनमोल रत्न और मूल्य केवल ॥) आना मात्र महसूल डाक और वेल्यूपेब्लका खर्चा अलग है ।

नीचे लिखे ठिकाने से मंगालो ।

पंडित बनवारी लाल मिश्र

सम्पादक भारत प्रकाश

मुरादाबाद ।

## सत्य सूचना।

" आरोग्य कारक औषधालय " की आश्चर्यकारी औषधियां।

( प्रथम एक बार अवश्य आज़माइये )

विशेष—लल्ली चप्पो न लिखेंगे, यह सोच कर कि " सांच की आंच क्या " यदि परिक्षा लेना ही तो प्रथम ऊपर लिखे हुए "हेडिंग" को भली भांति देख कर अपने चित्त में अटल रूप से विश्वास कर लीजिये और द्वितीय स्वयं परिक्षा चाहिये तो इसी पत्र के " सहकारी सम्पादक " चुनार के प्रसिद्ध पं० सीताराम जी वो निज नगर निवासी प्रख्यात पं० श्यामबिहारी मिश्र जी हैं इन लोगों के द्वारा भी जांच कर लीजिये । बस पढ़ते ही निम्न लिखित औषधियों को मंगा कर रोग मुक्त होइये यदि आरोग्य होना असंभव जान पड़ेगा तो हमारा ज़िम्मा—

## औषधियों की व्यवस्था।

"दद्रु नाशक गोला" एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "तिजारी ज्वर की गोली एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "बवासीर" की गोली जो खूनी और बादी दोनों की जड़ से नष्ट करती है। एक डिबिया १६ गोली में ३) पिलही का अपूर्व लेप "एक पट्टी से शर्तीया आराम—एक डिबिया मू० २॥) गर्मी की गोली कैसीही पुरानी गर्मी हुई हो जड़ से साफ़ एक डिबिया में ३४ गोली मू० २॥) सिर पीड़ा का "अद्भुद नास" यावत प्रकार की पीड़ा इससे जड़ से साफ़ एक शीशी मू० २।) हैजे की दवा ( अर्क) सेवन मात्र से कैसाही हैजा हुआ हो फौरन आराम एक शीशी मू० २।) नेत्र की गोली इससे फूली, मांड़ा टेटर बदगोश्त सुर्खी सब आराम एक डिबिया में १६ गोली मू० २।) "जुलाब की गोली" इस में सुरती आने का नाम नहीं वर्षभर आरोग्य रहिये एक डिबिया में बेदल ३२ गोली मू० ।॥) सूज़ाक की दवा कैसा ही पुराना हो या नया हो मैं एक बड़ा डिब्बा ४० पुड़िया मूल्य ३)।

इन सब औषधियों का उचित मूल्य मैं प्याकिंग चार्ज के रक्खा गया है इस के अतिरिक्त और २ असाध्य २ रोगों की दवा मेरे पास तैयार हैं।

मांगने से भेजेंगे और सब दवाओं के सेवन की व्यवस्था भी लिखित पत्र के साथ लिखेंगे—बस और भड़कीले विज्ञापनों का ध्यान इस समय छोड़ कर औषधी मगाना प्रारंभ कर दीजिये। पता—

डाक्टर अजय कुमार चक्रवर्ती
प्रोप्राईटर—आरोग्यकारक औषधालय महल्ला कोट
श्रोत नाथ घाट गाजीपुर।

---

## विशेष सूचना।

गत कई संख्या में "बिहार बन्धु" के सहकारी सम्पादकों के नियोजित करने के विषय में जो "पंडित सीताराम जी गाजीपुर निवासी" छप गया है सो कार्य्य कर्त्ता की महान भूल हो गई है। ये चुनार के परमोत्साही प्रसिद्ध श्री पंडित सीताराम जी (हमारे पत्र के पूर्व प्रसिद्ध लेखक) हैं अब बिहार बन्धु के "सहकारी सम्पादक" जब तक इसके विरुद्ध दूसरी सूचना नहो नियुक्त किये गये।

प्रबन्ध कर्ता।

---

## धन्यवाद।

हमारे पर्म मित्र श्री युत बाबू रामसुमिरन लाल जी को डिपटी कलेक्टरी का काम मिला है अतः आनन्दता पुर्वक डिपटीसाहब को हम अनेक आशीर्वाद और धन्यवाद देते हैं।

---

अक्लू लाल ने छापकर प्रकाश किया।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

AUGUST 1895 VOL. XXIV—NO 8

मासिक पत्र।

अगस्त १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर ८

१ संसारार्णव तारिणी नौका।
२ हाथी।
३ तंत्र।
४ कविवर बिहारी के दोहों पर कुंडलिया।
५ आम की प्रशंसा।
६ पितर बिदाई।
७ चेहरे पर से स्वभाव की परिचा।
८ उपयोगी बातें।
९ आवश्यक लटके।
१० सिराजुद्दौला।
११ विज्ञापन।

बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

१८९५।

## बिहार बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)

छ महीने का ... ... ... ... १।)

राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)

विद्यार्थियों से ... ... ... ... १।)

प्रति खंड का ... ... ... ... ।)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी।

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है

एकबार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ।)॥

तीनबार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ।)।

छ बार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ।)

बारह बार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिबार ... )॥

बारह बार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह बार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिबार देने के बाद, जितने दिनो तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति बार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

# बिहार-बन्धु।

नं० ८—अगस्त १८९५।


## संसारार्णव तारिणी नौका।

( काशीस्थ विद्या मंदिरतः समुत्तीर्णवृहन्मध्यम परीक्षा साहित्याचार्य परीक्षः कालिकत्ता राजधानीस्थ पाठशालातो लब्ध व्याकरण तीर्थ श्री जीवनाथ शर्म्मा लिखित। )

विहायदोषान् दोषज्ञाः गुणान् गृह्णन्तु मत्कृतेः।
दुग्धमिश्र पयः पूरात् हंसा दुग्ध मिवाऽधुना॥

संसार रूपी समुद्र के पार ले जानेवाली डोंगी भक्ति ही है। उस भक्ति में भी यह नियम नहीं कि, विष्णु की, या शिव की, या ब्रह्मा की, या शक्ति की, या किसी देवता की हो। परन्तु वैदिक या तान्त्रिक मार्ग से यदि हो अथवा मूर्खों के लिये दृढ़ प्रेम भी तत्तद्देवता सम्बन्धी सांसारिक बन्धन छोड़ानेवाला श्रुतिस्मृति पुराणों से निश्चिन्त होता है। और युगों में राजाओं की अश्वमेधादिक यज्ञ करने से ब्राह्मणों की यज्ञादिक करानेसे उत्तम लोक प्राप्ति होती थी सो अब वैसा राजा एक भी नहीं हैं तो ब्राह्मण भी उसकी विधि जाननेवाले कम हैं। कभी वह विधिज्ञता तो सफल होने की नहीं है। मुक्तिका कारण जो ज्ञान है सो भी आत्म तत्वकी जानना यही है। सो काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य इन से चित्तवृत्ति को रोकना एतद्रूप योग से होता है। चित्त वृत्ति का रुकना अभ्यास और वैराग्य से होता है। अतएव पातञ्जल योग सूत्र [ अभ्यास वैराग्याभ्यांतन्निरोधः ] यह है, जिस योग का अभ्यास करना कहा है। उसके अंग है यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८

अतएव योग सूत्र यह है [ यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधयोऽष्ट विधानि ] यम का लक्षण क्या है। इसका सूत्र यह है [ अहिंसास्तेय ब्रह्म चर्य्या परिग्रहाय यामाः ] इसका अर्थ। किसी प्राणी को मारना नहीं यही अहिंसा पदार्थ है। किसी दूसरे की चीज़ परोक्ष में बिना उसकी आज्ञा से लेना नहीं। यह अस्तेय पदार्थ है। वीर्य्य क्षय होने के जो कारण सब हैं उनको दूर करके वीर्य्यस्तम्भन करना यह ब्रह्मचर्य्य है चित्त के उद्विग्न करनेवाले जो तमाशे वग़ैरह हैं उन में चित्तकी खींच कर ले जाने वाले जो नेत्रादिक ५ इन्द्रियां हैं उन इन्द्रियों को उन विषयों में आशक्त न होने देना। यह अपरिग्रहका शब्दार्थ है अब कहो भाई यम के जो ४ लक्षण कहे हैं उस से युक्त यम वाले कोई पुरुष नज़र आते हैं जब वही नहीं है तो नियम वाले कहां से ठहरेंगे और उसका क्या लक्षण लिखें और आसनादिक की क्या बात करें जब योगाङ्गसिद्धिवाले कोई नहीं ठीक ठहरते हैं तब योगासिद्धिवाले कहांसे ठहरेंगे जब योगसिद्धि नहीं है तो विषय से चित्त की वृत्ति कहां से रुकेगी जब चित्त वृत्ति न रुकी तो ज्ञान कहां से होगा। यह भी ज्ञान का मार्ग सूक्ष्म रूप से दिखलाया है और इसी ज्ञान के अनेक मार्ग हैं पर ऐसे ही दुर्गम हैं भक्ति से मुक्ति होती है सो भी ज्ञान ही से जानना। भक्ति से ज्ञान, ज्ञान से मुक्ति परन्तु भक्ति मार्ग सुलभ है। बड़े मे दृढ़ प्रीति यही भक्ति का शब्दार्थ है सो पहले गुरु के पास उनकी उपयोगी कोई वस्तु लेकर जाना फल पुष्प द्रव्यादिक।

उनके आज्ञानुसार चलना उनमें दृढ़ प्रीति रखना। तब परम प्रेम से पूर्ण होकर अज्ञान रूपी अन्धकारको दूर करनेवाले परमगुरु दिव्य ज्योतिर्म्मय ज्ञान का मार्ग दिखाते हैं अतएव श्रुति है कि [ संसाराऽनलसंतप्तोदीप्तशिरा जल राशि मिवोपहार पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्म निष्ठं गुरू मुपतिष्ठेत् इत्यादि ] उस गुरूपदिष्ट मार्ग में दृढ़ विश्वास रखना चाहिये। इसका कारण यह है कि बिना श्रद्धा से सिद्धि नहीं होती। श्रद्धा क्या है तो [ गुरू वेदान्त वाक्येषु दृढ़ विश्वासः श्रद्धा ] यह लिखा है अनन्तर उनका उपदिष्ट जो मार्ग है उस मार्ग की तान्त्रिक वैदिक जो विधि बतलावें उससे कभी च्युत नहीं होना। तिन मार्गों में भक्ति मार्ग का यहां तक हाल है कि जिस

विषयक भक्ति दृढ़ करना हीय तन्मय चित्त हो जाना, उसी का भक्त होना, उसी का पूजन करना उसी उद्देश्यक यज्ञ करना अथवा जो यज्ञ करना उसको उसीमें अर्पण करना उसीका नमस्कार करना। इस रूप से बरतने से सिद्धि भाव को प्राप्त होता है अनन्तर आनन्द मय हो जाता है कुछ भी सुख दुःखादिकका भाव नहीं रहता। इन बातोंका प्रमाण श्री मद्भगवद्गीतामें हैं। इति श्री संसारार्णवतारिणी नौकायां प्रथमस्त रङ्गः ॥१॥

---

## हाथी।

ये पशु बहुत ही बुद्धिमान होते हैं और अपने स्वत्त्वी की रक्षा पर सदैव विशेष ध्यान रखते हैं। जिस प्रकार पर क़वायद के समय सैनिक योद्धे छोटे बड़े क्रमानुसार खड़े किये जाते हैं उसी प्रकार पर हाथियों की भी क़वायद होती है। अर्थात जब उनकी क़वायद होने लगती है तो सब से बड़ा हाथी प्रथम स्थान की प्राप्त कर और उससे जो छोटे हैं उनको अपने क़द के छोटे बड़े के अनुसार उसके पश्चात क्रमानुसार स्थान दिया जाता है। जैसे मान लो कि एक नव नम्बर का हाथी भूल से एक सात नम्बर के हाथी की दाहिनी ओर पैरेड (क़वायद) पर आकर खड़ा हो गया। जब ८ नम्बर का हाथी पहुंचेगा तो वह उसको अपने बदन से धक्का देकर अलग कर देगा और अपने असली स्थान पर खड़ा हो जायगा। हाथियों को क़वायद में इस प्रकार की घटना बहुधा उपस्थित हुआ करती है और उस समय पर उनके कमाण्डिंग अफ़सर को बड़ी बुद्धिमानी के साथ काम करना पड़ता है नहीं तो कभी कभी इस प्रकार की घटनाओं का फल बहुत ही बुरा होता है। ऐसे अवसरों पर कमाण्डिंग अफ़सर हाथियों के प्रति बड़े ज़ोर से चिल्ला कर उन्हें शान्ति पूर्वक अपने स्थानों के ग्रहण करने के लिये "अटेंशन" अर्थात "ख़बरदार" इस शब्द का उच्चारण करता है। भारतवर्ष में एक तोपख़ाने के कामों को मैंने विशेष ध्यान के साथ देखा था। जिस स्थान पर वह तोपख़ाना था मैं वहीं रहता था। उस तोपख़ाने के कर्मचारियों और हाथियों के विषय में मुझे इतना अधिक ज्ञान हो गया

था जैसा कि किसी एक उस तोपखाने के आदमी को होना चाहिये। गर्ज़ कि मैं बिल्कुल उस तोपखाने का कर्मचारी सा हो गया था। वह प्रथम ब्रिगेड के प्रथम तोपखाने के नाम से प्रसिद्ध था। हम लोग रावलपिण्डी के निकट क्यम्बलपुर में ठहरे हुए थे। एक दिन मुझको प्रातःकाल के समय उस तोपखाने के हाथियों की क़वायद देखने का अवसर मिला। बहुत से हाथी क़वायद पर लाये गये थे और सबों ने अपने अपने उचित स्थान को ग्रहण किया था। परन्तु एक ९ नम्बर का हाथी एक ८ नम्बर के हाथी की दाहिनी ओर आकर खड़ा हो गया। ८ नम्बर वाले हाथी ने अपने असली स्थान की खोना नहीं चाहा और तत्काल ही कुछ पीछे हट कर नम्बर ९ वाले हाथी को ज़ोर से धक्का देकर उसने नम्बर ७ और नम्बर ९ के बीच में अपने असली स्थान को ग्रहण कर लिया। इस पर नवें नम्बर के गनर (तोप दागने वाले) को बड़ा क्रोध हुआ और बड़े गुस्से के साथ उसने आठ नम्बर वाले गनर से चिल्ला कर कहा कि जान पड़ता है कि मेरे हाथी को तुमने जान बूझ कर अपने हाथी से धक्का दिलवाया है। वह क्रोधित गनर केवल इतनाही कह कर शान्त नहीं हुआ बरु उसने ८ नम्बर वाले गनर को मारना भी प्रारम्भ कर दिया और उसको बहुत पीटा क्यों कि ८ नम्बर वाला गनर उसके बराबर बली नहीं था। इतने में उन दोनों की लड़ाई की ओर ८ नम्बर वाले हाथी की दृष्टि पड़ी और वह समझ गया कि उसका मास्टर बहुत पीटा जा रहा है। उसको बचाने के लिये शीघ्र ही वह वहां पर पहुंच गया और नव नम्बर वाले गनर को अपनी सूंड़ में लेकर उसने अलग फेंक दिया। वह कुछ देर तक बिलकुल ही बेहोश रहा परन्तु फिर होश में आया। असल में उसको कोई बड़ी चोट नहीं आई थी। अब ८ नम्बर वाला हाथी कमाण्डिंग अफ़सर की राय से दोषी पाया गया। वह क़वायद से शीघ्र ही अलग कर के बंधुए की भांति एक दूसरे नियमित स्थान की लाया गया। लोगों को जानना चाहिये कि भारतवर्ष में हाथियों की उनके दोषों के लिये दो प्रकार का दण्ड दिया जाता है। एक तो उनको बेंत लगाये जाते हैं और दूसरे

उनकी खुराक घटा दी जाती है। जैसा हल्का और भारी उनका दोष होता है वैसाही हल्का भारी उन्हें दण्ड भी दिया जाता है।

एक दिन मुझको वहां पर तीसरे पहर को दिन में वहां के तोपखाने के हाथियों की कवायद देखने का अवसर मिला उस दिन बहुत से लोग देर कर के भी आये थे। उस दिन एक ५ नम्बर वाले हाथी को मैंने बेचैन पाया। उसका सवार बहुत देर तक नहीं आया था और वह उसको चारो ओर खोज रहा था और उसकी कार्य्यवाहियों से उसकी बेचैनी ज़ाहिर होती थी। चूंकि उस दिन दिन भर मदिरालय खुला रहा अतः पैरेड पर बहुत से लोगों के आने में देर हुई थी। नम्बर पांच वाला हाथी अपने सवार को तलाश ही रहा था कि इसी बीच में उसने सवार को कुछ दूरी पर आते हुए देखा। जब उसने देखा कि अब बहुत देर हो रही है और उसके योग्य और प्यारे सवार की दशा अच्छी नहीं है तो फ़ौरन उसके पास पहुंचा। किन्तु उस हाथी का वह सवार उस दिन अधिक पिये हुए था अतः उसकी दशा बुरी थी और पैरेड के निकट आते आते वह बेहोश गिर गया। हाथी ने पहुंचने के साथ ही उसको अपनी सूंड़ से उठा कर बड़ी मुलायमियत से अपने शिर पर रख लिया और थोड़ी देर में उसको होश हुआ। अपने सवार के शिर लेने के साथ वह तुरत ही पैरेड पर पहुंचा उस दिन उस हाथी ने अपनी हरेक कवायद को बड़ी उमदगी के साथ किया और उस दिन उसने एक भी भूल नहीं की। यद्यपि उसका वर्क नामक सवार उस दिन अच्छा नहीं था तथापि उसने और सब हाथियों से किसी प्रकार पर कम प्रशंसा के योग्य काम नहीं किया क्यों कि उसको इस बात का पूरा ज्ञान था कि वर्क की दशा आज अच्छी नहीं है अतः यदि कवायद में कोई ग़लती होगी तो उसके लिये दण्ड भी होगा। दूसरे दिन प्रातःकाल को तोपखाने के लेफ़्टेनेन्ट ने गनर वर्क से इस प्रकार पर कहा:—"गनर वर्क! यह नहीं समझना कि कल पैरेड के समय मैंने तुम्हारे पीने की हालत को ख़याल नहीं किया। यदि सच पूछो तो मुनासिब तो कल यही था कि तुमको दण्ड मिले। परन्तु मैंने यह विचार

करके तुम एक अच्छे योद्धे हो और केवल तुम में यही एक अवगुण है कि तुम सुरा को अधिक पसन्द करते हो, कल छोड़ दिया, नहीं तो तुम्हें अवश्य दण्ड मिलना चाहता था। कल तुम्हारे हाथी ने जो बहुत उमदा काम किया उससे जान पड़ता है कि तुम उस पर बड़ी मेहरबानी करते हो। मैंने इसी डर से तुम को दण्ड नहीं दिया कि शायद वह बात हाथी को बुरी लगे और मेरे विरुद्ध कभी कुछ कर बैठे और शायद कभी तुम को इसी प्रकार पर खतरे की हालत में पड़ा हुआ देख कर न उठावे अब से अपनी डियुटी से बहुत सावधान रहना।"

थोड़े ही दिनों के पश्चात मैं एक कोर्ट मारश्यल का मेम्बर नियत किया गया जो अब्दुल नामक एक हाथी (नम्बर १५) के दोषों की जांच करने और उसको उचित दण्ड देने के अभिप्राय से केम्पबेलपुर में स्थापित किया गया था। उक्त हाथी एक रामबक्श नामक साईस को जान से मार डालने के लिये दोषी ठहराया गया था। मैंने ऐसे कोर्ट मारश्यल की कभी नहीं देखा था। दोषी अब्दुल नामक हाथी बड़ी बेइज़्ज़ती के साथ २ और ३ नम्बर के हाथी के पहरे में मेम्बरों के सामने लाया गया। मेम्बरों के सामने आने पर उस दोषी की आंखें आंसू से भर आयीं। उस कोर्ट मारश्यल के प्रेसिडेन्ट अर्थात सभापति के आसन की ३४ वीं होयास देशी पदचर सेना के एक बड़े बुड्ढे आदमी मेजर क्यमेरान ने ग्रहण किया था। वह भारतवर्ष में कई वर्षों तक रह चुके थे। दोषी हाथी के सामने उन्हों ने उसके दोष को इस प्रकार पर पढ़ा था:—"अब्दुल नामक हाथी इस बात का दोषी ठहराया जाता है कि उसने अपनी सूंड़ से रामबख़्श नामक साईस को पकड़ कर एक दीवाल पर दे मारा है और इस तरह पर उसकी जान लेली है।" पहला गवाह आर्डली बम्बार डियर बील या गया। उसने बयान किया कि १२ बजे लैन में वह हाथियों को खिलाने के लिये गया था। जब ढील बजाने वाले ने आवाज़ दी कि "खिलाओ" तब उसने साईस रामबक्श को उस समय दाना के एक बीरे को अब्दुल नामक हाथी की ओर दौड़ कर ले जाते हुए देखा। उस समय सब हाथी खा चुके थे।

अब्दुल नामक हाथी के खिलाने में रामबख्श साईस से कुछ देर हो गई। बम्बार डिवर ने साईस को जल्दी से दोषी अब्दुल के खिलाने के लिये कहा। परन्तु उसने तेज़ी नहीं की ज्यों ही अब्दुल के निकट पहुंचा त्यों ही उसने उस (साईस) के पैर को पकड़ कर सिर के बल पटक दिया और तत्काल ही उसका प्राणान्त हो गया। ८ साईसों और जमादार ने भी ऐसा ही बयान किया जब गवाही खतम हो गई तो सभापति महाशय ने अपने सिर को ऊपर उठा लिया और चेहरा बिगाड़ कर के दोषी हाथी की ओर देखा जिसकी आंखें आंसू में डूबी हुई थीं। उससे सभापति महाशय ने इस प्रकार पर कहा:—"तुम्हारे इस रोने से क्या होता है? मैं कभी तुम पर रहम नहीं करूंगा। आंसू देखने की तो मुझे आदत पड़ गयी है और मैं उस पर कुछ नहीं ध्यान देता। तुम १६ बेर लोगों को चोट पहुंचाने के दोषी ठहर चुके हो। मैं अणुमात्र भी तुम्हारे ऊपर दया नहीं करूंगा। हम सब मेम्बर भी सभापति के साथ सहमत हुए और अब्दुल हाथी दोषी ठहराया गया। सब की सम्मति से उस के दोष के लिये उसको दो वर्ष के लिये कठिन कारागार बास का दण्ड तथा ५० कोड़े की सज़ा मिली। लोगों को जानना चाहिये जिस कोड़े से हाथियों की सज़ा होती है वह एक विशेष प्रकार का कीड़ा होता है और उससे बड़ी सख़्त चोट आती है।

जब कैदी हाथी अब्दुल वहां से हटाया गया तब वह बड़े ज़ोर से चिल्लाया और रोने लगा इस लिये नहीं कि उसको साईस के मारने के कारण कुछ रंज हुआ था बरु वह अपने लिये रोता था कि भविष्यत में अब उसकी कैसी दुर्गति होगी। वह समझ गया कि अब उसको अधिक काल तक कारागार बास का दण्ड भोगना पड़ेगा। तीन दिन के पश्चात मुझे मालूम हुआ कि दोषी अब्दुल नामक हाथी को आज कोड़े लगेंगे। मैं यह देखने के लिये बहुत उत्सुक था कि दोषी हाथी क्यों कर इतने कड़े दण्ड को सहन करेगा। जब मैं वहां पहुंचा तो मुझे एकाएक वहां का सब सासान देख कर आश्चर्य हुआ। अब्दुल हाथी की तकलीफ़ को देख कर मुझे भी बड़ा दुःख हुआ। वहां पहुंचने पर मैंने

क्या देखा कि तोपखाने के सब हाथी एक ओर वहां पर बर्गाकार (प्रति पंक्ति में १५ हाथी थे) खड़े किये गये, और तीन तरफ़ों में अफ़सर और दूसरे लोग खड़े थे। बीच में दो बड़े हाथी थे। एक दोषी अब्दुल था और दूसरा दण्ड देनेवाला एक नम्बर का लल्ला नामक हाथी था। दोषी हाथियों की सदैव पहले नम्बर के सब से बड़े हाथी को दण्ड देना पड़ता है। इन दो हाथियों के अतिरिक्त बीच में तोपखाने के सब अफ़सर ब्रिगेडियर, मेजर और डाक्टर भी उपस्थित थे। दो और तीन नम्बर के हाथी का भी वहां पर पहरा रक्खा गया था ताकि दोषी हाथी भागने न पावे दोषी हाथी के चारो पैर चार लोहे के खूंटों में खूब जकड़ कर बांध दिये गये। दण्ड देने वाले हाथी की सूंड़ में एक लोहे की भारी ज़ंजीर बांध दी गयी जिसको उसने दो बेर अपनी सूंड़ में लपेट लिया और डाक्टर की आज्ञानुसार दोषी अब्दुल की पीठ पर उस ज़ंजीर के द्वारा घोर आघात किया। उस ज़ंजीर के अग्र भाग में एक भारी सा लोहे का गोला भी लगा हुआ था जिस के कारण विशेष चोट आती थी। अब्दुल शिर से पैर तक कांपता था और उसी दशा में बन्दीगृह को भेज दिया गया। अन्त में सब लोग अपने अपने घर लौट आये और इस प्रकार पर उस दिन की कवायद खतम हुई। हिन्दोस्थान।

---

## तंत्र।

इस नाम के बहुत से ग्रंथ हैं जो भगवान महेश्वर के अभिप्राय के अवलम्बन से रचे गये हैं। कालप्रभाव से लोग सब ऐसे पापाच्छन्न और अज्ञानता से ढके रहेंगे कि उस पापके दुसह दुख से निस्तार पाने के लिये कोई उपाय भी उनसे न होगा। पर जिस नाम की महिमा से उन के सब पाप नष्ट हो सकते हैं उसी नाम से घोर पाप के समय में भी भक्ति और अनुरक्ति रखने से परित्राण की आशा भी रहती है और सम्भावना भी रहती है। वेद विहित धर्मोपदेश जब लोग पालन न कर सकेंगे उस समय में लोगों की प्रवृत्ति के अनुकूल ही धर्मोपदेश देना बहुत आवश्यक है। इसी आवश्यकताके कारण भगवान शंकर ने भगवती

शंकरी को उपलक्ष करके कलिके मनुष्यों के लिये बहुतसा उपदेश प्रदान किया था। कलि ही के लिये वे उपदेश थे इस लिये पहले युगों में उन उपदेशों का धार्मिक समाज में बहुत प्रचार नहीं था। पर जान पड़ता है कि इन हीं उपदेशों से रावण प्रभृति राक्षस लोग और दैत्य दानव भूत प्रेत आदि तमोगुण प्रधान जाति समूह विशेष विशेष शक्ति लाभ करती थी। तंत्र के अनुसार, बिना पाप किये, धर्म कार्य करने का भी बहुत उपदेश है और बहुत से शुद्ध चरित के लोग उसी के अनुसार चलते भी हैं, पर कलि के प्रभाव से वैसे शुद्ध चरित्र के लोगों की संख्या धीरे धीरे कम ही हुई जाती है। और जैसे जैसे लोगों के लिये तंत्र शास्त्र का विशेष प्रयोजन है वैसे ही लोग दिन दिन अब बढ़ते जाते हैं। यद्यपि तंत्र सब शिव के अभिप्रायानुसार ही रचित हुए हैं तथापि रचना कारियों के सामयिक भावों का उसमें प्रयुक्त होना असम्भव नहीं मालूम होता। इसी से तंत्र स्थान स्थान में परस्पर विरुद्ध भाव देख पड़ता है। जो हो यह तो अवश्य ही स्वीकार करना होगा कि तंत्रों का अभिप्राय बड़ा है और साधकों के लिये सारवान है कोई उनका बुरा बर्ताव करे तो ग्रन्थों का क्या दोष है।

---

(शीतलपुर सारन निवासी पांडे दामोदर सहाय सिंह विरचित)

## कबिवर बिहारी के दोहों पर कुंडलियां

जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम।
मन काचे नाचे बृथा साँचे राचे राम॥
साँचे राचे राम बादि सबही आडम्बर।
बिनु हिय बिनु हल प्रेम नेम नहिं क्षेम कोटि कर॥
दामोदर बुध तजहु ज्ञान यदि जग जंजाला।
इक साचो हरि नाम झूठ सबही जप माला॥
कोऊ औरिक संग्रहे, कोऊ लाख हजार।
मो सम्पति यदुपति सदा बिपति बिडारनहार॥
बिपति बिडारनहार सहज भक्तन मन रंजन।
सुमति साधु अनुकूल कुमति दुर्जन हृद गंजन॥

अस जिय मांहि बिचारि लाहु लखि इत उत दीजै।
दामोदर मोहि काह कोटि संचय कर कीजै॥
या भव पाराबार की उलंघि पार को जाय।
तिय छबि छाया गाहिनी गहै बीचही आय॥
गहै बीचहीं आय फेर छूटे न छुड़ाये।
बन फल असन सुवसन हरिनत्वच बचन न पाये॥
दामोदर अनुभवहु तबै अपरंन गति का भव।
बिनु भव महती कृपा तरिय किमि बारिधि या भव॥१॥
सबै सुहाये ई लगत बैस सुहाये ठाम।
गोरे मुख बंदी लसै, अरुण पीत सित श्याम॥
अरुण पीत सित श्याम सकल हठि सुकबिहिं पावत।
आनन ओप बढ़ाइ नैन हिय सुख सरसावत॥
दामोदर यह नियम सोधि मतिबरन बताये।
पाई परम अभिराम ठाम लग सबै सुहाये॥
जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सुबीत बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार॥
अपत कटीली डार भंवर इत भूलि न आवी।
नहिं मकरन्द सुगन्ध मंजु इह अनतहि जावी॥
दामोदर हम लखे आपने आंखिन किन किन।
फिरे छूंछही हाथ आज दिन आये जिन जिन॥
अपत कटीली डार यार वह समय नहीं अब।
शीतल मन्द सुगन्ध बायु बह परसि कुसुम जब॥
दामोदर अस कहत पुण्य भाजन हम लेखे।
धन धन उनके भाग्य नैन जिन दिन देखे॥२॥
अपत कटीली डार सार अब रह्यो नाहिंकछु।
सबै सुमन नसि गये रहे नहिं बिटप माहि कछु॥
दामोदर इत लहे आइ केवल कंटक तिन।
बाट जतन करि बिबिधि भांति या तरु आये जिन॥३॥

लरिका लेबे के मिसनु, लंगर मो ढिग आइ।
गयो अचानक आंगुरी, छाती छैल छुआइ॥
छाती छैल छुआइ सुकल करि भागि गयी है।
तबहीं ते कछु आन भांति की चित्त भयी है॥
दामोदर यह चाल कौन कस वहु सखि हरिका।
अब कबहूं नहिं फेर भूलिहूं देहौं लरिका॥ १॥
छाती छैल छुआइ मोहि कछु कहत न आई।
ननद सासु सखि बीच कान्ह यह करी ढिठाई॥
दामोदर मैं सकुचि सहमि गई लाजन धरिका॥
अब कबहूं नहि फेर भूलिहूं देहो लरिका॥ २॥
छाती छैल छुआइ निरखि सुख छवि छक छीरज।
के हरि कटि कलकम्बु कंठ कर पद नव नीरज॥
दामोदर इत आइ काज करि करि गति खरिका।
अब कबहूं नहिं फेर भूलिहूं देही लरिका॥ ३॥

---

## आम की प्रशंसा।

### सवैया।

रतनार सो जामुन लाजन सो निज कारिख सो मुख ढाकि दयी।
पुनो त्योंहि दमोदर देखन दाड़िम की हिरटै फटि टूक भयी।
फल जंगल भीतर नीर भरो अब कटहल के हिय शूल नयी!
इमि मन्द परै फल वृन्द जबै फल राज रसाल ने जन्म लयी।

---

निम्नलिखित दोहे नवीन इंगलिश-इन्ट्रेन्स कोर्स से उल्था किये गये।

(1) The life of man in this world is for the most part, a life of work. Every man worth calling a man should be willing and able to work.

जीवन मानव जाति कर, सदा कर्म मय जानि।
दामोदर जे मनुज नहिं, करतब हीन सुजान।

(2) Work is the best of all educator for it forces men into contact with others, and with things as they really are.

कर्म्म कहत बुध परम गुरु, दामोदर समुदाय।
प्रेरिमेलि नर आन सन, सत्यहि देत दिखाय।

(3) In youth the hours are golden, in mature years they are silveren, in old age they are leaden.

सोना काल कुमार इव, रूपा जोबन पाइ।
लोहा त्यो लहि जरता, समझहु सज्जन भाई॥

(4) Who at twenty knows nothing, at thirty does nothing at forty has nothing.

बरस बीस जानी न कछु, कछु न तीस तिन कीन।
दामोदर चालीस लहि, करगत कछु न प्रबीन॥

(5) The honest labouring man finds work necessary for his substenance; but it is equally necessary for men of all conditions.

उदर हेतु जिमि कर्म्म रत, निर्धन सुजन किसान।
तिमि करतब सब मनुज कर, सब दिन सदा समान॥

(6) "There is nothing so labourious" said St. Augustine as not to labour"

श्रम न करब सम कठिन नहिं, श्रम कोउ धरती माहं।
याते श्रम करिबो भली, श्रम छाड़े सुख नाहिं॥

(7) "Fortune" says the Sanskrit proverb, "attendeth that lion amongst men who exerteth himself; they are weak who declare Fate to be the sole cause."

होत परिश्रम शील नर, सुभग भाग्य भरपूर।
कहि बिधि लिपि उद्यम बिमुख, दामोदर ते कूर॥

## पितर बिदाई॥

कूके पितरौ जात हौ, आय हमारे धाम।
कछू न खातिर बनि पड़ी, जनि दीजौ दुष्नाम॥ १॥
तुम हूं जानत हौ हमैं, तव चरणन अति नेह।
पै बाबा! कैसी करैं, जब न कदामहु गेह॥ २॥
बरस भरे मैं पखइक, आय रहत यहि देश।
मोऊ नहिं प्रत्यच्छ छै, कस जानहुं मम क्लेश॥ ३॥
जे दिन देखे तुम पितर, वे दिन गये हिराय।
अब भारत में दीनता, रही चहूं दिशि छाय॥ ४॥
पांचहु पैसा की नहीं, रोज हमारी आय।
ताहू पै जब तब परत, सूखा अति दुख दाय॥ ५॥
बाबा बुरो न मानियो, खरी कहत सुनि मोहि।
हम सब खात न पेट भरि, कहा खवावैं तोहि॥ ६॥
यह कुरसी, यह मेज, यह, तेज रोशनी लम्प।
यह बंगला, यह बाटिका, यह पानी की पम्प॥ ७॥
बूट, कोट, पतलून यह, घड़ी, छड़ी, रूमाल।
यह शोभा को ग्लास अरु, चम्मच चमक विशाल॥ ८॥
पितर हमारे धाम मंह, जो कछु लखत नवीन।
सब आडम्बर बाहरी, अंतर हम अति दीन॥ ९॥
पितरौ हम भारतिन को, लाग्यो दारिद व्याध।
यासों सरधा होत हू, नहिं करि सकत सराध॥ १०॥
कूको जल हो दै कही, तुम सीं तृप्यन्ताम।
छमहु दोष यह पूत को, जानि निधन को काम॥ ११॥
हउ कर जोरि निहोरि पुनि, यहै बीनती मोरि।
बाबा बहु करि मानियो, सुत कृत सेवा थोरि॥ १२॥

"बचनेश"

## चेहरे पर से स्वभाव की परिक्षा।

चेहरे के देखने से मनुष्य के स्वभाव गुण की जो परीक्षा की जाती है उन के कारण में इङ्गलेंड का एक वैदिक पत्र कितनी एक बातें प्रगट करता है, वह कहता है कि जिस मनुष्य की नाक एक तरफ़ खड़ी रह कर देखने में कमान के सदृश वक्र (टेढ़ी) दीख पड़े तो वह सामान्य रीति से बात, चीत करने में होशियार और मसख़रा होता है।

एक समझदार और चतुर मनुष्य का कपाल ठीक रीति से बाहर निकला हुआ होता है और उसके ऊपर थोड़ी सीधी लकीरें रहती हैं।

जिस मनुष्य की नाक की बाज़ू पर शल पड़े हुए हों और वह कभी न मिटते हों तो वह मनुष्य अक्सर करके पैसे का लोभी होता है।

जिस मनुष्य के कपाल का ऊपरी भाग ऊपर उठा हुआ हो और नीचे का भाग आंख की तरफ़ अन्दर दबा हुआ हो तो वह निर्बल और कच्चे दिल का होता है।

शांति और एकलपेटे स्वभाव के मनुष्य का कपाल लम्बा होता है, और उसकी चमड़ी पर कुछ भी शल अर्थात झुर्रियें नहीं दीख पड़तीं।

जिन मनुष्यों के मुह के कोने नीचे को मुड़ते हों वे दूसरों को धिक्कारने वाले और आप कहें वही सही ऐसा मानने वाले होते हैं।

जुल्मी और बुरे स्वभाव के मनुष्य की नासिका ऊंची मुड़ी हुई होती है और उन के कपाल बाहर कमान के आकार में निकले हुए होते हैं।

भौंहों के इधर उधर कपाल के ऊपर सीधी लकीर में जिन मनुष्यों के झुर्रियें (शल) पड़ती हों वे सामान्य रीति से बुद्धिमान और स्थिर स्वभाव के होते हैं।

कमानदार नहीं परन्तु सीधी और बालों से भरी हुई भौंह वाला मनुष्य उत्तम समझ वाला और पूर्ण विचारसे काम लेने वाला होता

है, उसी प्रकार वह प्रपञ्च करने और उसको अमल में लाने की शक्ति रखता है।

कमानदार और बाहर निकली हुई भौंह वाला मनुष्य रङ्ग परखने की तीक्ष्ण शक्ति वाला होता है सब प्रसिद्ध चित्रकारों को ऐसीही भौंहें थीं।

उत्तम समझ रखने वाले और सुधरे विचार वाले मनुष्य की पलकें आंखके आधे ऊपरी भाग पर पड़ती हैं।

काली और चमकती हुई आंखे और स्थिर और गम्भीर मुद्रा वाला मनुष्य शोकीन तथा सब संयोगों को देख के अभिप्राय देने की शक्ति प्रगट करता है, ऐसे मनुष्य किसी २ प्रसङ्ग पर उदारता नहीं दिखाते।

बात चीत करते समय जिसकी मुखमुद्रा नहीं बदलती वह या तो खबरदार या मूर्ख होता है।

एक आंख की चौड़ाई से कम अन्तर जिस मनुष्य की दोनो आंखों के बीच होता है, वह बहुतही हलके प्रकार की लुच्चाई करने वाला होता है, परन्तु उससे अधिक तफावत होती उसको मूर्ख समझना।

स० की० मु०

---

## उपयोगी बातें।

१ संसारी समस्त गुण दायक वस्तुओं में औगुण, तथा औगुणकारी पदार्थों में गुण है, गुण वा दोष रहित कुछ भी नहीं।

२ यदि कोई मनुष्य तुम्हारी बातों में दोषारोपण करे तो उस पर यथोचित न्याय दृष्टि से देखो किन्तु उसे मान कर तुरत उत्साह हीन न हो और न तुच्छ समझ क्रोध करो।

३ इस बात की कभी चाह मत करो कि हमको हमारे उपकारों के बदले में बहुत सा धन्यवाद मिले, किन्तु अपने उपकारों को अत्यन्त लघु समझो।

४ अपनी योग्यतानुसार ही सब काम करो आगे न लपको।

५ अपने मित्रों से घना प्रेम तथा विश्वास रक्खो।

६ यदि तुम्हारे परिश्रम की कोई प्रशंसा न करे तो कभी घबड़ा कर उसे मत छोड़ बैठो।

७ इसी जीवन के अर्थ मत चकराते फिरो, कुछ परलोक का भी ध्यान रहे। परमात्मा का स्मरण सदैव बनाय रहो।

---

## आवश्यक लटके।

१। केवल ५ या ७ तुलसीदल ७ मिर्च के साथ पीस कर शहद अथवा केवल जल ही के साथ दोनों समय खाते रहने से आज कल्ह का विषम ज्वर [फसली बुखार मैलेरिया] जूड़ी अन्तरा तिजारी आदि के आने का भय नहीं रहता। परन्तु खटाई आदि तथा भारी भोजन से बचें।

२। ४ से ५ माशा तक अति कोमल आक पत्र [अकौड़ा के पत्ते जो सब से ऊपर एक २ अंगुल तक के होते हैं] ११ मिर्च मिला कर गुड़ के साथ गोली बनाकर जवान आदमी को एक ही बार जल के साथ जूड़ी आने के ३ घंटा पहिले खिला दें तो जूड़ी आना बन्द हो जायेगा। परन्तु पीछे से कई दिन तक पहिले लटके का भी सेवन अवश्य करें। यदि एक ही दिन में न छूटे तो दो तीन बार यही करते जायें।

३। जल में दारू हरदी घीस कर आंख में लगाने से रतौंधी आराम हो जाती है दिन भर में तीन बार १५ दिन तक बराबर लगाते रहें।

४। दो माशा नाग केसर ६ माशा मिश्री के साथ पीसकर १ तोला मक्खन के साथ लगातार खानेसे खूनी बवासीर को बड़ा लाभ होता है। यह प्रातःकाल और सायंकाल दिन में दोबार सेवन करना चाहिये।

५। जली सुपारी का चूर्ण ३ माशा चूना खाने का १॥ माशा भुनी हींग ६ रत्ती सब को मिला कर तीन गोली बनावें और उन पर दोदो माशे गुड़ लपेट कर जल के साथ घंटे २ पर खिलानेसे शूल तुरन्त आराम होती है।

चरखारी भूषण।

---

## सत्य सूचना।

"आरोग्य कारक औषधालय" की आज्ञाकारी औषधियां।

(प्रथम एक बार अवश्य आज़माइये)

विशेष—लल्ली चप्पो न लिखेंगे, यह सोच कर कि "सांच को आंच क्या" यदि परिक्षा लेना ही तो प्रथम ऊपर लिखे हुए "हेडिंग" को भली भांति देख कर अपने चित्त में अटल रूप से बिश्वास कर लीजिये और द्वितीय स्वयं परिक्षा चाहिये तो इसी पत्र के "सहकारी सम्पादक" चुनार के प्रसिद्ध पं० सीताराम जी वो निज नगर निवासी प्रख्यात पं० श्यामबिहारी मिश्र जी हैं इन लोगों के द्वारा भी जांच कर लीजिये। बस पढ़ते ही निम्न लिखित औषधियों को मंगा कर रोग मुक्त होइये यदि आरोग्य होना असंभव जान पड़ेगा तो हमारा ज़िम्मा—

### औषधियों की व्यवस्था।

"दद्रु नाशक गोला" एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "तिजारी ज्वर की गोली एक डिबिया में ८ गोली मू०१) "बावसीर" की गोली जो खूनी और बादी दोनों की जड़ से नष्ट करती है। एक डिबिया १६ गोली में ३) पिलही का अपूर्व लेप "एक पट्टी से शर्त्तीया आराम—एक डिबिया मू० २॥) गर्मी की गोली कैसीही पुरानी गर्मी हुई हो जड़ से साफ़ एक डिबिया में ३४ गोली मू० २॥) सिर पीड़ा का "अद्भुद नास" यावत प्रकार की पीड़ा इससे जड़ से साफ़ एक शीशी मू० २।) हैजे की दवा (अर्क) सेवन मात्र से कैसाही हैजा हुआ हो फौरन आराम एक शीशी मू० २।) नेत्र की गोली इससे फूली, मांड़ा टेटर बदगोस्त सुर्खी सब आराम एक डिबिया में १६ गोली मू० २।) "जुलाब की गोली" इस में सुस्ती आने का नाम नहीं वर्षभर आरोग्य रहिये एक डिबिया में केवल ३गोली मू० ।॥) सूज़ाक की दवा कैसा ही पुराना हो या नया हो में एक बड़ा डिब्बा ४० पुड़िया मूल्य ३)।

इन सब औषधियों का उचित मूल्य मैं प्याकिंग चार्ज के रक्खा गया है इस के अतिरिक्त और २ असाध्य २ रोगों की दवा मेरे पास तैयार हैं।

मांगने से भेजेंगे और सब दवाओं के सेवन की व्यवस्था भी विधिवत पत्र के साथ लिखेंगे—बस और भड़कीले विज्ञापनों का ध्यान इस समय छोड़ कर औषधी मगाना प्रारंभ कर दीजिये। पता—

डाक्टर अक्षय कुमार चक्रवर्ती

प्रोप्राईटर—आरोग्यकारक औषधालय महल्ला कीट चीत नाथ घाट गाजीपुर।

अक्ल लाल ने छापकर प्रकाश किया।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

SEPTEMBER 1895 VOL. XXIV—NO 9

मासिक पत्र।

सेप्टेम्बर १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर ९

१ लाख लाख की एक बात।
२ उद्योग और श्रम।
३ प्राप्तिस्वीकार।
४ चुटकुला।
५ हास्य।
६ संटूक में लाश।
७ सिराजुद्दौला।
८ विज्ञापन।

बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

१८९५।

## बिहार बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... ३)
छ महीने का ... ... ... ... १।)
राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)
विद्यार्थियों से ... ... ... ... १।)
प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी।

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार-स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है

एकबार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ⁄॥
तीनबार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ⁄।
छ बार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ⁄
बारह बार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिबार ... )॥

बारह बार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह बार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिबार देने के बाद, जितने दिनों तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति बार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

# बिहार-बन्धु।

न० ६—सेप्टेम्बर १८९५।

---

## लाख लाख की एक एक बात।

धर्म वही जो प्रसन्न चित्त से हो। भक्त वही जो अन्याश्रय न करे। सेवक वही जो स्वामी को प्रसन्न रक्खे। स्वामी प्रसन्न रहे तब अर्ज़ करे। स्वाधीन स्वामी। बात पहले बिचार के करे। सब जाता देखे आधा बांटले। देखे पछताय सो मूर्ख। जिसने अपना दोष पहचाना उसने सब कुछ जाना। जिसकी मृत्यु याद है उससे पाप न होगा। बहुत बिचार के बोले। बिगड़ी सम्हारे सो बुद्धिमान। गुप्त बात खुल जाय तब आप भी कह दे। समय पर काम आवे सो अपना। जो जिस के वास्ते धन का मोह न करे वह मित्र। बने पर ज्ञान सिखावे सो सुहृत्। जिससे बहुत लोग बुरा माने उसमें दोष है। नीच का अधिकार बढ़े तो स्वामी को बिगाड़े। वज़ेदारी बड़ी चीज़ है। निबाहे सोई स्याना। जो जिसका वह उसका। जहां राजा लालची होय वहां ऐश्वर्य न दिखावे। सौ को धमकाना मारना एक को। बातों में बहुत सौगंध खाय सो झूठा जाना जाय। जिसकी चलती होय उससे दब कर चलिये। बेपीर की सेवा न कीजिये। जो अपनी बात सर्वदा सकारे सो शिपारसी। पीछे स्तुति करे सो सच्चा। भूख लगे पर खाय। अजीरण का शेष न रक्खे। प्रकृति का बिगड़ा न सुधरे। उद्यम साहस धैर्य्य बुद्धि और बल न छोड़े। आसा का दास सो जगत का दास। आसा जिसकी दासी उसका जगत दास। आशा का अन्त नहीं। यद्यपि सांड की

आंच नहीं पर समय पड़े झूठा बन जाईये । दुःख पड़े पर बड़े का आसरा पकड़े । किसी को अपना अवश्य कर रख । संसार स्वार्थ का है । आप प्रसिद्ध सो पुरुष । उग्र के सामने हां हां करनी । निकम्मा लड़का जैसे छट्ठी अंगली । जातिवालों से मेल रक्खे । आतुर की बात अप्रमान । दस कुचाल चले घर का भेद न खुले । भाई अलग भये सब थाह लगे और बिगड़े । जिसकी ओर सारी सभा देखे वह सरदार । ऐसे की दे कि मांगना न पड़े । प्रशंसा प्रिय होय सो काम आवे । लोभ और चंचलता सब प्रतिष्ठा खोवे । अच्छी बात भी अकेला कहै तो निष्फल जाय । पंच कहैं बिल्ली तो बिल्ली । यश में प्रीति बड़े मनुष्य की । खत फिर से पढ़े बिना बंद न करे । अपने नाम की चिट्ठी आप पढ़के तब दूसरे को दे । क्रोध को रोके सोई धैर्य्यवान । पराई चिट्ठी बांचना बुरीबात है । जहां की प्रजा एक वहां का राजा खिलौना निर्बल का क्रोध मारखाने की निशानी । प्रीति मन से घट जाय तो भी ज़ाहिरा वैसी ही रक्खे । सुसंग में लाभ न होय तो भी न छोड़े । स्पर्द्धा व्यर्थ है । कुसंग का लाभ अन्त बुरा । सब से बड़ी औषधी बेफ़िकरी है । दान की शक्ति न होय तो भी आदर सत्कार न छोड़े । नगर में तप करे सो पाखण्डी । प्रेमी पहिचाना न जाय । जिससे कभी काम लेना हो उससे बात पड़े तरह दे जाना । गये का सोच न करे । अपने को अजर अमर समझ के व्यापार करे । जो कुछ करना हो उसको शतरंज की चाल की भांति सींच ले । अपना देश काल राजा शत्रु मित्र उदासीन धन बल संग विद्या याद रक्खे तो काम न बिगड़े । जल में न मई होय सो क्यों करे । बड़े आचरण से निर्वाह होता होय तौभी छोड़िये । सिद्धि साधना से है । अच्छे की प्रीति सोने का घड़ा । बुरे की प्रीति मिट्टी का घड़ा । मन पवित्र नहीं तो धर्म व्यर्थ । अपजस सोई मृत्यु । जिसका उद्योग फलित है उसको धन से क्या । बने पर सराहे सो झूठा । निन्दोमत सराहना पड़ेगा सराहो मत निन्दना पड़ेगा । विपत्ति में मित्र बंधु और रण में सूर एकान्त में पवित्र और धन घटे पर स्त्री जानना । सब को प्रसन्न रखने का कोई उपाय नहीं इससे अच्छा

किये जाना जन जल्प क्या करेगा। तमाशा देखे सो आदमी दिखावे सो पशु। जहां दस की नशा हो वहां मजा उसी की है जो होश में है। न वह रही न यह रहेगी। यदि बुरा कर्म करे तो बदनामी से उतना न डरे जितना पकड़े जाने से। अच्छा वही जिसे सब अच्छा कहें पर जिससे बहुत लोग कुढ़ें वह भी बड़ा। इति।

भारत प्रकाश।

---

## उद्योग और श्रम॥

(पूर्व प्रकाशितानन्तर)

सात नम्बर से आगे।

पाठकी महाशयो!

देखना चाहिये कि इस असार संसार में जो वस्तु जगदीश्वर ने बनाया है, सब कार्य्यार्थ हैं—व्यर्थ कोई नहीं। और मनुष्य को जो, आखें, नाक, कान, हाथ, पाव इत्यादि सब दिया है और चलता फिरता बनाया है और बुद्धि विवेक समझ सुकर्म्म और दुष्कर्म जनाया है—तो फिर मनुष्य क्यों नहीं अपने २ समर्थ्यानुसार कालक्षेपणार्थ उद्यम इत्यादि और मुक्त होने का उद्योग करते—इसका क्या कारण? केवल आलसी बन शोक समुद्र के सलिल में गोता लगा कर ईश्वर को दोषी बना देते हैं तो भला ऐसे समय में इस से बढ़ कर और अधिक मूर्खता क्या होगी—और यदि मनुष्य यह बिचारें कि जब ईश्वर की इच्छा होगी तब कोई कार्य्य इत्यादि करेंगे, सो ईश्वर की इच्छा कब जानो जाय जो बात के करने में ईश्वर ने सामर्थ्य न दिया हो जैसे लंगड़ा, लूला, अपंग, अथवा अंधा बनाया हो तो भाई जानते कि ईश्वर की इच्छा ऐसी ही है और जब हाथ पांव सब ठीक है तब उद्योग और श्रम न करें तो यह केवल मनुष्य के आलसी स्वभाव का एक मुख्य कारण है भाइयो! मनुष्य क्या नहीं कर सकता, यह सोचिये तो सही। विशेष क्या लिखें—यहां तक कि ईश्वर भी मनुष्य को मिल सकता है, और यदि ईश्वर मिलता नहीं तो बड़े २ योगीश्वर ईश्वर में लीन कैसे हुए और क्यों उन के प्रताप का

झंडा इस "भू" पर सदा के लिये बिराजमान रहता इस कारण मनुष्यों की उचित्त है कि हर बातों का उद्योग करता रहे सिद्धी अवश्य ही होगी। और केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहने से कुछ भी नहीं होता बरन घर की पूंजी भी निकल जाती है ऐसे बहुतेरे देखे गये हैं जब तक बाप की थोड़ी या घनीक भाई का द्रव्य रहा तब तक मानों जो कुछ थे वे ही थे और जब सब हाथ से पूंजी ऐयाशी रईसी, नामवरी, फ़जूल खर्ची नाजुक दिमागी इत्यादि में निकल गई तो अंत में इसी मसल की नौबत आन पहुंची कि "दिल्ली पर खाक उड़ता है। मगर मुंह पर सफ़ाई है" और अन्त में वे शोचनीय अवस्था में हो जाते हैं कि कर्ज़ कहां से दें, कहां बैठे बिठाये माल मिल जाय इत्यादि क्या करें समय २ पर आंसू भी ढला करते हैं—देख लीजिये कि यह दशा "उद्योग श्रम" न करने से या पूंजी न बढ़ाने से लोग ऐसी ही जाते हैं और तीसरे यह कि यदि मनुष्य पहाड़ पर कूप खोदा चाहे सो भी हो सक्ता है—पर तन मन से लगा रहे तब अवश्य ही कार्य्य की सिद्धी हो—

जैसे एक मनुष्य पहाड़ पर कूप खोदने लगा तब उस ने बिचारा कि जो मैं टांकियों से खोदूंगा तो मेरा जन्म बीत जायेगा और काम भी न होगा—यह सोच बिचार कर थोड़ा सा बारूद लाय एक गड़हा खोद उसमें भर २ के उस के द्वारा पहाड़ तोड़ कूप झट्ट पट्ट खट्ट से दस दिवस में बना डाला तो आपही लोग बिचारिये कि इतनी बुद्धि होना चाहिये तो जो मनुष्य, जो काम के पीछे तन मन से लगा रहता है तो ईश्वर भी अवश्य उस कार्य्य के उपाय की बुद्धि आप ही आप स्वयं देता जाता है इस से सब लोगों को उचित है कि सदा अपने लिये अच्छा बिचारता रहे और "उद्योग श्रम" में लगा रहे—देखिये शुक्र नीति भी लिखती है—

श्लोक। नक्तं दिनानि में यांति कथम्भूतस्य सम्प्रती।

दुःख भाङ्न भवेदेवं नित्यं सन्निहित स्मृतिः ॥ ३७ ॥

भावार्थ। आज कल मेरे दिन कैसे आचरण में बीतते हैं ऐसा सदा बिचारने वाला दुःख नहीं भोगता।

इस कारण हे भाइयो! हम इस समय यही कहेंगे कि—मनुष्य को प्रति दिन "उद्योग और श्रम" करना उचित है जिस से अलभ्य वस्तु प्राप्त हो—आशा है कि आप लोग इतने ही से हमारा तात्पर्य्य समझ जायेंगे कि यह कैसी बात है कि मधिकम् विद्वदवरेषु!

द्विजकंज चरण चंचरीक! (पं०) सीता राम शर्म्मा चुनार।

---

## प्राप्तिस्वीकार और समालोचना।

दीन बन्धु—इस नामका मासिक पत्र पंडित देवदत्त शर्मा द्वारा सम्पादित होकर फर्रुखाबाद से प्रकाशित होता है। हिन्दोस्थान पत्र में उक्त महाशय का लेख सदैव ही पाठकों ने देखा है। पहला अंक जो हमको अभी तक मिला है उत्तम लेखों से पूर्ण है। दीर्घ जीवी हो यही प्रार्थना है।

सत्यप्रिय—नागपुर नगर के इस नवीन सहयोगी को सादर स्वीकार करते हैं। इसके दो अंक अभी हमको मिले हैं परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि उत्तरोत्तर इसकी उन्नति हो। यह पत्र साप्ताहिक अंग्रेज़ीऔर नागरी दोनों भाषा में एकत्र ही प्रकाशित होता है पर आज कल की जो रीत है उसके हिसाब से ४) वार्षिक मूल्य कुछ अधिक जान पड़ता है।

काल बोध—यह पुस्तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से प्रकाशित की गई है। रचियता इसके श्री शिव कुमार सिंह जी हैं। इन्हों ने इसमें संक्षेप में तीन भाग करके हिन्दू मुसलमान और ईसाइयों के समय का विभाग स्पष्ट रीति से वर्णन किया है यदि इसमें कुछ और भी लिखा जाता तो और भी अच्छा होता। आकार छोटा कागज़ उत्तम और छापा साफ़ है मूल्य केवल ॥) है। उक्त महाशय के पास नागरी प्रचारिणी सभा काशी के पते से चोठी लिखने से पुस्तक मिलेगा।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का द्वितीय वार्षिक विवरण। और नियम।

---

## चुटकुला ।

एक फ़ारसी पढ़े लिखे लाला साहब अपनी बहू को बिदा कराने ससुराल में गये। आप भूखे थे लज्जा से खाने की न मांग सके दो एक बार सुसराल वालों ने खाने को कहा परन्तु आपने मना कर दिया और कहा इस समय नहीं खाऊंगा अन्त को, आप बड़े शिष्टाचार से रसोई में गये और मिसराइन से कहने लगे कि (यकनानमेख़्वाहम) (ख़ुर्दमगरहाशियः आंखामनवाशद) अर्थात मैं एक रोटी चाहता हूं जिसके किनारे कच्चे न हों। मिसरायन इस बात को सुन कर बरबराती और टर्राती हुई उनकी सास के पास पहुंची और कहने लगी तुम अपने जमाई को आप जाय के खवाय देवो उनने मोकों अनगिनत गारी दे डारीं बी बड़ी टर्राई।

सास—मिसराइन से (हंसकर) अरी सिरन लल्ला तीसे हंसे हींगे उनकी नातोही ऐसी है अभई भूखे ही बैठे हैं तू बड़ी ढीठ है।

मिसरायन—क्या मैंही पलंग बुढ़िया उन्हें ठठोल की रह गई तुम और उलटो ताना देत हो जमाई की बड़ी पीर है तो खवाय आओ मैं तो नाई जात।

सास जमाई से—(मुसकरा कर) क्यों लल्ला तुमने मिसराइन से कहा कहीहै बानें तो मोसे बड़ी गिल्ला करी तुम्हें बासे हंसनी ही हो तो खा पी के।

जमाई—मनहीमन (भूख के मारे रंगड़ खतमी हुआ जाता हूं इन्हें सवाल जवाब की सूझी है) फिर सासूकी ओर देख कर बोले कि तुम भी बहुत खश्म (क्रोध) करती हो?

सासु—दामाद से (आंखें निकाल कर) तुम्हारी महतारी ने बहुत से खसम करेहींगे तुम्हें मोसे कहत लाज नाहीं आई जा बात और कोई सुने तो कहा होई।

दामाद—(दिलमें ईंखानय तमाम आफ़ताबरत) चुप चाप—

नोट—क्यों यार फ़ारसी को टांग तोड़ कर पेट की भी खोई और मूरख भी बने और ली धेला की।

मास अपने पति के पास जमाई साहब को छोड़ कर चली गई और (झुंझलाकर) अपने स्वामी से सुनत नाइ जू बड़ी दारीजार लुच्चा दामाद मिली है मिसराइन से और मीसे वाने सैकड़ी बातें कह डारीं जानि उनके मनमें कहा है लल्ली की तो किसमत फूट गई खैर तुम जायकै समझ देवो।

नोट—और खाने पीनेका नाम नहीं है।

सुसर दामाद से—क्यों जी तुम हर काऊ से मज़ाख करत हो निरे कुपढ़ ही हो तुमको अपनी सासहू को लिहाज़ नाइ रही—ससुरार में कोई ऐसी बातें करत है।

दामाद (दिलमें तवेलाही सारा बिगड़ा हुआ है) और फिर ससुर से बोले कि आप भी निरे दहकानी ही हैं।

ससुर—क्रोध में भरकर अपनी लड़की को उठा लाया और बोला कि देख तो मेरी धी कहां कानी है तुम बड़े सरीर हो।

दामाद—बिचारा भूख के मारे लज्जित होकर चुपचाप अपने घर को सिधारा और फिर सुसराल का नाम न लिया। और बहू की बिदा और नाई ब्राह्मनी के द्वारा ही कर आई। बाहरे तेरी फ़ारसी।

---

## (हास्य।)

उजाड़पूर बस्ती के एक नोखे लाल साहू कार थे, इत्तिफ़ाकिया एक दिन अकड़तुल्लाखां उसके मकान के सामने जा पहुंचे और एक तमोली के दुकान पर पान ख़रीदने लगे। नोखेलाल ने जो अपनेकोठे पर बैठे तम्बाकू पी रहे थे कि इत्तिफ़ाकिया अपने मीछ पर हाथ फेरा। अकड़तुल्लाखां को यह गुमान हुआ कि नामाकूल यह हमी को देखकर मीछ टेवता है और साथ ही खां साहब ने भी खखारा व इशारा करके बनिये के तरफ़ मीछ पर ताव देने लगे। नोखेलाल ने भी मीछ को दुबारा फेरा। खां साहब ने ललकार कर नोखेलाल से कहा की तू बनियां होकर भी हम पठानो की बराबरी करता है आ हमारा तुमारा दो दो हाथ ही जाय। चतुर बनियां ने सुनीम से कहा की एक चिट्ठी भंसुगेर नगर भेज कर

१०० आदमी बलावो और अन्ट सन्ट लिख कर एक खत रवाने किया पठान ने भी, बनिये से कुछ रोज़ की मोहलत लेकर जायदात अपनी बेचकर १०० आदमी नोकर रक्खा, और बनिये के यहां जा कर ललकारा बनिया ने कहा कि आदमी रवाना हो चुके हैं आते होंगे। बाद एक महीना के अकड़तउल्लाखां के नौकर लोग खा पी कर रफूचक्कर भये, खां साहेब ने अकेलेही बनियें से फिर लड़ने की कहा। बनिये ने इस कदर कहा कि जो घर के औरत लड़के हैं उनको पहले हम व आप मारले तब हमारी आपकी लड़ाई हो क्यों कि दो में एक मरेंगें, फिर घर में कौन खबर लेगा। यह कह घर के भीतर चल दिया। खां साहब ने भी घर पर जा ले तरवार से स्त्रीत्यादि सभी की मार काट खूनभरी तलवार ले फिर नोखेलाल को ललकारा और कहा कि हम घर में सब की मार आये। नोखेलाल ने कोठे के ऊपर से कहा की अच्छा साहब आप को मोक़ ऊपर रहै मैं अब उस्को नीचे ही रक्खूंगा यह कर कर हंस दिया और खां साहब घबड़ा कर चिल्लाने लगे और कहा कि इस बनियें ने गज़ब पर अजब किया। क्या शेखी की शेखी पठानों की टर्र बनिये की बातों में ही गये भर्र हा हा हा हा!!!

---

## सन्दूक में लाश।

एक पुलिस बिभाग के कर्मचारी ने यो वर्णन किया है कि—

सन १८८३ ईस्वी के मार्च महीने में एक मनुष्य ने आकर थाने में खबर दी कि चांद पाल घाट पर देवदार की लकड़ी का एक बन्द बक्स पड़ा है इस बक्स का कोई दावीदार नहीं देख पड़ता। कौन कब उसे रख कर चला गया किसीको मालूम नहीं है और सन्दूक के भीतर क्या है यह भी कोई नहीं कह सकता। अफ़सरों के हुक्म से जब सन्दूक खोला गया तो उसमें से एक बीरा निकला जिसमें एक जवान आदमी की लाश थी। लाश टुकड़े टुकड़े थी सिर देह से अलग था। आकार देखने से लाश मुसलमान की मालूम होती थी पर इस अनुमान पर निर्भर करने का कोई कारण नहीं था लाश कोई शनाख़्त नहीं कर सकता।

मैं जब वहां पहुंचा तो उस समय, इन्स्पेक्टर, कौन्स्टेब्ल आदि पुलिस के लोग तहक़ीक़ात कर रहे थे। मैं चुपचाप उनलोगों के साथ बैठ गया मुझे देख साहब बोले "इस भयंकर खून का कुछ भेद नहीं मालूम होता देखो तुम इसका कुछ कर सकते हो?" साहब ने इज़हार वग़ैरह जो कुछ लिखा था मैंने पढ़ लिया पर उससे अनुसन्धान में विशेष कोई सहायता मिलने की आशा न देख पड़ी। सन्दूक में से लाश का प्रत्येक खंड निकालने की आज्ञा दे आस पास की बातें छोड़ चारों ओर अधिक ध्यान हमने लगाया।

साहब ने ग़रीब मोटियों को पकड़ कर बहुत तंग किया, कौन कूली इस सन्दूक को लाया था इस बात को जानने के लिये उन्हीं ने व्यग्रता भी प्रकाश की थी, भय और लोभ भी दिखलाया था पर कुछ भी फल न निकला। मैं ने दूसरी राह पकड़ी।

सन्दूक के भीतर से कई पुराने अंग्रेज़ी समाचार पत्र, दो लोहू से रंगे छुए बोरे, दो पुरानी शीशियां, एक चिलम, और कई एक हाथ के लिखे फटे कागज़ों के सिवा और कुछ नहीं निकला। फटे कागज़ों को साहब ने बड़े आग्रह से लिया पर इस घटना के साथ या किसी परिचित मनुष्य से लगाव न रहने के कारण वे कागज़ किसी काम न आये। लाश परीक्षा के लिये भेजी गई हम लोग भी अपने स्थान पर लौट आये।

२

स्थान पर लौट आने के समय फटा कागज़ चिलम और दोनों शीशी मैं साथ लेता आया था। किस सूत्र से अनुसन्धान करूं? कुछ भी निश्चय न होने पर एक एक कर कागज़ों को देखने लगा। कागज़ के एक ही पृष्ट पर लिखा था, अक्षर आदि के देखने और पढ़ने से जान पड़ा कि वह कागज़ परीक्षा के प्रश्नों के उत्तर का था। *** कौलेज के फ़र्स्ट इयर क्लास के "एम, एन, दास" का लिखा हुआ था। कागज़ ठीक अवस्था में न था इस से इतना ही पता लगाने में बहुत देर लगी थी, एम, एन दास का नाम देख मन प्रसन्न न हुआ, जहां तक बना कागज़ों को क्रम से जोड़ कर बिठाने लगा। बिठाते बिठाते एक कागज़ के टूसरे

पीठ पर पेन्सिल का लिखा एक चीठी का मुस्विदा देख पड़ा। अक्षर साफ़ नहीं थे पर कष्ट करने पर वह पढ़ने में आया।

प्रिय योगेन्द्र बाबू—इस जगत में कुसुम के प्रणयाकांक्षी दो जन जीते नहीं रह सकते इस लिये आप को अथवा मुझे, दोनों में एक को संसार त्याग करना होगा। यदि आप भले आदमी हों, यदि आप की रगों में बिन्दू मात्र भी भद्रता का रक्त हो तो आप निराले में शस्त्र ले कर मुझ से मिलें। स्थान और समय ठीक करने का भार आप पर रहा। यदि मेरी मृत्यु हो मेरी देह जहां चाहें आप फेंक दें, यदि आप की मृत्यु हो तो आप जैसा कहेंगे वैसा ही करूंगा। अधिक बातें लिखना हमारी रुचि और इच्छा के विरुद्ध है।

एम० एन० दास।

तारीख़ साफ़ न रहने के कारण अच्छी तरह पढ़ी नहीं गई। चीठी पढ़ कर मेरे चित्त में आज कल के विद्यालय के छात्रों के विषय में कोई दार्शनिक भाव उत्पन्न न हुआ। नौवेल, उपन्यास पढ़ कर कुचरित्र हो बालकों ने ऐसे प्रेम और युद्ध का विचार किया है—ऐसी बातों पर चिन्ता करने के बहुत विषयों के रहते भी मेरे चित्त में ऐसी कोई चिन्ता न आई। मैं सोचने लगा कि ऐसे असार पर्वों में केवल आडम्बर ही भर रहता है क्रिया ऐसी वैसी होती है। तब इस अवस्था में ऐसे असार सूत्र से ऐसी भयंकर घटना होना क्या सम्भव है? बालक या युवा के द्वारा ऐसी भयंकर हत्या, ऐसी सतर्कता के सहित मृत पुरुष के वस्त्रादि छिपाना, और मृतदेह को इस भांति सन्दूक और थैली में बन्द कर घाट पर रखना कभी भी सहज बात नहीं है। यही सब सोचता सोचता मैं कौलेज की ओर चला। यदि इसी कारण हत्या हुई हो तो "एम-एन दास" वा योगेन्द्र बाबू—इन दोनों में से किसी एक का प्राण गया है।

२

दो पहर के समय कौलेज पहुंचा। एम-एन-दास का पता लगाने पर मालूम हुआ कि अब वह सेकन्ड इयर क्लास में पढ़ता है। तीन महीने हुए उस ने दूसरे कौलेज में नाम लिखवाया है नाम उस का

मन्मथ नाथ दास है। मन्मथदास बहूबाज़ार में एक मेस अर्थात् एक डेरे में रहता है। इन बातों का पता लगा कर तुरत दूसरे कौलेज की ओर चला। वहां जाकर सुना कि मन्मथ ना था तीन दिन पहले सबेरे छुट्टी ले कर गया है और दो दिनों से कौलेज में आया ही नहीं है। इतना सुन कर मेस की ओर गया, जाकर क्या देखता हूं कि मेस के द्वार पर एक नोटिस ( इश्तिहार ) टंगा हुआ है। उस से मालूम हुआ कि एक कमरा ख़ाली है। भीतर जाते ही रसोईया ब्राह्मण से भेंट हुई, दिन की उसी पर ख़ाली कमरे को भाड़े पर देने का भार सौंपा गया था। इस लिये उसे खुश कर मैं भी उस डेरे का एक किरायेदार हो गया। वहां मालूम हुआ कि मन्मथ बाबू कई दिनों से बड़ी रात गये डेरे पर आते हैं आज अपने कमरे में किवाड़ बन्द कर सोये हैं। थोड़ी देर हुई कि स्नान भोजन के लिये एक बार किवाड़ उन्हों ने खोली थी अच्छी तरह भोजन न कर सके। फिर किवाड़ बन्द कर सोये हैं। इतना सुनते ही मेरा सन्देह बढ़ा। जल्दी जल्दी अपने पुराने डेरे से चीज़ बस्त लाने का बहाना कर पुलिस में आया। वहां से कई एक काम की चीज़ें एक लोहे की सन्दूक ( स्टील ट्रंक ) बिछौना वग़ैरह लेकर मेस के कमरे में लौट गया। और राम सिंह नाम एक कौन्सटेब्ल की साधारण पोशाक में पास ही के एक दूकान में रख गया। मेस में जा कर क्या देखता हूं कि उस डेरे के बहुत से बाबू लोग कौलेज से पढ़ कर आ गये हैं। उन लोगों से दो चार बातें कर अपने कमरे में आराम करने को गया। वहां के सब ही कौलेज के पढ़नें वाले थे केवल एक बाबू सरकारी औफ़िस किरानी का काम करते थे। उस समय एक एक करके सब से जान पहचान करना अनावश्यक समझ मोख़्तारकारी की परीक्षा देने वाला अपने को कह बिछावन आदि बिछाने का बन्दोबस्त करने लगा।

सौभाग्य से मन्मथ बाबू का कमरा हमारे कमरे के बगलही में था। खीड़की की चीर से मैंने क्या देखा कि उनका कमरा अत्यन्त गंदा हो रहा है। मन्मथ बाबू यथार्थ ही सोये थे पर उनकी चार-पाई के पासही एक ख़ून से रंगा दुपट्टा था। और कोई न देख ले

इस लिये बहुत देर तक खड़ा ही कर न देख सका अपने कमरे में चला गया। पर लोहू से लथ पथ कपड़ा प्रकाश रूप से खूनी क्यों रक्खेगा— इस बात का कुछ निश्चय न कर सका। चंचल चित्त हो मैं बैठ रहा।

४

सवेरे आहार का उद्योग हुआ। पर मन्मथ बाबू आहार का अपनी कोठरी में रखने की कह किसी विशेष काम के लिये बाहर जाने को उद्यत हुए। वह मुझ से बात करने के लिये इच्छुक न थे पर मैं उनके बगलही की कोठरी में का रहने वाला था इस से जब बात चीत करने लगा तो सभ्यता के कारण अस्वीकार भी न कर सके। तब मुझेही अपने कोठरी की चाभी दे और आहार के रखवाने का भार दे उन्हों ने शिष्टाचार भी दिखलाया और शीघ्र बिदा भी हो गये दोनों काम एकही साथ कर डाला। मैंने बरामदे में जा कर राम सिंह की मन्मथ बाबू का पीछा करने का इशारा किया राम सिंह भी दूकान से निकल मन्मथ बाबू के पीछे पीछे गया। पर अब इस बात की चिन्ता मेरे मन में हुई कि मन्मथ बाबू यथार्थ में खूनी हैं या नहीं।

अब यहां मन्मथ बाबू का कुछ परिचय सुन लीजिये। मन्मथ बाबू बहुत ही मज़बूत हैं, आकार बहुत बड़ा नहीं है। शरीर न दुबला है न मोटा है श्यामवर्ण सिर में पटिया पड़ी है चेहरा कुछ चौड़ा चौड़ा है। कुश्ती लड़ने का अभ्यास है अब भी बीच बीच में सुदगर फेरा करते हैं। सुना है कि वह मुफ़स्सिल के मामूली ज़मीदार के लड़के हैं आज कल अवस्था वैसी अच्छी न रहने के कारण कलकत्ते में मेस में रह कर पढ़ते हैं। पिता पुत्र को कलकत्ते में रख महीने महीने खर्च भेज कर मन में समझते हैं कि मेरा लड़का खूब पढ़ता है। बहुतेरे पिता ऐसाही सोच कर निश्चिन्त रहते हैं।

सब कोई एकही जगह आहारादि कर अपने अपने कमरे में पढ़ने को गये कोई कोई हंसी दिल्लगी करने लगे पर उन बातों का

ज़िक्र यहां अनावश्यक है मैंने आहारादि कर मन्मथ बाबू का कमरा खोला और ब्राह्मण को वहां अन्न पानी आदि रख जाने के लिये कहा। ब्राह्मण रोटी रख कर ढकने का अभाव और उस बात पर मेस के मालिक का ध्यान खींचते खींचते अपनी कोठरी में गया और वहां से एक टूटी टोकरी ले कर आया और उस पर ढक कर चला गया। इस बीच में मैंने उसी दुपट्टे को देख लिया और एक कमीज़ में भी खूब खून का दाग़ देखा। दुपट्टा और कुर्त्ता दोनों धोया गया था पर किसी का भी दाग़ छूटा नहीं था मैंने फिर अपने कमरे में आकर सोचना शुरू किया। मेरे दिल में यही बात पक्की जंचने लगी कि जो मारा गया वह अवश्य ही योगेन्द्र था और खूनी अवश्यही मन्मथ है।

दो पहर रात बीतने पर मन्मथ बाबू लौट आये। उन्होंने मुझ से ताली मांगी और इतनी बड़ी रात को कष्ट देने के कारण क्षमा मांगी। मैंने भी शिष्टाचार दिखला कर उनको ताली देदी। जब वह खाने को बैठे तो मैं सड़क पर जा राम सिंह से भेंट कर आया। उसकी बात सुन कुसुम का पता पाकर मेरा संस्कार और दृढ़ होने लगा लौट कर जाने पर देखा कि मन्मथ बाबू मुंह धोरहे हैं। मैंने उनसे कहा कि कुछ देर के लिये आप को मैं कष्ट दूंगा। वह अचरज में आ आंख फाड़ मुझे देखने लगे। मैंने कहा—महाशय आप ने मेरा यथार्थ हाल नहीं जाना है, मैं पुलिस का कर्मचारी हूं आपही को खोज में यहां आया हूं। आपने कुसुम की प्रीत में पड़ योगेन्द्र बाबू की हत्या की है। मन्मथ के हाथ से पान का बीड़ा भूमि में गिर पड़ा।

मन्मथ के मुंह से बोली न निकली—वह सिर झुकाये रहा। मैं कहने लगा—"देखो तुमने अपने इतिहास के उत्तर के कागज़ की का पीठ पर योगेन्द्र बाबू की चिट्ठी लिखने की इच्छा से जो मुस्विदा तइयार किया था वह भी हमारे पास है। योगेन्द्र के खून से लाल कमीज़ और दुपट्टा अभी भी तुम्हारे पास है। तुम अच्छी तरह समझ सकते हो कि कोई बात मुझसे छिपाने में लाभ नहीं है।

अब मन्मथ ने सिर उठाकर कहा—"आप सब जान गये हैं यह मुझे मालूम हो गया। पर योगेन्द्र के मरने का समाचार आप के मुंह से अभी सुना है हमने यह नहीं समझा था कि ऐसा ही जायगा। एक बात में आप को भ्रम हुआ है—खून की दाग हमारे अपने हैं। योगेन्द्र के घूसे से हमारी नाक से खून निकला हमारे घूसे से वह मूर्छित हो कर पड़ा था यह मुझे मालूम था पर मरने का हाल नहीं जानता था अब उसके लिये मुझे दुख होता है। आप मुझे फांसी देना चाहें देवें—इस में मुझे कोई उज्र नहीं है पर हमारे घर पिता को यह खबर मत दीजिये गा। "इतना कह कर मन्मथ ने रो दिया।

अब हमारे ताज्जुब में आने की बारी आई। यदि योगेन्द्रही की वह लाश हो और यही मन्मथ यदि खूनी हो तो यह सब क्या बात है? मैंने मन्मथ के हाथ में हथकड़ी दी उसने कुछ भी उज्र न किया राम सिंह हमारे साथही ऊपर आया था उसने मन्मथ को ले जाकर एक किराये की गाड़ी में बिठाया। मैंने पूछा योगेन्द्र बाबू का मकान कहां है? मकान का पता मन्मथ ने बतलाया तब गाड़ीवान को वसुपाड़ा बाग बज़ार में गाड़ी ले चलने के लिये कहा। वहां पता लगाकर राम सिंह ने कहा कि बाबू लोग सब सोये हैं। मैंने आप जाकर मकान के मालिक को पुकारा यहां तक कि उन्हों ने योगेन्द्र बाबू को भी नीचे बुलाया उनके तबीयत मांदी रहने के उज्र को भी नहीं सुना मैं तो जीते जागते योगेन्द्र नाथ मित्र को देखते ही भयचक हो रहा। योगेन्द्र बाबू से दो चार बात निराले में कर अति काट से उन लोगों से क्षमा मांग लज्जित हो गाड़ी में लौट आया और मन्मथ की हथकड़ी खोल दी उन से भी क्षमा मांग उन को उपदेश देते देते बड़ बाज़ार के डेरे में लौट आया। दूसरे दिन डेरे के किसी ने भोर को मुझे न देखा।

इस भांत एक विपत्ति से छुटकारा पा भ्रम के कारण विस्मय, दुख और लज्जा से घर लौट आया। इतना परिश्रम व्यर्थ गया, इतना ढूंढ़ना विफल हुआ, खून की गुप्त बात जिस पर्दे में ढंकी थी उसी पर्दे में ढकी रह गई। अब क्या करें कौन सा उपाय करें यही सोचते सोचते नींद मुझे आ गई।

६

दुःख, चिन्ता और लज्जा से अच्छी नींद न आई। क्या करें जिससे असल अपराधी का पता लगे यही सोचते सोचते उसी चिलम और शीशी पर नज़र पड़ी। फिर भी परीक्षा करके देखा तो एक में मछली के तेल की बू और दूसरे से गुलाब जल की सुगन्ध आती थी—चिलम की बनावट में कोई नई बात न थी। छोटी शीशी पर कागज़ सटा था, पहले बहुत उद्योग करने पर भी उसका एक अक्षर भी नहीं पढ़ा गया था, इस बार उसके पढ़ने के लिये एक नया उपाय किया। एक हांड़ी में ज़रा जल गर्म कर उसमें दो तीन चीज़ छोड़ दिया। वह जब अच्छी तरह सीझ गया तो कुछ देर तक शीशी को उसमें छोड़ दिया। इस से दो काम हुआ शीशी पर का लगा हुआ तेल बहुत कुछ साफ़ होगया और और स्याही पर जो कुछ जम गया था वह भी दूर हो गया इस से हाथ का लिखा पहले से कुछ साफ़ हो गया। बहुत कष्टसे आतशी शीशे की सहायतासे पढ़ कर देखा कि उस पर उसमें अंगरेज़ीमें यह लिखा है कि—"हर दो घंटे पर एक बार खाना होगा १३—२—८१ स्टूअर्ट साहब के लिये।" दवाखानेका नाम छापा रहने के कारण पहले ही समझ गया था अब रोगीका नाम और दवा लेने की तारीख़ मालूम कर दवा खाने में गया और वहां का हिसाब और बही खाता देख स्टूअर्ट साहब का पता मिला।

साहब के घर की ओर जाते जाते सोचने लगा कि साहबने आप ही एक देशीयका खून किया या नहीं यदि साहबने खून किया ही या वह खून का हाल कुछ जानते ही तो उनसे एका एक कोई बात पूछना उचित है या नहीं। अन्त को यही निश्चय कर कि साहब को कष्ट न दूंगा, कौलिज़के निकट पहुंचा। उस दिन कौलिज बन्द था। एक दरवान खटिया के पास बैठ हुक्का पी रहा था। इसी दरवान के पास तम्बाकू पीने के छल से जाकर बातें करना हमने शुरू कर दिया। उससे पूछा कि तुम कोई विश्वासी आदमी दे सकते हो या नहीं। दरवान जो इस बात को सुन मुझ पर और भी सदय हुए। सब ठीक हो गया कि वह आदमी क्या काम करेगा और कितनी तलब पायेगा। इस बात का भी कुछ सन्देह न रहा कि

उसके भाई ही को नौकरी मिलेगी। इतना ही बाकी रह गया कि उसे साथ ले जाकर अपना घर दिखला दें। बातें करते करते मैं दरवान की कोठरी तजवीज़ कर रहा था, वहां ठीक वैसा ही एक देवदारु लकड़ी का सन्दूक देख पड़ा। दरवान जी मुझे प्रसन्न करने के लिये उसी सन्दूक में से और एक चिलम तम्बाकू निकाल भरने लगे। यही सुयोग पा मैं सन्दूक के मूल्यादि के बारे में प्रश्न करने लगा। मालूम हुआ कि कौलेज के प्रत्येक नौकरको ऐसी ही एक एक सन्दूक है, कौन नौकर कहां रहता है। कौन कौन साहब कहां रहते हैं, खानसामा बेयरा आदिकी गिनती, रहनेका स्थान, स्टूअर्ट साहब कैसे आदमी हैं उनका स्वभाव कैसा है आदि जो सब बातें जानना आवश्यक था सब धीरे धीरे जान लिया।

इसी तरह बातें करते करते एका एक मैंने पूछा कि—हाल ही एक दिन ऐसा ही एक सन्दूक गाड़ी पर लादा जा रहा था वह कहां भेजा गया था? दरवान ने कहा कि—गाड़ी का हाल हमको कुछ नहीं मालूम है पर खानसामा दो मज़दूरों के सिर पर एक सन्दूक धर्मतला में लिये जाता था पर उसमें क्या था, किसके पास भेजा गया यह सब मुझे कुछ नहीं मालूम है। उसने यह भी कहा कि खानसामा स्टूअर्ट साहब का प्रियपात्र है और और साहब भी उसे बहुत मानते हैं उसका नसीब बहुत अच्छा है।

दरवान से यह सब सुन मन में बहुत कुछ आशा का संचार हुआ। इसी बीच में दरवान का भाई लौट आया उसे लेकर मैं एक मित्र के यहां ले गया और यह भी समझा दिया कि यहीं काम करना होगा। कल सुबह से आयेंगे इतना कह कर वह चला गया। अपने मित्र से उस नौकर के मुकर्रर करने की बात कह दिया और वहीं आहार कर धर्मतला में मैं पहुंचा। वहां जितने कुली मिले सब से एक एक करके बहुत सी बातें कीं। वहां यह मालूम हुआ कि दो कूली चांदपाल घाट में एक सन्दूक ले गये थे पर वह सन्दूक किसका था कूली यह नहीं बतला सके पर जो आदमी साथ गया था उसे देख कर वे पहचान सकते हैं। इतना सन्धान पा मैं खानसामा की खोज में लगा। यही उसका हाल सुनिये।

(शेष दूसरीबार)

## सत्य सूचना।

" आरोग्य कारक औषधालय " की आश्चर्यकारी औषधियां।

( प्रथम एक बार अवश्य आज़माइये )

विशेष—लल्लो चप्पो न लिखेंगे, यह सोच कर कि " सांच को आंच क्या " यदि परिचा लेना ही तो प्रथम ऊपर लिखे हुए "हेडिंग" को भली भांति देख कर अपने चित्त में अटल रूप से बिश्वास कर लीजिये और द्वितीय स्वयं परिचा चाहिये तो इसी पत्र के " सहकारी सम्पादक " चुनार के प्रसिद्ध पं० सीताराम जी वो निज नगर निवासी प्रख्यात पं० श्यामबिहारी मिश्र जी हैं इन लोगों के द्वारा भी जांच कर लीजिये। बस पढ़ते ही निम्न लिखित औषधियों की मंगा कर रोग मुक्त होइये यदि आरोग्य होना असंभव जान पड़ेगा तो हमारा ज़िम्मा—

### औषधियों की व्यवस्था।

"दद्रु नाशक गोला" एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "तिजारी ज्वर की गोली एक डिबिया में ८ गोली मू०१) "बावसीर" की गोली जो खूनी और बादी दोनों की जड़ से नष्ट करती है। एक डिबिया १६ गोली में १) पिलही का अपूर्व लेप "एक पट्टी से शर्त्तीया आराम—एक डिबिया मू० २॥) गर्मी की गोली कैसीही पुरानी गर्मी हुई हो जड़ से साफ़ एक डिबिया में ३४ गोली मू० २॥) सिर पीड़ा का "अद्भुद नास" यावत प्रकार की पीड़ा इससे जड़ से साफ़ एक शीशी मू० २।) हैजे की दवा ( अर्क) सेवन मात्र से कैसाही हैजा हुआ हो फौरन आराम एक शीशी मू० २।) नेत्र की गोली इससे फूली, मांड़ा टेटर बदगोश्त सुर्खी सब आराम एक डिबिया में १६ गोली मू० २।=) "जुलाब की गोली" इस में सुस्ती आने का नाम नहीं वर्षभर आरोग्य रहिये एक डिबिया में केवल ३गोली मू० ।।।) सूज़ाक की दवा कैसा ही पुराना हो या नया हो में एक बड़ा डिब्बा ४० पुड़िया मूल्य ३)।

इन सब औषधियों का उचित मूल्य में प्याकिंग चार्ज के रक्खा गया है इस के अतिरिक्त और २ असाध्य २ रोगों की दवा मेरे पास तैयार हैं।

मांगने से भेजेंगे और सब दवाओं के सेवन की व्यवस्था भी विधिवत पत्र के साथ लिखेंगे—बस और भड़कीले विज्ञापनों का ध्यान इस समय छोड़ कर औषधी मंगाना प्रारंभ कर दीजिये। पता—

डाक्टर अभय कुमार चक्रवर्ती

प्रोप्राईटर—आरोग्यकारक औषधालय महल्ला कीट

चीर नाथ घाट गाजीपुर।

---

अक्षय लाल ने छापकर प्रकाश किया।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

OCTOBER 1895 VOL. XXIV—NO 10

मासिक पत्र।

अक्टूबर १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर १०

१ जूरी बिल।
२ सुल्तान रूम।
३ हम और हमारी भाषा।
४ परदानशीन स्त्री और दुनियां का सफ़र।
५ उर्क़ा की टकसाल।
६ सन्दूक में लाश।
७ चिट्ठी पत्री।
८ शबरी का जीवन चरित्र।
९ विज्ञापन।



बाँकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाख़ाना,

## बिहार-बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)

छ महीने का ... ... ... ... १।)

राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)

विद्यार्थियों से ... ... ... ... १।)

प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी।

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है

एकबार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ⁄)॥

तीनबार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ⁄)।

छ बार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिबार ... ⁄)

बारह बार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिबार ... )॥

बारह बार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह बार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिबार देने के बाद, जितने दिनो तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति बार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी से तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

# बिहार-बन्धु।

न० १०—अक्टोबर १८८५।


## जूरी बिल।

यह सब कोई जानते हैं कि फ़ौजदारी के मुक़द्दमे जब सेशन्स में आते हैं तो उन का विचार जज जूरी के साथ बैठ कर करते हैं। यह बात हिन्दुस्तान भर में सर्वत्र तो नहीं पर थोड़े से ज़िलों में है। इस रीति में लाभ भी देखे गये हैं। पर जितने आदमी दौरे सपुर्द किये जाते हैं सब के सब दोषी नहीं ठहरते बहुत से लोग छूट भी जाते हैं। यह बात, जान पड़ती है, कि हमारे बहुत से हाकिमों को पसन्द नहीं है। इस रीत के नियमों में हेर फेर कर जूरी का अधिकार कम करने की इच्छा से बड़े लाट की काउन्सिल में सर अलेग्ज़ान्डर मिलर साहब ने एक मुस्विदा पेश किया है। इस मुस्विदे के बिरुद्ध देश भर के प्रायः सभी शिक्षित जनों ने मत प्रगट किया है पर यह लक्षण है कि सरकार अवश्य इस बिल को पास करेगी। मानना न मानना राजा के अधिकार की बात है पर हम को जो समझ पड़े कह देना उचित है। फ़ौजदारी के मुक़द्दमों का बिचार एक आदमी की अपेक्षा अधिक जनों से होना उत्तम है। यह बात गवर्नमेन्ट ने भी मानी है और इसी के अनुसार रीत इंग्लिस्तान में (जो आज कल सुशिक्षित देश माना जाता है) वर्त्ताव भी होता है। बड़े लोगों का मत है कि बिचार में दोषी छूट जाये तो छूट जाये पर निरपराधी का बंध जाना नहीं ठीक है। यह बात इस हेर फेर से जाती रहेगी यदि देखा जाये तो जूरी प्रथा का प्रसार जहां तक ही उत्तम है न कि इस की शक्ति घटा

कर नहीं के तुल्य इस की कर डालना। मिलर साहब ने सभा में इस बिल की पेश करने के समय कहा था कि ऐसी बात इंग्लिस्तान में भी नहीं है इसी से प्रगट है कि जो बात वहां नहीं है उसे यहां जारी करना चाहते हैं यदि यह बात अच्छी होती तो वहां भी ऐसा सुधार पहले होता। जो बात मिलर साहब यहां किया चाहते हैं वह इंग्लिस्तान वाले एक दिन के लिये भी नहीं मानते। जब वह भी नहीं चाहेंगे और इस देश के लोग भी नहीं चाहते तो ऐसी बात को सुधार कह कर जारी करने का हियाव केवल मिलर साहब ही को है हम लोगों की यही प्रार्थना है कि सरकार को भी ऐसे विषयों में दूर दर्शिता, न्यायान्याय आदि विषयों पर ध्यान रख कर ऐसे ऐसे रद्द बदल करना चाहिये यह नहीं कि अधिकार है इस लिये प्रजा को दुर्बल समझ जैसा मन में आया आईन रच डाला। क्यों कि दुख सुख सब की समान व्यापता है।

---

भूगोल के पढ़े हुए पाठक जानते होंगे पुर्तगाल लोग पहले पहल भारत वर्ष में आये थे। फिर उन की कला अंग्रेज़ों के आने से दिन दिन घटती गई। अभी भी उन के तीन स्थान इस देश में हैं—गोवा डैमन और डायू। गोवा में बहुत पुर्तगीज़ ईसाई हैं वह लोग इसी देश के हो गये हैं। वहां की फ़ौज में बहुत से काम करते हैं। हाल ही एक विचार यह हुआ था कि कुछ पल्टन अफ़रिका में भेजी जाये पर उन के पेंशन का कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं किया गया था। इसी कारण देश छोड़ने को वह राज़ी न थे। पर राज कर्त्ता ज़ोर करते थे इसी से वे बिगड़ उठे। उन्हीं ने एक क़िला दख़ल कर लिया है हाकिमों ने साम दंड आदि कई नीति काम में लाई पाद्री तक उन को समझाने को गये थे। उन को यह भी कहा गया है कि तुम्हारे उज़ुर सुने जायेंगे और सब का अपराध क्षमा किया जायेगा पर वहां की गवर्नमेन्ट मूल फ़सादियों को क्षमा करना नहीं चाहती और बिगड़ी फ़ौज को अफ़्रिका भेजना चाहती है। बिगड़ी फ़ौज राज़ी नहीं है लड़ने को भी डटी हुई है। जान जाये तो जाये। एक पाद्री गोवा के लोगों को भड़काता था इस लिये वह जेल में भेजा

गया। पुर्तगीज़ और और जैसे ताइ मोर दीपादि हैं वहां की प्रजा भी बिगड़ बैठी है। गोवा के गवर्नर ने बम्बई के गवर्नर से इस बखेड़े को शान्त करने के लिये सहायता भी मांगी है। सहायता मिली भी पर उन के शान्त होने के लक्षण नहीं देख पड़ते।

---

बंगाल के छोटे लाट सर चार्ल्स इलियट डिसेम्बर में अपनी गद्दी छोड़ कर घर जायेंगे। दार्जिलिंग में अन्तिम भोजन का आयोजन इन के लिये हुआ था। एक सिविलियन भाइयों का था और दूसरा प्रबन्ध कूचबिहार के महाराजा ने किया था। पहली मंडली ने निमक की शर्त्त अच्छी तरह पूरी की एक ने दूसरे की मिल कर प्रशंसा भली भांति की। दूसरे तो ठहरे महाराजा उन्हों ने भी जहां तक बना अपने मेहमान को प्रसन्न करने का यत्न किया।

---

## सुल्तान रूम।

इस समय बेचारे बड़ी गिंजना में पड़े हैं। एक तो बेचारे का छोटा सा राज्य उस में भी सब प्रजा उन से राज़ी नहीं रूस रूम की पहली लड़ाई में बिचारे ने अपने राज्य का बहुत अंश खोया। अब अर्मेनिया प्रान्त, जिस में प्रायः सभी ईसाई हैं रूम के सुल्तान से असन्तुष्ट हैं उन की इच्छा है कि किसी तरह स्वाधीन हो जायें बीच बीच में विद्रोह भी मचाया करते थे। इसी लिये सुल्तान ने कुछ कठोरता की। अर्मेनिया वालों ने इस को सुअवसर समझ फुसरी का भगन्दर करके युरप के ईसाई राज्यों का चित्त चंचल किया। अंग्रेज़ों ने देखा कि अवसर पर चूकेंगे तो मिसिर से मुफ्त निकालने का उद्योग अवश्य करेंगे यहीं धर दबाची। बस इन्हों ने भी ज़ोर किया और कहने लगे कि यदि हम लोगों के कहने के अनुसार अर्मेनिया में बन्दोबस्त न करो तो तुम्हारा भला नहीं होगा।" इस का अर्थ यह निकलता है कि या तो लड़ना पड़ेगा या नहीं तो अर्मेनिया को अपने राज्य से अलग कर देना पड़ेगा। अंग्रेज़ यह चाहते हैं कि वह मुसलमानों के आधीन न रहें। एक दिन वह था कि सुलतान को प्रसन्न रखने के लिये

रूस रूम की लड़ाई में अंग्रेज़ों ने सुल्तान का साथ दिया था। क्रीमिया की लड़ाई में ३०० करोड़ रुपये फूंक डाले थे और विलायती फ़ौज को सिपाहियों से खाली कर दिया था। इस के अनन्तर हिन्दुस्तान से भी पल्टन माल्टा में ले जा कर रूस से भिड़ाने ही के लिये रक्खी गई थी। अब वे ही अंग्रेज़ रूम की पुरानी दोस्ती में कुट्टी करना चाहते हैं। उस समय दिल में खुटपुटी इस बात की थी कि कहीं ऐसा न हो कि रूम रूस से मिल कर कुस्तुन्तुनिया की राह हो कर भारतवर्ष की ओर पहुंचे। पर देखना यह है कि क्या अब वह भय नहीं रहा? रूस क्या सुयोग देख कर अपनी राह साफ़ नहीं कर सकता? रूसी राजनीति बड़ी—गूढ़ है। "लड़के के बहाने लड़कोरी जीये" इसी नीति के साथ भूत पूर्व शाह रूस ने अपने लड़के की भारत वर्ष देखने के लिये भेजा और साथ ही लड़के की रक्षा के लिये पुराने राजनैतिकों को भी भेजा जो देखते ही सब भेद यहां का जान गये। अर्मेनिया वाले अपनी सहायता में अंग्रेज़ों को देख अपने शाह रूस के विरुद्ध लड़ने को डट गये बड़ा बड़ा उपद्रव करने लगे। सुल्तान के मकान पर चढ़ दौड़े। पुलिस ने उन को रोका। इन के रोकते ही वे पागल हो गये बलवा करने को मुस्तैद हो गये सब ही के हाथ में एक न एक हथियार था एक तरह की लड़ाई भी हो गई जिस्में सुल्तान का एक अफ़्सर मारा भी गया। इस का समाचार फैलते ही सब मुसलमान बिगड़ उठे। सीधी सीधी लड़ाई भी हो गई जिस में दो सौ आदमी मारे गये जिस में अधिकांश अर्मेनियन ही हैं। अर्मेनियनों की तो यह चाल है तो भी अंग्रेज़ आदि ने सुल्तान को धर दबाया है। अब अंग्रेज़ों ने कुस्तुन्तुनिया के पास जंगी जहाज़ भेजे हैं। सुनने में आया है कि सुल्तान ने भी जहाज़ों को नष्ट करने वाले टौर्पीडो आदि को काम में लाया है।

---

## हम और हमारी भाषा।

(राजस्थान समाचार)

प्रिय पाठक गण इस देश के निवासी हमारे भातृगण आर्य्य वंशज भले प्रकार जानते हैं कि "हम कौन हैं और हमारी भाषा क्या है" यदि यह उपरोक्त प्रश्न एक छोटे से बालक से भी किया जाय तो वह शीघ्र ही उत्तर देगा कि हम हिन्दू और हमारी भाषा संस्कृत और देवनागरी है, पर शोक का स्थल है हमको इतना ज्ञात होने पर भी हम वे भूल मद्यप की नाईं बावले हो रहे हैं। इस का कारण हमारी सुस्ती और स्वदेश का अनुराग न होना विदित होता है। इसी कारण हम अपने किये को भोग रहे हैं और दासत्व की शृंखला में बंध अधोगती को पहुंच रहे हैं। यदि हम किंचित आलस्य का बुर्का (घूंघट) उठाकर और अपनी आंखों में पूर्वजों के कीर्ति का अंजन डाल कर देखें तो स्पष्ट रूप से विदित हो जावगा कि हम कैसी घोर निद्रा में निमग्न हैं। क्या हम उन धर्म्म धुरंधर ऐश्वर्य्यशाली वीर पुरुषों की सन्तान नहीं हैं कि जो महर्षी, देव, मुनि, योगी आदि नामों से भूषित थे और जिनके यश की पताका आकाश में फर्राती थी। और समस्त भूमण्डल में अग्रगण्य गिने जाते थे। इसका केवल उनका स्व भाषा में अनुराग होना ही प्रधान कारण था, वे अपने बालकों की पंचम वर्ष के आरंभ से ही उत्तम शिक्षा देकर सोलह वा २० वर्ष की वय होने पर्यन्त अपनी विद्या का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा कर पण्डित बना देते थे। वे बालक भी इतनी ही अवस्था में नाना भांति के गुणों से पारंगत होकर अपने धर्म में दृढ़ हो स्वदेश हितार्थ उत्तमोत्तम कार्य करते थे जिन के निर्माण किये सहस्रशः ग्रंथ अभी तक उपस्थित हैं अन्य देश निवासी उन्हीं सद्ग्रंथों की सहायता से स्वभाषा को वे उच्च श्रेणी पर पहुंचा रहे हैं वे भी पुरुष इसी वसुंधरा के पृष्ट पर ही उत्पन्न हुये थे अब भी यह वही देश, वही धरती, वही विद्या और हम भी उन्हीं सत्पुरुषों की संतान होकर इतनी स्वभाषा से घृणा करें फिर हम अपने दुर्भाग्य के सिवाय अधिक क्या कह सकते हैं। पर बबूल के वृक्ष में आम नहीं लग सकते बिना तेल के दीपक नहीं

जल सकता इसी प्रकार जब तक हम अपनी भाषा का आदर नहीं करेंगे हमारा कल्याण कदापि नहीं हो सकता यदि हम अब भी अपने मन को दृढ़ कर के विचार लें तो अपनी प्यारी भाषा का जीर्णोद्धार करना कोई कठिन बात नहीं है क्योंकि हमारे पास पुर्वजों के संचित किये हुये सर्व साहित्य अद्यावधि उपस्थित हैं जिन के द्वारा हम चाहें वही कर सकते हैं, मुसलमान अंगरेज़ प्रभृती अन्य भाषा वालों को देखिये जो आरम्भ में अपनी सन्तानों को और बातों की छोड़ स्वभाषा काही ज्ञान कराते हैं उनका पांच वर्ष का बालक इस अवस्था पर्यन्त कुछ भी नहीं जानता तो भी कुरान वा बायबिल का गुटका उसके गले में लटकाही देते हैं और कैसा सराहनीय प्रबन्ध है कि लड़कियों को भी कठिन कठिन ग्रन्थ अवलोकन करने तक की शिक्षा प्राप्त करा देते हैं, पर शोक है हमारे यहां ये बातें कहानी के सदृश हो गईं और वो उत्तम परिपाटी नष्ट होती चली गई। प्रथम तो हम अपने लड़कों को उत्तम शिक्षा देना ही कम चाहते हैं यदि किसी ने ज़ोर भी मारा तो मक्तब या स्कूल में बैठा कर अलिफ० बे वा ए० बी० सी० आरम्भ करा दी फिर कहिये उन विद्यार्थियों की मातृ भाषा का ज्ञान और स्वदेश का अनुराग कैसे उत्पन्न हो सकता है ? यदि किसी सज्जन पुरुष ने कहा भी कि आप अपने बच्चों को कुछ संस्कृत वा हिन्दी भी पढ़ाइये तो शीघ्र ही कह देवें हम को सत्य नारायण की कथा व दुर्गा पाठ थोड़ाही बंचवाना है और हिन्दी की चीन्दी में तो आज कल धरा ही क्या है ? इसमें इनका अमूल्य समय क्यों खोवें अंगरेज़ी वा फारसी के दो हरफ सीख लेगा कमा खायेगा इत्यादि उत्तर देकर उलटे अपनी भाषा के छिद्रन्वेषण करने लग जायेंगे, फिर हमारी विद्या उच्च श्रेणी पर कैसे पहुंच सकती है ? इसी का फल है, हमारे बहुत से भाई स्वधर्म से अज्ञान रहकर ईसाई वा मुसलमान हो जाते हैं और उनके माता पिता हथेली मलते रह जाते हैं। स्वभाषा का ज्ञान हुये बिना अपने धर्म का जानना असंभव है। इस उपरोक्त कथन से हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि बालकों को अंगरेज़ी वा फारसी न पढ़ाना चाहिये नहीं अवश्यमेव पढ़ाना योग्य है जैसी देश भाषा का पढ़ना अवश्य है

उसी प्रकार राज्य भाषा का भी। क्यों कि पुराने लोगों ने भी कहा है "यथा राजा तथा प्रजा" परन्तु ऐसा भी न करें कि स्वभाषा पर चीका ही फेर दें। क्यों कि देश की उन्नति और अवन्नति होना स्वभाषा पर ही निर्भर है इसका उदाहरण हम अपने शासन कर्ता अंगरेज़ों की देख रहे हैं जो अनेकानेक दर्शनीय कार्य कर रहे हैं जिनकी देख कर हमारी बुद्धि चक्कर खा जाती है इस लिये फिर भी पृष्ट पेशणवत यह कहे बिना नहीं रहा जाता जब तक हम अपने देश में स्वभाषा का प्रचार नहीं करेंगे तो हम से तृणवत भी कार्य होना अशक्य है अब इस लेख को यहां ही पूर्ण कर के प्रार्थना है कि बुद्धिमानों को इशारा ही अलम है यदि अब भी इस उदार गवर्नमेन्ट के राज्य में हम हाथ नहीं हिलावेंगे तो यही कहना पड़ेगा कि "विनाश काले विपरीत बुद्धि।"

---

## परदा नशींन स्त्री और दुनियां का सफ़र।

थोड़े दिन हुए कि नव्वाब अमाद नेवाज़ जंग रिसाला हुस्न के एडीटर पृथ्वी की सैर करके हैदराबाद में लौट आये हैं नव्वाब साहिब इस सैर में अपनी स्त्री ख़ातून जमीला बेगम साहिबा को भी अपने संग ले गये थे ईश्वर की कृपा और अनुग्रह से जैसे कि नव्वाब साहिब आप हैं वैसी ही उनकी पत्नी मिली है यूरप वालों में जो परदा नशींन स्त्रियों की बाबत ग़लती फैली हुई है उसका कारण यह है कि यूरप वालों को इसका असल हाल मालूम नहीं है और जमीला ख़ातून साहिबा चाहती थीं कि असल हाल इधर की स्त्रियों का अख़बारों में प्रगट करें ताकि उस सीमा के रहने वालों को उनका ठीक ठीक हाल मालूम हो २१ सेप्टेम्बर के टाइम्स औफ़ इंडिया में बेग़म साहिबा की एक चीठी छपी हुई है जिस में आपने शाह ह म की शाहज़ादी की मुलाक़ात का हाल लिखा है जो अति अद्भुत है और बेग़म साहिबा ने जिस तरह उसको लिखा है हम अपने बड़े पाठकगणों को इस तरह अज्ञात रखना मुनासिब नहीं समझते, बेगम साहिबा यूरुपियन नसल से हैं परन्तु अब मुसलमान हैं और अपने नये दीन के धर्मों पर चलती हैं वह आप लिखती हैं कि मेरा जन्म हिन्दुस्तान का है और इसी

मुल्क में परवरिश पाई है फिर अपने माता पिता के साथ बग़दाद को चली गई और सात बरस तक वहां रही मेरी मा अरबी बहुत अच्छी बोलती थी इस लिये उसको बड़े घरों और बादशाही महलों में जाने आने की आज्ञा थी और जिन के पास वह जाया करती थी वह भी उसका बहुत आदर सनमान करती थीं इसी सबब से मुझको उनकी बोली और उनका पहरावा करना पड़ा फिर मैं मा बाप के साथ ईरान में आई वहां से रूस के मुल्क में सफ़र किया और वहां से कूच करके सारे यूरप की सैर करते हुए जनूबी अफ्रिका की देखा और कुछ दिन ठहर कर हिन्दुस्तान में वापस आई और फिर अपने पति नव्वाब अमाद नवाज़ जंग के साथ सर्ब संसार का दौरा किया इस सफ़र में क़ुसतुन्तुनियां क़ाहरा मक्का मुअज़्मा मदीना मुनव्वरीको भी देखा और यह जगहें सारी दुनियां के शहरों में देखने के लायक़ हैं मक्के शरीफ़ में पहुंचकर मैंने ख़ुदा का शुकुरिया किया कि मुसल्मानों के पांच ज़रूरी नियमों में से एक नियम के पूरा करने का मुझको भी मौक़ा मिला और इस एक नियम के पूरा करने से मुझको अरब के सारे मुल्क से वाक़फ़ीयत हुई।

बेगम साहिबा के सफ़रनामे में सब से अदभुत क़ुसतुन्तुनियां के सैर का बृतान्त है और ख़ास कर शाहरूमकी बड़ी लड़की ज़किया सुल्तान की मुलाक़ात का बयान है इस वास्ते इसी मौक़ा का बयान लिखते हैं।

ज़किया सुलताना जो शाहरूम की बड़ी शाहज़ादी हैं उनके ससुर ग़ाज़ी उसमान पाशा हैं, बादशाह की बेटी और इतने बड़े तुरक अफ़सर की नीह इससे बढ़ कर और इज़्ज़त क्या हो सकती है—उनका विवाह उसमान पाशा के बड़े बेटे नूरुद्दीन पाशा से हुआ है और ख़ुदा ने एक लड़की भी दी है शकल सूरत और सुभाव में अपनी मां जैसी ही है और सब तुर्क उसकी इज़्ज़त और प्यार की नज़रों से देखते हैं, शाहरूम ज़किया सुल्ताना से बहुत प्यार करते हैं और हज़रत ज़किया सुल्ताना को एक घड़ी भी अपने से जुदा नहीं होने देते इस वास्ते नुरुद्दीन पाशा और ज़किया सुल्ताना को बादशाही महल में रहने की आज्ञा दी है उसमान पाशा की ख़ातून के वसीले और कोशिश से मुझको ज़किया सुल्ताना से मिलने और दर्शन

करने का मौक़ा मिला, और वह अपने साथ मुझको एक गाड़ी में बैठाकर ले गईं, पहले गाड़ी एक बड़े महल के दरवाज़े पर पहुंची जहां तुर्क और अरब और अलबानी सिपाही हथियार लगाये हुए पहरा दे रहे थे उनकी सुन्दर और चमकीली मूरतों से यह प्रगट होता था कि अपने मालिक के सच्चे जान नसार हैं उनके हथियारों की चमक आंखों की शरमिंदा करती थी, और वह बहुत अच्छी और क़ीमती वरदियां पहने हुए थे वहां से आगे बढ़ कर एक बाग़ के रास्ते से बादशाही महल में पहुंचे हमारे उतारने के लिये ख़्वाजासरा मौजूद थे आगे चल कर कई एक दासियां बहुत सुन्दर वस्त्र और भूषण पहने हुए नज़र आईं वह हमको बड़ी इज़्ज़त और अदब के साथ दूसरे दरवाज़े तक पहुंचा गईं और दूसरे दरवाज़े पर जो दासियां थीं और हमारी उद्देश में खड़ी हुई थीं हमको अपने साथ लेकर एक सुन्दर और सजे हुए महल में ले गईं, और उस महल से होकर एक और महल में पहुंचीं जिसकी सजावट का बयान नहीं हो सकता, फ़र्श फ़ानूस पर्दे वग़ैरह और बिलौर और शीशे का सामान इस तरह से रक्खा हुआ था कि जिससे सजने वाले की लियाक़त ज़ाहिर होती थी, अब जिस मकान में हम पहुंचे वह ख़ास सुलताना ज़कीया की बैठक थी, उस मकान की सजावट का क्या ही कहना है, उस में सुलताना एक जवाहिरात से जड़ित गद्दी पर जो एक छोटे से तख़्त पर बिछी हुई थी बैठी हुई थी इस कमरे का साज़ सामान ऐसा उम्दा सजा हुआ था कि यूरप और अमेरीका में कोई मकान इस सजावट का मेरी नज़र से नहीं गुज़रा, चांद जैसे मुखड़े वाली दासीयां सुलताना के दोनों तरफ़ अदब से खड़ी हुई थीं दो दासियों ने मुझको सुलताना के सामने पेश किया, उन्हों ने बड़ी प्रसन्नता से मेरा हाल पूछा और दया और कृपा से अपने पास बैठाया, उनके वस्त्र गुलाबी रंग के थे और फ़रांसीसी ढंग पर सिले हुए थे, सिर पर जड़ाऊ ताज बहु मूल्य हीरे और जवाहिरात से जड़ित था, गले का हार जड़ाऊ था जिसमें लाल लगे थे, कमर की पेटी में एक इतना बड़ा हीरा था कि उसकी क़ीमत कोहनूर हीरे से भी चौगुनी होगी यह हीरा कैपकोलूनी से मिला था जो दो टुकड़े होकर बिका था, आधा

ज़ाररूम और आधा सुलतान रूम ने ख़रीद लिया था सुलताना के बालों में जगह बजगह मोती पिरोये हुए थे और कलाइयों और कानों के सब ज़ेवर जड़ाऊ थे, उनकी जूती पर भी लाल लगे हुये थे जिसकी चमक की नज़र ताब न ला सकती थी, इतने में दासीयां चाह लेकर आईं और हम बातें करने लगीं, उनकी बातों से उनका शील सुभाव ज़ाहिर होता था।

(सुलताना) मैं आप के मुसल्मान होने से बहुत प्रसन्न हुई।

(मैं) बचपन से ही मुसलमान होना बहुत अच्छा समझती थी जब कि मैं अरब में अपने मां बाप के पास रहती थी मैंने ईसाई दीन छोड़ दिया था।

(सुलताना) मुसलमानी नाम क्या है?

(मैं) मेरा मुसल्मानी नाम जमीला ख़ातून है और बग़दाद में मुझको लोली ख़ातून कहते थे।

(सुलताना) क्या आप अरबी ज़बान में बात कर सकती हैं (मैं) जी हां! (सुलताना) इसतंबोल में आप कब तक रहोगे (मैं) पांच दिन तक (सुलताना) अफ़सोस है कि आप जलदी हमसे जुदा होना चाहती है। और फिर आप से मुलाक़ात न होगी क्या अब आप का इरादा मक्के जाने का है (मैं) मेरी प्यारी शाहज़ादी आप की जुदाई से बहुत रंज होगा कि ब्यान नहीं कर सकती, जब कि आप की मिहरबानी मेरे हाल पर बहुत है आप मुझे माफ़ करें मुझ को आप से जुदा होना पड़ता है क्यों कि सफ़र करना मेरे इख़्तयार में नहीं है और न हज्ज की तारीख़ बदल सकती है मैं हज़रत सुलतानुलमुअज़्ज़म और आप के मिहरबों और बुज़ुरगों के हक़ में ख़ाना काबा में दुआ करूंगी।

(सुलताना) (खुशबक़त में) खुदा आपको हज नसीब करे आप ने अभी बहुत लम्बा सफ़र किया है अभी उस से आराम न होने पाया है जो यह दूसरा बड़ा सफ़र करना है मुझे उमेद है कि आप हज के पीछे मुझे न भूलेंगी और आब ज़मज़म भेजेंगी।

(सुलताना) क्या आपने सारे जहान का सफ़र किया है (मैं) जी हां मैंने इस सफ़र में अजीब अजीब हाल देखे हैं चीन में ६ करोड़

मुसलमान हैं चीन के शहर कानटन में हज़रत रसूल मक़बूल के चचा की क़बर है मैंने भी दो बार ज़ियारत की है पुराने ज़माने की चार मसजिदें उस शहर में बनी हुई थीं जिनको चीनी मुसलमान मक्करकी काबा कहते हैं (सुलताना) मैं बहुत दिनों से सुनती हूं कि चीन में बहुत मुसलमान हैं हैं और हराम हलाल की पहिचानते हैं, पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ते हैं (मैं) जी हां हबशी मुसलमान हराम हलाल को अच्छी तरह समझते हैं नमाज़ के बहुत पाबन्द हैं।

बात चीत के पीछे काफ़ी पी गई फिर शरबत आया थोड़ी देर पीछे उमदा उमदा शीरीनी आई और फिर खाना खाकर उसके पीछे वह हम को दूसरे महल में ले गईं वहां कई खुश आवाज़ लड़कियों ने गीत गाया जिसके सुनने से बहुत खुशी हुई नतीजा यह है कि सुलताना की तालीम और वाक़फ़ियत किसी यूरपीयन लेडी से कम नहीं बलकि बहुत सी बातों में उनका सलीक़ा तारीफ़ के लाइक़ था—मिलिटरीन्यूज़।

---

## उर्छा की टकसाल।

(बंगवासी)

अंग्रेज़ी समाचार पत्रों के द्वारा विदित होता है, कि इस प्राचीन राज्य उर्छा पर भी एक भारी विपद आने वाली है। सरकारी रसीडण्ट परिश्रम कर रहे हैं, और उन का परिश्रम निष्फल होना असम्भव भी नहीं मालूम होता है। चांदी का भाव घटने से टिहरी राज्य के गाज-शाही रुपये का दाम भी घट गया था, पर महाराज ने अंग्रेज़ी सरकार की राय नापसन्द की थी और अपनी टकसाल खुली रक्खी थी। किन्तु पीछे अन्य राज्यों की तरह टिहरी की टकसाल भी बन्द करवाई गई और अब रसीडण्ट साहब कुछ और भी किया चाहते हैं। महाराज की सहायता देने के बहाने उस राज्य में भी अंग्रेज़ी मुहर का रुपया प्रचलित करवाया चाहते हैं।

जब पाठकों को मालूम होगा, कि सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में केवल इसी राज्य में टकसाल है, तब वे समझ सकेंगे, कि इस टकसाल के बन्द

होने से बुन्देल खण्ड स्थित सम्पूर्ण राजाओं की कैसी भारी निन्दा होगी। इस के अलावे, उर्छा के समान प्रतिष्ठित तथा प्राचीन राज्य में टकसाल का न रहना भला नहीं।

उर्छा राज्य बहुत बड़ा नहीं, केवल सवा दो हज़ार वर्गमील के लग भग है। इस की जन संख्या भी बहुत नहीं, ३ लाख मनुष्य से भी घट है और आमदनी भी ६ लाख से अधिक नहीं है, पर इस का ऐतिहासिक वृत्त बहुत ही बड़ा है। अयोध्यापति भगवान् रामचन्द्र के द्वितीय पुत्र कुश के वंश में १५ वें राजा गागरख हुए जिन्हों ने गया जी में कई उत्तम मन्दिर बनवाये। प्रयाग जी में मन्दिर बनवाने वाले इस वंश के प्रसिद्ध बीसवें राजा बलदेव रख के पुत्र इन्द्रद्युम्न ने श्री जगन्नाथ पुरी का यह बड़ा मन्दिर बनवाया था। इसी वंश के बत्तीसवें राजा के द्वितीय पुत्र रत्न सिंह से बरगुजे राजपूतों की उत्पत्ति हुई थी। चौतीसवें राजा कूर्मध्य ने बनारस का राज्य जीता था।

छियालिसवें राजा के द्वितीय पुत्र खेमकरू ने विन्ध्याचल पर्वत पर श्रीविन्ध्यवासिनी भगवती की अति कठोर पूजा की और पूजा के अन्त में अपना शरीर तथा प्राण भगवती को समर्पण करना चाहा। ज्यों ही खड्ग का अग्रभाग उन की गर्दन में लगा और एक बिन्दु रक्त पृथ्वी पर गिरा, कि भगवती ने साक्षात् प्रगट हो कर राजा को वर दिया और उस गिरे रक्तबिन्दु पर अमृत डाल कर उस से एक पुत्र उत्पन्न कर दिया, यही पुत्र प्रसिद्ध वीर सिंह हुए और उन्हीं ने बिन्दु से उत्पन्न होने कारण अपने को बुन्देला राजपूत और अपने अधिकृत राज्य को बुन्देलखण्ड कहा वीरसिंह बड़े प्रतापी हुए और उनही ने इस अचल राज्य की नेव डाली।

साठवें राजा प्रताप रुद्र ने उर्छा नगर बसा कर अपने पुत्र को राज्य सौंपा और स्वयं दिग्विजय के लिये प्रस्थान किया, पर फिर न लौटे। प्रताप रुद्र के दो बेटों ने राज्य के लिये लड़ना चाहा, परन्तु बादशाह जहाङ्गीर ने पञ्चायत करके अयोध्या और चन्देरीका राज्य बड़े को और उर्छा का राज्य छोटे को दिलवा दिया! इस प्रकार केवल उर्छा के स्वतन्त्र राजाओं में प्रथम नाम नृसिंह देवका हुआ। नृसिंह देव के १२

बेटे थे, जिन में से तीसरे पहाड़ सिंह ने बादशाह औरंगज़ेब की बड़ी सहायता दी थी और चौथे भगवान दास ने कुरेरी की सृष्टि की। अड़सठवें राजा चम्पत रावसे बादशाह शाहजहान ने कर लेना चाहा, पर राजा ने पराधीनता स्वीकार न की, मुगलों से इसी समय से लड़ाई चली। पर बादशाही पल्टन हारकर तितर बितर हो गई। कवि केशवदास के सिरपरस्त इन्द्रजित सिंह देव भी इसी वंश में हुए।

औरंगज़ेब ने अपने पिता शाहजहां तथा भाई दारा से राज्य छीनने के लिये चम्पत राय से मित्रता की और इन्हीं की सहायता से अपना काम सिद्ध किया, किन्तु इस मित्रता को भूल कर औरंगज़ेब ने चम्पत राव की मृत्यु के बाद अपनी पल्टन बुन्देलखण्ड को जीतने के लिये भेजी। पर चम्पत राय के पुत्र प्रसिद्ध छत्रसाल ने विख्यात महाराष्ट्रीय बीर शिव जी तथा राजपूतबीर जयपुराधीश जयसिंह से युद्ध विद्या में शिक्षा पाई थी। सो छत्रसाल ने बादशाही पल्टन को मार कर धीरे धीरे वर्त्तमान दतिया, समथर, झांसी, रींवा राज्यों की भूमि भी अपने अधीन कर ली। पर छत्र साल की मृत्यु के उपरान्त यह विशाल राज्य कई जगह बंट गया और उर्छा के अधीन केवल टिहरी रह गया। उर्छा की आमदनी छत्रसाल के समय में २ करोड़ थी, पर उस के बाद ६ लाख हो गई।

जब पिण्डारियों से लड़ना अङ्गरेज़ी सरकार ने निश्चय किया था, तब पहिले बुन्देलखण्ड के सब राजाओं को अपने साथ कर लेना अत्याव-श्यकसमझा था। किस छल बल कौशल से यह काम सिद्ध किया गया, सो यहां लिखने की आवश्यकता नहीं, इतना ही कह देना यथेष्ट है, कि सन १८१२ ई० में अङ्गरेज़ी सरकार के साथ इस राज्य की पहिली सन्धि हुई। सन १८१५ ई० में जब लाट हेस्टिंग्स पिण्डारियों पर चढ़ाई करने के लिये उर्छा राज्य ही कर चले, तब राजा विक्रमादित्य सिंह ने उन्हें नज़र दी और कहा, कि जिस नजराने के लिये हिन्दुस्थान के हिन्दू मुस-लमान सब ही राजा महाराजा तड़पते रह गये, वही नजराना आज मैं आप को देता हूं। उसी समय से उर्छा राज्य अधीनत्व को प्राप्त हुआ।

इसी बड़े राज्यवंश पर धब्बा लगनेकी सम्भावना हुई है। जिन महाराज की अङ्गरेज़ी सरकार १५ तोपोंकी सलामी देती है, उनकी टकसाल टूटनेकी है।

## सन्दूक में लाश।

(नं० ९ से लगातार)

खानसामे का नाम नूरमहम्मद था। वह प्रायः दिनरात कौलेज ही में रहता था, यदि चाहता तो वह प्रति दिन घर जा सकता था पर ऐसा न कर प्रायः कौलेज ही में सोया करता था। वहीं अक्सर उसके बन्धु बान्धव आकर उससे मिल जाते थे। नूरमहम्मद बीच बीच में एकाद दिन घर जाता था पर जाने के समय भी बहुत रात आ जाती थी और रात रहते ही लौट आता था। कौलेज में साहब लोगों के और भी कई खानसामों के रहते भी यह सब मे पुराना और प्रधान होने के कारण इसकी हांक डांक अधिक थी। यह खानसामा जब सन्दूक साथ लेकर चांदपाल घाट पर रख कर भागा तो इस बात में कुछ भी सन्देह न रहा कि यह इस खून में शामिल है। यह भी निश्चय ही था कि साहब ने खून नहीं किया है। क्योंकि ऐसी बात होती तो गोली या और किसी तरह मरने की सम्भावना थी, ऐसी बोटी बोटी करना सम्भव नहीं है। एक देशीय पर साहब इतना क्रोध क्यों करेंगे कि इस तरह खून करेंगे। इसी से यह निश्चय मन में हुआ कि खूनी एक ही या बहुत हों देशी आदमी ही है। फिर इस खानसामे के बारे में विशेष करके अनुसन्धान करने लगा।

कभी आदमी भेज कर कभी आप जा कर बहुत से कौशल कर खानसामा और उसके घर के हर एक आदमी का पता लेने लगा। खानसामें का दो निकाह हुआ था। एक से एक लड़की दूसरी से एक लड़का था। लड़की जवान थी विवाहिता थी और प्रायः ससुरार ही में रहा करती थी। लड़का कुछ सात वर्ष का एक छापेखाने में काम करता था महीने में दो तीन रुपये पैदा करता था। नूर महम्मद आप अच्छी तलब पाता था पर घर में अधिक कुछ न देकर प्रायः सबही उड़ा पुड़ा देता था इस से उसके गृहस्थी का खर्च बहुत ही कष्ट से चलता था। इतना जान लेने पर लड़की के और नूरमहम्मद के ससुरार का भेद लेने लगा। कहना वृथा है छापाखाने में कई एक काम छपवाने का ले जा कर नूरमहम्मद के लड़के से बहुत सा भेद लेने का अच्छा अवसर मिल गया था। इस ढंग से नूरमहम्मद और उस के अपने बगाने

आदि के बारे में बहुत सी बातें तो मुझे मालूम हो गईं पर जिस के लिये इतना उद्योग कर रहा था उस बारे में विशेष कुछ न जान सका। यह बात भी नहीं सुनने में आई कि नूरमहम्मद से और किसी से जानी दुश्मनागी थी। इस से लाश किसकी थी वह क्यों मारा गया आदि बातें जैसे अन्धकार में थीं वैसीही रह गईं।

अब पुलिस की पोशाक में साहब के यहां गया। साहब का स्वभाव बहुत अच्छा था उन्हों ने तुरतही सब बातें बतला मुझे बिदा किया। साहब से यह मालूम हुआ कि वह १८८१ में बीमार पड़े थे स्कौट टौमसन के यहां से उन्हीं ने दवा मंगवाई थी। उनके दवा की शीशी खानसामा बेयरा आदि नौकर कहां ले गये या फेंक दी गई इसकी उनको कुछ भी खबर नहीं थी। वह गुलाब जल व्यवहार में नहीं लाते उनके यहां गुलाब जल नहीं है। इन बातों के जानने से विशेष कोई लाभ न हुआ पर यह हमने इस सुयोग में देख लिया कि मुझे देख कर नूर महम्मद पहले कुछ चकित सा हो गया था।

मेरे मनमें नूरमहम्मद के विषय में जो सन्देह उत्पन्न हो रहा था उसमें और भी सबूत की ज़रूरत समझ मैं सबूत की खोज में निकला नूरमहम्मद का दामाद गुलाम अब्बास कई दिनों से मकान पर नहीं जाता था कहां गया है यह भी कोई नहीं बतला सकता था। यह खबर पा मैं गुलाम अब्बास का पता लगाने लगा। गुलाम अब्बास जहां काम करता था वहां भी कुछ नहीं कह आया था न अपना हिसाब चुका कर काम से स्तीफा ही उसने दिया था। इन बातों से मेरे मन में विश्वास होने लगा कि यह लाश गुलाम अब्बास ही की है। जो कुछ हो इसमें और भी सावधानी की आवश्यकता समझ उन लोगों से भेद लेने लगा जो गुलाम अब्बास के साथ काम करते थे। यह मालूम हुआ कि अब्बास ससुर से रुपया पाया करता था जिस दिन से उसका पता नहीं है उस दिन शाम को वह कौलेज में ससुर से रुपया लाने को गया था। तब से किसी ने उसे नहीं देखा। अब मेरे मन में सन्देह का लेश मात्र भी न रहा। तो भी एका एक मैं नूरमहम्मद को गिरफ्तार

करने को न गया। एक बार भूल हो चुकी थी फिर भ्रम के कारण और किसी को कष्ट देने की इच्छा न हुई। इस लिये दूसरे उपाय में लगा।

अब पुलिस ही की पोशाक में कौन्सटेब्ल आदि को साथ ले प्रगट रूप से काम में लगा। एक बारगी नूरमहम्मद के यहां लाश लिये पहुंचा इस के पहले ही कौलेज में नूरमहम्मद की नज़र बन्द कर रक्खा था। उस के घर पर पहुंच नूरमहम्मद की स्त्रियों को बुलाकर मैंने लाश देखने को कहा। लाश देखते ही उसकी पत्नी फ़यज़न बी बी और कन्या जहाना चिल्ला कर रोने लगी। इतना बिगड़ जाने पर भी उन लोगों ने अब्बास की लाश पहचान ली। चारो ओर से रोने का शब्द होने लगा। मैंने इस अवसर में नूरमहम्मद की गिरफ़्तार कर लाने के लिये कहला भेजा। इधर अब्बास के यहां से उसके भाई और फू फू को बुलवा उनका इज़हार लेने लगा। अब इस घटना की सब बातें प्रकाश होने लगीं। पुलिस के सामने इज़हार में बहुत सी बातें प्रगट हुईं। उनमें से एक यह थी कि अब्बास ने रुपये के लिये बहुत तक़ाज़ा किया था उस दिन उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि बिना रुपया लिये न उठेंगे। इन बातों से खूनी के बारे में और हत्या के कारण के विषय में मुझे कोई सन्देह न रहा।

इसी समय गिरफ़्तार करके नूरमहम्मद लाया गया। सन्दूक और लाश देखतेही वह कांपने लगा उसके मुंह से बोली न निकली। बहुत देर के बाद वह बोला—दोहाई कम्पनी की हम इसका कुछ नहीं जानते। बृथा समय नष्ट न कर असामी को थाने में ले गया। वहां अफ़सरों के सामने उसने सब बातें कबूल कीं। उसका दामाद रुपये के लिये उसे कितना दिक करता था, खून के दिन वह कैसी बड़ी प्रतिज्ञा कर अपने रुपये का तक़ाज़ा करने को आया था उसको ग्यारह बजे रात तक ठहरने की कह कसाई के छूरे से कैसे उसने अब्बास को मार डाला कैसे दो खानसामों की मदद से लाश सन्दूक में बन्द कर चालान करने का उसने बिचार किया, किस तरह दूसरे दिन सबेरे यह बिचार कारस्वाई में लाया गया। सभी बातें उसे कहनी पड़ीं। उसके साथी दोनों खानसामां भी अपराधी स्वरूप लाये गये। मजिस्ट्रेट के यहां जांच होने पर तीनों दौरे सुपुर्द किये गये।

दौरे में जज ने यह राय दी——

"कैदी नूरमहम्मद, तुमने जैसा कठिन और निर्दयताका काम किया है "उसका उपयुक्त दंड परमेश्वर देंगे यहां तुमको उसका पूरा बदला "नहीं मिला। जिस आदमी ने विपत काल में धन की सहायता कर "तुम्हारा उपकार किया, उस की काम आ पड़ने पर प्राण लेकर तुम ने "उस उपकार का बदला दिया। तुम को नातेदारी और स्नेह का बन्धन "तोड़ अपनी कन्या को ऐसा भयानक कष्ट देते भी तनिक संकोच न "हुआ। तुम ने रिश्ते की बात उपकार की बात, पल भर के लिये भी "न सोच बिना कारण एक निरपराध मनुष्य का प्राण लिया है, और "अपना अपराध छिपाने लिये जैसी बुद्धि दिखलाई है अच्छी और यदि "इस बुद्धि को लगाते तो तुम को धन की चिन्ता न होती। तुम ने ऐसा "कौशल जाल बिस्तार किया था कि असाधारण शक्ति सम्पन्न डिटेक्टिव "(भेदिया) के हाथ इस खून के तहक़ीकात का भार नहीं दिया "जाता तो तुम्हारे अपराध के प्रकाश हो होने की सम्भावना न थी। "पर मनुष्य की बुद्धि की अपेक्षा दैव की गति कैसी बिचित्र है! इतना "कौशल करने पर भी तुम्हारा पाप छिपा न रहा, तुम्हारा सब उपाय "बृथा हुआ, तुम थोड़े ही दिन के भीतर पकड़े गये। तुम ने ईश्वर "की दी हुई स्वाभाविक बुद्धि का अपव्यवहार कर बिना अपराध अपने "दामाद को मार डाला है तुम्हारे स्वदेशीय जूरियों ने इसी लिये एक "राय हो कर तुम को दोषी ठहराया है—जिस में परमेश्वर तुम को क्षमा "करें—इस बात की प्रार्थना करो। इस पृथ्वी में रहने का तुम्हारा अब "अधिकार न रहा। मैं आईन के अनुसार सज़ा देताहूं तुम को "फांसी का हुक्म हुआ।"

बाक़ी दोनों के बिरुद्ध पूरा सबूत अदालत में नहीं मिला इस से बे क़सूर ठहर कर छूट गये। पर धन का खर्च, चिन्ता हाजत और पुलिस में रहना आदि बातों को सोच कर देखने से यह नहीं कहा जा सकता कि उन को कुछ दंड न हुआ। हमारे अफ़सरों की, और जज की सिफ़ारिश से सरकार से हम को ईनाम दिया गया।

## शोक!

हम अत्यन्त खेद के साथ प्रकाशित करते हैं कि श्री योधपुराधीश सुप्रसिद्ध महाराज श्री १०८ श्रीयशवन्त सिंह जी धीर वीर, जी, सी, एस, आई गत ११ अक्तूबर को ४ बजे दिन के समय ज्वर के कारण स्वर्गवासी हो गये। आपकी प्रजा शोकसे अति पीड़ित हो हाय! हाय! कर रही है।

स्वर्गवासी महाराज का जन्म १८३८ ईस्वी में हुआ था आप बड़े महाराज श्री तख़्त सिंह जी के स्वर्ग वास होने पर सन १८७३ ईस्वी के पहली मार्च को योधपुर के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुए थे। आप ने राज कार्य्य का भार अपने हाथों में लेते ही भय्या फ़ैज़ुला खां को अपना प्रधान मन्त्री बनाया परन्तु भया फ़ैज़ुला खां के राज कार्य्य में व्युत्पन्न न होने के कारण जब राज्य की क्षति पहुंची तो श्रीमान महाराज ने अपने लघु भ्राता श्रीमान महाराज कर्नल सर प्रताप सिंह के, सी, एस, आई को अपना प्रधान मन्त्री बनाया। जब से महाराज प्रतापसिंह ने राज्य का प्रबन्ध करना आरम्भ किया तब से मारवाड़ राज्य की दिनों दिन उन्नति होने लगी मारवाड़ की पुरानी सेना जो विशेष बलवती और सुशिक्षित न थी उसको श्रीमान योधपुराधीश के परामर्शानुसार महाराज प्रताप सिंह ने विशेष पौरुष शाली और युद्ध विद्या में व्युत्पन्न बनाया उसकी संख्या को बढ़ाया जो आज ३६५३ पैदल, ११६२ सवार तथा १२१ तोपों से सुसज्जित है। स्वर्गवासी महाराज के समय में मारवाड़ के कई प्राचीन दुर्ग दृढ़ तर बनाये गये योधपुर की सेना प्रशंसित महाराज प्रताप सिंह के आधीन अंगरेज़ी सरकार की सहायता के लिये काबुल युद्ध में भेजी गई, पुनः काले पहाड़ की लड़ाई में योधपुर की सेना श्रीहरजी सिंह के आधीन अंगरेज़ों की सहायता के लिये भेजी गई। इस प्रकार स्वर्गवासी महाराज ने बृटिश राज के साथ अपनी प्रीति प्रगट की। इस समय जिस प्रकार काश्मीर के राज्य बंश में अथवा अन्यान्य कई स्थलों में भाई भाई के बीच विद्रोह है उस प्रकार का वैमनस्य मारवाड़ के राज्य वंश में नहीं है। स्वर्गवासी महाराज अपने लघु भ्राता महाराज प्रताप सिंह जी को जैसा मानते थे वह सर्वत्र प्रसिद्ध है। आप की इच्छा अपने परिजनों पुरजनों

तथा देश जनों की प्रेम के सूत्र में आबद्ध रखने की थी। आपने अपनी मरुभूमि की प्रजा के सुख के लिये बालसमन्द, बिलाड़ा तथा कायलाना आदि स्थानों में अनेक तालाब बनवाये। देश में रेल चलवाई तारकी वृद्धि की निज राजधानी में प्रजा की सुशिक्षा के लिये कालेज खोलवाया। विद्वज्जनों का यथा योग्य सनमान किया और उन्हें अनेक प्रकार के दान दिये। आप अपनी प्रजा को तो प्रेम की दृष्टि से देखते ही थे आप विदेशी विद्वानों तथा राजाओं का भी पूरा सतकार करते थे महाराज कुमार के विवाह के समय में आपने कतिपय महाराजाओं को आमन्त्रित कर इस बात को सिद्ध कर दिया कि क्षत्रिय महाराज गण परस्पर द्वेषभाव को परित्याग पुनरपि क्षत्रियों की विशेषोन्नति तथा एक दूसरे की सहायता के लिये कटिबद्ध हो सकते हैं। महाराज मइीशूर के स्वर्गवास के कारण जो दुख मइीशूर की प्रजा को हुआ वही दुख मारवाड़ की प्रजा को श्री योधपुराधीश जी के स्वर्गवास के कारण उपस्थित हुआ है। राजकुमार की अवस्था इस समय कुल १३ वर्षों की है। भारत गवर्नमेन्ट को उचित है कि वह राजकुमार के बालिग़ हो जाने तक श्रीमान महाराज कर्नल सर प्रताप सिंह के, सी, एस, को रीजेंट बनावे क्यों कि प्रशंसित महाराज के शासन की प्रशंसा लार्ड राबर्ट्स, लार्ड लैंड्सडाउन आदि कतिपय बड़े बड़े अंगरेज़ भी कर चुके हैं। महाराज की शव रथी जब रमशान भूमि को जाने लगी तो अनुमान ६० सहस्र मनुष्य अश्रुपात करते रथी के साथ हो लिये। इस प्रकार एक प्रतापशाली आत्मा राज शरीर छोड़ स्वर्गवासी हुआ। हा! मनुष्य जीवन कैसा अस्थिरथाई है!

---

## चिट्ठी पत्री।

(सम्पादक उत्तर दाता नहीं)

सम्पादक महाशय!

आपके बिहार बन्धु पत्र द्वारा अनेक उपन्यास निकले और अनेक बिहारियों का उपकार हुआ यह देख मुझे भी लालसा हुई कि इस बिहार हितैषी से कुछ लाभ उठाउं।

बहुत दिनोंसे बिरह रूपी निशामें असमर्थता रूप चन्द्रके उदय रहने से कमल रूप मेरा मन सकुचा हुआ था। पर अब आप के प्रभात रूपी पत्र को देख कर सूर्य्य रूप मनोर्थ के प्राप्त होने की आशा पाकर बिकस चला।

व्यतीत वर्ष के बैशाख मास में जिसको बीते १८ महीने हुए मैंने अपने चित के बिनोद के लिये हीरा की प्रशंसा में एक "हीरा शतक" लिखा था कई एक कारणों से उसको छपवाने में समर्थ न हुआ उसी हीरा शतक में से मैं आप के पास ये कवित्तें भेजता हूं आप मेरे ऊपर अनुग्रह कर अपने पत्र द्वारा प्रकाशित करें।

एक प्रार्थना और यह है कि कवित्तों के आदि में इस पत्र को प्रकाश कर दीजिये जिसमें लोग हीरा के विषय में (हीरा कौन है कहां है) झटपट कोई कल्पना न करलें (क्यों कि एक नाम के बहुतेरे लोग होते हैं) नहिं तो कहीं कल्पना झूठी ठहरी तो मृग औ मरू भूमी का हाल होगा।

भवदीय कृपा कांक्षी
हरीजी।

अग्रहन ५वीं बांकीपुर

हीरा हीरा सब कहै हीरा जान न कोय, जो बस जौहरि भवन में हीरा सी नहिं होय। "हीरा" सी नहिं होय कहां पत्थर कहं नारी, कहं नीरस कहं सरस बात सब लेहु बिचारी॥ कहैं "हरी जी" चन्द्र बदनि बिद्युत सी चपला, चम्पक बरनि और मृगनैनि अहै वह अबला॥१॥

✓ मोती ते पानिप औ पंकज ते सुगन्ध लैके चपला ते चमक लैके उदित उजेरो है, भनत "हरी जी" त्यों सुरंग लैके चम्पक ते श्री ते सौन्दर्य्य ले अकार चन्द्र केरो है। नैन कवि अम्बुज ते दसन कवि दाड़िम ते शोभा मनोहारी मानो काम की बसेरो है, रूप रति आननते मृदुता मृणालन ते "हीरा" लाय बिधि ने बनायो मुख तेरो है॥१॥

नटे हैं नटी के नैन ठगे हैं ठगी के नैन गिरे गिरतीन के बियोगी योगिनी के है। भनत "हरी जो" हैं कटाची कायथनी के सजीले गन्धर्व्वीन के चुभीले नर्तकी के है॥ चतुर चुड़िहारिन के बने बनिहारिन के रस भरे तमोलिन के माते मालिनी के है। शेखी भरे शेखिन के पटीले हैं पठानिन के खूनी खबेनाक नैन "हीरा" मानिनी के है॥२॥

धायल से घुमरे कितने कितने बिनु प्राण के ज्यों चाँठ धावें। बैठहि सांस भरे कितने बहु मौन ही सैनन में बतियावें ॥ ठाढ़े डंसे अहिसे हैं कीउ कीउ खानन पान न चित में लावै। लेहिं निकालि हियो लगते यहि "हीरा" के नैनन राम बचावै ॥ ३ ॥

नागरी नवेली हीरा मान मारे उरबसी को रम्भा को मिटावै दर्प सुखमा अगार है। बाकी उपमाको हेरि हारि मति "हरी जी" की ऐसी नहिं नारी दूजी रची करतार है ॥ चंचल चपलासी दुति बाकी चन्द्रमासी कुच श्रीफल से प्रकासी नैन कंज रतनार है। प्यारी के उरोज बीच हार ऐसो लसै जैसे बीच है शंकर के बही गंग धार है ॥ ४ ॥

एक समै "हीरा" ठाढ़ी हार पै सबेर उठि देखती बदन लिन्हें दर्पन को कर में। भृकुटी कुटिल धनु चढ़ी पञ्चबान जनु बरुनी बिराजै नागफांस जनु संग में ॥ अलसाने गात प्यारी उझकि परि जौ कहूं बोलि उठे पायल झनझन इक छन में। मनसा जग जीतिवे को मानौ रति पति करि फूंकी दुन्दुभी सोई "हरी" परी श्रवन में ॥ ५ ॥

एक समै वह "हीरा" "हरी" गृहते कढ़ि आंगन में भइ ठाढ़ी। चन्द्र को राहु ग्रसै को चह्यो उपराग की बेर भइ तेहि बारी ॥ चन्द्रहुं ते लखि निर्म्मल आनन भय उपजी हमरे जिय भारी। बोलि उठेंव दुरिजा घरमें कहुं आइ न राहु ग्रसै मुख प्यारी ॥ ६ ॥

केस नागफांस लीन्हें भृकुटी धनु हाथ लीन्हें नैन सर तीखे लीय अजब अनोखे है। मनत "हरी जी" लिन्हें बरछी कटाच्छन की बरुनी असि चपल लिन्हें हास्य पर्शु चोखे है ॥ गति गजदल लिन्हें मानहय दृल लिन्हें रथदल चितौन पा पैदल सुरेखे है। कुच के नगारे की कृपाय दीज चीलिन में "हीरा" प्यारी चाहै जग जीत लेन धीखे है ॥ ७ ॥

सुन्दर सारि सुहे सिर ऊपर लागि जु तामह जर्द किनारी। बांके रसीले लसे दीउ नेन जु चाल मराल लजावन हारी ॥ दामिनि सी दमकी "हरि जी" मुसकाइ के मीतन घूंघट टारी। नैन लगाई के मैन जगाइ कै चित्त चुराई के ले गइ प्यारी ॥ ८ ॥

गति पै मराल बारों बोलका कपाली बारों कटिपै मृगेन्द्र अरु खंजन नैनन पै। भनत "हरी जी" "हीरा मुख पै मयंक भृकुटी पै रती कंत पुष्पवान बरुनीन पै॥ कण्ठ पै कपोत सरसीरुह उरोजन पै हार मुक्ता हलार बिन्दन रदन पै। केश शेश रानी बारों हास धर्म रानी कीटि बारों सचिरानी "हीरा" प्यारी की अलक पै॥ ९॥

---

## शबरीका जीवन चरित्र।

शबरी नागपुरके राजा (जात का भिल्ल) की लड़की थी। जब शबरी युवा हुई उसकी शादी की बात चीत इधर उधर होने लगी। निदान शादी की बात चीत ठीक होने पर उसके पिताने अनेक जीव जैसे सियार, हुंड़ार, कुत्ता, बिल्ली, गैंड़ा, भेड़ा, हरिन, कबूतर, सांप, गिरगिट, खस्सी प्रभृति जानवरों की भक्षनार्थ एकत्र करवा रक्खा और द्वार पर छोटे २ सांपों का बन्दनवार लगवा दिया अनेक २ बाजे द्वारपर गाज रहे हैं। एक दिन शबरी सखी महेलियों के साथ हो वाह्य भूमि को निकली कि उपरोक्त जीवों को देख भैचक हो सखी से उसने पूछा कि ऐ सखी? इतने जानवर क्यों एकत्रित हैं चारो ओर लोगों की भीड़ क्यों है? सखी ने कहा कि कल तेरी शादी होगी उसी उत्सव में सब जीव मारे जायेंगे। यह सुन शबरी का सर्वाङ्ग शोक मय हो गया और बोली कि हे सखी! मैं ऐसी अबखानि हुई कि मेरा विवाह होने से ये अनाथ जीव जो अपना दुख कभी अपने जी पर नहीं लाते मेरे हेतु प्राण दण्ड पावेंगे। ये बेचारे घास पात के खाने हारे की जब यह गति है तो हमलोगों की क्या गति होगी जो इन्ही को खातीं हैं। बकरी पाती खात है ताकी खैंचत खाल॥ जो नर बकरी खात है ताकर कौन हवाल॥ इस प्रकार चिन्ता करती हुई अपने घर आई मारे शोक के अन्न नहीं खाया और जब आधी रात बिती तो सब वस्त्राभूषण उतार एक जीर्ण वस्त्र धारण कर घर से निकल पड़ी। जाते जाते बहुत दूर निकल गई तो सुबह हुई। सुबहहोते ही वह बिन्ध्याचल की कन्दरा में छिप रहती और सायङ्काल होते ही फिर अपनी राह लेती इस प्रकार जाते जाते कई दिनों में गोदावरी के किनारे

दण्डक बन में पंपा सर के तीर आ पहुंची। और उधर शबरी के पिता ने चारो ओर अनेक दूत भेजा पर कुछ पता न लगने से सब लौट आए। तदपश्चात शबरी पंपासर में साधु की सेवा के निमित्त आधी रात को आती और रसोई घर में चौका दे लकड़ी रख नित्त चुपके चली जाती। कई एक साधु विचार करने लगे कि कौन आदमी आकर गुप्त सेवा कर चला जाता है। निदान एक दिन उस मण्डप से एक साधु बाहर डील डाल को निकले तो उसे देख पूछा कि तू कौन है? वह डर के मारे बैठ गई और बोली कि मैं जात की भिल्लनी हूं। यह सुन साधु ने कहा कि तूं ने अपनी क्षुद्र प्रकृति से हम लोगों को भी भ्रष्टाचार किया। यह कह कर दी लात पीठ में मार चले गये और शबरी रोने लगी। थोरी देर के बाद उस गादी के महन्थ मतंग ऋषी दिशा चौगान को निकले कि रोने का शब्द सुन वहां जाकर पूछने लगे तो उसने पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। यह सुन मतंग ऋषि उसे अपने स्थान में ले आये। वह सेवा करने लगी तो वहां के सब साधु जी में घृणा मान शबरी को छोड़ देने के लिये मतंग ऋषि से कहने को चले। मतंग ऋषि ने यह हाल अपने योग बल से जान उन्हें स्वागत पूर्वक बैठाया। फिर पूछे कहा कि यदि आप लोग मुझे घृणित समझते हैं तो मुझे भी अब रहना नहीं है। उनमे से एक को उस गद्दी का महन्थ बना और शबरी की प्राण रक्षा के विषय में बहुत समझा और शबरी को भी यह कह शरीर को त्याग किया कि तुम इसी स्थान में रहो १००० वर्ष के बाद श्री रामचन्द्र यहां आकर तेरा उद्धार करेंगे। शबरी तब से बराबर श्री रामचन्द्र को स्मरण किया करती और मन की माला बना जपा करती। उनके खाने के लिये विविध प्रकार के कन्द मूल फल बैरादि दोना में लेलिकर पर्णकुटी में रखती और सूख जाने सड़ जाने पर फेंक दिया करती। ज्यों ज्यों दिन निकट आता त्यों त्यों थोड़ी थोड़ी दूर जाजा कर देख आया करती और निसिबासर प्रीति में मगन रहती। कैसहू मूसलाधार पानी बरसे, उपल बृष्टि हो, खड़ी रहकर रामचन्द्र के आने को बाट जोहती और कभी यह कहती कि हा रामचन्द्र आनन्द कन्द, मुझ दासी को कब दरस दिखा कर नयन

तृप्त करोगे । सच है "वियोगी की गति क्या योगी तें घट है" इसी प्रकार कितने दिन बितने पर श्री रामचन्द्र अनुज लक्ष्मण के सहित शबरी की प्रीति पर व्याकुल ही जैसे बछरू अपने धेनु गो की ओर दौड़ता है वैसेही रामचन्द्र जी साधुओं से पूछते पाछते शबरी की पर्ण कुटी में पधारे। आने के साथही शबरी दोनों भाई को गोद में लेकर प्रीति से आंसु बहा कर प्रेम में मग्न हो गई, कुछ सुध बुध न रही । तब रामचन्द्र जी ने कहा कि मुझे कुछ खिलाओ तब उसने दोना में रक्खे हुए बेर को लाकर दिया और रामचन्द्र जी ने आधा अपने भ्राता लक्ष्मण जी को दिया। उन्होंने उसमें दांत गड़े हुए निशान देख मूंह फेर उस दोना को ज़ोर से फेंक दिया और रामजी ने बड़े चाव से भोजन किया और लक्ष्मण जी की करतूत पर अपने जी में बोले कि अभी तो इस बेर को घृणा से नहीं खाते पर इसी बेर के खाने से इनकी प्राण रक्षा होगी । निदान शबरी को परमपद दिया लक्ष्मण जी के फेंके हुए दोना के फल पश्चिमोत्तर खंड में जाकर द्रोणाचल पहाड़ हुआ और वह बेर सजीवन मूरि बना उसी को खाने से लक्ष्मण जी को मूर्छा गई । अतएव हे महाशयो ! इसी का नाम भक्ति है हम लोगों को भी उचित है कि सदा सर्वदा मनुष्य तन पाकर भक्ति द्वारा माया से बिलग होवें ।

जगदीशप्रसाद
ट्रेनिंग स्कूल बांकीपुर ।

---

## सत्य सूचना।

"आरोग्य कारक औषधालय" की आज्ञाकारी औषधियां।

(प्रथम एक बार अवश्य आज़माइये)

विशेष—लल्लो चप्पो न लिखेंगे, यह सोच कर कि "सांच को आंच क्या" यदि परिचा लेना ही तो प्रथम ऊपर लिखे हुए "हेडिंग" को भली भांति देख कर अपने चित्त में अटल रूप से विश्वास कर लीजिये और द्वितीय स्वयं परिचा चाहिये तो इसी पत्र के "सहकारी सम्पादक" चुनार के प्रसिद्ध पं० सीताराम जी वी निज नगर निवासी प्रख्यात पं० श्यामबिहारी मिश्र जी हैं इन लोगों के द्वारा भी जांच कर लीजिये। बस पढ़ते ही निम्न लिखित औषधियों को मंगा कर रोग मुक्त होइये यदि आरोग्य होना असंभव जान पड़ेगा तो हमारा ज़िम्मा—

### औषधियों की व्यवस्था।

"दद्रु नाशक गोला" एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "तिजारी ज्वर की गोली एक डिबिया में ८ गोली मू०१) "बवासीर" की गोली जो खूनी और बादी दोनों की जड़ से नष्ट करती है। एक डिबिया में १६ गोली ३) पिलही का अपूर्व लेप "एक पट्टी से शर्तीया आराम—एक डिबिया मू० २॥) गर्मी की गोली कैसीही पुरानी गर्मी हुई हो जड़ से साफ़ एक डिबिया में ३४ गोली मू० २॥) सिर पीड़ा का "अद्भुद नास" यावत प्रकार की पीड़ा इससे जड़ से साफ़ एक शीशी मू० २।) हैजे की दवा (अर्क) सेवन मात्र से कैसाही हैजा हुआ हो फौरन आराम एक शीशी मू० २।) नेत्र की गोली इससे फूली, मांड़ा टेटर बदगोश्त सुर्खी सब आराम एक डिबिया में १६ गोली मू० २।) "जुलाब की गोली" इस में सुस्ती आने का नाम नहीं वर्षभर आरोग्य रहिये एक डिबिया में केवल ३गोली मू० ।।।) सूज़ाक की दवा कैसा ही पुराना हो या नया हो मैं एक बड़ा डिब्बा ४० पुड़िया मूल्य ३)।

इन सब औषधियों का उचित मूल्य मैं प्याकिंग चार्ज के रक्खा गया है इस के अतिरिक्त और २ असाध्य २ रोगों की दवा मेरे पास तैयार हैं।

मांगने से भेजेंगे और सब दवाओं के सेवन की व्यवस्था भी विधिवत पत्र के साथ लिखेंगे—बस और भड़कीले विज्ञापनों का ध्यान इस समय को छोड़कर औषधी मगाना प्रारंभ कर दीजिये। पता—

डाक्टर अक्षय कुमार चक्रवर्ती

प्रोप्राईटर—आरोग्यकारक औषधालय महल्ला कोट

चीत नाथ घाट माज़ीपूर।

---

अक्लू लाल ने छापकर प्रकाश किया।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

NOVEMBER 1895 VOL. XXIV—NO 11

मासिक पत्र।

नवेम्बर १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर ११

१ समय का हेर फेर।
२ अग्निमय ज्वलन्त पुरुष।
३ उर्दू और हिन्दी।
४ औपयौगिक।
५ शहर नंगहरम।
६ जोधपुर
७ जाती हुई उर्दू की प्रार्थना।
८ ब्रह्मन।
९ चिट्ठी पत्री।
१० सिराजुद्दौला।
११ विज्ञापन।

बाँकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाख़ाना,

## बिहार-बन्धु के नियम।

१—सर्वत्र मूल्य ... ... ... ... २)
छ महीने का ... ... ... ... १।)
राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ ... ५)
विद्यार्थियों से ... ... ... ... १)
प्रति खंड का ... ... ... ... ≠)

२—नमूने की एक कापी सब को मिलेगी।

३—मूल्य पहले भेजना चाहिये।

४—पांच बिहार-बन्धु साथ मंगाने वालों को एक कापी मुफ़्त मिलेगी और नागरी में एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

बिहार बन्धु में विज्ञापन का सिलसिला अलग है। जिसमें दो कौलम है विज्ञापन जो महाशय भेजेंगे वह उसी में छापा जायेगा। छपाई की शरह नीचे लिखी है

एकवार के लिये प्रति लाईन ... ... ... ≠)॥
तीनवार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ≠)।
छ वार तक लगातार प्रति लाईन प्रतिवार ... ≠)
बारह वार तक लगातार का प्रति लाईन प्रतिवार ... )॥

बारह वार तक विज्ञापन छपवाने के बाद भी जो लोग ज़्यादे दिनों तक छपवाना चाहेंगे उनको बारह वार तक )॥ प्रति लाईन प्रतिवार देने के बाद, जितने दिनो तक छपवायेंगे आध आने लाईन प्रति वार के हिसाब से इश्तिहार की छपाई देना होगा।

हिन्दुस्तान के बाहर रहने वालों को इश्तिहार छपवाने का रेट चीठी में तय करना चाहिये।

६—बैरिंग चीठी वापस कर दी जाती है।

मनेजर—बिहार-बन्धु प्रेस—बांकीपुर।

# बिहार-बन्धु।

न० ११—नवेम्बर १८९५।

---

## समय का हेर फेर।

कठिन काल के जंजाल में न जाने कौन कौन जगड्वाल दिन रात हुआ करते हैं। मनुष्य पशु पक्षी स्थावर और जंगम में प्रतिक्षण अन्तर होता जाता है। उसी परिवर्तन से स्वर्णमयी भारत भूमि भी अब दरिद्र और रोग की वासस्थली हो गई है। जहां पूर्व वर्ष अकाल, महंगी इनफ़्ल्यूएंज़ा और कालरा मुंह बाए ही खड़ा रहता है। जिन सोने फूल फूले भरे पुरे घरानों के बालक भुई धरे मैले होते थे। वे आज भूख के मारे सड़कों की धूल फांक रहे हैं। जिन बाला ललनाओं का मुखचन्द्र देखने को सूर्य चन्द्र भी आशावान रहते थे, वे अब घर घर का पिसना पीसती फिरती हैं। जो नीच शरीफों के आगे धूल में बैठते थे, वे अब कुरसी पर बैठे सीधे सलाम नहीं लेते, जो शाहीशान के गुमान में बिना पांवड़ा हवेली के बाहर नहीं होते वे आज गली गली दिया सलाई के बक्स बेच रहे हैं।

अहो! वीर सूरभारत भूमि की वीर प्रजा का एक दिन वह था जब कि आर्यों की बिजली सी चमकती खड्ग कायरों की आंख में चकाचौंध लाती थी वही जाति आज जनखा पने के बेंत या पतली छड़ी बांधे फिरती है जिस की कि खुद हिफ़ाज़त करनी पड़ती है न कि वे फूलछड़ियां अपनी कुछ रक्षा कर सकती हैं।

जिस देश के रईसों की अर्दली में शस्त्रास्त्र सज्जित सुभट योधागण रहते थे वहां अब दो एक कुत्ते भयानक मुंह बाये आगे आगे दौड़ते फिरते

हैं। दैवात बृक [ भेड़िया ] बाघ का सामना आन पड़े तो चून का पुतला भी बचाने वाला न मिले।

जो लोग शेर का शिकार करना ही अपनी वीरता का मान और रजपूती की ध्वज समझते थे वे अब बंटूक लिये चिड़ीमारों की तरह दीन बटेरों को हलाल करते हैं।

जो धनाढ्य, सोना चांदी और जवाहिरात से तुला दान करते थे वही जिस भूमि में कर्ण, हरिश्चन्द्र, दधीचि और उद्दालक दानी और परोपकारी हुए हैं। उसी धरती के कपूत अब घूरे के मोल पर बहस करते हैं, एक पत्ती तक देते हुए संकुचित होते हैं।

हा!! जो जन हलकी चीज के बर्ताव से अपना अपमान बोध करते थे। शाल, दुशाले, रेशम के सुचिक्कन मृदु बस्त्र और रत्न जड़ित स्वर्णालंकार से सुभूषित रहते थे, जिनके पलंग स्वच्छ रुई रेशम ऊन या मेमर के धुए से गुद गुदे होते थे, वही लोग अब सन सुतरी गूदड़ भड़ी हुई कमानीदार आराम कुरसियों पर बैठ फूले अंग नहीं समाते। पटसन और राम बांस के कपड़े पहन कृतार्थ हैं सोना चांदी और जवाहिर के बदले गिलट के झूठे कामों पर मोहित हैं। इन्हीं चीजों का नाम सुफियानी और खुशनुमा रक्खा गया है "धन्य यह अनोखी शोभा" ज्यों ज्यों देश दरिद्र होता जाता है, त्यों त्यों बलायत वाले, सस्त मोलू कपड़े बरतन और गहने आदि भेज भेज यहां की प्रजा के मास में बचा खुचा खून रूपी धन जोंक की तरह चूसते ही चले जाते हैं। सामाजिक और राजनैतिक आदि सभा तो इस देश में अनेक हैं किन्तु देशी वाणिज्य पर किसी का ध्यान नहीं है। भोली प्रजा का बकरी की भांति हलाल हो रहा है जिस मंगल मयी, धर्मरत भूमि के ब्राह्मण जन समावर्तन संस्कार के पूर्व विद्यार्थी से लेना जानते ही नहीं थे सुतरां अपना धर्म और परम कर्तव्य समझ बिना द्रव्य लिये विद्या दान करते थे छात्र वर्ग भी माता पिता के समान गुरू का अभिवादन करते थे और सुशीलित होकर द्रव्य आदि से यथा शक्ति गुरू को सन्तुष्ट करते थे। आज वह प्राचीन गौरव जाता रहा। अब तेली तमोलियों की देखा देखी आठ आना महीना पर

क्षुद्राशयों के बालकों को ब्राह्मण शिक्षा दे रहे हैं विद्यार्थी भी मास्टर को नोकर समझ उसका समुचित आदरमान नहीं करते "लोभी गुरू लालची चेला नरक कुण्ड में ठेलम ठेला।"

जहां की शांत संतोषी सहन शील वैदिक प्रजा में डाह बैर वश प्रथम तो झगड़े ही कम होते थे जो होते भी थे वह पांच पंच मिल सहज में निवटा देते थे, ऐसी पंचायत में बलायत के बारिस्टरी के पुराने फिर्के की तरह कोई किसी से कुछ लेता न था, यहां वालों के बहुधा दण्ड भी ऐसे होते थे कि वे परोपकार से सम्बन्ध रखते थे।

जैसे व्रत कराना गायत्री जपाना वा कथा इत्यादि कहवा देना। और जो राजा वा राज सभा की ओर से दण्ड होता था उससे राजकोष भरना अभीष्ट न था। न वकील आदि बिचमनियों को कुछ देना पड़ता था। और अब तो वह दशा है कि जब तक स्वर्ग और मर्त्यलोक के आधार बैरिष्टर साहब अर्थी और प्रत्यर्थी की ओर से सांपों की लड़ाई में जीभों को लपालपी न करें फैसला ही नहीं होता। सच्चे से सच्चे मुक़द्दमे में भी जिरह की पैनी छूरी से कुछ न कुछ धर्म की गर्दन कटती ही है। संप्रति लोगों के विचार ऐसे हो रहे हैं कि बिना कुछ झूठ मिले मुक़द्दमा बनता ही नहीं, कैसा ही सच्चा क्यों न हो।

हमने एक मुंसफ की तजवीज में देखा उस महात्माने बहुत ठीक लिखा था उसके लेख का आशय यह था कि बादी (मुद्दई) ने जान पड़ता है कि मुक़द्दमें को पुष्ट करने के लिये कुछ बातें झूठ भी कही हैं।

जैसे किसी ने किसी को रुपये उधार दिए अब तीसरे वर्ष नालिश होकर बिचार के समय वह रुपये देने के सिवा और क्या याद रख सकता है। वकील लोग चारो ओर से झझोरते हैं "जब रुपये दिए थे लेने वाले ने हाथ में रक्खे थे या गोट में घुरस लिए थे। वा उसके पास बसनी थी या पल्ले में बांध कर ले गया था मुद्दई या गवाह की इन सवालों में बड़ी घबराहट होती है लाचार कहीं कहीं पर लोग सच्चे अभियोग को दृढ़ करने के लिये भी कहते हैं पल्ले में बांधे थे या बसनी में भर लिए थे यद्यपि उनको यह कुछ भी स्मरण नहीं है इसी जिरह में जो कहीं विरोध

(इख़िलाफ़) हुआ तो चौबे के दुबेही रहजाते हैं। ज्यों ज्यों कानूनी बहस बढ़ती जाती है। त्यों त्यों विश्वास "इमान्दारी" और सचाई का नाश होता जाता है—कैसाही कोई प्रबन्ध करे जब तक मनुष्य भीतर से अच्छा नहीं होता सदा चार पर कभी नहीं आसकता। और सदाचार उस धर्म से सम्बन्ध रखता है जिससे मत थोक मजहब और मिल्लत, में ऐसी सिक्षा हो जो आगे पीछे एक रस उतरे जैसा यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में कहा है * * *

यह सारा जगत ईश्वर से घिरा है अन्याय से किसी के पदार्थ की इच्छा न कर अर्थात् परमात्मा सब ओर देखता है। तेरे भले बुरे कामों का फल देने वाला है। यदि तू भलाई करेगा यदि उसे मनुष्य न जानेगा तो क्या डर है परम पिता तो अवश्य देखता है और वह शुभ फल देगा इसी प्रकार बुराई भी जो छिप कर करेगा ईश्वर की ओर से दण्ड पावेगा एवं दूसरा मंत्र शिक्षा देता है कि—

भले युक्त निष्काम कर्म [ खुदगरज़ी छोड़ ] करता हुआ ही १०० वर्ष तक जीने की इच्छा करे। इस प्रकार बर्तने से मनुष्य पापी नहीं होता।

फलतः जब तक फिर प्राचीन धर्म की शिक्षा न होगी देश में ऐसी ही झंझट रहेगी। यह खराबी न सिर्फ प्रजा के लिये है बरन राज के लिये भी परिणाम में अच्छी नहीं है। प्रजा में दुर्गुण बढ़ना राजा को भयकारी होते हैं। अतएव सरकार की ऐसी शिक्षा दिलानी चाहिये कि प्रजा मात्र में धर्म की वृद्धि हो, क्यों कि धर्म ही सब का सुखकारी है जैसे पुत्र का सुपात्र होना पिता को सुखदाई है इसी प्रकार प्रजा की सुशीलता राजा को सर्वदा हित कर है। अतएव धर्म शिक्षा की ओर ध्यान देना मुख्य है।—भारत सुदशा प्रवर्तक

---

## अग्निमय ज्वलन्त पुरुष

( श्री राम प्रकाश लाल जी लिखित )

जब हम जगत का बिस्तीर्ण इतिहास सामने रख कर पढ़ने बैठते हैं, तो अध्याय पर अध्याय, पत्र पर पत्र और पृष्ट पर पृष्ट अनेक मृत जाति की दुख पूर्ण मलीन कृति से भरा पाते हैं जो प्रति मुहूर्त्त घने मेघ के समान उदित होकर हमारी अन्तर्दृष्टि के आकाश को घोर अन्धकार से आच्छन्न कर देता है। कहीं देखते हैं कि मिस्र पूर्ण चन्द्र सरीखा नील आकाश में जलते २ हंसते २ देखते ही देखते डूब गया, कहीं यूनान के आकाश में शत सूर्य, रोमीय गगन में अयुत रवि दिगमण्डल की उज्ज्वल प्रभा से जग मग कर रहे थे देखते ही देखते वह ज्वलन्त मिहिर मण्डल घन नील अतल गंभीर सागर गर्भ में खंस पड़ा, आकाश अन्धकार पूर्ण हो गया; फिनिशिया जुडिया कालडिया प्रभृति अनेक देश भी ज्योतिमाला सरीखे पृथ्वी रूपी नीलाम्बर में एक दिन अपनी ज्योति बिस्तार करके हंसते थे, आज वह हंसी और वह दीप्ति अदृश्य है; दुखिया भारत भी एक दिन अपने अंग की प्रभा से कोटि रवि प्रभा ग्रास करने की समर्थ था, आज वह दुर्ज्जय प्रभाराशि गंभीर तिमिर गर्भ में लीन है। इतिहास का ऐसा चित्र देख कर राज्यलक्ष्मी की ऐसी असधारण चपलता निहार कर सभी के प्राण में अधिक दुख और भय संचारित होता है; अनेक समय बिषम निराशा का अन्धकार हृदय आकाश को ढांक लेता है। जो एक दिन जगत के शीर्ष स्थान में खड़े होकर अपने कटाक्ष से पृथ्वी को हंसाते रोलाते थे; जो एक समय समस्त जगत को शिष्य सरीखा उपदेश और शिशु समान हाथ धर कर शिक्षा दान करते थे जिनका बीरत्व धीरत्व सौजन्य सन्मान गौरव पाण्डित्य ज्ञान विद्या बुद्धि और ऐश्वर्य्यशालिता का परिमाण करना कठिन था; जिनके उत्साह असाधारण स्वार्थत्याग, दया, दाक्षिण्य एवं निर्मल बिशुद्ध धर्मज्ञान से देवता होने का भ्रम होता था, आज वेही धरणी की मलिन धूलिशय्या पर शयन करके अवसन्न शरीर भग्न हृदय बिषन्न मुख से परपद

सेवा में जीवन के शेष दिन की गंभीर दुख के सहित बिता रहे हैं; इस चित्त विप्लवकारी व्यापार परम्परा को सोच कर किसका हृदय गंभीर अतलस्पर्श अवसाद सागर में एकबार ही नहीं निमग्न हो जाता है? अब यह विचार करना चाहिये कि इस निराशा के अंधकारमय जगत में भी आशा की ज्योति है वा नहीं इस अथाह समुद्र में भी ऐसा कुछ है वा नहीं जो हमें एक दिन न एक दिन इस दुखसागर पार होने का किञ्चित भरोसा दिला सके?

आज पुराकाल की सभ्यता की ज्योति की लज्जित औ मलीन कर के उनविंश शताब्दी की नवीन सभ्यता की स्वर्णमयी प्रभाराशि पृथ्वी के विशाल आकाश में विस्तृत है आज विज्ञान और ज्ञान के बल से मनुष्य सन्तान प्राचीन काल की मानवमण्डली से बहुत ऊंचे पर दर्प सहित खड़े हैं; नवीन विज्ञान अपना गंभीर निनादी सिंघा बजाकर ज्ञानमण्डली के द्वार २ "उन्नति उन्नति" पुकार कर घोषणा कर रहा है; किन्तु आज शाप भ्रष्ट देवरानी सरीखी स्वर्गकानन च्युत पारिजात समान तुषार निपीड़ित प्रफुल्लनलिनी सदृश, भारतमाता मलीना औ हीन दशा ग्रस्त हो रही है; जिसकी एक दिन गन्धर्व्व के चैत्ररथ के सहित त्रिदेवनन्दन के सहित तुलना होती थी, जो एक समय अलका औ अमरा की सौभाग्यराशि भोग करने की समर्थ हुई थी, जिस पुण्य भूमि ने वैकुण्ठ नाम की उपयुक्तता पाई थी, स्वर्गभूमी जिसका जगत विख्यात नाम था, वीर प्रसविनी जिसकी सादर आख्या थी, धर्मक्षेत्र जिसका विशेष अभिधान था—आज वही गौरवान्वित भारत पृथ्वी के भीषण विभीषिकापूर्ण श्मशान क्षेत्र में परिणत है; आज उसके एक प्रान्त से अपर प्रान्त तक मृत शव देह परिपूर्ण है; जिस गगन में एक दिन एकही संग सौभाग्य के कोटि रवि तपते थे, आज वही आकाश विषाद की काली घटा से आच्छन्न है, अवसाद औ निराशा के गंभीर अन्धकार से ढंका है; इस अन्धकार में इस विशाल विस्तृत सुदूरप्रसारित शब्द औ वायु गति हीन श्मशानक्षेत्र में खड़े होकर क्या आज हम नवीन विज्ञान के गंभीर स्वर में स्वर मिला कर हम भी पुकारें कि

"ईश्वर की सृष्टि सभी उन्नति की ओर दौड़ती है, विश्वनिहित उन्नति का महा स्रोत अनन्त प्रवाह रूप बह रहा है "अथवा वैज्ञानिक का हाथ पकड़, भारत का यह दुखपूर्ण मलीन दृश्य दिखाकर, भारत के दुख की कहानी सुनाकर कहें कि "भाई चुप रहो, तुम्हारा ज्ञान विज्ञान सभी भूल है, कुल भ्रमात्मक है?

मानव समाज उन्नति की उच्चतम अवस्था में जो शक्तियां उपार्ज्जन करता है, सब अविनाशी है; किन्तु ध्वंश का अर्थ केवल रूपान्तर प्राप्ति है। जब कि मृत जाति के भग्न हृदय पर नवीन प्रबल जाति आ कर प्रभुत्व का दृढ़तम दुर्ग संगठन कर विजय पताका उड़ाती है, क्षुधार्त्त जलौका सदृश शतमुख से जातीय शरीर का रुधिर शोषण करती है जब कि धन मान गौरव रूप समस्त रुधिर शोषित हो कर जाति दुर्बल हतश्री श्री विवर्ण हो जाती है तो वहां से उपधर्म, मिथ्या प्रवंचना, व्यभिचार पाप और महा अत्याचार का गरलमय, दूषित, उष्ण वायु राशि उठ कर आकाश को पूति गन्ध से पूर्ण करती है, चारों ओर अन्धकार छा लेता है एवं क्रमशः उस जाति के जीवन की महा रंगभूमि भीषण विभीषिकापूर्ण महाश्मशान क्षेत्र में परिणत होती है। जब दिङ्मण्डल निरव निस्तब्धता से परिपूर्ण होता है, जब गंभीर निद्रा का जाल सर्वत्र प्रसारित होता है। जबकि देशवासी पुरातन रीति नीति के दोषगुण विचार शून्य होकर अपरिवर्त्तनीय श्री अभ्रान्त बोध कर के उसी विकृत आचार व्यवहारही को कण्ठभूषण करके उसके पाप भार से पतित हो जाते हैं, तो न मालूम कहां से उसी शब्दशून्य गंभीरतम तिमिराच्छन्न निराशा के शुष्क झटिका पूर्ण जातीय महाप्रान्तर में दो चार ज्वलन्त अग्निस्फुलिंग देख पड़ते हैं एक दिन उसी स्फुल्लिंग राशि के मध्य से सहसा एक ज्वलन्त अग्निस्तम्भ उत्सारित हो कर थोड़े ही काल में अति वेग से देश भर में व्याप जाता है; उसकी उज्वल प्रभा से समस्त जगत चमकउठता है, देखते २ उसी महाग्नि में सब कुसंस्कार जल जाते हैं और विशुद्ध समाज की भीत खड़ी होती है; जो चिरान्धकार में अभ्यस्त हैं, उनके विकृत

चक्षुओं में इस आलोक की छटा असह्य होती है, वे चीत्कार पूर्वक उसका प्रतिवाद औ अपयश घोषणा में प्रवृत्त होते हैं और उसके विरुद्ध खड्ग हस्त हो उठते हैं; कुछ दिनों तक घात प्रतिघात होता रहता है किन्तु अंत में सत्य का अवश्य ही जय होता है और आनन्द की मोहनी पताका फहराती है। इस जातीय विप्लव के निदानभूत अग्नि स्तम्भ को हम महारुद्र वा अग्निमय ज्वलन्त पुरुष कह सकते हैं; ईसा, मूसा महम्मद कनफीसी बुद्ध नानक एवं चैतन्य प्रभृति महात्मागण इसी प्रकार के एक एक जातीय विप्लव साधक अग्निस्तम्भ थे; अमेरिका का विप्लव कर्णधार वाशिंगटन इटाली का मैटसिनी फ्रान्स का गाम्बेटा एवं हंगरी का तेजस्वी मन्तान कसूथ—सब ऐसे ही महारुद्र थे ध्वंश इनका कार्य्य था और ध्वंश के परे उन्नति उनका लक्ष्य था; ये सब के सब अग्निमय ज्वलन्त पुरुष थे; इनका देह ज्वलन्त अग्नि से गठित हृदय अग्निस्रोत में प्लावित दृष्टि अग्निवर्षी, और वाक्य अग्निराशि उद्गारी था, अग्निमय ज्वलन्त पुरुष के लक्षणही ऐसे होते हैं वे स्वयं अग्निस्तम्भ होते हैं, ज्वलन्त अग्निस्रोत लेकर जगत में आगमन करते हैं, और ज्वलन्त अग्निसिन्धु प्रवाहमान छोड़ कर इस धरा से अन्तर्हित होते हैं; उनके प्रति निश्वास प्रश्वास में अग्नि उत्सारित होती है, उस अग्नि के स्पर्श से मृत व्यक्ति भी जीवन पाता है; उनके अग्निमय कटाक्ष से धीर रोगी वीर के समान उठ कर गर्ज्जन करता है; उनका ज्वलन्त जीवन और वाक्य कुसुमदामरचित मधुभण्डार नारी हृदय में भी अग्निस्रोत ढाल देता है। भारतवर्ष में इस समय ऐसेही तेजस्वी अग्निमय ज्वलन्त पुरुष की आवश्यकता है।

---

## उर्दू और हिन्दी।

हम लोगों को यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि बंगाल के लेफ़्टनेन्ट गवर्नर सर चार्ल्स इलियट ने बिहार के न्यायालयों में हिन्दी के स्थान में उर्दू के अक्षरों का प्रचार करना अस्वीकार किया है। यद्यपि हम यहां पर उर्दू के प्रेमियों का जी दुखाना नहीं चाहते हैं तथापि उन्हें इस बात को स्मरण रखना चाहिये कि हिन्दी के सामने उर्दू अभी कल की जन्मी लश्करी भाषा है। इस में सन्देह नहीं है कि यह भाषा, जो ललित हार्दिक हिन्दी, मधुर फ़ारसी और कंठज वीरतापूर्ण अरबी से बनी हुई है, एक उत्तम भाषा है, परन्तु इसके साथ ही इसमें कई एक दोष भी हैं। प्रथमतः एक दोष यह है कि यद्यपि अरब में इन अक्षरों का उच्चारण विभिन्न होता है तथापि हिन्दोस्थान में उर्दू भाषा के चार अक्षरों का उच्चारण एक ही "ज़" होता है। दूसरा दोष यह है कि इस भाषा के शब्दों के लिखने में ज़ेर, ज़बर पेश नहीं लगाये जाते हैं जिसका फल यह देखने में आता है कि एक शब्द अनेक प्रकार पर पढ़ा जाता है। जैसे "नन्दलाल, बम्बई" की "तन्दलाल, तम्बई" "सन्दलाल, सम्बई" तथा "किश्ती" की "कसबी" और "बिल्ली" की "पिल्ली" अथवा "बल्ली" पढ़ना आश्चर्य की बात नहीं है। तीसरा एक बड़ा दोष यह है कि अवनति के समय में जैसे लयटिन, ग्रीक तथा संस्कृत में अल्पाभिप्राय पर एक बृहत् कथा वर्णन की जाती थी वैसे ही अब उर्दू में हिन्दू और मुसलमान मौलवियों और मुन्शियों के द्वारा राई से पहाड़ बनाया जाता है।—अल्प फल भूरि पत्र। बादशाह अकबर के काल में उर्दू इस प्रकार पर नहीं लिखी जाती थी। अबुलफ़ज़ल की बनाई हुई पुस्तकों के देखने से यह भली भांति पर ज्ञात होता है कि उस समय में उर्दू भाषा में विशेषतः ऐसे प्रचलित हिन्दी के शब्द लाये जाते थे और ऐसे सरल वाक्य लिखे जाते थे कि वे सर्वसाधारण को ज्ञान गोचर हो जाते थे। इन सब के अतिरिक्त उर्दू भाषा में चौथा बड़ा दोष यह है कि जब सरकारी न्यायालयों की ओर से उर्दू में लिखे हुए सम्मन और इत्तलानामे गांव में कृषकों के पास भेजे जाते हैं तब उन्हें पढ़ाने के

लिये उन्हें केवल कीसों तक दौड़ना ही नहीं पड़ता है बरु मुंशियों और मौलवियों को अपनी गांठ से आठ, दश आने देने भी पड़ते हैं। इस पर भी शोचनीय बात यह है कि हिन्दोस्थान के कृषक केवल आधा पेट ही खाकर नहीं रहते हैं बरु लात, गाली भी खाते हैं। इस प्रान्त के ग्रामीणों के इन दुःखों के दूर करने के लिये यह सब से हितकारी होता यदि राजकीय सम्मन, सूचनायें और दूसरे सब पत्र उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं में छाप दिये जाते।

यहां पर हमें यह जान कर अत्यन्त ही खेद होता है कि यद्यपि नागरी सर्वगुणागरी इन प्रान्तों की प्राचीन मातृ भाषा है और जिस के बोलने वालों की बीरता, चातुर्यता और गुण ग्राहकता प्रसिद्ध है तथापि यह भाषा अपनी सहोदर भग्नी बंगाली, मरहठी और गुजराती से बहुत ही पीछे पड़ी हुई है। हम समझते हैं कि संस्कृत और प्राकृत से जितनी प्रान्तिक भाषायें निकली हैं उनमें से हिन्दी सब से अधिक उपयोगी कथाओं, कहानियों और लोकोक्तियों से भरी हुई है। ऐसी मनोहर रत्नागार हिन्दी भाषा की अवनति के कारणों को जानने के लिये कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। इसके मुख्य कारण यही हैं कि आज तक यहां के न्यायालयों में उर्दू और फारसी का प्रचार चला आता है। हिन्दी साहित्य के भण्डार में काव्य के बहु मूल्य रत्न हैं, पर खेद का स्थल है कि हमारे देशी भाई उन्हें परित्याग करके मरुस्थल में ढूंढ़ते हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी के आधुनिक लेखकों में यह एक बड़ा दोष है कि वे इस देश की भिन्न भिन्न उन्नतिशाली प्रान्तिक भाषाओं को सीख कर उनके द्वारा हिन्दी की उन्नति नहीं करते हैं। हिन्दी के प्रेमियों को यह अभिभूत होना चाहिये कि वसुधा की प्रायः सब भाषायें एक दूसरी भाषा की सहायता से उन्नति को प्राप्त हुई हैं अतः इस देश की भिन्न भिन्न प्रान्तिक भाषाओं से उत्तम उत्तम विषयों का संग्रह करने में हिन्दी के प्रेमियों को लज्जित नहीं होना चाहिये। बंगाली की उत्पत्ति केवल दोहो शताब्दि से है। इस भाषा की उत्पत्ति मागधी प्राकृत से है। गत केवल तीसही वर्षों में इस भाषा की उन्नति ऐसी शीघ्र हुई

है कि इस समय इस भाषा में भिन्न भिन्न विषयों पर दो सहस्र से अधिक पुस्तकें प्रति वर्ष प्रकाशित होती हैं। बंगाली में इस समय ऐसे काव्य ग्रन्थ छपे हैं कि जिनकी तुलना युरोप के महा काव्यों के साथ हो सकती है। इस भाषा में मधुसूदन नामक एक बंगाली कवि ने ऐसा ललित और विविध रस पूर्ण मेघनाद वध काव्य लिखा है कि जिससे बंगालियों के हार्दिक भाव का स्तम्भ जब तक बंगाली भाषा रहेगी तब तक खड़ा रहेगा। इस भाषा में और हिन्दी में ऐसा निकट सम्बन्ध है कि दो सप्ताह में इसका व्याकरण सीखा जा सकता है।

अन्त में हमारे इस लेख के लिखने का मुख्य अभिप्राय यह है कि हिन्दी जो इन प्रांतों की मातृ भाषा है उसकी उन्नती करना चाहिये। यहां पर हम एक प्रस्ताव करते हैं और आशा करते हैं कि हमारे पाठक गण इस पर ध्यान देंगे। इसमें सन्देह नहीं है कि हिन्दी में अनेक प्रकार की कथा, कहानियां और लोकोक्तियां भरी हुई हैं जो एक से एक बढ़ कर उपदेशों और शिक्षाओं से पूरित हैं। यदि हिन्दी के प्रेमी जन उनको हमारे पास भेजा करें तो प्रथम तो वे प्रति दिन प्रकाशित कर दी जायेंगी और यदि उचित समझा जायगा तो वे पुस्तकाकार छपवाई जायेंगी और बिना मूल्य कथादि भेजने वालों के मध्य में बांटी जायेंगी। हिन्दोस्थान

---

## औषधोपयोगिक।

जहां से रक्त निकलता हो चावल के आटे को लगाना रक्त बन्द करने के लिये उपकारी है।

जिस मनुष्य ने संखिया खाई हो उसे उसके उतारने के लिये सूअर की छाल बहुत लाभदायिनी है। डेढ़ तोला से दो तोला तक पानी में महीन पीसकर पिलानी चाहिये इतनेही परिमाण में बार २ रोगी को तब तक पिलाते रहना चाहिये जब तक की संखिया का प्रभाव नष्ट न हो जावे।

बबूल की पत्तियों को कुचल कर हुक्के में पिलाने से बिच्छू के डंक का बिष दूर हो जाता है।

तूतिया के उष्ण जल में लोहेको डुबो देने से लोहे पर ताम्बे की कलई हो जाती है।

## शहर नंग हरम।

(ज़नाना शहर)

स्याम के राज्य का ज़नाना शहर भी दुनियां की बिचित्र बस्तुओं में से है। दुनियां में ऐसा कोई नगर न होगा जहां इतनी स्त्रियां एक स्थान में रहती हों यह नगर ऐसा है जिसमें स्याम के बादशाह के महलात की स्त्रियां और इसी खानदान के प्रतिष्ठित घरानों की स्त्रियां रहती हैं। बादशाही महलों के गिर्द समानान्तर रेखा के तौर पर दो दीवारें चली गई हैं और उनके भीतर स्त्रियों और बालकों की एक बस्ती ९००० की बसी हुई है, शाहज़ादों के लिये बड़े उत्तम सुन्दर और रमणीय महल और शाही महलात और बन्दियों और शाह स्याम के ज़नाने से सम्बन्ध रखने वाली स्त्रियों के मकान, रमणे और वाटिकायें आदि इसके भीतर हैं। जगह जगह फ़व्वारे चलते हैं। क़तारदार वृक्ष बहुतायत से लगे हुए हैं और प्रत्येक रीत से यह नगर ऐसा सुन्दर रमणीय और मनोहर है कि जिसकी प्रशंसा करने में नहीं आ सकती। पूरब की ओर ऊंचे ऊंचे वृक्षों की चोटियों पर से शाही महलों की मुलम्मा की हुई छत (अथवा गुम्बज) दिखाई देती है और यह छत ऐसी चमकती है कि यदि दिश्वत रेखा के पास वाले देशों में एक हज़ार कांच एक स्थान में एकत्रित किये जायें तो कदाचित ही इतनी चमक उत्पन्न हो। शहर नंगहरम से बादशाह स्याम के कमरों तक पटा हुआ छत्ता बना हुआ चला गया है, जिसके भीतर से स्त्रियां आ जा सकती हैं। इस मार्ग के छोर पर एक तस्वीर बनी हुई है जिस के हाथ में तलवार है इस आशय का एक लेख लटका हुआ है:—

"ऊपर वाले हाकिम के बिरुद्ध कोई वाक्य निकालने से यह बेहतर है कि तेरे मुंह के भीतर तलवार घुसेड़ दी जाय।"

इस नगर का दक्षिणी विभाग स्त्रियों के नौकरों की बस्ती के लिये रक्षित है। और यहां बहुत सी बस्तुयें बिका करती हैं यह स्त्रियों का नगर दूसरे नगरों के समान प्रत्येक बात में आप अपने भरोसे पर रहा करता है। इसके नियम, इसके क़ानून, इसके जज, इसके पुलिस के

सिपाही, फ़ौजी सिपाही, गार्द, जेलखाना और जल्लाद (चांडाल), व्यापारी, महाजन, वैद्य और दाइयां ये सब ख़ास इस ही नगर के हैं और इन सब कामों को स्त्रियां ही करती हैं। स्त्रियों के सिवाय पुरुष का कहीं नाम तक नहीं है। महलों में केवल बादशाह और धर्म सम्बन्धी पण्डित उसके भीतर इस प्रयोजन से जाने पाते हैं कि स्त्रियों को दान पुण्य करने के पवित्र कार्य को पूरण करने का अवसर मिल सके। बांदियों को कभी कभी इस बात की परवानगी मिला करती है कि वे नगर के बाहर जाकर अपने पतियों से मिल आवें, परन्तु शाही महलों की और दूसरी स्त्रियों को इसकी इजाज़त नहीं मिलती. वे कभी कभी महलों अथवा मन्दिरों अथवा वाटिकाओं में जो इसी के आस पास हैं जाने पाती हैं। और इस पर भी वे बड़े ही आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपना जीवन व्यतीत करती हैं। यह बात सत्य है कि अगला बादशाह उन पर बड़ा ही अत्याचार करता था। परन्तु अब उनके साथ उत्तम बर्त्ताव किया जाता है। इन स्त्रियों का काम केवल यह रहा करता है कि फूल बिनती हैं, गुलदस्ते बनाती हैं और अपने बालकों के लिये हार गूंथती हैं और पक्षियों को दाना चारा दिया करती हैं, स्नान किया करती हैं और शतरंज, चौसर, ताश आदि से अपना मन बहलाया करती हैं।

स० की० सु

---

## जोधपुर।

हम अत्यंत हर्ष के साथ लिखते हैं कि जोधपुर के मृत महाराज के सत्वाधिकारी श्री मान महाराजा श्री सरदार सिंह जी का राज तिलक बड़ी धूम धाम के साथ समाप्त हो गया इस उत्सव में श्रीमान महाराव राजा साहिब बहादुर बूंदी महाराज सीकर और राजा साहब खेतड़ी और जोधपुर राज्य के कर्मचारी तथा अन्य अन्य लोग उपस्थित थे। बगडी के ठाकुर साहब ने राज्य की रीति के अनुसार श्रीमान महाराजा साहब श्री सर्दार सिंह जी साहब को तिलक किया तिलक के करने के समय ठाकुर साहब ने "मारवाड़ मुबारक हो" कह कर के मुबारक बादी दी थी

जिसके उत्तर में श्रीमान महाराजा साहब सर्दार सिंह ने फ़रमाया कि "तुम्हे बगडी इनायत" इसके कहने का अभिप्राय यह था कि मृत महाराज के समय में ठाकुर साहब की जागीर ज़प्त कर ली गई थी उसको युवा महाराजा साहब श्रीं सरदार सिंह जी ने राज तिलक की उत्सव में उन्हें वापस कर दिया। पहले जोधपुर में राज तिलक करने वाला अपने अंगूठे से खून निकाल कर तिलक करता था परन्तु इस समय कुमकुम से राज तिलक किया गया इस उत्सव के समय १४२ तोपों की सलामी की गई राजतिलक के होने के पश्चात दर्बार में उपस्थित राजों महाराजों और युरोपियनों ने महाराज पर पुष्पों की वृष्टि की।

तिलक के उत्सव के समाप्त होने पर मिस्टर मार्टिंडेल ने एक स्पीच दी थी जिसमें उन्हों ने भारत गवर्नमेन्ट की ओर से श्रीमान सर्दार सिंह जी साहब को जोधपुर राज्य का स्वत्वाधिकारी बनाया और महाराज की योग्यता प्राप्त करने का उपदेश दिया राज तिलक के समय कवि मुरारि दान जी के पुत्र गणेशदान जी ने कुछ कविता पढ़ी थी जिसके बदले में राज्य की ओर से उन्हें एक लाख रुपया दिया गया।

---

## जाती हुई उर्दू के प्रति कथन।

रीवां राज्य से उर्दू बीबी की सीख मिल गई है उस पर एक कविता वहां के पत्र भा० भा० में छपी है सो विनोदार्थ यहां दी जाती है—

### दोहा।

अब उर्दू तुम टिक रही, कुछ दिन अन्तर बेद *।
जहां न्याय होवे नहीं, सांच झूठ में भेद।
अथवा तुमको है भलो, पाञ्चाल † की देश।
शिष्य शिरोमणि‡ उठि गये, काटी तहां कलेश।
ब्यंकट रमन महीप ये, करहिं अकंटक राज।
कहु सांचे चिन्द्रन से, कहा तिहारो काज।
बहुत दिननलों सुख कियो, बान्धवेश को देश।

---

* पश्चिमोत्तर प्रदेश। † पंजाब। ‡ महाराजा रणजीत सिंह।

अब हमरे निज धर्म में, तुम की सदा कलेश।
धर्म न्याय चाहें नृपति, पन्थ तुम्हारी ओर।
रही बृटिश की श्वानिनी *, अब नहीं मिलि है कोर।
भारत भ्राता के रहत, करि नहिं सकी अपील।
रहत कचहरी जग पगी, तुम्हरे हित तातील।
पश्चिम उत्तर देश में, जो कीउ बूझा न्याय।
बिन देखे पंजाब के, कतहुं न पैहो ठांव।
जो कहुं पंजाबी जगें, देई गुरुमुखि जोरि।
तौ जनु भारत खण्ड में, भै दुर्गति अति तोरि।
ताते तुम जनि दुख करो, जाह देश ईशान।
फूटि रकाबी अब गई, सूथन भई पुरान।

भुजंग प्रयात छंद।

नहीं है तेरे दुख में साथ वारो, ज़रा गौर कैं तो हिये में विचारो।
अगर्चे अभी है कहीं क़द्र तेरी, भले है ये हिन्दून की तू लुटेरी॥ १॥
दबे हैं डरे हैं तेरी क़द्र वाले, जु आक़िल करेंगे तुझे ही निराले।
बिदा हूजिये चन्द इल्फ़ाज़ लैकैं, न लौटो कभू जो इतैं पीठ दैकैं॥ २॥

---

## प्रहसन।

एक हकीम के पास बुद्धि आई, हकीम ने पूछा कि तेरा स्थान कहां है। उसने उत्तर दिया कि सिर में, फिर लज्जा आई, हकीम ने पूछा तू कहां रहती है, उसने कहा कि आंखों में, फिर प्रीति आई और कहा कि मन मेरा स्थान है, जब यह तीनों अपने अपने स्थान वर्णन कर चुकी तब भाग्य उपाय को मारता पीटता आया और बोला कि मैं सिर में रहूंगा, हकीम ने कहा कि वह तो बुद्धि का स्थान है, भाग्य ने कहा कि जब मैं आता हूं तब वह बीरिया बधना बांध कर भाग जाती है, फिर स्नेह आया और कहा कि मैं आंखों में रहूंगा हकीम ने कहा कि वहां तो लज्जा रहती है, स्नेह ने उत्तर दिया कि मेरे आते ही लज्जा उड़ जाती है, फिर

* अंगरेज़ी कुतिया।

लालच आया और कहा कि मैं मन में रहूंगा, हकीम ने कहा कि वहां तो प्रीति रहती है, लालच ने उत्तर दिया कि जहां मेरा हेड क्वार्टर होता है वहां प्रीति और करुणा का नाम भी नहीं रहता। (आ० द०)

---

## चिट्ठी पत्री।

संसार हित के इस कार्य्य को अवश्य करिये।

सदुपदेश बिना प्रथमाऽवस्था में ब्रह्मचर्य्य में न रहने से मद्य, अफीम, भंग, चरस, तमाखू के सेवन करने से लोगों की आयु, धन, धर्म, बल की अत्यन्त हानि हो रही है यतः मादक सेवन निवारण के यत्न की और बालकों को ब्रह्मचर्य्य शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है यहां इस सेवक के यत्न से आज तक दो सौ छयालिस २४६ विद्यार्थि व अन्य महाशयों ने मादक द्रव्य सेवन त्याग करने की प्रतिज्ञा करके पुस्तक में अपने अपने हस्ताक्षर कर दिये हैं अब लोक हितैषी महाशयों से और पाठशालाओं के अध्यापकों से प्रार्थना है कि सदुपदेश द्वारा मादक सेवन निवारण का यत्न अवश्य नगर, ग्राम, पाठशालाओं में करिये जो बालक इन व्यसनों में प्रवृत न हों और युवा प्रवृत हुये निवृत्त हों उनके हस्ताक्षर रजिस्टर में करवाइये उनकी संख्या और इस विषय में अपना विचार इस सेवक को भी लिखिये मै भी उनकी सेवा में पत्र निवेदन करूंगा जिस्से परस्पर सम्मति से लोक हित के विचार प्रकट हों और वार्षिक वृतान्त में उन देश हितैषियों के नाम व कार्य भी मुद्रित होना योग्य होगा पत्र सम्पादकों से प्रार्थना है कि अपने अपने पत्रों में इस विषय के पत्रों की प्रेरकों के नाम सहित प्रकाश करेंगे, और अपनी अनुमति भी प्रकाशित करते रहेंगे, जिससे लोकोपकार हो।

आप का कृपा कांक्षी
रामशरण रतूड़ी शर्म्मा
राजधानी टिहरी गढ़वाल
पश्चिमोत्तर देश।

## सत्य सूचना।

"आरोग्य कारक औषधालय" की आज्ञाकारी औषधियां।

(प्रथम एक बार अवश्य आज़माइये)

विशेष—लल्लो चप्पो न लिखेंगे, यह सोच कर कि "सांच की आंच क्या" यदि परिक्षा लेना ही तो प्रथम ऊपर लिखे हुए "हेडिंग" की भली भांति देख कर अपने चित्त में अटल रूप से विश्वास कर लीजिये और द्वितीय स्वयं परिक्षा चाहिये तो इसी पत्र के "सहकारी सम्पादक" चुनार के प्रसिद्ध पं० सीताराम जी वी निज नगर निवासी प्रख्यात पं० श्यामबिहारी मिश्र जी हैं इन लोगों के द्वारा भी जांच कर लीजिये। बस पढ़ते ही निम्न लिखित औषधियों को मंगा कर रोग मुक्त होइये यदि आरोग्य हीना असंभव जान पड़ेगा तो हमारा ज़िम्मा—

## औषधियों की व्यवस्था।

"दद्रु नाशक गोला" एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "तिजारी ज्वर की गोली एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "बवासीर" की गोली जो खूनी और बादी दोनों को जड़ से नष्ट करती है। एक डिबिया में १६ गोली १) पिलही का अपूर्व लेप "एक पट्टी से शर्त्तीया आराम—एक डिबिया मू० २॥) गर्मी की गोली कैसीही पुरानी गर्मी हुई हो जड़ से साफ़ एक डिबिया में ३४ गोली मू० २॥) सिर पीड़ा का "अद्भुद नास" यावत प्रकार की पीड़ा इससे जड़ से साफ़ एक शीशी मू० २।) हैजे की दवा (अर्क) सेवन मात्र से कैसाही हैजा हुआ हो फौरन आराम एक शीशी मू० २।) नेत्र की गोली इससे फूली, मांड़ा टेटर बदमौरत सुर्खी सब आराम एक डिबिया में १६ गोली मू० २।=) "जुलाब की गोली" इस में सुरती आने का नाम नहीं वर्षभर आरोग्य रहिये एक डिबिया में केवल ३गोली मू० ।।।) सूजाक की दवा कैसा ही पुराना हो या नया हो मैं एक बड़ा डिब्बा ४० पुड़िया मूल्य ३)।

इन सब औषधियों का उचित मूल्य में प्याकिंग चार्ज के रक्खा गया

मांगने से भेजेंगे और सब दवाओं के सेवन की व्यवस्था भी विधिवत पत्र के साथ लिखेंगे—बस और भड़कीले विज्ञापनों का ध्यान इस समय छोड़कर औषधी मगाना प्रारंभ कर दीजिये। पता—

डाक्टर अक्षय कुमार चक्रवर्ती
प्रोप्राईटर—आरोग्यकारक औषधालय महल्ला कीट
चीत नाथ घाट माज़ीपूर।

---

अक्लू लाल ने छापकर प्रकाश किया।

REGISTERED NO 24

# THE BEHAR-BANDHU

# बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

DECEMBER 1895 VOL. XXIV.—NO 12

## मासिक पत्र।

डिसेम्बर १८९५। चौबीसवां भाग—नम्बर १२

१ सिरजुद्दौला।
२ देश हितेषियों का भ्रम।
३ राज्याभिषेकमहोत्सव पर रीवां की शोभा।
४ हर्ष! हर्ष!! अति हर्ष!!!
५ कृष्णन देव।
६ प्राप्तिस्वीकार और समालोचना।
७ विज्ञापन।




बाँकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाख़ाना,

१८९५।

## सत्य सूचना।

"आरोग्य कारक औषधालय" की आज्ञाकारी औषधियां।

(प्रथम एक बार अवश्य आजमाइये)

विशेष—लल्लो चप्पो न लिखेंगे, यह सोच कर कि "सांच को आंच क्या" यदि परिचा लेना ही तो प्रथम ऊपर लिखे हुए "हींग" को भली भांति देख कर अपने चित्त में अटल रूप से विश्वास कर लीजिये और द्वितीय स्वयं परिचा चाहिये तो इसी पत्र के "सहकारी सम्पादक" चुनार के प्रसिद्ध पं० सीताराम जी वा निज नगर निवासी प्रख्यात पं० श्यामबिहारी मिश्र जी हैं इन लोगों के द्वारा भी जांच कर लीजिये। बस पढ़ते ही निम्न लिखित औषधियों को मंगा कर रोग मुक्त होइये यदि आरोग्य होना असंभव जान पड़ेगा तो हमारा जिम्मा

### औषधियों की व्यवस्था।

"दद्रु नाशक गोला" एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "त्रिजारी ज्वर की गोली एक डिबिया में ८ गोली मू० १) "बवासीर" की गोली जो कूनी और बादी दोनों को जड़ से नष्ट करती है। एक डिबिया में १६ गोली ३) पिलही का अपूर्व लेप "एक पट्टी से अर्त्तीया आराम—एक डिबिया मू० २॥) गर्मी की गोली कैसीही पुरानी गर्मी हुई हो जड़ से साफ एक डिबिया में ३४ गोली मू० २॥) सिर पीड़ा का "अद्भुद नास" यावत प्रकार की पीड़ा इससे जड़ से साफ एक शीशी मू० २।) हैजे की दवा (अर्क) सेवन मात्र से कैसाही हैजा हुआ हो फौरन आराम एक शीशी मू० २।) नेत्र की गोली इससे फूली, मांड़ा टेटर बदगोरत सुर्खी सब आराम एक डिबिया में १६ गोली मू० २।) "जुलाब की गोली" इस में सुरती आने का नाम नहीं बर्षभर आरोग्य रहिये एक डिबिया में केवल ३ गोली मू० ॥।) सूजाक की दवा कैसा ही पुराना हो या नया हो मैं एक बड़ा डिब्बा ४० पुड़िया मूल्य ३)।

इन सब औषधियों का उचित मूल्य में प्याकिंग चार्ज के रक्खा गया इस के अतिरिक्त और २ असाध्य २ रोगों की दवा मेरे पास तैयार हैं। मांगने से भेजेंगे और सब दवाओं के सेवन की व्यवस्था भी विधिवत पत्र के साथ लिखेंगे—बस और भड़कीले विज्ञापनों का ध्यान इस समय छोड़कर औषधी मंगाना प्रारंभ कर दीजिये। पता—

डाक्टर अक्षय कुमार चक्रवर्ती

प्रोप्राईटर—आरोग्यकारक औषधालय महल्ला कोट

चीत नाथ घाट गाजीपूर।

# बिहार-बन्धु।

नं० १२—डिसेम्बर १८९५।

## देशहितैषीओं का भ्रम।

(भारत जीवन)

आज कल जिस पत्र में देखिये, जिस सभा समाज में देखिये पढ़े लिखों में देखिये देशोन्नति का प्रबल वायु सा बह रहा है, एक धूम सी मच रही है। पढ़े लिखे लोग यह देख देख के डाह ज्वाला से तड़फड़ा रहे हैं कि यूरप वालों ने अपने देश की ऐसी उन्नति की है कि संसार में उसकी धूम मची हुई है परन्तु हमारा देश अभी तक अवनत होता ही चला जाता है! बस इस व्याकुलता में ऐसे व्यग्र हैं कि क्या करते क्या कर बैठते हैं। बिचारे यूरप वालों की देखा देखी अपने देश को भी ठीक यूरपही बनाया चाहते हैं परन्तु इस बात पर नेक भी बिचार नहीं करते कि यूरोप वाले अपने ढंग पर हैं इस लिये अपनी उन्नति कर रहे हैं इस के पूर्व उनका देश असभ्यता से पूर्ण था वे पूरे बर्बर असभ्य थे। दूसरे उनका देश, वहां का जल वायु, प्रकृति उनकी रहन सहन से हम भारत बासियों की क्या? हमारा देश हमारी प्रकृति उनसे सम्पूर्ण बिभिन्न है। हमारा देश हमारे पूर्वज जगतबिख्यात हो गये हैं। हमारे देश की बिद्या बुद्धि की समता में संसार में कोई भी प्रतिद्वन्दी न था। ज्यों ज्यों हमारा देश बिदेशियों द्वारा परास्त होता गया और अपनी बिद्या घटती गई त्यों त्यों हमारा समाज बिगड़ता गया। बिदेशियों से मिल जुल के तथा स्वदेशीय संस्कृत बिद्या से बिमुख होते होते आज हमारी यह

दशा ही रही है परन्तु मीहमई मदिरा के मादकता ने ऐसा हतबुद्धि बना रक्खा है कि अपने हिताहित का किसी को भी ज्ञान न रहा।

कैसे लज्जा और सन्ताप का विषय है कि विलायत वालों की तो रीस करें और कर्म उनसे उलटा करें जिस पर भी अभिमान यह कि हम देश सुधारक हैं।

विलायत वाले अपनी विद्या को उत्तम समझें, अपनी विद्या को बढ़ावें अपनी विद्या की सर्वाङ्ग सुधारें दूसरी विद्या के उत्तमांश को अपनी भाषा में अनुवाद करें अपने देश जात वस्तु पर स्नेह करें। अपनी रीति नीति पर आरूढ़ रहें अपने समाज प्रथा को अपनेही ढंग पर सुधारें। परन्तु हा! खेद हम उनसे विपरीत करें और अपने को स्वदेशाभिमानी मानें।

धिक है उन्हें जो ऐसा करने पर भी अपने को सभ्य भव्य मानने का साहस करते हैं। भारतवासी हो भारत से घृणा, भारतवासी हो साहेब बनने की स्पृहा, भारतवासी हो भारती विद्या को न पढ़ना, भारतवासी हो भारतीय चाल चलन को खोटा कहना, भारतवासी हो भारत की बनी वस्तु पर अरुचि। यहां तक कि भारतवासी न कह यदि उन्हें कोई साहब कहे तो उत्तम। लाला, बाबू न कहा मिस्टर कहाने में अपना गौरव समझें।

यदि कोई कहे कि ऐसी कौन सी वस्तु है कि जो विलायत वालों से हमारे यहा उत्तम तथा लाभकारी है और उसके रहते हम विलायती पर अनुराग करते हैं? तो उनके उत्तर में अधिक न कह आज एक ही उदाहरण दिखा के उन्हें चैतन्य करते हैं।

हमारे देश में चिकित्सा शास्त्र ने इतनी अधिक उन्नति की थी कि जिसकी समता में आज तक कोई देश वाले भी अभिमान या साहस कर इसकी समता करने में अग्रसर नहीं हो सकते। जो आयुर्वेद शास्त्र अग्निवेश आदि शत शत महर्षियों के उग्र तपस्या के बल से पृथ्वी में आकर प्रचलित हुआ, जो आयुर्वेद भारतवासियों के रोग मुक्ति और स्वास्थ्य संस्थिति का एक मात्र उपाय है, जिस आयुर्वेद शास्त्र

का फल अति प्रत्यक्ष है, जिस आयुर्वेद के पढ़ने से पद दलित तृणादि से लेकर शिरोभूषण मणिमाणिक्यादि पर्य्यन्त तावत द्रव्यों के आश्चर्य गुणों को अवगत हो सृष्टिकर्त्ता के अपार महात्म्य में विस्मित होना होता है। जो आयुर्वेदीय चिकित्सा पृथ्वी के संपूर्ण चिकित्सालयों की मूल है, जिस आयुर्वेदीय चिकित्सा की उत्कर्षता उपलब्धि कर २२०० सौ वर्ष के पूर्व भुवन विजयी ग्रीस देशाधिपति महावीर अलकजन्दर ( सिकन्दर ) ने ग्रीस चिकित्सकों के असाध्य रोगियों की आरोग्य करवाने के लिये बड़े यत्न और समादर पूर्वक आयुर्वेदीय चिकित्सकों को ले जाकर रक्खा था जिस आयुर्वेदीय चिकित्सा को सर्व श्रेष्ट मान ११०० वर्ष पहिले बुगदाद के अधिपति हारूं रशीद ने अपनी चिकित्सा के लिये यहां से दो वैद्य बुलवा के बड़े मान मर्यादा से अपने दर्बार में रक्खे थे। जिस चिकित्सा के विषय में जगत् विख्यात डाक्टर वाईज ने कहा है कि यथार्थ चिकित्सा की मूल भित्ति संसार ने आयुर्वेदही से पाई है इस लिये संसार भारतीय आयुर्वेदीय चिकित्सा का ऋणी है " अभी कलकत्ता निवासी श्री युत अविनाशचन्द्र जी के चरक संहिता के अंरेजी अनुवाद की समालोचना में वर्तमान इंगलैन्ड, अमेरिका आदि के सुप्रसिद्ध विद्वान डाक्टरों ने असीम प्रशंसा की है और इस बात को मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है कि संसार में सर्वांग परिपक्व चिकित्सा शास्त्र यदि कोई कहे तो केवल प्राचीनतम आयुर्वेदीय चिकित्सा ही है। उन लोगों ने यह भी स्वीकार किया है कि जिन विषयों में अभी तक हमारा चिकित्सा शास्त्र अपरिपक्व है उन विषयों को पूर्णता के साथ सहस्रों वर्ष पहिले आयुर्वेदीय चिकित्सक गण लिख गये हैं। सिवाय इसके प्रत्यक्ष में नित्य देखने सुनने में आता है कि इस गिरी अवस्था में भी उत्कट, जटिल और प्राचीन रोग जो डाक्टरों से आरोग्य नहीं होते उन्हे यहां के वैद्य बेप्रयास आरोग्य कर देते हैं। इन बातों के अतिरिक्त हमारे देश के प्रकृति जल वायू के अनुकूल जैसी हमारी आयुर्वेदीय चिकित्सा है कदापि वैसी विदेशीय चिकित्सा लाभ कारी नहीं हो सकती।

इतने पर भी वे लोग कैसे भ्रम में पड़े हैं कि अपनी देश की आयुर्वेदीय चिकित्सा जिसकी महा हीन दीन अवस्था हो रही है सहायता न दे बिदेशीय चिकित्सकों का समादर करते हुए अपने को देशहितैषी मानते हैं।

गत सप्ताह के भारतजीवन के पाठकों ने पढ़ा होगा कि श्री काशीपुरी मे एक परम हिन्दू महाशय ने अपनी ठाकुरद्वारे वाली धर्मशाला में "होमिओपैथिक" दातव्य चिकित्सालय स्थापित किया है। अवश्य यह एक परोपकारी सत्कार्य तो है, परन्तु इसे देशहित कार्य्य कदापि नहीं कह सक्ते, क्योंकि प्रथम तो तीर्थ प्रधान परम पुनीत काशीपुरी, दूसरे सत्कुल सदाचारी महाशय के द्वारा बिदेशीय बिजातीय बिधर्मी होमिओपैथिक चिकित्सालय स्थापित हो!

प्रथम तो होमिओपैथिक चिकित्साही अपरिपक्व कही जाती है, दूसरे बिदेशी चिकित्सा है तीसरे हमारे धर्म बिरुद्ध है, चौथे इसकी यावत् औषधियां बिलायत से बन के आती हैं अस्तु इस बहाने से भी अपने देश के धन को बाहर फेकना है, पांचवें एक तो अपने देश की चिकित्सा योंही रसातल को चली जा रही है उस पर भी जो हमारे देशी स्वदेशानुरागाभिमानी धनाढ्य लोग इसे सहायता न दें तो कैसे सन्ताप और लज्जा का बिषय है? क्या इस औषधालय के स्थापक या सहायक अथवा उत्तेजक गण इस बात के कहने में साहस कर सकते हैं कि इस समय आयुर्वेदीय चिकित्सा पर धूल डाल बिदेशीय चिकित्सा के सहायक होना स्वदेश हितैषियों का काम है।

ऊपर कह आये हैं कि हमारे देशवासी बिलायत वालों की देश हितैषिता को देख आप भी अपने देश का हित करने जाते हैं पर यह नहीं देखते कि हित के बदले अहित हो जाता है।

हे ईश्वर कब तेरी कृपा होगी कि भारतवासी अपने देश की यथार्थ भलाई करना सीखेंगे।

---

## राज्याभिषेक महोत्सव पर रीवां की शोभा।

गत १५ तारीख को श्री मान महाराजा साहब बहादुर रीवां की पूर्ण शासनाधिकार अपने राज्य का प्राप्त हो गया। उस दिन प्रजा ने अपने हार्दिक उत्साह की यथा शक्ति प्रकट करने में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं किया। रोशनी की ऐसी बिचित्र घटा अटा और अटारियों पर थी कि जिसकी निर्मल छटा से उस रात की चोर और लम्पटों का हृदय फटा जाता था। एजेन्सी बंगले से शहर तक जिस बीच में कि बस्ती नहीं है सड़क के दोनों किनारे टट्टियां बंधी थीं। उन टट्टियों के बीच बीच में रंग बरंग के कागजों की हांड़ियां और गिलासें लटकती हुई इस प्रकार चमकती थीं मानों सच मुच कांच की बनी हुई हैं। उन टट्टियों के ऊपर स्थान स्थान पर उत्तमोत्तम फूलों के गुच्छे के लच्छे और भी अच्छे जान पड़ते थे। सन्ध्या के पांच बजे रोशनी का प्रकाश हुआ, अहा! उस समय उन हांडियों और गिलासों की रोशनी ने निस्सन्देह अपनी अपूर्व छटा की घटा बांध रक्खी थी। अरुण बरण की हांडियां बत्तियों के जलाने पर निस्सन्देह प्रातःकाल की अरुण सूर्य्योदय का अनुभव दे रही थीं। इसी प्रकार हरी पीली और श्वेत बरण की हांडियां भी अपने मीठे प्रकाश से लोगों के मन को हरण कर रही थीं। टट्टियों पर जो कागज़ लपेटे गये थे वे रात्रि के समय भिन्न भिन्न रंगों की लतायें फैली हुई जान पड़ती थीं, उनके बीच बीच में रोशनियों की हांडियां और गिलासें पूर्ण फल और फूल की भांति दर्शित होती थीं। वास्तव में टट्टियों पर की कृत्रिम लतायें और वे कृत्रिम फल फूलें साधारण ही लोगों के मन को शीघ्र मोहित कर लेते थे। इधर शहर में रोशनी ने अपनी कुछ और ही छटा छांट रक्खा था। लोग बांसों की कमानियों को मेहरावें बना बना कर उन पर गिलासें, हांडियां और साधारण दीये जलाये हुए थे। रस्सियों में गिलासें पिरो पिरो कर एक एक दो दो और तीन तीन लड़ी गूंथ कर रोशनी की पूरी झड़ी लगा दिये थे। द्वार द्वार पर तोरण बन्दनवारें बंधी और केदली पत्र की मेहरावें बनी थीं। उन हरी हरी पत्तियों के बीच बीच में जलती हुई गिलासें और भी शोभायमान हो रही थीं। कितने लोग अपने

देशीय दीये मकानों की मुरेरियों पर जलाये थे और कितने ही आज कल के प्रसिद्ध मृतिका तेल के बेल लगा रक्खे थे। मट्टी की ढिबरियों में मट्टी का तेल देखने वालों के चक्षु, नासिका, मुख और मस्तिष्क ही क्या बरन सम्पूर्ण अंग की मट्टी कर रहा था। यह मट्टी की शरीर मट्टी के तेल से कभी प्रसन्न नहीं होती इसके लिये सदैव सुन्दर वस्तुओं का होना आवश्यक होता है। ढिबरियों की लव से निकलते हुए काले धूम्र सर्प शीतल मन्द व्यारि के लगने से तीव्र वेग के साथ गगन मण्डल की ऐसे जाते हुए दर्शित होते थे मानों सर्पों का समूह चन्द्रमा से टपकते हुए अमृत को पान करने के निमित्त व्यग्र चित्त हो इधर उधर दौड़ते हुए आकाश को चला जाता है। वही धूम्र सर्प यदि पृथ्वी तल की ओर ढल कर आते तो मनुष्य मात्र को नानाप्रकार के कष्ट देते थे। निश्चय रोशनी के देखने से जितना ही लोगों को आनन्द होता था उतनाही मृतिका तेल के धुंएं से कष्ट भी भोगना पड़ता था। क्या ही अच्छा हुआ होता यदि सब कोई मीठे तेल के देशीय दीयों की रोशनी किये होते। वास्तव में जैसी स्वच्छ और निर्मल रोशनी देशीय दीपकों की होती है और नहीं। बहुधा लोग अपने अपने द्वारों पर उत्तमोत्तम आशीर्वचनीय दोहे, सोरठे तथा समस्यायें सीने चांदी के अक्षरों में लगा रक्खे थे जिसके पढ़ने से सर्व साधारण की पूर्ण आभ्यान्तरिक इच्छा प्रकट होती थी कि वह श्री मान के राज्याधिकार प्राप्त होने से अन्तःकर्ण से प्रसन्न है। स्थान स्थान पर सुन्दर सुसज्जित फाटकें बने थे। उनकी चमकती हुई अपूर्व छटा बहुत ही शोभायमान थी। प्रत्येक फाटकों पर आशीर्वचनीय और धन्यवादीय वाक्यें लिखी थीं। उस दिन का सर्व साधारण का उत्साह अकथनीय है, किसी के जी को किञ्चित भी तृप्ति नहीं होती थी। एक से एक उत्तम द्वार सजना, उन पर उत्तमोत्तम वाक्य लिखना, रोशनी की विचित्र कतार बनाना भिन्न भिन्न प्रकार से दीये जलाना, तोरण बन्दनवारें बांधना और केदली पत्र की सेहरावें रचना इत्यादि सम्पूर्ण दिन लोगों का केवल मात्र यही कर्तव्य था। सड़कों के दोनों किनारों पर दर्शकों की भीड़ अगणित एकत्र थी। साहब के बंगले

से चौहट्टे तक पुलिस का पहरा था और चौहट्टे से राधीमहल के द्वार तक तिलंगों की किरचें चमकती थीं। निमन्त्रित राजों महाराजों, रईस सर्दारों तथा अंगरेज़ महाशयों के गाड़ी बग्गी, घोड़े, हाथी, निशान और डंके आदि के असीम धूम धाम के कारण सर्वसाधारण को सड़क से चलना महान दुस्तर हो गया था। बहुधा लोग जिस स्थान पर बैठे पुनः उन्हें उठ कर दूसरे स्थान पर जाने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ। उधर राधी महल तथा उसके सामने के चौक की सजावट निस्सन्देह दर्शकों के प्रसन्न चित्त को और भी गद गद कर देती थी। महल की सीढ़ियों से दर्बार हाल तक अरुण बरण की बनातें बिछी थीं, दर्बार हाल शीशे, तसबीरें तथा किनारे किनारे नाना प्रकार के पौधों के गमलों से पूर्ण सुसज्जित था। झाड़ फानूस इत्यादि की रोशनी शीशों के बीच अपने प्रतिबिम्ब की असंख्यों दर्शा रही थीं। इसी समय में श्रीमान के निमन्त्रित सब सुजन सुसभ्य पुरुषों से सभा परिपूर्ण हो रही थी जिसके मध्य हमारे श्रीमान महाराजा साहब बहादुर सब के प्रदानित प्रतिष्ठा को धारण कर सूर्य्यवत एक सिंहासन पर विराजमान श्रीमान लार्ड ऐलिगन महोदय के प्रतिनिधि की प्रतीक्षा कर रहे थे।

कर्नल डी० डबल्यू० के० बार ऐजेण्ट टू दी गवर्नर जेनरल फार सेन्ट्रल इण्डिया तथा श्रीमान वाइसराय महोदय के प्रतिनिधि जिस समय एजेन्सी बंगले से श्री मान के दर्बार के निमित्त पधारे उस समय उनके चारु चक्षु निस्सन्देह रोशनी ही के ही गये थे। जैसे जैसे मन्द गति से उक्त महाशय की बग्गी आगे बढ़ रही थी वैसे ही वैसे रोशनी की अपूर्व छटा उन्हें दृष्टि गोचर होती थी। मन्द वायु के मन्द वेग से दीयों की लव ऐसे झलमलाती थी मानों श्री मान के आज राज्याधिकार पाने के हर्ष में वह उछल उछल, कूद कूद, झूम झूम और लोट पोट कर उक्त कर्नल महोदय का स्वागत कर रही है और उन्हें धन्यवाद दे रही है। नगर निवासियों के ठट्ट के ठट्ट स्थान स्थान पर बैठ कर कर्नल साहब का प्रतीक्षा कर रहा था। क्या स्त्री क्या पुरुष, क्या बालक क्या वृद्ध सभी फूले अंग नहीं समाते थे। सर्वसाधारण के हार्दिक उत्साह तथा

प्रेम की परीक्षा करने से क्या ही उत्तम फल प्राप्त होता था कि अहा हम भारत वासी अपने स्वामी के कैसे सच्चे राजभक्त होते हैं और हम प्रजा तथा हमारे राजा के मध्य कैसा घनिष्ट प्रेम होता है। निस्सन्देह यदि ऐसी सूधी भारत प्रजा के साथ जिस राजा का सच्चा प्रेम न हो तो वास्तव में उस का अभाग्य कहना चाहिये। जिस समय कर्नल बार साहब के दर्बार में पहुंचने की तोपें दनादन्न दागी गईं आनन्द सागर किनारे पर आ लगा था। कुछ ही समय व्यतीत हुआ होगा कि राज्याधिकार प्राप्त होने पर पुनः तोपों की घोर ध्वनि का शोर चारो ओर फैल गया। निस्सन्देह वही समय था कि आनन्द सागर अगणित धारों से किनारे फारे सारे नगर के ऊपर आनन्द रस के फौहारे डारे देता था। उस रात की एक तार रोशनी का कतार पूर्ण रात भर जगमगाता रहा, प्रातःकाल से नाच रंग और नाटक के ढंग होने लगे जिसका तरंग हम पुनः पाठकों को श्रवण करावेंगे।

---

## हर्ष! हर्ष!! अति हर्ष!!!

(हिन्दी का प्रचार)

अब हमारा हर्ष सीमा के बाहर होता जाता है। यदपि लेखनी इस समय में बहुत कुछ सहायता कर रही है पर क्षण क्षण पर उसको भी अपनी जीभ परिवर्तन करनी पड़ी हैं। यदि हंसिये न तो सच कहें, आज हमारा जी चाहता है कि "बाली पेपर मिल" "तथा मुन्शी नवलकिशोर" आदि के कारखाने में जितने प्रकार के जितने कागज़ हैं सब लिखते लिखते चुका दें। पाठक गण! आप लोगों को भली भांति स्मरण होगा कि हम ने गत पूर्व अंक के "भारत भाता" में अपने श्रीमान के राज्याधिकार प्राप्त महोत्सव के विषय में किञ्चित लिखा था और उसमें अपनी सम्मति दिया था कि इस राज्य के पूर्व श्रीमान जितने होते आये सभी अपनी मातृ भाषा हिन्दी का सत्कार करते आये और यथा शक्ति इसकी उन्नति करने में किसी ने भी कभी किञ्चित त्रुटि नहीं की अतः हमारे वर्तमान श्रीमान महाराजाधिराज श्री महाराज व्यंकट रमण रामानुज

प्रसाद सिंह जी साहब को भी अपनी प्राचीन प्रणाली का अवश्य प्रतिपादन करना चाहिये। दूसरी बात यह थी कि श्रीमान को इस राज्याधिकार महोत्सव के चिरस्मरणार्थ यहां एक हिन्दी भाषा का पुस्तकालय स्थापित करना भी आवश्यक है। निस्सन्देह आज यह समाचार सुन कर हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण हितैषी अति प्रसन्न होंगे कि श्रीमान ने हमारे लिखने पर अपने राज्य के न्यायालयों में हिन्दी भाषा का प्रचार कर दिया। यह आज्ञा राज्याभिषेक महोत्सव के चिरस्मणार्थ समझना चाहिये। इस महान कार्य के लिये हम अपने श्रीमान को जितना धन्यवाद देवें सब थोड़ा है निस्सन्देह आज धन्यवाद देते जी की तृप्ति भी नहीं होती है। इस स्थान पर हम हिन्दी हितैषियों की विशेष कर काशी, राजनांदगांव, मेरट तथा अन्य स्थानों की देवनागरी भाषा उद्धारिणी सभाओं के कार्य कर्त्ताओं से सूचनार्थ निवेदन करते हैं कि आप लोग इस प्रस्ताव को अपनी सभा में उपस्थित करें और यथा शक्ति अपने कर्त्तव्य से न चूकें। अतिरिक्त इसके इस विषय की सम्पूर्ण बातों से सूचित करना और उत्साह को बढ़ाना भी आपही हिन्दी हितैषियों का मुख्य कर्तव्य है। हमको पूर्ण आशा है कि यदि हम लोग ऐसे सुयोग्य श्रीमान का ऐसे अवसरों पर उत्साह बढ़ावेंगे तो अन्य लोगों का जी भी उसकी ओर आकर्षित होगा। आप लोगों को यह भी जानना परमावश्यक है कि हमारे श्रीमान को गत १५ तारीख को अपने राज्य का पूर्णाधिकार प्राप्त हुआ और १६ तारीख की हिन्दी प्रचार के निमित्त पूर्ण आज्ञा हो गई। उसी तिथि से न्यायालयों का सम्पूर्ण कार्य हिन्दी अक्षरों में होता है। यद्यपि बहुत से राज्य कर्मचारी हिन्दी का लिखना पढ़ना नहीं जानते हैं पर वे बहुधा न्यून श्रेणी के हैं। उच्च श्रेणी के सभी हाकिम हिन्दी का लिखना पढ़ना बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। ऐसी दशा में यह बहुत ही आवश्यक था कि न्यायालय में हिन्दी का प्रचार हो। निस्सन्देह हम श्रीमान की बुद्धि की बहुत ही प्रशंसा करेंगे कि उन्होंने प्रथम ही से इस विषय पर विचारविचार कर हिन्दी का प्रचार कर दिया। बहुधा कर्मचारी जो हिन्दी नहीं जानते हैं उनको अपनी सेवा के निमित्त कदापि न घबड़ाना चाहिये वरन उनको हर्ष करना

चाहिये कि उनकी मातृ भाषा देवनागरी सर्व गुण आगरी की डूबने में शूर बीर बघेलावंशावतंश श्री महाराज व्यंकट रमण रामानुज प्रसाद सिंह जी ने भली भांति बचा लिया। हिन्दी अनभिज्ञ कर्मचारियों! विचारनीय बात है कि हिन्दी भाषा सब भाषाओं से सरल है। उच्चारण तथा लिखने की बिधी सब नियम बद्ध है। यदि आप लोग चाहेंगे तो उसी नियम रूपी सड़क से चल कर केवल एक सप्ताह में अपना आवश्यकीय कार्य कर सक्ते हैं। नित्य बोल चाल की भाषा को हिन्दी अक्षरों में लिखना किञ्चित भी कठिन न होगा। इस लिये हम मिव भाव से शिक्षा देते हैं कि आप लोग बिना किसी प्रकार की कठिनता की सोचें शीघ्र हिन्दी के लिखने पढ़ने का अभ्यास कर लीजिये और जहां तक हो इसकी उन्नति में अपना हर्ष प्रकाश कीजिये। यह भी एक कार्य आप लोगों के लिये वैसाही आवश्यक और उचित है जैसा कि अपना प्राचीन धर्म, बरन उससे भी श्रेष्ट कहा जाय तो शायद अत्युक्ति न होगा।

यद्यपि अब हम श्रीमान से विशेष नहीं कह सक्ते हैं क्यों कि जितनी बातें हमको कहना है उन पर श्रीमान का स्वयं ध्यान देखते हैं। परन्तु तो भी इतनी ढिठाई के लिये और स्वतंत्रता चाहते हैं कि जहां तक हो शब्द शब्द अलग लिखे जाया करें और शुद्धाशुद्ध पढ़ने लिखने पर विशेष ध्यान रहे। हम दृढ़ रूप से कहते हैं कि यदि इतना हो जायगा तो इसमें किञ्चित भी सन्देह नहीं कि न्यायालय का कार्य बहुत उत्तमता और निर्दोषता के साथ चलेगा और जो कुछ लिखा जायगा स्वच्छ दूध का दूध और पानी का पानी पढ़ा जायगा। निरसन्देह अभी से इस बात के निमित्त कड़ाई करने में बहुत कठिनता उपस्थित होगी पर हमारा यह अभिप्राय नहीं है, बरन इसके लिये आज्ञा रहे, इस पर किञ्चित ध्यान दिया जाया करे ताकि यथा शक्ति शनैः शनैः लोग उसका उद्योग करते रहें। यदि ऐसा नहीं किया जावेगा तो यही, पवित्र निर्झली हिन्दी को दीक्षित करने का एक महान कारण होगा।

बहुधा लोगों का यह कलंक लगाना कि हिन्दी में कार्य देर में होता है हम कदापि उचित नहीं समझते। हां, यदि वे हिन्दी का

लिखना ही पढ़ना न जानते हों तो उसकी बात न्यारे हैं पर जो जानते हैं उनके लिये कोई कठिनता नहीं है। हम पूछते हैं कि क्या हम लोगों के पूर्वजों के समय में भी उर्दू फ़ारसी थी? यदि थी, तो प्रमाण दो और यदि नहीं, तो फिर उनके राज्य कार्य का काम कैसे चलता था? आपने जितना परिश्रम या समय उर्दू तथा फ़ारसी के लिखने पढ़ने के अभ्यास में व्यय किया है क्या उतना हिन्दी के लिये भी व्यय किया है? यदि हां, तो यह मिथ्या है क्यों कि हिन्दी भाषा ऐसी सरल है कि इसके लिये विशेष समय की आवश्यकता ही नहीं है और यदि नहीं, तो अब परिश्रम करके परीक्षा लीजिये। हिन्दी की स्वच्छता ही एक ऐसा यन्त्र है कि जो अधिक कार्य को बहुधा न्यून कर सकती है। यह निश्चय है कि अभ्यास करने से अति कठिन भी सरल हो जाता है। अतः हिन्दी एक तो स्वयं सरल है दूसरे यदि अभ्यास किया जावे तो और भी उसका लिखना पढ़ना सरल हो जाता है। अब हम अधिक न कह कर ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे श्रीमान को सदैव ऐसी ही शुभ विचार दे कि जिससे अपने देश तथा अपनी प्रजा का सदैव उद्धार होता रहे।

भारत भ्राता।

---

## कल्पन देश।

पुराने देशों के नाम जो पुस्तकों में देखने में आते हैं आज कल क्या कहलाते हैं नीचे दिये जाते हैं इन्हें पूना के व्यापारी ने प्रकाश किया है।

अंग (बिहार) अवन्ती (मालवा)
आंध्र (तैलंगण) आनर्त्त (द्वारका)
कनोज (अंतरवेदी) करहाट (दक्षिण कोकण)
कर्नाटक (मैसूर) कलिंग (ओड़िया)
काम्बोज (रोहिल खंड) कामरूप (आसाम)
काश्मीर (काश्मीर) किरात (पूर्व घाट 'समुद्र तट')
कुंतल (दक्षिण हैदराबाद) कुरू (आगरा मेरठ आदि)

केरल ( मलबार ) कैकेय ( काबुल )
कोंकण ( ठाणा-साष्टी आदि ) कोसल ( अयोध्या )
गांधार ( कंदहार ) गुर्जर ( गुजरात )
गौड़ ( बंगाल ) चैत्य ( पूर्व हिन्दुस्थान )
चोल ( मद्रास ) जालंदर ( पंजाब )
ठंकण ( कुर्ग ) दशार्णव ( ठट्ठा )
द्रविड ( त्रावणकोर ) नयपाल ( नयपाल )
नैषध ( बंगाले का एक भाग ) पांचाल ( लाहोर )
पांडय ( मथुरा ) प्रानांट ( प्रयाग )
पारसिक ( ईरान ) पुलिंद ( बलुचीस्थान )
बाबर ( बार्बरी देश ) वाह्लिक ( अरब )
भद्र ( मिसर देश ) भोनकट ( कच्छ )
मरू ( मारवाड़ ) मलीयाड़ ( मालबार )
मत्स्य ( कानपुर ) महाराष्ट्र ( पूना )
मागध ( गया ) मालव ( मालवा )
मेदपाट ( मेवाड़-उदयपुर ) मैथील ( गोरखपुर )
मैधूब ( दिल्ली ) यवन ( ग्रीस )
लाट ( औरंगाबाद ) बंग ( चिटगांब )
विदर्भ ( बऱ्हाड़ ) शूरसेन ( आलीबाग़ )
सिंधु ( सिंध ) सिंहलद्वीप ( लंका सिलोन )
सोराष्ट्र ( काठियावाड ) हुण ( तिब्बत )

---

## प्राप्त स्वीकार और समालोचना।

१—काशी दूधविनायक के बलवन्त लक्ष्मन पावगी के प्रकाशित डायरी अथवा रोज़नामचा से शिक्षित मंडली अब अज्ञान नहीं होगी जिन्हों ने लिया नहीं हो तो नाम तो अवश्य ही सुना होगा। हम अनुरोध करते हैं कि वे लोग भी इसे एक बार तो मंगा कर देखें उक्त प्रकाशक इसकी दिन दिन उन्नति कर रहे हैं। पहले वर्ष इन्हीं ने कहावत

और मसले प्रकाश किये, दूसरे वर्ष चुटकुली औषधियां अब इस तृतीय वर्ष में समाचार पत्रों के नाम इसके अतिरिक्त काम की बातें शुभ मूहूर्त, पोस्ट विभाग के कायदे आदि नित्य के काम की कई आवश्यक चीजें प्रारंभ में दी गई हैं। ऊपर लिखे ठिकाने पर लिख भेजने से मिलेगा।

२—भारत हितैषी नाम एक नवीन मासिक पत्र पंडित जगतनारायण शर्म्मा द्वारा सम्पादित। मिलने का ठिकाना पी० गिरगाम बम्बई है मूल्य १॥) है। अभी तक इसके २ अंक प्रकाशित हुए हैं प्रथम अंक से दूसरे में उन्नति यह देखने में आई कि तीन चित्र भी दिये गये हैं। इसके लेख उत्तम, विषय मनोरंजक, कागज़ चिकना सारांश यह कि सर्वांग सुन्दर है सबको अनुरोध करते हैं कि एक एक अंक अवश्य मंगा कर देखें पर कहना इतना ही है कि कई लेख अधूरे हैं जो दूसरे अंक की अपेक्षा पर छोड़े गये हैं। जो मासिक पत्र के लिये एक प्रकार दूषण हैं। जो विषय बहुत बड़ा है उसके लिये तो लाचारी हुई है उनकी तो लगातार प्रकाश करना ही पड़ता है पर जो एक अंक में प्रकाश हो सकें उनको लटका रखना अच्छा नहीं। यदि एक ही विषय पर बहुत बातें लिखना हों तो स्वतंत्र स्वतंत्र लेख रहा करें पर हेडिंग एक ही रहे, नम्बर एक दो रहा करे जिसमें किसी एक अंक का पढ़ने वाला भी उस लेख का स्वतंत्र आनन्द ले सके। चार पांच ही छोटे छोटे पैरेग्राफ के अन्त में शेष फिर अच्छा नहीं देख पड़ता और लेख का आनन्द भी जाता रहता है। अकबर और बीरबल के समागम के लेख में जिसमें कई पृष्ठों के अनन्तर "शेष फिर" आया है बुरा नहीं परन्तु ठीक है तात्पर्य यह कि छोटे छोटे जो लेख हों यथा शक्ति पूरे ही रहें और एक बड़ा लेख भी (जैसे बीरबल का) मनोरंजक रहे जिसमें "शेष" फिर" लगाने से उत्सुकता भी पाठकों की बढ़े। हम आशा करते हैं कि इसके सम्पादक जी इस पर विचार करेंगे फिर जैसा निश्चय हो करेंगे।

---

३—बीरेन्द्र बीर (अथवा कटोरा भर खून) काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित। इस पुस्तक के रचयिता वही बाबू देवकीनन्दन

खबी हैं जिनका नाम शिक्षित मंडली में उनकी "चन्द्रकान्ता" के प्रकाश से सब को विदित हो गया। लिखावट भाषा आदि सब वैसी ही है। यह उपन्यास भी चित्ताकर्षक और मनोहर है बिना समाप्त हुए हाथ से नहीं छोड़ा जाता। अधिक क्या कहें एक सभा के सेक्रटरी को ॥) मूल्य और ≈) डाक व्यय भेजने से पुस्तक घर पहुंच जायगी। साधारण अशुद्धि के अलावे जिसके लिये शुद्धाशुद्ध पत्र दिया गया एक बड़ी भारी भूल यह है कि १५२ पृष्ठ के अन्त का वाक्य १५३ पृष्ट से नहीं मिलता यहां की भूली हुई दो लाईनें १५४ पृष्ठ में सतरह और अठारहवीं लाईन बन गई है जो वहां बिलकुल बेजोड़ हैं जिनका कुछ भी जिक्र शुद्धाशुद्ध पत्र में नहीं है। आशा है कि दूसरी आवृत्ति में ग्रन्थ कर्त्ता और पढ़ने के समय पाठक सुधार लेंगे।

४ कुसुमांजली—नवीन मासिक पत्र है पहला ही अंक अभी प्रकाशित हुआ है बिना कई अंकों के देखे सम्मति प्रकाश करना कठिन है। आरंभ अच्छा है। प्रदेशियों से १।) सवा और निज नगरवालों के लिये १) मूल्य रक्खा गया है। इस सम्बन्ध में जिनकी चीठी पत्री करना हो मनेजर पं० पन्ना लाल मिश्र राज्यवाड़ी गोमठ बनारस सिटी के पास लिखना चाहिये।

५ झूलन प्रकाश—गया, चौक निवासी बाबू रामसहाय लाल मरचेन्ट द्वारा प्रकाशित इसकी भूमिका में बाबू साहब कहते हैं—"प्रसिद्ध महात्मा श्री बोधीदास जी जो एक अच्छे कवि हुए हैं जिनकी बनाई झूलना अभी तक कहीं प्रकाश नहीं हुई थी अत्यन्त लाभ कारी होने के कारण मैंने बहुत यत्न से इसे ढूंढ़ कर कैथी हस्त लिपि से बहुत कुछ सुधार पाठकों के विनोदार्थ प्रकाश किया है।" मूल्य प्रति पुस्तक ≈)

६ जयप्रकाश सर्वस्व—इस पुस्तक में बाबू जगन्नाथ दास बी० ए० ने डुमरांव राज्य सम्बन्धी बहुत से विवरण एकत्रित किये हैं जिसका उद्देश्य यह है कि इस पुस्तक के पढ़ जाने से यह लोग जान जायें कि अपना कर्तव्य उचित रीति पर परिश्रम पूर्वक साधन करने से कैसा उत्तम परिणाम प्राप्त होता है और कैसे कठिन अवसरों पर किस किस प्रकार

से बर्त्ताव करना उपयुक्त है। इससे अनेक प्रकार की राजनैतिक तथा सामाजिक शिक्षा के लाभ होने की संभावना है यह ग्रन्थ प्रायः २०० पृष्ठों का है।

७—ऐड्रेस जो ऑनरेब्ल महसनुल्मुल्क राय जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आई० ई० वसी राज डुमरांव को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (२०।८।८५) की महा सभा में उपस्थित काशीस्थ तथा अन्य देशीय पंडित आदि मंडली का दिया हुआ सन्मान पत्र और सभा का संक्षेपवर्णन।

८—डुमरांव राज में खेती की उन्नति। अर्थात नये किस्म के गेहूं और आलू के पैदावार का खुलासा हाल जो श्री महारानी बेनी प्रसाद कुंअरी जी साहबा मालिक रेयासत डुमरांव की आज्ञानुसार मुज़फ़्फ़र नगर और नैनीताल से गेहूं और आलू का बीया मंगवाये जाने और डुमरांव राज की प्रजा की सहायतार्थ बोने के लिये दिये जाने और उसके परिणाम का वर्णन। पंडित गंगा सहाय मिश्र ओवरसीयर मीहकमें डुमरांव का लिखा।

९ बारातबांसी—इस में ऑनरेब्ल दीवान वसी राज डुमरांव राय जयप्रकाश लाल के पुत्र श्री बाबू हरिहर प्रसाद के विवाहोत्सव का सविस्तर वर्णन है इसके देखने से भलि भांति प्रतीत हो जाता है कि यह कार्य कैसे धूम धाम से हुआ है इसके सब सामान राजसी थे। आदि से अन्त तक देखने से यह भी विदित होता है कि यह कार्य भली भांति इस प्रकार कभी सम्पन्न न होता यदि पंडित श्री शिवनारायण शास्त्री जी इसमें कुछ भी हाथ न डालते। इस समालोचना में उनकी विस्तर प्रशंसा लिखने की अपेक्षा यही उत्तम होगा कि पाठक वर्ग इस पुस्तक को डुमरांव में उक्त पंडित जी के नाम चीठी लिख मंगा ही लें क्यों कि डेढ़ाम मिलती है एक पैसे का पोस्टकार्ड लिखना ही यथेष्ट होगा।

---

हम लोग अत्यन्त हर्षपूर्वक ब्राह्मण सभा की ओर से जो पत्र आया है उसे अविकल प्रकाश करते हैं इसके देखने से प्रगट होगा कि इस सभा का कैसा उत्तम उद्देश्य है। आज कल ब्राह्मण जाति जैसी दुरवस्था को प्राप्त होती जाती है। किसी से छिपी नहीं है। अपने

गृहस्थी के खटले से जो ब्राह्मण कुछ भी समय बचा सकें अवश्य इस बड़ी भारी सभा में जो माघ मास में प्रयाग राज के त्रिवेणी तट पर १२ से १६ जनवरी तक होगी उपस्थित हो कर साथ दें एक पन्थ दो काज हो जायगा।

निमन्त्रण पत्र।

प्रधान विद्या धर्म वर्द्धिनी सभा की ओर से

## ब्राह्मण सभा का महाधिवेशन।

प्रयाग माघमेला।

स्वस्ति श्री सर्वोपमायोग्य श्रीयुत

आप से निवेदन है कि निम्न लिखित प्रार्थना को पढ़ कर उस पर ध्यान दीजिये और प्रसन्नता प्रगट कर हम लोगों का उत्साह बढ़ाईये।

१ आप अच्छी तरह जानते हैं कि भारतवर्ष में सब से प्रधान ब्राह्मण वर्ण है और इस वर्ण का तेजप्रताप केवल पुरखों की करनी से आज तक समस्त पृथवी में छाय रहा है, पर इस समय इस वर्ण की कैसी कुछ दुर्दशा हो रही है जिस का अन्त नहीं। कर्म धर्म, रीति, नीति, चाल, चलन, आहार व्योहार आदि कार्यों में कितना कुछ उलट पलट हो गया है, इन सब के सुधारने की बहुत ही कुछ ज़रूरत है।

२ इसी उलट पुलट को सुधारने के लिये सरवार देशके समस्त पंक्ति पावन ब्राह्मणों ने मिल कर "विद्या धर्म वर्द्धिनी" नामक एक सभा संवत १९४० के साल में स्थापित की और हर साल श्री अयोध्या जी में उस का महाधिवेशन होता था जिस्से बहुत कुछ उपकार हुआ है, ब्याह शादी में फजूल खर्ची उठा दी गई, ब्राह्मणों में संध्या गायत्री का प्रचार हो गया, वेद पढ़ने की रीति जारी हो गई, अनेक पाठशालाएं हुईं और बहुत सी समझ दारी बढ़ी, परन्तु जैसा चाहिये कि समस्त ब्राह्मण जाति उत्तेजित हो अपना गौरव देश काल के अनुसार बढ़ावें, सो अभी तक कुछ नहीं हुआ।

३ कलयुग के बीच सात आठ सौ वर्ष कठिन समय के दुःख भोग कर हम लोग अब श्री राज राजेश्वरी विक्टोरिया की रक्षा में आए हैं उसकी कृपा से अपना सामाजिक सुधार इस समय भली भांति कर सकते हैं।

४ इसी के लिये, कि जिस से समस्त ब्राह्मणों में सुधार का असर पहुंचे इस साल श्री प्रयाग माघ मेले में उक्त सभा का महाधिवेशन ठहराया गया है। इसमें समस्त ब्राह्मणों को अवश्य एकत्र होना चाहिये और अपनी२ सम्मति जाहिर करनी चाहिये कि, ब्राह्मणों का सुधार किस विधि से होगा?

५ यह महाधिवेशन माघ कृष्णा १३ से शुक्ला १ संवत १९५२ तक तथा ता० १२ जनवरी ९६ से ता० १६ तक ५ दिन त्रिवेणी तट पर विद्या धर्म वर्द्धिनी पाठशाले के मंडप में होगा। वहां तम्बू, शामियाना, बिछौना आदि का प्रबन्ध सब ठीक रहेगा, जो महाशय त्रिवेणी स्नान को आवेंगे उनको दोहरा लाभ है, एक तो स्नान दान, दूसरा ब्राह्मण जाति का सुधार, जिसका अनन्त पुण्य वेद गाता है:—"यत्रब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेयं यत्र देवा सहाग्निना"।

"सितासिते सरिते यत्र संगते तत्राप्लुता सो दिव मुत्पतंति" इत्यादि।

६ जो महाशय प्रयागराज में महाधिवेशन के निमित्त आवें उनको चाहिये कि और भी कोई ब्राह्मण मिलें तो उनको भी साथ लेते आवें वा आने का अनुरोध करें।

७ जिनके रहनेका कहीं ठीक ठौर नहीं रहेगा उनको प्रयागकी सभा रहने आदि का प्रबन्ध कर देगी, किसी बात की तकलीफ नहीं होने पावेगी।

८ जो महाशय इस महाधिवेशन में आवें वे पत्र भेज कर जनावें कि हम आवेंगे और अमुक जगह ठहरेंगे, या सभा मंडप में ठहरेंगे वैसा ही वैसा प्रबन्ध हम लोग यहां कर रक्खेंगे।

९ आप कृपा कर बहुत जल्द उत्तर दीजिये जिससे हम लोग आप की कृपा के आश ही उत्साहित बने रहें और सदा ब्राह्मण जाति के मंगल का मार्ग खोजते रहें।

१० पत्र इस पते से भेजिये:— "पंडित देवकीनन्दन त्रिपाठी
विद्याधर्म वर्द्धक प्रेस इलाहाबाद"

आपका शुभचिन्तक—चन्द्रचारुमणि त्रिपाठी सभापति
रामचरित्रमणि त्रिपाठी सम्पादक
प्रधान विद्या धर्म वर्द्धिनी सभा
बलुआ जि० गोरखपुर।

## ब्राह्मण सभा के ६ बिचार।

१ यज्ञोपवीत संस्कार जो विद्या पढ़ने के लिये किया जाता था वह नाटक का खेल हो गया है उसके विषय में सब बेहोश हैं। इसी से १०० में ९० ब्राह्मण की "करिआ अच्चर भैंस बराबर" है।

२ प्रायः पांच वर्ष के भीतर बालक बालिका का विवाह हो जाता है जिससे बल वीर्य बुद्धि नष्ट हो औलाद में बाधा पड़ जाती है।

३ कन्या बड़ी वर छोटा होता है, इससे उन दोनों की दाम्पत्य प्रीति आपस में नहीं रहती बल्कि बिधवाओं की वृद्धि होती है।

४ बिना दहेज के एकरार विवाह नहीं होता, झूठी कुलीनता का प्रचार है, व्यर्थ फजूल खर्च का झमेला है जिस से सब की कष्ट होता है।

५ कुपात्रों को दान दिया जाता है कुदान लिया जाता है इससे जाति में भिखमँगे बहुत बढ़ते जाते हैं काम धंधा कोई नहीं करते।

६ स्त्री शिक्षा का प्रचार नहीं है इससे शास्त्र की रीति बिलकुल लोप हो गई, स्वियाचार में पुरुष भी फंसे अपने बड़ों की चाल खो बैठे हैं।

---

National Library
Calcutta-27.